पारा – 1

सूरह–1. अल–फ़ातिहा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है.

1 **सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो**
सारे जहान का मालिक है. 2 **बहुत**
मेहरबान निहायत रहम वाला है. 3
इंसाफ़ के दिन का मालिक है. 4 **हम**
तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से
मदद चाहते हैं. 5 **हमें सीधा रास्ता**
दिखा. 6 **उन लोगों का रास्ता जिनपर**
तूने फ़ज़ल किया. 7 **उनका रास्ता नहीं**
जिनपर तेरा ग़ज़ब हुआ और न उन
लोगों का रास्ता जो रास्ते से भटक गए.

सूरह-2. अल-बक़राह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़० लाम० मीम०. 2 **यह अल्लाह की किताब है. इसमें
कोई शक नहीं. राह दिखाती है डर रखने वालों को.** 3 **जो
यक़ीन करते हैं बिन देखे और नमाज़ क़ायम करते हैं. और जो कुछ हमने उन्हें
दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं.** 4 **और जो ईमान लाते हैं उस (ईश-संदेश) पर जो
तुम्हारे ऊपर उतरा और जो तुम से पहले उतारा गया. और वे आख़िरत पर (यानी
मृत्यु-पश्चात जीवन पर) यक़ीन रखते हैं.** 5 **इन्हीं लोगों ने अपने रब की राह पाई
है और वही कामयाबी को पहुँचने वाले हैं.**

नोटः- 'इसमें कुछ शक नहीं कि **क़ुरआन** ख़ुदा की किताब है,' यह महज़ अक़ीदे की बात नहीं है. जिस इन्सान की भी फ़ितरत ज़िंदा हो, उसे क़ुरआन में जगह-जगह पर यह आवाज़ सुनाई देगी कि यह ख़ुदा का कलाम है, यह इन्सान का कलाम नहीं.

6 जिन लोगों ने इन्कार किया, उनके लिए एकसां है उन्हें डराओ, या न डराओ, वे मानने
वाले नहीं हैं. 7 अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर लगा दी है. और उनकी
आँखों पर पर्दा है. और उनके लिए बड़ा अज़ाब है.

8 और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत
के दिन पर, हालाँकि वे ईमान वाले नहीं हैं. 9 वे अल्लाह को और मोमिनों को धोखा देना चाहते हैं,
मगर वे सिर्फ़ अपने आपको धोखा दे रहे हैं और वे इसका शऊर नहीं रखते. 10 उनके दिलों में
रोग है तो अल्लाह ने उनके रोग को बढ़ा दिया और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है. इस वजह से कि
वे झूठ कहते हैं. 11 और जब उनसे कहा जाता है कि धरती पर फ़साद (उपद्रव) न करो तो वे
जवाब देते हैं, हम तो सुधार करने वाले हैं. 12 जान लो, यही लोग फ़साद करने वाले हैं, मगर वे
नहीं समझते. 13 और जब उनसे कहा जाता है कि तुम भी उसी तरह ईमान ले आओ जिस तरह
अन्य लोग ईमान लाए हैं तो वे कहते हैं, क्या हम उस तरह ईमान लाएँ जिस तरह बेवक़ूफ़ लोग
ईमान लाए हैं. जान लो कि बेवक़ूफ़ यही लोग हैं, मगर वे नहीं जानते. 14 और जब वे ईमान

वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं, और जब अपने शैतानों की बैठक में पहुँचते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो उनसे (यानी ईमान वालों से) महज़ हंसी करते हैं.
15 अल्लाह उनसे हंसी कर रहा है और उन्हें उनकी सरकशी में ढील दे रहा है. वे भटकते फिर रहे
हैं. 16 ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत (मार्गदर्शन) के बदले गुमराही ख़रीदी तो उनकी तिजारत फ़ायदेमंद नहीं हुई, और वे न हुए राह (सन्मार्ग) पाने वाले.

17 उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने आग जलाई. जब आग ने उसके इर्द–गिर्द को रोशन कर दिया तो अल्लाह ने उनकी आँख की रोशनी छीन ली और उन्हें अंधेरे में छोड़ दिया कि
उन्हें कुछ दिखाई नहीं पड़ता. 18 वे बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं. अब ये लौटने वाले नहीं हैं. 19 या
उनकी मिसाल ऐसी है जैसे आसमान से बारिश हो रही हो, उसमें अंधकार भी हो और गरज–चमक भी. वे कड़क से डर कर, मौत से बचने के लिए अपनी उंगलियाँ अपने कानों में ठूंस रहे हों.
हालाँकि अल्लाह इन्कार करने वालों को अपने घेरे में लिए हुए है. 20 क़रीब है कि बिजली उनकी
निगाहों को उचक ले. जब भी उनपर बिजली चमकती है, उसमें वे चल पड़ते हैं और जब उनपर अंधेरा छा जाता है तो वे रुक जाते हैं. और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कान और उनकी आंखों को छीन ले. अल्लाह यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है.

21 ऐ लोगो! अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी जो
तुम से पहले गुज़र चुके हैं, ताकि तुम दोज़ख़ (नरक) से बच जाओ. 22 वह हस्ति जिसने ज़मीन
को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया, और उतारा आसमान से पानी और उससे पैदा किए फल तुम्हारी ग़िज़ा के लिए. पस तुम किसी को अल्लाह के बराबर न
ठहराओ, हालाँकि तुम जानते हो. 23 अगर तुम इस कलाम के संबंध में शक में हो जो हमने अपने
बंदे के ऊपर उतारा है, तो लाओ इस जैसी एक सूरह और बुला लो अपने हिमायतियों को भी
अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो. 24 पस अगर तुम यह न कर सको और हरगिज़ न कर
सकोगे तो डरो उस आग से जिसका इंधन बनेंगे आदमी और पत्थर. वह तैयार की गई है हक़
(सत्य) का इन्कार करने वालों के लिए. 25 और ख़ुशख़बरी दे दो उन लोगों को जो ईमान लाए
और जिन्होंने नेक काम किए, कि उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी. जब भी उन्हें इन बाग़ों में से कोई फल खाने को मिलेगा, तो वे कहेंगे, यह वही है जो इससे पहले हमें दिया गया था. और मिलेगा उन्हें एक दूसरे से मिलता–जुलता. और उनके लिए वहाँ साफ़–सुथरी औरतें होंगी. और वे उसमें हमेशा रहेंगे.

26 अल्लाह इससे नहीं शर्माता कि बयान करे मिसाल मच्छर की या इससे भी किसी छोटी चीज़ की. फिर जो ईमान वाले हैं वे जानते हैं कि वह हक़ (सत्य) है उनके रब की जानिब से. और

जो इन्कार करने वाले हैं, वे कहते हैं कि इस मिसाल को बयान करके अल्लाह ने क्या चाहा है.
अल्लाह इसके ज़रीए बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को इससे राह (सन्मार्ग) दिखाता है.
और वह गुमराह करता है सिर्फ़ उन लोगों को जो नाफ़रमानी (अवज्ञा) करने वाले हैं. 27 जो
अल्लाह के अहद (वचन) को उसके बांधने के बाद तोड़ते हैं और उस चीज़ को तोड़ते हैं जिसे
अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं. यही लोग हैं नुक़सान उठाने
वाले. 28 तुम किस तरह अल्लाह का इन्कार करते हो, हालाँकि तुम बेजान थे तो उसने तुम्हें ज़िंदगी
अता की. फिर वह तुम्हें मौत देगा. फिर वह तुम्हें ज़िंदा करेगा. फिर उसी की तरफ़ लौटाए
जाओगे. 29 वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है. फिर आसमान
की तरफ़ तवज्जोह की और सात आसमान दुरुस्त किए. और वह हर चीज़ का जानने वाला है.

30 और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ.
फ़रिश्तों ने कहा, क्या तू ज़मीन में ऐसे लोगों को बसाएगा जो उसमें फ़साद करें और ख़ून बहाएं.
और हम तेरी हम्द के साथ तेरा महिमागान करते हैं और तेरी पाकी बयान करते हैं. अल्लाह ने कहा,
मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते. 31 और अल्लाह ने सिखा दिए आदम को सारे नाम, फिर उन्हें
फ़रिश्तों के सामने पेश किया और कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन लोगों के नाम बताओ.
32 फ़रिश्तों ने कहा कि तू पाक है. हम तो वही जानते हैं जो तूने हमें बताया. बेशक तू ही इल्म
वाला और हिकमत वाला (यानी सर्वज्ञानी और बुद्धिमान) है. 33 अल्लाह ने कहा, ऐ आदम! उन्हें
बताओ उन लोगों के नाम. तो जब आदम ने बताए उन्हें उन लोगों के नाम तो अल्लाह ने कहा, क्या
मैंने तुम से नहीं कहा था कि आसमानों और ज़मीन के भेद को मैं ही जानता हूँ. और मुझे मालूम है
जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो.

34 और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया, मगर
इबलीस ने नहीं किया. उसने इन्कार किया और घमंड किया और मुन्किरों में से हो गया. 35 और
हमने कहा, ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो और उसमें से खाओ खुले रूप में
जहाँ से चाहो. और उस दरख़्त (वृक्ष) के नज़दीक मत जाना वरना तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे.
36 फिर शैतान ने उस दरख़्त के ज़रीए दोनों को लग़ज़िश में मुब्तिला कर दिया (यानी बहकाने में
कामयाब हो गया) और उन्हें उस ऐश से निकलवा दिया जिसमें वे थे. और हमने कहा, तुम सब
उतरो यहाँ से. तुम एक दूसरे के दुश्मन होंगे. और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठहरना और काम चलाना
है एक मुद्दत तक. 37 फिर आदम ने सीख लिए अपने रब से कुछ बोल तो अल्लाह उसपर
मुतवज्जह हुआ. बेशक वह तौबा क़बूल करने वाला रहम करने वाला है.

38 **हमने कहा, तुम सब यहाँ से उतरो.** **फिर जब आए तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत** **तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे, उनके लिए न कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे.**
39 **और जो लोग इन्कार करेंगे और हमारी निशानियों को झुठलाएँगे तो वही लोग दोज़ख़ (नरक) वाले हैं. वे उसमें हमेशा रहेंगे.**

नोटः– अल्लाह तआला की जिस तरह की मुख़ातिबत (संबोधन) इंसाने–अव्वल हज़रत आदम से है वैसीही मुख़ातिबत सारी आदम की औलाद से है. **ऐ बनी आदम! अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएं जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाएं तो जो शख़्स डरा और जिसने इसलाह कर ली उनके लिए न कोई ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे. और जो लोग मेरी आयतों को झुठलाएँ और उनसे तकब्बुर करें, वही लोग दोज़ख़ वाले हैं. वे उसमें हमेशा रहेंगे. (सुरह 7:35–36)**

सिर्फ़ वही चीज़ हिदायत का ज़रिया है जो अल्लाह की तरफ़ से आयी हुई है, दूसरी कोई भी चीज़ इन्सान के लिए सच्चाई पाने का ज़रिया नहीं बन सकती. हज़रत आदम से लेकर क़यामत तक के हर इन्सान के लिए यही फार्म्यूला है कि हिदायत सिर्फ़ उस चीज़ में मिलेगी जो ख़ुदा की तरफ़ से आयी है. हज़रत आदम से लेकर मुहम्मद (स.) तक ख़ुदा की तरफ़ से बार–बार हिदायत आती रही. अब हिदायत का आख़िरी और महफ़ूज़ version कुरआन है. अब इन्सान के लिए यही हिदायत पाने का वाहिद ज़रिया है.

जिन लोगों को ख़ुदा की तरफ़ से आयी हुई हिदायत मंज़ूर नहीं फिर उन लोगों को हिदायत मिलने वाली भी नहीं. इंसान की कामयाबी ख़ुदा की तरफ़ से आयी हुई हिदायत की पैरवी करने में है न कि किसी और चीज़ की पैरवी करने में.

क़यामत तक के इंसानों के लिए ख़ुदा की तरफ़ से आयी हुई हिदायत कुरआन की शकल में पूरी तरह महफ़ूज़ है. कुरआन के मानने वालों की ज़िम्मेदारी यह है कि इस हिदायत नामे को उन लोगों तक पहुँचा दें जिन तक वह नहीं पहुँचा है, क्योंकि अब कुरआन के सिवा कोई चीज़ नहीं है जो इन्सान के लिए हिदायत का ज़रिया बन सके.

40 ऐ बनी इसराईल! याद करो मेरे उस एहसान को जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया. और मेरे अहद (वचन) को पूरा करो, मैं तुम्हारे अहद को पूरा करुंगा. और मेरा ही डर रखो.
41 और

ईमान लाओ उस चीज़ पर जो मैंने उतारी है. तसदीक़ (पुष्टि) करती हुई उस चीज़ की जो तुम्हारे पास है. और तुम सबसे पहले उसका इन्कार करने वाले न बनो. और न लो मेरी आयतों पर मोल थोड़ा. और मुझ से डरो. 42 और सही में ग़लत को न मिलाओ और सच को न छुपाओ, हालाँकि तुम जानते हो. 43 और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और झुकने वालों के साथ झुक जाओ. 44 तुम लोगों से नेक काम करने को कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो. हालाँकि तुम किताब की तिलावत करते हो, क्या तुम समझते नहीं. 45 और मदद चाहो सब्र और नमाज़ से, और बेशक वह भारी है, मगर उन लोगों पर नहीं जो डरने वाले हैं. 46 जो गुमान रखते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और वे उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं.

47 ऐ बनी इसराईल! मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और इस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी. 48 और डरो उस दिन से कि कोई जान किसी दूसरी जान के कुछ काम न आएगी. न उसकी तरफ़ से कोई सिफ़ारिश क़बूल की जाएगी. और न उससे बदले में कुछ लिया जाएगा और न उनकी कोई मदद की जाएगी. 49 और जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुड़ाया. वे तुम्हें बड़ी तकलीफ़ देते थे. तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी औरतों को जिंदा रखते. और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से भारी आज़माइश थी. 50 और जब हमने दरिया को फाड़ कर तुम्हें पार कराया. फिर बचाया तुम्हें और डूबा दिया फ़िरऔन के लोगों को और तुम देखते रहे. 51 और जब हमने मूसा से वादा किया चालीस रात का. फिर तुमने इसके बाद बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम ज़ालिमों में से हो गये. 52 फिर हमने उसके बाद तुम्हें माफ़ कर दिया, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो. 53 और जब हमने मूसा को किताब दी और (हक़ और बातिल के दरमियान) फ़ैसला करने वाली चीज़, ताकि तुम राह पाओ. 54 और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुमने बछड़े को माबूद बनाकर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है. अब अपने पैदा करने वाले की तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ और अपने (भीतर के) मुजरिमों को अपने हाथों से क़तल करो. यह तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक बेहतर है. तो अल्लाह ने तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाई. बेशक वही तौबा क़बूल करने वाला, रहम करने वाला है. 55 और जब तुमने कहा कि ऐ मूसा! हम तुम्हारा यक़ीन नहीं करेंगे जब तक हम अल्लाह को (अपने) सामने न देख लें तो तुम्हें बिजली ने पकड़ लिया और तुम देख रहे थे. 56 फिर हमने तुम्हारी मौत के बाद तुम्हें उठाया, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो. 57 और हमने तुम्हारे ऊपर बदलियों का साया किया और तुम पर मन्न व सलवा उतारा. खाओ सुथरी चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं और उन्होंने हमारा कुछ नुक़सान नहीं किया, वे अपना ही नुक़सान करते रहे.

58 और जब हमने कहा कि दाख़िल हो जाओ इस शहर में और खाओ उसमें से जहाँ से

चाहो, फ़राग़त के साथ. और दाख़िल होना दरवाज़े में सिर झुकाए हुए और कहते हुए, ऐ रब! हमारी ख़ताओं को बख़्श दे. हम तुम्हारी ख़ताओं को बख़्श देंगे और नेकी करने वालों को ज़्यादा भी देंगे. 59 तो उन ज़ालिमों ने बदल दिया उस बात को जो उनसे कही गई थी दूसरी बात से. तो हमने उन ज़ालिमों पर, उनकी नाफ़रमानी के सबब से आसमान से अज़ाब (प्रकोप) उतारा. 60 और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी माँगा तो हमने कहा, अपना असा (डंडा) पत्थर पर मारो, तो उससे फूट निकले बारह चश्मे (जलस्रोत). हर गिरोह ने अपना—अपना घाट पहचान लिया. (हमने कहा) खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क़ से और न फिरो ज़मीन में फ़साद मचाने वाले बन कर. 61 और जब तुमने कहा, ऐ मूसा! हम एक ही क़िस्म के खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकते. अपने रब को हमारे लिए पुकारो कि वह निकाले हमारे लिए जो उगता है ज़मीन से — साग, ककड़ी, गेहूँ, मसूर, प्याज़. मूसा ने कहा कि क्या तुम एक बेहतर चीज़ के बदले एक अदना (तुच्छ) चीज़ लेना चाहते हो. किसी शहर में उतरो तो तुम्हें मिलेगी वह चीज़ जो तुम माँगते हो. और डाल दी गई उनपर ज़िल्लत और मुहताजी और वे अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ हो गए. यह इस वजह से हुआ कि वे अल्लाह की निशानियों का इन्कार करते थे और नबियों को नाहक़ क़तल करते थे. यह इस वजह से हुआ कि उन्होंने नाफ़रमानी की और वे हद पर न रहते थे.

62 बेशक जो लोग मुसलमान हुए और जो लोग यहूदी हुए और नसारा (ईसाई) और साबी, इनमें से जो शख़्स ईमान लाया अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और उसने नेक काम किया तो ऐसे लोगों के लिए उनके रब के पास अज्र (प्रतिफल) है. और ऐसे लोगों के लिए न कोई डर है और न वे ग़मगीन होंगे.

63 और जब हमने तुम से अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर उठाया. पकड़ो उस चीज़ को जो हमने तुम्हें दी है मज़बूती के साथ, और जो कुछ इसमें है उसे याद रखो, ताकि तुम (बुरे कामों से) बचो. 64 उसके बाद तुम उससे फिर गए. अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो ज़रूर तुम हलाक हो जाते. 65 और उन लोगों का हाल तुम जानते हो जो सबत (सनीचर) के मामले में अल्लाह के हुक्म से निकल गए तो हमने उनसे कहा कि तुम लोग ज़लील बंदर बन जाओ. 66 फिर हमने उसे इबरत बना दिया उन लोगों के लिए जो उस वक़्त (मौजूद) थे और उन लोगों के लिए जो उसके बाद आए. और उसमें हमने नसीहत रख दी डर वालों के लिए.

67 और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़बह करो. उन्होंने कहा, क्या तुम हमसे हंसी कर रहे हो. मूसा ने कहा कि मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ कि मैं ऐसा नादान बनूँ. 68 उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमसे

बयान करे कि वह गाय कैसी हो. मूसा ने कहा, अल्लाह फ़रमाता है कि वह गाय न बूढ़ी हो और न बछिया, उनके बीच की हो. अब कर डालो जो हुक्म तुम को मिला है. 69 उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह बयान करे कि उसका रंग कैसा हो. मूसा ने कहा, अल्लाह फ़रमाता है कि वह गाय गहरे ज़र्द (सुनहरे) रंग की हो, देखने वालों को अच्छी मालूम होती हो. 70 उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमसे बयान कर दे कि वह कैसी हो. क्योंकि गाय में हमें शुबहा पड़ गया है और अल्लाह ने चाहा तो हम राह पा लेंगे. 71 मूसा ने कहा, अल्लाह फ़रमाता है कि वह एक ऐसी गाय हो कि मेहनत करने वाली न हो, ज़मीन को जोतने वाली और खेतों को पानी देने वाली न हो. वह सालिम हो, उसमें कोई दाग़ न हो. उन्होंने कहा, अब तुम स्पष्ट बात लाए. फिर उन्होंने उसे ज़बह किया. (लेकिन हक़ीक़त के एतबार से) वे ज़बह करते नज़र न आते थे. 72 और जब तुमने एक शख़्स को मार डाला फिर एक दूसरे पर उसका इल्ज़ाम डालने लगे. हालाँकि अल्लाह को (उस जुर्म का सत्य) ज़ाहिर करना मंज़ूर था जो तुम छुपाना चाहते थे. 73 पस हमने हुक्म दिया कि मारो उस मुरदे को इस गाय के एक टुकड़े से (फिर वह मुरदा अपने क़ातिल का नाम बता देगा). इस तरह ज़िंदा करता है अल्लाह मुरदों को. और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो.

74 फिर उसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए. पस वे पत्थर की तरह हो गए, या उससे भी ज़्यादा सख़्त. पत्थरों में कुछ ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं. कुछ पत्थर फट जाते हैं और उनसे पानी निकल आता है. और कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं. और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो.

75 क्या तुम यह उम्मीद रखते हो कि ये यहूद तुम्हारे कहने से ईमान ले आएंगे. हालाँकि इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि वे अल्लाह का कलाम सुनते थे और फिर उसे बदल डालते थे समझने के बाद, और वे जानते हैं. 76 जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हुए हैं. और जब आपस में एक दूसरे से अकेले में मिलते हैं तो कहते हैं, क्या तुम उन्हें वे बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली हैं कि वे उसके ज़रिए तुम्हारे रब के पास तुम से हुज्जत करें. क्या तुम समझते नहीं. 77 क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह को मालूम है, जो वे छुपाते हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं.

78 और उनमें अनपढ़ हैं जो नहीं जानते किताब को, मगर आरज़ुएं. इनके पास गुमान के सिवा और कुछ नहीं. 79 पस ख़राबी है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है. ताकि उसके ज़रीए थोड़ी सी पूंजी हासिल कर लें. पस ख़राबी है उस चीज़ की बदौलत जो उनके हाथों ने लिखी. और उनके लिए ख़राबी है अपनी

इस कमाई से. 80 और वे कहते हैं हमें दोज़ख़ की आग नहीं छुएगी, मगर गिनती के कुछ दिन. कहो, क्या तुमने अल्लाह के पास से कोई अहद (वचन) ले लिया है कि अल्लाह अपने अहद के ख़िलाफ़ नहीं करेगा. या अल्लाह के ऊपर ऐसी बात कहते हो जो तुम नहीं जानते. 81 हां, जिसने कोई बुराई की और उसके गुनाह ने उसे अपने घेरे में ले लिया. तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे.

82 **और जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए, वे जन्नत वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे.**

नोटः– वही ईमान ख़ुदा के नज़र में ईमान है जो नेक आमाल में ढल जाए. ऐसे ही ईमान वालों के लिए ख़ुदा के यहाँ जन्नत है. क़ुरआन में जगह–जगह ईमान के साथ नेक अमल का ज़िक्र किया गया है, इससे मालूम होता है कि वही ईमान, ईमान है, जिसके मुताबिक़ इन्सान की अमली ज़िंदगी का नक़्शा बने.

83 और जब हमने बनी इसराईल से अहद (वचन) लिया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करोगे और नेक सलूक करोगे माँ–बाप के साथ, रिश्तेदारों के साथ, यतीमों और मिसकीनों के साथ. और यह कि लोगों से अच्छी बात कहो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो. फिर तुम इससे फिर गए सिवा थोड़े लोगों के. और तुम इक़रार करके उससे हट जाने वाले लोग हो.

84 और जब हमने तुम से यह अहद (वचन) लिया कि तुम अपनों का ख़ून न बहाओगे. और अपने लोगों को अपनी बस्तियों से नहीं निकालोगे. फिर तुमने इक़रार किया और तुम उसके गवाह हो. 85 फिर तुम ही वे हो कि अपनों को क़तल करते हो और अपने ही एक गिरोह को उनकी बस्तियों से निकालते हो. उनके ख़िलाफ़ उनके दुश्मनों की मदद करते हो गुनाह और ज़ुल्म के साथ. फिर अगर वे तुम्हारे पास क़ैद होकर आते हैं तो तुम फ़िदया (आर्थिक दंड) देकर उन्हें छुड़ाते हो. हालाँकि ख़ुद उनका निकालना ही तुम्हारे ऊपर हराम था. क्या तुम किताबे–इलाही के एक हिस्से को मानते हो और एक हिस्से का इन्कार करते हो. पस तुम में से जो लोग ऐसा करें उनकी सज़ा इसके सिवा क्या हो सकती है कि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई हो और क़यामत के दिन उन्हें सख़्त अज़ाब में डाल दिया जाए. और अल्लाह उस चीज़ से बेख़बर नहीं जो तुम कर रहे हो. 86 यही लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी ख़रीदी. पस न उनका

अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मदद पहुँचेगी.

87 और हमने मूसा को किताब दी और उसके बाद पे-दरपे (लगातार) रसूल भेजे. और ईसा बिन मरयम को खुली-खुली निशानियाँ दीं और रूहे-पाक से उसकी ताईद की. तो जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास वह चीज़ लेकर आया जिसे तुम्हारा दिल नहीं चाहता था तो तुमने घमंड किया. फिर एक जमात को झुठलाया और एक जमात को मार डाला. 88 और यहूद कहते हैं कि हमारे दिल महफ़ूज़ (सुरक्षित) हैं. नहीं, बल्कि अल्लाह ने उनके इन्कार की वजह से उनपर लानत कर दी है. इसलिए कि वे बहुत कम ईमान लाते हैं. 89 और जब आयी अल्लाह की तरफ़ से उनके पास एक किताब, जो सच्चा करने वाली है उसे जो उनके पास है और वे पहले से मुन्किरों पर फ़तह माँगा करते थे. फिर जब आयी उनके पास वह चीज़ जिसे उन्होंने पहचान रखा था तो उन्होंने उसका इन्कार कर दिया. पस अल्लाह की लानत है इन्कार करने वालों पर. 90 कैसी बुरी है वह चीज़ जिसके लिए उन्होंने अपनी जानों का मोल किया (वह यह) कि वे इन्कार कर रहे हैं अल्लाह के उतारे हुए कलाम का इस ज़िद की बुनियाद पर कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से अपने बंदों में से जिस पर चाहे उतारे. पस वे ग़ुस्से पर ग़ुस्सा कमा कर लाए और इन्कार करने वालों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है.

91 और जब उनसे कहा जाता है, उस कलाम पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उसपर ईमान रखते हैं जो हमारे ऊपर उतरा है. और वे उसका इन्कार करते हैं जो उसके पीछे आया है. हालाँकि वह हक़ है और सच्चा करने वाला है उसे जो उनके पास है. कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम अल्लाह के पैग़म्बरों को इससे पहले क्यों क़तल करते रहे हो. 92 और मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ लेकर आया. फिर तुमने उसकी ग़ैर-मौजूदगी में बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम ज़ुल्म करने वाले हो. 93 और जब हमने तुम से अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर खड़ा किया, (और कहा), जो हुक्म हमने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती के साथ पकड़ो और सुनो. उन्होंने कहा, हमने सुना, लेकिन हम नहीं मानते. और उनके कुफ़्र के सबब से बछड़ा उनके दिलों में रच-बस गया. कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो कैसी बुरी है वह चीज़ जो तुम्हारा ईमान तुम्हें सिखाता है. 94 कहो, अगर अल्लाह के यहाँ आख़िरत का घर दूसरों को छोड़कर, ख़ास तुम्हारे लिए है, तो तुम मरने की आरज़ू करो अगर तुम सच्चे हो. 95 मगर वे कभी मौत की आरज़ू नहीं करेंगे, इस सबब से कि वे जो अपने आगे भेज चुके हैं. और अल्लाह ख़ूब जानता है ज़ालिमों को. 96 और तुम उन्हें ज़िंदगी का सबसे ज़्यादा हरीस (लालसा रखने वाला) पाओगे, उन लोगों से भी ज़्यादा जो मुशरिक हैं. उनमें से हर एक यह चाहता है कि हज़ार वर्षों की उम्र पाए. हालाँकि इतना जीना भी उसे अज़ाब से बचा नहीं सकता. और अल्लाह

देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं.

97 कहो कि जो कोई जिब्रील का मुख़ालिफ़ है तो (वह यह जानले कि) उसने इस कलाम को तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है, यह (कलाम) सच्चा करने वाला है उन (पेशीनगोइयों) को जो इससे पहले से है और वह हिदायत और ख़ुशख़बरी है ईमान वालों के लिए.
98 जो कोई दुश्मन हो अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील व मीकाईल का तो अल्लाह ऐसे मुन्किरों का दुश्मन है. 99 और हमने तुम्हारे ऊपर वाज़ेह निशानियाँ उतारीं और कोई उनका इन्कार नहीं करता, मगर वही लोग जो फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) हैं. 100
क्या (ऐसा नहीं है कि) जब भी वे कोई अहद (प्रण) करते हैं तो उनका एक गिरोह उसे तोड़ फेंकता है. बल्कि उनमें से अकसर ईमान नहीं रखते. 101 और जब उनके पास अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल आया जो सच्चा करने वाला था उस चीज़ का जो उनके पास है तो उन लोगों ने जिन्हें किताब दी गई थी, अल्लाह की किताब को इस तरह पीठ पीछे फेंक दिया गोया वे इसे जानते ही नहीं.

102 और वे उस चीज़ के पीछे पड़ गए जिसे शैतान सुलैमान की सल्तनत से जोड़कर पढ़ते थे. हालाँकि सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया, बल्कि ये शैतान थे जिन्होंने कुफ़्र किया वे लोगों को जादू सिखाते थे. और वे उस चीज़ में पड़ गए जो बेबिलोन में हारूत और मारूत इन दो फ़रिश्तों पर उतारी गई, जबकि उनका हाल यह था कि जब भी किसी को अपना यह फ़न (कला) सिखाते तो उससे कह देते कि हम तो आज़माइश के लिए हैं. पस तुम मुन्किर न बनो. मगर वे उनसे वह चीज़ सीखते जिससे मर्द और उसकी बीवी के दरमियान जुदाई डाल दें. हालाँकि वे अल्लाह के इज़्न (आज्ञा) के बग़ैर उससे किसी का कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे. और वे ऐसी चीज़ सीखते जो उन्हें नुक़सान पहुँचाए और नफ़ा न दे. और वे जानते थे कि जो कोई इस चीज़ का ख़रीदार हो, आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं. कैसी बुरी चीज़ है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला. काश वे इसे समझते. 103 और अगर वे मोमिन बनते और तक़वा (ईश-भय) इख़्तियार करते तो अल्लाह का बदला उनके लिए बेहतर था, काश वे इसे समझते.

104 ऐ ईमान वालो! तुम 'राइना' न कहो, बल्कि 'उंज़ुरना' (हमारी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाईए) कहो और सुनो. और कुफ़्र करने वालों के लिए दर्दनाक सज़ा है. 105 जिन लोगों ने इन्कार किया, चाहे अहले-किताब हों या मुशरिकीन, वे नहीं चाहते कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई भलाई उतरे. और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए चुन लेता है. अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है. 106 हम जिस आयत को मौक़ूफ़ (निरस्त) करते हैं या भुला देते हैं तो उससे बेहतर या उस जैसी दूसरी लाते हैं. क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है. 107 क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है

और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई दोस्त है और न कोई मददगार. 108 क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवालात करो जिस तरह इससे पहले मूसा से सवालात किए गए. और जिस शख़्स ने ईमान को कुफ्र से बदल दिया वह यक़ीनन सीधी राह से भटक गया.

109 बहुत से अहले-किताब दिल से चाहते हैं कि तुम्हारे मोमिन हो जाने के बाद वे किसी तरह फिर तुम्हें मुन्किर बना दें, अपने हसद (ईर्ष्या) की वजह से, बावजूद यह कि हक़ उनके सामने वाज़ेह हो चुका है. पस माफ़ करो और दरगुज़र करो, यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ जाए. बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है. 110 और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो. और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे, उसे तुम अल्लाह के पास पाओगे. जो कुछ तुम करते हो अल्लाह यक़ीनन उसे देख रहा है. 111 और वे कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ़ वही लोग जाएँगे जो यहूदी हों या ईसाई हों, यह महज़ उनकी आरज़ुएं हैं. कहो कि लाओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो. 112 बल्कि जिसने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया और वह मुख़्लिस भी है तो ऐसे शख़्स के लिए अज्र है उसके रब के पास, उनके लिए न कोई डर है और न कोई ग़म.

113 और यहूद ने कहा कि नसारा (ईसाई) किसी चीज़ पर नहीं और नसारा ने कहा कि यहूद किसी चीज़ पर नहीं. और वे सब आसमानी किताब पढ़ते हैं. इसी तरह उन लोगों ने कहा जिनके पास इल्म नहीं, उन्हीं का सा क़ौल. पस अल्लाह क़यामत के दिन उनके दरमियान उस बात का फ़ैसला करेगा जिसमें ये झगड़ रहे थे. 114 उससे बढ़कर ज़ालिम (दूसरा) कौन होगा जो अल्लाह की मसजिदों में अल्लाह की याद किए जाने से रोके और उन्हें उजाड़ने की कोशिश करे. उनका हाल तो यह होना चाहिए था कि मसजिदों में अल्लाह से डरते हुए दाख़िल हों. उनके लिए दुनिया में रुसवाई है और आख़िरत में उनके लिए भारी सज़ा है. 115 और पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के लिए हैं. तुम जिधर रुख़ करो उसी तरफ़ अल्लाह है. यक़ीनन अल्लाह वुसअत (सर्वव्यापी) वाला है, इल्म वाला है. 116 और कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है. वह इससे पाक है. बल्कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है. उसी का हुक्म मानने वाले हैं सारे. 117 वह आसमानों और ज़मीन को वजूद में लाने वाला है. वह जब किसी काम को करना तै कर लेता है तो बस उसके लिए फ़रमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाता है.

118 और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्होंने कहा, अल्लाह क्यों नहीं कलाम करता हमसे या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती. इसी तरह उनके अगले भी उन्हीं की तरह बात कह चुके हैं, इन सबके दिल एक जैसे हैं, हमने पेश कर दी हैं निशानियाँ उन लोगों के लिए जो यक़ीन करने वाले हैं.

119 **हमने तुम्हें हक़ के साथ भेजा है, ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर. और तुम से दोज़ख़ में जाने वालों की बाबत कोई पूछ नहीं होगी.**

नोटः– दाई के ऊपर अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी है, फिर उसके बाद मदू के रिस्पॉन्स के ताल्लुक़ से दाई ज़िम्मेदार नहीं.

120 और यहूद और नसारा हरगिज़ तुम से राज़ी नहीं होंगे, जब तक कि तुम उनके दीन (पंथ) पर न चलने लगो. तुम कहो कि जो राह अल्लाह दिखाता है वही असल राह है. और अगर बाद उस इल्म के जो तुम तक पहुँच चुका है तुमने उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी की, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तुम्हारा कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार.
121 जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उसे पढ़ते हैं जैसा कि हक़ है पढ़ने का. यही लोग ईमान लाते हैं उसपर. और जो उसका इन्कार करते हैं वही घाटे में रहने वाले हैं.

122 ऐ बनी इसराईल! मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और उस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया की तमाम क़ौमों पर फ़ज़ीलत दी.
123 और उस दिन से डरो जिसमें कोई शख़्स किसी शख़्स के कुछ काम न आएगा और न किसी की तरफ़ से कोई मुआवज़ा क़बूल किया जायेगा और न किसी को कोई सिफ़ारिश फ़ायदा देगी और न कहीं से उन्हें कोई मदद पहुँचेगी.
124 और जब इब्राहीम को उसके रब ने कुछ बातों में आज़माया तो उसने पूरा कर दिखाया. अल्लाह ने कहा, मैं तुम्हें सब लोगों का इमाम बनाऊँगा. इब्राहीम ने कहा, और मेरी औलाद में से भी. अल्लाह ने कहा, मेरा अहद (वचन) ज़ालिमों तक नहीं पहुँचता.

125 और जब हमने काबे को लोगों के इज्तिमाअ (जमा होने) की जगह और अमन का मक़ाम ठहराया और हुक्म दिया कि मक़ामे–इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बना लो. और इब्राहीम और इस्माईल को ताकीद की, कि मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों, एतकाफ़ करने वालों और रुकूअ व सज्दे करने वालों के लिए पाक रखो.
126 और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे रब! इस शहर को अमन का शहर बना दे. और इसके बाशिंदों को, जो उनमें से अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखें, फलों की रोज़ी अता फ़रमा. अल्लाह ने कहा, जो इन्कार करेगा मैं उसे भी थोड़े दिनों तक फ़ायदा दूँगा. फिर उसे आग के अज़ाब की तरफ़ धकेल दूँगा, और वह बहुत बुरा ठिकाना है.

127 और जब इब्राहीम और इस्माईल बैतुल्लाह की दीवारें उठा रहे थे और यह कहते जाते थे, ऐ हमारे रब! क़बूल कर हमसे, यक़ीनन तू ही सुनने वाला, जानने वाला है. 128 ऐ हमारे रब! हमें अपना फ़रमांबरदार बना और हमारी नस्ल में से अपनी एक फ़रमांबरदार उम्मत उठा और हम (तेरी) इबादत (कैसे करें वे) तरीक़े हमें बता और हमको माफ़ फ़रमा, तू माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है.

129 **और ऐ हमारे रब! उनमें उन्हीं में का एक रसूल उठा जो उन्हें तेरी आयतें सुनाएं और उन्हें किताब और हिकमत की तालीम दे और उनका तज़्किया (मन का शुद्धीकरण) करे. बेशक तू ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है.**

नोटः- यह हज़रत इब्राहीम की दुआ है, इससे वाज़ेह है कि रसूल इस लिए भेजे जाते थे कि **वे अल्लाह की आयतें लोगों को सुनाएं**, अब रसूल भेजे जाने वाले नहीं हैं, लेकिन रसूल वाले काम की ज़रूरत पूरी तरह बाक़ी है. और अल्लाह की आयतें क़ुरआन की शकल में पूरी तरह महफ़ूज़ हैं. अब मुसलमानों का यह काम है कि वह लोगों तक अल्लाह की आयतें पहुँचा दें. Printing press से पहले अल्लाह की आयतें लोगों तक आम तौर पर, सुना कर पहुँचाई जाती थीं, लेकिन अब printing press के दौर में हर मुसलमान क़ुरआन की copies दूसरों तक बाआसानी पहुँचा सकता है.

130 और कौन है जो इब्राहीम के दीन को पसंद न करे, मगर वह जिसने अपने आपको अहमक़ (मूर्ख) बना लिया हो. हालाँकि हमने उसे दुनिया में चुन लिया था और आख़िरत में वह सालेहीन (सत्यवादी लोगों) में से होगा. 131 जब उसके रब ने कहा कि अपने आपको (अपने रब के) हवाले कर दो तो उसने कहा, मैंने अपने आपको सारे जहान के रब के हवाले किया. 132
और उसी की नसीहत की इब्राहीम ने अपनी औलाद को और उसी की नसीहत की याक़ूब ने अपनी औलाद को. ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इसी दीन को चुन लिया है. पस इस्लाम के सिवा किसी और हालत पर तुम्हें मौत न आए. 133 क्या तुम मौजूद थे जब याक़ूब की मौत का वक़्त आया. जब उसने अपने बेटों से कहा कि मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे. उन्होंने कहा, हम उसी ख़ुदा की इबादत करेंगे जिसकी इबादत आप और आपके बुज़ुर्ग इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़ करते आए हैं. वही एक माबूद है और हम उसके फ़रमांबरदार हैं. 134 यह एक जमात थी

जो गुज़र गई. उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया. और तुम से उनके किए हुए की पूछ नहीं होगी.

135 और कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ तो हिदायत पाओगे. कहो कि नहीं, बल्कि हम तो पैरवी करते हैं इब्राहीम के दीन की जो अल्लाह की तरफ़ यकसू (एकाग्रचित्त) था और वह शिर्क करने वालों में न था. 136 कहो, हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज़ पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ उतारी गई है. और उसपर भी जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब और उसकी औलाद पर उतारी गई और जो मिला मूसा और ईसा को और जो मिला सब नबियों को उनके रब की तरफ़ से. हम उनमें से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते और हम अल्लाह ही के फ़रमांबरदार हैं.

137 **फिर अगर वे ईमान लाएँ जिस तरह तुम ईमान लाए हो तो बेशक वे राह पा गए और अगर वे फिर जाएँ तो अब वे ज़िद पर हैं. पस तुम्हारी तरफ़ से अल्लाह उनके लिए काफ़ी है और वह सुनने वाला, जानने वाला है.** 138 **कहो, हमने लिया अल्लाह का रंग और अल्लाह के रंग से किस का रंग अच्छा है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं.**

नोटः– सहाबा का ईमान ही ख़ुदा के नज़र में असली ईमान है, क्योंकि सहाबा का ईमान ना नसली ईमान था, ना रस्मी ईमान था. उनका ईमान हक़ की दरयाफ़्त था. उसका नतीजा यह हुआ कि वह उस ईमान के दाई बन गए जिसको उन्होंने दरयाफ़्त किया था.

जिस काग़ज़ को रिज़र्व बैंक नोट बताता है वही काग़ज़ नोट होता है, इसी तरह जिस ईमान को ख़ुदा ईमान कहे वही ईमान, ईमान है.

ईमान अगर सच्चे माने में इंसान के अंदर दाख़िल होता है तो वह इंसान अल्लाह के रंग में रंग जाता है. दीन और दावत उसका मिशन बन जाता है.

139 कहो, क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ते हो, हालाँकि वह हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी. हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं. और हम ख़ालिस उसके लिए हैं.

140 **क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उसकी औलाद सब यहूदी या ईसाई थे. कहो कि तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह.**

और उससे बड़ा ज़ालिम और कौन होगा

जो उस गवाही को (यानी उस हक़ को) छुपाए जो अल्लाह की तरफ़ से उसके पास आया हुआ है. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं.

नोटः– सुरह 41, आयत 33 में अल्लाह की तरफ़ बुलाने को क़ुरआन सबसे बेहतर अमल बता रहा है, इसी तरह अल्लाह की तरफ़ से आए हुए हक़ को दूसरे इंसानों तक नहीं पहुंचाने को क़ुरआन सबसे बड़ा ज़ुल्म बता रहा है.

141 यह एक जमात थी जो गुज़र गई. उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया. और तुम से उनके किए हुए की पूछ न होगी.

पारा – 2

142 अब बेवक़ूफ़ लोग कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज़ ने उनके क़िबले से फेर दिया. कहो कि पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं. वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है.

143 और इस तरह हमने तुम्हें बीच की उम्मत बना दिया, ताकि तुम हो लोगों पर (हक़ की) गवाही देने वाले और रसूल हो तुम पर (हक़ की) गवाही देने वाला.

और जिस क़िबले पर तुम थे, हमने उसे सिर्फ़ इसलिए ठहराया था कि हम जान लें कि कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उससे उलटे पांव फिर जाता है. और बेशक यह बात भारी है, मगर उन लोगों पर नहीं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी है. और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान को ज़ाया (विनष्ट) कर दे. बेशक अल्लाह लोगों के साथ शफ़क़त (स्नेह) करने वाला, मेहरबान है.

नोटः– क़ुरआन के इस बयान से वाज़ेह है कि क़यामत तक के इंसानों पर हक़ की गवाही देने का काम अब **'उम्मते-मुहम्मदी'** को करना है, क्योंकि अब कोई रसूल आने वाला नहीं है. ख़ुदा की नज़र में वही लोग रसूल की पैरवी करने वाले होंगे जो रसूल वाला काम अंजाम देंगे.

144 हम तुम्हारा मुँह का बार—बार आसमान की तरफ़ उठना देख रहे हैं. पस हम तुम्हें उसी क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जिसे तुम पसंद करते हो. अब अपना रुख़ मसजिदे-हराम (काबा) की तरफ़ फेर दो. और तुम जहाँ कहीं भी हो अपने रुख़ को उसी की तरफ़ करो. और अहले-किताब ख़ूब जानते हैं कि यह हक़ है और उनके रब की जानिब से है. और अल्लाह बेख़बर नहीं उससे जो वे कर रहे हैं. 145 और अगर तुम इन अहले-किताब के सामने तमाम दलीलें पेश कर दो तब भी वे तुम्हारे क़िबले को नहीं मानेंगे. और न तुम उनके क़िबले की पैरवी कर सकते हो. और न वे ख़ुद एक दूसरे के क़िबले को मानते हैं. और इस इल्म के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, अगर तुम उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करोगे तो यक़ीनन तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे. 146 जिन्हें हमने किताब दी है वे उसे इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं. और उनमें से एक गिरोह हक़ को छुपा रहा है, हालाँकि वह उसे जानता है.

147 **हक़ वह है जो तेरा रब कहे. पस तुम हरगिज़ शक करने वालों में से न बनो.**

148 हर एक के लिए एक रुख़ है जिधर वह मुँह करता है. पस तुम भलाइयों की तरफ़ दौड़ो. तुम जहाँ कहीं होंगे अल्लाह तुम सब को ले आएगा. बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है. 149 और तुम जहाँ से भी निकलो अपना रुख़ मसजिदे-हराम की तरफ़ करो. बेशक यह हक़ है, तुम्हारे रब की तरफ़ से है. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं. 150 और तुम जहाँ से भी निकलो अपना रुख़ मसजिदे-हराम की तरफ़ करो और तुम जहाँ भी हो अपना रुख़ उसी की तरफ़ रखो, ताकि लोगों को तुम्हारे ऊपर कोई हुज्जत बाक़ी न रहे, सिवाय उन लोगों के जो उनमें बेइंसाफ़ हैं. पस तुम उनसे न डरो और मुझ से डरो, ताकि मैं अपनी नेमत तुम्हारे ऊपर पूरी कर दूँ, ताकि तुम राह पा जाओ. 151 जिस तरह हमने तुम्हारे दरमियान एक रसूल तुम्हीं में से भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब की और हिकमत की तालीम देता है (तुम्हें ईश-वाणी सुनाता है और उसमें की गहराइयों को स्पष्ट करता है) और तुम्हें वे चीज़ें सिखा रहा है जिन्हें तुम नहीं जानते थे.

152 **पस तुम मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूंगा. और मेरा एहसान मानो, मेरी नाशुक्री मत करो.**

नोटः- शुक्र का जज़्बा इन्सान के ज़ेहन में पेवस्त है, इन्सान देने वाले का शुक्र अदा करता है. सारी नेमतों का देने वाला सिर्फ़ अल्लाह है. इन्सान सारी ज़िंदगी उसकी बेशुमार नेमतों से इस्तेफ़ादा करता रहता है. लेकिन इन्सान ज़िंदगी के हर मोड़ पर इस सबसे बड़े देने वाले को दरयाफ़्त करने में नाकाम रहता है.

इन्सान को चाहिए की वह **नेमतों के देने वाले को** दरयाफ़्त करे और उसका शुक्र अदा करे, लेकिन इन्सान का दुश्मन शैतान उसका ज़ेहन मिली हुई हज़ारों नेमतों से हटा कर, न मिली हुई किसी एक चीज़ की तरफ़ मुतवज्जह करता है. इन्सान इस मामले में बार-बार शैतान का शिकार बनते रहता है. नतीजा यह है कि क़ुरआन के अलफ़ाज़ में, '......**मेरे बंदों में शुक्र करने वाले बहुत थोड़े हैं.**' इंसान को चाहिए कि वह ज़ेहनी लेवल पर हमला करने वाले अपने इस दुश्मन को पहचाने और उसको अपने ज़ेहन से खदेड़े.

153 ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो. यक़ीनन अल्लाह सब्र करने
वालों के साथ है. 154 और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएँ उन्हें मुर्दा मत कहो, बल्कि वे
ज़िंदा हैं, मगर तुम्हें ख़बर नहीं. 155 और हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे कुछ डर और भूख से और
मालों व जानों और फलों की कमी से. और साबित क़दम रहने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो 156
जिनका हाल यह है कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचती है तो वे कहते हैं, हम अल्लाह के हैं और
हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं. 157 यही लोग हैं जिनके ऊपर उनके रब की शाबाशियां हैं और
रहमत है. और यही लोग हैं जो राह पर हैं.

158 सफ़ा और मरवा बेशक अल्लाह की यादगारों में से हैं. पस जो शख़्स बैतुल्लाह का हज
करे या उमरा करे तो उसपर कोई हरज नहीं कि वह उनका तवाफ़ (परिक्रमा) करे और जो कोई
शौक़ से कुछ नेकी करे तो अल्लाह क़द्र करने वाला है, जानने वाला है. 159 जो लोग छुपाते हैं
हमारी उतारी हुई खुली निशानियों को और हमारी हिदायत को, बाद इसके कि हम उसे लोगों के
लिए किताब में खोल चुके हैं तो यही लोग हैं जिनपर अल्लाह लानत करता है और लानत करने
वाले उनपर लानत करते हैं. 160 अलबत्ता जिन्होंने तौबा की और इसलाह कर ली और बयान
किया तो उन्हें मैं माफ़ कर दूँगा और मैं हूँ माफ़ करने वाला, मेहरबान. 161 बेशक जिन लोगों ने
इन्कार किया और उसी हाल में मर गए तो वही लोग हैं कि उनपर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और
आदमियों की, सब की लानत है. 162 उसी हाल में वे हमेशा रहेंगे. उनपर से अज़ाब हल्का नहीं

किया जाएगा और न उन्हें ढील दी जाएगी.

163 और तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है. उसके सिवा कोई माबूद नहीं. वह बड़ा मेहरबान है, निहायत रहम वाला है. 164 बेशक आसमानों और ज़मीन की बनावट में और रात व दिन के आने जाने में और उन कश्तियों में जो इंसानों के काम आने वाली चीज़ें लेकर समुंदर में चलती हैं और उस पानी में जिस को अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उससे मुर्दा ज़मीन को ज़िंदगी बख़्शी, और उसने ज़मीन में सब क़िस्म के जानवर फैला दिए. और हवाओं की गर्दिश में और बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दरमियान (उसके) हुक्म के ताबे हैं, उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं.

165 **और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसके बराबर ठहराते हैं. उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से रखना चाहिए. और जो ईमान** वाले हैं वे **सबसे ज़्यादा अल्लाह से मुहब्बत रखने वाले हैं. और अगर ये ज़ालिम उस वक़्त को देख लें, जबकि वे अज़ाब को देखेंगे कि ज़ोर सारा का सारा अल्लाह का है और अल्लाह बड़ा सख़्त अज़ाब देने वाला है.**

नोटः– ● इंसान की फ़ितरत में यह है कि वह देने वाले से मुहब्बत करता है, यह जज़्बा इंसान की तबीयत में पेवस्त है. इसी उसूल की रोशनी में किसी इंसान के सामने आप छोटी सी चीज़ पेश कर दीजिए वह आपको शुक्रिया कहेगा, उसके दिल में आपके लिए मुहब्बत पैदा होगी.

इंसान को सब कुछ देने वाला ख़ुदा है. अगर ख़ुदा इंसान को न दे, तो इंसान को कहीं से कुछ न मिले. इसका फ़ितरी तक़ाज़ा यह है कि इंसान के दिल में ख़ुदा के लिए सबसे ज़्यादा मुहब्बत पैदा हो. इस इम्तिहानी दुनिया में ख़ुदा इंसान को सब कुछ परदे के पीछे से दे रहा है, तो अब इंसान का यह काम है कि वह अपने सबसे बड़े देने वाले को शऊरी तौर पर दरयाफ़्त करे, तभी इंसान के दिल में ख़ुदा के लिए सबसे ज़्यादा मुहब्बत हो सकती है.

● बंदे की हक़ीक़ी मुहब्बत का मरकज़ ख़ुदा की ज़ात होना चाहिए. इन्सान को अपने बेटा-बेटी से मुहब्बत होती है, तो ख़ुदा से उसे 'सूपर-मुहब्बत' होना चाहिए. ख़ुदा के सिवा 'सूपर मुहब्बत' दूसरे किसी के लिए जायज़ नहीं. बेटा-बेटी से जो मुहब्बत होती है वह अमल से ज़ाहिर होती है. तो 'सूपर मुहब्बत' क्या रस्मी अलफ़ाज़ तक महदूद होकर रह जाएगी? क़ुरआन में दूसरी जगह इरशाद हुआ है कि '**अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो**'. मेरी पैरवी से मुराद जिस काम में नबी ने अपने आपको झोंक दिया था, पैरवी करने वालों को भी उसी काम में अपने आपको झोंक देना चाहिए और वह काम दावत का काम है.

166 जबकि वे लोग जिनके कहने पर दूसरे चलते थे (यानी लीडर व रहनुमा) उन लोगों से अलग हो जाएँगे जो उनके कहने पर चलते थे. अज़ाब उनके सामने होगा और उनके सब तरफ़ के रिश्ते टूट चुके होंगे. 167 वे लोग जो पीछे चले थे (यानी पैरवी करने वाले) कहेंगे, काश! हमें दुनिया की तरफ़ (एक बार और) लौटना मिल जाता तो हम भी उनसे अलग हो जाते जैसे ये हमसे अलग हो गए. इस तरह अल्लाह उनके आमाल को उन्हें हसरत बना कर दिखाएगा (अपने आमाल देखकर उन्हें पीढ़ा होगी, पश्चात्ताप होगा) और वे आग से निकल नहीं सकेंगे.

168 लोगो! ज़मीन की चीज़ों में से हलाल और सुथरी चीज़ें खाओ और शैतान के क़दमों पर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है. 169 वह तुम को सिर्फ़ बुरे काम और बेहयाई की तलक़ीन करता है और इस बात की, कि तुम अल्लाह की तरफ़ वे बातें मंसूब करो जिनके बारे में तुम्हें कोई इल्म नहीं. 170 और जब उनसे कहा जाता है कि उसपर चलो जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उसपर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है. क्या उस सूरत में भी कि उनके बाप-दादा न अक़्ल रखते हों और न सीधी राह जानते हों. 171 और इन मुन्किरों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स ऐसे जानवर के पीछे चिल्ला रहा हो जो बुलाने और पुकारने (की आवाज़) के सिवा और कुछ नहीं सुनता. ये बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं. वे कुछ नहीं समझते.

172 ऐ ईमान वालो! हमारी दी हुई पाक चीज़ों को खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम उसकी इबादत करने वाले हो. 173 अल्लाह ने तुम पर हराम किया है सिर्फ़ मुरदार को और ख़ून को और सूअर के गोश्त को और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो. फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए, वह न ख़्वाहिशमंद हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो तो उसपर कोई गुनाह नहीं. बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है. 174 जो लोग उस चीज़ को छुपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में उतारी है और इसके बदले में थोड़ा मोल लेते हैं, वे अपने पेट में सिर्फ़ आग भर रहे हैं. क़यामत के दिन अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उन्हें पाक करेगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है. 175 ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही का सौदा किया और बख़्शिश के बदले अज़ाब का, तो कैसी सहार है उन्हें आग की (यानी नर्क की यातनाएँ सहने का कैसा अजीब साहस है उनका!). 176 यह इसलिए कि अल्लाह ने अपनी किताब को ठीक-ठीक उतारा, मगर जिन लोगों ने किताब में कई राहें निकाल लीं वे ज़िद में दूर जा पड़े.

177 नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुँह पूर्व और पश्चिम की तरफ़ कर लो. बल्कि नेकी यह है कि आदमी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और फ़रिश्तों पर और किताब पर और पैग़म्बरों पर. और माल दे अल्लाह की मुहब्बत में रिश्तेदारों को और यतीमों को और मोहताजों को और मुसाफ़िरों को और माँगने वालों को और गरदनें छुड़ाने में. और नमाज़ क़ायम

करे और ज़कात अदा करे और जब अहद कर लें तो उसे पूरा करें. और सब्र करने वाले सख़्ती और तकलीफ़ में और लड़ाई के वक़्त, यही लोग हैं जो सच्चे निकले और यही हैं डर रखने वाले.

178 ऐ ईमान वालो! तुम पर मक़्तूलों (यानी जिन्हें क़तल किया गया उन) का क़िसास (समान बदला) लेना फ़र्ज़ किया जाता है. आज़ाद के बदले आज़ाद, ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम, औरत के बदले औरत. फिर जिसे उसके भाई की तरफ़ से कुछ माफ़ी हो जाए तो उसे चाहिए कि मारूफ़ (यानी उचित रीति) की पैरवी करे और ख़ूबी के साथ उसे अदा करे. यह तुम्हारे रब की तरफ़ से एक आसानी और मेहरबानी है. अब इसके बाद भी जो शख़्स ज़्यादती करे उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है. 179 ऐ अक़्ल वालो! क़िसास में तुम्हारे लिए ज़िंदगी है, (यह हुक्म इसलिए है,) ताकि तुम बचो. 180 तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है कि जब तुम में से किसी की मौत का वक़्त आ जाए और वह अपने पीछे, माल छोड़ रहा हो तो वह मारूफ़ (यानी दस्तूर) के मुताबिक़ वसीयत कर दे अपने माँ-बाप के लिए और अपने रिश्तेदारों के लिए. यह ज़रूरी है ख़ुदा से डरने वालों के लिए. 181 फिर जो कोई वसीयत को सुनने के बाद उसे बदल डाले तो उसका गुनाह उसी पर होगा जिसने उसे बदला, यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है. 182 अलबत्ता जिसे वसीयत करने वाले के बारे में यह अंदेशा हो कि उसने जानिबदारी या हक़-तलफ़ी की है और वह आपस में सुलह करा दे तो उसपर कोई गुनाह नहीं. अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है.

183 ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया जिस तरह तुम से अगलों पर फ़र्ज़ किया गया था, ताकि तुम परहेज़गार बनो. 184 गिनती के कुछ दिन. फिर जो कोई तुम में बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में तादाद पूरी कर ले. और जिन को ताक़त है तो एक रोज़े का बदला एक मिस्कीन का खाना है. जो कोई मज़ीद (अतिरिक्त) नेकी करे तो वह उसके लिए बेहतर है. और तुम रोज़ा रखो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, अगर तुम जानो.

185 **रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन उतारा गया, हिदायत है सारे इन्सानों के लिए और खुली निशानियाँ रास्ते की और हक़ व बातिल के दरमियान फ़ैसला करने वाला.**

नोटः- जो चीज़ **'सारे इंसानों के लिए हिदायत का ज़रिया'** है, वह चीज़ **सारे इंसानों तक पहुँचाना** कितना ज़्यादा ज़रूरी है.

पस तुम में से जो कोई इस महीने को पाए वह इसके रोज़े रखे. और जो बीमार हो या सफ़र पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले. अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती करना नहीं चाहता. और यह इसलिए कि तुम गिनती पूरी कर लो और अल्लाह की बड़ाई करो इसपर कि उसने तुम्हें राह बताई और ताकि तुम उसके शुक्रगुज़ार बनो.
186 और जब मेरे बंदे तुम से मेरे बारे में पूछें तो मैं नज़दीक हूँ, पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ, जबकि वह मुझे पुकारता है. तो चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझ पर यक़ीन रखें, ताकि वे हिदायत पाएं.
187 तुम्हारे लिए रोज़े की रात में अपनी बीवियों के पास जाना जायज़ किया गया. वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो. अल्लाह ने जाना कि तुम अपने आप से ख़यानत कर रहे थे तो उसने तुम पर इनायत की और तुम्हें माफ़ कर दिया. तो अब तुम उनसे मिलो और चाहो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है. और खाओ और पियो, यहाँ तक कि सुबह की सफ़ेद धारी काली धारी से अलग ज़ाहिर हो जाए. फिर पूरा करो रोज़ा रात तक. और जब तुम मस्जिद में एतकाफ़ में हो तो बीवियों से ख़लवत (सहवास) न करो. ये अल्लाह की हदें हैं तो उनके नज़दीक न जाओ. इस तरह अल्लाह अपनी आयतें लोगों के लिए बयान करता है, ताकि वे (बुराइयों से) बचें.
188 और तुम आपस में एक दूसरे के माल को नाहक़ तौर पर न खाओ और उन्हें हाकिमों तक (रिश्वत के तौर पर) न पहुँचाओ, ताकि दूसरों के माल का कोई हिस्सा गुनाह के तौर पर खा जाओ. हालाँकि तुम इसे जानते हो.

189 वे तुम से नए चांद के बारे में पूछते हैं. आप कह दें कि (नया चाँद, और उसकी बदलती सूरतें) वे औक़ात हैं (समय का निर्धारण करने के तरीक़े हैं). लोगों के लिए और हज के लिए. और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ छत पर से. बल्कि नेकी यह है कि आदमी परहेज़गारी करे. और घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरो, ताकि तुम कामयाब हो.
190 और अल्लाह की राह में उन लोगों से लड़ो जो लड़ते हैं तुम से. और ज़्यादती न करो. अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता.
191 और क़तल करो उन्हें जिस जगह पाओ, और निकाल दो उन्हें जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है. और फ़ितना सख़्ततर है क़तल से. और उनसे मसजिदे-हराम के पास न लड़ो, जब तक कि वे तुम से वहाँ जंग न छेड़ें. पस अगर वे तुम से जंग छेड़ें तो उन्हें क़तल करो. यही सज़ा है इन्कार करने वालों की.
192 फिर अगर वे बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है.
193 और उनसे जंग करो, यहाँ तक कि फ़ितना (religious persecution-यानी मज़हबी जबर) बाक़ी न रहे और दीन अल्लाह का हो जाए. फिर अगर वे बाज़ आ जाएँ तो उसके बाद सख़्ती नहीं है, मगर ज़ालिमों पर.

194 हुरमत (प्रतिष्ठा) वाला महीना हुरमत वाले महीने का बदला है और हुरमतों का भी क़िसास (समान बदला) है. पस जिसने तुम पर ज़्यादती की तुम भी उसपर ज़्यादती करो जैसी उसने तुम पर ज़्यादती की है. और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है. 195 और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने आपको हलाकत में न डालो. और अच्छे काम करो, बेशक अल्लाह पसंद करता है अच्छे काम करने वालों को.

196 और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए. फिर अगर तुम रोक दिए जाओ तो जो क़ुर्बानी का जानवर मयस्सर हो, वह पेश कर दो और अपने सिरों को न मुंडवाओ, जब तक कि क़ुर्बानी अपने ठिकाने पर न पहुँच जाए. तुम में से जो बीमार हो या उसके सिर में कोई तकलीफ़ हो तो वह फ़िदया (आर्थिक दंड) दे, रोज़ा या सदक़ा या क़ुर्बानी का. जब अमन की हालत हो और कोई हज के साथ उमरा का फ़ायदा हासिल करना चाहे तो वह क़ुर्बानी पेश करे जो उसे मयस्सर आए. फिर जिसे मयस्सर न आए तो वह हज के दिनों में तीन दिन के रोज़े रखे और सात दिन के रोज़े, जबकि तुम घरों को लौटो. ये पूरे दस हुए. यह उस शख़्स के लिए है जिसका ख़ानदान मसजिदे-हराम के पास आबाद न हो. अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है.

197 **हज के निर्धारित महीने हैं. पस जिसने हज का अज़्म कर लिया तो फिर उसे हज के दौरान न कोई फ़हश (अश्लील) बात करनी चाहिए और न गुनाह की और न लड़ाई झगड़े की. और जो नेक काम तुम करोगे अल्लाह उसे जान लेगा.**

और तुम ज़ादेराह (यात्रा-सामग्री) लो, बेहतरीन ज़ादेराह तक़वा है. ऐ अक़्ल वालो! मुझ से डरो.

नोटः- सारी इबादात की रूह तक़वा है, जहाँ रोज़े का हुक्म आया है वहाँ तक़वे की बात हो रही है, जहाँ नमाज़ का ज़िक्र हो रहा है वहाँ तक़वे की बात हो रही है, जहाँ हज का हुक्म आ रहा है वहाँ तक़वे की बात हो रही है. इससे मालूम हुआ कि तक़वा नहीं तो इबादात नहीं. जहाँ तक ख़ुद का ताल्लुक़ है ईमानवाले को अपनी ज़िंदगी की तामीर तक़वे के ऊपर करना है और जहाँ तक दूसरे इंसानों का ताल्लुक़ है उन्हें ज़िंदगी की हक़ीक़त से बाख़बर करना है.

198 इसमें कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज़ल भी तलाश करो. फिर जब तुम लोग अरफ़ात से वापस हो जाओ तो अल्लाह को याद करो मशअरे-हराम के नज़दीक. और उसे याद

करो जिस तरह अल्लाह ने बताया है. इससे पहले यक़ीनन तुम राह भटके हुए लोगों में थे. 199 फिर तवाफ़ को चलो जहाँ से सब लोग चलें और अल्लाह से माफ़ी माँगों. यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है. 200 फिर जब तुम अपने हज के आमाल पूरे कर लो तो अल्लाह को याद करो जिस तरह तुम पहले अपने बाप-दादा को (पूर्वजों को) याद करते थे, बल्कि उससे भी ज़्यादा. पस कोई आदमी कहता है, ऐ हमारे रब! हमें इसी दुनिया में दे दे तो ऐसे आदमी का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं. 201 और कोई आदमी है जो कहता है कि ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और हमें आग के अज़ाब से बचा. 202 इन्हीं लोगों के लिए हिस्सा है उनके किए का और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है. 203 और अल्लाह को याद करो मुक़र्रर दिनों में. फिर जो शख़्स जल्दी करके दो दिन में मक्का वापस आ जाए तो उसपर कोई गुनाह नहीं और जो शख़्स ठहर जाए उसपर भी कोई गुनाह नहीं. यह उसके लिए है जो अल्लाह से डरे. और तुम अल्लाह से डरते रहो और ख़ूब जान लो कि तुम उसी के पास इकट्ठा किए जाओगे.

204 और लोगों में से कोई ऐसा भी है कि उसकी बात दुनिया की ज़िंदगी में तुम्हें भली लगती है और वह अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह बनाता है. हालाँकि वह सख़्त झगड़ालू है. 205 और जब वह पीठ फेरता है तो वह इस कोशिश में रहता है कि ज़मीन में फ़साद फैलाए और खेतियों और जानवरों को हलाक करे. हालाँकि अल्लाह फ़साद को पसंद नहीं करता. 206 और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर तो वक़ार (यानी प्रतिष्ठा की भावना) उसे गुनाह पर जमा देती है. पस ऐसे शख़्स के लिए जहन्नम काफ़ी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है. 207 और लोगों में कोई ऐसा भी है कि अल्लाह की ख़ुशी की तलाश में अपनी जान को बेच देता है और अल्लाह अपने बंदों पर निहायत मेहरबान है.

208 **ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के क़दमों पर मत चलो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है.**

नोटः- जो इंसान इस्लाम की सदाक़त को दिल-व-जान से क़बूल कर ले वह इंसान इस्लाम का दाई बने बग़ैर रह नहीं सकता. इसके बरख़िलाफ़ जिसका इस्लाम से रस्मी, नसली या मस्लिहतों की बुनियाद पर ताल्लुक़ है, वह दीने-हक़ का दाई नहीं बन सकता. इस कसौटी के ज़रीए से समझा जा सकता है कि जो लोग दीने-हक़ के दाई नहीं बने वह इस्लाम में पूरे-पूरे अभी दाख़िल ही नहीं हुए. इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल न होना शैतान के क़दमों पर चलना है. जो दावत का, दीने-हक़ का सबसे बड़ा दुश्मन है. दीन के नाम पर मौजूदा मुसलमान दावत के अलावा दूसरी सारी चीज़ों को पकड़ा हुआ है, जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज व क़ुर्बानी, मसाजिद व मदारिस की तामीर और उनका तआव्वुन.... etc, लेकिन इन सब के बीच जो चीज़ छूट गई वह दीने-हक़ की दावत है.

209 अगर तुम फिसल जाओ बाद इसके कि तुम्हारे पास वाज़ेह दलीलें आ चुकी हैं तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त है और हिकमत वाला है (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है). 210 क्या लोग इस इंतज़ार में हैं कि अल्लाह बादल के सायबानों में आए और फ़रिश्ते भी आ जाएँ और मामले का फ़ैसला कर दिया जाए और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ फेरे जाते हैं. 211 बनी इसराईल से पूछो, हमने उन्हें कितनी खुली—खुली निशानियाँ दीं. और जो शख़्स अल्लाह की नेमत (यानी उसके कृपावंत संदेश) को बदल डाले, जबकि वह उसके पास आ चुका हो तो अल्लाह यक़ीनन सख़्त सज़ा देने वाला है. 212 ख़ुशनुमा कर दी गई है दुनिया की ज़िंदगी उन लोगों की नज़र में जो मुन्किर हैं और वे ईमान वालों पर हँसते हैं, हालाँकि जो परहेज़गार हैं, वे क़यामत के दिन उनके मुक़ाबले में बालातर (श्रेष्ठ स्थान पर) होंगे. और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है.

213 लोग (पहले) एक ही उम्मत थे. फिर उन्होंने इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया तो अल्लाह ने पैग़म्बरों को भेजा ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले. और उनके साथ उतारी किताब हक़ के साथ, ताकि वह फ़ैसला कर दे उन बातों का जिनमें लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं. और ये इख़्तिलाफ़ उन्हीं लोगों ने किए जिन्हें हक़ दिया गया था, बाद इसके कि उनके पास खुली-खुली हिदायतें आ चुकी थीं, आपस की ज़िद की वजह से. तो अल्लाह ने अपनी तौफ़ीक़ से हक़ के मामले में ईमान वालों को राह दिखाई जिसमें वे झगड़ रहे थे और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह दिखा देता है.

नोटः– अब चूंकि कोई पैग़ंबर आने वाला नहीं है, इसलिए अब ख़ुदा की किताब 'कुरआन' ही पैग़ंबर का क़ायम मुक़ाम है.

214 क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालाँकि अभी तुम पर वे हालात गुज़रे ही नहीं जो तुम्हारे अगलों पर गुज़रे थे. उन्हें सख़्ती और तकलीफ़ पहुँची और वे हिला मारे गए. यहाँ तक कि रसूल और उनके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी. याद रखो, अल्लाह की मदद क़रीब है.

215 लोग तुम से पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें. कह दो कि जो माल तुम ख़र्च करो तो उसमें हक़ है तुम्हारे माँ–बाप का और रिश्तेदारों का और यतीमों का और मोहताजों का और मुसाफ़िरों का. और जो भलाई तुम करोगे, वह अल्लाह को मालूम है. 216 तुम पर लड़ाई का हुक्म हुआ है और वह तुम्हें नागवार महसूस होती है. हो सकता है कि तुम एक चीज़ को नागवार समझो और वह तुम्हारे लिए भली हो. और हो सकता है कि तुम एक चीज़ को पसंद करो और वह तुम्हारे लिए

बुरी हो. और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते.

217 लोग तुम से हुरमत (प्रतिष्ठा) वाले महीने की बाबत पूछते हैं कि इसमें लड़ना कैसा है. कह दो कि इसमें लड़ना बहुत बुरा है. मगर अल्लाह के रास्ते से रोकना और उसका इन्कार करना और मसजिदे-हराम से रोकना और उसके लोगों को वहां से निकालना, अल्लाह के नज़दीक उससे भी ज़्यादा बुरा है. और फ़ितना क़तल से भी ज़्यादा बड़ी बुराई है. और ये लोग तुम से लगातार (निरंतर) लड़ते रहेंगे, यहाँ तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर (तुम पर) क़ाबू पाएं. और तुम में से जो कोई अपने दीन से फिरेगा और कुफ़्र की हालत में मरेगा तो ऐसे लोगों के आमाल ज़ाया (नष्ट) हो गए दुनिया में और आख़िरत में. और वे आग में पड़ने वाले हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे.
218 वे लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया, वे अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं. और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.

219 **लोग तुम से शराब और जुवे के बारे में पूछते हैं. कह दो कि इन दोनों चीज़ों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं. लेकिन उनका गुनाह बहुत ज़्यादा है उनके फ़ायदे से. और लोग तुम से पूछते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें.**

कह दो कि जो ज़रूरत से ज़्यादा हो.

इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम को बयान करता है, ताकि तुम ध्यान करो.

नोटः- मुसलमान वह है जो आख़िरत को अपनी मंज़िल बनाए. जो इस तड़प के साथ अपनी सुबह व शाम कर रहा हो कि उसका ख़ुदा उससे राज़ी हो जाए. ऐसे इंसान के लिए दुनिया का साज़-व-सामान ज़िंदगी की ज़रूरत है, ना कि ज़िंदगी का मक़सद. वह माल हासिल करता है, वह दुनिया के कामों में मशगूल होता है, मगर यह सब कुछ उसके लिए हाजत और ज़रूरत के दर्जे में होता है, न कि मक़सद के दर्जे में. उसके सरमाये की जो चीज़ उसकी हक़ीक़ी ज़रूरत से ज़्यादा हो उसका बेहतरीन इस्तेमाल उसके नज़दीक यह होता है कि वह उसे अपने रब की राह में दे दे, ताकि उसका रब उससे राज़ी हो जाए और उसको अपनी रहमतों के साये में जगह दे. उसकी हर चीज़ बक़दरे-ज़रूरत अपने लिए होती है और जो ज़रूरत से ज़्यादा हो वह दीन के लिए.

220 दुनिया और आख़िरत के मामलों में. और (ऐ नबी!) लोग तुम से यतीमों के बारे में पूछते हैं. कह दो कि जिसमें उनकी बहबूद (बेहतरी) हो, वह बेहतर है. और अगर तुम उन्हें अपने साथ शामिल कर लो तो वे तुम्हारे भाई हैं. और अल्लाह को मालूम है कि कौन ख़राबी पैदा करने वाला है और कौन दुरुस्तगी पैदा करने वाला. और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें मुश्किल में डाल देता. अल्लाह ज़बरदस्त है तदबीर वाला है.

221 और मुशरिक औरतों से निकाह न करो जब तक वे ईमान न लाएँ और मोमिन कनीज़ (दासी) बेहतर है एक मुशरिक औरत से, अगरचे वह तुम्हें अच्छी लगती हो. और अपनी औरतों को मुशरिक मर्दों के निकाह में न दो जब तक वे ईमान न लाएँ, मोमिन ग़ुलाम बेहतर है एक आज़ाद मुशरिक से, अगरचे वह तुम्हें अच्छा लगता हो. ये लोग आग की तरफ़ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत की तरफ़ और अपनी बख़्शिश की तरफ़ बुलाता है. वह अपने अहकाम लोगों के लिए खोलकर बयान करता है, ताकि वे नसीहत पकड़ें. 222 और वे तुम से हैज़ (स्त्रियों के मासिक स्त्राव) का हुक्म पूछते हैं. कह दो कि वह एक गंदगी है, उस हालत में औरतों से अलग रहो. और जब तक वे पाक न हो जाएँ उनके क़रीब न जाओ. फिर जब वे अच्छी तरह पाक हो जाएँ तो उस तरीक़े से उनके पास जाओ जिसका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है. अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और वह दोस्त रखता है पाक रहने वालों को. 223 तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियाँ हैं. पस अपनी खेती में जिस तरह चाहो, जाओ और अपने लिए आगे भेजो और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम्हें ज़रूर उससे मिलना है. और ईमान वालो को ख़ुशख़बरी दे दो.

224 और अल्लाह को अपनी क़समों का निशाना न बनाओ कि तुम भलाई न करो और परहेज़गारी न करो और लोगों के दरमियान सुलह न करो. अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है. 225 अल्लाह तुम्हारी बे-इरादा क़समों पर तुम को नहीं पकड़ता, मगर वह उस काम पर पकड़ता है जो तुम्हारे दिल करते हैं. और अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (धैर्य) वाला है. 226 जो लोग अपनी बीवियों से न मिलने की क़सम खा लें, उनके लिए चार महीने तक की मोहलत है. फिर अगर वे रुजूअ कर लें तो अल्लाह माफ़ करने वाला, मेहरबान है. 227 और अगर वे तलाक़ का फ़ैसला करें तो यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है. 228 और तलाक़ दी हुई औरतें अपने आपको तीन हैज़ तक रोके रखें. और अगर वे अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हैं तो उनके लिए जायज़ नहीं कि वे उस चीज़ को छुपाएं जो अल्लाह ने पैदा किया है उनके पेट में. और इस दौरान में उनके शौहर उन्हें फिर लौटा लेने का हक़ रखते हैं अगर वे सुलह करना चाहें. और दस्तूर के मुताबिक़ जिस तरह (मर्दों के) औरतों पर हुक़ूक़ हैं उसी तरह दस्तूर के मुताबिक़ औरतों के (मर्दों) पर हुक़ूक़ हैं (और ज़िम्मेदारियाँ भी). और मर्दों का उनके मुक़ाबले में

कुछ दर्जा बढ़ा हुआ है. और अल्लाह ज़बरदस्त है, तदबीर वाला है.

229 तलाक़ दो बार है. फिर या तो क़ायदे के मुताबिक़ रख लेना है या ख़ुशउस्लूबी के साथ रुख़सत कर देना. और तुम्हारे लिए यह बात जायज़ नहीं कि तुमने जो कुछ इन औरतों को दिया है, उसमें से कुछ ले लो, मगर यह कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की हदों पर क़ायम न रह सकेंगे. फिर अगर तुम्हें यह डर हो कि दोनों अल्लाह की हदों पर क़ायम न रह सकेंगे तो दोनों पर गुनाह नहीं उस माल में जिसे औरत फ़िदये में दे. ये अल्लाह की हदें हैं तो इनसे बाहर न निकलो. और जो शख़्स अल्लाह की हदों से निकल जाए तो वही लोग ज़ालिम हैं. 230 फिर अगर वह उसे तलाक़ दे दे तो उसके बाद वह औरत उसके लिए हलाल नहीं, जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से निकाह न करे. फिर अगर वह (दूसरा) मर्द उसे तलाक़ दे दे, तब गुनाह नहीं उन दोनों पर कि फिर मिल जाएँ (यानी पहले शौहर से निकाह कर ले), बशर्ते कि उन्हें अल्लाह की हदों पर क़ायम रहने की उम्मीद हो. ये ख़ुदावंदी हदें (सीमाएं) हैं, जिन्हें वह बयान कर रहा है उन लोगों के लिए जो दानिशमंद हैं. 231 और जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो और वे अपनी इद्दत तक पहुँच जाएँ तो उन्हें या तो क़ायदे के मुताबिक़ रख लो या क़ायदे के मुताबिक़ रुख़सत कर दो. और तकलीफ़ पहुँचाने की ग़र्ज़ से न रोको, ताकि उनपर ज़्यादती करो. और जो ऐसा करेगा उसने अपना ही बुरा किया. और अल्लाह की आयतों को खेल न बनाओ. और याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को और उस किताब व हिकमत (ग्रंथ एवं विवेकपूर्ण ज्ञान) को जो उसने तुम्हारी नसीहत के लिए उतारा है. और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है.

232 और जब तुम अपनी औरतों को तलाक़ दे दो और वे अपनी इद्दत पूरी कर लें, तो उन्हें न रोको कि वे अपने शौहरों से निकाह कर लें (यानी उन्हें दूसरा निकाह करने से न रोको). जबकि वे दस्तूर (सामान्य नियम) के अनुसार आपस में राज़ी हो जाएँ. यह नसीहत की जाती है उस शख़्स को जो तुम में से अल्लाह और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता हो. यह तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा और सुथरा तरीक़ा है. और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते. 233 और (तलाक़शुदा) माँएं अपने बच्चों को पूरे दो साल तक दूध पिलाएँ, यह (नसीहत) उन लोगों के लिए जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलाना चाहते हों. और जिसका बच्चा है उसके ज़िम्मे है उन माँओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक़. किसी को हुक्म नहीं दिया जाता, मगर उसकी बर्दाश्त के मुवाफ़िक़. न किसी माँ को उसके बच्चे के सबब से तकलीफ़ दी जाए. और न किसी बाप को उसके बच्चे के सबब से (तकलीफ़ दी जाए). और यही ज़िम्मेदारी वारिस पर भी है. फिर अगर दोनों आपसी रज़ामंदी और मशविरे से दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं. और अगर तुम चाहो कि अपने बच्चे को किसी और औरत से दूध पिलवाओ तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं. बशर्ते कि तुम क़ायदे के

मुताबिक़ वह अदा कर दो, जो तुमने उन्हें देना ठहराया था. और अल्लाह से डरो और जान लो कि जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है.

234 और तुम में से जो लोग मर जाएँ और बीवियां छोड़ जाएँ वे बीवियां अपने आप को चार महीने दस दिन तक इंतज़ार में रखें. फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुँचें तो जो कुछ वे अपने बारे में क़ायदे के मुवाफ़िक़ करें, उसका तुम पर कोई गुनाह नहीं. और अल्लाह तुम्हारे कामों से पूरी तरह बाख़बर है. 235 और तुम्हारे लिए इस बात में कोई गुनाह नहीं कि इन औरतों को पैग़ाम देने में कोई बात इशारे में कहो या अपने दिल में छुपाए रखो. अल्लाह को मालूम है कि तुम ज़रूर (इस बारे में) उनका ध्यान करोगे. मगर छुपकर उनसे वादा न करो, तुम उनसे सिर्फ़ दस्तूर के मुताबिक़ कोई बात कह सकते हो. और निकाह का इरादा उस वक़्त तक न करो, जब तक निर्धारित मुद्दत पूरी न हो जाए. और जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है. पस उससे डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (संयम) वाला है. 236 अगर तुम औरतों को ऐसी हालत में तलाक़ दो कि न उन्हें तुमने हाथ लगाया है और न उनके लिए कुछ महर मुक़र्रर किया है तो उनके महर का तुम पर कुछ मुवाख़िज़ा (देय) नहीं. अलबत्ता उन्हें दस्तूर के मुताबिक़ कुछ सामान दे दो, वुसअत वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक़ है और तंगी वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक़, यह नेकी करने वालों पर लाज़िम है. 237 और अगर तुम उन्हें तलाक़ दो, इससे पहले कि उन्हें हाथ लगाओ और तुम उनके लिए कुछ महर भी मुक़र्रर कर चुके थे तो जितना महर तुमने मुक़र्रर किया हो उसका आधा अदा करो. यह और बात है कि वे माफ़ कर दें या वह मर्द माफ़ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गिरह है. और तुम्हारा माफ़ कर देना ज़्यादा क़रीब है तक़वा से. और आपस में एहसान करने से ग़फ़लत मत करो. जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है.

238 पाबंदी करो नमाज़ों की और पाबंदी करो बीच की नमाज़ की. और खड़े हो अल्लाह के सामने आजिज़ बने हुए. 239 अगर तुम्हें अंदेशा हो तो पैदल या सवारी पर पढ़ लो. फिर जब अमन की हालत आ जाए तो अल्लाह को उस तरीक़े से याद करो जो उसने तुम्हें सिखाया है, जिसे तुम नहीं जानते थे. 240 और तुम में से जो लोग वफ़ात पा जाएँ और बीवियां छोड़ रहे हों वे अपनी बीवियों के बारे में वसीयत कर दें कि एक साल तक उन्हें घर में रखकर ख़र्च दिया जाए. फिर अगर वे ख़ुद से घर छोड़ दें तो जो कुछ वे अपने मामले में दस्तूर के मुताबिक़ करें उसका तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं. अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है. 241 और तलाक़ दी हुई औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक़ ख़र्च देना है, यह लाज़िम है परहेज़गारों के लिए. 242 इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम खोलकर बयान करता है, ताकि तुम समझो.

243 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से भाग खड़े हुए मौत के डर से, और वे हज़ारों की तादाद में थे. तो अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ. फिर अल्लाह ने उन्हें ज़िंदा किया. बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है. मगर अकसर लोग शुक्र नहीं करते. 244 और अल्लाह की राह में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है. 245 कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़े हसना (अच्छा क़र्ज़) दे कि अल्लाह उसे बढ़ाकर उसके लिए कई गुना कर दे. और अल्लाह ही तंगी भी पैदा करता है और कुशादगी भी. और तुम सब उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे.

246 क्या तुमने बनी इसराईल के सरदारों को नहीं देखा मूसा के बाद, जबकि उन्होंने अपने नबी से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दीजिए, ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ें. नबी ने जवाब दिया, ऐसा न हो कि तुम्हें लड़ाई का हुक्म दिया जाए, तब तुम न लड़ो. उन्होंने कहा, यह कैसे हो सकता है कि हम न लड़ें अल्लाह की राह में. हालाँकि हमें अपने घरों से निकाला गया है और अपने बच्चों से जुदा किया गया है. फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म हुआ तो थोड़े लोगों के सिवा सब फिर गए. और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है. 247 और उनके नबी ने उनसे कहा, अल्लाह ने तालूत को तुम्हारे लिए बादशाह मुक़र्रर किया है. उन्होंने कहा कि उसे हमारे ऊपर बादशाही कैसे मिल सकती है. हालाँकि उसके मुक़ाबले में हम बादशाही के ज़्यादा हक़दार हैं. और उसे ज़्यादा दौलत भी हासिल नहीं. नबी ने कहा, अल्लाह ने तुम्हारे मुक़ाबले में उसे चुना है और इल्म और जिस्म में उसे ज़्यादती दी है. और अल्लाह अपनी सल्तनत जिसे चाहता है देता है. अल्लाह बड़ी वुस्अत (व्यापकता) वाला, जानने वाला है. 248 और उनके नबी ने उनसे कहा कि तालूत के बादशाह होने की निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह संदूक़ आ जाएगा जिसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे लिए तस्कीन है. और मूसा के खानदान और हारून के खानदान की छोड़ी हुई यादगारें हैं. उस संदूक़ को फ़रिश्ते ले आएंगे जिसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है, अगर तुम यक़ीन रखने वाले हो.

249 फिर जब तालूत फ़ौजों को लेकर चला तो उसने कहा, अल्लाह तुम्हें एक नदी के ज़रीए आज़माने वाला है. पस जिसने उसका पानी पिया वह मेरा साथी नहीं और जिसने उसे न चखा, वह मेरा साथी है. मगर यह कि कोई अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले (तो उसमें हर्ज नहीं). तो उन्होंने उसमें से ख़ूब पिया सिवाय थोड़े आदमियों के. फिर जब तालूत और जो उसके साथ ईमान पर क़ायम रहे थे, दरिया पार कर चुके तो वे लोग (जिन्होंने उस नहर से ख़ूब पानी पिया था) बोले कि आज हमें जालूत और उसकी फ़ौजों से लड़ने की ताक़त नहीं. जो लोग यह जानते थे कि वे अल्लाह से मिलने वाले हैं, उन्होंने कहा कि कितनी ही छोटी जमाअतें अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअतों पर ग़ालिब आयी हैं. और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है. 250 और जब जालूत और उसकी फ़ौजों से उनका सामना हुआ तो उन्होंने कहा, कि ऐ हमारे रब! हमारे ऊपर सब्र डाल दे और हमारे

क़दमों को जमा दे और इन मुन्किरों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर. 251 फिर उन्होंने अल्लाह के हुक्म से उन्हें शिकस्त दी. और दाऊद ने जालूत को क़तल कर दिया. और अल्लाह ने दाऊद को बादशाहत और दानाई (सूझबूझ) अता की और जिन चीज़ों का चाहा इल्म बख़्शा. और अगर अल्लाह कुछ लोगों को कुछ लोगों के ज़रीए हटाता न रहे तो ज़मीन फ़साद से भर जाए. मगर अल्लाह दुनिया वालों पर बड़ा फ़ज़ल फ़रमाने वाला है.

252 ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें सुनाते हैं ठीक–ठीक. और बेशक तुम पैग़म्बरों में से हो. **पारा – 3** 253 इन पैग़म्बरों में से कुछ को हमने कुछ पर फ़ज़ीलत दी. इनमें से कुछ से अल्लाह ने कलाम किया. और कुछ के दर्जे बुलंद किए. और हमने ईसा बिन मरयम को खुली निशानियाँ दीं और हमने उसकी मदद की रूहुल–क़ुदुस से. अल्लाह अगर चाहता तो इनके बाद वाले साफ़ हुक्म आ जाने के बाद न लड़ते, मगर उन्होंने इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया. फिर उनमें से कोई ईमान लाया और किसी ने इन्कार किया. और अगर अल्लाह चाहता तो वे न लड़ते. मगर अल्लाह करता है जो वह चाहता है.

254 ऐ ईमान वालो! ख़र्च करो उन चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं, उस दिन के आने से पहले जिसमें न ख़रीद–फ़रोख़्त है और न दोस्ती है और न सिफ़ारिश. और जो इन्कार करने वाले हैं, वही हैं ज़ुल्म करने वाले. 255 अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. वह ज़िंदा है, सबको थामने वाला. उसे न ऊंघ आती है और न नींद. उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है. कौन है जो उसके पास उसकी इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे. वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है. और वे उसके इल्म में से किसी चीज़ का इहाता (ग्रहण) नहीं कर सकते, मगर जो वह चाहे. उसकी हुकूमत आसमानों और ज़मीन में छाई हुई है. वह थकता नहीं इनके थामने से. और वही है बुलंद मर्तबा, बड़ा.

256 **दीन के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं.**

हिदायत गुमराही से अलग हो चुकी है. पस जो शख़्स शैतान का इन्कार करे और अल्लाह पर ईमान लाए, उसने मज़बूत हल्क़ा (मज़बूत आधार) पकड़ लिया जो टूटने वाला नहीं. और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है.

नोटः– क़ुरआन के इस बयान से वाज़ेह होता है कि दीन के मामले में करने का काम दावत है ना कि ज़बरदस्ती. क़ुरआन के मानने वालों का काम यह है कि वह ख़ुदा का पैग़ाम पूरे ख़ैरख़ाही के साथ उसके बंदों तक पहुँचा दें.

257 अल्लाह काम बनाने वाला है ईमान वालों के, वह उन्हें अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ़ लाता है, और जिन लोगों ने इन्कार किया उनके दोस्त शैतान हैं, वे उन्हें उजाले से निकाल कर अंधेरों की तरफ़ ले जाते हैं. ये आग में जाने वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे.

258 क्या तुमने उसे नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके रब के बारे में हुज्जत की. क्योंकि अल्लाह ने उसे सल्तनत दी थी. जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वह है जो ज़िंदगी और मौत देता है. वह बोला कि मैं भी ज़िंदगी और मौत देता हूँ. इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह सूरज को पूर्व से निकालता है, तू उसे पश्चिम से निकाल दे. तब वह मुन्किर हैरान रह गया. और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता.

259 या जैसे वह शख़्स जिसका गुज़र एक बस्ती पर से हुआ. और वह अपनी छतों पर गिरी हुई थी. उसने कहा, तबाह हो जाने के बाद अल्लाह इस बस्ती को दुबारा कैसे ज़िंदा करेगा. फिर अल्लाह ने उसपर सौ वर्षों तक के लिए मौत तारी कर दी. फिर उसे उठाया. अल्लाह ने पूछा तुम कितनी देर इस हालत में रहे. उसने कहा, एक दिन या एक दिन से कुछ कम. अल्लाह ने कहा, नहीं, बल्कि तुम सौ वर्ष रहे हो. अब तुम अपने खाने पीने की चीज़ों को देखो कि वे सड़ी नहीं हैं और अपने गधे को देखो. (हमने तुम्हारे साथ यह इसलिए किया,) ताकि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दें. और हड्डियों की तरफ़ देखो, किस तरह हम उनका ढांचा खड़ा करते हैं. फिर उनपर गोश्त चढ़ाते हैं. पस जब उसपर वाज़ेह हो गया तो (उसने) कहा, मैं जानता हूँ कि बेशक
अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है. 260 और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे रब! मुझे दिखा दे
कि तू मुरदों को किस तरह ज़िंदा करेगा. अल्लाह ने कहा, क्या तुमने यक़ीन नहीं किया. इब्राहीम ने कहा, क्यों नहीं, मगर इसलिए कि मेरे दिल को तस्कीन हो जाए. फ़रमाया तुम चार परिंदे लो और उन्हें अपने से हिला लो (यानी अपने से मानूस कर लो). फिर उनमें से हर एक को अलग—अलग पहाड़ी पर रख दो, फिर उन्हें बुलाओ. वे तुम्हारे पास दौड़ते हुए चले आएंगे. और जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है.

261 जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे, एक दाना हो जिससे सात बालें पैदा हों, हर बाली में सौ दानें हों. और अल्लाह बढ़ाता है जिसके लिए
चाहता है. और अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला, जानने वाला है. 262 जो लोग अपने माल
को अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर ख़र्च करने के बाद न एहसान रखते हैं और न तकलीफ़ पहुँचाते हैं, उनके लिए उनके रब के पास उनका अज्र (प्रतिफल) है. और उनके लिए न कोई डर
है और न वे ग़मगीन होंगे. 263 मुनासिब बात कह देना और दरगुज़र (क्षमा) करना उस सदक़े से
बेहतर है, जिसके पीछे सताना हो. और अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, तहम्मुल (संयम) वाला है.

264 ऐ ईमान वालो! एहसान रख कर और सता कर अपने सदक़े को ज़ाया न करो, जिस तरह वह शख़्स जो अपना माल दिखावे के लिए ख़र्च करता है और वह अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता. पस उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक चट्टान हो जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर उसपर ज़ोर की बारिश हो जो उसे बिल्कुल साफ़ कर दे. ऐसे लोगों को अपनी कमाई कुछ भी हाथ नहीं लगेगी. और अल्लाह इन्कार करने वालों को राह नहीं दिखाता.

265 और उन लोगों की मिसाल जो अपने माल को अल्लाह की रज़ा चाहने के लिए और अपने नफ़्स में पुख़्तगी के लिए ख़र्च करते हैं एक बाग़ की तरह है जो बुलंदी पर हो. उसपर ज़ोर की बारिश पड़ी तो वह दुगना फल लाया. और अगर ज़ोर की बारिश न पड़े तो हल्की फुवार भी काफ़ी है. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है. 266 क्या तुम में से कोई यह पसंद करता है कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, उसके नीचे नहरें बह रही हों. उसमें उसके लिए हर क़िस्म के फल हों. और वह (यानी उस बाग़ का मालिक) बूढ़ा हो जाए और उसके बच्चे अभी कमज़ोर हों. तब उस बाग़ पर एक बगूला आए जिसमें आग हो. फिर वह बाग़ जल जाए. अल्लाह इस तरह तुम्हारे लिए खोल कर निशानियाँ बयान करता है, ताकि तुम ग़ौर करो.

267 ऐ ईमान वालो! ख़र्च करो, उम्दा चीज़ को अपनी कमाई में से और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन में से पैदा किया है. और घटिया चीज़ का इरादा न करो कि उसमें से ख़र्च करो. हालाँकि तुम कभी उसे (अपने लिए) लेने वाले नहीं, (अगर कभी) लेंगे तो बड़े ही नागवारी के साथ लेंगे. और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, ख़ूबियों वाला है. 268 शैतान तुम्हें मुहताजी से डराता है और बुरी बात पर उभारता है और अल्लाह वादा देता है अपनी बख़्शिश का और फ़ज़्ल का और अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला है, जानने वाला है. 269 वह जिसे चाहता है हिकमत दे देता है और जिसे हिकमत मिली, उसे बड़ी दौलत मिल गई. और नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक़्ल वाले हैं.

270 और तुम जो ख़र्च करते हो या जो नज़्र (मन्नत) मानते हो उसे अल्लाह जानता है. और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं. 271 अगर तुम अपने सदक़ात ज़ाहिर करके (यानी खुले रूप से) दो तब भी अच्छा है और अगर तुम उन्हें छुपाकर मोहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है. और अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और अल्लाह तुम्हारे कामों से वाक़िफ़ है. 272 उन्हें हिदायत पर लाना तुम्हारा ज़िम्मा नहीं. बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है. और जो माल तुम ख़र्च करोगे अपने ही लिए करोगे. और तुम ख़र्च करो सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा चाहने के लिए. और तुम जो माल (अल्लाह की राह में) ख़र्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा लौटा दिया जाएगा और तुम्हारे लिए उसमें कमी नहीं की जाएगी. 273 (तुम खर्च करो) उन हाजतमंदों पर जो

अल्लाह की राह में घिर गए हों, जो ज़मीन में दौड़-धूप नहीं कर सकते. नावाक़िफ़ आदमी उन्हें ग़नी ख़याल करता है, उनके न माँगने की वजह से. तुम उन्हें उनकी सूरत से पहचान सकते हो. वे लोगों से लिपट कर नहीं माँगते. और जो माल तुम ख़र्च करोगे वह अल्लाह को मालूम है. 274 जो लोग अपने मालों को रात और दिन, छुपे और खुले ख़र्च करते हैं, उनके लिए उनके रब के पास अज्र है. और उनके लिए न ख़ौफ़ है और न वे ग़मगीन होंगे.

275 जो लोग सूद खाते हैं वे क़यामत में न उठेंगे, मगर उस शख़्स की तरह जिसे शैतान ने छूकर ख़बती (पागल) बना दिया हो. यह इसलिए कि उन्होंने कहा कि तिजारत करना भी वैसा ही है जैसा सूद लेना. हालाँकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल ठहराया है और सूद को हराम किया है. फिर जिस शख़्स के पास उसके रब की तरफ़ से नसीहत पहुँची और वह उससे रुक गया तो जो कुछ वह ले चुका वह उसके लिए है. और उसका मामला अल्लाह के हवाले है. और जो शख़्स फिर वही करे तो ऐसे ही लोग दोज़ख़ी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे. 276 अल्लाह सूद को घटाता है और सदक़ात को बढ़ाता है. और अल्लाह पसंद नहीं करता नाशुक्रों को, गुनाहगारों को. 277 बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए और नमाज़ की पाबंदी की और ज़कात अदा की, उनके लिए उनका अज्र है उनके रब के पास. उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे.

278 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और जो सूद बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर तुम मोमिन हो. 279 अगर तुम ऐसा नहीं करते तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से लड़ाई के लिए ख़बरदार हो जाओ. और अगर तुम तौबा कर लो तो असल रक़म के तुम हक़दार हो, न तुम किसी पर ज़ुल्म करो और न तुम पर ज़ुल्म किया जाए. 280 और अगर एक शख़्स तंगी वाला है तो उसकी फ़राख़ी तक (यानी उसके हालात साज़गार होने तक उसे) मोहलत दो. और अगर माफ़ कर दो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, अगर तुम समझो. 281 और उस दिन से डरो जिस दिन तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे. फिर हर शख़्स को उसका किया हुआ पूरा–पूरा मिल जाएगा. और उनपर ज़ुल्म न होगा.

282 ऐ ईमान वालो! जब तुम किसी निर्धारित मुद्दत के लिए उधार का लेनदेन करो तो उसे लिख लिया करो. और उसे लिखे तुम्हारे दरमियान कोई लिखने वाला इंसाफ़ के साथ. और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे, जैसा अल्लाह ने उसे सिखाया उसी तरह उसे चाहिए कि लिख दे. और वह शख़्स लिखवाए जिस पर अदायगी का हक़ आता है. और वह डरे अल्लाह से जो उसका रब है और उसमें कोई कमी न करे. और अगर वह शख़्स जिस पर अदायगी का हक़ आता है बेसमझ हो, या कमज़ोर हो या ख़ुद लिखवाने की क़ुदरत न रखता हो तो चाहिए कि

उसका सरपरस्त (संरक्षक) इंसाफ़ के साथ लिखवा दे. और अपने मर्दों में से दो आदमियों को गवाह कर लो. और अगर दो मर्द न हों तो फिर एक मर्द और दो औरतें गवाह बनें, उन लोगों में से जिन्हें तुम पसंद करते हो. ताकि अगर एक औरत भूल जाए तो दूसरी औरत उसे याद दिला दे. और गवाह इन्कार न करें, जब वे बुलाए जाएँ. और मामला छोटा हो या बड़ा, मीआद के ताय्युन (यानी मुद्दत के निर्धारण) के साथ उसे लिखने में काहिली न करो. यह लिख लेना अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इंसाफ़ का तरीक़ा है और गवाही को ज़्यादा दुरुस्त रखने वाला है और ज़्यादा संभावना है कि तुम शुबहा में न पड़ो. लेकिन अगर कोई सौदा नक़द हो जिसका तुम आपस में लेनदेन किया करते हो, तो तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि तुम उसे न लिखो. मगर जब (इसके अलावा) सौदा करो तो गवाह बना लिया करो. और किसी लिखने वाले को या गवाह को तकलीफ़ न पहुँचाई जाए. और अगर ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात होगी. और अल्लाह से डरो, अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है. 283 और अगर तुम सफ़र में हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो (मामला करते हुए) रहन (गिरवी) रखने की चीज़ें क़ब्ज़े में दे दी जाएँ. और अगर एक (फ़रीक़) दूसरे का एतबार करता हो तो चाहिए कि जिस पर एतबार किया गया, वह एतबार को पूरा करे. और (वह) अल्लाह से डरे जो उसका रब है. और गवाही को न छुपाओ और जो शख़्स (गवाही को) छुपाएगा, उसका दिल गुनाहगार होगा. और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे जानने वाला है.

284 अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है. तुम अपने दिल की बातों को ज़ाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह तुम से उसका हिसाब लेगा. फिर जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा. और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है. 285 रसूल ईमान लाया है उसपर जो उसके रब की तरफ़ से उसपर उतरा है. और मुसलमान भी उसपर ईमान लाए हैं. सब ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर. हम उसके रसूलों में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते. और वे कहते हैं कि हमने सुना और माना. हम तेरी बख़्शिश चाहते हैं, ऐ हमारे रब! और तेरी ही तरफ़ लौटना है.

286 अल्लाह किसी पर ज़िम्मेदारी नहीं डालता, मगर उसकी ताक़त के मुताबिक़. उसे मिलेगा वही जो उसने कमाया और उसपर पड़ेगा वही जो उसने किया. ऐ हमारे रब! हमें न पकड़ अगर हम भूलें या हम ग़लती कर जाएँ. ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डाल जैसा तूने डाला था हम से अगलों पर. ऐ हमारे रब! हमसे वह न उठवा जिसकी ताक़त हम में नहीं. और दरगुज़र कर हम से. और हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर. तू हमारा कारसाज़ है. पस इन्कार करने वालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर.

नोटः– क़ुरआन में इस तरह की बहुतसी दुआएं आयी हैं, जहां रब्बी (ऐ मेरे रब!) और रब्बना (ऐ हमारे रब!) ऐसे अलफ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं. रब्बी या रब्बना कोई सादा अलफ़ाज़ नहीं है. यह अपने रब को पुकारना है. एक इंसान जब कभी किसी दूसरे इंसान को पुकारता है तो वह अपनी पुकार का जवाब पाता है. तो रब को पुकार कर इंसान जवाब पाने से महरूम रहेगा ऐसा कभी नहीं हो सकता.

सूरह–3. आले–इमरान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़० लाम० मीम०. 2 अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िंदा और सबका
थामने वाला. 3 उसने तुम पर किताब उतारी हक़ के साथ, सच्चा करने वाली उस चीज़ को जो
उसके पहले से है और उसने तौरात और इंजील उतारी 4 इससे पहले लोगों की हिदायत के लिए.
और अल्लाह ने फ़ुरक़ान उतारा. बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का इन्कार किया उनके
लिए सख़्त अज़ाब है और अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला है. 5 बेशक अल्लाह से कोई
चीज़ छुपी हुई नहीं न ज़मीन में, और न आसमान में. 6 वही तुम्हारी सूरत बनाता है माँ के पेट में,
जिस तरह चाहता है. उसके सिवा कोई माबूद नहीं. वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है.

7 वही है जिसने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी. उसमें कुछ आयतें मोहकम (सुस्पष्ट) हैं, वे
किताब की असल हैं. और दूसरी आयतें मुतशाबह (कई अर्थ देने वाली) हैं. पस जिनके दिलों में
टेढ़ है वे मुतशाबह आयतों के पीछे पड़ जाते हैं फ़ितने की तलाश में और उनके अर्थों की तलाश

में. हालाँकि उनका अर्थ (final meaning), अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता. और जो लोग पुख़्ता इल्म वाले हैं, वे कहते हैं कि हम उसपर ईमान लाए. सब हमारे रब की तरफ़ से है. और नसीहत वही लोग क़बूल करते हैं जो अक़्ल वाले हैं. 8 ऐ हमारे रब! हमारे दिलों को न फेर, जबकि तू हमें हिदायत दे चुका. और हमें अपने पास से रहमत दे. बेशक तू ही सब कुछ देने वाला है. 9 ऐ हमारे रब! तू जमा करने वाला है लोगों को एक दिन जिसमें कोई शुबहा नहीं. बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता.

10 बेशक जिन लोगों ने इन्कार किया, उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आएंगे और यही लोग आग के ईंधन बनेंगे. 11 उनका अंजाम वैसा ही होगा जैसा फ़िरऔन वालों का और उनसे पहले वालों का हुआ. उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया. इसपर अल्लाह ने उनके गुनाहों के सबब उन्हें पकड़ लिया. और अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है. 12 इन्कार करने वालों से कह दो कि अब तुम मग़लूब किए जाओगे और जहन्नम की तरफ़ जमा करके ले जाए जाओगे और जहन्नम बहुत बुरा ठिकाना है. 13 बेशक तुम्हारे लिए निशानी है उन दो गिरोहों में जिनमें (बद्र में) मुठभेड़ हुई. एक गिरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था और दूसरा मुन्किर था. ये मुन्किर खुली आंखों से उन्हें दुगना देखते थे. और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी मदद का ज़ोर दे देता है. इसमें आँख वालों के लिए बड़ा सबक़ है.

14 लोगों के लिए ख़ुशनुमा कर दी गई है मुहब्बत ख़्वाहिशों की- औरतें, बेटे, सोने–चांदी के ढेर, निशान लगे हुए घोड़े, मवेशी और खेती. ये दुनियावी ज़िंदगी के सामान हैं. और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है. 15 कहो, क्या मैं तुम्हें बताऊँ इससे बेहतर चीज़. उन लोगों के लिए जो डरते हैं. उनके रब के पास बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी. वे उनमें हमेशा रहेंगे. और सुथरी बीवियां होंगी और अल्लाह की रज़ामंदी होगी. और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे, 16 जो कहते हैं, ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आए. पस तू हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा. 17 वे सब्र करने वाले हैं और सच्चे हैं, फ़रमांबरदार हैं और ख़र्च करने वाले हैं और रात के आख़िरी हिस्से में मग़फ़िरत (क्षमा) माँगने वाले हैं.

18 अल्लाह की गवाही है और फ़रिश्तों की और अहले–इल्म की, कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं. वह क़ायम रखने वाला है इंसाफ़ का. उसके सिवा कोई माबूद नहीं. वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है. 19 दीन अल्लाह के नज़दीक सिर्फ़ इस्लाम है. और अहले–किताब ने इस बारे में जो इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया, वह आपस की ज़िद की वजह से किया, बाद इसके कि उन्हें सही इल्म पहुँच चुका था. और जो अल्लाह की आयतों का इन्कार करे तो अल्लाह यक़ीनन जल्द हिसाब लेने वाला है. 20 फिर अगर वे तुम से इस बारे में झगड़ें तो उनसे कह दो कि मैं अपना रुख़ अल्लाह

की तरफ़ कर चुका. और जो मेरे पैरोकार हैं वे भी (अपना रूख अल्लाह की तरफ़ कर चुके हैं). और अहले-किताब से और अनपढ़ों (यानी अहले-मक्का) से पूछो, क्या तुम भी उस तरह इस्लाम लाते हो (जैसे हम इस्लाम लाए हैं). **अगर वे (आप के असहाब की तरह) इस्लाम लाएँ तो उन्होंने राह पा ली. और अगर वे मुँह फेर लें तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ़ पहुँचा देना है.** और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे. 21 जो लोग अल्लाह की निशानियों का इन्कार करते हैं और पैग़म्बरों को नाहक़ क़तल करते हैं और उन लोगों को मार डालते हैं जो लोगों में से इंसाफ़ की दावत लेकर उठते हैं, उन्हें एक दर्दनाक सज़ा की ख़ुशख़बरी दे दो. 22 यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया और आख़िरत में ज़ाया (विनष्ट) हो गए और उनका कोई मददगार नहीं.

23 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें अल्लाह की किताब का एक हिस्सा दिया गया था. उन्हें अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाया जा रहा है कि वह उनके दरमियान फ़ैसला करे. फिर उनका एक गिरोह मुँह फेर लेता है, बेरुख़ी करते हुए. 24 यह इस सबब से कि वे लोग कहते हैं कि हमें हरगिज़ आग न छुएगी सिवाय गिने हुए कुछ दिनों के. और उनकी बनाई हुई बातों ने उन्हें उनके दीन के बारे में धोखे में डाल दिया है. 25 फिर उस वक़्त क्या होगा, जब हम उन्हें जमा करेंगे एक दिन जिसके आने में कोई शक नहीं. और हर शख़्स को जो कुछ उसने किया है, उसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और उनपर ज़ुल्म न किया जाएगा. 26 तुम कहो, ऐ अल्लाह! सल्तनत के मालिक! तू जिसे चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले. और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे. तेरे हाथ में है सब ख़ूबी! बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है! 27 तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है. और तू बेजान से जानदार को निकालता है और तू जानदार से बेजान को निकालता है. और तू जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है.

28 ईमान वालों को चाहिए कि वे ईमान वालों को छोड़ कर हक़ का इन्कार करने वालों को दोस्त न बनाएं. और जो शख़्स ऐसा करेगा तो अल्लाह से उसका कोई ताल्लुक़ नहीं. मगर ऐसी हालत में कि तुम उनसे बचाव करना चाहो (यानी तुम दिफ़ाई तदबीर के तहत ऐसा कर सकते हो). और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से. और अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है. 29 कह दो कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है, उसे छुपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह उसे जानता है. और वह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है. और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है. 30 जिस दिन हर शख़्स अपनी की हुई नेकी को अपने सामने मौजूद पाएगा, और जो बुराई की होगी उसे भी. उस

दिन हर आदमी यह चाहेगा कि काश अभी यह दिन उससे बहुत दूर होता. और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से. और अल्लाह अपने बंदों पर बहुत मेहरबान है.

31 कहो, **अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो**,

अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा. और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा. अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा मेहरबान है.

नोटः– इससे वाज़ेह होता है कि रसूलुल्लाह (स.अ.) की पैरवी नहीं करना, अल्लाह से मुहब्बत नहीं करना है. यह कोई सादा बात नहीं है. सवाल यह है कि रसूलुल्लाह (स.अ.) की पैरवी करना क्या है. इसका जवाब ख़ुद क़ुरआन में मौजूद है. 'कहो कि यह मेरा रास्ता है, मैं लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, समझ-बूझकर. मैं भी और वे लोग भी **जिन्होंने मेरी पैरवी की**..........' (सूरह यूसुफ़ आयत 108) इससे वाज़ेह है कि लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाना रसूलुल्लाह (स.अ.) की पैरवी करना है. और रसूलुल्लाह की पैरवी करना, अल्लाह से मुहब्बत करना है. जो लोग दावती ज़िम्मेदारी से ग़ाफ़िल हैं. उन्हें इस क़ुरआन के बयान की रोशनी में अपना एहतिसाब करना चाहिए.

पैग़म्बर दिन-रात इन्सानों की हिदायत के लिए तड़पता था, आज पैग़म्बर का कौन सा पैरो है जो लोगों की हिदायत के लिए दिन-रात तड़प रहा है?

क़ुरआन के मुताबिक़ दावत का काम अंजाम देकर ही हम रसूलुल्लाह (स.अ.) के पैरो बन सकते हैं.

32 कहो, अल्लाह की इताअत करो और रसूल की. फिर अगर वे मुँह मोड़ें तो अल्लाह हक़ का इन्कार करने वालों को दोस्त नहीं रखता.

33 बेशक अल्लाह ने आदम को और नूह को और आले-इब्राहीम को और आले-इमरान
को सारे आलम के ऊपर मुन्तख़ब किया है. 34 ये बाज़ बाज़ की औलाद हैं. और अल्लाह सुनने
वाला जानने वाला है. 35 जब इमरान की बीवी ने कहा, ऐ मेरे रब! मैंने नज़्र (अर्पित) किया तेरे
लिए जो मेरे पेट में है, वह आज़ाद रखा जाएगा (यानी दुनियावी कामों से आज़ाद रखकर, वह तेरे
ही काम के लिए वक़्फ़ रहेगा). पस तू मुझ से क़बूल कर, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है.

36 फिर जब उसने बच्चे को जन्म दिया, तो उसने कहा, ऐ मेरे रब! मैंने तो लड़की को जन्म दिया है और अल्लाह ख़ूब जानता है कि उसने क्या जन्म दिया है. और लड़का नहीं होता लड़की की मानिंद. और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसे और उसकी औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूँ. 37 पस उसके रब ने उसे अच्छी तरह क़बूल किया और उसे उम्दा तरीक़े से परवान चढ़ाया और ज़करिया को उसका सरपरस्त बनाया. जब कभी ज़करिया उसके पास हुजरे में आता तो वहाँ रिज़्क़ पाता. उसने पूछा, ऐ मरयम! ये चीज़ तुम्हें कहाँ से मिलती है? मरयम ने कहा, यह अल्लाह के पास से है. बेशक अल्लाह जिस को चाहता है, बेहिसाब रिज़्क़ दे देता है. 38
उस वक़्त ज़करिया ने अपने रब को पुकारा. उसने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से पाकीज़ा औलाद अता कर, बेशक तू दुआ का सुनने वाला है. 39 फिर फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी, जबकि वह हुजरे में खड़ा हुआ नमाज़ पढ़ रहा था कि अल्लाह तुझे याहया की ख़ुशख़बरी देता है जो अल्लाह के कलिमे की तसदीक़ करने वाला होगा और सरदार होगा और अपने नफ़्स को रोकने वाला होगा और नबी होगा नेक बंदों में से. 40 ज़करिया ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का किस तरह होगा, हालाँकि मैं बूढ़ा हो चुका और मेरी औरत बांझ है. फ़रमाया इसी तरह अल्लाह कर देता है जो वह चाहता है. 41 ज़करिया ने कहा कि ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर कर दे. (अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते ने) कहा, तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे, मगर इशारे से. और अपने रब को कसरत से याद करते रहो और शाम व सुबह उसकी तस्बीह करो. 42 और जब फ़रिश्तों ने कहा, ऐ मरयम! अल्लाह ने तुम्हें मुन्तख़ब किया और तुम्हें पाक किया और तुम्हें दुनिया भर की औरतों के मुक़ाबले में मुन्तख़ब किया है (चुना है). 43 ऐ मरयम! अपने रब की फ़रमांबरदारी करो और सज्दा करो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो. 44 (ऐ नबी!) यह ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम तुम्हें 'वही' कर रहे हैं (अवतरित कर रहे हैं) और तुम उनके पास मौजूद न थे जब वे अपने क़ुरुअे डाल रहे थे कि कौन मरयम की सरपरस्ती करे और न तुम उस वक़्त उनके पास मौजूद थे, जब वे आपस में झगड़ रहे थे.

45 जब फ़रिश्तों ने कहा, ऐ मरयम! अल्लाह तुम्हें ख़ुशख़बरी देता है अपनी तरफ़ से एक कलिमे की. उसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा. वह दुनिया और आख़िरत में मर्तबे वाला होगा और अल्लाह के मुक़र्रब बंदों में होगा. 46 वह लोगों से बातें करेगा जब माँ की गोद में होगा और जब पूरी उम्र का होगा. और वह सालेहीन (सज्जनों) में से होगा. 47 मरयम ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे किस तरह लड़का होगा, जबकि किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया. फ़रमाया, इसी तरह अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है. जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसे कहता है कि हो जा और वह हो जाता है. 48 और अल्लाह उसे किताब व हिकमत और तौरात व इंजील

सिखाएगा 49 और वह रसूल होगा बनी इसराईल की तरफ़. (पैग़म्बर मसीह ने कहा,) मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लेकर आया हूँ. मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंदे जैसी शकल बनाता हूँ, फिर उसमें फूँक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुक्म से वाक़ई परिंदा बन जाता है. और मैं अल्लाह के हुक्म से जन्मजात अंधे और कोढ़ी को अच्छा करता हूँ. और मैं अल्लाह के हुक्म से मुरदे को जिंदा करता हूँ. और मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम क्या खाते हो और अपने घरों में क्या ज़ख़ीरा करते हो. बेशक उसमें तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो. 50 और मैं तसदीक़ करने वाला हूँ तौरात की जो मुझ से पहले की (आसमानी किताब) है और मैं इसलिए आया हूँ कि कुछ उन चीज़ों को तुम्हारे लिए हलाल ठहराऊं जो तुम पर हराम कर दी गई हैं. और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ. पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो. 51 बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा भी. पस उसकी इबादत करो, यही सीधी राह है.

52 फिर जब ईसा ने उनका इन्कार देखा तो कहा कि कौन मेरा मददगार बनता है अल्लाह की राह में. हवारियों ने कहा कि हम हैं अल्लाह के मददगार. हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और आप गवाह रहिए कि हम फ़रमांबरदार हैं. 53 ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए उसपर जो तूने उतारा, और हमने रसूल की पैरवी की. पस तू लिख ले हमें गवाही देने वालों में. 54 और उन्होंने ख़ुफ़िया तदबीर की और अल्लाह ने भी ख़ुफ़िया तदबीर की. और अल्लाह सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है. 55 जब अल्लाह ने कहा, ऐ ईसा! मैं तुम्हें वापस लेने वाला हूँ और तुम्हें अपनी तरफ़ उठा लेने वाला हूँ और जिन लोगों ने इन्कार किया है उनसे तुम्हें पाक करने वाला हूँ. और जो तुम्हारे पैरोकार हैं उन्हें क़यामत तक उन लोगों पर ग़ालिब करने वाला हूँ जिन्होंने तुम्हारा इन्कार किया है. फिर मेरी तरफ़ होगी सब की वापसी. पस मैं तुम्हारे दरमियान उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला करूंगा जिनमें तुम झगड़ते थे. 56 फिर जिन लोगों ने इन्कार किया उन्हें सख़्त अज़ाब दूँगा दुनिया में और आख़िरत में और उनका कोई मददगार न होगा. 57 और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, उन्हें अल्लाह उनका पूरा अज्र देगा और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता. 58 यह हम तुम्हें सुनाते हैं अपनी आयतें और हिकमत भरी बातें.

59 बेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम जैसी है. अल्लाह ने उसे मिट्टी से बनाया. फिर उसको कहा कि हो जा तो वह हो गया. 60 हक़ बात है तेरे रब की तरफ़ से. पस तुम न हो शक करने वालों में. 61 फिर जो तुम से इस बारे में हुज्जत करे बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो उनसे कहो कि आओ, हम बुलाएँ अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को और हम और तुम ख़ुद भी जमा हों. फिर हम मिलकर दुआ करें कि जो झूठे हैं, उनपर अल्लाह की लानत हो. 62 बेशक यह सच्चा बयान है. और अल्लाह

के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह ही ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है. 63 फिर अगर वे क़बूल न करें तो अल्लाह फसाद करने वालों को ख़ूब जानता है.

64 कहो, ऐ अहले-किताब! आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान मुसल्लम (स्वीकृत) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएं. और हम में से कोई किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा रब न बनाए. फिर अगर वे इससे मुँह मोड़ें तो कह दो कि तुम गवाह रहो, हम फ़रमांबरदार हैं. 65 ऐ अहले-किताब! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो. हालाँकि तौरात और इंजील तो उसके बाद नाज़िल हुई है. क्या तुम यह नहीं समझते? 66 तुम वे लोग हो कि तुमने उस बात के बारे में झगड़ा किया (बहसें की), जिसका तुम्हें कुछ इल्म था. अब तुम ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं. और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते. 67 इब्राहीम न यहूदी था और न नसरानी. बल्कि (सबसे अपना रुख़ मोड़ कर) सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ एकसू था, मुस्लिम (फ़रमांबरदार) था और वह शिर्क करने वालों में से न था. 68 लोगों में ज़्यादा निस्बत इब्राहीम से उन्हें है, जिन्होंने उसकी पैरवी की और (अब) यह पैग़म्बर और जो उसपर ईमान लाए. अल्लाह ईमान वालों का साथी है. 69 अहले-किताब में से एक गिरोह चाहता है कि किसी तरह तुम्हें गुमराह कर दे. हालाँकि वे नहीं गुमराह करते, मगर अपने आपको, लेकिन इसका उन्हें एहसास नहीं होता. 70 ऐ अहले-किताब! अल्लाह की निशानियों का क्यों इन्कार करते हो, हालाँकि तुम गवाह हो. 71 ऐ अहले-किताब! तुम क्यों सही में ग़लत को मिलाते हो और हक़ को छुपाते हो, हालाँकि तुम जानते हो.

72 और अहले-किताब के एक गिरोह ने कहा कि मुसलमानों पर जो चीज़ उतारी गई है उसपर सुबह को ईमान लाओ और शाम को उसका इन्कार कर दो, शायद कि मुसलमान भी उससे फिर जाएँ. 73 और यक़ीन न करो, मगर सिर्फ़ उसका जो चले तुम्हारे दीन पर. कहो, हिदायत वही है जो अल्लाह हिदायत करे. और यह उसी की देन है कि किसी को वही कुछ दे दिया जाए जो तुम्हें दिया गया था. या वे तुम से तुम्हारे रब के यहाँ हुज्जत करें. कहो, बड़ाई अल्लाह के हाथ में है. वह जिसे चाहता है देता है. और अल्लाह बड़ा वुसअत वाला है, इल्म वाला है. 74 वह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए ख़ास कर लेता है. और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है. 75 और अहले-किताब में कोई ऐसा भी है कि अगर तुम उसके पास अमानत का ढेर रखो तो वह उसे तुम्हें अदा कर दे. और उनमें कोई ऐसा है कि अगर तुम उसके पास एक दीनार अमानत रख दो तो वह तुम्हें अदा न करे, इल्ला यह कि तुम उसके सिर पर खड़े हो जाओ, यह इस सबब से कि वे कहते हैं कि ग़ैर–अहले-किताब के बारे में हम पर कोई इल्ज़ाम नहीं. और वे अल्लाह के ऊपर झूठ लगाते हैं,

हालाँकि वे जानते हैं. 76 बल्कि जो शख़्स अपने अहद को पूरा करे और अल्लाह से डरे तो बेशक अल्लाह ऐसे मुत्तक़ियों को दोस्त रखता है.

77 जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़समों को थोड़ी क़ीमत पर बेचते हैं उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं. अल्लाह न उनसे बात करेगा न उनकी तरफ़ देखेगा क़यामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा. और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है. 78 और उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी ज़बानों को किताब में मोड़ते हैं, ताकि तुम उसे किताब में से समझो, हालाँकि वह किताब में से नहीं. (यानी ज़बान को ऐसी चालाकी से इस्तेमाल करते हैं और यह महसूस कराते हैं कि वह किताब का हिस्सा पढ़ रहे हैं). और वे कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है, हालाँकि वह अल्लाह की जानिब से नहीं. और वे जानबूझकर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं. 79 किसी इंसान का यह काम नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिकमत और नबुवत दे और वह लोगों से यह कहे कि तुम अल्लाह को छोड़कर मेरे बंदे बन जाओ. बल्कि वह तो कहेगा कि तुम अल्लाह वाले बनो, इसलिए कि तुम दूसरों को किताब की तालीम देते हो और ख़ुद भी उसे पढ़ते हो. 80 और न वह तुम्हें यह हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को रब बनाओ. क्या वह तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा, बाद इसके कि तुम इस्लाम ला चुके हो.

81 और जब अल्लाह ने पैग़म्बरों (के ज़रीए से अहले-किताब क़ौमों) से अहद लिया तो (अल्लाह ने) कहा कि मैंने तो तुम्हें किताब और हिकमत दी है, फिर जब तुम्हारे पास पैग़म्बर आए जो सच्चा साबित करे उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) को जो तुम्हारे पास हैं तो तुम उसपर ईमान लाओगे और उसकी मदद करोगे. अल्लाह ने कहा, क्या तुमने इक़रार किया और इसपर मेरा अहद क़बूल किया. उन्होंने कहा, हम इक़रार करते हैं. फ़रमाया अब गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ. 82 पस जो शख़्स फिर जाए तो ऐसे ही लोग नाफ़रमान हैं. 83 क्या ये लोग अल्लाह के दीन के सिवा कोई और दीन चाहते हैं. हालाँकि उसी के हुक्म में है जो कोई आसमान और ज़मीन में है, ख़ुशी से या नाख़ुशी से और सब उसी की तरफ़ लौटाए जाएँगे. 84 कहो, हम अल्लाह पर ईमान लाए और उसपर जो हमारे ऊपर उतारा गया है और जो उतारा गया इब्राहीम पर, इस्माईल पर, इस्हाक़ पर और याक़ूब पर और याक़ूब की औलाद पर. और जो दिया गया मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की तरफ़ से. हम उनके दरमियान फ़र्क़ नहीं करते. और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं. 85 और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को चाहेगा तो वह उससे हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में नामुरादों में से होगा. 86 अल्लाह क्योंकर ऐसे लोगों को हिदायत देगा जो ईमान लाने के बाद मुन्किर हो गए. हालाँकि वे गवाही दे चुके कि यह रसूल बरहक़ है और उनके पास रोशन निशानियाँ आ चुकी हैं. और अल्लाह ज़ालिमों को

हिदायत नहीं देता. 87 ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उनपर अल्लाह की, उसके फ़रिश्तों की और सारे इंसानों की लानत होगी. 88 वे इसमें हमेशा रहेंगे, न उनका अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी. 89 अलबत्ता जो लोग उसके बाद तौबा कर लें और अपनी इसलाह कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है. 90 बेशक जो लोग ईमान लाने के बाद मुन्किर हो गए फिर कुफ़्र में बढ़ते रहे, उनकी तौबा हरगिज़ क़बूल न की जाएगी और यही लोग गुमराह हैं. 91 बेशक जिन लोगों ने इन्कार किया और इन्कार की हालत में मर गए, अगर वे ज़मीन भर सोना भी फ़िदये में दें तो (उन में से किसी की तरफ़ से भी) क़बूल नहीं किया जाएगा. उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है और उनका कोई मददगार न होगा.

पारा – 4

92 **तुम हरगिज़ नेकी के मर्तबे को नहीं पहुँच सकते जब तक तुम उन चीज़ों में से ख़र्च न करो जिन्हें तुम महबूब रखते हो. और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे उससे अल्लाह बाख़बर है.**

नोटः-

- अपना माल राहे-ख़ुदा में खर्च करना इस बात का अमली सबूत देना है कि बंदे को अल्लाह और उसके दीन से सच्चे माने में लगाव है. जब-जब तक़ाज़ा सामने आएगा तो बंदे को अमल से यह सबूत देना है कि उसे माल से नहीं, बल्कि अल्लाह से सच्ची मुहब्बत है.
- मौजूदा दुनिया में इंसान को जो माल मिला है, वह उसकी personal और permanent property नहीं है. वह माल इंसान को सिर्फ़ इम्तहान के मक़सद से दिया गया है. उसके ज़रीए से इंसान का यह इम्तहान हो रहा है कि हक़ीक़ी मुहब्बत का ताल्लुक़ वह माल से क़ायम करता है या ख़ुदा से. माल की तरफ़ झुकाव होना, माल को महबूब रखना यह ख़ुदा से दूर जाने की क़ीमत पर ही मुमकिन है. इंसान के पास जो माल है उसका सबसे अच्छा इस्तेमाल (the best use) ख़ुदा की रज़ा के कामों में खर्च करके ही हो सकता है.

93 सब खाने की चीज़ें बनी इसराईल के लिए हलाल थीं, सिवाय उसके जो इसराईल ने अपने ऊपर हराम कर लिया था, इससे पहले कि तौरात उतरे. कहो कि तौरात लाओ और उसे पढ़ो, अगर तुम सच्चे हो. 94 इसके बाद भी जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधें वही ज़ालिम हैं. 95

कहो, अल्लाह ने सच कहा. अब इब्राहीम के दीन की पैरवी करो जो हनीफ़ (यानी पूरी तरह अल्लाह का हो जाने वाला) था और वह शिर्क करने वालों में से न था. 96 बेशक पहला घर जो लोगों के लिए बनाया गया वह वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सारे जहान के लिए हिदायत का मरकज़. 97 उसमें खुली हुई निशानियाँ हैं, मक़ामे-इब्राहीम है, जो उसमें दाख़िल हो जाए वह मामून (सुरक्षित) है. और लोगों पर अल्लाह का यह हक़ है कि जो इस घर तक पहुँचने की ताक़त रखता हो, वह उसका हज करे. और जो कोई मुन्किर हुआ तो अल्लाह तमाम दुनिया वालों से बेनियाज़ है. 98 कहो, ऐ अहले-किताब! तुम क्यों अल्लाह की निशानियों का इन्कार करते हो. हालाँकि अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो. 99 कहो, ऐ अहले-किताब! तुम ईमान लाने वालों को अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो. तुम उसमें ऐब ढूंढते हो. हालाँकि तुम गवाह बनाए गए हो. और अल्लाह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं.

100 ऐ ईमान वालो! अगर तुम अहले-किताब में से एक गिरोह की बात मान लोगे तो वे तुम्हें ईमान के बाद फिर मुन्किर बना देंगे. 101 और तुम किस तरह इन्कार करोगे, हालाँकि तुम्हें अल्लाह की आयतें सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे दरमियान उसका रसूल मौजूद है. और जो शख़्स अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ेगा तो वह पहुँच गया सीधी राह पर. 102 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिए. और तुम्हें मौत न आए, मगर इस हाल में कि तुम मुस्लिम हो. 103 और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकड़ लो और फूट न डालो. और अल्लाह का यह इनाम अपने ऊपर याद रखो कि तुम एक दूसरे के दुश्मन थे, फिर उसने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी. पस तुम उसके फ़ज़्ल से भाई-भाई बन गए. और तुम आग के गढ़े के किनारे खड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें उससे बचा लिया. इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी निशानियाँ बयान करता है, ताकि तुम राह पाओ.

104 **और ज़रूर तुम में एक गिरोह हो जो लोगों को नेकी की तरफ़ बुलाए, भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके और ऐसे ही लोग कामयाब होंगे.**

नोटः- क़ुरआन के इस बयान से वाज़ेह है कि वह कौन सा काम है, जो लोगों को हक़ीक़ी ज़िंदगी में कामयाब बनाने वाला है, वह काम '**दावत व इसलाह**' का काम है.

105 और उन लोगों की तरह न हो जाना जो फ़िरक़ों में बंट गए और आपस में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कर लिया, बाद इसके कि उनके पास वाज़ेह हुक्म आ चुके थे. ऐसे ही लोगों के लिए बड़ा अज़ाब है. 106 जिस दिन कुछ चेहरे रोशन होंगे और कुछ चेहरे काले होंगे, तो जिनके चेहरे काले होंगे उनसे कहा जाएगा, क्या तुम अपने ईमान के बाद मुन्किर हो गए, तो अब चखो अज़ाब अपने कुफ़्र के सबब से. 107 और जिनके चेहरे रोशन होंगे वे अल्लाह की रहमत में होंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे. 108 ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें हक़ के साथ सुना रहे हैं और अल्लाह जहान वालों पर ज़ुल्म नहीं चाहता. 109 और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह का है और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाएँगे.

110 **तुम बेहतरीन गिरोह हो जिसे लोगों के लिए निकाला गया है. तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर अहले-किताब भी ईमान लाते तो उनके लिए बेहतर होता. उनमें से कुछ ईमान वाले हैं और उनमें अकसर नाफ़रमान हैं.**

नोटः-

- अल्लाह पर ईमान इन्सान के अंदर फ़ितरी तौर पर यह सिफ़त पैदा करता है कि वह लोगों को भलाई की तरफ़ बुलाए और उन्हें बुराई से रोके.
- मसनद अहमद की एक हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह (स.अ.) ने फ़रमाया, **'यह उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल है.'** **'उम्मते-मुहम्मदी'** की यह फ़ज़ीलत किसी पुरअसरार सबब से नहीं है, और न यह उसका कोई विरासती हक़ है, इसकी वजह यह है कि ख़त्मे-नबुवत के बाद इस उम्मत को वह भारी ज़िम्मेदारी अदा करना है. जो इससे पहले ख़ुद पैग़म्बर पर आयद हुई थी. पैग़म्बर को इस ज़िम्मेदारी ने क़बलज़-वक़्त बूढ़ा कर दिया था. यह गिरांबार ज़िम्मेदारी, चूंकि ख़ुसूसी तौर पर ख़ातमून-नबीय्यीन की उम्मत पर आयद की गई है. इसी लिए उसका दर्जा भी बुलंद किया गया है, क्योंकि यही उसूल होता हैः जितनी बड़ी ज़िम्मेदारी - उतना बड़ा इनाम.

111 वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते, मगर कुछ सताना. और अगर वे तुम से मुक़ाबला करेंगे तो तुम्हें पीठ दिखाएंगे. फिर उन्हें मदद भी नहीं पहुँचेगी 112 और उनपर मुसल्लत कर दी गई ज़िल्लत, चाहे वे कहीं भी पाए जाएँ, सिवा इसके कि अल्लाह की तरफ़ से कोई अहद (वचन) हो या लोगों की तरफ़ से कोई अहद हो और वे अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ हो गए और उनपर मुसल्लत कर दी गई पस्ती, यह इसलिए कि वे अल्लाह की निशानियों का इन्कार करते रहे और उन्होंने पैग़म्बरों को नाहक़ क़तल किया. यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने नाफ़रमानी की और वे हद से निकल जाते थे.

113 सब अहले-किताब एक जैसे नहीं. इनमें एक गिरोह अहद पर क़ायम है. वे रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वे सज्दा करते हैं. 114 वे अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ते हैं. ये सालेह (नेक) लोग हैं 115 जो नेकी भी वे करेंगे, उसकी नाक़द्री नहीं की जाएगी और अल्लाह परहेज़गारों को ख़ूब जानता है. 116 बेशक जिन लोगों ने इन्कार किया तो अल्लाह के मुक़ाबले में उनके माल और उनकी औलाद उनके कुछ काम न आएंगे. और वे लोग दोज़ख़ वाले हैं वे उसमें हमेशा रहेंगे. 117 वे इस दुनिया की ज़िंदगी में जो कुछ ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा की सी है जिसमें पाला हो (यानी बहुत ज़्यादा ठंडक हो) और वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है फिर वह उसको बर्बाद कर दे. अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं.

118 ऐ ईमान वालो! अपने ग़ैर को अपना राज़दार न बनाओ, वे तुम्हें नुक़सान पहुँचाने में कोई कमी नहीं करते. उन्हें ख़ुशी होती है तुम जितनी तकलीफ़ पाओ. उनकी अदावत उनकी ज़बान से निकल पड़ती है जो उनके दिलों में है वह उससे भी सख़्त है, हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोल कर ज़ाहिर कर दीं हैं अगर तुम अक़्ल रखते हो. 119 तुम उनसे मुहब्बत रखते हो, मगर वे तुम से मुहब्बत नहीं रखते. हालाँकि तुम सब आसमानी किताबों को मानते हो. और वे जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए और जब आपस में मिलते हैं तो तुम पर ग़ुस्से से उंगलियां काटते हैं. कहो कि तुम अपने ग़ुस्से में मर जाओ. बेशक अल्लाह दिलों की बात को जानता है.

120 अगर तुम्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है तो उन्हें रंज होता है और अगर तुम पर कोई मुसीबत आती है तो वे उससे ख़ुश होते हैं.

अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरो तो उनकी कोई तदबीर तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगी. जो कुछ वे कर रहे हैं, सब अल्लाह के बस में है.

नोटः- मौजूदा इम्तिहानी दुनिया में साज़िशें रहेंगी, लेकिन सवाल साज़िशों की मौजूदगी का नहीं है. बल्कि सवाल अहले-ईमान के अंदर सब्र व तक़वा की मौजूदगी का है. अगर अहले-ईमान के अंदर सब्र व तक़वा है तो अल्लाह उनके साथ है और अगर अहले-ईमान के अंदर सब्र व तक़वा नहीं है तो अल्लाह उनके साथ नहीं है, फिर जिसके साथ अल्लाह न हो, फिर उसे कहीं से मदद मिलने वाली नहीं.

121 जब तुम सुबह को अपने घर से निकले और ईमान वालों को जंग के मक़ामात पर तैनात किया और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है. 122 जब तुम में से दो जमाअतों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह उन दोनों जमाअतों का मददगार था. और ईमान वालों को चाहिए कि अल्लाह पर ही भरोसा करें. 123 और अल्लाह तुम्हारी मदद कर चुका है बद्र में, जबकि तुम कमज़ोर थे. पस अल्लाह से डरो, ताकि तुम शुक्रगुज़ार रहो. 124 जब तुम ईमान वालों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे. 125 अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरो और दुश्मन तुम्हारे ऊपर अचानक आ पहुँचे तो तुम्हारा रब पांच हज़ार निशान किए हुए फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा. 126 और यह अल्लाह ने इसलिए किया, ताकि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो और तुम्हारे दिल उससे मुतमइन हो जाएँ और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है जो ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है, 127 ताकि अल्लाह मुन्किरों के एक हिस्से को काट दे या उन्हें ज़लील कर दे कि वे नाकाम लौट जाएँ. 128 तुम्हें इस मामले में कोई दख़ल नहीं. अल्लाह उनकी तौबा क़बूल करे या उन्हें अज़ाब दे, क्योंकि वे ज़ालिम

हैं. 129 और अल्लाह ही के इख़्तियार में है जो कुछ आसमान में है और जो कुछ ज़मीन में है. वह जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे अज़ाब दे और अल्लाह ग़फ़ूर व रहीम है.

130 ऐ ईमान वालो! सूद कई—कई हिस्सा बढ़ाकर न खाओ और अल्लाह से डरो, ताकि तुम कामयाब हो. 131 और डरो उस आग से जो मुन्किरों के लिए तैयार की गई है. 132 और अल्लाह और रसूल की इताअत करो, ताकि तुम पर रहम किया जाए.

133 **और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश की तरफ़ और उस जन्नत की तरफ़** **जिसकी वुस्अत (व्यापकता) आसमान और ज़मीन जैसी है. वह तैयार की गई है अल्लाह से डरने वालों के लिए.** 134 **जो लोग कि ख़र्च करते हैं फ़राग़त और तंगी में. वे गुस्से को पी जाने वाले हैं और लोगों से दरगुज़र करने वाले हैं. और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है.** 135 **और ऐसे लोग कि जब वे कोई खुली बुराई कर बैठें या अपनी जान पर कोई ज़ुल्म कर डालें तो वे अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं. अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाहों को माफ़ करे और वे जानते—बूझते अपने किए पर इसरार नहीं करते.** 136 **ये लोग हैं कि उनका बदला उनके रब की तरफ़ से मग़्फ़िरत (क्षमा) है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. उनमें वे हमेशा रहेंगे. कैसा अच्छा बदला है (अच्छे) काम करने वालों का.**

नोटः— इंसान की सारी दौड़—धूप का मक़सद **रब की रज़ा और जन्नत का हुसूल** होना चाहिए. **रब की रज़ा और जन्नत के हुसूल** के लिए कौन से आमाल दरकार हैं, उनका इन आयात में ज़िक्र है.

137 तुम से पहले बहुत—सी मिसालें गुज़र चुकी हैं तो ज़मीन में चल—फिर कर देखो कि क्या अंजाम हुआ झुठलाने वालों का. 138 यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत व नसीहत है डरने वालों के लिए.

139 और हिम्मत न हारो और ग़म न करो, तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम मोमिन हो. 140 अगर तुम्हें कोई ज़ख़्म पहुँचे तो दुश्मन को भी वैसा ही ज़ख़्म पहुँचा है. और हम इन दिनों को लोगों के दरमियान बदलते रहते हैं. ताकि अल्लाह ईमान वालों को जान ले और तुम में से कुछ लोगों को गवाह बनाए और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता. 141 और ताकि अल्लाह ईमान वालों को

छांट ले और इन्कार करने वालों को मिटा दे. 142 क्या तुम ख़याल करते हो कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह ने तुम में से उन लोगों को जाना नहीं (यानी ऐसे लोगों को इम्तिहान के ज़रीए से अभी छाँटा नहीं) जिन्होंने जिहाद किया और न उन्हें जो साबितक़दम रहने वाले हैं. 143 और तुम मौत की तमन्ना कर रहे थे इससे मिलने से पहले, सो अब तुमने इसे खुली आंखों से देख लिया.

144 मुहम्मद तो बस एक रसूल हैं. उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं. फिर क्या अगर वह मर जाएँ या क़तल कर दिए जाएँ तो तुम उलटे पैर फिर जाओगे. और जो शख़्स फिर जाए वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा और अल्लाह शुक्रगुज़ारों को बदला देगा.

145 **और कोई जान मर नहीं सकती बग़ैर अल्लाह के हुक्म के. अल्लाह का लिखा हुआ वादा है. और जो शख़्स दुनिया का फ़ायदा चाहता है उसे हम दुनिया में से दे देते हैं और जो आख़िरत का फ़ायदा चाहता है उसे हम आख़िरत में से दे देते हैं. और शुक्र करने वालों को हम उनका बदला ज़रूर अता करेंगे.**

नोटः- मोमिन दुनिया को सबकुछ समझ कर ज़िंदगी नहीं गुज़ारता, बल्कि मोमिन का निशाना आख़िरत की कामयाबी हासिल करना होता है.

146 और कितने नबी हैं जिनके साथ होकर बहुत से अल्लाह वाले (अल्लाह की राह में) लड़े. अल्लाह की राह में जो मुसीबतें उनपर पड़ीं उनसे न वे पस्तहिम्मत हुए न उन्होंने कमज़ोरी दिखाई. और न वे दबे. और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है. 147 उनकी ज़बान से इसके सिवा कुछ और न निकला कि ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारे काम में हमसे जो ज़्यादती हुई उसे माफ़ फ़रमा और हमें साबितक़दम रख और मुन्किर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा. 148 पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया का बदला भी दिया और आख़िरत का अच्छा बदला भी. और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है.

149 ऐ ईमान वालो! अगर तुम मुन्किरों की बात मानोगे तो वे तुम्हें उलटे पांव फेर देंगे फिर तुम नाकाम होकर रह जाओगे. 150 बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सबसे बेहतर मदद करने वाला है. 151 हम मुन्किरों के दिलों में तुम्हारा रोब डाल देंगे, क्योंकि उन्होंने ऐसी चीज़ को अल्लाह का शरीक ठहराया जिसके हक़ में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी. उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरी जगह है ज़ालिमों के लिए. 152 और अल्लाह ने तुम से अपने वादे को

सच्चा कर दिखाया, जबकि तुम उन्हें अल्लाह के हुक्म से क़तल कर रहे थे. यहाँ तक कि जब तुम ख़ुद कमज़ोर पड़ गए और तुमने काम में झगड़ा किया और तुम कहने पर न चले, जबकि अल्लाह ने तुम्हें वह चीज़ दिखा दी थी जो तुम चाहते थे. तुम में से कुछ दुनिया चाहते थे और तुम में से कुछ आख़िरत चाहते थे. फिर अल्लाह ने तुम्हारा रुख़ उनसे फेर दिया (यानी उनके हाथों तुम्हारी शिकस्त होने दी), ताकि तुम्हारी आज़माइश करे और अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया और अल्लाह ईमान वालो के हक़ में बड़ा फ़ज़्ल वाला है. 153 जब तुम (मोर्चा छोड़कर) भागे जा रहे थे और मुड़कर भी किसी को न देखते थे और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार रहा था. फिर अल्लाह ने (तुम्हारे इस रवय्ये पर) तुम्हें ग़म पर ग़म दिया, ताकि (तुम्हें यह सबक़ मिले कि) तुम रंजीदा न हो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से चूक गई और न उस मुसीबत पर जो तुम पर पड़े. और अल्लाह उससे बाख़बर है जो कुछ तुम करते हो.

154 फिर अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर ग़म के बाद इत्मीनान उतारा, यानी ऊंघ कि इसका तुम में से एक जमात पर ग़लबा हो रहा था और एक जमात वह थी कि उसे अपनी जानों कि फ़िक्र पड़ी हुई थी. वे अल्लाह के बारे में हक़ीक़त के ख़िलाफ़ ख़यालात, जाहिलीयत के ख़यालात क़ायम कर रहे थे. वे कहते थे कि क्या हमारा भी कुछ इख़्तियार है. कहो, सारा मामला अल्लाह के इख़्तियार में है. वे अपने दिलों में ऐसी बात छुपाए हुए हैं जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते. वे कहते हैं कि अगर इस मामले में कुछ हमारा भी दख़ल होता तो हम यहाँ न मारे जाते. कहो, अगर तुम अपने घरों में होते तब भी जिनका क़तल होना लिखा गया था वे अपनी क़तलगाहों की तरफ़ निकल पड़ते. यह इसलिए हुआ कि अल्लाह को आज़माना था जो कुछ तुम्हारे सीनों में है और निखारना था जो कुछ तुम्हारे दिलों में है. और अल्लाह जानता है सीनों वाली बात को. 155 तुम में से जो लोग फिर गए थे, उस दिन जब दोनों गिरोहों में मुठभेड़ हुई. उन्हें शैतान ने उनके कुछ आमाल के सबब से फिसला दिया था. अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया. बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.

156 ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने इन्कार किया. वे अपने भाइयों के बारे में कहते हैं, जबकि वे सफ़र या जिहाद में निकलते हैं और उन्हें मौत आ जाती है, कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते. ताकि अल्लाह उसे उनके दिलों में हसरत का सबब बना दे. और अल्लाह ही जिलाता है और मारता है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है. 157 और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की मग़्फ़िरत और रहमत उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं. 158 और तुम मर गए या मारे गए, बहरहाल तुम अल्लाह ही के पास जमा किए जाओगे. 159 यह अल्लाह की बड़ी रहमत है कि तुम उनके लिए नर्म हो. अगर तुम तुंदख़ू (कठोर) और सख़्त दिल होते तो ये लोग तुम्हारे पास से भाग

जाते. पस इन्हें माफ़ कर दो और उनके लिए मग़फ़िरत माँगो और मामलात में उनसे मशविरा लो. फिर जब फ़ैसला कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो. बेशक अल्लाह उनसे मुहब्बत करता है जो उसपर भरोसा रखते हैं. 160 अगर अल्लाह तुम्हारा साथ दे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हारा साथ छोड़ दे तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद करे. और अल्लाह ही के ऊपर भरोसा करना चाहिए ईमान वालों को.

161 और नबी का यह काम नहीं कि वह कुछ छुपाए रखे और जो कोई छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज़ को क़यामत के दिन हाज़िर करेगा. फिर हर जान को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा और उनपर कुछ ज़ुल्म न होगा. 162 क्या वह शख़्स जो अल्लाह की मर्ज़ी का ताबे (अधीन) है वह उस शख़्स की तरह हो जाएगा, जो अल्लाह का ग़ज़ब लेकर लौटा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है. 163 अल्लाह के यहाँ उनके दर्जे अलग–अलग होंगे. और अल्लाह देख रहा है जो वे करते हैं. 164 अल्लाह ने ईमान वालों पर एहसान किया कि उनमें उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें अल्लाह की आयतें सुनाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब व हिकमत की तालीम देता है (यानी ईश-संदेश सुनाता है और उसकी गहराइयों को स्पष्ट करता है). बेशक ये उससे पहले खुली हुई गुमराही में थे.

165 और जब तुम्हें ऐसी मुसीबत पहुँची जिसकी दुगनी मुसीबत तुम पहुँचा चुके थे तो तुमने कहा कि यह कहाँ से आ गई. कहो, यह तुम्हारे अपने पास से है. बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है. 166 और दोनों जमाअतों के मुठभेड़ के दिन तुम्हें जो मुसीबत पहुँची वह अल्लाह के हुक्म से पहुँची और इस वास्ते कि अल्लाह मोमिनों को जान ले 167 और उन्हें भी जान ले जो मुनाफ़िक़ (पाखंडी) थे, जिनसे कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मन को हटाओ. उन्होंने कहा, अगर हम जानते कि जंग होना है तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते. ये लोग उस दिन ईमान से ज़्यादा कुफ़्र के क़रीब थे. वे अपने मुँह से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है और अल्लाह उस चीज़ को ख़ूब जानता है जिसे वे छुपाते हैं. 168 ये लोग जो ख़ुद बैठे रहे, अपने भाइयों के बारे में कहते हैं कि अगर वे हमारी बात मानते तो वे मारे न जाते. कहो, तुम अपने ऊपर से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो.

169 और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए, उन्हें मुर्दा न समझो. बल्कि वे ज़िंदा हैं अपने रब के पास, उन्हें रोज़ी मिल रही है. 170 वे ख़ुश हैं उसपर जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल में से उन्हें दिया है और ख़ुशख़बरी ले रहे हैं उन लोगों के बारे में, जो उनके पीछे हैं और अभी वहाँ नहीं पहुँचे हैं. उनके लिए भी न कोई ख़ौफ़ है और न वे ग़मगीन होंगे. 171 वे ख़ुश हो रहे हैं, अल्लाह के इनाम व फ़ज़्ल पर और इसपर कि अल्लाह ईमान वालों का अज्र ज़ाया नहीं करता. 172 जिन

लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माना, बाद इसके कि उन्हें ज़ख़्म लग चुका था, उनमें से जो नेक और मुत्तक़ी हैं उनके लिए बड़ा अज्र है 173 जिनसे लोगों ने कहा कि दुश्मन ने तुम्हारे ख़िलाफ़ बड़ी ताक़त जमा कर ली है उससे डरो. लेकिन उस चीज़ ने उनके ईमान में और इज़ाफ़ा कर दिया और वे बोले कि अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है (हमारा काम बनानेवाला एवं सँवारनेवाला है). 174 पस वे अल्लाह की नेमत और उसके फ़ज़्ल के साथ वापस आए. उन लोगों को कोई बुराई पेश नहीं आयी. और वे अल्लाह की रज़ामंदी पर चले और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है. 175 यह शैतान है जो तुम्हें अपने दोस्तों के ज़रीए डराता है. तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझ से डरो अगर तुम मोमिन हो.

176 और वे लोग तुम्हारे लिए ग़म का सबब न बनें जो इन्कार में सबक़त (तत्परता, जल्दी) कर रहे हैं. वे अल्लाह को हरगिज़ कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे. अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा न रखे. उनके लिए बड़ा अज़ाब है. 177 जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र को ख़रीदा है, वे अल्लाह का कुछ बिगाड़ नहीं सकते और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है. 178 और जो लोग कुफ़्र कर रहे हैं, यह ख़याल न करें कि हम जो उन्हें मोहलत दे रहे हैं, यह उनके हक़ में बेहतर है. हम तो बस इसलिए मोहलत दे रहे हैं कि वे जुर्म में और बढ़ जाएँ और उनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है. 179 अल्लाह ऐसा नहीं कि मुसलमानों को उस हालत पर छोड़ दे जिस तरह कि तुम अब हो, जब तक कि वह नापाक को पाक से जुदा न कर ले. और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हें ग़ैब से ख़बरदार कर दे, बल्कि अल्लाह छांट लेता है अपने रसूलों में जिसे चाहता है (फिर रसूलों में से जिस के लिए चाहता है उसे ग़ैब की ख़बर देता है). पस तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूलों पर. और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी अपनाओ तो तुम्हारे लिए बड़ा अज्र है.

180 और जो लोग बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं, उस चीज़ में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल में से दिया है, वे हरगिज़ यह न समझें कि यह उनके हक़ में अच्छा है. बल्कि यह उनके हक़ में बहुत बुरा है जिस चीज़ में वे बुख़्ल कर रहे हैं, उसका क़यामत के दिन उन्हें तौक़ पहनाया जाएगा. और अल्लाह ही वारिस है ज़मीन और आसमान का और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है. 181 अल्लाह ने उन लोगों का क़ौल सुना जिन्होंने कहा कि अल्लाह मोहताज है और हम ग़नी हैं. हम लिख लेंगे उनके इस क़ौल को और उनके पैग़म्बरों को नाहक़ मार डालने को भी. और हम कहेंगे कि अब आग का अज़ाब चखो. 182 यह तुम्हारे अपने हाथों की कमाई है और अल्लाह अपने बंदों के साथ नाइंसाफ़ी करने वाला नहीं. 183 जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है कि हम किसी रसूल को तस्लीम न करें, जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी क़ुर्बानी

पेश न करे जिसे आग खाले, उनसे कहो कि मुझ से पहले तुम्हारे पास रसूल आए खुली निशानियाँ लेकर और वह चीज़ लेकर जिसे तुम कह रहे हो, फिर तुमने क्यों उन्हें मार डाला, अगर तुम सच्चे हो. 184 तो अब अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो तुम से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाए जा चुके हैं जो खुली निशानियाँ और सहीफ़े और रोशन किताब लेकर आए थे.

185 **हर शख़्स को मौत का मज़ा चखना है और तुम्हें पूरा अज्र तो बस क़यामत के दिन मिलेगा. पस जो शख़्स आग से बच जाए और जन्नत में दाख़िल किया जाए वही कामयाब रहा और दुनिया की ज़िंदगी तो बस धोखे का सौदा है.**

नोटः-

- जिस शख़्स को ज़िंदगी ही ना मिले तो उसे ना मौत का मज़ा चखना पड़ेगा और न ज़िंदगी का अंजाम जन्नत या जहन्नम की शकल में सामने आएगा, लेकिन जिसे ज़िंदगी मिली है उसे यह ख़ूब समझ लेना चाहिए कि उसे एक दिन मौत आने वाली है और मौत के बाद ज़िंदगी का अब्दि अंजाम सामने आने वाला है. ज़िंदगी की इस हक़ीक़त को समझे बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारना बिलाशुबहा धोके का सौदा है.
- आख़िरत का मसला हर इंसान का सबसे बड़ा मसला है आख़िरत की कामयाबी ही हक़ीक़ी कामयाबी है और आख़िरत की नाकामी ही हक़ीक़ी नाकामी. हर इंसान हर लम्हा या तो जन्नत की तरफ़ बढ़ रहा है या फिर जहन्नम की तरफ़. इंसान से जुड़े हुए इसी मसले से उसको आगाह करने का नाम दावत है.

186 **यक़ीनन तुम अपने जान व माल में आज़माए जाओगे.** और तुम बहुत सी तकलीफ़देह बातें सुनोगे उनसे जिन्हें तुम से पहले किताब मिली और उनसे भी जिन्होंने शिर्क किया. और अगर तुम सब्र करो और तक़वा इख़्तियार करो तो यह बड़े हौसले का काम है.

187 **और जब अल्लाह ने अहले-किताब से अहद लिया कि**

तुम ख़ुदा की किताब को पूरी तरह लोगों के लिए ज़ाहिर करोगे

और उसे नहीं छुपाओगे. मगर उन्होंने उसे पीठ पीछे डाल दिया और उसे थोड़ी क़ीमत पर बेच डाला. कैसी बुरी चीज़ है जिसे वे ख़रीद रहे हैं.

नोटः- अल्लाह तआला का अहद जो क़ुरआन से पहले वाली अहले-किताब क़ौमों से था यही अहद **'उम्मते-मुस्लिमा'** से भी है कि वह ख़ुदा की किताब को लोगों के लिए ज़ाहिर करेगी. लेकिन माज़ी की अहले-किताब क़ौमों ने जो किया वही **'उम्मते-मुस्लिमा'** की अकसरीयत कर रही है. क़ुरआन के मुताबिक़, ख़ुदा की किताब लोगों के सामने पेश नहीं करना ही उसे पीठ पीछे डाल देना है. क्योंकि क़ुरआन 'हुदल्लिन्नास' है. जो महफ़ूज़ हालत में मुसलमानों के पास मौजूद है.

188 जो लोग अपने उन करतूतों पर ख़ुश हैं और चाहते हैं कि जो काम उन्होंने नहीं किए उसपर उनकी तारीफ़ हो, उन्हें अज़ाब से बरी न समझो. उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है. 189 और
अल्लाह ही के लिए है ज़मीन और आसमान की बादशाही, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है.

190 आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के बारी-बारी आने में अक़्ल वालों के लिए बहुत निशानियाँ हैं.

191 **जो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और ज़मीन की पैदाइश पर ग़ौर करते रहते हैं.**

वे कह उठते हैं, ऐ हमारे रब! तूने यह सब बेमक़सद नहीं बनाया है. तू पाक है, पस हमें आग के अज़ाब से बचा.

नोटः- कायनात उसके ख़ालिक़ की अज़मत की गवाही दे रही हैं, उसकी अज़मत की बेशुमार निशानियाँ सारे कायनात में फैली हुई हैं. ऐसे ख़ालिक़ का हक़ीक़ी ज़िक्र, ग़ौर-व-फ़िक्र की ही सतह पर मुमकिन है. ग़ौर-व-फ़िक्र के ज़रीए से ही इन्सान ख़ालिक़ को उसकी तमाम ख़ूबियों के साथ दरयाफ़्त कर सकता है, ख़ालिक़ के तख़्लिक़ी मंसूबे को और ज़िंदगी की हक़ीक़त को गहराई के साथ समझ सकता है और जो इन्सान यह गहराई के साथ समझ ले, वह ज़िंदगी के हर मोड़ पर अल्लाह को याद करते रहता है. और उसकी ज़बान से बामाना दुआएं निकलती है.

192 ऐ हमारे रब! तूने जिसे आग में डाला उसे तूने वाक़ई रुसवा कर दिया. और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं.

193 **ऐ हमारे रब! हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ़ पुकार रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ. पस हम ईमान लाए. ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे और हमारा ख़ात्मा नेक लोगों के साथ कर.**

नोटः- दाई का काम लोगों को उनके रब की तरफ़ बुलाना है फिर जो हक़ के तालिब होंगे वह इस पुकार पर लब्बैक कहेंगे और जो हक़ के तालिब नहीं होंगे उनपर हुज्जत पूरी हो जाएगी.

194 ऐ हमारे रब! तूने जो वादे अपने रसूलों के ज़रीए हमसे किए हैं उन्हें हमारे साथ पूरा कर और क़यामत के दिन हमें रुसवाई में न डाल. बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ़ करने वाला नहीं है.

195 उनके रब ने उनकी दुआ क़बूल फ़रमाई कि मैं तुम में से किसी का अमल ज़ाया करने वाला नहीं, चाहे वह मर्द हो या औरत, तुम सब एक दूसरे से हो. पस जिन लोगों ने हिजरत की

और जो अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और वे लड़े और मारे गए, मैं उनकी ख़ताएं ज़रूर उनसे दूर कर दूँगा और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करुंगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. यह उनका बदला है अल्लाह के यहाँ और बेहतरीन बदला अल्लाह ही के पास है. 196 और मुल्क के अंदर मुन्किरों की सरगर्मियां तुम्हें धोखे में न डालें 197 यह थोड़ा सा फ़ायदा है. फिर उनका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है. 198 अलबत्ता जो लोग अपने रब से डरते हैं, उनके लिए बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उसमें हमेशा रहेंगे. यह अल्लाह की तरफ़ से उनकी मेज़बानी होगी और जो कुछ अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए है, वही सबसे बेहतर है. 199 और बेशक अहले-किताब में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस किताब को भी मानते हैं जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गई है और उस किताब को भी मानते हैं जो उससे पहले ख़ुद उनकी तरफ़ भेजी गई थी, वे अल्लाह के आगे झुके हुए हैं और अल्लाह की आयतों को थोड़ी क़ीमत पर बेच नहीं देते. उनका अज्र उनके रब के पास है और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है. 200 ऐ ईमान वालो! सब्र करो और मुक़ाबले में मज़बूत रहो और लगे रहो और अल्लाह से डरो, उम्मीद है कि तुम कामयाब होंगे.

सूरह–4. अन–निसा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 **ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और इन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें (ज़मीन पर) फैला दीं.** **और अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और रिश्तेदारों के मामले में (ख़ता–ताल्लुक़) से परहेज़ करो. बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है.**

नोटः– यह आयत बताती है कि सारे इंसानों का ख़ालिक़ इंसानों से मुख़ातिब है. क़ुरआन के मानने वालों की ज़िम्मेदारी है कि ख़ालिक़ के इस पैग़ाम को सारे इंसानों तक पहुंचा दें.

2 और यतीमों का माल उनके हवाले करो. और बुरे माल को अच्छे माल से न बदलो और उनके माल अपने माल के साथ मिलाकर न खाओ. यह बहुत बड़ा गुनाह है. 3 और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीम (लड़कीयों) के मामले में इंसाफ़ न कर सकोगे तो औरतों में से जो तुम्हें पसंद हों उनमें से दो–दो, तीन–तीन, चार–चार तक निकाह कर लो. और अगर तुम्हें अंदेशा हो

कि तुम अद्ल (न्याय) न कर सकोगे तो एक ही निकाह करो, या जो कनीज़ (दासी) तुम्हारे अधीन हो (उनमें से किसी से निकाह कर लो). इससे उम्मीद है कि तुम इंसाफ़ से न हटोगे. 4 और औरतों को उनके महर ख़ुशदिली के साथ अदा करो. फिर अगर वे उसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें अपनी ख़ुशी से तो तुम उसे हंसी—ख़ुशी से खाओ.

5 और नादानों को अपना वह माल न दो, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए क़याम का ज़रिया बनाया है और उस माल में से उन्हें खिलाओ और पहनाओ और उनसे भलाई की बात कहो. 6
और यतीमों को जाँचते रहो, यहाँ तक कि जब वे निकाह की उम्र को पहुँच जाएँ तो अगर उनमें होशियारी (समझदारी) देखो तो उनका माल उनके हवाले कर दो. और उनका माल अनुचित तरीक़े से और इस ख़याल से कि वे बड़े हो जाएँगे न खा जाओ. और जिसे हाजत न हो वह यतीम के माल से परहेज़ करे और जो शख़्स मोहताज हो वह दस्तूर के मुवाफ़िक़ खाए. फिर जब तुम उनका माल उनके हवाले करो तो उनपर गवाह ठहरा लो और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी
है. 7 माँ—बाप और रिश्तेदारों के तरके में (यानी दिवंगत व्यक्ति ने अपने पीछे छोड़ी हुई संपत्ति में) मर्दों का भी हिस्सा है. और माँ—बाप और रिश्तेदारों के तरके में औरतों का भी हिस्सा है, थोड़ा हो
या ज़्यादा हो, एक मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा. 8 और अगर तक़सीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम
और मोहताज मौजूद हों तो उसमें से उन्हें भी कुछ दो और उनसे हमदर्दी की बात कहो. 9 और ऐसे
लोगों को डरना चाहिए कि अगर वे अपने पीछे कमज़ोर बच्चे छोड़ जाते तो उन्हें उनकी बहुत फ़िक्र
रहती. पस उन्हें चाहिए कि अल्लाह से डरें और बात पक्की कहें. 10 जो लोग यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं, वे लोग अपने पेटों में आग भर रहे हैं और वे जल्द ही भड़कती हुई आग में डाले जाएँगे.

11 अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है कि मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है. अगर औरतें दो से ज़्यादा हैं तो उनके लिए दो तिहाई है उस माल से जो मूरिस (विरासत छोड़ने वाला) छोड़ गया है और अगर वह अकेली है तो उसके लिए आधा है. और मय्यत (दिवंगत व्यक्ति) के माँ—बाप को दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है, उस माल का जो वह छोड़ गया है, बशर्ते कि मूरिस की औलाद हो. और अगर मूरिस की औलाद न हो और उसके माँ—बाप उसके वारिस हों तो उसकी माँ का तिहाई है और अगर उसके भाई बहन हों तो उसकी माँ के लिए छठा हिस्सा है. ये हिस्से वसीयत निकालने के बाद या क़र्ज़ की अदायगी के बाद हैं जो वह कर जाता है. तुम्हारे बाप हों या तुम्हारे बेटे हों, तुम नहीं जानते कि उनमें तुम्हारे लिए सबसे ज़्यादा नफ़ा देने वाला कौन है. यह अल्लाह का ठहराया हुआ फ़रिज़ा है. बेशक अल्लाह इल्म वाला,
हिकमत वाला है. 12 और तुम्हारे लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियां छोड़ें, बशर्ते कि उनकी औलाद न हो. और अगर उनकी औलाद हो तो तुम्हारे लिए बीवियों के तरके का

चौथाई है, वसीयत निकालने के बाद जिसकी वे वसीयत कर जाएँ, या कर्ज़ की अदायगी के बाद. और उन बीवियों के लिए चौथाई है तुम्हारे तरके का, अगर तुम्हारी औलाद नहीं है, और अगर तुम्हारी औलाद है तो उनके लिए आठवां हिस्सा है तुम्हारे तरके का, वसीयत निकालने के बाद जिसकी तुम वसीयत कर जाओ या कर्ज़ की अदायगी के बाद. और अगर कोई मूरिस मर्द या औरत ऐसा हो जिसे न औलाद हो और न माँ–बाप ज़िंदा हों, और उसको एक भाई या एक बहन हो तो दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है. और अगर वे इससे ज़्यादा हों तो वे एक तिहाई में शरीक होंगे, वसीयत निकालने के बाद जिसकी वसीयत की गयी हो या क़र्ज़ की अदायगी के बाद, बग़ैर किसी को नुक़सान पहुँचाए. यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह अलीम व हलीम (तहम्मुल वाला) है. 13 ये अल्लाह की ठहराई हुई हदें हैं. और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा, अल्लाह उसे ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे और यही बड़ी कामयाबी है. 14 और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा और उसके मुक़र्रर किए हुए ज़ाब्तों (नियमों) से बाहर निकल जाएगा, उसे वह आग में दाख़िल करेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसके लिए ज़िल्लत वाला अज़ाब है.

15 और तुम्हारी औरतों में से जो कोई बदकारी करे तो उनपर अपनों में से चार मर्द गवाह करो. फिर अगर वे गवाही दे दें तो इन औरतों को घरों के अंदर बंद रखो, यहाँ तक कि उन्हें मौत उठा ले या अल्लाह उनके लिए कोई राह निकाल दे. 16 और तुम में से दो मर्द जो वही बदकारी करें तो उन्हें अज़ियत (यातना) पहुँचाओ. फिर अगर वे दोनों तौबा करें और अपनी इसलाह कर लें तो उनका ख़याल छोड़ दो. बेशक अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है. 17 तौबा जिसे क़बूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है, वह उन लोगों की है जो बुरी हरकत नादानी से कर बैठते हैं, फिर जल्द ही तौबा कर लेते हैं. वही हैं जिनकी तौबा अल्लाह क़बूल करता है और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है. 18 और ऐसे लोगों की तौबा नहीं है जो बराबर गुनाह करते रहें, यहाँ तक कि जब मौत उनमें से किसी के सामने आ जाए, तब वह कहे कि अब मैं तौबा करता हूँ, और न उन लोगों की तौबा है जो इस हाल में मरते हैं कि वे मुन्किर हैं, उनके लिए तो हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है.

19 ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए जायज़ नहीं कि तुम औरतों को ज़बरदस्ती अपनी मीरास में ले लो और न उन्हें इस ग़रज़ से रोके रखो कि तुमने जो कुछ उन्हें दिया है, उसका कुछ हिस्सा उनसे (वापस) ले लो, मगर इस सूरत में कि वे खुली हुई बेहयाई करें. और उनके साथ अच्छी तरह गुज़र–बसर करो. अगर वे तुम्हें नापसंद हों तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसंद न हो, मगर अल्लाह ने उसमें तुम्हारे लिए बहुत बड़ी भलाई रख दी हो. 20 और अगर तुम एक बीवी की

जगह दूसरी बीवी बदलना चाहो और तुम उसे बहुत सा माल दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ
वापस न लो. क्या तुम उसे बोहतान (आक्षेप) लगाकर और सरीह ज़ुल्म करके वापस लोगे. 21
और तुम किस तरह उसे लोगे, जबकि तुम एक दूसरे के साथ ख़लवत (सहवास) कर चुके हो
और वे तुम से पुख़्ता अहद ले चुकी हैं. 22 और उन औरतों से निकाह मत करो जिनसे तुम्हारे
बाप निकाह कर चुके हैं, मगर जो पहले हो चुका. बेशक यह बेहयाई है और नफ़रत की बात है
और बहुत बुरा तरीक़ा है.

23 तुम्हारे ऊपर हराम की गईं तुम्हारी माएं, तुम्हारी बेटियाँ, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फूफियां,
तुम्हारी ख़ालाएँ, तुम्हारी भतीजियां और भानजियाँ और तुम्हारी वे माएं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया,
तुम्हारी दूध शरीक बहनें, तुम्हारी औरतों की माएं और उनकी बेटियाँ जो तुम्हारी परवरिश में हैं,
जो तुम्हारी उन बीवियों से हों जिनसे तुमने सोहबत की है, लेकिन अगर अभी तुमने उनसे सोहबत
न की हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं. और तुम्हारे सुलबी (तुम से पैदा) बेटों की बीवियां और यह
कि तुम इकट्ठा करो दो बहनों को, मगर जो पहले हो चुका. बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान
है. **पारा – 5** 24 और वे औरतें भी हराम हैं जो किसी दूसरे के निकाह में हों, मगर
यह कि वे जंग में तुम्हारे हाथ आएं. यह अल्लाह का हुक्म है तुम्हारे ऊपर. इनके अलावा जो औरतें
हैं वे सब तुम्हारे लिए हलाल हैं, बशर्ते कि तुम अपने माल के ज़रीए से उनके तालिब बनो, उनसे
निकाह करके न कि बदकारी के तौर पर. फिर उन औरतों में से जिनके साथ तुमने अज़्दवाजी
(वैवाहिक) ज़िंदगी शुरू की हो, उन्हें उनके तयशुदा महर दे दो. और महर के ठहराने के बाद जो
तुमने आपस में रज़ामंदी से (कुछ कम-ज़्यादा) किया हो तो उसमें कोई गुनाह नहीं. बेशक अल्लाह
जानने वाला हिकमत वाला है. 25 और तुम में से जो शख़्स सामर्थ्य न रखता हो कि आज़ाद
मुसलमान औरतों से निकाह कर सके तो उसे चाहिए कि वह तुम्हारी उन कनीज़ों (दासियों) में से
किसी के साथ निकाह कर ले जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों और मोमिना हों. अल्लाह तुम्हारे ईमान को
ख़ूब जानता है, तुम आपस में एक हो. पस उनके मालिकों की इजाज़त से उनसे निकाह कर लो
और मारूफ़ तरीक़े से उनके महर अदा कर दो, इस तरह उनसे निकाह किया जाए, न कि आज़ाद
शहवतरानी करें और चोरी-छुपे आशनाइयाँ करें. फिर जब वे निकाह के बंधन में आ जाएँ और
उसके बाद वे बदकारी करें तो आज़ाद औरतों के लिए जो सज़ा है, उसकी आधी सज़ा उनपर है.
यह उसके लिए है जो तुम में से बदकारी का अंदेशा रखता हो. और अगर तुम ज़ब्त (संयम) से
काम लो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है.

26 अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे वास्ते बयान करे और तुम्हें उन लोगों के तरीक़ों की हिदायत

दे जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं और तुम पर तवज्जोह करे, अल्लाह जानने वाला है, हिकमत वाला है. 27 और अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर तवज्जोह करे और जो लोग अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी कर रहे हैं, वे चाहते हैं कि तुम राहेरास्त से बहुत दूर निकल जाओ. 28 अल्लाह चाहता है कि तुम से बोझ को हल्का करे और इंसान कमज़ोर बनाया गया है.

29 ऐ ईमान वालो! आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ तौर पर न खाओ. मगर यह कि तिजारत हो आपस की ख़ुशी से. और क़तल ना करो एक दूसरे को. बेशक अल्लाह तुम्हारे ऊपर बड़ा मेहरबान है. 30 और जो शख़्स सरकशी और ज़ुल्म से ऐसा करेगा उसे हम ज़रूर आग में डालेंगे और यह अल्लाह के लिए आसान है. 31 अगर तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहे जिनसे तुम्हें मना किया गया है तो हम तुम्हारी छोटी बुराइयों को माफ़ कर देंगे और तुम्हें इज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे. 32 और तुम ऐसी चीज़ की तमन्ना न करो जिसमें अल्लाह ने तुम में से एक को दूसरे पर बड़ाई दी है. मर्दों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का और औरतों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का. और अल्लाह से उसका फ़ज़ल माँगो. बेशक अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है. 33 और हमने वालिदैन और रिश्तेदारों के छोड़े हुए में से हर एक के लिए वारिस ठहरा दिए हैं और जिनसे तुमने अहद बांध रखा हो तो उन्हें उनका हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह के रूबरू है हर चीज़.

34 मर्द औरतों के ऊपर क़व्वाम (प्रमुख) हैं. इस कारण कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर बड़ाई दी है और इस कारण कि मर्दों ने अपने माल ख़र्च किए. पस जो नेक औरतें हैं वे फ़रमांबरदारी करने वाली हैं, पीठ पीछे निगहबानी करती हैं अल्लाह की हिफ़ाज़त से. और जिन औरतों से तुम्हें सरकशी का अंदेशा हो, उन्हें समझाओ और उन्हें उनके बिस्तरों में तन्हा छोड़ दो और उन्हें (हल्की) सज़ा दो. फिर अगर वे तुम्हारी इताअत करें तो उनके ख़िलाफ़ इल्ज़ाम की राह न तलाश करो. बेशक अल्लाह सबसे ऊपर है, बहुत बड़ा है. 35 और अगर तुम्हें मियां—बीवी के दरमियान ताल्लुक़ात बिगड़ने का अंदेशा हो तो एक मुंसिफ़ मर्द के रिश्तेदारों में से खड़ा करो और एक मुंसिफ़ औरत के रिश्तेदारों में से खड़ा करो. अगर दोनों इसलाह चाहेंगे तो अल्लाह उनके दरमियान मुवाफ़िक़त कर देगा. बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला है, ख़बरदार है.

36 और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को उसका शरीक न बनाओ. और अच्छा सलूक करो माँ—बाप के साथ और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मिसकीनों और रिश्तेदार पड़ोसी और अजनबी पड़ोसी और पास बैठने वाले और मुसाफ़िर के साथ और ममलूक (अधीन) के साथ. बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वाले बड़ाई करने वाले को 37 जो कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं और जो कुछ उन्हें अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से दे रखा है, उसे छुपाते हैं. और हमने मुन्किरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है. 38

और जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिसका साथी शैतान बन जाए तो वह बहुत बुरा साथी है. 39
उनका क्या नुक़सान था, अगर वे अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह ने जो कुछ उन्हें दे रखा है, उसमें से ख़र्च करते. और अल्लाह उनसे अच्छी तरह बाख़बर है. 40
बेशक अल्लाह ज़रा भी किसी की हक़-तलफ़ी नहीं करेगा. अगर नेकी हो तो वह उसे कई गुना बढ़ा देता है और अपने पास से बहुत बड़ा सवाब देता है.

41 फिर उस वक़्त क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएँगे और तुम्हें उन
लोगों के ऊपर गवाह बनाकर खड़ा करेंगे. 42 वे लोग जिन्होंने इन्कार किया और पैग़म्बर की
नाफ़रमानी की उस दिन तमन्ना करेंगे कि काश ज़मीन उनपर बराबर कर दी जाए, और वे अल्लाह से
कोई बात न छुपा सकेंगे. 43 ऐ ईमान वालो! नज़दीक न जाओ नमाज़ के जिस वक़्त कि तुम नशे
में हो, यहाँ तक कि समझने लगो जो तुम कहते हो, और न उस वक़्त कि ग़ुस्ल की हाजत हो, मगर राह चलते हुए, यहाँ तक कि ग़ुस्ल कर लो. और अगर तुम मरीज़ हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई शौच से आए या तुम औरतों के पास गए हो, फिर तुम्हें पानी न मिले तो तुम पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो और अपने चेहरे और हाथों का मसह कर लो, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है.

44 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था. वे गुमराही को
मोल ले रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी राह से भटक जाओ. 45 अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब
जानता है. और अल्लाह काफ़ी है हिमायत के लिए और अल्लाह काफ़ी है मदद के लिए. 46 यहूद
में से एक गिरोह बात को उसके ठिकाने से हटा देता है और कहता है कि हमने सुना और न माना. और कहते हैं कि सुनो और तुम्हें सुनवाया न जाए. वे अपनी ज़बान को मोड़ कर कहते हैं राइना, दीन में ऐब लगाने के लिए. और अगर वे कहते कि हमने सुना और माना, और सुनो और हम पर नज़र करो तो यह उनके हक़ में ज़्यादा बेहतर और दुरुस्त होता. मगर अल्लाह ने उनके इन्कार के सबब से उनपर लानत कर दी है. पस वे ईमान नहीं लाएँगे, मगर बहुत कम.

47 ऐ वे लोगो! जिन्हें किताब दी गई उसपर ईमान लाओ जो हमने उतारा है, तसदीक़ करने
वाली उस किताब की जो तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों को मिटा दें और फिर उन्हें उलट दें पीठ की तरफ़ या उनपर लानत करें जैसे हमने लानत की सबत वालों पर. और अल्लाह का
हुक्म पूरा होकर रहता है. 48 बेशक अल्लाह उसे नहीं बख़्शेगा कि उसके साथ शिर्क किया जाए.
लेकिन उसके अलावा जो कुछ है उसे, जिसके लिए चाहेगा बख़्श देगा. और जिसने अल्लाह का
शरीक ठहराया उसने बड़ा तूफ़ान बांधा. 49 क्या तुमने देखा उन्हें जो अपने आपको पाकीज़ा कहते

हैं. बल्कि अल्लाह ही पाक करता है जिसे चाहता है, और उनपर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा. 50 देखो, ये अल्लाह पर कैसा झूठ बांध रहे हैं और यही सरीह गुनाह होने के लिए काफ़ी है.

51 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था, वे ज़िब्त व ताग़ूत (झूठी चीज़ों और शैतान) को मानते हैं और मुन्किरों के बारे में कहते हैं कि वे ईमान वालों से ज़्यादा सही रास्ते पर हैं. 52 यही लोग हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की है और जिस पर अल्लाह लानत करे, तुम उसका कोई मददगार न पाओगे. 53 क्या ख़ुदा के इक़्तेदार में (प्रभुसत्ता में) कुछ उनका भी दख़ल है? फिर तो ये लोगों को एक तिल बराबर भी न दें. 54 क्या ये लोगों पर हसद कर रहे हैं, इस सबब कि अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़ल से दिया है. पस हमने आले-इब्राहीम को किताब और हिकमत दी है और हमने उन्हें एक बड़ी सल्तनत भी दे दी. 55 उनमें से किसी ने उसे माना और कोई उससे रुका रहा और ऐसों के लिए जहन्नम की भड़कती हुई आग काफ़ी है. 56 बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों का इन्कार किया, उन्हें हम सख़्त आग में डालेंगे. जब उनके जिस्म की खाल जल जाएगी तो हम उनकी खाल को बदल कर दूसरी कर देंगे, ताकि वे अज़ाब चखते रहें. बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है. 57 और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन्हें हम बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उसमें वे हमेशा रहेंगे, वहाँ उनके लिए सुथरी बीवियां होंगी और उन्हें हम घनी छांव में रखेंगे.

58 अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उनके हक़दारों को पहुँचा दो. और जब लोगों के दरमियान फ़ैसला करो तो इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो. अल्लाह अच्छी नसीहत करता है तुम्हें, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है. 59 ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने में अहले-इख़्तियार की इताअत करो. फिर अगर तुम्हारे दरमियान किसी चीज़ में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ़ लौटाओ, अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो. यह बात अच्छी है और उसका अंजाम बेहतर है. 60 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वे ईमान लाए हैं उसपर जो उतारा गया है तुम्हारी तरफ़ और जो उतारा गया है तुम से पहले, वे चाहते हैं कि अपना मुक़द्दमा (अपना विवाद) ले जाएँ शैतान की तरफ़, हालाँकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि उसे न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें बहका कर बहुत दूर डाल दे. 61 और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह की उतारी हुई किताब की तरफ़ और रसूल की तरफ़ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) तुम से कतरा जाते हैं. 62 फिर उस वक़्त क्या होगा जब उनके अपने हाथों की लाई हुई मुसीबत उनपर पहुँचेगी, उस वक़्त ये तुम्हारे पास क़समें खाते हुए आएंगे कि ख़ुदा की क़सम, हमें तो सिर्फ़ भलाई और मिलाप से ग़रज़ थी. 63 उनके दिलों में जो कुछ है अल्लाह उससे

ख़ूब वाक़िफ़ है. पस तुम उनसे एराज़ (उपेक्षा) करो और उन्हें नसीहत करो और उनसे ऐसी बात कहो, जो उनके दिलों में उतर जाए.

64 और हमने जो रसूल भेजा इसीलिए भेजा कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत (आज्ञापालन) की जाए. और अगर वे, जबकि उन्होंने अपना बुरा किया था, तुम्हारे पास आते और अल्लाह से माफ़ी चाहते और रसूल भी उनके लिए माफ़ी चाहता तो यक़ीनन वे अल्लाह को बख़्शने वाला, रहम करने वाला पाते. 65 पस तेरे रब की क़सम, वे कभी ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक वे अपने आपसी झगड़े में तुम्हें फ़ैसला करने वाला न मान लें. फिर जो फ़ैसला तुम करो उसपर अपने दिलों में कोई तंगी न पाएं और उसे ख़ुशी से क़बूल कर लें. 66 और अगर हम उन्हें हुक्म देते कि अपने आपको हलाक करो या अपने घरों से निकलो तो उनमें से थोड़े ही इसपर अमल करते. और अगर ये लोग वह करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके लिए यह बात बेहतर और ईमान पर साबित रखने वाली होती. 67 और उस वक़्त हम उन्हें अपने पास से बड़ा अज्र देते 68 और उन्हें सीधा रास्ता दिखाते. 69 जो अल्लाह और (उसके) रसूल की इताअत करेगा वह उन लोगों के साथ होगा जिनपर अल्लाह ने इनाम किया, यानी पैग़म्बर और सिद्दीक़ और शहीद और सालेह. कैसी अच्छी है उनकी रिफ़ाक़त (संगति). 70 यह फ़ज़्ल है अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह का इल्म काफ़ी है.

71 ऐ ईमान वालो! अपने बचाव का सामान ले लो, फिर निकलो जुदा—जुदा या इकट्ठे होकर. 72 और तुम में कोई ऐसा भी है जो पीछे रह जाता है. फिर अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर इनाम किया कि मैं उनके साथ न था. 73 और अगर तुम्हें अल्लाह का कोई फ़ज़्ल हासिल हो तो कहता है, गोया तुम्हारे और उसके दरमियान कोई मुहब्बत का रिश्ता ही नहीं-कि काश मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी कामयाबी हासिल करता. 74 पस चाहिए कि लड़ें अल्लाह की राह में वे लोग जो आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी को बेच देते हैं. और जो शख़्स अल्लाह की राह में लड़े, फिर मारा जाए या ग़ालिब हो जाए तो हम उसे बड़ा अज्र देंगे. 75 और तुम्हें क्या हुआ कि तुम नहीं लड़ते अल्लाह की राह में और उन कमज़ोर मर्दों, औरतों और बच्चों के लिए जो कहते हैं कि ख़ुदाया! हमें इस बस्ती से निकाल जिसके बाशिंदे ज़ालिम हैं और हमारे लिए अपने पास से कोई हिमायती पैदा कर दे और हमारे लिए अपने पास से कोई मददगार खड़ा कर दे. 76 जो लोग ईमान वाले हैं, वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो मुन्किर हैं, वे शैतान की राह में लड़ते हैं. पस (ऐ ईमान वालो!) तुम शैतान के साथियों से लड़ो. बेशक शैतान की चाल बहुत कमज़ोर है.

77 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो और

नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो. फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म दिया गया तो उनमें से एक गिरोह इंसानों से ऐसा डरने लगा जैसे अल्लाह से डरना चाहिए या उससे भी ज़्यादा. वे कहते हैं, ऐ हमारे रब! तूने हम पर लड़ाई क्यों फ़र्ज़ कर दी. क्यों न छोड़े रखा हमें थोड़ी मुद्दत तक. कह दो कि दुनिया का फ़ायदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है उसके लिए जो परहेज़गारी करे, और तुम्हारे साथ ज़रा भी ज़ुल्म न होगा. 78 और तुम जहाँ भी होंगे मौत तुम्हें पा लेगी, अगरचे तुम मज़बूत क़िलों में हो. अगर उन्हें कोई भलाई पहुँचती है तो कहते हैं कि यह ख़ुदा की तरफ़ से है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुँचती है तो कहते हैं कि यह तुम्हारे सबब से है. कह दो कि सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है. उन लोगों को क्या हो गया है कि कोई बात समझते ही नहीं. 79 तुम्हें जो भलाई भी पहुँचती है ख़ुदा की तरफ़ से पहुँचती है और तुम्हें जो बुराई पहुँचती है, वह तुम्हारे अपने ही सबब से है. और हमने तुम्हें इंसानों की तरफ़ पैग़म्बर बना कर भेजा है और अल्लाह की गवाही काफ़ी है.

80 जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जो उलटा फिरा तो हमने उनपर तुम्हें निगरां बना कर नहीं भेजा है 81 और ये लोग कहते हैं कि हमें क़बूल है. फिर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उनमें से एक गिरोह उसके ख़िलाफ़ मशविरा करता है, जो वह कह चुका था. और अल्लाह उनकी सरगोशियों (कानाफूसियों) को लिख रहा है. पस तुम उनसे एराज़ (उपेक्षा) करो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह भरोसे के लिए काफ़ी है.

82 क्या ये लोग क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते,

अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो वे इसके अंदर बड़ा इख़्तिलाफ़ (मतभेद) पाते.

नोटः– यह इन्सान के कलाम की सिफ़त नहीं हो सकती कि वह तज़ाद (यानी परस्पर-विरोधी बातों) से पाक हो, यह सिर्फ़ रब के कलाम की सिफ़त हो सकती है कि वह हर क़िस्म के तज़ाद से पाक हो, क़ुरआन की यह सिफ़त यह गवाही दे रही है कि क़ुरआन रब्बे-कायनात की किताब है.

मख़लूक़ हर मामले में महदूदियत में मुब्तिला होती है और ख़ालिक़ हर महदूदियत से पाक. यही वजह है कि ख़ालिक़ का कलाम हर क़िस्म के तज़ाद से पूरी तरह पाक होता है.

83 और जब उन्हें कोई बात अमन या ख़ौफ़ की पहुँचती है तो वह उसे फैला देते हैं. और अगर वे उसे रसूल तक या अपने ज़िम्मेदार लोगों तक पहुँचाते तो उनमें से जो लोग तहक़ीक़ करने वाले हैं,

वे उसकी हक़ीक़त जान लेते. और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो थोड़े लोगों के सिवा तुम सब शैतान के पीछे लग जाते.

84 पस लड़ो अल्लाह की राह में. तुम पर अपनी जान के सिवा किसी की ज़िम्मेदारी नहीं और मुसलमानों को उभारो. उम्मीद है कि अल्लाह मुन्किरों का ज़ोर तोड़ दे और अल्लाह बड़ा ज़ोर वाला और बहुत सख़्त सज़ा देने वाला है. 85 जो शख़्स किसी अच्छी बात के हक़ में कहेगा, उसके लिए उसमें से हिस्सा है और जो बुरी बात की ताईद (समर्थन) करेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है. 86 और जब कोई तुम्हें दुआ दे तो तुम भी दुआ दो, उससे बेहतर या वैसीही, बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है. 87 अल्लाह ही माबूद है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. वह तुम सबको क़यामत के दिन जमा करेगा जिसके आने में कोई शुबहा नहीं. और अल्लाह की बात से बढ़कर सच्ची बात और किस की हो सकती है.

88 फिर तुम्हें क्या हुआ है कि तुम मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) के मामले में दो गिरोह हो रहे हो. हालाँकि अल्लाह ने उनके आमाल के सबब से उन्हें उलटा फेर दिया है. क्या तुम चाहते हो कि उन्हें राह पर लाओ जिन्हें अल्लाह ने गुमराह कर दिया है. और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तुम हरगिज़ उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते. 89 वे चाहते हैं कि जिस तरह उन्होंने इन्कार किया है तुम भी इन्कार करो, ताकि तुम सब बराबर हो जाओ. पस तुम उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ, जब तक वे अल्लाह की राह में हिजरत (स्वदेश त्याग) न करें. फिर अगर वे इसे क़बूल न करें तो उन्हें पकड़ो और जहाँ कहीं उन्हें पाओ, उन्हें क़तल करो और उनमें से किसी को साथी और मददगार न बनाओ. 90 मगर वे लोग जिनका ताल्लुक़ किसी ऐसी क़ौम से हो, जिनके साथ तुम्हारा समझौता है. या वे लोग जो तुम्हारे पास इस हाल में आएं कि उनके सीने तंग हो रहे हैं तुम्हारी लड़ाई से और अपनी क़ौम की लड़ाई से. और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर ज़ोर दे देता तो वे ज़रूर तुम से लड़ते. पस अगर वे तुम्हें छोड़े रहें और तुम से जंग न करें और तुम्हारे साथ सुलह का रवैया रखें तो अल्लाह तुम्हें भी उनके ख़िलाफ़ किसी इक़दाम की इजाज़त नहीं देता. 91 दूसरे कुछ ऐसे लोगों को भी तुम पाओगे जो चाहते हैं कि तुम से भी अमन में रहें और अपनी क़ौम से भी अमन में रहें. जब कभी वे फ़ितने का मौक़ा पाएं तो वे उसमें कूद पड़ते हैं. ऐसे लोग अगर तुम से लड़ने से बाज़ न रहें और तुम्हारे साथ सुलह का रवैया न रखें और अपने हाथ न रोकें तो तुम उन्हें पकड़ो और उन्हें क़तल करो जहाँ कहीं पाओ. ये लोग हैं जिनके ख़िलाफ़ हमने तुम्हें खुली हुज्जत दी है.

92 और मुसलमान का काम नहीं कि वह मुसलमान को क़तल करे, मगर यह कि ग़लती से ऐसा हो जाए. और जो शख़्स किसी मुसलमान को ग़लती से क़तल कर दे तो वह एक मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद करे और मक़्तूल (यानी जिसे क़तल किया गया उस) के वारिसों को ख़ूनबहा

(यानी क़तल का आर्थिक हर्जाना) दे, मगर यह कि वे माफ़ कर दें. फिर मक़्तूल अगर ऐसी क़ौम में से था जो तुम्हारी दुश्मन है और वह ख़ुद मुसलमान था तो (क़तल की गलती जिस से हुई) वह एक मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद करे. और अगर वह ऐसी क़ौम से था कि तुम्हारे और उसके दरमियान समझौता है तो वह उसके वारिसों को ख़ूनबहा (क़तल का आर्थिक हर्जाना) दे और एक मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद करे. फिर जिसे यह मयस्सर न हो (यानी वह ऐसा करने में असमर्थ हो) तो वह लगातार दो महीने के रोज़े रखे. यह तौबा का तरीक़ा है अल्लाह का बताया हुआ. और अल्लाह जानने वाला है, हिकमत वाला है. 93 और जो शख़्स किसी ईमानवाले को जान-बूझकर क़तल करे तो उसकी सज़ा जहन्नम है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसपर अल्लाह का ग़ज़ब और उसकी लानत है और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है.

94 ऐ ईमान वालो! जब तुम सफ़र करो अल्लाह की राह में तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो और जो शख़्स तुम्हें सलाम करे उसे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं. तुम दुनियावी ज़िंदगी का सामान चाहते हो तो अल्लाह के पास ग़नीमत के बहुत सामान हैं. तुम भी पहले ऐसे ही थे. फिर अल्लाह ने तुम पर फ़ज़ल किया. तो तहक़ीक़ कर लिया करो. जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है. 95 बराबर नहीं हो सकते बैठे रहने वाले मुसलमान जिन को कोई उज़्र (मजबूरी) नहीं और वे मुसलमान जो अल्लाह की राह में लड़ने वाले हैं अपने माल और अपनी जान से. माल व जान से जिहाद करने वालों का दर्जा अल्लाह ने बैठे रहने वालों की निस्बत बड़ा रखा है और हर एक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है. और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर अज्रे-अज़ीम में बरतरी दी है. 96 उनके लिए अल्लाह की तरफ़ से बड़े दर्जे हैं और मग़फ़िरत (क्षमा) व रहमत है. और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.

97 जो लोग अपना बुरा कर रहे हैं, जब उनकी जान फ़रिश्ते निकालेंगे तो वे उनसे पूछेंगे कि तुम किस हाल में थे. वे कहेंगे कि हम ज़मीन में बेबस थे. फ़रिश्ते कहेंगे, क्या ख़ुदा की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम वतन छोड़कर वहाँ चले जाते. ये वे लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है. 98 मगर वे बेबस मर्द, औरतें और बच्चे जो कोई तदबीर नहीं कर सकते और निकलने का कोई रास्ता या ज़रिया नहीं पाते, 99 ये लोग, उम्मीद है कि अल्लाह उन्हें माफ़ कर देगा और अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है. 100 और जो कोई अल्लाह की राह में वतन छोड़ेगा, वह ज़मीन में बड़े ठिकाने और बड़ी वुसअत पाएगा और जो शख़्स अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ हिजरत करके निकले, फिर उसे मौत आ जाए तो उसका अज्र अल्लाह के यहाँ मुक़र्रर हो चुका और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है.

101 और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम नमाज़ में कमी

करो, अगर तुम्हें डर हो कि मुन्किर तुम्हें सताएंगे. बेशक मुन्किर लोग तुम्हारे खुले हुए दुश्मन हैं.
102 और जब तुम मुसलमानों के दरमियान हो और उनके लिए नमाज़ क़ायम करो तो चाहिए कि
उनकी एक जमात तुम्हारे साथ खड़ी हो और वह अपने हथियार लिए हुए हो. पस जब वे सज्दा
कर चुकें तो वे तुम्हारे पास से हट जाएँ और दूसरी जमात आए जिसने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी है
और वे तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ें. और वे भी अपने बचाव का सामान और अपने हथियार लिए रहें.
मुन्किर लोग चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से किसी तरह ग़ाफ़िल हो जाओ तो वे
तुम पर एकबारगी टूट पड़ें (यानी तुम पर अचानक हमला कर दें). और तुम्हारे ऊपर कोई गुनाह
नहीं अगर तुम्हें बारिश के सबब से तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार दो और
अपने बचाव का सामान लिए रहो. बेशक अल्लाह ने मुन्किरों के लिए रुसवा करने वाला अज़ाब
तैयार कर रखा है. 103 पस जब तुम नमाज़ अदा कर लो तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे
और लेटे. फिर जब इत्मीनान हो जाए तो नमाज़ के लिए खड़े हो जाओ. बेशक नमाज़ अहले-
ईमान पर मुक़र्रर वक़्तों के साथ फ़र्ज़ है. 104 और (दुश्मन) क़ौम का पीछा करने से हिम्मत न
हारो. अगर तुम दुख उठाते हो तो वे भी तुम्हारी तरह दुख उठाते हैं और तुम अल्लाह से वह उम्मीद
रखते हो जो उम्मीद वे नहीं रखते. और अल्लाह जानने वाला है, हिकमत वाला है.

105 बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ़ हक़ के साथ उतारी है, ताकि तुम लोगों के
दरमियान उसके मुताबिक़ फ़ैसला करो जो अल्लाह ने तुम्हें दिखाया है. और बददयानत लोगों की
तरफ़ से झगड़ने वाले न बनो. 106 और अल्लाह से बख़्शिश माँगो. बेशक अल्लाह बख़्शने वाला
मेहरबान है. 107 और तुम उन लोगों की तरफ़ से न झगड़ो जो अपने आप से ख़यानत कर रहे हैं.
अल्लाह ऐसे शख़्स को पसंद नहीं करता जो ख़यानत करने वाला और गुनाहगार हो.

108 **वे आदमियों से शर्माते हैं और अल्लाह से नहीं शर्माते. हालाँकि वह
उनके साथ होता है, जबकि वे सरगोशियां (गुप्त वार्ता) करते हैं, उस
बात की जिससे अल्लाह राज़ी नहीं. और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह
उसका इहाता किए हुए है (घेरे हुए है).**

नोटः- इन्सानों में अकसर ऐसे हैं जो अपने क़ौल-व-अमल से दूसरे इंसान को कैसा लगेगा इसकी फ़िक्र करते हुए तो नज़र आएंगे, लेकिन वह लोग कहाँ हैं, जो इसकी फ़िक्र करते हुए नज़र आते हों कि हमारे क़ौल-व-अमल से ख़ुदा को कैसा लगेगा, ख़ुदा उससे ख़ुश होगा या नाराज़.

109 तुम लोगों ने दुनिया की ज़िंदगी में तो उनकी तरफ़ से झगड़ा कर लिया. मगर क़यामत के दिन कौन उनके बदले अल्लाह से झगड़ा करेगा या कौन होगा उनका काम बनाने वाला. 110 और जो शख़्स बुराई करे या अपने आप पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश माँगे तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला, रहम करने वाला पाएगा. 111 और जो शख़्स कोई गुनाह करता है तो वह अपने ही हक़ में करता है और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला (बुद्धिमान) है. 112 और जो शख़्स कोई ग़लती या गुनाह करे फिर उसकी तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे तो उसने एक बड़ा बोहतान और खुला हुआ गुनाह अपने सर ले लिया. 113 और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत न होती तो उनमें से एक गिरोह ने तो यह ठान ही लिया था कि वह तुम्हें बहका कर रहेगा. हालाँकि वे अपने आप को बहका रहे हैं. वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते. और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिकमत उतारी है (ग्रंथ एवं विवेकपूर्ण ज्ञान उतारा है) और तुम्हें वह चीज़ सिखाई है जिसे तुम नहीं जानते थे और अल्लाह का फ़ज़ल है तुम पर बहुत बड़ा.

114 उनकी अकसर सरगोशियों (कानाफुसियों) में कोई भलाई नहीं. भलाई वाली सरगोशी सिर्फ़ उसकी है जो सदक़ा करने को कहे. या किसी नेक काम के लिए या लोगों में सुलह कराने के लिए कहे. जो शख़्स अल्लाह की ख़ुशी के लिए ऐसा करे तो हम उसे बड़ा अज्र अता करेंगे. 115 मगर जो शख़्स रसूल की मुख़ालिफ़त करेगा और मोमिनों के रास्ते के सिवा किसी और रास्ते पर चलेगा, हालाँकि उसपर (सीधी) राह वाज़ेह हो चुकी है, तो उसे हम उसी तरफ़ चलाएँगे जिधर वह ख़ुद फिर गया और उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वह बुरा ठिकाना है.

116 बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शेगा कि उसका शरीक ठहराया जाए और उसके सिवा गुनाहों को बख़्श देगा जिसके लिए चाहेगा. और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया, वह बहक कर बहुत दूर जा पड़ा. 117 वे अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं देवी-देवताओं को, मगर (हक़ीक़तन) वे पुकारते हैं सरकश शैतान को.

118 **उसपर अल्लाह ने लानत की है. और शैतान ने कहा था कि मैं तेरे बंदों से एक मुक़र्रर हिस्सा लेकर रहूँगा.**

नोटः– शैतान का मिशन इंसानों को जहन्नम की तरफ़ बुलाने का मिशन है और दावत का मिशन इंसानों को जन्नत की तरफ़ बुलाने का मिशन.

119 मैं उन्हें बहकाऊंगा और उन्हें उम्मीदें दिलाऊंगा और उन्हें समझाऊंगा तो वे चौपायों के कान काटेंगे और उन्हें समझाऊंगा तो वे अल्लाह की बनावट को बदलेंगे और जो शख़्स अल्लाह के सिवा

शैतान को अपना दोस्त बनाए तो वह खुले हुए नुक़सान में पड़ गया. 120 वह उन्हें वादा देता है और उन्हें उम्मीदें दिलाता है और शैतान के तमाम वादे फ़रेब के सिवा और कुछ नहीं. 121 ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे. 122 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे हमेशा उसमें रहेंगे. अल्लाह का वादा सच्चा है और अल्लाह से बढ़कर कौन अपनी बात में सच्चा होगा.

123 न तुम्हारी आरज़ुओं (कामनाओं) पर है और न अहले-किताब की आरज़ुओं पर. जो कोई भी बुरा करेगा उसका बदला पाएगा. और वह न पाएगा अल्लाह के सिवा अपना कोई हिमायती और न मददगार. 124 और जो शख़्स कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे. और उनपर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा. 125 और उससे बेहतर किस का दीन है जो अपना चेहरा अल्लाह की तरफ़ झुका दे और वह नेकी करने वाला हो. और वह चले इब्राहीम के दीन पर जो एक तरफ़ का था (यानी पूरी तरह अल्लाह का बन चुका था.) और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना दोस्त बना लिया था. 126 और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह हर चीज़ का इहाता किए हुए है (अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है).

127 और लोग तुम से औरतों के बारे में हुक्म पूछते हैं. कह दो अल्लाह तुम्हें उनके बारे में हुक्म देता है और वे आयतें भी जो तुम्हें किताब में उन यतीम औरतों के बारे में पढ़कर सुनाई जाती हैं, जिन्हें तुम वह नहीं देते जो उनके लिए लिखा गया है और चाहते हो कि उन्हें निकाह में ले आओ. और कमज़ोर बच्चों के बारे में हुक्म है (कि तुम) यतीमों के साथ इंसाफ़ करो और जो भलाई तुम करोगे, वह अल्लाह को ख़ूब मालूम है. 128 और अगर किसी औरत को अपने शौहर की तरफ़ से बदसलूकी या बेरुख़ी का अंदेशा हो तो इसमें कोई हर्ज नहीं कि दोनों आपस में कोई सुलह कर लें और सुलह बेहतर है. और हिर्स (लोभ) इंसान की तबीअत में बसी हुई है. और अगर तुम अच्छा सलूक करो और ख़ुदातरसी (ईश-भय) से काम लो तो जो कुछ तुम करोगे अल्लाह उससे बाख़बर है. 129 और तुम हरगिज़ औरतों को बराबर नहीं रख सकते, अगरचे तुम ऐसा करना चाहो. पस बिल्कुल एक ही तरफ़ न झुक पड़ो कि दूसरी को लटकी हुई की तरह छोड़ दो. और अगर तुम इसलाह (सुधार) कर लो और डरो तो अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है. 130 और अगर दोनों जुदा हो जाएँ तो अल्लाह हर एक को अपनी वुस्अत (सामर्थ्य) से ख़ुदकफ़ील (स्वावलंबी) कर देगा और अल्लाह बड़ी वुस्अत वाला व हिकमत वाला (उदार एवं बुद्धिमान) है.

131 और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है. और हमने हुक्म दिया है उन लोगों को जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और तुम्हें भी कि अल्लाह से डरो. और

अगर तुमने न माना तो अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, सब ख़ूबियों वाला है. 132 और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और भरोसे के लिए अल्लाह काफ़ी है. 133 अगर वह चाहे तो तुम सबको ले जाए, ऐ लोगो! और दूसरों को ले आए. और अल्लाह इसपर क़ादिर है. 134 जो शख़्स दुनिया का सवाब चाहता हो तो अल्लाह के पास दुनिया का सवाब भी है और आख़िरत का सवाब भी. और अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है.

135 ऐ ईमान वालो! इंसाफ़ पर ख़ूब क़ायम रहने वाले और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनो, चाहे वह तुम्हारे ख़िलाफ़ या तुम्हारे माँ—बाप या अज़ीजों के ख़िलाफ़ हो. अगर कोई मालदार है या मोहताज तो अल्लाह तुम से ज़्यादा दोनों का ख़ैरख़ाह है. पस तुम ख़्वाहिश की पैरवी न करो कि हक़ से हट जाओ. और अगर तुम कजी (हेर—फेर) करोगे या पहलूतही (अवहेलना) करोगे तो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बाख़बर है.

136 ऐ ईमान वालो! ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले नाज़िल की. और जो शख़्स इन्कार करे अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और आख़िरत के दिन का तो वह बहक कर दूर जा पड़ा. 137 बेशक जो लोग ईमान लाए फिर इन्कार किया, फिर ईमान लाए फिर इन्कार किया, फिर इन्कार में बढ़ते गए तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ नहीं बख़्शेगा और न उन्हें राह दिखाएगा. 138 मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) को ख़ुशख़बरी दे दो कि उनके लिए एक दर्दनाक अज़ाब है. 139 वे लोग जो मोमिनों को छोड़कर मुन्किरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वे उनके पास इज़्ज़त की तलाश कर रहे हैं, तो इज़्ज़त सारी अल्लाह के लिए है.

140 और अल्लाह किताब में तुम पर यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की निशानियों का इन्कार किया जा रहा है और उनका मज़ाक़ किया जा रहा है तो तुम उनके साथ न बैठो, यहाँ तक कि वे दूसरी बात में मशग़ूल हो जाएँ. वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो गए. अल्लाह मुनाफ़िक़ों को और मुन्किरों को जहन्नम में एक जगह इकट्ठा करने वाला है. 141 वे मुनाफ़िक़ तुम्हारे लिए इंतज़ार में रहते हैं. अगर तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से कोई फ़तह हासिल होती है तो कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे. और अगर मुन्किरों को कोई हिस्सा मिल जाए तो उनसे कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ने पर क़ादिर (समर्थ) न थे, फिर भी हमने तुम्हें मुसलमानों से बचाया. तो अल्लाह ही तुम लोगों के दरमियान क़यामत के दिन फ़ैसला करेगा और अल्लाह हरगिज़ मुन्किरों को मोमिनों पर कोई राह नहीं देगा.

142 मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) अल्लाह के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं. हालाँकि अल्लाह ही ने

उन्हें धोखे में डाल रखा है. और जब वे नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो काहिली के साथ खड़े होते हैं महज़ लोगों को दिखाने के लिए. और वे अल्लाह को कम ही याद करते हैं. 143 वे दोनों के बीच लटक रहे हैं, न इधर हैं और न उधर. और जिसे अल्लाह भटका दे तुम उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते. 144 ऐ ईमान वालो! मोमिनों को छोड़कर मुन्किरों को अपना दोस्त न बनाओ. क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह की खुली हुज्जत क़ायम कर लो. 145 बेशक मुनाफ़िक़ीन दोज़ख़ के सबसे नीचे के तबक़े में होंगे और तुम उनका कोई मददगार न पाओगे. 146 अलबत्ता जो लोग तौबा करें और अपनी इसलाह कर लें और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ लें और अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लें तो ये लोग ईमान वालों के साथ होंगे और अल्लाह ईमान वालों को बड़ा सवाब देगा. 147 अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम शुक्रगुज़ारी करो और ईमान लाओ. अल्लाह बड़ा क़द्र करने वाला है, सब कुछ जानने वाला है.

पारा – 6 148 अल्लाह बदगोई (कुवार्ता) को पसंद नहीं करता, मगर यह कि किसी पर ज़ुल्म हुआ हो और अल्लाह सुनने वाला है, जानने वाला है. 149 अगर तुम भलाई को ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ या किसी बुराई से दरगुज़र करो तो अल्लाह माफ़ करने वाला, क़ुदरत रखने वाला है. 150 जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इन्कार कर रहे हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के दरमियान तफ़रीक़ (विभेद) करें और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को नहीं मानेंगे. और वे चाहते हैं कि इसके बीच में एक राह निकालें. 151 ऐसे लोग पक्के मुन्किर हैं और हमने मुन्किरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है. 152 और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं किया, ऐसे ही लोगों को अल्लाह उनका अज्र देगा और अल्लाह ग़फ़ूर व रहीम (क्षमाशील व दयावान) है.

153 अहले-किताब तुम से यह मुतालबा (मांग) करते हैं कि तुम उनपर आसमान से एक किताब उतार लाओ. पस मूसा से वे इससे भी बड़ी चीज़ का मुतालबा कर चुके हैं. उन्होंने कहा कि हमें अल्लाह को बिल्कुल सामने दिखा दो. पस उनकी इस ज़्यादती के सबब उनपर बिजली आ पड़ी. फिर खुली निशानी आ चुकने के बाद, उन्होंने बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया. फिर हमने उससे दरगुज़र किया. और मूसा को हमने खुली हुज्जत (यानी सत्य के स्पष्ट प्रमाण) अता किए. 154 और हमने उनके ऊपर तूर पहाड़ को उठाया, उनसे अहद (वचन) लेने के वास्ते. और हमने उनसे कहा कि दरवाज़े में दाख़िल होना सर झुकाए हुए और उनसे कहा कि सबत (सनीचर) के मामले में ज़्यादती न करना. और हमने उनसे मज़बूत अहद लिया.

155 उन्हें जो सज़ा मिली वह इसपर कि उन्होंने अपने अहद (वचन) को तोड़ा और इसपर

कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इन्कार किया और इसपर कि उन्होंने पैग़म्बरों को नाहक़ क़तल किया और इस कहने पर कि हमारे दिल तो बंद हैं, बल्कि अल्लाह ने उनके इन्कार के सबब से उनके दिलों पर मुहर लगा दी है तो वे कम ही ईमान लाते हैं. 156 (वह फिटकारे गए इस वजह से कि) उन्होंने इन्कार किया और मरयम पर बड़ा तूफ़ान बांधा 157 और कहा कि हमने मसीह बिन मरयम, अल्लाह के रसूल को क़तल कर दिया, हालाँकि उन्होंने न उसे क़तल किया और न सूली दी, बल्कि मामला उनके लिए मुशतबह (संदिग्ध) कर दिया गया. और जो लोग इस बारे में मतभेद कर रहे हैं, वे इस बारे में शक में पड़े हुए हैं. उन्हें इसका कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ़ अटकल पर चल रहे हैं. और बेशक उन्होंने उसे क़तल नहीं किया. 158 बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) है.

159 और अहले–किताब में से कोई ऐसा नहीं जो अपनी मौत से पहले उसपर ईमान न ले आए और क़यामत के दिन वह उनपर गवाह होगा. 160 पस यहूद के ज़ुल्म की वजह से हमने वे पाक चीज़ें उनपर हराम कर दीं जो उनके लिए हलाल थीं. और इस वजह से कि वे अल्लाह की राह से बहुत रोकते थे. 161 और इस वजह से कि वे सूद लेते थे, हालाँकि उससे उन्हें मना किया गया था और इस वजह से कि वे लोगों का माल बातिल तरीक़े से खाते थे. और हमने उनमें से मुन्किरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है. 162 मगर उनमें जो लोग इल्म में पुख़्ता और ईमान वाले हैं, वे ईमान लाए हैं उसपर जो तुम्हारे ऊपर उतारी गया और जो तुम से पहले उतारा गया था और वे नमाज़ के पाबंद हैं और ज़कात अदा करने वाले हैं और अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं. ऐसे लोगों को हम ज़रूर बड़ा अज्र (प्रतिफल) देंगे.

163 हमने तुम्हारी तरफ़ 'वही' (ईश्वर–वाणी) भेजी है जिस तरह हमने नूह और उसके बाद के नबियों की तरफ़ 'वही' भेजी थी. हमने इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और औलादे–याक़ूब और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की तरफ़ 'वही' भेजी थी. और हमने दाऊद को ज़बूर दी. 164 और हमने ऐसे रसूल भेजे जिनका हाल हम तुम्हें पहले सुना चुके हैं और ऐसे रसूल भी जिनका हाल हमने तुम्हें नहीं सुनाया. और अल्लाह ने मूसा से कलाम किया.

165 अल्लाह ने रसूलों को ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा, ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में कोई हुज्जत बाक़ी न रहे. अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है.

नोटः- कुरआन के इस बयान से वाज़ेह है कि सारे पैगंबर किस लिए भेजे जाते थे, वह इसलिए भेजे जाते थे, ताकि वह लोगों को ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसके अंजाम से, ख़ुदा के तख़्लिक़ी प्लॅन से आगाह कर दें. फिर कोई इंसान यह कह न सके कि हमें इन चीज़ों का पता था ही नहीं. अब चूंकि कोई पैग़ंबर आने वाला नहीं है, लेकिन इंसानों का पैदा होना जारी है, तो यही पैगंबर वाला काम अहले-ईमान को करना नागुज़ीर है.

166 मगर अल्लाह गवाह है उसपर जो उसने तुम्हारे ऊपर उतारा है कि उसने उसे अपने इल्म के साथ उतारा है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह गवाही के लिए काफ़ी है. 167 जिन लोगों ने इन्कार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, वे बहक कर बहुत दूर निकल गए. 168 जिन लोगों ने इन्कार किया और ज़ुल्म किया, उन्हें अल्लाह हरगिज़ नहीं बख़्शेगा और उन्हें कोई रास्ता नहीं दिखाएगा 169 सिवाय जहन्नम के रास्ते के, जिसमें वे हमेशा रहेंगे. और अल्लाह के लिए यह आसान है.

170 ऐ लोगो! तुम्हारे पास रसूल आ चुका तुम्हारे रब की ठीक बात लेकर. तो मान लो, ताकि तुम्हारा भला हो. और अगर न मानोगे तो अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है. और अल्लाह जानने वाला व हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

नोटः- अब रब का पैग़ाम लेकर कोई रसूल आने वाला नहीं है, क्योंकि इन्सानों के रब का पैग़ाम 'क़ुरआन' की शक्ल में पूरी तरह महफ़ूज़ है. अब क़ुरआन के मानने वालों का काम यह है कि उन्हें सारे इन्सानों तक उनके रब का पैग़ाम पहुँचाना है.

171 ऐ अहले–किताब! अपने दीन में ग़ुलू (अति) न करो और अल्लाह के बारे में कोई बात हक़ के सिवा न कहो. मसीह ईसा इब्ने–मरयम तो बस अल्लाह के एक रसूल और उसका एक कलमा हैं जिसे उसने मरयम की तरफ़ भेजा और उसकी जानिब से एक रूह हैं. पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि ख़ुदा तीन हैं. बाज़ आ जाओ, यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है. माबूद तो बस एक अल्लाह ही है और वह उससे पाक है कि उसकी कोई औलाद हो. उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह ही का कारसाज़ होना काफ़ी है. 172 मसीह को हरगिज़ अल्लाह का बंदा बनने से संकोच न होगा और न मुक़र्रब (प्रतिष्ठित) फ़रिश्तों को होगा. और जो अल्लाह की बंदगी से संकोच करेगा और घमंड करेगा तो अल्लाह ज़रूर सबको अपने पास जमा करेगा. 173 फिर जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए तो उन्हें वह पूरा–पूरा अज्र देगा और अपने फ़ज़्ल से उन्हें और भी देगा. और जिन लोगों ने संकोच और घमंड किया होगा, उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा और वे अल्लाह के मुक़ाबले में न किसी को अपना दोस्त पाएंगे और न मददगार.

174 ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक दलील आ चुकी है और हमने तुम्हारे ऊपर एक वाज़ेह (सुस्पष्ट) रोशनी उतार दी. 175 पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उसे उन्होंने मज़बूत पकड़ लिया उन्हें ज़रूर अल्लाह अपनी रहमत और फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा और उन्हें अपनी तरफ़ सीधा रास्ता दिखाएगा. 176 लोग तुम से हुक्म पूछते हैं. कह दो अल्लाह तुम्हें कलाला (यानी जिसकी कोई औलाद न हो और न उसके माँ बाप हयात हों) के बारे में हुक्म बताता है. अगर कोई शख़्स मर जाए और उसकी कोई औलाद न हो और उसकी एक बहन हो तो उसके लिए उसके तरके का (यानी दिवंगत ने छोड़ी हुई संपत्ति का) आधा है. और वह मर्द उस बहन का वारिस होगा, अगर उस बहन की कोई औलाद न हो. और अगर (मरहूम की) दो बहनें हों तो उनके लिए उसके तरके का दो तिहाई होगा. और अगर कई भाई–बहन, मर्द–औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है. अल्लाह तुम्हारे लिए बयान करता है, ताकि तुम गुमराह न हो और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है.

सूरह–5. अल–माइदा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ऐ ईमान वालो! अहद व पैमान को पूरा करो. तुम्हारे लिए मवेशी की क़िस्म के सब जानवर हलाल किए गए, सिवा उनके जिनका ज़िक्र आगे किया जा रहा है. मगर एहराम की हालत में शिकार को हलाल न जानो. अल्लाह हुक्म देता है जो चाहता है. 2 ऐ ईमान वालो! बेहुरमती न

करो अल्लाह की निशानियों की और न हुरमत वाले महीनों की और न हरम में क़ुर्बानी वाले जानवरों की और न पट्टे बंधे हुए नियाज़ के जानवरों की और न हुरमत वाले घर की तरफ़ आने वालों की, जो अपने रब का फ़ज़्ल और उसकी ख़ुशी ढूंढने निकले हैं. और जब तुम एहराम की हालत से बाहर आ जाओ तो शिकार करो. और उस क़ौम की दुश्मनी जिसने तुम्हें मसजिदे-हराम से रोका है, तुम्हें इसपर न उभारे कि तुम ज़्यादती करने लगो. तुम नेकी और तक़वा में एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़्यादती में एक दूसरे की मदद न करो. अल्लाह से डरो. बेशक अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है.

3 तुम पर हराम किया गया मुरदार और ख़ून और सूअर का गोश्त और वह जानवर जो ख़ुदा के सिवा किसी और नाम पर ज़बह किया गया हो और वह जो मर गया हो गला घोंटने से या चोट से या ऊंचे से गिर कर या सींग मारने से और वह जिसे दरिंदे ने खाया हो, मगर जिसे तुमने ज़बह कर लिया और वह जो किसी थान पर ज़बह किया गया हो और यह कि तक़सीम करो जुए के तीरों से, यह गुनाह का काम है. आज मुन्किर तुम्हारे दीन की तरफ़ से मायूस हो गए. पस तुम उनसे न डरो, सिर्फ़ मुझ से डरो. आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसंद कर लिया. पस जो भूख से मजबूर हो जाए, लेकिन गुनाह पर मायल न हो तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.

4 वे पूछते हैं कि उनके लिए क्या चीज़ हलाल की गई है. कहो कि तुम्हारे लिए सुथरी चीज़ें हलाल हैं. और शिकारी जानवरों में से जिन्हें शिकार पकड़ने के लिए तुमने सधाया (प्रशिक्षित किया) है, तुम उन्हें सिखाते हो उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, पस तुम उनके शिकार में से खाओ जो वे तुम्हारे लिए पकड़ रखें. और उस पर अल्लाह का नाम लो और अल्लाह से डरो, अल्लाह बेशक जल्द हिसाब लेने वाला है. 5 आज तुम्हारे लिए सब सुथरी चीज़ें हलाल कर दी गईं. और अहले-किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है. और हलाल हैं तुम्हारे लिए पाक दामन औरतें, मुसलमान औरतों में से और पाक दामन औरतें उनमें से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई, जब तुम उन्हें उनके महर दे दो, इस तरह कि तुम निकाह में लाने वाले हो, न एलानिया बदकारी करो और न ख़ुफ़िया आशनाई करो. और जो शख़्स ईमान के साथ कुफ़्र करेगा तो उसका अमल ज़ाया हो जाएगा और वह आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों में से होगा.

6 ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरों और अपने हाथों को कुहनियों तक धोओ और अपने सरों का मसह करो और अपने पैरों को टख़नों तक धोओ और अगर तुम हालते-जनाबत में हो तो ग़ुस्ल कर लो. और अगर तुम मरीज़ हो या सफ़र में हो या तुम

में से कोई इस्तंजा से आए या तुमने औरत से सोहबत की हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो और अपने चेहरों और हाथों पर उससे मसह कर लो. अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी डाले, बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और तुम पर अपनी नेमत तमाम करे, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो.

7 और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो और उसके उस अहद को याद करो जो उसने तुम से लिया है. जब तुमने कहा कि हमने सुना और हमने माना. और अल्लाह से डरो. बेशक अल्लाह दिलों की बात तक जानता है. 8 ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए क़ायम रहने वाले और इंसाफ़ के साथ गवाही देने वाले बनो. और किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें इसपर न उभारे कि तुम इंसाफ़ न करो. (बल्कि दुश्मनी हो तब भी) इंसाफ़ करो, यही तक़वा से ज़्यादा क़रीब है. और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह को ख़बर है जो तुम करते हो. 9 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए बख़्शिश है और बड़ा अज्र है. 10 और जिन्होंने इन्कार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया ऐसे ही लोग दोज़ख़ वाले हैं. 11 ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो, जब एक क़ौम ने इरादा किया कि तुम पर दस्तदराज़ी (आक्रमण) करे तो अल्लाह ने तुम से उनके हाथ को रोक दिया. और अल्लाह से डरो और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए.

12 और अल्लाह ने बनी इसराईल से अहद (वचन) लिया और हमने उनमें बारह सरदार मुक़र्रर किए. और अल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ. अगर तुम नमाज़ क़ायम करोगे और ज़कात अदा करोगे और मेरे पैग़म्बरों पर ईमान लाओगे और उनकी मदद करोगे और अल्लाह को क़र्ज़े-हसना दोगे तो मैं तुम से तुम्हारे गुनाह ज़रूर दूर करूंगा और तुम्हें ज़रूर ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. पस तुम में से जो शख़्स उसके बाद इन्कार करेगा तो वह सीधे रास्ते से भटक गया. 13 पस उनकी अहदशिकनी (यानी वचन-भंग) की बिना पर हमने उनपर लानत कर दी और हमने उनके दिलों को सख़्त कर दिया. वे कलाम को उसकी जगह से बदल देते हैं. और जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी, उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे. और तुम बराबर उनकी किसी न किसी ख़यानत से आगाह होते रहते हो, सिवाय थोड़े लोगों के. उन्हें माफ़ करो और उनसे दरगुज़र करो, अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है.

14 और जो लोग कहते हैं कि हम नसरानी (ईसाई) हैं, उनसे हमने अहद लिया था. पस जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे. फिर हमने क़यामत तक के लिए उनके दरमियान दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल दिया. और आख़िर अल्लाह उन्हें आगाह कर देगा उससे जो कुछ वे कर रहे थे.

15 ऐ अहले-किताब! तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है. वह किताबे-इलाही की बहुत सी उन बातों को तुम्हारे सामने खोल रहा है, जिन्हें तुम छुपाते थे. और वह दरगुज़र करता है बहुत सी चीज़ों से. बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक रोशनी और (हक़) ज़ाहिर करने वाली एक किताब आ चुकी है.
16 इसके ज़रीए से अल्लाह उन लोगों को सलामती की राहें दिखाता है जो उसकी रज़ा के तालिब हैं और अपनी तौफ़ीक़ से उन्हें अंधेरों से निकाल कर रोशनी में ला रहा है और सीधी राह की तरफ़ उनकी रहनुमाई करता है.

नोटः- ज़मीन के ऊपर और आसमान के नीचे सलामती की राह दिखाने वाली अगर कोई चीज़ है तो वह सिर्फ़ **'क़ुरआन'** है. इंसानों को गुमराहियों के अंधेरों से निकालने वाली अगर कोई चीज़ है तो वह सिर्फ़ **'क़ुरआन'** है. **'क़ुरआन'** के मानने वालों का काम है कि वे **'क़ुरआन'** को सारे इंसानों तक पहुंचा दें, ताकि जो लोग हक़ के तालिब हैं वह हक़ को पा लें और जो लोग हक़ के तालिब नहीं उनपर हुज्जत पूरी हो जाए.

17 बेशक उन लोगों ने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा ही तो मसीह इब्ने-मरयम है. कहो, फिर कौन इख़्तियार रखता है अल्लाह के आगे अगर वह चाहे कि हलाक कर दे मसीह इब्ने-मरयम को और उसकी माँ को और जितने लोग ज़मीन में हैं सब को. और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दरमियान है. वह पैदा करता है जो कुछ चाहता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है.

18 और यहूद व नसारा कहते हैं कि हम ख़ुदा के बेटे और उसके महबूब हैं. तुम कहो कि फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सज़ा क्यों देता है. नहीं, बल्कि तुम भी उसकी पैदा की हुई मख़लूक़ में से एक आदमी हो. वह जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा अज़ाब देगा. और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों व ज़मीन की और जो कुछ इनके दरमियान है (उन सब की). और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है.

19 ऐ अहले–किताब! तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है, वह (हमारा पैग़ाम) तुम्हें साफ़–साफ़ बता रहा है, रसूलों के एक वक़्फ़ा (अंतराल) के बाद.

ताकि तुम यह कह न सको कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला नहीं आया. **पस अब तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला आ गया है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है.**

नोटः– 'ताकि तुम यह कह न सको कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला नहीं आया.' इससे वाज़ेह होता है कि अल्लाह तआला को यह मंज़ूर नहीं कि अल्लाह की अदालत में कोई यह कहे कि ख़ुदाया! तेरा तख़्लीक़ी मंसूबा (creation plan) क्या था, हमें उसकी जानकारी नहीं थी. और न कोई आगाह करने वाला हमारे पास आया, जो हमें उससे आगाह करता.

अब ख़ुदा की तरफ़ से यह बताने के लिए कोई नबी आने वाला नहीं है. अब ख़ुदा का महफ़ूज़ पैग़ाम क़ुरआन की शक्ल में उम्मत के पास मौजूद है. अब क़ुरआन नबी के क़ायम मुक़ाम है. अब **'उम्मते–मुहम्मदी'** का यह नागुज़ीर फ़रिज़ा है कि वह सारे इन्सानों तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचा दें जो पहुँचाने के लिए पहले रसूल आया करते थे, ताकि कल ख़ुदा की अदालत में कोई यह कह न सके कि ख़ुदाया! तेरी महफ़ूज़ किताब तो मौजूद थी, पर हमें उसका पता नहीं था, और जिनपर उसे पहुँचाने की ज़िम्मेदारी थी, उन्होंने हम तक उसे नहीं पहुँचाया.

20 और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो कि उसने तुम्हारे अंदर नबी पैदा किए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वह दिया जो दुनिया में किसी को नहीं दिया था.
21 ऐ मेरी क़ौम! इस पाक ज़मीन में दाख़िल हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है. और अपनी पीठ की तरफ़ न लौटो वरना नुक़सान में पड़ जाओगे.
22 उन्होंने कहा कि वहाँ एक ज़बरदस्त क़ौम है. हम हरगिज़ वहाँ नहीं जाएँगे, जब तक वे वहाँ से निकल न जाएँ. अगर वे वहाँ से निकल जाएँ तो हम वहाँ दाख़िल होंगे.
23 दो आदमी जो अल्लाह से डरने वालों में से थे और उन दोनों पर अल्लाह ने इनाम किया था, उन्होंने कहा कि तुम उनपर हमला करके शहर के फाटक में दाख़िल हो जाओ. जब तुम उसमें दाख़िल हो जाओगे तो

तुम ही ग़ालिब रहोगे और अल्लाह पर भरोसा करो अगर तुम मोमिन हो. 24 उन्होंने कहा कि ऐ मूसा! हम कभी वहाँ दाख़िल न होंगे, जब तक वे लोग वहाँ हैं. पस तुम और तुम्हारा ख़ुदावंद दोनों जा कर लड़ो, हम यहाँ बैठे हैं.

25 मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब! अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर मेरा इख़्तियार नहीं. पस तू हमारे और इस नाफ़रमान क़ौम के दरमियान जुदाई कर दे. 26 अल्लाह ने कहा, वह मुल्क उनपर चालीस साल के लिए हराम कर दिया गया. ये लोग ज़मीन में भटकते फिरेंगे. पस तुम इस नाफ़रमान क़ौम पर अफ़सोस न करो.

27 और उन्हें आदम के दो बेटों का क़िस्सा हक़ के साथ सुनाओ. जबकि उन दोनों ने क़ुर्बानी पेश की तो उनमें से एक की क़ुर्बानी क़बूल हुई और दूसरे की क़ुर्बानी क़बूल न हुई. उसने कहा, मैं तुझे मार डालूंगा. उसने जवाब दिया कि अल्लाह तो सिर्फ़ मुत्तक़ियों से क़बूल करता है. 28 अगर तुम मुझे क़तल करने के लिए हाथ उठाओगे तो मैं तुम्हें क़तल करने के लिए तुम पर हाथ नहीं उठाऊंगा. मैं डरता हूँ अल्लाह से जो सारे जहान का रब है. 29 मैं चाहता हूँ की मेरा और अपना गुनाह तू ही ले ले, फिर तू आग वालों में शामिल हो जाए. और यही सज़ा है ज़ुल्म करने वालों की.

30 फिर उसके नफ़्स ने उसे अपने भाई के क़तल पर राज़ी कर लिया और उसने उसे क़तल कर डाला. फिर वह नुक़सान उठाने वालों में शामिल हो गया. 31 फिर ख़ुदा ने एक कौवे को भेजा जो ज़मीन कुरेदता था, ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश को किस तरह छुपाए. उसने कहा कि अफ़सोस मेरी हालत पर कि मैं इस कौवे जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश को छुपा देता. पस वह बहुत शरमिंदा हुआ.

32 इसी सबब से हमने बनी इसराईल पर यह लिख दिया कि जो शख़्स किसी को क़तल करे, बग़ैर इसके कि उसने किसी को क़तल किया हो या ज़मीन में फ़साद बरपा किया हो, (इन स्पष्ट कारणों के सिवा किसी को क़तल करना अल्लाह की नज़र में ऐसा है) गोया उसने सारे इंसानों को क़तल कर डाला और जिसने एक शख़्स को बचाया तो गोया उसने सारे इंसानों को बचा लिया. और हमारे पैग़म्बर उनके पास खुले अहकाम लेकर आए. उसके बावजूद उनमें से बहुत से लोग ज़मीन में ज़्यादतियां करते हैं. 33 जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और ज़मीन में फ़साद करने के लिए दौड़ते हैं उनकी सज़ा यही है कि उन्हें क़तल किया जाए या वे सूली पर चढ़ाए जाएँ या उनके हाथ और पैर विपरीत दिशा से काटे जाएँ या उन्हें मुल्क से बाहर निकाल दिया जाए. यह उनकी रुसवाई दुनिया में है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब है. 34 मगर जो लोग तौबा कर लें, तुम्हारे क़ाबू पाने से पहले, तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.

35 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसका क़ुर्ब (समीपता) तलाश करो और उसकी

राह में जद्दोजहद करो, ताकि तुम फ़लाह पाओ. 36 बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया है अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है और इतना ही और हो, ताकि वे उसे फ़िदये में (आर्थिक दंड के तौर पर) देकर क़यामत के दिन के अज़ाब से छूट जाना चाहें, तब भी वह उनसे क़बूल न किया जाएगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है. 37 वे चाहेंगे कि आग से निकल जाएँ, मगर वे उससे निकल न सकेंगे और उनके लिए एक मुस्तक़िल (हमेशा-हमेशा का) अज़ाब है. 38 चोर मर्द और चोर औरत दोनों के हाथ काट दो. यह उनकी कमाई का बदला है और अल्लाह की तरफ़ से इबरतनाक सज़ा. और अल्लाह ग़ालिब और हकीम (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) है. 39 फिर जिसने अपने ज़ुल्म के बाद तौबा की और इसलाह कर ली तो अल्लाह बेशक उसपर तवज्जोह करेगा. और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. 40 क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ज़मीन और आसमानों की सल्तनत का मालिक है. वह जिसे चाहे सज़ा दे और जिसे चाहे माफ़ कर दे. और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है.

41 ऐ पैग़म्बर! तुम्हें वे लोग रंज में न डालें जो कुफ्र की राह में बड़ी तेज़ी दिखा रहे हैं. चाहे वे उनमें से हों जो अपने मुँह से कहते हैं कि हम ईमान लाए, हालाँकि उनके दिल ईमान नहीं लाए या उनमें से हों जो यहूदी हैं, वह झूठ के बड़े सुनने वाले हैं, वह जासूसी करते हैं दूसरे लोगों की ख़ातिर जो तुम्हारे पास नहीं आए. वे कलाम को उसके मक़ाम से हटा देते हैं. वे लोगों से कहते हैं कि अगर तुम्हें यह हुक्म मिले तो क़बूल कर लेना और अगर यह हुक्म न मिले तो उससे बचकर रहना. और जिसे अल्लाह फ़ितने में डालना चाहे तो तुम अल्लाह के मुक़ाबिल उसके मामले में कुछ नहीं कर सकते. यही वे लोग हैं कि अल्लाह ने नहीं चाहा कि उनके दिलों को पाक करे. उनके लिए दुनिया में रुसवाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब है.

42 वे झूठ के बड़े सुनने वाले हैं, हराम के बड़े खाने वाले हैं. अगर वे तुम्हारे पास आएं तो चाहे उनके दरमियान फ़ैसला करो या उन्हें टाल दो. अगर तुम उन्हें टाल दोगे तो वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते. और अगर तुम फ़ैसला करो तो उनके दरमियान इंसाफ़ के मुताबिक़ फ़ैसला करो. अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को पसंद करता है. 43 और वे कैसे तुम्हें मुन्सिफ़ (यानी फ़ैसला करने वाला) बनाते हैं, हालाँकि उनके पास तौरात है, जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है. और फिर वे उससे मुँह मोड़ रहे हैं. और ये लोग हरगिज़ ईमान वाले नहीं हैं.

44 बेशक हमने तौरात उतारी है जिसमें हिदायत और रोशनी है. उसी के मुताबिक़ ख़ुदा के फ़रमांबरदार अंबिया यहूदी लोगों का फ़ैसला करते थे और उनके दरवेश और उलमा (विद्वान) भी. इसलिए कि वे ख़ुदा की किताब पर निगहबान ठहराए गए थे. और वे उसके गवाह थे. पस तुम इंसानों से न डरो, बल्कि मुझ से डरो और मेरी आयतों को तुच्छ मूल्यों के एवज़ न बेचो. और जो

कोई उसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो वही लोग मुन्किर हैं. 45 और हमने उस किताब में उनपर लिख दिया कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख़्मों का बदला उनके बराबर. फिर जिसने उसे माफ़ कर दिया तो वह उसके लिए कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है. और जो शख़्स उसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग ज़ालिम हैं. 46 और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने-मरयम को भेजा तसदीक़ (पुष्टि) करते हुए अपने से पहले की किताब तौरात की और हमने उसे इंजील दी जिसमें हिदायत और नूर है और वह तसदीक़ करने वाली थी अपने से अगली किताब तौरात की और हिदायत और नसीहत डरने वालों के लिए. 47 और चाहिए कि इंजील वाले उसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उसमें उतारा है. और जो कोई उसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो ऐसे ही लोग नाफ़रमान हैं.

48 और हमने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी हक़ के साथ, तसदीक़ (पुष्टि) करने वाली पिछली किताब की और उसके मज़ामीन पर निगहबान. पस तुम उनके दरमियान फ़ैसला करो उसके मुताबिक़ जो अल्लाह ने उतारा. और जो हक़ तुम्हारे पास आया है उसे छोड़कर उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो. हमने तुम में से हर एक के लिए एक शरीअत और एक तरीक़ा ठहराया. और अगर ख़ुदा चाहता तो तुम्हें एक ही उम्मत बना देता. मगर अल्लाह ने चाहा कि वह अपने दिए हुए हुक्मों में तुम्हारी आज़माइश करे. पस तुम भलाइयों की तरफ़ दौड़ो. आख़िरकार तुम सबको ख़ुदा की तरफ़ पलट कर जाना है. फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा उस चीज़ से, जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे थे (तुम्हारे मत भिन्न थे).

49 और उनके दरमियान उसके मुताबिक़ फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो और उन लोगों से बचो, ऐसा न हो कि कहीं वह तुम्हें फिसला दें तुम्हारे ऊपर अल्लाह के उतारे हुए किसी हुक्म से. पस अगर वे फिर जाएँ तो जान लो कि अल्लाह उन्हें उनके कुछ गुनाहों की सज़ा देना चाहता है. और यक़ीनन लोगों में से ज़्यादा आदमी नाफ़रमान हैं. 50 क्या ये लोग जाहिलीयत का फ़ैसला चाहते हैं. और अल्लाह से बेहतर किस का फ़ैसला हो सकता है, उन लोगों के लिए जो यक़ीन करना चाहें.

51 ऐ ईमान वालो! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ. वे एक दूसरे के दोस्त हैं. और तुम में से जो शख़्स उन्हें अपना दोस्त बनाएगा तो वह उन्हीं में से होगा. अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता. 52 तुम देखते हो कि जिनके दिलों में रोग है, वे उन्हीं की तरफ़ दौड़ रहे हैं. वे कहते हैं कि हमें यह अंदेशा है कि हम किसी मुसीबत में न फंस जाएँ. तो मुमकिन है कि अल्लाह फ़तह दे दे या अपनी तरफ़ से कोई ख़ास बात ज़ाहिर करे तो ये लोग उस चीज़ पर जिसे ये अपने

दिलों में छुपाए हुए हैं नादिम होंगे. 53 और उस वक़्त अहले-ईमान कहेंगे, क्या ये वही लोग हैं जो ज़ोर-शोर से अल्लाह की क़समें खाकर यक़ीन दिलाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं. उनके सारे आमाल ज़ाया (नष्ट) हो गए और वे घाटे में रहे.

54 ऐ ईमान वालो! तुम में से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह जल्द ऐसे लोगों को उठाएगा जो अल्लाह को महबूब होंगे और अल्लाह उन्हें महबूब होगा. वे मुसलमानों के लिए नर्म और मुन्किरों के ऊपर सख़्त होंगे. वे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे. यह अल्लाह का फ़ज़ल है. वह जिसे चाहता है अता करता है. और अल्लाह वुस्अत वाला और इल्म वाला है. 55 तुम्हारे दोस्त तो बस अल्लाह और उसका रसूल और वे ईमान वाले हैं जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और वे अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं. 56 और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों को दोस्त बनाए तो बेशक अल्लाह की जमात ही ग़ालिब रहने वाली है.

57 ऐ ईमान वालो! उन लोगों को अपना दोस्त न बनाओ जिन्होंने तुम्हारे दीन को मज़ाक़ और खेल बना लिया है, उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और न मुन्किरों को. और अल्लाह से डरते रहो अगर तुम ईमान वाले हो. 58 और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो तो वे लोग उसे मज़ाक़ और खेल बना लेते हैं. इसकी वजह यह है कि वे अक़्ल नहीं रखते. 59 कहो कि ऐ अहले-किताब! तुम हमसे सिर्फ़ इसलिए ज़िद रखते हो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उसपर जो हमारी तरफ़ उतारा गया और उसपर जो हमसे पहले उतरा. और तुम में से अकसर लोग नाफ़रमान हैं. 60 कहो, क्या मैं तुम्हें बताऊँ वह जो अल्लाह के यहाँ अंजाम के एतबार से इससे भी ज़्यादा बुरा है. वह जिस पर ख़ुदा ने लानत की और जिस पर उसका ग़ज़ब हुआ. और जिनमें से उसने बंदर और सूअर बना दिए और उन्होंने शैतान की परस्तिश की. ऐसे लोग हालत के एतबार से बदतर और राहेरास्त से बहुत दूर हैं.

61 और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए, हालाँकि वे मुन्किर आए थे और मुन्किर ही चले गए. और अल्लाह ख़ूब जानता है उस चीज़ को जिसे वे छुपा रहे हैं. 62 और तुम उनमें से अकसर को देखोगे कि वे गुनाह और ज़ुल्म और हराम खाने पर दौड़ते हैं. कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं. 63 उनके मशाइख़ (संत) और उलमा (धर्मपंडित) उन्हें क्यों नहीं रोकते गुनाह की बात कहने से और हराम खाने से. कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं.

64 और यहूद कहते हैं कि ख़ुदा के हाथ बंधे हुए हैं. उन्हीं के हाथ बंध जाएँ और लानत हो उन्हें इस कहने पर. बल्कि ख़ुदा के दोनों हाथ खुले हुए हैं. वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है. और तुम्हारे ऊपर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से जो कुछ उतरा है वह उनमें से अकसर लोगों की

सरकशी और इन्कार को बढ़ा रहा है. और हमने उनके दरमियान दुश्मनी और कीना क़यामत तक के लिए डाल दिया है. जब कभी वे लड़ाई की आग भड़काते हैं तो अल्लाह उसे बुझा देता है. और वे ज़मीन में फ़साद फैलाने में सरगर्म हैं. हालाँकि अल्लाह फ़साद बरपा करने वालों को पसंद नहीं करता.

65 और अगर अहले-किताब ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो हम ज़रूर उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर देते और उन्हें नेमत के बाग़ों में दाख़िल करते. 66 और अगर वे तौरात और इंजील की पाबंदी करते और उसकी पाबंदी जो उनपर उनके रब के तरफ़ से (अब क़ुरआन की शकल में) उतारा गया है तो वे खाते अपने ऊपर से और अपने क़दमों के नीचे से. कुछ लोग उनमें सीधी राह पर हैं. लेकिन ज़्यादा उनमें ऐसे हैं जो बहुत बुरा कर रहे हैं.

67 ऐ पैग़म्बर! **जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से उतरा है उसे पहुँचा दो.**

और अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो तुमने अल्लाह के पैग़ाम को नहीं पहुँचाया. और अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा. अल्लाह यक़ीनन मुन्किर लोगों को राह नहीं देता.

नोटः-

- **'उस चीज़ को पहुँचा दो जो अल्लाह ने नाज़िल की है.'** इससे साफ़ वाज़ेह है कि अगर तुमने लोगों तक **'क़ुरआन'** नहीं पहुँचाया तो तुमने अल्लाह का पैग़ाम नहीं पहुँचाया.
- दूसरी कोई भी चीज़, दूसरा कोई भी इस्लामी लिटरेचर पहुँचाना क़ुरआन पहुँचाने का बदल नहीं हो सकता.
- ख़ुदा अपने बंदों से क्या कहना चाहता है? उसने उन्हें क्यों पैदा किया है? वह उनके साथ क्या मामला करने वाला है? यह जानने के लिए ख़ुदा का पैग़ाम असल ज़रिया है, ना कि दूसरा लिटरेचर. जबकि ख़ुदा ख़ुद कह रहा है कि उसने इस क़ुरआन को नसीहत अक़्ज़ करने के लिए आसान कर दिया है, तो क्या है कोई नसीहत अक़्ज़ करने वाला?

दुनिया में क़ुरआन वाहिद मज़हबी किताब है, जो 8-10 साल का बच्चा भी अगर पढ़े तो बहुत सी बातें बाआसानी समझ लेगा. जबकि दीगर मज़हबी किताबों का यह हाल है कि वह उलमा कि मदद के बग़ैर, तशरीह के बग़ैर बड़े-बूढ़ों को भी समझना मुश्किल है.

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)

- इसी तरह दूसरी अहम बात ख़ुदा यह कह रहा है कि क़ुरआन में जिसे सच्चाई न मिले उसे सच्चाई और कहीं नहीं मिल सकती. इससे क़ुरआन पहुंचाने की अहमियत वाज़ेह होती है जहां तक सच्चाई को दरयाफ़्त करने का सवाल है, उसके लिए संजीदगी और सच्चाई की तलब ज़रूरी है. अगर यह चीज़ें इंसान के अंदर न हों तो उस इंसान को न ख़ुदा की किताब सच्चाई तक पहुंचा सकती है और न ख़ुद ख़ुदा का पैग़ंबर.
- ख़ुदा वाज़ेह अलफ़ाज़ में कह रहा है कि **'उस चीज़ को पहुँचा दो जो तुम्हारे रब ने नाज़िल की है.'** क़ुरआन में ख़ुदा के इस वाज़ेह हुक्म के बावजूद गैर-दाइयाना ज़ेहन रखनेवाले कुछ लोग यह सवाल करते हैं, **'क्या ग़ैर-मुस्लिम हज़रात को क़ुरआन की कॉपी दी जा सकती है?'** यह सवाल एक बेबुनियाद सवाल है. यह सवाल ख़ुदा के बयान के ख़िलाफ़ है, यह सवाल ख़ुदा के प्लॅन के ख़िलाफ़ है.
- पैग़ंबर की नयाबत में पैग़ाम पहुँचाने का यह काम अब **'उम्मते-मुहम्मदी'** को करना है. ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाने के मामले में **'उम्मते-मुहम्मदी'** के लिए दूसरा कोई ऑप्शन नहीं, दूसरा कोई भी अमल इस ज़िम्मेदारी का बदल नहीं.

68 **कह दो, ऐ अहले-किताब! तुम किसी चीज़ पर नहीं, जब तक तुम क़ायम न करो तौरात और इंजील को और उसे जो (अब) तुम्हारे ऊपर उतरा है तुम्हारे रब की तरफ़ से. और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा गया है, वह यक़ीनन उनमें से अकसर की सरकशी और इन्कार को बढ़ाएगा. पस तुम इन्कार करने वालों के ऊपर अफ़सोस न करो.**

नोटः- अगरचे ख़ुदा के पैग़ाम से अकसर लोगों की सरकशी में इज़ाफ़ा होने वाला हो, तब भी पैग़ाम पहुँचाने के मामले में दाई के लिए दूसरा कोई option नहीं (पहुँचाने के सिवा कोई चारा नहीं), दाई के जानिब से कोई excuse (हीला-बहाना) ख़ुदा को मंज़ूर नहीं.

69 बेशक जो लोग ईमान लाए और जो लोग यहूदी हुए और साबी और नसरानी, जो शख़्स
भी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और नेक अमल करे तो उनके लिए न कोई

अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे.

70 हमने बनी इसराईल से अहद (वचन) लिया और उनकी तरफ़ बहुत से रसूल भेजे. जब
कोई रसूल उनके पास ऐसी बात लेकर आया जिसे उनका जी न चाहता था तो कुछ को उन्होंने
झुठलाया और कुछ को क़तल कर दिया. 71 और ख़याल किया कि कुछ ख़राबी न होगी. पस वे
अंधे और बहरे बन गए. फिर अल्लाह ने उनपर तवज्जोह की. फिर उनमें से बहुत से अंधे और बहरे
बन गए. और अल्लाह देख रहा है, जो कुछ वे कर रहे हैं.

72 यक़ीनन उन लोगों ने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा ही तो मसीह इब्ने-मरयम है.
हालाँकि मसीह ने कहा था कि ऐ बनी इसराईल! अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और
तुम्हारा रब भी. जो शख़्स अल्लाह का शरीक ठहराएगा तो अल्लाह ने हराम की उसपर जन्नत और
उसका ठिकाना आग है. और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं. 73 यक़ीनन उन लोगों ने कुफ़्र
किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा तीन में का तीसरा है. हालाँकि कोई माबूद (पूज्य) नहीं सिवाय एक
माबूद के. और अगर वे बाज़ न आए उससे जो वे कहते हैं तो उनमें से कुफ़्र पर क़ायम रहने वालों
को एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा. 74 ये लोग अल्लाह के आगे तौबा क्यों नहीं करते और उससे
माफ़ी क्यों नहीं चाहते. और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. 75 मसीह इब्ने-मरयम तो सिर्फ़
एक रसूल हैं. उनसे पहले भी बहुत रसूल गुज़र चुके हैं. और उनकी माँ एक रास्तबाज़ (नेक)
ख़ातून थीं. दोनों खाना खाते थे (दूसरे इंसानों की ही तरह). देखो हम किस तरह उनके सामने
दलीलें बयान कर रहे हैं. फिर देखो वे किधर उलटे चले जा रहे हैं. 76 कहो, क्या तुम अल्लाह को
छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत करते हो जो न तुम्हारे नुक़सान का इख़्तियार रखती है और न नफ़े
का. और (सब कुछ) सुनने वाला और जानने वाला सिर्फ़ अल्लाह ही है.

77 कहो, ऐ अहले-किताब! अपने दीन में नाहक़ ग़ुलू (अतिरेक) न करो और उन लोगों
के ख़यालात की पैरवी न करो जो इससे पहले गुमराह हुए और जिन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह
किया. और वे सीधी राह से भटक गए.

78 बनी इसराईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनपर लानत की गई दाऊद और ईसा
इब्ने-मरयम की ज़बान से. इसलिए कि उन्होंने नाफ़रमानी की और वे हद से आगे बढ़ जाते थे.
79 वे एक दूसरे को मना नहीं करते थे बुराई से जो वे करते थे. निहायत बुरा काम था जो वे कर रहे
थे. 80 तुम उनमें बहुत आदमी देखोगे कि कुफ़्र करने वालों से दोस्ती रखते हैं. कैसी बुरी चीज़ है
जो उन्होंने अपने लिए आगे भेजी है कि ख़ुदा का ग़ज़ब हुआ उनपर और वे हमेशा अज़ाब में पड़े
रहेंगे. 81 अगर वे ईमान रखने वाले होते अल्लाह पर और नबी पर और उसपर जो उसकी तरफ़
उतरा तो वे मुन्किरों को दोस्त न बनाते. मगर उनमें अकसर नाफ़रमान हैं.

82 ईमान वालों के साथ दुश्मनी में तुम सबसे बढ़कर यहूद और मुशरिकीन को पाओगे. और ईमान वालों के साथ दोस्ती में तुम सबसे ज़्यादा उन लोगों को पाओगे जो अपने को नसारा कहते हैं. यह इसलिए कि उनमें आलिम और राहिब हैं. और इसलिए कि वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते.

पारा – 7

83 **और जब वे उस कलाम को सुनते हैं जो रसूल पर उतारा गया है तो तुम देखोगे कि उनकी आंखों से आंसू जारी हैं इस सबब से कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया. वे पुकार उठते हैं कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए. पस तू हमें गवाही देने वालों में लिख ले.** 84 **और हम क्यों न ईमान लाएँ अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हमें पहुँचा है, जबकि हम यह आरज़ू रखते हैं कि हमारा रब हमें सालेह (नेक) लोगों में शामिल करे.**

नोटः– कुरआन हक़ को जानने का वाहिद ज़रिया है, कुरआन के ज़रीए से हक़ को दरयाफ़्त करना ही हक़ को दरयाफ़्त करना है. क़ुरआन के बग़ैर हक़ की गहरी दरयाफ़्त मुमकिन नहीं. तारीख़ (history) में बड़े–बड़े ज़ेहन जिन्होंने इस्लाम क़बूल किया उन्होंने कुरआन की गहरी स्टडि की और हक़ को दरयाफ़्त किया. इससे इस बात का पता चलता है कि कुरआन को उन इंसानों तक पहुँचाना कितना ज़रूरी है, जिन तक कुरआन अभी नहीं पहुँचा. कुरआन से इंसानों को दूर रखना ख़ुदा की हिदायत व रहमत से दूर रखना है. जो लोग दूसरे इंसानों को ख़ुदा की हिदायत व रहमत से दूर रखेंगे, क्या वह लोग आख़िरत में ख़ुदा की क़ुरबत हासिल करेंगे.

85 पस अल्लाह उन्हें इस क़ौल के बदले में ऐसे बाग़ देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे. और यही बदला है नेक अमल करने वालों का. 86 और जिन्होंने इन्कार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं.

87 ऐ ईमान वालो! उन सुथरी चीज़ों को हराम न ठहराओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल

की हैं और हद से न बढ़ो. अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता 88 और अल्लाह ने तुम्हें
जो हलाल चीज़ें दी हैं उनमें से खाओ. और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो. 89
अल्लाह तुम से तुम्हारी बेमाना क़समों पर गिरफ़्त नहीं करता. मगर जिन क़समों को तुमने मज़बूत
बांधा उनपर वह ज़रूर तुम्हारी गिरफ़्त करेगा. ऐसी क़सम का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है दस
मिसकीनों को औसत दर्जे का खाना खिलाना जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या कपड़ा
पहना देना या एक गर्दन आज़ाद करना. और जिसे यह मयस्सर न हो (यानी जो ऐसा करने में
असमर्थ हो) वह तीन दिन के रोज़े रखे. यह कफ़्फ़ारा है तुम्हारी क़समों का, जबकि तुम क़सम खा
बैठो. और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो. इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान
करता है, ताकि तुम शुक्र अदा करो.

90 ऐ ईमान वालो! शराब और जुआ और बुत (मूर्ति) और पाँसे सब गंदे काम हैं शैतान के.
पस तुम इनसे बचो, ताकि तुम फ़लाह (सफलता) पाओ. 91 शैतान तो यही चाहता है कि शराब
और जुए के ज़रीए तुम्हारे दरमियान दुश्मनी और बुग़्ज़ (द्वेष) डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद
और नमाज़ से रोक दे. तो क्या तुम इन (चीज़ों) से बाज़ आओगे. 92 और इताअत करो अल्लाह
की और इताअत करो रसूल की और बचो. अगर तुम एराज़ (उपेक्षा) करोगे तो जान लो कि हमारे
रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ खोल कर पहुँचा देना है. 93 जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उनपर
उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं जो वे खा चुके. जबकि वे डरे और ईमान लाए और नेक काम किया.
फिर डरे और ईमान लाए फिर डरे और नेक काम किया. और अल्लाह नेक काम करने वालों के
साथ मुहब्बत रखता है.

94 ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें उस शिकार के ज़रीए से आज़माइश में डालेगा जो बिल्कुल
तुम्हारे हाथों और तुम्हारे नेज़ों की ज़द में होगा, ताकि अल्लाह जाने की कौन शख़्स उससे बिना देखे
डरता है. फिर जिसने इसके बाद ज़्यादती की तो उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है. 95 ऐ ईमान
वालो! शिकार को न मारो, जबकि तुम हालते-एहराम में हो. और तुम में से जो शख़्स उसे जान
बूझकर मारे तो उसका बदला उसी तरह का जानवर है जैसा कि उसने मारा है, जिसका फ़ैसला तुम
में से दो आदिल आदमी करेंगे और यह नज़राना काबा पहुँचाया जाए. या इसके कफ़्फ़ारे
(प्रायश्चित) में कुछ मोहताजों को खाना खिलाना होगा. या उसके बराबर रोज़े रखने होंगे, ताकि
वह अपने किए की सज़ा चखे. अल्लाह ने माफ़ किया जो कुछ पहले हो चुका. और जो शख़्स फिर
वही करेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा. और अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला है.

96 तुम्हारे लिए दरिया का शिकार और उसका खाना जायज़ किया गया, तुम्हारे फ़ायदे के लिए
और क़ाफ़िलों के लिए. और जब तक तुम एहराम में हो ख़ुश्की का शिकार तुम्हारे ऊपर हराम किया

गया. और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम हाज़िर किए जाओगे. 97 अल्लाह ने काबा, हुरमत वाले घर, को लोगों के लिए क़याम का ज़रिया बनाया. और हुरमत वाले महीनों को और क़ुर्बानी के जानवरों को और गले में पट्टा पड़े हुए जानवरों को भी, यह इसलिए कि तुम जानो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है. और अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है. 98 जान लो कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है और बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.

99 **रसूल पर सिर्फ़ (हमारा पैग़ाम) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है. अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो.**

नोटः– ख़त्मे–नबुवत के बाद अब यही ज़िम्मेदारी **'उम्मते–मुहम्मदी'** पर है. अब **'उम्मते–मुहम्मदी'** को अल्लाह का पैग़ाम क़यामत तक के सारे इन्सानों तक पहुँचाना है. इसी काम की बुनियाद पर उम्मत ख़ुदा की नज़र में **'उम्मते–मुहम्मदी'** क़रार पाएगी.

100 कहो कि नापाक और पाक बराबर नहीं हो सकते, अगरचे नापाक की कसरत (अधिकता) तुम्हें भली लगे. पस अल्लाह से डरो, ऐ अक़्ल वालो! ताकि तुम फ़लाह पाओ.

101 ऐ ईमान वालो! ऐसी बातों के मुतआल्लिक़ सवाल न करो कि अगर वे तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँ तो तुम्हें गिरां गुज़रें (अप्रिय लगें). और अगर तुम उनके मुतआल्लिक़ सवाल करोगे ऐसे वक़्त में, जबकि क़ुरआन उतर रहा है तो वे तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँगी. अल्लाह ने उनसे दरगुज़र किया. और अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (उदारता) वाला है. 102 ऐसी ही बातें तुम से पहले एक जमात ने पूछी. फिर वे उनके मुन्किर होकर रह गए. 103 अल्लाह ने 'बहिरा', 'साएबा', 'वसीला' और 'हाम' (बुतों के नाम पर छोड़े हुए जानवर) मुक़र्रर नहीं किए. मगर जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे अल्लाह पर झूठ बांधते हैं और उनमें से अकसर अक़्ल से काम नहीं लेते. 104 और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसकी तरफ़ आओ और रसूल की तरफ़ आओ तो वे कहते हैं कि हमारे लिए वही काफ़ी है जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया है. क्या अगरचे उनके बड़े न कुछ जानते हों और न हिदायत पर हों. 105 ऐ ईमान वालो! तुम अपनी फ़िक्र रखो. कोई गुमराह हो तो उससे तुम्हारा कुछ नुक़सान नहीं अगर तुम हिदायत पर हो. तुम सबको अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे.

106 ऐ ईमान वालो! जब तुम में से किसी की मौत का वक़्त आ जाए, तो तुम्हारे दरमियान वसीयत के वक़्त गवाही इस तरह है कि दो मोतबर (विश्वसनीय) आदमी तुम में से गवाह हों. या अगर तुम सफ़र की हालत में हो और वहाँ मौत की मुसीबत पेश आ जाए तो तुम्हारे ग़ैरों में से दो

गवाह ले लिए जाएँ. फिर अगर तुम्हें शुबहा हो जाए तो दोनों गवाहों को नमाज़ के बाद रोक लो और वे दोनों ख़ुदा की क़सम खाकर कहें कि हम किसी क़ीमत के एवज़ इसे न बेचेंगे, चाहे कोई रिश्तेदार (संबंधी) ही क्यों न हो. और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाएंगे. अगर हम ऐसा करें तो बेशक हम गुनाहगार होंगे. 107 फिर अगर पता चले कि उन दोनों ने कोई हक़-तलफ़ी की है तो उनकी जगह दो और शख़्स उन लोगों में से खड़े हों जिनका हक़ पिछले दो गवाहों ने मारना चाहा था. वे ख़ुदा की क़सम खाएं कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़्यादा बरहक़ है और हमने कोई ज़्यादती नहीं की है. अगर हम ऐसा करें तो हम ज़ालिमों में से होंगे. 108 यह क़रीबतरीन तरीक़ा है कि लोग गवाही ठीक दें. या इससे डरें कि हमारी क़सम उनकी क़सम के बाद उलटी पड़ेगी. और अल्लाह से डरो और सुनो. अल्लाह नाफ़रमानों को सीधी राह नहीं चलाता.

109 **जिस दिन अल्लाह पैग़म्बरों को जमा करेगा फिर पूछेगा,** तुम्हें (लोगों की तरफ़ से) **क्या जवाब** (response) **मिला था. वह कहेंगे, हमें कुछ इल्म नहीं, छुपी हुई बातों को जानने वाला तू ही है.**

नोटः- ● इसी तरह क़ुरआन की सूरह **28**, आयत **65** में आया है- **'और जिस दिन ख़ुदा उन्हें पुकारेगा और पूछेगा कि तुमने पैग़ाम पहुँचाने वालों को क्या जवाब दिया था?'**

इन दोनों आयतों में **'रसूल'** की जमा **'रुसुल और मुरसलीन'** यह लफ़्ज़ आए हैं, जैसा कि क़ुरआन की सूरह **04**, आयत **163-165** से वाज़ेह है कि सारे नबियों का मिशन सिर्फ़ **'दावत'** था. क़ुरआन की इन आयतों से यह बात वाज़ेह होती है कि उन लोगों से पूछ होने वाली है जिन पर पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी है.

● ख़त्मे-नबुवत के बाद ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाने की यह ज़िम्मेदारी **'उम्मते-मुहम्मदी'** पर है. तो इससे वाज़ेह है कि **'उम्मते-मुहम्मदी'** से भी बिलाशुबहा यह पूछ होने वाली है कि **'क्या तुमने पैग़ाम पहुँचा दिया था?'** जैसा कि सूरह **39** आयत **69** में फ़रमाया कि **पैग़ंबर और गवाह हाज़िर किए जाएंगे.** यहां गवाह से मुराद ग़ैरे-पैग़ंबर दाई हैं.

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)

● यह आयतें यौमुल-हिसाब (यानी हिसाब के दिन) से ताल्लुक़ रखती हैं, इसी तरह यह आयतें बताती हैं कि दावत की ज़िम्मेदारी का मसला कितना संगीन मसला है. इस मामले में हिसाब के दिन दोनों से पूछ होने वाली है, दाई से भी और मदू से भी.

अगर दाइयों ने ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचाकर अपनी ज़िम्मेदारी अदा कर दी होगी तो वे ख़ुदा की अदालत में ज़िम्मेदारी से बरी क़रार दिए जाएंगे. इसके बाद मामला ख़ुदा और उन बंदों के बीच होगा जिन तक पैग़ाम पहुंचा दिया गया था. अगर दाइयों ने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं की होगी तो मामला ख़ुदा और दाइयों के बीच का बन जाएगा.

110 जब अल्लाह कहेगा, ऐ ईसा इब्ने-मरयम! मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर और तुम्हारी माँ पर की, जबकि मैंने रूहे-पाक से तुम्हारी मदद की. तुम लोगों से कलाम करते थे गोद में भी और बड़ी उम्र में भी. और जब मैंने तुम्हें किताब और हिकमत और तौरात और इंजील की तालीम दी. और जब तुम मिट्टी से परिंदे जैसी सूरत मेरे हुक्म से बनाते थे, फिर उसमें फूँक मारते थे तो वह मेरे हुक्म से परिंदा बन जाती थी. और तुम जन्मजात अंधे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे. और जब तुम मुरदों को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे. और जब मैंने बनी इसराईल को तुम से रोका, जबकि तुम उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए तो उनके मुन्किरों ने कहा, यह तो बस एक खुला हुआ जादू है.

111 और जब मैंने हवारियों (यानी ह. मसीह के साथियों) के दिल में डाल दिया कि मुझ पर
ईमान लाओ और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए और तू गवाह रह
कि हम फ़रमांबरदार हैं. 112 जब हवारियों ने कहा कि ऐ ईसा इब्ने-मरयम! क्या तुम्हारा रब यह
कर सकता है कि हम पर आसमान से एक ख़्वान (भोजन भरा थाल) उतारे. ईसा ने कहा, अल्लाह
से डरो अगर तुम ईमान वाले हो. 113 उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम उसमें से खाएं और
हमारे दिल मुतमइन (संतुष्ट) हों और हम यह जान लें कि तूने हमसे सच कहा और हम उसपर
गवाही देने वाले बन जाएँ. 114 ईसा इब्ने-मरयम ने दुआ की, ऐ अल्लाह, हमारे रब! तू आसमान
से हम पर एक ख़्वान उतार जो हमारे लिए एक ईद बन जाए, हमारे अगलों के लिए और हमारे
पिछलों के लिए और तेरी तरफ़ से एक निशानी हो. और हमें अता कर, तू ही बेहतरीन अता करने
वाला है. 115 अल्लाह ने कहा, मैं यह ख़्वान ज़रूर तुम पर उतारूंगा. फिर उसके बाद तुम में से जो
शख़्स मुन्किर होगा, उसे मैं ऐसी सज़ा दूँगा जो दुनिया में किसी को न दी होगी.

116 और जब अल्लाह पूछेगा कि ऐ ईसा इब्ने-मरयम! क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) बना लो. वह जवाब देंगे कि तू पाक है, मेरा यह काम न था कि मैं वह बात कहूँ जिसका मुझे कोई हक़ नहीं. अगर मैंने यह कहा होगा तो तुझे ज़रूर मालूम होगा. तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे जी में है. बेशक तू ही है छुपी बातों का जानने वाला. 117 मैंने उनसे वही बात कही जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था. यह कि अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा भी. और मैं उनपर गवाह था जब तक मैं उनमें रहा. फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो उनपर तू ही निगरां था और तू हर चीज़ पर गवाह है. 118 अगर तू उन्हें सज़ा दे तो वे तेरे बंदे हैं और अगर तू उन्हें माफ़ कर दे तो तू ही ज़बरदस्त है हिकमत वाला है. 119 अल्लाह कहेगा कि आज वह दिन है कि सच्चों को उनका सच काम आएगा. उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं. उनमें वे हमेशा रहेंगे. अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए. यही है बड़ी कामयाबी. 120 आसमानों और ज़मीन में और जो कुछ उनमें है सब की बादशाही अल्लाह ही के लिए है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है.

सूरह-6. अल-अनआम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और तारीकियों और रोशनी को बनाया. फिर भी मुन्किर लोग दूसरों को अपने रब का हमसर (समकक्ष) ठहराते हैं. 2 वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया. फिर एक मुद्दत मुक़र्रर की और मुक़र्ररह मुद्दत उसी के इल्म में है. फिर भी तुम शक करते हो. 3 और वही अल्लाह आसमानों में है और वही ज़मीन में (यानी उसी की बादशाही है आसमानों में और ज़मीन पर). वह तुम्हारे छुपे और खुले को जानता है और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो.

4 और उनके रब की निशानियों में से जो निशानी भी उनके पास आती है, वे उससे एराज़ (उपेक्षा) करते हैं. 5 चुनाँचे जो हक़ उनके पास आया है उसे भी उन्होंने झुठला दिया. पस अनक़रीब उनके पास उस चीज़ की ख़बरें आएंगी जिसका वह मज़ाक़ उड़ाते थे. 6 क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी क़ौमों को हलाक कर दिया. उन्हें हमने ज़मीन में जमा दिया था जितना तुम्हें नहीं जमाया. और हमने उनपर आसमान से ख़ूब बारिश बरसाई और हमने नहरें जारी कीं जो उनके नीचे बहती थीं फिर हमने उन्हें उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला. और उनके बाद हमने दूसरी क़ौमों को उठाया.

7 और अगर हम तुम पर ऐसी किताब उतारते जो काग़ज़ में लिखी हुई होती और वे उसे

अपने हाथों से छू भी लेते तब भी इन्कार करने वाले यह कहते कि यह तो एक खुला हुआ जादू है. 8 और वे कहते हैं कि इसपर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया. और अगर हम कोई फ़रिश्ता उतारते तो मामले का फ़ैसला हो जाता, फिर उन्हें कोई मोहलत न मिलती. 9 और अगर हम किसी फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजते तो उसे भी आदमी बनाते और उन्हें उसी शुबहा में डाल देते जिसमें वे अब पड़े हुए हैं. 10 और तुम से पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया तो उनमें से जिन लोगों ने मज़ाक़ उड़ाया उन्हें उस चीज़ ने आ घेरा जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे. 11 कहो, ज़मीन में चलो फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ.

12 पूछो कि किस का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है. कहो, सब कुछ अल्लाह का है. उसने अपने ऊपर रहमत लिख ली है. वह ज़रूर तुम्हें जमा करेगा क़यामत के दिन, जिसमें कोई शक नहीं. जिन लोगों ने अपने आपको घाटे में डाला वही हैं जो इसपर ईमान नहीं लाते. 13 और अल्लाह ही का है जो कुछ ठहरता है रात में और जो कुछ (ठहरता है) दिन में. और वह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है. 14 कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को मददगार बनाऊँ जो बनाने वाला है आसमानों और ज़मीन का. और वह सबको खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता. कहो, मुझे हुक्म मिला है कि मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वाला बनूँ और तुम हरगिज़ मुशरिकों में से न बनो. 15 कहो, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ. 16 जिस शख़्स से वह उस रोज़ हटा लिया गया उसपर अल्लाह ने बड़ा रहम फ़रमाया और यही खुली कामयाबी है.

17 और अगर अल्लाह तुझे कोई दुख पहुँचाए तो उसके सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं. और अगर अल्लाह तुझे कोई भलाई पहुँचाए तो वह हर चीज़ पर क़ादिर है. 18 और उसी का ज़ोर है अपने बंदों पर. और वह हिकमत वाला (बुद्धिमान और) सब की ख़बर रखने वाला है.

19 तुम पूछो कि सबसे बड़ा गवाह कौन है. कहो, अल्लाह, वह मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह है और मुझ पर यह क़ुरआन उतरा है, ताकि मैं तुम्हें इस के ज़रीए से ख़बरदार कर दूँ और उसे जिसे यह पहुँचे. क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि ख़ुदा के साथ कुछ और माबूद भी हैं. कहो, मैं इसकी गवाही नहीं देता. कहो, वह तो बस एक ही माबूद है और मैं बरी हूँ तुम्हारे शिर्क से.

नोटः– रसूलुल्लाह (स.) ने अपनी 23 साला पैग़म्बराना ज़िंदगी में क़ुरआन के ज़रीए से
(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)

लोगों को ख़बरदार करने का काम अंजाम दिया. अब यही काम आपकी उम्मत को अंजाम देना है. क्योंकि रसूलों का आना बंद हो गया, लेकिन इन्सानों का आना जारी है. उम्मत के पास वही क़ुरआन महफ़ूज़ हालत में मौजूद है, जिस क़ुरआन के ज़रीए से रसूलुल्लाह (स.) लोगों को ख़ुदा के तख़्लिक़ी मंसूबे से आगाह करते थे. ख़त्मे-नबुवत वाक़ेअ हो गई, लेकिन कारे-नबुवत क़यामत तक मतलूब है. जो **'उम्मते-मुहम्मदी'** का नागुज़ीर फ़रिज़ा है.

20 जिन लोगों को हमने किताब दी है वह उसे पहचानते हैं जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं.
जिन लोगों ने अपने को घाटे में डाला वे उसे नहीं मानते. 21 और उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम
कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या अल्लाह की निशानियों को झुठलाए. यक़ीनन ज़ालिमों
को फ़लाह (सफलता) नहीं मिलती. 22 और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर हम कहेंगे
उन शरीक ठहराने वालों से कि तुम्हारे वे शरीक कहाँ हैं जिनका तुम्हें दावा था. 23 फिर उनके पास
कोई फ़रेब न रहेगा, मगर यह कि वे कहेंगे कि अल्लाह की क़सम, जो हमारा रब है, हम शिर्क करने
वाले न थे. 24 देखो यह किस तरह अपने आप पर झूठ बोले और खोई गईं उनसे वे बातें जो वे
बनाया करते थे.

25 और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और हमने उनके दिलों पर
परदे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें. और उनके कानों में बोझ है. अगर वे तमाम निशानियाँ देख
लें तब भी उनपर ईमान न लाएँगे. यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास तुम से झगड़ने आते हैं तो वे
मुन्किर कहते हैं कि यह तो बस पहले लोगों की कहानियाँ हैं. 26 वे लोगों को रोकते हैं और ख़ुद
भी उससे अलग रहते हैं. वे ख़ुद अपने को हलाक कर रहे हैं, मगर वे नहीं समझते. 27 और अगर
तुम उन्हें उस वक़्त देखो जब वे आग पर खड़े किए जाएँगे और कहेंगे कि काश हम फिर भेज दिए
जाएँ तो हम अपने रब की निशानियों को नहीं झुठलाएँगे और हम ईमान वालों में से हो जाएंगे. 28
अब उनपर वह चीज़ खुल गई जिसे वे इससे पहले छुपाते थे. और अगर वे वापस भेज दिए जाएँ
तो वे फिर वही करेंगे जिससे वे रोके गए थे. और बेशक वे झूठे हैं.

29 और कहते हैं कि ज़िंदगी तो बस यही हमारी दुनिया की ज़िंदगी है. और हम फिर उठाए
जाने वाले नहीं. 30 और अगर तुम उस वक़्त देखते, जबकि वे अपने रब के सामने खड़े किए
जाएँगे. वह उनसे पूछेगा, क्या यह हक़ीक़त नहीं है, वे जवाब देंगे हां, हमारे रब की क़सम, यह
हक़ीक़त है. ख़ुदा फ़रमाएगा. अच्छा तो अज़ाब चखो उस इन्कार के बदले जो तुम करते थे. 31

यक़ीनन वे लोग घाटे में रहे जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब वह घड़ी उनपर अचानक आएगी तो वे कहेंगे, हाय अफ़सोस! इस बाब में हमने कैसी कोताही की और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे. देखो, कैसा बुरा बोझ है जिसे वे उठाएंगे 32 और दुनिया की ज़िंदगी तो बस खेल व तमाशा है और आख़िरत का घर बेहतर है उन लोगों के लिए जो तक़वा (ईश–भय) रखते हैं, क्या तुम नहीं समझते.

33 हमें मालूम है कि वे जो कुछ कहते हैं उससे तुम्हें रंज होता है. ये लोग तुम्हें नहीं झुठलाते, बल्कि यह ज़ालिम दरअसल अल्लाह की निशानियों का इन्कार कर रहे हैं. 34 और तुम से पहले भी रसूलों को झुठलाया गया तो उन्होंने झुठलाए जाने और तकलीफ़ पहुँचाने पर सब्र किया, यहाँ तक कि उन्हें हमारी मदद पहुँच गई. और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं. और पैग़म्बरों की कुछ ख़बरें तुम्हें पहुँच ही चुकी हैं. 35 और अगर उनकी बेरुख़ी तुम पर गिरां गुज़र रही है तो अगर तुम में कुछ ज़ोर है तो ज़मीन में कोई सुरंग ढूंढो या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उनके लिए कोई निशानी ले आओ. और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको हिदायत पर जमा कर देता. पस तुम नादानों में से न बनो. 36 क़बूल तो वही लोग करते हैं जो सुनते हैं और मुरदों को अल्लाह उठाएगा फिर वे उसकी तरफ़ लौटाए जाएँगे.

37 और वे कहते हैं कि रसूल पर कोई निशानी उसके रब की तरफ़ से क्यों नहीं उतरी. कहो, बेशक अल्लाह क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे, मगर अकसर लोग नहीं जानते. 38 और जो भी जानवर ज़मीन पर चलता है और जो भी परिंदा अपने दोनों बाज़ुओं से उड़ता है, वे सब तुम्हारी ही तरह के जीवधारी समूह हैं. हमने लिखने में कोई चीज़ नहीं छोड़ी है. फिर सब अपने रब के पास इकट्ठा किए जाएँगे. 39 और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया वे बहरे और गूँगे हैं, तारीकियों में पड़े हुए हैं. अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है.

40 कहो, यह बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब आए या क़यामत आ जाए तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे. बताओ अगर तुम सच्चे हो, 41 बल्कि तुम उसी को पुकारोगे. फिर वह दूर कर देता है उस मुसीबत को जिसके लिए तुम उसे पुकारते हो अगर वह चाहता है. और तुम भूल जाते हो उन्हें जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो.

42 और तुम से पहले बहुत सी क़ौमों की तरफ़ हमने रसूल भेजे. फिर हमने उन्हें पकड़ा सख़्ती में और तकलीफ़ में, ताकि वे गिड़गिड़ाएं. 43 पस जब हमारी तरफ़ से उनपर सख़्ती आयी तो क्यों न वे गिड़गिड़ाएं. बल्कि उनके दिल सख़्त हो गए. और शैतान उनके अमल को उनकी नज़र में ख़ुशनुमा करके दिखाता रहा. 44 फिर जब उन्होंने उस नसीहत को भुला दिया जो उन्हें की

गई थी तो हमने उनपर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये. यहाँ तक की जब वे उस चीज़ पर ख़ुश हो गए जो उन्हें दी गई थी तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया. उस वक़्त वे नाउम्मीद होकर रह गए.
45 पस उन लोगों की जड़ काट दी गई जिन्होंने ज़ुल्म किया था और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जो तमाम जहानों का रब है.

46 कहो, यह बताओ कि अल्लाह अगर छीन ले तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (पूज्य) है जो उसे वापस लाए. देखो हम कैसे तरह–तरह से निशानियाँ बयान करते हैं, फिर भी वे एराज़ (उपेक्षा) करते हैं. 47 कहो,
यह बताओ अगर अल्लाह का अज़ाब तुम्हारे ऊपर अचानक या एलानिया आ जाए तो ज़ालिमों के सिवा और कौन हलाक होगा.

48 और रसूलों को हम सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाले या डराने वाले की हैसियत से भेजते हैं. फिर जो ईमान लाया और अपनी इसलाह की तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे.

नोटः– यही रसूलों वाला काम अब रसूलों के मानने वालों को करना है, क्योंकि अब कोई रसूल आने वाला नहीं है. ख़ुदा रसूलों के ज़रीए से इंसानों तक अपना पैग़ाम पहुँचाता रहा. अब ख़ुदा का पैग़ाम 'कुरआन' की शकल में पूरी तरह महफ़ूज़ हालत में मौजूद है. अब कुरआन के मानने वालों का काम यह है कि वह कुरआन को उन इंसानों तक पहुँचा दें जिन तक वह नहीं पहुँचा है, ताकि वे लोग ख़ुदा के पैग़ाम से आगाह हो जाएँ.

49 और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया तो उन्हें अज़ाब पकड़ लेगा इसलिए कि वे नाफ़रमानी करते थे. 50 कहो, मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूँ और न मैं तुम से कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ. मैं तो बस उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की पैरवी करता हूँ जो मेरे पास आती है. कहो, क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं. क्या तुम ग़ौर नहीं करते.

51 **और तुम इस 'वही' के ज़रीए से (यानी इस क़ुरआन के ज़रीए से) डराओ उन लोगों को जो अंदेशा रखते हैं इस बात का कि वे अपने रब के पास जमा किए जाएँगे इस हाल में कि अल्लाह के सिवा न उनका कोई हिमायती होगा और न सिफ़ारिश करने वाला, शायद कि वे अल्लाह से डरें.**

नोटः– इससे वाज़ेह है कि सारे इंसानों तक पहुँचाने की सबसे अहम चीज़ क्या है? वह ख़ुदा का पैग़ाम 'क़ुरआन' है, ताकि लोग इस बात से आगाह हो जाएँ कि उन्हें उनके रब के पास जमा किया जाएगा और उस रोज़ उनके रब के सिवा उनका न कोई हिमायती होगा और न सिफ़ारिश करने वाला.

52 और तुम उन लोगों को अपने से दूर न करो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं, उसकी ख़ुशनुदी चाहते हुए. उनके हिसाब में से किसी चीज़ का बोझ तुम पर नहीं और तुम्हारे हिसाब में से किसी चीज़ का बोझ उनपर नहीं कि तुम उन्हें अपने से दूर करके बेइंसाफ़ों में से हो जाओ. 53 और इस तरह हमने उनमें से एक को दूसरे से आज़माया है, ताकि वे कहें कि क्या हम में से यही वे लोग हैं जिनपर अल्लाह का फ़ज़ल हुआ है. क्या अल्लाह शुक्रगुज़ारों से ख़ूब वाक़िफ़ नहीं.

54 और जब तुम्हारे पास वे लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं तो उनसे कहो कि तुम पर सलामती हो. तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत लिख ली है. बेशक तुम में से जो कोई नादानी से बुराई कर बैठे फिर उसके बाद वह तौबा करे और इसलाह (सुधार) कर ले तो वह बख़्शने वाला मेहरबान है. 55 और इस तरह हम अपनी निशानियाँ खोल कर बयान करते हैं, ताकि मुजरिमीन का तरीक़ा ज़ाहिर हो जाए.

56 कहो, मुझे इससे रोका गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो. कहो, मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों की पैरवी नहीं कर सकता. अगर मैं ऐसा करूँ तो मैं बेराह हो जाऊँगा और मैं राह पाने वालों में से न रहूँगा. 57 कहो, मैं अपने रब की तरफ़ से एक रोशन दलील पर हूँ और तुमने उसे झुठला दिया है. वह चीज़ मेरे पास नहीं है जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो. फ़ैसले का इख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह को है. वही हक़ को बयान करता है और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है. 58 कहो, अगर वह चीज़ मेरे पास होती जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो तो मेरे और तुम्हारे दरमियान मामले का फ़ैसला हो चुका होता, और अल्लाह ख़ूब जानता है

ज़ालिमों को. 59 और उसी के पास ग़ैब (अदृश्य) की कुंजियां हैं, उसके सिवा उसे कोई नहीं जानता. अल्लाह जानता है जो कुछ ख़ुश्की और समुंदर में है. और दरख़्त से गिरने वाला कोई पत्ता नहीं जिसका उसे इल्म न हो और ज़मीन की तारीकियों में कोई दाना नहीं गिरता और न कोई गीली और ख़ुश्क चीज़, मगर सब एक खुली किताब में दर्ज है.

60 और वही है जो रात में तुम्हें वफ़ात देता है और दिन को जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है. फिर तुम्हें उठा देता है उसमें, ताकि मुक़र्रर मुद्दत पूरी हो जाए. फिर उसी की तरफ़ तुम्हारी वापसी है. फिर वह तुम्हें बाख़बर कर देगा उससे जो तुम करते रहे हो. 61 और वह ग़ालिब (वर्चस्ववान) है अपने बंदों के ऊपर और वह तुम्हारे ऊपर निगरां (निरीक्षक) भेजता है, यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मौत का वक़्त आ जाता है तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वे कोताही नहीं करते. 62 फिर सब अपने मालिके-हक़ीक़ी, अल्लाह की तरफ़ वापस लाए जाएँगे. सुन लो, हुक्म उसी का है और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है.

63 कहो, कौन तुम्हें नजात देता है ख़ुश्की और समुंदर की तारीकियों से, तुम उसे पुकारते हो आजिज़ी से और चुपके—चुपके कि अगर ख़ुदा ने हमें नजात दे दी इस मुसीबत से तो हम उसके शुक्रगुज़ार बंदों में से बन जाएँगे. 64 कहो, ख़ुदा ही तुम्हें नजात देता है उससे और हर तकलीफ़ से, फिर भी तुम शिर्क (साझीदार ठहराना) करने लगते हो. 65 कहो, ख़ुदा क़ादिर है इसपर कि तुम पर कोई अज़ाब भेज दे, तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से या तुम्हें गिरोह—गिरोह करके एक को दूसरे की ताक़त का मज़ा चखा दे. देखो, हम किस तरह दलाइल (तर्क) मुख़्तलिफ़ पहलुओं से बयान करते हैं, ताकि वे समझें. 66 और तुम्हारी क़ौम ने उसे झुठला दिया है, हालाँकि वह हक़ है. कहो, मैं तुम्हारे ऊपर दारोग़ा नहीं हूँ. 67 हर ख़बर के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है और तुम जल्द ही जान लोगे.

68 और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों में ऐब निकालते हैं तो उनसे अलग हो जाओ, यहाँ तक कि वे किसी और बात में लग जाएँ. और अगर कभी शैतान तुम्हें भुला दे तो याद आने के बाद ऐसे बेइंसाफ़ लोगों के पास न बैठो. 69 और जो लोग अल्लाह से डरते हैं उनपर उनके हिसाब में से किसी चीज़ की ज़िम्मेदारी नहीं. अलबत्ता याद दिलाना है शायद कि वे भी डरें.

70 उन लोगों को छोड़ो जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना रखा है और जिन्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में डाल रखा है. और क़ुरआन के ज़रीए नसीहत करते रहो, ताकि कोई शख़्स अपने किए में गिरफ़्तार न हो जाए, इस हाल में कि अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार और सिफ़ारिशी उसके लिए न हो. अगर वह दुनिया भर का मुआवज़ा दे तब भी क़बूल न किया जाए. यही लोग हैं जो अपने किए में गिरफ़्तार हो गए. उनके लिए खौलता पानी पीने के लिए होगा और दर्दनाक सज़ा होगी इसलिए कि वे कुफ़्र करते थे.

नोटः- दाई का काम यह है कि वह लोगों को क़ुरआन के ज़रीए से नसीहत करता रहे. लोगों को यह बताना ज़रूरी है कि जो कुछ वे कर रहे हैं, वह यूं ही ख़त्म हो जाने वाला नहीं है. उनके आमाल उन्हें घेरे में ले रहे हैं.

यहाँ दूसरी बात यह वाज़ेह होती है कि जो लोग दीन के मामले में ग़ैर-संजीदा बने हुए हैं और ज़िंदगी की हक़ीक़त भूलकर ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, ऐसे लोगों की सरकशी से दाई को हरगिज़ मायूस नहीं होना है. उसे अपने ज़िम्मेदारी का काम करते रहना है और वह काम लोगों को क़ुरआन के ज़रीए से नसीहत करना है.

71 कहो, क्या हम अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारें जो न हमें नफ़ा दे सकते और न हमें नुक़सान पहुँचा सकते. और क्या हम उलटे पांव फिर जाएँ, बाद इसके कि अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखा चुका है, उस शख़्स की मानिंद जिसे शैतानों ने बयाबान में भटका दिया हो और वह हैरान फिर रहा हो, उसके साथी उसे सीधे रास्ते की तरफ़ बुला रहे हों कि हमारे पास आ जाओ.

कहो कि रहनुमाई तो सिर्फ़ अल्लाह की रहनुमाई है

और हमें हुक्म मिला है कि हम अपने आपको संसार के रब के हवाले कर दें. 72 और यह कि नमाज़ क़ायम करो और अल्लाह से डरो, वही है जिसकी तरफ़ तुम समेटे जाओगे. 73 और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है और जिस दिन वह कहेगा कि हो जा

तो वह हो जाएगा. उसकी बात हक़ है और उसी की हुकूमत होगी उस रोज़ जब सूर फूंका जाएगा. वह ग़ायब और ज़ाहिर का जानने वाला है. और हकीम व ख़बीर (बुद्धिमान एवं सर्वज्ञानी) है.

74 और जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा कि क्या तुम बुतों को ख़ुदा मानते हो. मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली हुई गुमराही में देखता हूं. 75 और इसी तरह हमने इब्राहीम को दिखा दी आसमानों और ज़मीन की हुकूमत, ताकि उसे यक़ीन आ जाए. 76 फिर जब रात ने उसपर अंधेरा कर लिया तब उसने एक तारे को देखा. कहा, यह मेरा रब है. फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा, मैं डूब जाने वालों को दोस्त नहीं रखता. 77 फिर जब उसने चांद को चमकते हुए देखा तो कहा, यह मेरा रब है. फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा, अगर मेरा रब मुझे हिदायत न करे तो मैं गुमराह लोगों में से हो जाऊँगा. 78 फिर जब सूरज को चमकते हुए देखा तो कहा कि यह मेरा रब है, यह सबसे बड़ा है. फिर जब वह डूब गया तो उसने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ लोगो! मैं उस शिर्क से (यानी ख़ुदा का साझीदार ठहराने के अमल से) बरी हूं जो तुम करते हो. 79 मैंने अपना रुख़ यकसू होकर उसकी तरफ़ कर लिया जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं.

80 और उसकी क़ौम उससे झगड़ने लगी. उसने कहा, क्या तुम अल्लाह के मामले में मुझ से झगड़ते हो, हालाँकि उसने मुझे राह दिखा दी है. और मैं उनसे नहीं डरता जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक ठहराते हो, मगर यह कि कोई बात मेरा रब ही चाहे. मेरे रब का इल्म हर चीज़ पर छाया हुआ है, क्या तुम नहीं सोचते. 81 और मैं क्योंकर डरूं तुम्हारे शरीकों से, जबकि तुम अल्लाह के साथ उन चीज़ों को ख़ुदाई में शरीक ठहराते हुए नहीं डरते जिनके लिए उसने तुम पर कोई सनद नहीं उतारी. अब दोनों फ़रीक़ों (पक्षों) में से अमन का ज़्यादा मुस्तहिक़ कौन है, (बताओ) अगर तुम जानते हो. 82 जो लोग ईमान लाए और नहीं मिलाया उन्होंने अपने ईमान में कोई नुक़सान, उन्हीं के लिए अमन है और वही सीधी राह पर हैं. 83 यह है हमारी दलील जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में दी. हम जिसके दर्जे चाहते हैं बुलंद कर देते हैं. बेशक तुम्हारा रब हकीम व अलीम (बुद्धिमान एवं ज्ञानवान) है.

84 और हमने इब्राहीम को इस्हाक़ और याक़ूब अता किए, हर एक को हमने हिदायत दी और नूह को भी हमने हिदायत दी उससे पहले. और उसकी नस्ल में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को भी. और हम नेकों को इसी तरह बदला देते हैं. 85 और ज़करिया और यहया और ईसा और इलियास को भी, इनमें से हर एक सालेह (नेक) था. 86 और इस्माईल और अलयसअ और यूनुस और लूत को भी और इनमें से हर एक को हमने दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) अता की. 87 और उनके बाप-दादा और उनकी औलाद और

उनके भाइयों में से भी, और उन्हें हमने चुन लिया और हमने सीधे रास्ते की तरफ़ उनकी रहनुमाई की. 88 यह अल्लाह की हिदायत है, वह इससे सरफ़राज़ करता है, अपने बंदों में से जिसे चाहता है. और अगर वे शिर्क करते तो ज़ाया हो जाता जो कुछ उन्होंने किया था. 89 ये लोग हैं जिन्हें हमने किताब और हिकमत और नबुवत अता की. पस अगर ये मक्का वाले इसका इन्कार कर दें तो हमने इसके लिए ऐसे लोग मुक़र्रर कर दिए हैं जो इसके मुन्किर नहीं हैं. 90 यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बख़्शी, पस तुम भी उनके तरीक़े पर चलो. कह दो, मैं इसपर तुम से कोई मुआवज़ा नहीं माँगता. **यह (क़ुरआन) तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए**.

91 और उन्होंने अल्लाह के बारे में बहुत ग़लत अंदाज़ा लगाया, जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी इंसान पर कोई चीज़ नहीं उतारी. कहो कि वह किताब किसने उतारी थी जिसे लेकर मूसा आए थे, वह रोशनी थी और रहनुमाई थी लोगों के वास्ते, जिसे तुमने वरक़—वरक़ कर रखा है. कुछ को ज़ाहिर करते हो और बहुत कुछ छुपा जाते हो. और तुम्हें वे बातें सिखाईं जिन्हें न जानते थे तुम और न तुम्हारे बाप-दादा. कहो कि अल्लाह ने उतारी थी (वह किताब जिसे मूसा (अ.) लेकर आए थे). फिर उन्हें छोड़ दो कि अपनी कजबहसियों (कुसंवाद) में खेलते रहें.

92 **और यह एक किताब है जो हमने उतारी है, बरकत वाली है, तसदीक़ करने वाली उनकी जो इससे पहले हैं, ताकि तुम डराओ मक्का वालों को और उसके आस पास वालों को.** **और जो आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं वही उसपर ईमान लाएँगे. और वे अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करने वाले हैं.**

नोटः– जब रसूलुल्लाह (स.अ.) ने हज्जतुल-विदा के मौक़े पर अहले-ईमान से खिताब करते हुए फ़रमाया, कि क्या मैंने तुम तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया है ? तो हाज़रीन में से सब ने कहा कि आपने पूरी ख़ैरख़ाही के साथ पहुँचा दिया. फिर रसूलुल्लाह (स.अ.) ने हाज़रीन से कहा कि तुम यह पैग़ाम ग़ायबीन तक पहुँचा दो. इसके बाद सहाबा अल्लाह के पैग़ाम के साथ उस वक़्त की आबाद दुनिया में फैल गए. उस वक़्त आज की तरह वसायल नहीं होते थे. लेकिन सहाबा की दावती तड़प के सामने सारी मुश्किलात बेमाना साबित हुईं, मक्का की फ़ज़ाओं में आज भी रसूलुल्लाह (स.अ.) की यह आवाज़ गूंज रही है कि मेरी तरफ़ से अल्लाह का पैग़ाम सारे इंसानों तक पहुँचा दो.

93 और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ तोहमत बांधे या कहे कि मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आयी है, हालाँकि उसपर कोई 'वही' नाज़िल नहीं की गई हो. और कहे कि जैसा कलाम ख़ुदा ने उतारा है, मैं भी उतारूंगा. और काश तुम उस वक़्त देखो, जबकि ये ज़ालिम मौत की सख़्तियों में होंगे और फ़रिश्ते हाथ बढ़ा रहे होंगे कि लाओ अपनी जानें निकालो. आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा, इस सबब से कि तुम अल्लाह पर झूठी बातें कहते थे. और तुम अल्लाह की निशानियों से तकब्बुर (घमंड) करते थे. 94 और तुम हमारे पास अकेले–अकेले आ गए, जैसा कि हमने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया था. और जो कुछ असबाब हमने तुम्हें दिया था, सब तुम पीछे छोड़ आए. और हम तुम्हारे साथ उन सिफ़ारिश करने वालों को भी नहीं देखते जिनके मुतआल्लिक़ तुम समझते थे कि तुम्हारा काम बनाने में उनका भी हिस्सा है. तुम्हारा रिश्ता टूट गया और तुम से जाते रहे वे दावे जो तुम करते थे.

95 बेशक अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ने वाला है. वह जानदार को बेजान से निकालता है और वही बेजान को जानदार से निकालने वाला है. वही तुम्हारा अल्लाह है, फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो. 96 वही बरामद करने वाला है सुबह का और उसने रात को सुकून का वक़्त बनाया और सूरज और चांद को हिसाब से रखा है. यह हिसाब ठहराया हुआ है बड़े ग़लबे (वर्चस्व) वाले का, बड़े इल्म वाले का. 97 और वही है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाए, ताकि तुम उनके ज़रीए से ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में राह पाओ. बेशक हमने दलाइल (तर्क) खोल कर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें.

98 और वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से, फिर हर एक के लिए एक ठिकाना है और हर एक के लिए उसके सौंपे जाने की जगह. हमने दलाइल खोल कर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो समझें. 99 और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उससे निकाली उगने वाली हर चीज़. फिर हमने उससे सरसब्ज़ शाख़ निकाली जिससे हम तह–ब–तह दाने पैदा कर देते हैं. और खजूर के गाभे में से फल के गुच्छे झुके हुए और बाग़ अंगूर के और ज़ैतून के और अनार के, आपस में मिलते-जुलते और जुदा-जुदा भी. हर एक के फल को देखो जब वह फलता है. और उसके पकने को देखो जब वह पकता है. बेशक इनके अंदर निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान की तलब रखते हैं.

100 और उन्होंने जिन्नात को अल्लाह का शरीक (साझीदार) क़रार दिया. हालाँकि अल्लाह ने जिन्नात को पैदा किया है. और बे जाने-बूझे उसके लिए बेटियाँ और बेटे तराशीं. पाक और बरतर है वह उन बातों से जो ये बयान करते हैं. 101 वह आसमानों और ज़मीन का मूजिद (उत्पत्तिकर्ता) है (यानी बग़ैर किसी नमूने के वजूद में लाने वाला है). उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है, जबकि

उसकी कोई बीवी नहीं. और उसने हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज़ से बाख़बर है.
102 ऐसी (ख़ूबियों वाला) है अल्लाह, तुम्हारा रब! उसके सिवा कोई माबूद नहीं. वही हर चीज़
का ख़ालिक़ है, पस तुम उसी की इबादत करो. और वह हर चीज़ का कारसाज़ (काम
बनानेवाला) है. 103 उसे निगाहें नहीं पातीं. मगर वह निगाहों को पा लेता है. वह बड़ा बारीकबीं
और बड़ा बाख़बर है.

104 **अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से बसीरत की रोशनियां आ चुकी हैं (यानी ख़ुदा की किताब के ज़रीए से तुम्हारे हिदायत का इंतज़ाम हो चुका है). पस जो बिनाई से (दूरदृष्टि से) काम लेगा, वह अपने ही लिए (लेगा), और जो अंधा बनेगा, वह ख़ुद नुक़सान उठाएगा. और मैं तुम्हारे ऊपर कोई निगरां नहीं हूँ.**

नोटः- जो इंसान सच्चाई को पाना चाहता है उसके लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से सच्चाई को पाने का इंतज़ाम हो चुका है. अब यह इंसान के ख़ुद अपने ऊपर है कि वह सच्चाई को पाने के मामले में संजीदा है या नहीं. दाई लोगों पर दारोग़ा नहीं है, दाई का काम सच्चाई का यह पैग़ाम लोगों तक पहुँचा देना है.

105 और इस तरह हम अपनी दलीलें मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से बयान करते हैं, ताकि वे कहें
कि तुमने पढ़ दिया. और ताकि हम अच्छी तरह खोल दें उन लोगों के लिए जो जानना चाहें. 106
तुम बस उस चीज़ की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर 'वही' की जा रही है (यानी
जो संदेश प्रकट किया जा रहा है उसकी पैरवी करो). उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मुशरिकों
से एराज़ (उपेक्षा) करो. 107 और अगर अल्लाह चाहता तो ये लोग शिर्क न करते. और हमने तुम्हें
उनके ऊपर निगरां (दारोग़ा) नहीं बनाया है और न तुम उनपर मुख़्तार हो (यानी उनपर तुम्हें कोई
अधिकार नहीं).

108 **और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं उन्हें गाली न दो,** **वरना ये लोग हद से गुज़र कर जहालत की बुनियाद पर अल्लाह को गालियां देने लगेंगे. इसी तरह हमने हर गिरोह की नज़र में उसके अमल को ख़ुशनुमा बना दिया है. फिर उन सबको अपने रब की तरफ़ पलटना है. उस वक़्त अल्लाह उन्हें बता देगा जो वे करते थे.**

नोटः– हक़ के मानने वालों का यह काम नहीं कि वह उन लोगों को गालियां दें या बुरा कहें जो सच्चाई से दूर हैं, बल्कि मोमिनीने–हक़ का यह काम है कि वह उन लोगों तक पूरी ख़ैरख़ाही के साथ हक़ का पैग़ाम पहुँचा दें जो सच्चाई से दूर हैं. गाली देने से कोई शख़्स हक़ के क़रीब नहीं आएगा, बल्कि हक़ से और ज़्यादा दूर चला जाएगा. गाली देने से इंसान का ego (अना) भड़कता है, जबकि ख़ैरख़ाहाना दावत से हक़ को जानने का फ़ितरी जज़्बा उभरता है.

109 और ये लोग अल्लाह की क़सम बड़े ज़ोर से (दृढ़तापूर्वक) खाकर कहते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे ज़रूर उसपर ईमान ले आएंगे. कह दो कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं. और तुम्हें क्या ख़बर कि अगर निशानियाँ आ जाएँ, तब भी ये ईमान नहीं लाएँगे.
110 और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को फेर देंगे, जैसा कि ये लोग उसके ऊपर पहली बार ईमान नहीं लाए. और हम उन्हें उनकी सरकशी में भटकता हुआ छोड़ देंगे.

पारा – 8
111 और अगर हम उनपर फ़रिश्ते उतार देते और मुरदे उनसे बातें करते और हम सारी चीज़ें उनके सामने इकट्ठा कर देते, तब भी ये लोग ईमान लाने वाले न थे, इल्ला यह कि अल्लाह चाहे, मगर उनमें से अकसर लोग नादानी की बातें करते हैं.

112 और इसी तरह हमने बुरे आदमियों और बुरे जिन्नों को हर नबी का दुश्मन बना दिया. वे एक दूसरे को पुरफ़रेब बातें सिखाते हैं, धोखा देने के लिए. और अगर तेरा रब चाहता तो वे ऐसा न कर सकते. पस तुम उन्हें छोड़ दो कि वे झूठ बांधते रहें.
113 और ऐसा इसलिए है कि उसकी तरफ़ (यानी उस गुमराही की तरफ़) उन लोगों के दिल मायल हों जो आख़िरत पर (यानी मृत्यु-पश्चात जीवन पर) यक़ीन नहीं रखते, ताकि वे उसे पसंद करें और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है वह कर लें.

114 क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को मुंसिफ़ बनाऊँ. हालाँकि उसने तुम्हारी तरफ़ वाज़ेह किताब उतारी है. और जिन लोगों को हमने पहले किताब दी थी, वे जानते हैं कि यह तेरे रब की तरफ़ से उतारी गई है हक़ के साथ. पस तुम न हो शक करने वालों में.
115 तुम्हारे रब की बात पूरी सच्ची है और इंसाफ़ की है, कोई बदलने वाला नहीं उसकी बातों को. वह सुनने वाला है, जानने वाला है.

116 **और अगर तुम लोगों की अकसरियत के कहने पर चलो जो ज़मीन में हैं तो वे तुम्हें ख़ुदा के रास्ते से भटका देंगे. वे महज़ गुमान की पैरवी करते हैं और क़यास-आराइयां (अटकल वाली बातें) करते हैं.**

नोटः- लोग उसी चीज़ की तरफ़ दौड़े चले जा रहे हैं जिस चीज़ की तरफ़ सारे लोग दौड़ रहे हैं. वह चीज़ों को उसी तरह देख रहे हैं जैसे सारे लोग देख रहे हैं. वह वही पाना चाहते हैं जो सारे लोग पाना चाहते हैं. इन सबसे ऊपर उठ कर ज़िंदगी की सच्चाई पाने के बारे में वे सोच भी नहीं सकते. यही वजह है कि इंसानियत की अकसरीयत सच्चाई से दूर है.

117 बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है उन्हें जो उसके रास्ते से भटके हुए हैं और ख़ूब जानता है उन्हें जो राह पाए हुए हैं.

118 पस खाओ उस जानवर में से जिस पर अल्लाह का नाम लिया जाए, अगर तुम उसकी
आयतों पर ईमान रखते हो. 119 और क्या वजह है कि तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर
अल्लाह का नाम लिया गया है, हालाँकि अल्लाह ने तफ़सील से बयान कर दी हैं वे चीज़ें जिन्हें उसने
तुम पर हराम किया है, सिवा इसके कि उसके लिए तुम मजबूर हो जाओ. और यक़ीनन बहुत से
लोग अपनी ख़्वाहिशात की बिना पर (दूसरों को) गुमराह करते हैं बग़ैर किसी इल्म के. बेशक
तुम्हारा रब ख़ूब जानता है हद से निकल जाने वालों को. 120 और तुम गुनाह के ज़ाहिर को भी
छोड़ दो और उसके बातिन को भी. जो लोग गुनाह कमा रहे हैं उन्हें जल्द बदला मिल जाएगा
उसका जो वे कर रहे थे. 121 और तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न
लिया गया हो. यक़ीनन यह हुक्म को न मानना है और शयातीन इल्क़ा (प्रेरित) कर रहे हैं अपने साथियों को (यानी उनके दिलों में वसवसा डाल रहे हैं), ताकि वे तुम से झगड़ें. और अगर तुम उनका कहा मानोगे तो तुम भी मुशरिक (बहुदेववादी) हो जाओगे.

122 वह शख़्स जो मुर्दा था फिर हमने उसे ज़िंदगी दी और हमने उसे एक (हिदायत की) रोशनी दी कि उसके साथ वह लोगों में चलता है, क्या वह उस शख़्स की तरह हो सकता है जो तारीकियों में (यानी गुमराहियों के अंधेरों में) पड़ा है, जिससे निकलने वाला नहीं. इस तरह मुन्किरों
की नज़र में उनके आमाल ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं. 123 और इस तरह हर बस्ती में हमने
गुनाहगारों के सरदार रख दिए हैं कि वे वहाँ पुरफ़रेब कार्रवाइयां करें. हालाँकि वे जो पुरफ़रेब

कार्रवाइयां करते हैं (हक़ीक़तन) अपने ही ख़िलाफ़ करते हैं, मगर वे उसे नहीं समझते. 124 और जब उनके पास कोई निशानी आता है तो वे कहते हैं कि हम हरगिज़ न मानेंगे, जब तक हमें भी वही न दिया जाए जो ख़ुदा के पैग़म्बरों को दिया गया. अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे अपनी पैग़म्बरी किसे बख़्शे. जो लोग मुजरिम हैं, ज़रूर उन्हें अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत नसीब होगी और सख़्त अज़ाब भी, इस वजह से कि वे मक्र (चालबाज़ी) करते थे.

125 अल्लाह जिसे चाहता है कि हिदायत दे तो उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है. और जिसे चाहता है कि गुमराह करे तो उसके सीने को बिल्कुल तंग कर देता है जैसे उसे आसमान में चढ़ना पड़ रहा हो. इस तरह अल्लाह गंदगी डाल देता है उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते. 126
और यही तुम्हारे रब का सीधा रास्ता है. हमने वाज़ेह कर दी हैं निशानियाँ ग़ौर करने वालों के लिए.
127 उन्हीं के लिए सलामती का घर है उनके रब के पास. और वह उनका मददगार है उस अमल के सबब से जो वे करते रहे.

128 और जिस दिन अल्लाह उन सबको जमा करेगा (और जिन्नों से कहेगा), ऐ जिन्नों के गिरोह! तुमने बहुत से ले लिए इंसानों में से. और इंसानों में से उनके साथी कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमने एक दूसरे को इस्तेमाल किया और हम पहुँच गए अपने उस वादे को जो तूने हमारे लिए मुक़र्रर किया था. ख़ुदा कहेगा, अब तुम्हारा ठिकाना आग है, हमेशा उसमें रहोगे, मगर जो अल्लाह चाहे. बेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला, इल्म वाला (बुद्धिमान एवं ज्ञानवान) है. 129 और इसी
तरह हम साथ मिला देंगे गुनाहगारों को एक दूसरे से, उन आमाल के सबब जो वे करते थे.

130 ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर नहीं आए जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और तुम्हें इस दिन के पेश आने से डराते थे. वे कहेंगे, हम ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाह हैं. और उन्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में रखा. और वे अपने ख़िलाफ़ ख़ुद गवाही देंगे कि बेशक हम मुन्किर थे.

नोटः– अब चूंकि पैग़ंबर आने वाले नहीं हैं, और क़ुरआन की शकल में अल्लाह की आयतें पूरी तरह महफ़ूज़ हैं. यही आयतें क़ुरआन के मानने वालों को क़यामत तक के इंसानों तक पहुँचाना है.

131 यह इस वजह से कि तुम्हारा रब बस्तियों को उनके ज़ुल्म पर इस हाल में हलाक करने वाला नहीं कि वहाँ के लोग बेख़बर हों.

132 और हर शख़्स का दर्जा है उसके अमल के लिहाज़ से. और तुम्हारा रब लोगों के आमाल से बेख़बर नहीं. 133 और तुम्हारा रब बेनियाज़ (निस्पृह) है, रहमत वाला है. अगर वह चाहे तो तुम सबको उठा ले और तुम्हारे बाद जिसे चाहे तुम्हारी जगह ले आए, जिस तरह उसने तुम्हें पैदा किया दूसरों की नस्ल से. 134 जिस चीज़ का तुम से वादा किया जा रहा है, वह आकर रहेगी. और तुम ख़ुदा को आजिज़ नहीं कर सकते. 135 कहो, ऐ लोगो! तुम अमल करते रहो अपनी जगह पर, मैं भी अमल कर रहा हूँ. तुम जल्द ही जान लोगे कि अंजामकार (यानी नतीजा) किसके हक़ में बेहतर होता है. यक़ीनन ज़ालिम कभी फ़लाह (सफलता) नहीं पा सकते.

136 और ख़ुदा ने जो खेती और चौपाए पैदा किए उसमें से उन्होंने ख़ुदा का कुछ हिस्सा मुक़र्रर किया है. पस वे कहते हैं कि यह हिस्सा अल्लाह का है, उनके गुमान के मुताबिक़, और यह हिस्सा हमारे शरीकों का है. फिर जो हिस्सा उनके शरीकों का होता है, वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता और जो हिस्सा अल्लाह के लिए है, वह उनके शरीकों को पहुँच जाता है. कैसा बुरा फ़ैसला है जो ये लोग करते हैं. 137 और इस तरह बहुत से मुशरिकों (बहुदेववादियों) की नज़र में उनके शरीकों ने अपनी औलाद के क़तल को ख़ुशनुमा बना दिया है, ताकि उन्हें बर्बाद करें और उनपर उनके दीन को मुशतबह (संदिग्ध) बना दें. और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते. पस उन्हें छोड़ दो कि अपनी इफ़्तिरा (यानी झूठ गढ़ने) में लगे रहें.

138 और कहते हैं कि यह जानवर और यह खेती मना है, इन्हें कोई नहीं खा सकता सिवा उसके जिसे हम चाहें, ऐसा वह कहते हैं अपने गुमान के मुताबिक़ और (कहते हैं कि) फ़लाँ चौपाए हैं जिनकी पीठ (सवारी और बोझा ढोने के लिए) हराम कर दी गई है और कुछ चौपाए हैं जिनपर वे अल्लाह का नाम नहीं लेते. यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है. अल्लाह जल्द उन्हें इस झूठ गढ़ने का बदला देगा. 139 और कहते हैं कि जो फ़लाँ क़िस्म के जानवरों के पेट में है, वह हमारे मर्दों के लिए ख़ास है और वह हमारी औरतों के लिए हराम है. अगर वह मुर्दा हो तो उसमें सब शरीक हैं. अल्लाह जल्द उन्हें इस कहने की सज़ा देगा. बेशक अल्लाह हिकमत वाला, इल्म वाला (बुद्धिमान एवं ज्ञानवान) है. 140 वे लोग घाटे में पड़ गए जिन्होंने अपनी औलाद को क़तल किया नादानी से, बग़ैर किसी इल्म के. और उन्होंने उस रिज़्क़ को हराम कर लिया जो अल्लाह ने उन्हें दिया था, अल्लाह पर बोहतान बांधते हुए. वे गुमराह हो गए और हिदायत पाने वाले न बने.

141 और वह अल्लाह ही है जिसने बाग़ पैदा किए, कुछ टट्टियों पर चढ़ाए जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाए जाते. और खजूर के दरख़्त और खेती कि उसके खाने की चीज़ें मुख़्तलिफ़ होती हैं और ज़ैतून और अनार आपस में मिलते जुलते भी और एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ भी. खाओ उनकी पैदावार, जबकि वे फलें और अल्लाह का हक़ अदा करो, उसके काटने के दिन. और इसराफ़ न

करो (बेजा न उडाओ, फ़ज़ुलख़र्च न करो), बेशक अल्लाह इसराफ़ करने वालों को पसंद नहीं करता. 142 और उसने मवेशियों में बोझ उठाने वाले पैदा किए और ज़मीन से लगे हुए भी. खाओ उन चीज़ों में से जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं. और शैतान की पैरवी न करो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है.

143 अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किए. दो भेड़ की क़िस्म से और दो बकरी की क़िस्म से. पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हराम किए हैं या दोनों मादा. या वे बच्चे जो भेड़ों और बकरियों के पेट में हों. मुझे दलील के साथ बताओ अगर तुम सच्चे हो. 144 और इसी तरह दो ऊंट की क़िस्म से हैं और दो गाय की क़िस्म से. पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हराम किए हैं या दोनों मादा. या वे बच्चे जो ऊंटनी और गाय के पेट में हों. क्या तुम उस वक़्त हाज़िर थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया था. फिर उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे, ताकि उसके ज़रीए से लोगों को बहका दे, बग़ैर इल्म के. बेशक अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता. 145 कहो, मुझ पर जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आयी है, उसमें तो मैं कोई चीज़ नहीं पाता जो हराम हो किसी खाने वाले पर, सिवा इसके कि वह मुरदार हो या बहाया हुआ ख़ून हो या सूअर का गोश्त हो कि वह नापाक है. या नाजायज़ ज़बीहा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो. लेकिन जो शख़्स भूख से बेइख़्तियार हो जाए, न नाफ़रमानी करे और न ज़्यादती करे, तो तेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है.

146 और यहूद पर हमने सारे नाख़ुन वाले जानवर हराम किए थे और गाय और बकरी की चरबी हराम की, सिवा उसके जो उनकी पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या किसी हड्डी से मिली हुई हो. यह सज़ा दी थी हमने उन्हें उनकी सरकशी पर और यक़ीनन हम सच्चे हैं. 147 पस अगर वे तुम्हें झुठलाएँ तो कह दो कि तुम्हारा रब बड़ी वसीअ (व्यापक) रहमत वाला है. और उसका अज़ाब मुजरिम लोगों से टल नहीं सकता.

148 जिन्होंने शिर्क किया वे कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप-दादा करते और न हम किसी चीज़ को हराम कर लेते. इसी तरह झुठलाया उन लोगों ने भी जो उनसे पहले हुए हैं. यहाँ तक कि उन्होंने हमारा अज़ाब चखा. कहो, क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है, जिसे तुम हमारे सामने पेश कर सको. तुम तो सिर्फ़ गुमान की पैरवी कर रहे हो और महज़ अटकल से काम लेते हो. 149 कहो कि पूरी हुज्जत तो अल्लाह की है. और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता. 150 कहो कि अपने गवाहों को लाओ जो इसपर गवाही दें कि अल्लाह ने इन चीज़ों को हराम ठहराया है. अगर वे झूठी गवाही दे भी दें तो तुम उनके साथ गवाही न देना, और तुम उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करो जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और जो आख़िरत पर (यानी मृत्यु-पश्चात जीवन पर) ईमान नहीं रखते और दूसरों को अपने रब का हमसर (समकक्ष) ठहराते हैं.

151 (ऐ नबी!) उनसे कहो कि आओ मैं तुम्हें सुनाऊँ तुम्हारे रब ने तुम्हें क्या करने को और क्या नहीं करने को कहा है. यह कि तुम उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और माँ बाप के साथ नेक सलूक करो और अपनी औलाद को मुफ़लिसी के डर से क़तल न करो. हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी. और बेहयाई के काम के पास न जाओ, चाहे वह ज़ाहिर हो या पोशीदा (खुली हो या छुपी). और जिस जान को अल्लाह ने हराम ठहराया उसे न मारो, मगर हक़ पर. ये वह बातें हैं जिनकी ख़ुदा ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई है, ताकि तुम अक़्ल से काम लो.

152 और यतीम के माल के पास न जाओ, मगर ऐसे तरीक़े से जो बेहतर हो, यहाँ तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए. और नाप तौल में पूरा इंसाफ़ करो. हम किसी के ज़िम्मे वही चीज़ लाज़िम करते हैं जिसकी उसे ताक़त हो. और जब बोलो तो इंसाफ़ की बात बोलो, चाहे मामला अपने रिश्तेदार ही का हो. और अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करो. ये चीज़ें हैं जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है, ताकि तुम नसीहत पकड़ो.
153 और अल्लाह ने हुक्म दिया कि यही मेरी सीधी शाह-राह है. पस इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से जुदा कर देंगें. यह अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है, ताकि तुम (गुमराही से) बचते रहो.

154 फिर हमने मूसा को किताब दी नेक काम करने वालों पर अपनी नेमतें पूरी करने के लिए और हर बात की तफ़सील और हिदायत व रहमत, ताकि वे अपने रब के मिलने का यक़ीन करें.

155 और इसी तरह हमने यह किताब उतारी है, एक बरकत वाली किताब. तो अब इसपर चलो और अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर रहम किया जाए.

156 इसलिए कि तुम यह कहने न लगो कि किताब तो हमसे पहले के दो गिरोहों को दी गई थी और हम उन्हें पढ़ने-पढ़ाने से बेख़बर थे.
157 और न यह कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम उनसे बेहतर राह पर चलने वाले होते. तो अब आ चुकी तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक रोशन दलील और हिदायत व रहमत. तो उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की निशानियों को झुठलाए और उनसे मुँह मोड़े. जो लोग हमारी निशानियों से एराज़ (उपेक्षा) करते हैं, हम उन्हें उनके एराज़ की एवज़ में बहुत बुरा अज़ाब देंगे.

नोटः- कुछ मुसलमान यह सवाल करते हैं कि क्या ग़ैर-मुस्लिम हज़रात को क़ुरआन दिया जा सकता है. यह वह लोग हैं जो अपनी दावती ज़िम्मेदारी से ग़ाफ़िल हैं. हक़ीक़त यह है कि मुसलमानों का करने का यह काम है कि वे पूरी ख़ैरख़ाही के साथ मदू तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाए वरना अल्लाह की अदालत में यही मदू गिरोह मुसलमानों को कठघरे में खड़ा कर सकता है.

158 ये लोग क्या इसके मुंतज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएं या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी ज़ाहिर हो. जिस दिन तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी आ पहुँचेगी तो किसी शख़्स को उसका ईमान नफ़ा न देगा जो पहले ईमान न ला चुका हो या अपने ईमान में कुछ नेकी न की हो. कहो, तुम राह देखो, हम भी राह देख रहे हैं.

159 जिन्होंने अपने दीन में राहें निकालीं और गिरोह—गिरोह बन गए, तुम्हें उनसे कुछ सरोकार नहीं. उनका मामला अल्लाह के हवाले है. फिर वही उन्हें बता देगा जो वे करते थे.
160 जो शख़्स नेकी लेकर आएगा तो उसके लिए उसका दस गुना है. और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा तो उसे बस उसके बराबर बदला मिलेगा और उनपर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा.

161 कहो, मेरे रब ने मुझे सीधा रास्ता बता दिया है, सही दीन का रास्ता, इब्राहीम (के दीन) का रास्ता, जो यकसू थे (अल्लाह की तरफ़) और मुशरिकीन में से न थे.

162 **कहो, मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का.**

नोटः— कुरआन की इस आयत में बंदे-मोमिन की तस्वीर खींची गई है. इसी तरह हदीस में आया है कि 'जिसने मुहब्बत की अल्लाह के लिए और गज़बनाक हुआ अल्लाह के लिए जिसने (किसी को कुछ) दिया अल्लाह के लिए और देने से रूक गया अल्लाह के लिए उसी ने अपने ईमान को मुकम्मल किया.'

इससे वाज़ेह है कि बंदे-मोमिन की पूरी ज़िंदगी ख़ुदारुख़ी ज़िंदगी होती है. वह अपने ज़िंदगी में इबादते-इलाही को उसके तमाम तक़ाज़ों के साथ शामिल करता है. वह अपने आपको ख़ुदा के मिशन में वक़्फ़ करता है. वह दुनिया में सरगर्म होता है तो ख़ुदा के मिशन के लिए सरगर्म होता है. उसपर मौत आती है तो इस हाल में आती है कि उसने अपने आपको पूरी तरह ख़ुदा के मिशन में लगा रखा था. वह पूरे मानों में ख़ुदावंदे-आलम का बंदा बना हुआ था. उसका जीना ख़ुदा के लिए जीना था, न कि ख़ुद अपने लिए जीना.

163 कोई उसका शरीक नहीं. और मुझे इसी का हुक्म मिला है और मैं सबसे पहले फ़रमांबरदार हूँ.
164 कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब तलाश करूँ, जबकि वही हर चीज़ का रब है और जो शख़्स भी कोई कमाई करता है, वह उसी पर रहता है. और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा. फिर तुम्हारे रब ही की तरफ़ तुम्हारा लौटना है. पस वह

तुम्हें बता देगा वह चीज़ जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करते थे. 165 और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में एक दूसरे का जानशीन बनाया और तुम में से एक का रुतबा दूसरे पर बुलंद किया. ताकि वह आज़माए तुम्हें अपने दिए हुए में. तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है.

सूरह–7. अल–आराफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़० लाम० मीम० सॉद०.

2 **यह किताब है जो तुम्हारी तरफ़ उतारी गई है.** पस तुम्हारा दिल इस वजह से तंग न हो, **ताकि तुम इसके ज़रीए से लोगों को डराओ,** और यह ईमान वालों के लिए **याददिहानी है.**

नोटः– इससे वाज़ेह है कि ख़ुदा चाहता है कि उसकी किताब सारे इंसानों तक पहुँच जाए, और सारे इंसान ज़िंदगी की हक़ीक़त से आगाह कर दिए जाएँ. यही पहुँचाने का काम अब क़ुरआन के मानने वालों को अंजाम देना है.

3 जो उतरा है तुम्हारी जानिब तुम्हारे रब की तरफ़ से, उसकी पैरवी करो और उसके सिवा दूसरे सरपरस्तों की पैरवी न करो. तुम बहुत कम नसीहत क़बूल करते हो. 4 और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया. उनपर हमारा अज़ाब रात को आ पहुँचा या दोपहर को, जबकि वे आराम कर रहे थे. 5 फिर जब हमारा अज़ाब उनपर आया तो वे इसके सिवा कुछ न कह सके कि वाक़ई हम ज़ालिम थे. 6 पस हमें ज़रूर पूछना है उन लोगों से जिनके पास रसूल भेजे गए और हमें ज़रूर पूछना है रसूलों से. 7 फिर हम उनके सामने सब बयान कर देंगे इल्म के साथ और हम कहीं ग़ायब न थे. 8 उस दिन वज़नदार सिर्फ़ हक़ होगा. पस जिनकी तोलें (यानी नेक आमाल) भारी होंगे वही लोग कामयाब ठहरेंगे 9 और जिनकी तोलें हल्की होंगी वही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, क्योंकि वे हमारी निशानियों के साथ नाइंसाफ़ी करते थे.

10 और हमने तुम्हें ज़मीन में जगह दी और हमने तुम्हारे लिए उसमें ज़िंदगी का सामान फ़राहम किया, मगर तुम बहुत कम शुक्र करते हो. 11 और हमने तुम्हें पैदा किया, फिर हमने

तुम्हारी सूरत बनाई. फिर फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो. पस उन्होंने सज्दा किया. मगर इबलीस (शैतान) सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ.
12 ख़ुदा ने कहा कि तुझे किस चीज़ ने सज्दा करने से रोका, जबकि मैंने तुझे हुक्म दिया था. इबलीस ने कहा कि मैं उससे बेहतर हूँ. तूने मुझे आग से बनाया है और आदम को मिट्टी से.
13 ख़ुदा ने कहा कि तू उतर यहाँ से. तुझे यह हक़ नहीं कि तू इसमें घमंड करे. पस निकल जा, यक़ीनन तू ज़लील है.
14 इबलीस ने कहा कि उस दिन तक के लिए तू मुझे मोहलत दे, जबकि सब लोग उठाए जाएँगे.
15 ख़ुदा ने कहा, तुझे मोहलत दी गई.
16 इबलीस ने कहा, चूंकि तूने मुझे गुमराह किया है, मैं भी लोगों के लिए तेरी सीधी राह पर बैठूंगा.
17 फिर उनपर आऊंगा उनके आगे से और उनके पीछे से और उनके दाएं से और उनके बाएं से, और तू उनमें से अकसर को शुक्रगुज़ार न पाएगा.
18 ख़ुदा ने कहा कि निकल यहाँ से ज़लील और ठुकराया हुआ. जो कोई उनमें से तेरी राह पर चलेगा तो मैं तुम सबसे जहन्नम को भर दूँगा.

19 और ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और खाओ जहाँ से चाहो. मगर उस दरख़्त के पास न जाना, वरना तुम नुक़सान उठाने वालों में से हो जाओगे.
20 फिर शैतान ने दोनों को बहकाया, ताकि वह खोल दे उनकी वह शर्म की जगहें जो उनसे छुपाई गई थीं. उसने उनसे कहा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें इस दरख़्त से सिर्फ़ इसलिए रोका है कि कहीं तुम दोनों फ़रिश्ते न बन जाओ या तुम्हें हमेशा की ज़िंदगी हासिल हो जाए.
21 और उसने क़सम खाकर कहा कि मैं तुम दोनों का ख़ैरख़ाह (हितैषी) हूँ.

22 पस उसने मायल कर लिया उन्हें फ़रेब से. फिर जब दोनों ने दरख़्त का फल चखा तो उनकी शर्मगाहें उनपर खुल गईं. और वे अपने को बाग़ के पत्तों से ढाँकने लगे और उनके रब ने उन्हें पुकारा कि क्या मैंने तुम्हें उस दरख़्त (वृक्ष) से मना नहीं किया था और यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है.
23 उन्होंने कहा, ऐ हमारे रब! हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और अगर तू हमें माफ़ न करे और हम पर रहम न करे तो हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएँगे.
24 ख़ुदा ने कहा, उतरो (यहाँ से), तुम एक दूसरे के दुश्मन होंगे, और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक ख़ास मुद्दत तक ठहरना और नफ़ा उठाना है.
25 ख़ुदा ने कहा, उसी में तुम जियोगे और उसी में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे.

26 ऐ बनी आदम! हमने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारे बदन के क़ाबिले-शर्म हिस्सों को ढांके और ज़ीनत (साज-सज्जा) भी. और तक़वा (ईश-भय) का लिबास उससे भी बेहतर है. यह अल्लाह की निशानियों में से है, ताकि लोग ग़ौर करें.

27 **ऐ आदम की औलाद! शैतान तुम्हें बहका न दे जिस तरह उसने तुम्हारे माँ बाप को जन्नत से निकलवा दिया,** **उसने उनके लिबास उतरवाए, ताकि उन्हें उनके सामने बेपरदा कर दे. वह और उसके साथी तुम्हें ऐसी जगह से देखते हैं, जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते. हमने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं लाते.**

नोटः– हज़रत आदम को जन्नत से निकाले जाने के बावजूद मौजूदा दुनिया में भेजकर अल्लाह तआला ने जन्नत पाने का एक और मौक़ा इंसान को दिया है, लेकिन शैतान आदम की औलाद को मिले हुए इस मौक़े को भी ज़ाया करवाना चाहता है. अल्लाह तआला ने जिस तरह हज़रत आदम को शैतान से आगाह किया था. उसी तरह अल्लाह तआला आदम की औलाद को भी उनके छुपे हुए दुश्मन से आगाह कर रहा है. जो इंसान अपने इस दुश्मन को समझ कर उसकी चालबाज़ियों से बचते हुए अल्लाह की रहनुमाई के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर करेगा ऐसे ही इंसान को अल्लाह जन्नत में बसाएगा.

28 और जब वे कोई खुली बुराई (बेहयाई का काम) करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बाप–दादा को इसी तरह करते हुए पाया है और ख़ुदा ने हमें इसी का हुक्म दिया है. कहो, अल्लाह कभी बुरे काम का हुक्म नहीं देता. क्या तुम अल्लाह के ज़िम्मे वह बात लगाते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं. 29 कहो कि मेरे रब ने क़िस्त (न्याय) का हुक्म दिया है और यह कि हर नमाज़ के वक़्त अपना रुख़ सीधा रखो. और उसी को पुकारो उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए. जिस तरह उसने तुम्हें पहले पैदा किया उसी तरह तुम दूसरी बार भी पैदा होंगे. 30 एक गिरोह को उसने राह दिखा दी और एक गिरोह है कि उसपर गुमराही साबित हो चुकी. उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना रफ़ीक़ बनाया और गुमान यह रखते हैं कि वे हिदायत पर हैं.

31 ऐ औलादे आदम! हर नमाज़ के वक़्त अपना लिबास पहनो और खाओ पियो. और हद से तजावुज़ (अपव्यय) न करो. बेशक अल्लाह हद से तजावुज़ (अपव्यय) करने वालों को पसंद नहीं करता. 32 कहो, अल्लाह ने अपने बंदों के लिए जो ज़ीनत (साज–सज्जा) की चीज़ें पैदा की है उन्हें कौन हराम कर सकता है और खाने की पाक चीज़ों को भी. कहो, वे दुनिया की ज़िंदगी में भी ईमान वालों के लिए हैं और आख़िरत में (यानी मृत्यु–पश्चात दुनिया में) तो वे ख़ास उन्हीं के लिए होंगी. इसी तरह हम अपनी आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो जानना

चाहें. 33 कहो, मेरे रब ने तो बस फ़हश (अश्लील) बातों को हराम ठहराया है, फिर वे खुली हों या छुपी. और गुनाह को और नाहक़ की ज़्यादती को और इस बात को कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करो जिसकी उसने कोई दलील नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बात लगाओ जिसका तुम इल्म नहीं रखते.

34 और हर क़ौम के लिए एक मुक़र्ररह मुद्दत है. फिर जब उनकी मुद्दत आ जाएगी तो वे न एक पल पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे.

35 ऐ बनी आदम! अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएं जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाएं तो जो शख़्स डरा और जिसने इसलाह कर ली, उनके लिए न कोई ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे. 36 और जो लोग मेरी आयतों को झुठलाएँ और उनसे तकब्बुर करें, वही लोग दोज़ख़ वाले हैं. वे उसमें हमेशा रहेंगे.

नोटः- यहाँ इस तरह नहीं फ़रमाया कि 'ऐ ईमान वालो!' बल्कि फ़रमाया 'ऐ आदम की औलाद!' ख़ुदा की इस मुख़ातिबत से यह बात वाज़ेह होती है कि **अल्लाह की आयतें यानी अल्लाह का पैग़ाम** आदम की सारी औलाद के लिए है. अब चूंकि अल्लाह की आयतें लोगों को सुनाने के लिए पैग़ंबर आने वाले नहीं है, तो अब यही पैग़ंबर वाला काम पैग़ंबर के मानने वालों को करना है.

यहाँ दूसरी अहम बात यह वाज़ेह होती है कि दाई का काम पूरे ख़ैरख़ाही के साथ अल्लाह की आयतें सुनाना है फिर डरना और ख़ुद की इसलाह कर लेना मदू का काम है.

37 फिर उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए, उनके नसीब का जो हिस्सा लिखा हुआ है वह उन्हें मिलकर रहेगा. यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए उनकी जान निकालने के लिए उनके पास पहुँचेंगे तो उनसे पूछेंगे कि वे कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे. वे कहेंगे कि वे सब हमसे खोए गए. और वे अपने ऊपर इक़रार करेंगे कि बेशक वे इन्कार करने वाले थे.

38 ख़ुदा कहेगा, दाख़िल हो जाओ आग में जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों के साथ जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं. जब भी कोई गिरोह जहन्नम में दाख़िल होगा, वह अपने साथी गिरोह पर

लानत करेगा. यहाँ तक कि जब वे उसमें जमा हो जाएँगे तो उनके पिछले अपने अगले वालों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब! यही लोग हैं जिन्होंने हमें गुमराह किया, पस तू उन्हें आग का दोहरा अज़ाब दे. ख़ुदा कहेगा कि सबके लिए दोहरा है, मगर तुम नहीं जानते. 39 और उनके अगले अपने पिछलों से कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) हासिल नहीं. पस अपनी कमाई के नतीजे में अज़ाब का मज़ा चखो.

40 बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे तकब्बुर (घमंड) किया उनके लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएँगे और वे जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे, जब तक कि ऊंट सूई के नाके में न घुस जाए. और हम मुजरिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं. 41 उनके लिए दोज़ख़ का बिछौना होगा और उनके ऊपर उसी का ओढ़ना होगा. और हम ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा देते हैं. 42 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, हम किसी शख़्स पर उसकी ताक़त के मुवाफ़िक़ ही बोझ डालते हैं. यही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे. 43 और उनके सीने की हर ख़लिश (यानी एक दूसरे के बारे में बुरे ख़याल) को हम निकाल देंगे. उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वे कहेंगे कि सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने हमें यहाँ तक पहुँचाया और हम राह पाने वाले न थे, अगर अल्लाह हमें हिदायत न करता. हमारे रब के रसूल सच्ची बात लेकर आए थे. और आवाज़ आएगी कि यह जन्नत है जिसके तुम वारिस ठहराए गए, हो अपने आमाल के बदले.

44 और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे (और कहेंगे) कि हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था हमने उसे सच्चा पाया, क्या तुमने भी अपने रब के वादे को सच्चा पाया. वे कहेंगे, हां. फिर एक पुकारने वाला दोनों के दरमियान पुकारेगा कि अल्लाह की लानत हो ज़ालिमों पर. 45 जो अल्लाह की राह से रोकते थे और उसमें कजी (टेढ़) ढूंढते थे और वे आख़िरत (यानी मृत्यु-पश्चात जीवन) के मुन्किर थे.

46 और दोनों के दरमियान एक आड़ होगी. और आराफ़ (यानी जन्नत और जहन्नम के बीच की जगह उस) के ऊपर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनकी अलामत से पहचानेंगे और वे जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो, वे अभी जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे, मगर वे उम्मीदवार होंगे. 47 और जब दोज़ख़ वालों की तरफ़ उनकी निगाह फेरी जाएगी तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें शामिल न करना इन ज़ालिम लोगों के साथ. 48 और आराफ़ वाले उन लोगों को पुकारेंगे जिन्हें वे उनकी अलामत से पहचानते होंगे. वे कहेंगे कि तुम्हारे काम न आयी तुम्हारी जमात और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना. 49 क्या यही वे लोग हैं जिनके बारे में

तुम क़सम खाकर कहते थे कि उन्हें कभी अल्लाह की रहमत नहीं पहुँचेगी. (लेकिन आज उन्हीं से कहा गया कि) जन्नत में दाख़िल हो जाओ, अब न तुम पर कोई डर है और न तुम ग़मगीन होंगे.

50 और दोज़ख़ के लोग जन्नत वालों को पुकारेंगे कि कुछ पानी हम पर डाल दो या उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें खाने को दे रखा है. वे कहेंगे कि अल्लाह ने इन दोनों चीज़ों को मुन्किरों के लिए हराम कर दिया है. 51 वे जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया था और जिन्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में डाल रखा था. पस आज हम उन्हें भुला देंगे जिस तरह उन्होंने अपने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था और जैसा कि वे हमारी निशानियों का इन्कार करते रहे.

52 और हम उन लोगों के पास एक ऐसी किताब ले आए हैं जिसे हमने इल्म की बुनियाद पर मुफ़स्सल (विस्तृत) किया है, हिदायत और रहमत बनाकर उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ.
53 क्या अब वे इसी के मुंतज़िर हैं कि उसका मज़मून ज़ाहिर हो जाए. जिस दिन उसका मज़मून ज़ाहिर हो जाएगा तो वे लोग जो उसे पहले भूले हुए थे, बोल उठेंगे कि बेशक हमारे रब के पैग़म्बर हक़ लेकर आए थे. पस अब क्या कोई हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें या हमें दुबारा वापस ही भेज दिया जाए, ताकि हम उससे मुख़्तलिफ़ अमल करें जो हम पहले कर रहे थे. उन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और उनसे गुम हो गया वह जो वे गढ़ते थे.

54 बेशक तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छ: दिनों में पैदा किया. फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ. वह उढ़ाता है रात को दिन पर, दिन उसके पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ. और उसने पैदा किए सूरज और चांद और सितारे, सब ताबेदार हैं उसके हुक्म के. याद रखो, उसी का काम है पैदा करना और हुक्म करना. बड़ी बरकत वाला है
अल्लाह जो रब है सारे जहान का. 55 अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके—चुपके.
यक़ीनन वह हद से गुज़रने वालों को पसंद नहीं करता. 56 और ज़मीन में फ़साद न करो उसकी इसलाह के बाद. और उसी को पुकारो ख़ौफ़ के साथ और तमअ (आशा) के साथ. यक़ीनन अल्लाह की रहमत नेक काम करने वालों से क़रीब है.

57 और वह अल्लाह ही है जो हवाओं को अपनी रहमत (यानी बारिश) के आगे ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है. फिर जब वे बोझल बादलों को उठा लेती हैं तो हम उसे किसी ख़ुश्क सरज़मीन की तरफ़ हांक देते हैं. फिर हम उसके ज़रीए पानी उतारते हैं. फिर हम उसके ज़रीए से हर क़िस्म के
फल निकालते हैं. इसी तरह हम मुरदों को निकालेंगे, ताकि तुम ग़ौर करो. 58 और जो ज़मीन अच्छी है उसकी पैदावार निकलती है उसके रब के हुक्म से और जो ज़मीन ख़राब है उसकी पैदावार कम ही होती है. इसी तरह हम अपनी निशानियाँ मुख़्तलिफ़ पहलुओं से दिखाते हैं उनके लिए जो शुक्र करने वाले हैं.

59 **हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा. नूह ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो. उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं. मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ.** 60 **उसकी क़ौम के बड़ों ने कहा कि हमें तो यह नज़र आता है कि तुम एक खुली हुई गुमराही में मुब्तिला हो.** 61 **नूह ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मुझ में कोई गुमराही नहीं है. बल्कि मैं भेजा हुआ हूँ सारे आलम के परवरदिगार का.**

62 **तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुँचा रहा हूँ और तुम्हारी ख़ैरख़ाही कर रहा हूँ.**

और मैं अल्लाह की तरफ़ से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते.

नोटः– ख़ैरख़ाही के साथ रब का पैग़ाम पहुँचा देना यही दाई के ज़िम्मे का काम है. इसी काम के लिए पहले पैग़ंबर भेजे जाते थे. पैग़ंबरों का आना बंद हो गया, लेकिन पैग़ंबर वाले काम की ज़रूरत क़यामत तक पूरी तरह बाक़ी है. अब यही काम पैग़ंबर के मानने वालों को करना है.

63 क्या तुम्हें इसपर तअज्जुब हुआ कि तुम्हारे रब की नसीहत तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख़्स के ज़रीए आयी, ताकि वह तुम्हें डराए और ताकि तुम बचो और ताकि तुम पर रहम किया जाए.
64 पस उन्होंने उसे झुठला दिया. फिर हमने नूह को बचा लिया और उन लोगों को भी जो उसके साथ कश्ती में थे और हमने उन लोगों को डुबो दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था. बेशक वे लोग अंधे थे.

65 और आद की तरफ़ हमने उनके भाई हूद को भेजा. उन्होंने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं. सो क्या तुम डरते नहीं.
66 उसकी क़ौम के बड़े जो इन्कार कर रहे थे बोले, हम तो तुम्हें बेअक़्ली में मुब्तिला देखते हैं और हमें गुमान है कि तुम झूठे हो.
67 हूद ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! मुझे कुछ बेअक़्ली नहीं. बल्कि मैं ख़ुदावंदे-आलम का रसूल हूँ.

68 **मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुँचा रहा हूँ और तुम्हारा ख़ैरख़ाह व अमीन हूँ.**

नोटः– सारे पैग़म्बरों ने अपने-अपने ज़मानों में इन्सानों तक उनके रब के पैग़ामात पहुँचाए और उनकी पूरी-पूरी ख़ैरख़ाही की, क्योंकि दावती अमल ख़ैरख़ाही के बग़ैर मुमकिन नहीं. अब चूंकि पैग़म्बर आने वाले नहीं हैं, अब यह काम **'उम्मते-मुहम्मदी'** को करना है.

69 क्या तुम्हें इसपर तअज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख़्स के ज़रीए तुम्हारे रब की नसीहत आयी, ताकि वह तुम्हें डराए. और याद करो, जबकि उसने क़ौमे-नूह के बाद तुम्हें उसका जानशीन बनाया और डीलडौल (यानी जसामत के मामले) में भी तुम को फैलाव ज़्यादा दिया. पस अल्लाह की नेमतों को याद करो, ताकि तुम फ़लाह पाओ.

70 हूद की क़ौम ने कहा, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम तनहा अल्लाह की इबादत करें और उन्हें छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते आए हैं. पस तुम जिस अज़ाब की धमकी हमें देते हो उसे ले आओ अगर तुम सच्चे हो. 71 हूद ने कहा, तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से नापाकी और ग़ुस्सा वाक़ेअ हो चुका है. क्या तुम मुझ से उन नामों पर झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं. जिनकी ख़ुदा ने कोई सनद नहीं उतारी. पस इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हूँ. 72 फिर हमने बचा लिया उसे और जो उसके साथ थे अपनी रहमत से और उन लोगों की जड़ काट दी जो हमारी निशानियों को झुठलाते थे और मानते न थे.

73 और क़ौमे-समूद की तरफ़ हमने उनके भाई सालेह को भेजा. उन्होंने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक खुली हुई निशानी आ गयी है. यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी के तौर पर है. पस इसे छोड़ दो कि वह खाए अल्लाह की ज़मीन में. और इसे कोई तकलीफ़ न पहुँचाना वरना तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा. 74 और याद करो, जबकि ख़ुदा ने क़ौमे-आद के बाद तुम्हें उनका जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया और तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया, तुम उसके मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ों को तराश कर घर बनाते हो. पस अल्लाह की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद करते न फिरो.

75 उनकी क़ौम के बड़े जिन्होंने घमंड किया, उन मोमिनीन से बोले जो कमज़ोर समझे जाते थे, क्या तुम्हें यक़ीन है कि सालेह अपने रब के भेजे हुए हैं. उन्होंने जवाब दिया कि हम तो जो वे लेकर आए हैं उसपर ईमान रखते हैं. 76 वे मुतकब्बिर (घमंडी) लोग कहने लगे कि हम तो उस चीज़ के मुन्किर हैं जिस पर तुम ईमान लाए हो. 77 फिर उन्होंने ऊंटनी को काट डाला और अपने रब के हुक्म से फिर गए. और उन्होंने कहा, ऐ सालेह! अगर तुम पैग़म्बर हो तो वह अज़ाब हम पर ले आओ जिससे तुम हमें डराते थे. 78 फिर उन्हें ज़लज़ले ने आ पकड़ा और वे अपने घर में औंधे मुँह पड़े रह गए.

79 **और सालेह यह कहता हुआ उन की बस्तियों से निकल गया कि ऐ मेरी क़ौम!**

मैंने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचा दिया

और मैंने तुम्हारी ख़ैरख़ाही की, मगर तुम ख़ैरख़ाहों को पसंद नहीं करते.

नोटः– दाई का यह काम है कि पूरी ख़ैरख़ाही के साथ लोगों तक **'उनके रब का पैग़ाम'** पहुँचा दे. फिर उस पैग़ाम को कैसे रिस्पॉन्ड करना है, यह मदू का काम है.

दाई इन्सानों का सच्चा ख़ैरख़ाह होता है, लेकिन सारी इन्सानी तारीख़ में इन्सानों का यह हाल रहा है कि वे अपने हक़ीक़ी ख़ैरख़ाह को पसंद नहीं करते.

80 और हमने लूत को भेजा. जब उसने अपनी क़ौम से कहा. क्या तुम खुली बेहयाई का
काम करते हो जो तुम से पहले दुनिया में किसी ने नहीं किया. 81 तुम औरतों को छोड़कर मर्दों से
अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हो. बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो. 82 मगर उसकी क़ौम
का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दो. ये लोग बड़े पाकबाज़
बनते हैं. 83 फिर हमने बचा लिया लूत को और उसके घर वालों को, उसकी बीवी के सिवा जो
पीछे रह जाने वालों में से बनी. 84 और हमने उनपर बारिश बरसाई पत्थरों की, फिर देखो कि
कैसा अंजाम हुआ मुजरिमों का.

85 और मदयन की तरफ़ हमने उनके भाई शुऐब को भेजा. उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम!
अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद (पूज्य) नहीं. तुम्हारे पास तुम्हारे रब की
तरफ़ से दलील पहुँच चुकी है. पस नाप और तौल पूरी करो. और मत घटाकर दो लोगों को उनकी
चीज़ें. और फ़साद न डालो ज़मीन में उसकी इसलाह के बाद. यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर
तुम मोमिन हो. 86 ईमान वालों को डराने के मक़सद से और उन्हें अल्लाह की राह से रोकने के
लिए और उस राह में (यानी सिराते-मुस्तक़ीम में) टेढ़ निकालने के लिए रास्तों पर मत बैठा करो.
और याद करो, जबकि तुम बहुत थोड़े थे फिर अल्लाह ने तुम्हें बढ़ा दिया. और देखो फ़साद करने
वालों का अंजाम क्या हुआ. 87 और अगर तुम में से एक गिरोह उसपर ईमान लाया है जो देकर मैं
भेजा गया हूँ और एक गिरोह ईमान नहीं लाया है तो इंतज़ार करो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे
दरमियान फ़ैसला कर दे और वह बेहतर फ़ैसला करने वाला है.

पारा – 9 88 क़ौम के बड़े जो मुतकब्बिर (घमंडी) थे उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब!
हम तुम्हें और उन लोगों को जो तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम

हमारे मज़हब पर लौट आ जाओ. शुऐब ने कहा, क्या हम (उससे) बेज़ार हों तब भी. 89 हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे, अगर हम तुम्हारे मज़हब पर लौट आएं, बाद इसके कि अल्लाह ने हमें उससे नजात दी. और हमसे यह मुमकिन नहीं कि हम उस मज़हब पर लौट आएं, मगर यह कि ख़ुदा हमारा रब ही ऐसा चाहे. हमारा रब हर चीज़ को अपने इल्म से घेरे हुए है. हमने अपने रब पर भरोसा किया. ऐ हमारे रब! हमारे और हमारी क़ौम के दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला कर दे, तू बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है. 90 और उसकी क़ौम में से उन बड़ों ने जिन्होंने इन्कार किया था, कहा कि अगर तुम शुऐब की पैरवी करोगे तो तुम बर्बाद हो जाओगे. 91 फिर उन्हें ज़लज़ले ने पकड़ लिया. पस वे अपने घर में औंधे मुँह पड़े रह गए. 92 जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था (उनका यह अंजाम हुआ) गोया वे कभी उस बस्ती में बसे ही न थे, जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही घाटे में रहे.

93 **उस वक़्त शुऐब उनसे मुँह मोड़ कर चला और कहा, ऐ मेरी क़ौम!**

मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुँचा चुका

और तुम्हारी ख़ैरख़ाही कर चुका. अब मैं क्योंकर अफ़सोस करूँ मुन्किरों पर.

नोटः- हर पैग़म्बर ने लोगों तक रब का पैग़ाम पहुँचाने का काम अंजाम दिया. इस आयत में हज़रत शुऐब (अ.) का ज़िक्र है, इसी तरह ऊपर आयत नंबर 79 में हज़रत सालेह (अ.) का ज़िक्र है. पैग़म्बर की हैसियत से चुने गए दाइयों ने अपनी क़ौमों पर, अपने ज़मानों में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने का काम अंजाम दिया. अब चूंकि पैग़म्बर आने वाले नहीं हैं, तो अब ग़ैर-पैग़म्बर दाइयों को लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने का काम अंजाम देना है.

94 और हमने जिस बस्ती में भी कोई नबी भेजा, उसके बाशिन्दों को हमने सख़्ती और तकलीफ़ में मुब्तिला किया, ताकि वे गिड़गिड़ाएं. 95 फिर हमने दुख को सुख से बदल दिया, यहाँ तक कि उन्हें ख़ूब तरक़्क़ी हुई और वे कहने लगे कि तकलीफ़ और ख़ुशी तो हमारे बाप-दादाओं को भी पहुँचती रही है. फिर हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया और वे इसका गुमान भी न रखते थे.
96 और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो हम उनपर आसमान और ज़मीन की नेमतें खोल देते. मगर उन्होंने झुठलाया तो हमने उन्हें पकड़ लिया उनके आमाल के बदले. 97 फिर क्या बस्ती वाले इससे बेख़ौफ़ हो गए हैं कि उनपर हमारा अज़ाब रात के वक़्त आ पड़े, जबकि वे सोते हों. 98 या क्या बस्ती वाले इससे बेख़ौफ़ हो गए हैं कि हमारा अज़ाब आ पहुँचे उनपर दिन चढ़े

जब वे खेलते हों. 99 क्या ये लोग अल्लाह की तदबीरों से बेख़ौफ़ हो गए हैं. पस अल्लाह की तदबीरों (युक्तियों) से वही लोग बेख़ौफ़ होते हैं जो तबाह होने वाले हैं.

100 क्या सबक़ नहीं मिला उन्हें जो ज़मीन के वारिस हुए हैं, उसके पहले गुज़र चुके बाशिन्दों के बाद कि अगर हम चाहें तो उन्हें पकड़ लें उनके गुनाहों पर. और हमने उनके दिलों पर मुहर कर दी है पस वे नहीं समझते. 101 ये वह बस्तियां हैं जिनके कुछ हालात हम तुम्हें सुना रहे हैं. उनके पास उनकी (तरफ़ भेजे गए) रसूल निशानियाँ लेकर आए तो हरगिज़ न हुआ कि वे ईमान लाएँ उस बात पर जिसे वे पहले झुठला चुके थे. इस तरह अल्लाह मुन्किरों के दिलों पर मुहर कर देता है. 102 और हमने उनके अकसर लोगों में अहद (वचन) का निबाह न पाया और हमने उनमें से अकसर को नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) पाया.

103 फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरऔन और उसकी क़ौम के सरदारों के पास. मगर उन्होंने हमारी निशानियों के साथ ज़ुल्म किया. पस देखो कि मुफ़्सिदों (फ़साद करने वालों) का क्या अंजाम हुआ. 104 और मूसा ने कहा, ऐ फ़िरऔन! मैं परवरदिगारे-आलम की तरफ़ से भेजा हुआ आया हूँ. 105 सज़ावार हूँ कि अल्लाह के नाम पर कोई बात हक़ के सिवा न कहूँ. मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली हुई निशानी लेकर आया हूँ. पस तू मेरे साथ बनी इसराईल को जाने दे. 106 फ़िरऔन ने कहा, अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो. 107 तब मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया तो यकायक वह एक साफ़ अज़दहा बन गया. 108 और उसने अपना हाथ निकाला तो अचानक वह देखने वालों के सामने चमक रहा था. 109 फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा, यह शख़्स बड़ा माहिर जादूगर है. 110 चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल दे. अब तुम्हारी क्या सलाह है. 111 उन्होंने कहा, मूसा को और उसके भाई को मोहलत दो और शहरों में हरकारे भेजो 112 कि वे तुम्हारे पास सारे माहिर जादूगर ले आएं.

113 **और जादूगर फ़िरऔन के पास आए. उन्होंने कहा, हमें इनाम तो ज़रूर मिलेगा (ना), अगर हम ग़ालिब रहे (अगर हमने विजय प्राप्त किया).** 114 **फ़िरऔन ने कहा, हां और यक़ीनन तुम हमारे मुक़र्रबीन (निकटवर्तियों) में दाख़िल होंगे.** 115 **जादूगरों ने कहा, या तो तुम डालो (पहले) या हम डालने वाले बनते हैं.** 116 **मूसा ने कहा, तुम ही डालो. फिर जब उन्होंने डाला तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया और उनपर दहशत तारी कर दी और बहुत बड़ा करतब दिखाया,** 117 **और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि अपना असा (डंडा)**

डाल दो. तो अचानक वह निगलने लगा उसे जो उन्होंने गढ़ा था. 118 **पस हक़**
ज़ाहिर हो गया और जो कुछ उन्होंने बनाया था बातिल होकर रह गया. 119 **पस**
वे लोग वहीं हार गए और ज़लील होकर रहे. 120 **और जादूगर सज्दे में गिर पड़े.**
121 **उन्होंने कहा, हम ईमान लाए रब्बुल-आलमीन (समस्त सृष्टि के प्रभु) पर**
122 **जो रब (प्रभु) है मूसा और हारून का.**

नोटः- हक़ की दरयाफ़्त से पहले जो जादूगर दुनियावी इनाम के तालिब थे और फ़िरऔन उनसे बड़े-बड़े इनामात के वादे कर रहा था. लेकिन उन्होंने जब हक़ को दरयाफ़्त किया तो वही जादूगर हक़ के साथी बन गए, जबकि हक़ का साथ देना उनके लिए अपनी हलाकत को दावत देना था.

जादूगर इंसानी जादू की हक़ीक़त को जानते थे, इसीलिए उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी कि जो हज़रत मूसा (अ.स.) पेश कर रहे हैं वह इंसानी जादू नहीं है, बल्कि अल्लाह की निशानियाँ हैं जिन्हें हज़रत मूसा (अ.स.) लेकर आए हैं. हक़ की दरयाफ़्त सबसे बड़ी दरयाफ़्त है जो कोई सच्चे माने में हक़ को दरयाफ़्त कर ले, वह हक़ का साथ दिए बग़ैर रह नहीं सकता. ख़ुदा के नज़दीक वही ईमान मोतबर है जो हक़ की दरयाफ़्त पर खड़ा हो, ना कि रस्मी या नसली लेबल पर खड़ा हुआ ईमान.

123 फ़िरऔन ने कहा, तुम लोग मूसा पर ईमान ले आए, इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ.
यक़ीनन यह एक साज़िश है जो तुम लोगों ने शहर में इस ग़रज़ से की है कि तुम उसके बाशिन्दों को
यहाँ से निकाल दो, तो तुम बहुत जल्द जान लोगे. 124 मैं तुम्हारे हाथ और पाँव मुख़ालिफ़ सिम्तों
से काटूंगा, फिर तुम सबको सूली पर चढ़ा दूँगा. 125 उन्होंने कहा, हमें अपने रब ही की तरफ़ लौटना
है. 126 तू हमें सिर्फ़ इस बात की सज़ा देना चाहता है कि हमारे रब की निशानियाँ जब हमारे सामने
आ गईं तो हम उनपर ईमान ले आए. ऐ हमारे रब! हम पर सब्र उंडेल दे और हमें वफ़ात दे इस्लाम पर.

127 फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा, क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को छोड़ देगा कि
वे मुल्क में फ़साद फैलाएँ और तुझे और तेरे माबूदों (पूज्यों) को छोड़ दें. फ़िरऔन ने कहा, हम
उनके बेटों को क़तल करेंगे और उनकी औरतों को ज़िंदा रखेंगे. और हम उनपर पूरी तरह क़ादिर हैं.
128 मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह से मदद चाहो और सब्र करो. ज़मीन अल्लाह की है, वह
अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बना देता है. और आख़िरी कामयाबी अल्लाह से डरने
वालों ही के लिए है. 129 मूसा की क़ौम ने कहा, हम तुम्हारे आने से पहले भी सताए गए और
तुम्हारे आने के बाद भी. मूसा ने कहा, क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे
और बजाय उनके तुम्हें इस सरज़मीन का मालिक बना दे, फिर देखे कि तुम कैसा अमल करते हो.

130 और हमने फ़िरऔन वालों को क़हत (अकाल) और पैदावार की कमी में मुब्तिला किया, ताकि उन्हें नसीहत हो. 131 लेकिन जब उनपर ख़ुशहाली आती तो कहते कि यह हमारे लिए है और अगर उनपर कोई आफ़त आती तो उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत बताते. सुनो, उनकी बदबख़्ती तो अल्लाह के पास है, मगर उनमें से अकसर नहीं जानते. 132 और उन्होंने मूसा से कहा, हमें मस्हूर(जादू ग्रस्त) करने के लिए तुम चाहे कोई भी निशानी लाओ हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं.

133 फिर हमने उनके ऊपर तूफ़ान भेजा और टिड्डी और जुएं और मेंढक और ख़ून. ये सब निशानियाँ अलग-अलग दिखाईं. फिर भी उन्होंने तकब्बुर (घमंड) किया और वे मुजरिम लोग थे. 134 और जब उनपर कोई अज़ाब पड़ता तो कहते, ऐ मूसा! अपने रब से हमारे लिए दुआ करो जिसका उसने तुम से वादा कर रखा है. अगर तुम हम पर से इस अज़ाब को हटा दो तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएँगे और तुम्हारे साथ बनी इसराईल को जाने देंगे. 135 फिर जब हम उनसे दूर कर देते आफ़त को कुछ मुद्दत के लिए, जहाँ बहरहाल उन्हें पहुँचना था तो उसी वक़्त वे अहद (वचन) को तोड़ देते.

136 फिर हमने उन्हें सज़ा दी और उन्हें समुंदर में ग़र्क़ कर दिया, क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे बेपरवाह हो गए. 137 और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे उन्हें हमने उस सरज़मीन के पूर्व व पश्चिम का वारिस बना दिया, जिसमें हमने बरकत रखी थी. और बनी-इसराईल पर तेरे रब का नेक वादा पूरा हो गया इस सबब से कि उन्होंने सब्र किया और हमने फ़िरऔन और उसकी क़ौम का वह सब कुछ बर्बाद कर दिया जो वे बनाते थे और जो वे चढ़ाते थे.

138 और हमने बनी इसराईल को समुंदर के पार उतार दिया. फिर उनका गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ जो पूजने में लगे हुए थे अपने बुतों को. उन्होंने कहा, ऐ मूसा! हमारी इबादत के लिए भी एक बुत बना दे जैसे इनके बुत हैं. मूसा ने कहा, तुम बड़े जाहिल लोग हो. 139 ये लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह बर्बाद होने वाला है और ये जो कुछ कर रहे हैं वह बातिल है. 140 उसने कहा, क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और माबूद तुम्हारे लिए तलाश करूँ, हालाँकि उसने तुम्हें तमाम अहले-आलम पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी है. 141 और जब हमने फ़िरऔन वालों से तुम्हें नजात दी जो तुम्हें सख़्त अज़ाब में डाले हुए थे. तुम्हारे बेटों को क़तल करते और तुम्हारी औरतों को ज़िंदा रहने देते और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी बड़ी आज़माइश थी.

142 और हमने मूसा से तीस रातों का वादा किया और उसे पूरा किया दस मज़ीद रातों से तो उसके रब की मुद्दत चालीस रातों में पूरी हुई. और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे पीछे तुम मेरी क़ौम में मेरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) करना, इसलाह (सुधार) करते रहना, और बिगाड़ पैदा करने वालों के तरीक़े पर न चलना. 143 और जब मूसा हमारे वक़्त पर आ गया और उसके रब ने उससे कलाम किया तो उसने कहा, मुझे अपने को दिखा दे कि मैं तुझे देखूं. फ़रमाया, तुम मुझे

हरगिज़ नहीं देख सकते. अलबत्ता पहाड़ की तरफ़ देखो, अगर वह अपनी जगह क़ायम रह जाए तो तुम भी मुझे देख सकोगे. फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली डाली (यानी अपना नूर डाला) तो उसे रेज़ा—रेज़ा कर दिया. और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा. फिर जब होश आया तो बोला, तू पाक है, मैंने तेरी तरफ़ रुजूअ किया और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूँ.

144 अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ मूसा! मैंने तुम्हें लोगों पर अपनी पैग़म्बरी और अपने कलाम के ज़रीए से सरफ़राज़ किया. पस अब लो जो कुछ मैंने तुम्हें अता किया है. और शुक्रगुज़ारों में से
बनो. 145 और हमने उसके लिए तख़्तियों पर हर क़िस्म की नसीहत और हर चीज़ की तफ़सील लिख दी. पस इसे मज़बूती से पकड़ो और अपनी क़ौम को हुक्म दो कि इनके बेहतर मफ़हूम (भावार्थ) की पैरवी करें. अनक़रीब मैं तुम्हें नाफ़रमानों का घर दिखाऊंगा.

146 मैं अपनी निशानियों से उन लोगों को फेर दूँगा जो ज़मीन में नाहक़ घमंड करते हैं. और अगर वे हर क़िस्म की निशानियाँ देख लें तब भी उनपर ईमान न लाएँ. और अगर वे हिदायत का रास्ता देखें तो उसे न अपनाएंगे और अगर गुमराही का रास्ता देखें तो उसे अपना लेंगे. यह इस सबब से है कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनकी तरफ़ से अपने को ग़ाफ़िल रखा.
147 और जिन्होंने हमारी निशानियों को और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया उनके आमाल अकारत हो गए और वे बदले में वही पाएंगे जो वे करते थे.

148 और मूसा की क़ौम ने उसके पीछे अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा बनाया, एक धड़ (ढाँचा) जिससे बैल की सी आवाज़ निकलती थी. क्या उन्होंने नहीं देखा कि वह न उनसे बोलता है और न कोई राह दिखाता है. उसे उन्होंने माबूद (पूज्य) बना लिया और वे बड़े ज़ालिम थे. 149
और जब वे पछताए और उन्होंने महसूस किया कि वे गुमराही में पड़ गए थे तो उन्होंने कहा, अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख़्शा तो यक़ीनन हम बर्बाद हो जाएँगे. 150 और
जब मूसा रंज और ग़ुस्से में भरा हुआ अपनी क़ौम की तरफ़ लौटा तो उसने कहा, तुमने मेरे बाद मेरी बहुत बुरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) की. क्या तुमने अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर ली. और उसने तख़्तियां डाल दीं और अपने भाई का सिर पकड़ कर उसे अपनी तरफ़ खींचने लगा. हारून ने कहा, ऐ मेरी माँ के बेटे! लोगों ने मुझे दबा लिया और क़रीब था कि मुझे मार डालें. पस तू दुश्मनों को मेरे ऊपर हँसने का मौक़ा न दे और मुझे ज़ालिमों के साथ शामिल न कर.
151 मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब! माफ़ कर दे मुझे और मेरे भाई को और हमें अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमा और तू सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है.

152 बेशक जिन लोगों ने बछड़े को माबूद (पूज्य) बनाया उन्हें उनके रब का ग़ज़ब पहुँचेगा और ज़िल्लत दुनिया की ज़िंदगी में. और हम ऐसा ही बदला देते हैं झूठ गढ़नेवालों को. 153 और

जिन लोगों ने बुरे काम किए फिर उसके बाद तौबा की और ईमान लाए तो बेशक उसके बाद तेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है.

154 और जब मूसा का ग़ुस्सा थमा तो उसने तख़्तियां उठाईं और जो उनमें लिखा हुआ था उसमें हिदायत व रहमत थी उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं.
155 और मूसा ने अपनी क़ौम में से सत्तर आदमी चुने हमारे मुक़र्रर किए हुए वक़्त के लिए. फिर जब उन्हें ज़लज़ले ने पकड़ा तो मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब! अगर तू चाहता तो तू पहले ही इन्हें हलाक कर देता और मुझे भी. क्या तू हमें ऐसे काम पर हलाक करेगा जो हमारे अंदर के बेवक़ूफ़ों ने किया. ये सब तेरी आज़माइश है, तू इससे जिसे चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे हिदायत दे. तू ही हमारा थामने वाला है. पस हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा, तू सबसे बेहतर बख़्शने वाला है.
156 और तू हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी. हमने तेरी तरफ़ रुजूअ किया. अल्लाह ने कहा, मैं अपना अज़ाब उसी पर डालता हूँ जिस पर चाहता हूँ और मेरी रहमत छाई हुई है हर चीज़ पर. पस मैं उसे लिख दूँगा उनके लिए जो डर रखते हैं और ज़कात अदा करते हैं और हमारी निशानियों पर ईमान लाते हैं.

157 जो लोग पैरवी करेंगे उस रसूल की जो नबी उम्मी (निरक्षर) है, जिसे वे अपने यहाँ तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं. वह उन्हें नेकी का हुक्म देता है और उन्हें बुराई से रोकता है और उनके लिए पाकीज़ा चीज़ें जायज़ ठहराता है और नापाक चीज़ें हराम करता है. और उनपर से वह बोझ और क़ैदें उतारता है (यानी उन बंदिशों को ख़त्म करता है) जो उनपर थीं. पस जो लोग उसपर ईमान लाए और जिन्होंने उसकी इज़्ज़त की और उसकी मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उसके साथ उतारा गया है तो वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं.

158 **कहो, ऐ लोगो! बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम सब की तरफ़, (वह अल्लाह) जिसकी हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में. उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही जिलाता है और वही मारता है. पस ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके उम्मी रसूल व नबी पर, जो ईमान रखता है अल्लाह और उसके कलमात (वचनों) पर. और (ऐ लोगो! तुम) उसकी पैरवी करो, ताकि तुम हिदायत पाओ.**

नोटः– ‘ऐ इंसानों! मैं तुम सब की तरफ़ ख़ुदा का रसूल हूँ .....’
रसूलुल्लाह (स.) को नबुवत मिलने के बाद आप सिर्फ़ 23 साल तक इंसानों के बीच में रहे.

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)
फिर ख़ुदा के पास चले गए. **फिर आप सारे इंसानों के लिए नबी कैसे हुए?** इसका जवाब यह है कि **आप अपनी उम्मत के ज़रीए से क़यामत तक के सारे इंसानों के लिए नबी हैं,** इसीलिए अल्लाह ने आपको **'रहमतुल्लील-आलमीन'** कहा है.

आपने नबुवत के 23 साल लोगों तक यह पैग़ाम पहुँचाया कि **'ऐ लोगो! तुम्हारा माबूद सिर्फ़ एक माबूद है, उसी ने इस कायनात को बनाया, वही इसे चला रहा है और वही तुम्हें जिलाता है और मारता है.....'** आपके बाद यही पैग़ाम आपकी पैरवी करने वालों को क़यामत तक के सारे इंसानों तक पहुँचाना है.

159 और मूसा की क़ौम में एक गिरोह ऐसा भी है जो हक़ के मुताबिक़ रहनुमाई (मार्गदर्शन) करता है और उसी के मुताबिक़ इंसाफ़ करता है.

160 और हमने उन्हें बारह घरानों में तक़सीम करके उन्हें अलग-अलग गिरोह बना दिया.
और जब मूसा की क़ौम ने पानी माँगा तो हमने मूसा को हुक्म भेजा कि फ़लाँ चट्टान पर अपनी
लाठी मारो तो उससे बारह चशमे (जलस्रोत) फूट निकले. हर गिरोह ने अपना पानी पीने का मक़ाम
मालूम कर लिया. और हमने उनपर बदलियों का साया किया और उनपर मन्न व सलवा उतारा.
खाओ पाकीज़ा चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं. और उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा, बल्कि ख़ुद
अपना ही नुक़सान करते रहे. 161 और जब उनसे कहा गया कि उस बस्ती में जाकर बस जाओ.
उसमें जहाँ से चाहो खाओ और कहो, हमें बख़्श दे और दरवाज़े में झुके हुए दाख़िल होना, हम
तुम्हारी ख़ताएं माफ़ कर देंगे. हम नेकी करने वालों को और ज़्यादा देते हैं. 162 फिर उनमें से
ज़ालिमों ने बदल डाला दूसरा लफ़्ज़ उसके सिवा जो उनसे कहा गया था. फिर हमने उनपर
आसमान से अज़ाब भेजा इसलिए कि वे ज़ुल्म करते थे.

163 और उनसे उस बस्ती का हाल पूछो जो दरिया के किनारे थी. जब वे सबत (सनीचर) के बारे में तजावुज़ (उल्लंघन) करते थे. जब उनके सबत के दिन उनकी मछलियां पानी के ऊपर आतीं और जिस दिन सबत न होता तो न आतीं. उनकी आज़माइश हमने इस तरह की, इसलिए कि वे नाफ़रमानी कर रहे थे.

164 **और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अज़ाब देने वाला है. उन्होंने कहा (यानी दाइयों ने कहा), तुम्हारे रब के सामने इल्ज़ाम उतारने के लिए और इसलिए कि शायद वे डरें.**

नोटः– हलाक करना या सख़्त अज़ाब देना यह अल्लाह का काम है. दाई का काम यह है कि वह लोगों तक पूरी ख़ैरख़ाही के साथ अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दे. फिर वह लोग या तो positive response देकर ख़ुदा का रास्ता इख़्तियार कर लेंगे. या उनपर इतमामे–हुज्जत का अमल पूरा हो जाएगा.

इससे वाज़ेह है कि दाई को अपने ज़िम्मे का काम करना है. चाहे मदू का रिस्पॉन्स positive हो या negative. और जहाँ तक आख़िरी अंजाम का ताल्लुक़ है उसका फ़ैसला सिर्फ़ ख़ुदा करनेवाला है.

165 **फिर जब उन्होंने भुला दी वह चीज़ जो उन्हें याद दिलाई गई थी तो हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे. और उन लोगों को जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, एक सख़्त अज़ाब में पकड़ लिया, इसलिए कि वे नाफ़रमानी (अवज्ञा) करते थे.**

नोटः– इससे वाज़ेह है कि कौन लोग अल्लाह की पकड़ से बचने वाले हैं. वह लोग जो लोगों को बुराई से रोकते थे. आज अल्लाह की ज़मीन बेशुमार बुराइयों से भरी हुई है. लोग सारी नियामतें अल्लाह से पा रहे हैं और अल्लाह को सबसे ज़्यादा भूले हुए हैं. इसी तरह लोग एक दूसरे के मामले में बेइंसाफ़ बने हुए हैं, उन लोगों कि ख़ैरख़ाही यह है कि उन्हें बुरे आमाल के अंजाम से आगाह किया जाए. यह ख़ैरख़ाही का अमल अल्लाह की नज़र में इतना बड़ा अमल है जो दाई की कामयाबी की ज़मानत है.

166 फिर जब वे बढ़ने लगे उस काम में जिससे वे रोके गए थे तो हमने उनसे कहा कि ज़लील बंदर बन जाओ.

167 और जब तुम्हारे रब ने एलान कर दिया कि वह यहूद पर क़यामत के दिन तक ज़रूर ऐसे लोग भेजता रहेगा जो उन्हें निहायत बुरा अज़ाब दें. बेशक तेरा रब जल्द सज़ा देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है. 168 और हमने उन्हें गिरोह—गिरोह करके ज़मीन में बिखेर दिया. उनमें कुछ नेक हैं और उनमें कुछ इससे मुख़्तलिफ़ (भिन्न). और हमने उनकी आज़माइश की अच्छे हालात से और बुरे हालात से, ताकि वे बाज़ आएं.

169 फिर उनके पीछे नाख़ल्फ़ (अयोग्य) लोग आए जो किताब के वारिस बने, वे इसी दुनिया की मताअ (सुख—सामग्री) लेते हैं और कहते हैं कि हम यक़ीनन बख़्श दिए जाएँगे. और अगर ऐसी ही मताअ उनके सामने फिर आए तो उसे ले लेंगे. क्या उनसे किताब में इसका अहद (वचन) नहीं लिया गया है कि अल्लाह के नाम पर हक़ के सिवा कोई और बात न कहें. और उन्होंने पढ़ा है जो कुछ उसमें लिखा है. और आख़िरत का घर बेहतर है डरने वालों के लिए, क्या तुम समझते नहीं? 170 और जो लोग ख़ुदा की किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं, बेशक हम मुस्लिहीन (सुधारकों) का अज्र ज़ाया नहीं करेंगे. 171 और जब हमने पहाड़ को उनके ऊपर उठाया गोया कि वह सायबान (मंडप) है. और उन्होंने गुमान किया कि वह उनपर आ पड़ेगा. पकड़ो उस चीज़ को जो हमने तुम्हें दी है मज़बूती से, और याद रखो जो उसमें है, ताकि तुम बचो.

172 और जब तेरे रब ने बनी आदम की पीठों से उनकी औलाद को निकाला और उन्हें गवाह ठहराया ख़ुद उनके ऊपर. क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ. उन्होंने कहा, हां, हम इक़रार करते हैं.

यह इसलिए हुआ कि कहीं तुम क़यामत के दिन कहने लगो कि हमें तो इसकी ख़बर नहीं थी.

नोटः– एक तरफ़ अल्लाह तआला ने इंसान की फ़ितरत में अपना शऊर (यानी शऊरे-रब) इस तरह पेवस्त कर दिया कि इंसान उससे अपने आपको अलग कर ही नहीं सकता. तो दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला ने दुनिया में पैग़ंबरों को भेजा, अपनी किताबें भेजीं, ताकि उस शऊर को जगाया जाए जो इंसान की फ़ितरत में मौजूद है. लेकिन इस दुनिया में शैतान यह मेहनतें कर रहा है कि इंसान

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)
अपने रब को भूलकर मनचाही ज़िंदगी गुज़ारे, ताकि क़यामत के दिन वह नाकाम होकर रह जाए.

ऐसी सूरत में दाई का काम यह है कि उसे भटके हुए इंसानों को फिर से उनके रब के साथ जोड़ना है. उन्हें बताना है कि रब-चाही ज़िंदगी गुज़ार कर ही इंसान कामयाब हो सकता है.

यहाँ अहम बात यह वाज़ेह होती है कि अल्लाह तआला को यह मंज़ूर नहीं कि कल अल्लाह की अदालत में कोई बंदा यह कहे कि ख़ुदाया! मुझे आपके बारे में कुछ भी पता नहीं था.

173 या कहो कि हमारे बाप-दादा ने पहले से शिर्क किया था (ख़ुदा का साझीदार ठहराया था)
और हम उनके बाद उनकी नस्ल में हुए. तो क्या तू हमें हलाक करेगा उस काम पर जो ग़लतकार लोगों
ने किया. 174 और इस तरह हम अपनी निशानियाँ खोलकर बयान करते हैं, ताकि वे पलट आएं.

175 और उन्हें उस शख़्स का हाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दी थीं तो वह उनसे
निकल भागा. पस शैतान उसके पीछे लग गया और वह गुमराहों में से हो गया. 176 और अगर
हम चाहते तो उसे उन आयतों के ज़रीए से बुलंदी अता करते, मगर वह तो ज़मीन का हो रहा और
अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करने लगा. पस उसकी मिसाल कुत्ते की सी है कि अगर तू उसपर बोझ
लादे तब भी हांपे और अगर छोड़ दे तब भी हांपे. यह मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी
निशानियों को झुठलाया. पस तुम यह अहवाल उन्हें सुनाओ, ताकि वे सोचें. 177 कैसी बुरी
मिसाल है उन लोगों की जो हमारी निशानियों को झुठलाते हैं और वे अपना ही नुक़सान करते रहे.
178 अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला होता है और जिसे वह बेराह कर दे तो वही
घाटा उठाने वाले हैं.

179 **और हमने जिन्नात और इंसानों में से बहुतों को दोज़ख़ के लिए पैदा किया है. उनके दिल हैं जिनसे वे समझते नहीं, उनकी आँखें हैं जिनसे वे देखते नहीं, उनके कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं. वे ऐसे हैं जैसे चौपाए, बल्कि उनसे भी ज़्यादा बेराह. यही लोग हैं ग़ाफ़िल.**

नोटः- अल्लाह तआला ने सारे जिन्न व इन्स के लिए सच्चाई को पाने का पूरा इंतज़ाम किया. एक तरफ़ अल्लाह ने उन्हें सुनने, समझने, देखने की सलाहियत अता की, तो दूसरी तरफ़ पैग़ंबरों को भेजा रहनुमाई के लिए किताबें नाज़िल कीं. हिदायत के इस सारे इंतज़ाम के बावजूद उनकी अकसरीयत ने शैतान की पैरवी करके ख़ुद को दोज़ख़ के क़ाबिल बना लिया.

180 और अल्लाह के लिए हैं सब अच्छे नाम. पस उन्हीं से उसे पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो, जो उसके नामों में कजरवी करते हैं (यानी टेढ़ापन निकालते हैं). वे बदला पाकर रहेंगे अपने कामों का. 181 और हमने जिन्हें पैदा किया है उनमें से एक गिरोह ऐसा है जो हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला करता है. 182 और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया, हम उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता पकड़ेंगे ऐसी जगह से जहाँ से उन्हें ख़बर भी न होगी. 183 और मैं उन्हें ढील देता हूँ, बेशक मेरा दाव बड़ा मज़बूत है.

184 क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया कि उनके साथी को कोई जुनून नहीं है. वह तो एक साफ़ डराने वाला है.

185 **क्या उन्होंने आसमानों और ज़मीन के निज़ाम पर नज़र नहीं की और (क्या उसपर ग़ौर नहीं किया) जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है हर चीज़ से और इस बात पर की शायद उनकी मुद्दत क़रीब आ गई हो. अब इस (क़ुरआन) के बाद और कौन सा कलाम ऐसा हो सकता है जिस पर वे ईमान लाएँगे?**

नोटः- जिस इंसान को ख़ुदा की बात समझ में नहीं आयी, फिर उसे कौनसी बात समझ में आएगी? जिसे ख़ुदा के समझाने से समझ में नहीं आया, फिर उसे किस का समझाना समझ में आएगा? जिसका ख़ुदा की दलीलों से इत्मीनान नहीं हुआ, फिर कौनसी दलीलें उसका इत्मीनान करेंगी? जिसने ख़ुद ख़ुदा के पैग़ाम को मानने से इन्कार कर दिया, फिर कौन सा पैग़ाम उसके लिए सच्चाई का दरवाज़ा खोलेगा?

इससे यह बात वाज़ेह होती है कि दाई को पूरे तरजीह के साथ लोगों तक सिर्फ़ क़ुरआन को पहुँचाना है, न कि दूसरा-दूसरा लिटरेचर. क़ुरआन को छोड़कर दूसरा-दूसरा लिटरेचर पहुँचाने से ना मदू पर हुज्जत पूरी हो सकती है और ना दाई अपनी ज़िम्मेदारी से बरी हो सकता है.

186 जिसे अल्लाह बेराह कर दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं. और वह उन्हें सरकशी ही में भटकता हुआ छोड़ देता है. 187 वह तुम से क़यामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब वाक़ेअ होगी. कहो, उसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है. वही उसके वक़्त पर उसे ज़ाहिर करेगा. वह भारी हो रही है आसमानों में और ज़मीन में. वह जब तुम पर आएगी तो अचानक आ जाएगी. वह तुम से पूछते हैं गोया कि तुम उसकी तहक़ीक़ कर चुके हो. कहो, उसका इल्म तो बस अल्लाह ही

के पास है. लेकिन अकसर लोग नहीं जानते. 188 कहो, मैं मालिक नहीं अपनी जान के भले का और न बुरे का, मगर जो अल्लाह चाहे. और अगर मैं ग़ैब को जानता तो मैं बहुत से फ़ायदे अपने लिए हासिल कर लेता और मुझे कोई नुक़सान न पहुँचता. मैं तो महज़ एक डराने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूँ उन लोगों के लिए जो मेरी बात मानें.

189 वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से और उसी से बनाया उसका जोड़ा, ताकि उसके पास सुकून हासिल करे. फिर जब मर्द ने औरत को ढाँक लिया तो उसे एक हल्का सा हमल रह गया. फिर वह उसे लिए फिरती रही. फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने मिलकर, अपने रब, अल्लाह से दुआ की, अगर तूने हमें तंदुरुस्त औलाद दी तो हम तेरे शुक्रगुज़ार रहेंगे. 190 मगर जब अल्लाह ने उन्हें तंदुरुस्त औलाद दे दी तो वे उसकी बख़्शी हुई चीज़ में दूसरों को उसका शरीक (साझीदार) ठहराने लगे. अल्लाह बरतर है उन मुशरिकाना बातों से जो ये लोग करते हैं. 191 क्या वे शरीक बनाते हैं ऐसों को जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते? बल्कि वे ख़ुद मख़लूक़ हैं (ख़ुद पैदा किए गए हैं). 192 और वे न उनकी किसी क़िस्म की मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं. 193 और अगर तुम उन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार पर न चलेंगे. बराबर है चाहे तुम उन्हें पुकारो या तुम ख़ामोश रहो. 194 जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वे तुम्हारे ही जैसे बंदे हैं. तो तुम उन्हें पुकारो, वे तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो.

195 क्या उनके पाँव हैं कि उनसे चलें? क्या उनके हाथ हैं कि उनसे पकड़ें? क्या उनकी आँखें हैं कि उनसे देखें? क्या उनके कान हैं कि उनसे सुनें? कहो, तुम अपने शरीकों को बुलाओ. फिर तुम लोग मेरे ख़िलाफ़ तदबीरें करो और मुझे मोहलत न दो. 196 यक़ीनन मेरा कारसाज़ (कार्य—साधक) अल्लाह है जिसने किताब उतारी है और वह कारसाज़ी करता है नेक बंदों की. 197 और जिन्हें तुम पुकारते हो उसके सिवा, वे न तुम्हारी मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं. 198 और अगर तुम उन्हें रास्ते की तरफ़ पुकारो तो वे तुम्हारी बात न सुनेंगे और तुम्हें लगता है कि वे तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं, मगर वे कुछ नहीं देखते.

199 दरगुज़र (क्षमा) करो, नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से न उलझो. 200 और अगर तुम्हें कोई वसवसा शैतान की तरफ़ से आए तो अल्लाह की पनाह चाहो. बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है. 201 जो लोग अल्लाह से डरने वाले हैं, जब कभी शैतान के असर से कोई बुरा ख़याल उन्हें छू जाता है तो वे फ़ौरन चौंक पड़ते हैं और फिर उसी वक़्त उन्हें सूझ आ जाती है. 202 और जो शैतान के भाई हैं, शैतान उन्हें गुमराही में खींचे लिए जाते हैं, फिर वे (इस मामले में) कमी नहीं करते.

203 और जब तुम उनके सामने कोई निशानी (चमत्कार) नहीं लाए तो कहते हैं कि क्यों न

तुम छांट लाए कुछ अपनी तरफ़ से (कोई निशानी). कहो, मैं तो उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की तरफ़ से मुझ पर 'वही' की जाती है (जो ईश-संदेश मेरी तरफ़ भेजा जाता है मैं उसी की पैरवी करता हूँ). यह (क़ुरआन) सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से और हिदायत व रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं. 204 और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे तवज्जोह से सुनो और ख़ामोश रहो, ताकि तुम पर रहम किया जाए. 205 और अपने रब को सुबह व शाम याद करो अपने दिल में, आजिज़ी और ख़ौफ़ के साथ और पस्त आवाज़ से, और ग़ाफ़िलों में से न बनों. 206 जो (फ़रिश्ते) तेरे रब के पास हैं वे उसकी इबादत से तकब्बुर (घमंड) नहीं करते. और वे उसकी पाक ज़ात को याद करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं. अस्-सज्दा

सूरह-8. अल-अनफ़ाल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 वे तुम से अनफ़ाल (ग़नीमत का माल- यानी जंग हारे हुए फ़रीक़ से हासिल होने वाला माल) के बारे में पूछते हैं. कहो कि अनफ़ाल अल्लाह और उसके रसूल के हैं. पस तुम लोग अल्लाह से डरो और अपने आपस के ताल्लुक़ात की इसलाह (सुधार) करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो, अगर तुम ईमान रखते हो.

2 **ईमान वाले तो वे हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उनके दिल दहल जाएँ और जब अल्लाह की आयतें उनके सामने पढ़ी जाएँ तो वे उनका ईमान बढ़ा देती हैं और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं.**

नोटः- क़ुरआन के इस बयान से पता चलता है कि अल्लाह का ज़िक्र और तिलावते-क़ुरआन की हक़ीक़त क्या है, वह यह है कि अल्लाह के ज़िक्र से लोगों के दिल दहल जाएँ, उनके आँख से आंसू जारी हो जाएँ, अल्लाह की आयतें उनके ईमान में इज़ाफ़े का ज़रिया बन जाएँ, ऐसा ही ज़िक्र अल्लाह को मतलूब है और ऐसी ही क़ुरआन की तिलावत अल्लाह को मतलूब है, ऐसी क़ुरआन की तिलावत करने वाला इन्सान क़ुरआन का दाई बने बग़ैर रह नहीं सकता.

3 वे नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं. 4 यही लोग हक़ीक़ी मोमिन हैं. उनके लिए उनके रब के पास दर्जे और मग़्फ़िरत (क्षमा) हैं और उनके लिए इज़्ज़त की रोज़ी है.

5 जैसा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें हक़ के साथ तुम्हारे घर से निकाला. और मुसलमानों में से एक गिरोह को यह नागवार था. 6 वे इस हक़ के मामले में तुम से झगड़ रहे थे, बावजूद यह कि वह ज़ाहिर हो चुका था, गोया कि वे मौत की तरफ़ हांके जा रहे हैं, आँखों देखते. 7 और जब ख़ुदा तुम से वादा कर रहा था कि दो जमाअतों में से एक तुम्हें मिल जाएगी. और तुम चाहते थे कि जिसमें कांटा न लगे, वह तुम्हें मिले. और अल्लाह चाहता था कि वह हक़ का हक़ होना साबित कर दे अपने कलमात से और मुन्किरों की जड़ काट दे 8 ताकि हक़ (सत्य) हक़ होकर रहे और बातिल (असत्य) बातिल होकर रह जाए, चाहे मुजरिमों को वह कितना ही नागवार हो.

9 जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी फ़रियाद सुनी कि मैं तुम्हारी मदद के लिए एक हज़ार फ़रिश्ते लगातार भेज रहा हूँ. 10 और यह अल्लाह ने सिर्फ़ इसलिए किया कि तुम्हारे लिए यह ख़ुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिल उससे मुतमइन हो जाएँ. और मदद तो अल्लाह ही के पास से आती है. यक़ीनन अल्लाह ज़बरदस्त और हिकमत वाला (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) है. 11 जब अल्लाह ने तुम पर ऊंघ डाल दी अपनी तरफ़ से तुम्हारी तस्कीन के लिए और आसमान से तुम्हारे ऊपर पानी उतारा कि उसके ज़रीए से तुम्हें पाक करे और तुम से शैतान की नजासत (गंदगी) को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और उससे क़दमों को जमा दे. 12 जब तेरे रब ने फ़रिश्तों को हुक्म भेजा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम ईमान वालों को जमाए रखो. मैं मुन्किरों के दिल में रोब डाल दूँगा. पस तुम उनकी गर्दन के ऊपर मारो और उनके पोर—पोर पर ज़रब (चोट) लगाओ. 13 यह इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की. और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करता है तो अल्लाह सज़ा देने में सख़्त है. 14 यह तो अब चखो और जान लो कि मुन्किरों के लिए आग का अज़ाब है.

15 ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारा मुक़ाबला मुन्किरीन से जंग के मैदान में हो तो उनसे पीठ मत फेरो. 16 और जिसने ऐसे मौक़े पर पीठ फेरी, सिवा इसके कि जंगी चाल के तौर पर हो या दूसरी फ़ौज से जा मिलने के लिए, तो वह अल्लाह के ग़ज़ब (प्रकोप) में आ जाएगा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है.

17 पस तुमने उन्हें क़तल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने क़तल किया. और जब तुमने उनपर ख़ाक फेंकी तो तुमने नहीं फेंकी, बल्कि अल्लाह ने फेंकी, ताकि अल्लाह अपनी तरफ़ से ईमान वालों पर ख़ूब एहसान करे. बेशक अल्लाह सुनने वाला है, जानने वाला है. 18 यह तो हो चुका. और बेशक अल्लाह मुन्किरीन की तमाम तदबीरें (युक्तियां) बेकार करके रहेगा. 19 अगर तुम फ़ैसला चाहते थे तो फ़ैसला तुम्हारे सामने आ गया. और अगर तुम बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है. और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी फिर वही करेंगे और तुम्हारा जत्था तुम्हारे

कुछ काम न आएगा, चाहे वह कितना ही ज़्यादा हो. और बेशक अल्लाह ईमान वालों के साथ है.

20 ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो और उससे रूगर्दानी न करो (यानी आज्ञापालन से मुँह न फेरो), हालाँकि तुम सुन रहे हो. 21 और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हमने सुना, हालाँकि वे नहीं सुनते. 22 यक़ीनन अल्लाह के नज़दीक बदतरीन जानवर वे बहरे, गूंगे लोग हैं जो अक़्ल से काम नहीं लेते. 23 और अगर अल्लाह को उनमें किसी भलाई का इल्म होता तो वह ज़रूर उन्हें सुनने की तौफ़ीक़ देता और अगर अब वह उन्हें सुनवा दे तो वे ज़रूर रूगर्दानी (अवज्ञा) करेंगे, बेरुख़ी करते हुए.

24 ऐ ईमान वालो! अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक कहो (स्वीकारोक्ति दो), जबकि रसूल तुम्हें उस चीज़ की तरफ़ बुला रहा है जो तुम्हें ज़िंदगी देने वाली है. और जान लो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के दरमियान हायल हो जाता है (यानी अल्लाह को इंसान के दिल की हर बात का पता रहता है). और यह कि उसी की तरफ़ तुम्हारा इकट्ठा होना है. 25 और डरो उस फ़ितने से जो ख़ास उन्हीं लोगों पर वाक़ेअ न होगा जो तुम में से ज़ुल्म के करने वाले हैं. और जान लो कि अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है.

26 और याद करो, जबकि तुम थोड़े थे और ज़मीन में कमज़ोर समझे जाते थे. तुम डरते थे कि लोग अचानक तुम्हें उचक न लें. फिर अल्लाह ने तुम्हें रहने की जगह दी और अपनी नुसरत (मदद) से तुम्हारी ताईद की और तुम्हें पाकीज़ा रोज़ी दी, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो. 27 ऐ ईमान वालो! ख़यानत (विश्वास-भंग) न करो अल्लाह और रसूल की और ख़यानत न करो अपनी अमानतों में, हालाँकि तुम जानते हो.

28 **और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक आज़माइश हैं. और यह कि अल्लाह ही के पास है बड़ा अज्र.**

नोटः– एक तरफ़ इंसान के अंदर ज़्यादा से ज़्यादा माल पाने की हिर्स होती है तो दूसरी तरफ़ जहां तक माल ख़र्च करने का ताल्लुक़ है इंसान अपनी औलाद पर बेतहाशा माल लुटाने के लिए तैयार रहता है.

माल के मामले में सही रविश यह है कि इंसान उसे अल्लाह की रज़ा के कामों में इस्तेमाल करे और औलाद के मामले में सही रविश यह है कि वह अपने बेटा-बेटी को अल्लाह के पसंदीदा रास्ते पर जमाएं. माल व औलाद इम्तहान के परचे हैं. अगर इंसान इस मामले में ख़ुदा के मतलूब रास्ते पर न चले तो इंसान नाकाम होकर रह जाएगा.

29 ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हें हक़ व बातिल में फ़रक़ करने की
सलाहियत (यानी फ़ुरक़ान) अता करेगा और तुम से तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और तुम्हें
बख़्श देगा और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है, 30 और जब मुन्किर (यानी हक़ का इन्कार करने
वाले) तुम्हारे बारे में तदबीरें सोच रहे थे कि तुम्हें क़ैद कर दें या क़तल कर डालें या जलावतन
(निर्वासित) कर दें. वे अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह अपनी तदबीरें कर रहा था और
अल्लाह बेहतरीन तदबीर वाला है.

31 और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं हमने सुन लिया. अगर
हम चाहें तो हम भी ऐसा ही कलाम पेश कर दें. यह तो बस अगलों की कहानियाँ हैं. 32 और जब
उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह! अगर यही हक़ है तेरे पास से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या
और कोई दर्दनाक अज़ाब हम पर ले आ. 33 और अल्लाह ऐसा करने वाला नहीं कि उन्हें अज़ाब
दे इस हाल में कि तुम उनमें मौजूद हो और अल्लाह उनपर अज़ाब लाने वाला नहीं, जबकि वे
इस्तग़फ़ार (क्षमा—याचना) कर रहे हों. 34 और अल्लाह उन्हें क्यों न अज़ाब देगा, हालाँकि वे
मसजिदे-हराम से रोकते हैं, जबकि वे उसके मुतवल्ली (देखभाल करने वाले) नहीं. उसके देखभाल
करने वाले तो सिर्फ़ अल्लाह से डरने वाले हो सकते हैं. मगर उनमें से अकसर इसे नहीं जानते. 35
और बैतुल्लाह के पास उनकी नमाज़ सीटी बजाने और ताली पीटने के सिवा और कुछ नहीं. पस
अब चखो अज़ाब अपने कुफ़्र का.

36 जिन लोगों ने इन्कार किया वे अपने माल को इसलिए ख़र्च करते हैं कि लोगों को
अल्लाह की राह से रोकें. वे उसे ख़र्च करते रहेंगे, फिर यह उनके लिए हसरत बनेगा, फिर वे मग़लूब
(परास्त) किए जाएँगे. और जिन्होंने इन्कार किया उन्हें जहन्नम की तरफ़ इकट्ठा किया जाएगा. 37
ताकि अल्लाह नापाक को अलग कर दे पाक से और नापाक को एक पर एक रखे फिर इस ढेर को
जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारे (घाटे) में पड़ने वाले.

38 इन्कार करने वालों से कहो कि अगर वे बाज़ आ जाएँ तो जो कुछ हो चुका है, वह उन्हें
माफ़ कर दिया जाएगा. और अगर वे फिर वही करेंगे तो हमारा मामला पहले के लोगों के साथ
गुज़र चुका है. 39 और उनसे लड़ो यहाँ तक कि फ़ितना बाक़ी न रहे और दीन सब अल्लाह के
लिए हो जाए. फिर अगर वे बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह देखने वाला है उनके अमल का. 40 और
अगर उन्होंने एराज़ (उपेक्षा) किया तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला (संरक्षक) है और क्या
ही अच्छा मौला है और क्या ही अच्छा मददगार.

पारा – 10

41 और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत का माल (यानी जंग में हासिल माल)

तुम्हें हासिल हो उसका पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह और रसूल के लिए और (रसूल के) रिश्तेदारों और यतीमों और मिसकीनों और मुसाफ़िरों के लिए है, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमने अपने बंदे (मुहम्मद) पर उतारी फ़ैसले के दिन, जिस दिन कि दोनों जमाअतों में मुठभेड़ हुई और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है.

42 और जबकि तुम वादी के क़रीबी किनारे पर थे और वे दूर के किनारे पर. और क़ाफ़िला तुम से नीचे की तरफ़ था. और अगर तुम और वे (मुक़ाबले का) वक़्त मुक़र्रर करते तो ज़रूर इस तक़र्रुर (निर्धारण) के बारे में तुम में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हो जाता. लेकिन जो हुआ वह इसलिए हुआ, ताकि अल्लाह उस चीज़ का फ़ैसला कर दे जिसे होकर रहना था, ताकि जिसे हलाक होना है, वह रोशन दलील के साथ हलाक हो और जिसे ज़िंदगी हासिल करना है वह रोशन दलील के साथ ज़िंदा रहे. यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला है, जानने वाला है. 43 जब अल्लाह तुम्हारे ख़्वाब में उन्हें थोड़ा दिखाता रहा. अगर वह उन्हें ज़्यादा दिखा देता तो तुम लोग हिम्मत हार जाते और इस मामले में आपस में झगड़ने लगते. लेकिन अल्लाह ने तुम्हें बचा लिया. यक़ीनन वह दिलों तक का हाल जानता है. 44 और जब अल्लाह ने उन लोगों को तुम्हारी नज़र में कम करके दिखाया और तुम्हें उनकी नज़र में कम करके दिखाया, ताकि अल्लाह उस चीज़ का फ़ैसला कर दे जिसका होना तै था. और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं.

45 ऐ ईमान वालो! जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो तुम साबितक़दम रहो और अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम कामयाब हो. 46 और इताअत (आज्ञापालन) करो अल्लाह की और उसके रसूल की और आपस में झगड़ा न करो वरना तुम्हारे अंदर कमज़ोरी आ जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है 47 और उन लोगों की तरह न बनो जो अपने घरों से अकड़ते हुए और लोगों को दिखाते हुए निकले और जो अल्लाह की राह से रोकते हैं. हालाँकि वे जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह उसका इहाता किए हुए है (यानी वे पूरी तरह अल्लाह के नियंत्रण में है).

48 और जब शैतान ने उन्हें उनके आमाल ख़ुशनुमा बनाकर दिखाए और कहा कि लोगों में से आज कोई तुम पर ग़ालिब आने वाला नहीं और मैं तुम्हारे साथ हूँ. मगर जब दोनों गिरोह आमने-सामने हुए तो वह उलटे पांव भागा और कहा कि मैं तुम से बरी हूँ, मैं वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम लोग नहीं देखते. मैं अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह सख़्त सज़ा देना वाला है. 49 जब मुनाफ़िक़ (पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है (ईमान वालों के बारे में) कहते थे कि इन लोगों को उनके दीन ने धोखे में डाल दिया है और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त और हिकमत वाला (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) है.

50 और अगर तुम देखते, जबकि फ़रिश्ते इन मुन्किरीन की जान क़ब्ज़ करते हैं, मारते हुए उनके चेहरों और उनकी पीठों पर, और यह कहते हुए कि अब जलने का अज़ाब चखो. 51 यह बदला है उसका जो तुमने अपने हाथों से आगे भेजा था और अल्लाह हरगिज़ बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं. 52 (उनका हाल) फ़िरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे (उनकी तरह होगा), इसलिए कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इन्कार किया, पस अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया. बेशक अल्लाह क़ुव्वत (शक्ति) वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला है. 53 यह इस वजह से हुआ कि अल्लाह उस इनाम को जो वह किसी क़ौम पर करता है, उस वक़्त तक नहीं बदलता, जब तक वे उसे न बदल दें जो उनके नफ़्सों (अंत:करणों) में है. और बेशक अल्लाह सुनने वाला है, जानने वाला है. 54 (उन मुजरिमों का अंजाम) फ़िरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे (उनकी तरह होगा) कि उन्होंने अपने रब की निशानियों को झुठलाया फिर हमने उनके गुनाहों के सबब से उन्हें हलाक कर दिया और हमने फ़िरऔन वालों को ग़र्क़ कर दिया और ये सब लोग ज़ालिम थे.

55 बेशक सब जानदारों में बदतरीन अल्लाह के नज़दीक वे लोग हैं जिन्होंने इन्कार किया और वे ईमान नहीं लाते. 56 जिनसे तुमने मुहायदा किया (क़रार किया), फिर वे अपना अहद हर बार तोड़ देते हैं और वे डरते नहीं. 57 पस अगर तुम उन्हें लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसी सज़ा दो कि जो उनके पीछे हैं, वे भी देखकर भाग जाएँ, ताकि उन्हें इबरत (सीख) हो. 58 और अगर तुम्हें किसी क़ौम से बदअहदी (विश्वासघात) का डर हो तो उनका अहद उनकी तरफ़ फेंक दो, इस तरह कि तुम और वे बराबर हो जाएँ. बेशक अल्लाह बदअहदों को (विश्वासघात करने वालों को) पसंद नहीं करता.

59 और इन्कार करने वाले यह न समझें कि वे निकल भागेंगे, वे हरगिज़ अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते. 60 और उनसे (मुक़ाबले के) लिए जिस तरह तुम से हो सके तैयार रखो क़ुव्वत (सैन्यबल) और पले हुए घोड़े कि उससे तुम्हारी हैबत रहे अल्लाह के दुश्मनों पर और तुम्हारे दुश्मनों पर और उनके अलावा दूसरों पर भी जिन्हें तुम नहीं जानते. अल्लाह उन्हें जानता है. और जो कुछ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारे साथ कोई कमी न की जाएगी. 61 और अगर वे सुलह (संधि) की तरफ़ झुकें तो तुम भी उसके लिए झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो. बेशक वह सुनने वाला है, जानने वाला है. 62 और अगर वे तुम्हें धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह तुम्हारे लिए काफ़ी है. वही है जिसने तुम्हें अपनी नुसरत (मदद) अता की और मोमिनों के ज़रीए से तुम्हें क़ुव्वत दी. 63 और उनके दिल एक दूसरे के साथ जोड़ दिए (यानी उनके दिलों में आपसी मनमुटाव ख़त्म कर ऐक्य पैदा कर दिया). अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है सब ख़र्च कर डालते तब भी उनके दिल एक दूसरे के साथ जोड़ नहीं सकते. लेकिन अल्लाह ने उनमें इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया, बेशक वह ज़ोरआवर और हिकमत वाला (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) है.

64 ऐ नबी! तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वे मोमिनीन जिन्होंने तुम्हारा साथ दिया है.
65 ऐ नबी! मोमिनीन को लड़ाई पर उभारो. अगर तुम में बीस आदमी साबितक़दम (दृढ़) होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुम में सौ होंगे तो हज़ार मुन्किरों पर ग़ालिब आएंगे, इस वास्ते कि वे लोग समझ नहीं रखते. 66 अब अल्लाह ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और उसने जान लिया कि तुम में कुछ कमज़ोरी है. पस अगर तुम में सौ साबितक़दम होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर हज़ार होंगे तो अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब आएंगे, और अल्लाह साबितक़दम रहने वालों के साथ है.

67 **किसी नबी के लिए लायक़ नहीं कि उसके पास क़ैदी हों जब तक वह ज़मीन में अच्छी तरह ख़ूरेज़ी न कर ले (यानी वह अल्लाह के दुश्मनों की जड़ काट दे).**
तुम दुनिया के असबाब चाहते हो और अल्लाह आख़िरत को चाहता है.
और अल्लाह ज़बरदस्त और हिकमत वाला (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) है.

नोटः– इंसान की भलाई वही चाहने में है जो उसका रब चाहता है.

68 और अगर अल्लाह का एक लिखा हुआ पहले से मौजूद न होता तो जो तरीक़ा तुमने इख़्तियार किया उसके सबब तुम्हें सख़्त अज़ाब पहुँच जाता. 69 पस जो माल तुमने लिया है उसे खाओ, तुम्हारे लिए हलाल और पाक है और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.

70 ऐ नबी! तुम्हारे हाथ में जो क़ैदी हैं उनसे कह दो कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई पाएगा तो जो कुछ तुम से लिया गया है उससे बेहतर वह तुम्हें देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. 71 और अगर ये तुम से बदअहदी (वचन–भंग) करेंगे तो इससे पहले इन्होंने ख़ुदा से बदअहदी की तो ख़ुदा ने तुम्हें उनपर क़ाबू दे दिया और अल्लाह इल्म वाला और हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

72 जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने जान व माल से जिहाद किया. और वे लोग जिन्होंने पनाह दी और मदद की, वे लोग एक दूसरे के रफ़ीक़ (मित्र, हितचिंतक) हैं और जो लोग ईमान लाए, मगर उन्होंने हिजरत नहीं की तो उनसे तुम्हारा रिफ़ाक़त का कोई ताल्लुक़ नहीं, जब तक कि वे हिजरत करके न आ जाएँ. और वे तुम से दीन के मामले में मदद माँगे तो तुम पर उनकी मदद करना वाजिब (ज़रूरी) है, मगर यह कि मदद किसी ऐसी क़ौम के ख़िलाफ़ हो जिसके साथ तुम्हारा मुआहिदा (करार) है (यानी मुआहिदा तोड़ कर मदद नहीं की जा सकती). और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है. 73 और जो लोग

हक़ का इन्कार करने वाले हैं वे एक दूसरे के रफ़ीक़ (सहयोगी) हैं. अगर तुम ऐसा न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना फैलेगा और बड़ा फ़साद होगा.

74 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की (यानी अल्लाह और उसके दीन के लिए अपने वतन का त्याग किया) और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने पनाह दी और मदद की, यही लोग सच्चे मोमिन हैं. इनके लिए बख़्शिश है और बेहतरीन रिज़्क़ है. 75
और जो लोग बाद में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया, वे भी तुम में से हैं. और ख़ून के रिश्तेदार एक दूसरे के ज्यादा हक़दार हैं, अल्लाह की किताब में (यानी अल्लाह ने यह लिख़ दिया है). बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है.

सूरह–9. अत–तौबा

1 बरा–त (संबंध तोड़ने) का एलान है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से उन मुशरिकीन (बहुदेववादियों) को जिनसे तुमने मुआहिदा (क़रार) किया था. 2 (मुशरिकों!) पस तुम लोग मुल्क में चार महीने चल फिर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते और यह कि अल्लाह मुन्किरों को रुसवा करने वाला है. 3 एलान है अल्लाह और रसूल की तरफ़ से बड़े हज के दिन लोगों के लिए कि अल्लाह और उसका रसूल मुशरिकों से बरीउज़्ज़िम्मा (ज़िम्मेदारी–मुक्त) हैं. अब अगर तुम लोग तौबा करो तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है. और अगर तुम मुँह फेरोगे तो जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज़ करने वाले नहीं हो. और इन्कार करने वालों को सख़्त अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो. 4 मगर जिन मुशरिकों से तुमने मुआहिदा किया था, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की तो उनका मुआहिदा (संधि) उनकी मुद्दत तक पूरा करो. बेशक अल्लाह परहेज़गारों को पसंद करता है.

5 **फिर जब हुरमत (गरिमा) वाले महीने गुज़र जाएँ तो मुशरिकीन को क़तल करो जहाँ पाओ और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और बैठो हर जगह उनकी घात में. फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो उन्हें** छोड़ दो. अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. 6 **और अगर मुशरिकीन में से कोई शख़्स तुम से पनाह माँगे तो उसे पनाह दे दो, ताकि वह अल्लाह का कलाम सुने फिर उसे उसके अमान (सुरक्षा) की जगह पहुँचा दो. यह इसलिए कि वे लोग इल्म नहीं रखते.**

नोटः– आयत नंबर 5 जंग से मुतआल्लिक़ है, और आयत नंबर 6 में यह हुक्म है कि जंगी माहौल में भी मुशरिकीन में से कोई क़ुरआन सुनने-समझने की ख़्वाहिश करे तो उसे अमन-व-अमान के साथ क़ुरआन सुनने-समझने का मौक़ा दिया जाए. इससे अंदाज़ा होता है कि दाई को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने का कोई मौक़ा नहीं गवाना चाहिए, यहाँ तक कि नॉर्मल हालात न हों तब भी.

इसके बरअक्स आज दावते क़ुरआन के हक़ में इतने ज़्यादा मुआफ़िक़ (favourable) हालात हैं कि आप सिर्फ़ मदू के सामने क़ुरआन के कॉपीज़् पेश कीजिए, बेशुमार हाथ उसे लेने के लिए आगे बढ़ेंगे. आज सारी दुनिया में अलग-अलग वजुहात से इस्लाम और क़ुरआन news में हैं. सारी दुनिया के लोग क़ुरआन का पैग़ाम जानने के ताल्लुक़ से जिज्ञासा (curiosity) रखते हैं. लेकिन बदक़िस्मती से मौजूदा मुसलमान दावत के फ़रिज़े को भूलने के नतीजे में ऐसे मौक़े गंवा रहा है और एक अजीब सवाल कर रहा है कि क्या ग़ैर-मुस्लिम हज़रात को क़ुरआन दिया जा सकता है. यह सवाल इतना ख़तरनाक है कि वह ख़ुदा के मनसूबे के ख़िलाफ़ है, यह सवाल ख़ुद क़ुरआन के बयान के ख़िलाफ़ है.

दूसरी अहम बात यह वाज़ेह रहे कि इस्लाम के दौरे-अव्वल में मदू को अल्लाह का कलाम पढ़कर सुनाया जाता था. लेकिन अब printing press के दौर में दाई को मदू तक मदू की ज़बानों में क़ुरआन के तर्जुमे पहुँचाना है.

7 इन मुशरिकों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के ज़िम्मे कोई अहद (वचन) कैसे रह
सकता है, मगर जिन लोगों से तुमने अहद किया था मसजिदे-हराम के पास, पस जब तक वे तुम
से सीधे रहें, तुम भी उनसे सीधे रहो. बेशक अल्लाह परहेज़गारों को पसंद करता है. 8 कैसे अहद
रहेगा, जबकि यह हाल है कि अगर वे तुम्हारे ऊपर क़ाबू पाएं तो तुम्हारे बारे में न क़राबत (निकट
के संबंधों) का लिहाज़ करें और न अहद का. वे तुम्हें अपने मुँह की बात से राज़ी करना चाहते हैं,
मगर उनके दिल इन्कार करते हैं. और उनमें अकसर बदअहद हैं. 9 उन्होंने अल्लाह की आयतों को
थोड़ी क़ीमत पर बेच दिया, फिर उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका. बहुत बुरा है जो वे कर रहे हैं.
10 किसी मोमिन के मामले में वे न क़राबत का लिहाज़ करते हैं और न अहद का, यही लोग हैं
ज़्यादती करने वाले. 11 पस अगर वे तौबा करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो
वे तुम्हारे दीनी भाई हैं. और हम खोलकर बयान करते हैं आयतों को, जानने वालों के लिए.

12 और अगर अहद (वचन) के बाद ये अपनी क़समों को तोड़ डालें और तुम्हारे
दीन में ऐब लगाएं तो कुफ़्र के इन सरदारों से लड़ो. बेशक उनकी क़समें कुछ नहीं, ताकि वे बाज़
आएं. 13 क्या तुम न लड़ोगे ऐसे लोगों से जिन्होंने अपने अहद तोड़ दिए और रसूल को निकालने

की जसारत (दुस्साहस) की और वही हैं जिन्होंने तुम से जंग में पहल की. क्या तुम उनसे डरोगे. अल्लाह ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि तुम उससे डरो अगर तुम मोमिन हो. 14 उनसे लड़ो. अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें सज़ा देगा और उन्हें रुसवा करेगा और तुम्हें उनपर ग़लबा देगा और मुसलमान लोगों के सीने को ठंडा करेगा 15 और उनके दिल की जलन को दूर कर देगा और अल्लाह तौबा नसीब करेगा जिसे चाहेगा और अल्लाह जानने वाला है, हिकमत वाला है (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान है).

16 क्या तुम्हारा यह गुमान है कि तुम छोड़ दिए जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह ने तुम में से उन लोगों को छाँटा ही नहीं जिन्होंने जिहाद किया और जिन्होंने अल्लाह और रसूल और मोमिनीन के सिवा किसी को दोस्त नहीं बनाया और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो.

17 मुशरिकों का काम नहीं कि वे अल्लाह की मसजिदों को आबाद करें, हालाँकि वे ख़ुद अपने ऊपर कुफ़्र के गवाह हैं. उन लोगों के आमाल अकारत गए और वे हमेशा आग में रहने वाले हैं. 18 अल्लाह की मसजिदों को तो वह आबाद करता है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात अदा करे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे. ऐसे लोग उम्मीद है कि हिदायत पाने वालों में से बनें.

19 **क्या तुमने हाजियों के पानी पिलाने और मसजिदे–हराम के बसाने को बराबर कर दिया उस शख़्स के जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया, अल्लाह के नज़दीक ये दोनों बराबर नहीं हो सकते. और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता.**
20 **जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में अपने जान व माल से जिहाद किया, उनका दर्जा अल्लाह के यहाँ बड़ा है और यही लोग कामयाब हैं.**

नोटः– जो लोग दावती ज़िम्मेदारी को भूलकर दीन के नाम पर दूसरे–दूसरे कामों में मसरूफ़ हैं और इस बात पर ख़ुश हो रहे हैं कि वे दीन की ख़िदमत अंजाम दे रहे हैं. ऐसे लोगों को क़ुरआन के इस बयान की रोशनी में सोचना चाहिए.

21 उनका रब उन्हें ख़ुशख़बरी देता है अपनी रहमत और ख़ुशनुदी (प्रसन्नता) की और ऐसे बाग़ों की जिनमें उनके लिए दायमी (हमेशा रहने वाली) नेमत होगी, 22 उनमें वे हमेशा रहेंगे. बेशक अल्लाह ही के पास बड़ा अज्र (प्रतिफल) है.

23 ऐ ईमान वालो! अपने बापों और अपने भाइयों को दोस्त न बनाओ अगर वे ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को अज़ीज़ रखें. और तुम में से जो उन्हें अपना दोस्त बनाएगा तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं. 24 कहो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारा ख़ानदान और वे माल जो तुमने कमाए हैं और वह तिजारत जिसके बंद होने से तुम डरते हो और वे घर जिन्हें तुम पसंद करते हो, ये सब तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से ज़्यादा महबूब हैं तो इंतज़ार करो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को रास्ता नहीं देता.

नोटः– इस आयत के रोशनी में मौजूदा मुसलमानों को अपना एहतिसाब करना चाहिए कि उन्होंने हुब्बे-शदीद का (यानी सबसे ज़्यादा मुहब्बत का) ताल्लुक़ किस के साथ क़ायम किया है. उनकी सारी दौड़-धूप किसके लिए है?

25 बेशक अल्लाह ने बहुत से मौक़ों पर तुम्हारी मदद की है और हुनैन के दिन भी जब तुम्हारी कसरत ने तुम्हें नाज़ में मुब्तिला कर दिया था. फिर वह तुम्हारे कुछ काम न आयी. और ज़मीन अपनी वुस्अत के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर तुम पीठ फेर कर भागे. 26 उसके बाद अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनीन पर अपनी सकीनत (शांति) उतारी और ऐसे लश्कर उतारे जिन्हें तुमने नहीं देखा और अल्लाह ने मुन्किरों को सज़ा दी और यही मुन्किरों का बदला है. 27 फिर इस (तरह सज़ा देने के बाद भी) अल्लाह जिसे चाहे तौबा नसीब कर दे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. 28 ऐ ईमान वालो! मुशरिकीन बिल्कुल नापाक हैं. पस वे इस साल के बाद मसजिदे-हराम के पास न आएं और अगर तुम्हें मुफ़लिसी का अंदेशा हो तो अल्लाह अगर चाहेगा तो अपने फ़ज़ल से तुम्हें ग़नी (मालदार) कर देगा. अल्लाह अलीम व हकीम (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

29 उन अहले-किताब से लड़ो जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न आख़िरत के दिन पर और न अल्लाह और उसके रसूल के हराम ठहराए हुए को हराम ठहराते और न दीने-हक़ को अपना दीन बनाते, यहाँ तक कि वे अपने हाथ से जिज़िया (जान व माल की हिफ़ाज़त के लिए इस्लामी हुकूमत को दिया जाने वाला tax) दें और छोटे बनकर रहें. 30 और यहूद ने कहा कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं और नसारा (ईसाइयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं. ये उनकी अपने मुँह की बातें हैं. ये उन लोगों की बात की नक़ल कर रहे हैं जिन्होंने इनसे पहले कुफ़्र किया. अल्लाह उन्हें हलाक करे, वे किधर बहके जा रहे हैं.

31 उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने उलमा (विद्वानों) और मशाइख़ (धर्म-गुरुओं) को रब बना डाला और मसीह इब्ने-मरयम को भी. हालाँकि उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म दिया गया था कि वे एक माबूद (पूज्य) की इबादत करें. उसके सिवा कोई माबूद नहीं. वह पाक है उससे जो वे शरीक करते हैं.

32 वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुँह से बुझा दें और अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा किए बग़ैर मानने वाला नहीं, चाहे मुन्किरों को यह कितना ही नागवार हो. 33 उसी ने अपने रसूल को भेजा है हिदायत और दीने-हक़ के साथ, ताकि उसे सारे दीनों पर ग़ालिब कर दे, चाहे यह मुशरिकों को कितना ही नागवार हो.

34 ऐ ईमान वालो! अहले-किताब के अकसर उलमा (विद्वान) व मशाइख़ (धर्मगुरु) लोगों के माल बातिल (अवैध) तरीक़ों से खाते हैं और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना और चांदी जमा करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो.

35 उस दिन उस माल पर दोज़ख़ की आग दहकाई जाएगी. फिर उससे उनकी पेशानियां और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जाएँगी (और कहा जाएगा कि) यही है वह जिसे तुमने अपने वास्ते जमा किया था. पस अब चखो जो तुम जमा करते रहे.

36 महीनों की गिनती अल्लाह के नज़दीक बारह महीने हैं अल्लाह की किताब में जिस दिन से उसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, उनमें से चार हुरमत (गरिमा) वाले हैं. यही है सीधा दीन. पस उनमें तुम अपने ऊपर ज़ुल्म न करो. और मुशरिकों से सब मिलकर लड़ो जिस तरह वे सब मिलकर तुम से लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह मुत्तक़ियों (यानी ईश-भय रखने वाले लोगों) के साथ है. 37 महीनों का हटा देना कुफ़्र में एक इज़ाफ़ा है. उससे कुफ़्र करने वाले गुमराही में पड़ते हैं. वे किसी साल हराम महीने को हलाल कर लेते हैं और किसी साल उसे हराम कर देते हैं, ताकि ख़ुदा के हराम किए हुए की गिनती पूरी करके उसके हराम किए हुए को हलाल कर लें. उनके बुरे आमाल उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं. और अल्लाह इन्कार करने वालों को रास्ता नहीं दिखाता.
38 **ऐ ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम से कहा जाता है कि अल्लाह की राह में निकलो तो तुम ज़मीन से लगे जाते हो. क्या तुम आख़िरत (यानी मृत्यु-पश्चात ज़िंदगी) के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी पर राज़ी हो गए. आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी का सामान तो बहुत थोड़ा है.** 39 **अगर तुम नहीं निकलोगे तो ख़ुदा तुम्हें दर्दनाक सज़ा देगा और तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम ले आएगा और**

तुम ख़ुदा का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकोगे. और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है. 40 अगर तुम रसूल की मदद न करोगे तो अल्लाह ख़ुद उसकी मदद कर चुका है, जबकि मुन्किरों ने उसे निकाल दिया था, वह सिर्फ़ दो में का दूसरा था. जब वे दोनों ग़ार में थे. जब वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है. पस अल्लाह ने उसपर अपनी सकीनत (शांति) नाज़िल फ़रमाई और उसकी मदद ऐसे लशकरों से की जो तुम्हें नज़र नहीं आते थे और अल्लाह ने मुन्किरों की बात नीची कर दी और अल्लाह ही की बात तो ऊंची है और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है).

41 हल्के और बोझल और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो. 42 अगर नफ़ा क़रीब होता और सफ़र आसान होता तो वे ज़रूर तुम्हारे पीछे हो लेते, मगर यह मंज़िल उनपर कठिन हो गई. अब वे अल्लाह की क़समें खाएंगे कि अगर हमसे हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते. वे अपने आपको हलाकत में डाल रहे हैं. और अल्लाह जानता है कि ये लोग यक़ीनन झूठे हैं.

43 अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, तुमने क्यों उन्हें इजाज़त दे दी. यहाँ तक कि तुम पर खुल जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और झूठों को भी तुम जान लेते. 44 जो लोग अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, वे कभी तुम से यह दरख़्वास्त नहीं करेंगे कि वे अपने माल और अपनी जान से जिहाद न करें और अल्लाह डरने वालों को ख़ूब जानता है. 45 तुम से इजाज़त तो वही लोग माँगते हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हुए हैं. पस वे अपने शक में भटक रहे हैं. 46 और अगर वे निकलना चाहते तो ज़रूर वे उसका कुछ सामान कर लेते. मगर अल्लाह ने उनका उठना पसंद नहीं किया इसलिए उन्हें जमा रहने दिया और कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो.

47 अगर ये लोग तुम्हारे साथ निकलते तो वे तुम्हारे लिए ख़राबी ही बढ़ाने का सबब बनते और वे तुम्हारे दरमियान फ़ितनापरदाज़ी (उपद्रव) के लिए दौड़-धूप करते और तुम में उनकी सुनने वाले हैं और अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब वाक़िफ़ है. 48 ये पहले भी फ़ितने (उपद्रव) की कोशिश कर चुके हैं और वे तुम्हारे लिए कामों का उलट फेर करते रहे हैं, यहाँ तक कि हक़ आ गया और अल्लाह का हुक्म ज़ाहिर हो गया और वे नाख़ुश ही रहे.

49 और उनमें वे भी हैं जो कहते हैं कि मुझे रुख़सत दे दीजिए और मुझे फ़ितने में न डालिए. सुन लो, वे तो फ़ितने में पड़ चुके. और बेशक जहन्नम मुन्किरों को घेरे हुए है. 50 अगर तुम्हें कोई अच्छाई पेश आती है तो उन्हें दुख होता है और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचती है तो कहते हैं, हमने पहले ही अपना बचाव कर लिया था और वे ख़ुश होकर लौटते हैं. 51 कहो, हमें सिर्फ़ वही चीज़ पहुँचेगी

जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है. वह हमारा कारसाज़ (कार्य साधक) है. और अहले-ईमान को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए. 52 कहो, तुम हमारे लिए सिर्फ़ दो भलाइयों में से एक भलाई के मुंतज़िर हो. मगर हम तुम्हारे हक़ में इसके मुंतज़िर हैं कि अल्लाह तुम पर अज़ाब भेजे अपनी तरफ़ से या हमारे हाथों से. पस तुम इंतज़ार करो, हम भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हैं.

53 कहो, तुम ख़ुशी से ख़र्च करो या नाख़ुशी से, तुम से हरगिज़ नहीं क़बूल किया जाएगा. बेशक तुम नाफ़रमान लोग हो. 54 और वे अपने ख़र्च की क़बूलियत से सिर्फ़ इसलिए महरूम हुए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इन्कार किया और ये लोग नमाज़ के लिए आते हैं तो बेदिली (अरुचि) के साथ आते हैं और ख़र्च करते हैं तो नागवारी (नाख़ुशी) के साथ. 55 तुम उनके माल और औलाद को कुछ अहमियत (महत्त्व) न दो. अल्लाह तो यह चाहता है कि उसके ज़रीए से उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में अज़ाब दे और उनकी जानें इस हालत में निकलें कि वे मुन्किर हों (सत्य के इनकार पर जमे हों). 56 वे ख़ुदा की क़सम खाकर कहते हैं कि वे तुम में से हैं, हालाँकि वे तुम में से नहीं. बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो तुम से डरते हैं. 57 अगर वे कोई पनाह की जगह पाएं या कोई ग़ार या घुस बैठने की जगह तो वे भाग कर उसमें जा छुपें.

58 और उनमें ऐसे भी हैं जो तुम पर सदक़ात के बारे में ऐब लगाते हैं. अगर उसमें से उन्हें दे दिया जाए तो राज़ी रहते हैं और अगर नहीं दिया जाए तो नाराज़ हो जाते हैं. 59 क्या ही अच्छा होता कि अल्लाह और रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था उसपर वे राज़ी रहते और कहते कि अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है. अल्लाह अपने फ़ज़्ल से हमें और भी देगा और उसका रसूल भी, हमें तो अल्लाह (की ख़ुशनुदी) चाहिए. 60 सदक़ात (ज़कात) तो दरअसल फ़क़ीरों और मिसकीनों के लिए हैं और उन कारकुनों के लिए जो सदक़ात के काम पर मुक़र्रर हैं. और उनके लिए जिनकी तालिफ़े-क़ल्ब (दिल-जोई) मतलूब है. और गरदनों के छुड़ाने में और क़र्जदारों की मदद करने में और अल्लाह के रास्ते में और मुसाफ़िर की इमदाद में. यह एक फ़रिज़ा है अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह इल्म वाला व हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

61 और उनमें वे लोग भी हैं जो नबी को दुख देते हैं और कहते हैं कि यह शख़्स तो कान है (यानी हर एक की बात पूरे ध्यान से सुनने वाला है). कहो कि नबी तुम्हारी भलाई के लिए कान है. वह अल्लाह पर ईमान रखता है और अहले-ईमान पर एतमाद करता है और वह रहमत है उनके लिए जो तुम में अहले-ईमान हैं. और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं, उनके लिए दर्दनाक सज़ा है. 62 वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं, ताकि तुम्हें राज़ी करें. हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा हक़दार हैं कि वे उसे राज़ी करें अगर वे मोमिन हैं. 63 क्या उन्हें मालूम नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करे, उसके लिए जहन्नम

की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा. यह बहुत बड़ी रुसवाई है.

64 मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) डरते हैं कि कहीं मुसलमानों पर ऐसी सूरह नाज़िल न हो जाए जो उन्हें उनके दिलों के भेदों से आगाह कर दे. कहो कि तुम मज़ाक़ उड़ा लो, अल्लाह यक़ीनन उसे ज़ाहिर कर देगा जिससे तुम डरते हो. 65 और अगर तुम उनसे पूछो तो वे कहेंगे कि हम तो हंसी और दिल्लगी कर रहे थे. कहो, क्या तुम अल्लाह से और उसकी आयतों से और उसके रसूल से हंसी-दिल्लगी कर रहे थे. 66 बहाने मत बनाओ, तुमने ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया है. अगर हम तुम में से एक गिरोह को माफ़ कर दें तो दूसरे गिरोह को तो ज़रूर सज़ा देंगे, क्योंकि वे मुजरिम हैं.

67 मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक ही तरह के हैं. वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से मना करते हैं. और (अल्लाह की राह में ख़र्च करने के मामले में) अपने हाथों को बंद रखते हैं. उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया. बेशक मुनाफ़िक़ीन बहुत नाफ़रमान हैं. 68 मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुन्किरों से अल्लाह ने जहन्नम की आग का वादा कर रखा है जिसमें वे हमेशा रहेंगे. यही उनके लिए काफ़ी है. उनपर अल्लाह की लानत है और उनके लिए हमेशा क़ायम रहने वाला अज़ाब है. 69 जिस तरह तुम से पहले के लोग, वे तुम से ज़ोर में ज़्यादा थे और माल व औलाद की कसरत में तुम से बढ़े हुए थे तो उन्होंने अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया और तुमने भी अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया, जैसा कि तुम्हारे पहले के लोगों ने अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया था. और तुमने भी वही बहसें कीं जैसी बहसें उन्होंने की थीं. यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया व आख़िरत में ज़ाया हो गए और यही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं. 70 क्या उन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो इनसे पहले गुज़रे. क़ौमे-नूह और आद व समूद और क़ौमे-इब्राहीम और असहाबे मदयन और उलटी हुई बस्तियों की. उनके पास उनके रसूल दलीलों के साथ आए. तो ऐसा न था कि अल्लाह उनपर ज़ुल्म करता, मगर वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे.

71 और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के मददगार हैं. वे भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करते हैं. यही लोग हैं जिनपर अल्लाह रहम करेगा. बेशक अल्लाह ज़बरदस्त व हिकमत वाला (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) है. 72 मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह का वादा है बाग़ों का कि उनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे. और वादा है सुथरे मकानों का, हमेशगी के बाग़ों में, और अल्लाह की रज़ामंदी जो सबसे बढ़कर है. यही बड़ी कामयाबी है.

73 ऐ नबी! मुन्किरों (सत्य का इन्कार करने वालों) और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उनपर कड़े बन जाओ. और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है.

74 वे ख़ुदा की क़सम खाते हैं कि उन्होंने (कुछ गलत) नहीं कहा, हालाँकि उन्होंने कुफ़्र की बात
कही और वे इस्लाम के बाद मुन्किर हो गए और उन्होंने वह चाहा जो उन्हें हासिल न हो सका. और
यह सिर्फ़ उसका बदला था कि उन्हें अल्लाह और रसूल ने अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया. अगर वे तौबा
करें तो उनके हक़ में बेहतर है और अगर वे एराज़ (उपेक्षा) करें तो ख़ुदा उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा
दुनिया में भी और आख़िरत में भी. और ज़मीन में उनका न कोई हिमायती होगा और न मददगार.

75 और उनमें वे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया कि अगर उसने हमें अपने फ़ज़्ल से
अता किया तो हम ज़रूर सदक़ा करेंगे और हम सालेह (नेक) बनकर रहेंगे. 76 फिर जब अल्लाह
ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अता किया तो वे बुख़्ल करने लगे और बेपरवाह होकर मुँह फेर लिया. 77
पस अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक़ (पाखंड) बिठा दिया उस दिन तक के लिए, जबकि वे उससे
मिलेंगे, इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह से किए हुए वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी की और इस सबब से
कि वे झूठ बोलते रहे. 78 क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनके राज़ और उनकी सरगोशी (गुप्त
वार्ता) को जानता है और अल्लाह तमाम छुपी हुई बातों को जानने वाला है. 79 वे लोग जो तअन
(कटाक्ष) करते हैं (यानी ऐब लगाते हैं) उन मुसलमानों पर जो दिल खोल कर सदक़ात देते हैं और
जो सिर्फ़ अपनी मेहनत मज़दूरी में से देते हैं, उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं. अल्लाह इन मज़ाक़ उड़ाने
वालों का मज़ाक़ उड़ाता है और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है. 80 तुम उनके लिए माफ़ी की
दरख़्वास्त करो या न करो, अगर तुम सत्तर मर्तबा (भी) उन्हें माफ़ करने की दरख़्वास्त करोगे तो
अल्लाह उन्हें माफ़ करने वाला नहीं. यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और रसूल का इन्कार किया
और अल्लाह नाफ़रमानों को राह नहीं दिखाता.

81 पीछे रह जाने वाले, अल्लाह के रसूल से पीछे बैठे रहने पर बहुत ख़ुश हुए और उन्हें गिरां
(भारी) गुज़रा कि वे अपने माल और जान से अल्लाह की राह में जिहाद करें. और उन्होंने कहा कि गर्मी
में न निकलो. (ऐ नबी! आप) कह दीजिए कि दोज़ख़ की आग उससे भी ज़्यादा गर्म है, काश उन्हें
समझ होती. 82 पस वे हंसें कम और रोएं ज़्यादा, उसके बदले में जो वे करते थे. 83 पस अगर अल्लाह
तुम्हें उनमें से किसी गिरोह की तरफ़ वापस लाए और वे तुम से जिहाद के लिए निकलने की इजाज़त
माँगें तो कह देना कि तुम मेरे साथ कभी नहीं चलोगे और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ोगे.
तुमने पहली बार भी बैठे रहने को पसंद किया था, पस पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो. 84 और
उनमें से जो कोई मर जाए तो उसपर तुम कभी नमाज़ न पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर खड़े होना.
बेशक उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इन्कार किया और वे इस हाल में मरे कि वे नाफ़रमान थे.

85 और उनके माल और उनकी औलाद तुम्हें तअज्जुब में न डालें. अल्लाह तो बस यह
चाहता है कि उसके ज़रीए से उन्हें दुनिया में अज़ाब दे और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वे

मुन्किर हों (यानी हक़ के इन्कार पर जमे हों). 86 और जब कोई सूरह उतरती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ जिहाद करो तो उनमें के मक़दूर वाले (सामर्थ्यवान) तुम से रुख़सत माँगने लगते हैं और कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिए कि हम यहाँ ठहरने वालों के साथ रह जाएँ. 87 उन्होंने इसको पसंद किया कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएँ. और उनके दिलों पर मुहर कर दी गई, पस वे कुछ नहीं समझते. 88 लेकिन रसूल और वह लोग जो उसके साथ ईमान लाए हैं, उन्होंने अपने माल और जान से जिहाद किया और उन्हीं के लिए हैं ख़ूबियां और वही फ़लाह (सफलता) पाने वाले हैं. 89 उनके लिए अल्लाह ने ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं. उनमें वे हमेशा रहेंगे. यही बड़ी कामयाबी है.

90 देहाती अरबों में से भी बहाना करने वाले आए कि उन्हें इजाज़त मिल जाए और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले, वह बैठे रहे. उनमें से जिन्होंने इन्कार किया उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ेगा. 91 कोई गुनाह कमज़ोरों पर नहीं है और न बीमारों पर और न उनपर जो ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते, मगर वे अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ैरख़ाही करते हैं. (ऐसे) नेकोकारों पर कोई इल्ज़ाम नहीं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. 92 और न उन लोगों पर कोई इल्ज़ाम है कि जब वे तुम्हारे पास आए कि तुम उन्हें सवारी दो. तुमने कहा कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं कि मैं तुम्हें उसपर सवार कर दूँ तो वे इस हाल में वापस हुए कि उनकी आंखों से आंसू जारी थे, इस ग़म में कि उन्हें कुछ मयस्सर नहीं जो वे ख़र्च करें. 93 इल्ज़ाम तो बस उन लोगों पर है जो तुम से इजाज़त माँगते हैं, हालाँकि वे मालदार हैं. वे इसपर राज़ी हो गए कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ (पीछे बैठे) रहें और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी, पस वे नहीं जानते.

पारा – 11 94 तुम जब उनकी तरफ़ पलटोगे तो वे तुम्हारे सामने उज़्र (बहाने) पेश करेंगे. कह दो कि बहाने न बनाओ. हम हरगिज़ तुम्हारी बात न मानेंगे. बेशक अल्लाह ने हमें तुम्हारे हालात बता दिए हैं. अब अल्लाह और रसूल तुम्हारे अमल को देखेंगे. फिर तुम उसकी तरफ़ लौटाए जाओगे जो खुले और छुपे का जानने वाला है, वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे. 95 ये लोग तुम्हारी वापसी पर तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएंगे, ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो (ताकि तुम उन्हें खरीखोटी न सुनाओ). पस तुम उनसे दरगुज़र करो, बेशक वे नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है, बदले में उसके जो वे करते रहे. 96 वे तुम्हारे सामने क़समें खाएंगे कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ. अगर तुम उनसे राज़ी भी हो जाओ तो अल्लाह नाफ़रमान लोगों से राज़ी होने वाला नहीं.

97 देहात वाले कुफ़्र व निफ़ाक़ में ज़्यादा सख़्त हैं और इसी लायक़ हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ उतारा है उसके हुदूद से बेख़बर रहें. और अल्लाह सब कुछ जानने वाला है,

हिकमत वाला है. 98 और देहातियों में ऐसे भी हैं जो ख़ुदा की राह में ख़र्च को एक तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे लिए ज़माने की गर्दिशों के मुंतज़िर हैं. बुरी गर्दिश ख़ुद उन्हीं पर है और अल्लाह सुनने वाला है, जानने वाला है. 99 और देहातियों में वे भी हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह के यहाँ क़ुर्ब (समीपता) का और रसूल के लिए दुआएं लेने का ज़रिया बनाते हैं. हां, बेशक वह उनके लिए क़ुर्ब का ज़रिया है. अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा. यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.

100 और मुहाजिरीन व अंसार में से जो लोग साबिक़ और मुक़द्दम हैं (यानी जिन्होंने सबसे पहले इस्लाम स्वीकार किया) और वे भी जिन्होंने ख़ूबी के साथ उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए. और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. वे उनमें हमेशा रहेंगे. यही है बड़ी कामयाबी. 101 और तुम्हारे गिर्द व पेश जो देहाती हैं उनमें मुनाफ़िक़ (पाखंडी) हैं और मदीना वालों में भी मुनाफ़िक़ हैं. वे निफ़ाक़ (पाखंड) पर जम गए हैं. तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं. हम उन्हें दोहरा अज़ाब देंगे. फिर वे एक अज़ाबे-अज़ीम (महा—यातना) की तरफ़ भेजे जाएँगे.

102 कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपने क़सूरों का एतराफ़ कर लिया है. उन्होंने मिले-जुले अमल किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे. उम्मीद है कि अल्लाह उनपर तवज्जोह करे. बेशक अल्लाह बख़्शने वाला है, मेहरबान है. 103 तुम उनके मालों में से सदक़ा लो, उससे तुम उन्हें पाक करोगे और उनका तज़्किया (मन का शुद्धीकरण) करोगे. और तुम उनके लिए दुआ करो. बेशक तुम्हारी दुआ उनके लिए तस्कीन (शांति) का ज़रिया होगी. अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है. 104 क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने बंदों की तौबा क़बूल करता है. और वही सदक़ों को क़बूल करता है. और अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला है, मेहरबान है. 105 कहो कि अमल करो, अल्लाह और उसका रसूल और अहले-ईमान तुम्हारे अमल को देखेंगे और तुम जल्द उसके पास लौटाए जाओगे जो तमाम खुले और छुपे को जानता है. वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे. 106 कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अभी ख़ुदा का हुक्म आने तक ठहरा हुआ है, या वह उन्हें सज़ा देगा या उनकी तौबा क़बूल करेगा, और अल्लाह जानने वाला व हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

107 और उनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनाई, नुक़सान पहुँचाने के लिए और कुफ़्र के लिए और अहले-ईमान में फूट डालने के लिए और इसलिए कि कमीनगाह (शरण—स्थल) फ़राहम करें उस शख़्स के लिए जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल से लड़ रहा है. और ये लोग क़समें खाएंगे कि हमने तो सिर्फ़ भलाई चाही थी और अल्लाह गवाह है कि वे झूठे हैं. 108 तुम उस इमारत में कभी खड़े न होना, अलबत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद अव्वल दिन से तक़वे (ईश-

भय) पर पड़ी है वह इस लायक़ है कि तुम उसमें खड़े हो. उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसंद करते हैं और अल्लाह पाक रहने वालों को पसंद करता है. 109 क्या वह शख़्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद ख़ुदा के डर पर और ख़ुदा की ख़ुशनुदी पर रखी या वह शख़्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद एक खाई के किनारे पर रखी जो गिरने को है. फिर वह इमारत उसे लेकर जहन्नम की आग में गिर पड़ी. और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता.
110 और यह इमारत जो उन्होंने बनाई, हमेशा उनके दिलों में शक की बुनियाद बनी रहेगी, सिवाय इसके कि उनके दिल ही टुकड़े हो जाएँ (यानी वे अपनी मौत तक ज़ेहनी बोहरान में मुब्तिला रहेंगे). और अल्लाह अलीम व हकीम (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

111 बिलाशुबहा अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जान व उनके माल को ख़रीद लिया है जन्नत के बदले. वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं. फिर मारते हैं और मारे जाते हैं. यह अल्लाह के ज़िम्मे एक सच्चा वादा है, तौरात में और इंजील में और क़ुरआन में. और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करने वाला कौन है. पस तुम ख़ुशियां मनाओ उस मामले पर (यानी उस सौदे पर) जो तुमने अल्लाह से किया है. और यही है सबसे बड़ी कामयाबी.

112 **वे तौबा करने वाले हैं. इबादत करने वाले हैं. हम्द (ईश–प्रशंसा) करने वाले हैं. ख़ुदा की राह में फिरने वाले हैं. रुकूअ करने वाले हैं. सज्दा करने वाले हैं. भलाई का हुक्म देने वाले है. बुराई से रोकने वाले हैं. अल्लाह की हदों का ख़याल रखने वाले हैं. और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दो.**

नोटः– क़ुरआन के मुताबिक़ अल्लाह के मतलूब बंदे ऐसे होते हैं. उनके अंदर यह सारी सिफ़ात होती हैं जिनका यहाँ ज़िक्र हुआ है.

113 नबी को और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं शायां (उचित) नहीं कि मुशरिकों के लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) की दुआ करें, चाहे वे उनके रिश्तेदार ही हों, जबकि उनपर खुल चुका कि ये जहन्नम में जाने वाले लोग हैं.
114 और इब्राहीम का अपने बाप के लिए मग़्फ़िरत की दुआ माँगना सिर्फ़ उस वादे के सबब से था जो उसने उससे कर लिया था. फिर जब उसपर खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे बेताल्लुक़ हो गया. बेशक इब्राहीम बड़ा नर्मदिल और बुर्दबार (उदार) था.
115 और अल्लाह किसी क़ौम को, उसे हिदायत देने के बाद गुमराह नहीं करता जब तक उन्हें साफ़–साफ़ वे चीज़ें बता न दे जिनसे उन्हें बचना है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है.
116 अल्लाह ही की सल्तनत है आसमानों में और ज़मीन में, वह जिलाता है और वही मारता है. और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार.

117 अल्लाह ने नबी पर और मुहाजिरीन व अन्सार पर तवज्जोह फ़रमाई जिन्होंने तंगी के वक़्त में नबी का साथ दिया, बाद इसके कि उनमें से कुछ लोगों के दिल कजी की तरफ़ (पथभ्रष्टता की तरफ़) मायल हो चुके थे. फिर अल्लाह ने उनपर तवज्जोह फ़रमाई. बेशक अल्लाह उनपर मेहरबान है, रहम करने वाला है. 118 और उन तीनों पर भी उसने तवज्जोह फ़रमाई जिनका मामला उठा रखा गया था. यहाँ तक कि जब ज़मीन अपनी वुस्अत के बावजूद उनपर तंग हो गई और वे ख़ुद अपनी जानों से तंग आ गए और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से बचने के लिए ख़ुद अल्लाह के सिवा कोई जाए-पनाह (शरण–स्थल) नहीं. फिर अल्लाह उनकी तरफ़ पलटा, ताकि वे उसकी तरफ़ पलट आएं. बेशक अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला है, रहम करने वाला है.

119 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो. 120 मदीना वालों और अतराफ़ (आसपास) के देहातियों के लिए ज़ेबा न था कि वे अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे बैठे रहें और न यह कि अपनी जान को उसकी जान से अज़ीज़ रखें. यह इसलिए कि जो प्यास और थकान और भूख भी उन्हें ख़ुदा की राह में लाहक़ होती (पहुँचती) है और जो क़दम भी वे मुन्किरों को रंज पहुँचाने वाला उठाते हैं और जो चीज़ भी वे दुश्मन से छीनते हैं, उसके बदले में उनके लिए एक नेकी लिख दी जाती है. अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र (प्रतिफल) ज़ाया नहीं करता. 121 और जो छोटा या बड़ा ख़र्च वे करते हैं और (अल्लाह की राह में) जो रास्ता वह तै करते हैं, वह सब उनके लिए लिख दिया जाता है, ताकि अल्लाह उनके अमल का अच्छे से अच्छा बदला दे.

122 और यह मुमकिन न था कि अहले-ईमान सबके सब निकल खड़े हों. तो ऐसा क्यों न हुआ कि उनके हर गिरोह में से एक हिस्सा निकल कर आता, ताकि वह दीन में समझ पैदा करता और वापस जाकर अपनी क़ौम के लोगों को आगाह (सचेत) करता, ताकि वे भी परहेज़ करने वाले बनते.

123 ऐ ईमान वालो! उन मुन्किरों से जंग करो जो तुम्हारे आस-पास हैं और चाहिए कि वे तुम्हारे अंदर सख़्ती पाएं और जान लो कि अल्लाह डरने वालों के साथ है. 124 और जब कोई सूरह उतरती है तो उनमें से कुछ कहते हैं कि उसने तुम में से किस का ईमान ज़्यादा कर दिया. पस जो ईमान वाले हैं उनका उसने ईमान ज़्यादा कर दिया और वे ख़ुश हो रहे हैं. 125 और जिन लोगों के दिलों में रोग है तो उसने बढ़ा दी उनकी गंदगी पर गंदगी. और वे मरने तक हक़ का इन्कार करते रहे. 126 क्या ये लोग देखते नहीं कि वे हर साल एक बार या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं, फिर भी न तौबा करते हैं और न सबक़ हासिल करते हैं. 127 और जब कोई सूरह उतारी जाती है तो ये लोग एक दूसरे को देखते हैं (और पूछते हैं) कि तुम्हें कोई देखता तो नहीं, फिर चल देते हैं. अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया, इस वजह से कि ये समझ से काम लेने वाले लोग नहीं हैं.

128 तुम्हारे पास एक रसूल आया है जो ख़ुद तुम में से है. तुम्हारा नुक़सान में पड़ना उसपर शाक़ (असह्य) है. वह तुम्हारी भलाई का हरीस (यानी तुम्हारा हितचिंतक) है. ईमान वालों पर निहायत शफ़ीक़ (करुणामय) और मेहरबान है. 129 फिर भी अगर वे मुँह फेरें तो कह दो कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है. उसके सिवा कोई माबूद नहीं. उसी पर मैंने भरोसा किया. और वही मालिक है अर्शे-अज़ीम का.

सूरह-10. यूनुस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़० लाम० रा०. ये पुर-हिकमत (विवेकपूर्ण) किताब की आयतें हैं. 2 क्यों लोगों को इसपर हैरत है कि हमने उन्हीं में से एक शख़्स पर 'वही' की (यानी ईश-संदेश प्रकट किया), कि लोगों को डराओ और जो ईमान लाएँ उन्हें ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनके लिए उनके रब के पास सच्चा मर्तबा है. मुन्किरों ने कहा कि यह शख़्स तो खुला जादूगर है.

3 बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों (चरणों) में पैदा किया, फिर वह अर्श पर क़ायम हुआ (यानी सारी कायनात का कंट्रोल अपने पास लिया). वही मामलात का इंतज़ाम करता है. उसकी इजाज़त के बग़ैर कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं. यही अल्लाह तुम्हारा रब है, पस तुम उसी की इबादत करो, क्या तुम सोचते नहीं. 4 उसी की तरफ़ तुम सबको लौट कर जाना है, यह अल्लाह का पक्का वादा है. बेशक वही पहली बार पैदा करता है, फिर वह दुबारा पैदा करेगा, यह इसलिए कि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उन्हें इंसाफ़ के साथ बदला दे. और जिन्होंने इन्कार किया उनके इन्कार के बदले उनके लिए खौलता पानी और दर्दनाक अज़ाब है.

5 अल्लाह ही है जिसने सूरज को चमकता बनाया और चांद को रोशनी दी और उसकी मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं, ताकि तुम बरसों (वर्षों) का शुमार और हिसाब मालूम करो. अल्लाह ने ये सब कुछ बेमक़सद नहीं बनाया है. वह निशानियाँ खोल कर बयान करता है, उनके लिए जो समझ रखते हैं. 6 यक़ीनन रात और दिन के उलट फेर में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उनमें, उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो डरते हैं.

7 बेशक जो लोग हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते और दुनिया की ज़िंदगी पर राज़ी और मुतमइन हैं और जो हमारी निशानियों से बेपरवा हैं, 8 उनका ठिकाना जहन्नम होगा, इस सबब से कि जो वे करते थे. 9 बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, अल्लाह उनके ईमान की बदौलत उन्हें पहुँचा देगा (मंज़िले-मक़सूद पर). उनके नीचे नहरें बहती होंगी नेमत के बाग़ों में. 10 उसमें उनका क़ौल होगा, ऐ अल्लाह, तू पाक है! और मुलाक़ात उनकी सलाम होगी.

और उनकी आख़िरी बात यह होगी कि सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का.

11 अगर अल्लाह लोगों के लिए अज़ाब उसी तरह जल्दी पहुँचा दे जिस तरह वह उनके साथ रहमत में जल्दी करता है तो उनकी मुद्दत ख़त्म कर दी गई होती. लेकिन हम उन लोगों को जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते, उनकी सरकशी में भटकने के लिए छोड़ देते हैं. 12 और इंसान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह खड़े और बैठे और लेटे हमें पुकारता है. फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ़ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है गोया उसने कभी अपने किसी बुरे वक़्त पर हमें पुकारा ही न था. इस तरह हद से गुज़र जाने वालों के लिए उनके आमाल ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं.

13 और हमने तुम से पहले क़ौमों को हलाक किया, जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया. और उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलों के साथ आए और वे ईमान लाने वाले न बने. हम ऐसा ही बदला देते हैं मुजरिम लोगों को. 14 फिर हमने उनके बाद तुम्हें मुल्क में जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया, ताकि हम देखें कि तुम कैसा अमल करते हो.

15 और जब उन्हें हमारी खुली हुई आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने का खटका नहीं है, वे कहते हैं कि इसके सिवा कोई और क़ुरआन लाओ या इसको बदल दो. कहो कि मेरा यह काम नहीं कि मैं अपने जी से इसको बदल दूँ. मैं तो सिर्फ़ उस 'वही' (ईश-संदेश) की पैरवी करता हूँ जो मेरे पास आता है. अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ. 16 (ऐ नबी!) कह दीजिए कि अगर अल्लाह चाहता तो मैं इसको तुम्हें न सुनाता और न अल्लाह इससे तुम्हें बाख़बर करता. मैं इससे पहले तुम्हारे दरमियान एक उम्र बसर कर चुका हूँ, फिर क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते, 17 उससे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए. यक़ीनन मुजरिमों को फ़लाह हासिल नहीं होती.

18 और वे अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नुक़सान पहुँचा सकें और न नफ़ा पहुँचा सकें. और वे कहते हैं कि ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं. कहो, क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर देते हो जो उसे आसमानों और ज़मीन में मालूम नहीं. वह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक करते हैं. 19 और लोग एक ही उम्मत थे. फिर उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया. और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बात पहले से न ठहर चुकी होती तो उनके दरमियान उस अम्र (मामले) का फ़ैसला कर दिया जाता जिसमें वे इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं.

20 और वे कहते हैं कि नबी पर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई, कहो कि ग़ैब की ख़बर तो अल्लाह ही को है. तुम लोग इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने

वालों में से हूँ. 21 और जब कोई तकलीफ़ पड़ने के बाद हम लोगों को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वे फ़ौरन हमारी निशानियों के मामले में हीले बनाने लगते हैं. कहो कि ख़ुदा अपने हीलों में उनसे भी ज़्यादा तेज़ है. यक़ीनन हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी हीलाबाज़ियों को लिख रहे हैं.

22 वह अल्लाह ही है जो तुम्हें ख़ुश्की और तरी में चलाता है. चुनाँचे जब तुम कश्ती में होते हो और कश्तियां लोगों को लेकर मुवाफ़िक़ हवा से चल रही होती हैं और लोग उससे ख़ुश होते हैं कि यकायक तेज़ व तूफ़ानी हवा आती है और उनपर हर जानिब से मौजें उठने लगती हैं और वे गुमान कर लेते हैं कि हम घिर गए. उस वक़्त वे अपने दीन को अल्लाह ही के लिए ख़ालिस करके उसे पुकारने लगते हैं कि अगर तूने हमें इससे नजात दे दी तो यक़ीनन हम तेरे शुक्रगुज़ार बंदे बनेंगे. 23 फिर जब वह उन्हें नजात दे देता है तो फ़ौरन ही ज़मीन में नाहक़ की सरकशी करने लगते हैं. ऐ लोगो! तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही ख़िलाफ़ है, दुनिया की ज़िंदगी का नफ़ा उठा लो, फिर तुम्हें हमारी तरफ़ लौट कर आना है, फिर हम बता देंगे जो कुछ तुम कर रहे थे.

24 दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल ऐसी है जैसे पानी कि हमने उसे आसमान से बरसाया तो ज़मीन का सब्ज़ा ख़ूब निकला जिसे आदमी खाते हैं और जिसे जानवर खाते हैं. यहाँ तक कि जब ज़मीन पूरी रौनक़ पर आ गई और संवर उठी और ज़मीन वालों ने गुमान कर लिया कि अब यह हमारे क़ाबू में है तो अचानक उसपर हमारा हुक्म रात को या दिन को आ गया, फिर हमने उसे काट कर ढेर कर दिया गोया कल यहाँ कुछ था ही नहीं. इस तरह हम निशानियाँ खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं.

25 और अल्लाह सलामती (शांति) के घर की तरफ़ बुलाता है और वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है. 26 जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और उससे मज़ीद (अधिक) भी. और उनके चेहरों पर न स्याही छाएगी और न ज़िल्लत. यही जन्नत वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे. 27 और जिन्होंने बुराइयाँ कमाईं तो बुराई का बदला उसके बराबर है. और उनपर रुसवाई छाई हुई होगी. कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न होगा. गोया कि उनके चेहरे अंधेरी रात के टुकड़ों से ढाँक दिए गए हैं. ऐसे ही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे.

28 और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे, फिर हम शिर्क करने वालों से कहेंगे कि ठहरो तुम भी और तुम्हारे बनाए हुए शरीक भी. फिर हम उनके दरमियान जुदाई डाल देंगे और उनके शरीक कहेंगे कि तुम हमारी इबादत तो नहीं करते थे. 29 अल्लाह हमारे दरमियान गवाही के लिए काफ़ी है. हम तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे. 30 उस वक़्त हर शख़्स अपने उस अमल से दो चार होगा जो उसने किया था और लोग अल्लाह अपने मालिके-हक़ीक़ी की तरफ़ लौटाए जाएँगे और जो झूठ उन्होंने गढ़े थे, वे सब उनसे जाते रहेंगे.

31 कहो कि कौन तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है. या कौन है जो कान पर और आंखों पर इख़्तियार रखता है. और कौन बेजान में से जानदार को और जानदार में से बेजान को निकालता है. और कौन मामलात का इंतज़ाम कर रहा है. वे कहेंगे कि अल्लाह. कहो कि फिर क्या तुम डरते नहीं. 32 पस वही अल्लाह तुम्हारा हक़ीक़ी परवरदिगार (पालनहार) है. तौफ़ीक़ के बाद भटकने के सिवा और क्या है, तुम किधर फिरे जाते हो, 33 इसी तरह तेरे रब की बात सरकशी करने वालों के हक़ में पूरी हो चुकी है कि वे ईमान नहीं लाएँगे.

34 कहो, क्या तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई है जो पहली बार पैदा करता हो, फिर वह दुबारा भी पैदा करे. कहो, अल्लाह ही पहली बार भी पैदा करता है, फिर वही दुबारा भी पैदा करेगा. फिर तुम कहाँ भटके जाते हो. 35 कहो, क्या तुम्हारे शरीकों में कोई है जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता हो, कह दो कि अल्लाह ही हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है. फिर जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है, वह पैरवी किए जाने का मुस्तहिक़ है या वह जिसे ख़ुद ही रास्ता न मिलता हो, बल्कि उसे रास्ता बताया जाए. तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा फ़ैसला करते हो. 36 उनमें से अकसर सिर्फ़ गुमान की पैरवी कर रहे हैं. और गुमान हक़ बात में कुछ भी काम नहीं देता. अल्लाह को ख़ूब मालूम है जो कुछ वे करते हैं.

37 और यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा कोई इसको बना ले. बल्कि यह तसदीक़ (पुष्टि) है उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की जो इसके पहले से मौजूद हैं. और किताब की तफ़सील है, इसमें कोई शक नहीं कि यह ख़ुदावंदे-आलम की तरफ़ से है. 38 क्या लोग कहते हैं कि इस शख़्स ने इसको गढ़ लिया है. कहो कि तुम इसकी मानिंद कोई सूरह ले आओ. और अल्लाह के सिवा तुम जिसे बुला सको, बुला लो, अगर तुम सच्चे हो. 39 बल्कि ये लोग उस चीज़ को झुठला रहे हैं जो उनके इल्म के इहाते में नहीं आयी. और जिसकी हक़ीक़त अभी उनपर नहीं खुली. इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया जो इनसे पहले गुज़रे हैं, पस देखो कि ज़ालिमों का अंजाम क्या हुआ.

40 और उनमें वे भी हैं जो क़ुरआन पर ईमान ले आएंगे और वे भी हैं जो उसपर ईमान नहीं लाएँगे. और तेरा रब मुफ़्सिदों (उपद्रवियों) को ख़ूब जानता है. 41 और अगर वे तुम्हें झुठलाते हैं तो कह दो कि मेरा अमल मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए. तुम उससे बरी हो जो मैं करता हूँ और मैं उससे बरी हूँ जो तुम कर रहे हो. 42 और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे, जबकि वे समझ से काम न ले रहे हों. 43 और उनमें से कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ़ देखते हैं तो क्या तुम अंधों को रास्ता दिखाओगे, अगरचे वे देख न रहे हों. 44 अल्लाह लोगों पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं करता, मगर लोग ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं.

45 और जिस दिन अल्लाह उन्हें जमा करेगा, (उन्हें लगेगा) गोया कि वे बस दिन की एक घड़ी दुनिया में थे. वे एक दूसरे को पहचानेंगे. बेशक सख़्त घाटे में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वे राहेरास्त (सन्मार्ग) पर न आए. 46 हम तुम्हें उसका कोई हिस्सा दिखा दें जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं या तुम्हें वफ़ात (मौत) दे दें, बहरहाल उन्हें हमारी ही तरफ़ लौटना है, फिर अल्लाह गवाह है उसपर जो कुछ वे कर रहे हैं. 47 और हर उम्मत के लिए एक रसूल है. फिर जब उनका रसूल आ जाता है तो उनके दरमियान इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है और उनपर कोई ज़ुल्म नहीं होता.

48 और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो. 49 कहो, मैं अपने वास्ते भी बुरे और भले का मालिक नहीं, मगर जो अल्लाह चाहे. हर उम्मत के लिए एक वक़्त है. जब उनका वक़्त आ जाता है तो फिर न वे एक घड़ी पीछे होते और न आगे. 50 कहो कि बताओ, अगर अल्लाह का अज़ाब तुम पर रात को आ पड़े या दिन को आ जाए तो मुजरिम लोग उससे (बचाव के लिए) क्या कर लेंगे, जिसकी वे जल्दी मचाए हुए हैं. 51 फिर क्या जब अज़ाब वाक़ेअ (घटित) हो चुकेगा तब उसपर यक़ीन करोगे? (तब कहा जाएगा) अब क़ायल हुए? (पहले तो) तुम इसको लाने की माँग करते थे, 52 फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा कि अब हमेशा का अज़ाब चखो. यह उसी का बदला मिल रहा है जो कुछ तुम कमाते थे.

53 और वे तुम से पूछते हैं कि क्या यह बात सच है. कहो कि हां मेरे रब की क़सम यह सच है और तुम उसे (अपने ऊपर से) टाल न सकोगे. 54 और अगर हर ज़ालिम के पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है तो वह उसे फ़िदये में (आर्थिक दंड के तौर पर) दे देना चाहेगा और जब वे अज़ाब को देखेंगे तो अपने दिल में पछताएंगे. और उनके दरमियान इंसाफ़ से फ़ैसला कर दिया जाएगा और उनपर ज़ुल्म न होगा. 55 याद रखो जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह का है, याद रखो अल्लाह का वादा सच्चा है, मगर अकसर लोग नहीं जानते. 56 वही ज़िंदा करता है और वही मारता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे.

57 ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से नसीहत आ गई और उसके लिए शिफ़ा (निदान) जो सीनों में होती है और अहले-ईमान के लिए हिदायत व रहमत. 58 कहो कि यह अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत से है. अब चाहिए कि लोग ख़ुश हों, यह उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं. 59 कहो, यह बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रिज़्क़ उतारा था, फिर तुमने उसमें से कुछ को हराम ठहराया और कुछ को हलाल. कहो, क्या अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया है या तुम अल्लाह पर झूठ लगा रहे हो. 60 और क़यामत के दिन के बारे में उन लोगों का क्या ख़याल है जो अल्लाह पर झूठ लगा रहे हैं. बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाने

वाला है, मगर अकसर लोग शुक्र अदा नहीं करते.

61 और तुम जिस हाल में भी हो और क़ुरआन में से जो हिस्सा भी सुना रहे हो और तुम लोग जो काम भी करते हो, हम तुम्हारे ऊपर गवाह रहते हैं जिस वक़्त तुम उसमें मशग़ूल होते हो. और तेरे रब से ज़र्रा बराबर भी कोई चीज़ छुपी हुई नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में और न उससे छोटी न बड़ी, मगर वह एक वाज़ेह किताब में है. 62 सुन लो, अल्लाह के दोस्तों के लिए न कोई ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे. 63 ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और डरते रहे, 64 उनके लिए ख़ुशख़बरी है दुनिया की ज़िंदगी में भी और आख़िरत में भी, अल्लाह की बातों में कोई तब्दीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है. 65 और तुम्हें उनकी बात ग़म में न डाले. ज़ोर सब अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला, जानने वाला है.

66 सुनो, जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं सब अल्लाह ही के हैं. और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं, वे किस चीज़ की पैरवी कर रहे हैं, वे सिर्फ़ गुमान की पैरवी कर रहे हैं और वे महज़ अटकल दौड़ा रहे हैं. 67 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई, ताकि तुम सुकून हासिल करो. और दिन को रोशन बनाया. बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं.

68 कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है. वह पाक है, बेनियाज़ (निस्पृह) है. उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है. तुम्हारे पास इस बात की कोई दलील नहीं. क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात गढ़ते हो जिसका तुम इल्म नहीं रखते. 69 कहो, जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधते हैं, वे फ़लाह नहीं पाएंगे. 70 उनके लिए बस दुनिया में थोड़ा फ़ायदा उठा लेना है. फिर हमारी ही तरफ़ उनका लौटना है. फिर उनको हम उनके इस इन्कार के बदले सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे.

71 और उनको नूह का हाल सुनाओ. जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अगर मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों से नसीहत करना तुम पर गिरां (भार) हो गया है तो मैंने अल्लाह पर भरोसा किया. तुम अपना मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला कर लो और अपने शरीकों को भी साथ ले लो, तुम्हें अपने फ़ैसले में कोई शुबहा बाक़ी न रहे. फिर तुम लोग मेरे साथ जो कुछ करना चाहते हो, कर गुज़रो और मुझको मोहलत न दो. 72 अगर तुम एराज़ करोगे (मुँह मोड़ोगे) तो मैंने तुम से कोई मज़दूरी नहीं मांगी है. मेरी मज़दूरी तो अल्लाह के ज़िम्मे है. और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं फ़रमांबरदारों में से रहूं. 73 फिर उन्होंने उसे झुठला दिया तो हमने नूह को और जो लोग उसके साथ कश्ती में थे नजात दी और उन्हें जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया. और उन लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था. देखो कि क्या अंजाम हुआ उनका जिन्हें डराया गया था.

74 फिर हमने नूह के बाद कितने रसूल भेजे. वे उनके पास खुली-खुली दलीलें लेकर

आए, मगर वे उसपर ईमान लाने वाले न बने जिसे पहले झुठला चुके थे. इसी तरह हम हद से निकल जाने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं.

75 फिर हमने उनके बाद मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास अपनी निशानियाँ देकर भेजा, मगर उन्होंने घमंड किया और वे मुजरिम लोग थे. 76 फिर जब उनके पास हमारी तरफ़ से सच्ची बात पहुँची तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है. 77 मूसा ने कहा कि क्या तुम हक़ को जादू कहते हो, जबकि वह तुम्हारे पास आ चुका है. क्या यह जादू है, हालाँकि जादू वाले कभी फ़लाह नहीं पाते. 78 उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें उस रास्ते से फेर दो जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है, और इस मुल्क में तुम दोनों की बड़ाई क़ायम हो जाए, और हम कभी तुम दोनों की बात मानने वाले नहीं हैं.

79 और फ़िरऔन ने कहा कि तमाम माहिर जादूगरों को मेरे पास ले आओ. 80 जब जादूगर आए तो मूसा ने उनसे कहा कि जो कुछ तुम्हें डालना है डालो. 81 फिर जब जादूगरों ने डाला तो मूसा ने कहा कि जो कुछ तुम लाए हो वह जादू है. बेशक अल्लाह इसको बातिल (नष्ट) कर देगा, अल्लाह यक़ीनन मुफ़्सिदों (उपद्रवियों) के काम को सुधरने नहीं देता. 82 और अल्लाह अपने हुक्म से हक़ को हक़ कर दिखाता है, चाहे मुजरिमों को वह कितना ही नागवार हो.

83 फिर मूसा को उसकी क़ौम में से चंद नौजवानों के सिवा किसी ने न माना, फ़िरऔन के डर से और ख़ुद अपनी क़ौम के बड़े लोगों के डर से कि कहीं वे उन्हें किसी फ़ितने में न डाल दे, बेशक फ़िरऔन ज़मीन में ग़लबा (प्रभुत्व) रखता था और वह उन लोगों में से था जो हद से गुज़र जाते हैं. 84 और मूसा ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम वाक़ई फ़रमांबरदार हो. 85 उन्होंने कहा, हमने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिम लोगों के लिए फ़ितना न बना. 86 और अपनी रहमत से हमें मुन्किर लोगों से नजात दे.

87 और हमने मूसा और उसके भाई की तरफ़ 'वही' की (यानी ईश-संदेश भेजा), कि अपनी क़ौम के लिए मिस्र में कुछ घर मुक़र्रर कर लो और अपने उन घरों को क़िबला बनाओ और नमाज़ क़ायम करो. और अहले-ईमान को ख़ुशख़बरी दे दो.

88 और मूसा ने कहा, ऐ हमारे रब! तूने फ़िरऔन को और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िंदगी में रौनक़ और माल दिया है. ऐ हमारे रब! जिसकी वजह से वे लोगों को तेरी राह से भटका रहे हैं. ऐ हमारे रब! उनके माल को ग़ारत कर दे और उनके दिलों को सख़्त कर दे कि वे ईमान न लाएँ, यहाँ तक कि दर्दनाक अज़ाब को देख लें. 89 फ़रमाया, तुम दोनों की दुआ क़बूल की गई. अब तुम दोनों जमे रहो और उन लोगों की राह की पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते.

90 और हमने बनी इसराईल को समुंदर पार करा दिया तो फ़िरऔन और उसके लश्कर ने

उनका पीछा किया. सरकशी और ज़्यादती की ग़रज़ से. यहाँ तक कि जब फ़िरऔन डूबने लगा तो उसने कहा कि मैं ईमान लाया कि कोई माबूद (पूज्य) नहीं, मगर वह जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए. और मैं उसके फ़रमांबरदारों में हूँ. 91 (कहा गया,) क्या अब (ईमान लाता है), इससे पहले तू नाफ़रमानी करता रहा और तू फ़साद बरपा करने वालों में से था. 92 पस आज हम तेरे बदन को बचाएंगे, ताकि तू अपने बाद वालों के लिए निशानी बने और बेशक बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल रहते हैं.

93 और हमने बनी इसराईल को अच्छा ठिकाना दिया और उन्हें सुथरी चीज़ें खाने के लिए दीं. फिर उन्होंने इख़्तिलाफ़ (मतभेद) नहीं किया, मगर उस वक़्त, जबकि इल्म उनके पास आ चुका था. यक़ीनन तेरा रब क़यामत के दिन उनके दरमियान उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे इख़्तिलाफ़ करते रहे.

94 पस अगर तुम्हें उस चीज़ के बारे में शक है जो हमने तुम्हारी तरफ़ उतारी है तो उन लोगों से पूछ लो जो तुम से पहले से किताब पढ़ रहे हैं. बेशक यह तुम पर हक़ आया है, तुम्हारे रब की तरफ़ से, पस तुम शक करने वालों में से न बनो. 95 और तुम उन लोगों में शामिल न होना जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया है, वरना तुम नुक़सान उठाने वालों में से होंगे.

96 बेशक जिन लोगों पर तेरे रब की बात पूरी हो चुकी है, वे ईमान नहीं लाएँगे, 97 चाहे उनके पास सारी निशानियाँ आ जाएँ, जब तक कि वे दर्दनाक अज़ाब को सामने आता न देख लें. 98 पस क्यों न हुआ कि कोई बस्ती ईमान लाती कि उसका ईमान उसे नफ़ा देता, यूनुस की क़ौम के सिवा. जब वे ईमान लाए तो हमने उनसे दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई का अज़ाब टाल दिया और उन्हें एक मुद्दत तक बहरामंद (सुखी-सम्पन्न) होने का मौक़ा दिया.

99 **और अगर तेरा रब चाहता तो ज़मीन पर जितने लोग हैं सबके सब ईमान ले आते. फिर क्या तुम लोगों को मजबूर करोगे कि वे मोमिन हो जाएँ.**

नोटः- ख़ुदा इस दुनिया में इंसानों का इम्तिहान ले रहा है. उसने इस मक़सद से लोगों को आज़ादी दे रखी है. अब इंसान के लिए यह choice है कि वह चाहे तो हक़ के रास्ते को इख़्तियार करे या ग़ैरे-हक़ के रास्ते को. जब ख़ुद ख़ुदा लोगों को इस बात के लिए मजबूर नहीं कर रहा है कि वे हक़ को मान लें, अगर वह चाहता तो सबको हक़ क़बूल करने पर मजबूर कर देता. अब दाई का काम सिर्फ़ यह है कि लोगों तक हक़ का पैग़ाम पहुंचा दें. उसके बाद यह मदू के ऊपर है कि वह चाहे तो हक़ को क़बूल करे और चाहे तो उसका इन्कार करे.

100 **और किसी शख़्स के लिए मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर ईमान ला सके. और अल्लाह उन लोगों पर गंदगी डाल देता है जो अक़्ल से काम नहीं लेते.**

नोटः– इन्सान को अल्लाह तआला ने जो सबसे बड़ी चीज़ अता की है, वह अक़्ल है. अगर इन्सान हक़ को जानने के लिए इस सबसे बड़ी नियामत का इस्तेमाल न करे, तो वह हक़ की मारफ़त से महरूम रहेगा. मारफ़ते-हक़ को पाने के लिए अल्लाह का जो उसूल है, उस उसूल के मुताबिक़ ही किसी इन्सान को हक़ की मारफ़त हासिल हो सकती है. हक़ की मारफ़त हासिल करने में अक़्ल का बहुत बड़ा रोल है.

101 कहो कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है उसे देखो. लेकिन निशानियाँ और डरावे उन लोगों को फ़ायदा नहीं पहुँचाते जो ईमान नहीं लाते. 102 वे तो बस उस तरह के दिन का इंतज़ार कर रहे हैं जिस तरह के दिन उनसे पहले गुज़रे हुए लोगों को पेश आए. कहो, इंतज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हूँ 103 फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को और उन्हें जो ईमान लाए. इसी तरह हमारा ज़िम्मा है कि हम ईमान वालों को बचा लेंगे.

104 कहो, ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन के मुतआल्लिक़ शक में हो तो मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी इबादत तुम करते हो अल्लाह के सिवा. बल्कि मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें वफ़ात (मौत) देता है और मुझको हुक्म मिला है कि मैं ईमान वालों में से बनूँ. 105 और यह कि अपना रुख़ यकसू (एकाग्र) होकर दीने(-हक़) की तरफ़ रखूँ. और मुशरिकों में से न बनूँ.
106 और अल्लाह के अलावा उन्हें न पुकारो जो तुम्हें न नफ़ा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान. फिर अगर तुम ऐसा करोगे तो यक़ीनन तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे. 107 और अगर अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ़ में पकड़ ले तो उसके सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर सके. और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल को कोई रोकने वाला नहीं. वह अपना फ़ज़्ल अपने बंदों में से जिसे चाहता है देता है और वह बख़्शने वाला मेहरबान है.

108 **कहो, ऐ लोगो! तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास हक़ आ गया है. जो हिदायत क़बूल करेगा वह अपने ही लिए करेगा और जो भटकेगा तो उसका वबाल उसी पर आएगा**, और मैं तुम्हारे ऊपर ज़िम्मेदार नहीं हूँ.

नोटः– ख़ुदा की तरफ़ से क़ुरआन की शकल में क़यामत तक के इंसानों के लिए सच्चाई को पाने का इंतिज़ाम हो चुका है. अब क़ुरआन के मानने वालों का काम यह है कि वे इस सच्चाई को सारे इंसानों तक पहुंचा दें. दाई पर सिर्फ़ पहुँचाने की ज़िम्मेदारी है, पहुँचाने के बाद मदू के जानिब से जो रिस्पॉन्स होगा, उसके लिए दाई ज़िम्मेदार नहीं.

109 और तुम उसकी पैरवी करो जो तुम पर 'वही' की जाती है (यानी जो ईश-संदेश तुम्हारी तरफ़ भेजा जाता है उसका अनुसरण करो) और सब्र करो, यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है.

सूरह-11. हूद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़० लाम० रा०. यह किताब है जिसकी आयतें पहले मोहकम (दृढ़) की गईं, फिर एक दाना व ख़बीर (बुद्धिमान एवं सर्वज्ञानी) हस्ती की तरफ़ से उनकी तफ़सील की गई 2 कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करो. मैं तुम्हें उसकी तरफ़ से डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ. 3 और यह कि तुम अपने रब से माफ़ी चाहो और उसकी तरफ़ पलट आओ, वह तुम्हें एक मुद्दत तक बरतवाएगा अच्छा बरतवाना, और ज़्यादा (इनाम) के हर मुस्तहिक़ को अपनी तरफ़ से ज़्यादा अता करेगा. और अगर तुम फिर जाओ तो मैं तुम्हारे हक़ में एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ. 4 तुम सबको अल्लाह की तरफ़ पलटना है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है.

5 देखो, ये लोग अपने सीनों को लपेटते हैं, ताकि उससे छुप जाएँ. ख़बरदार, जब वे कपड़ों से अपने आपको ढाँपते हैं, अल्लाह जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं. वह दिलों की बात तक को जानने वाला है. **पारा – 12** 6 और ज़मीन पर कोई चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो. और वह जानता है जहाँ कोई ठहरता है और जहाँ वह सौंपा जाता है. सब कुछ एक खुली किताब में मौजूद है.

7 और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छ: दिनों में पैदा किया. और उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था, ताकि तुम्हें आज़माए कि कौन तुम में अच्छा काम करता है. और अगर तुम कहो कि मरने के बाद तुम लोग उठाए जाओगे तो मुन्किरीन कहते हैं, यह तो खुला हुआ जादू है. 8 और अगर हम कुछ मुद्दत तक उनकी सज़ा को रोक दें तो कहते हैं कि क्या चीज़ उसे रोके हुए है. आगाह, जिस दिन वह अज़ाब उनपर आ पड़ेगा तो वह उनसे टाला न जाएगा और उन्हें घेर लेगी वह चीज़ जिसका वे मज़ाक़ उड़ा रहे थे.

9 और अगर हम इंसान को अपनी किसी रहमत से नवाज़ते हैं फिर उससे उसे महरूम कर देते हैं तो वह मायूस और नाशुक्रा बन जाता है. 10 और अगर किसी तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुँची थी, उसे हम नेमत से नवाज़ते हैं तो वह कहता है कि सारी मुसीबतें मुझ से दूर हो गईं, वह इतराने वाला और अकड़ने वाला बन जाता है. 11 मगर जो लोग सब्र करने वाले और नेक अमल करने वाले हैं, उनके लिए बख़्शिश (क्षमा) है और बड़ा अज्र (प्रतिफल) है.

12 कहीं ऐसा न हो कि तुम उस चीज़ का कुछ हिस्सा छोड़ दो जो तुम्हारी तरफ़ 'वही' की गई (जो ईश-संदेश प्रकट किया गया) है. और न तुम इस बात पर दिलतंग हो कि वे कहते हैं कि उसपर (यानी पैग़ंबर पर) कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा गया या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया. तुम तो सिर्फ़ डराने वाले हो और अल्लाह हर चीज़ का ज़िम्मेदार है. 13 क्या वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने इस किताब को गढ़ लिया है. कहो, तुम भी ऐसी ही दस सूरतें बना कर ले आओ और अल्लाह के सिवा जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो. 14 पस अगर वे तुम्हारा कहा पूरा न कर सकें तो जान लो कि यह अल्लाह के इल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, फिर क्या तुम हुक्म मानते हो.

15 जो लोग दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत (वैभव) चाहते हैं, हम उनके आमाल का बदला दुनिया ही में दे देते हैं. और उसमें उनके साथ कोई कमी नहीं की जाती. 16 यही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में आग के सिवा कुछ नहीं है. उन्होंने दुनिया में जो कुछ बनाया था, वह बर्बाद हुआ और उनका सारा किया-धरा अकारत (ज़ाया) होकर रह गया.

17 भला एक शख़्स जो अपने रब की तरफ़ से एक दलील पर है, इसके बाद अल्लाह की तरफ़ से उसके लिए एक गवाह भी आ गया, और इससे पहले मूसा की किताब रहनुमा और रहमत की हैसियत से मौजूद थी, ऐसे ही लोग उसपर ईमान लाते हैं और जमाअतों में से जो कोई उसका इन्कार करे तो उसके वादे की जगह आग है. पस तुम इसके बारे में किसी शक में न पड़ो. यह हक़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से, मगर अकसर लोग नहीं मानते.

18 और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े. ऐसे लोग अपने रब के सामने पेश होंगे और गवाही देने वाले कहेंगे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था. सुनो, अल्लाह की लानत है ज़ालिमों के ऊपर. 19 उन लोगों के ऊपर जो अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोकते हैं और उसमें कजी (टेढ़) ढूंढते हैं. यही लोग आख़िरत के मुन्किर (यानी आख़िरत का इन्कार करने वाले) हैं. 20 वे लोग ज़मीन में अल्लाह को बेबस करने वाले नहीं और न अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार है, उनपर दोहरा अज़ाब होगा. वे न सुन सकते थे और न देखते थे. 21 ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला. और वे सब कुछ उनसे खोया गया जो उन्होंने गढ़ रखा था. 22 इसमें शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में (यानी मृत्यु-पश्चात जीवन में) सबसे ज़्यादा घाटे में रहेंगे.

23 जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए और अपने रब के सामने आजिज़ी की (समर्पण किया), ऐसे ही लोग जन्नत वाले हैं. वे उसमें हमेशा रहेंगे. 24 इन दोनों फ़रीक़ों (पक्षों) की मिसाल ऐसी है जैसे एक अंधा और बहरा हो और दूसरा देखने और सुनने वाला. क्या

ये दोनों यकसां (समान) हो जाएँगे. क्या तुम ग़ौर नहीं करते.

25 और हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि मैं तुम्हें खुला हुआ डराने वाला हूँ. 26 यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो. मैं तुम पर एक दर्दनाक अज़ाब के दिन का अंदेशा रखता हूँ. 27 उसकी क़ौम के सरदारों ने कहा, जिन्होंने इन्कार किया था कि हम तो तुम्हें बस अपने जैसा एक आदमी देखते हैं. और हम नहीं देखते कि कोई तुम्हारे ताबे हुआ हो सिवाय उनके जो हम में पस्त लोग हैं, बेसमझे बूझे. और हम नहीं देखते कि तुम्हें हमारे ऊपर कुछ बड़ाई हासिल है, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा ख़याल करते हैं.

28 नूह ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक रोशन दलील पर हूँ और उसने मुझ पर अपने पास से रहमत भेजी है, मगर वह तुम्हें नज़र न आयी तो क्या हम उसे तुम पर चिपका सकते हैं, जबकि तुम उससे बेज़ार (खिन्न) हो. 29 और ऐ मेरी क़ौम! मैं उसपर तुम से कुछ माल नहीं माँगता. मेरा अज्र (प्रतिफल) तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है और मैं हरगिज़ उन्हें अपने से दूर करने वाला नहीं जो ईमान लाए हैं. उन लोगों को अपने रब से मिलना है. मगर मैं देखता हूँ, तुम लोग जहालत में मुब्तिला हो. 30 और ऐ मेरी क़ौम! अगर मैं उन लोगों को धुत्कार दूँ तो ख़ुदा के मुक़ाबले में कौन मेरी मदद करेगा. क्या तुम ग़ौर नहीं करते. 31 और मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं. और न मैं ग़ैब की ख़बर रखता हूँ. और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ. और मैं यह भी नहीं कह सकता कि जो लोग तुम्हारी निगाहों में हक़ीर (तुच्छ) हैं, उन्हें अल्लाह कोई भलाई नहीं देगा. अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ उनके दिलों में है. अगर मैं ऐसा कहूँ तो मैं ही ज़ालिम हूँगा.

32 उन्होंने कहा, ऐ नूह! तुमने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा कर लिया. और वह चीज़ ले आओ जिसका तुम हमसे वादा करते रहे हो, अगर तुम सच्चे हो. 33 नूह ने कहा, उसे तो तुम्हारे ऊपर अल्लाह ही लाएगा अगर वह चाहेगा और तुम उसके क़ाबू से बाहर न जा सकोगे. 34 और मेरी नसीहत तुम्हें फ़ायदा नहीं देगी, अगर मैं तुम्हें नसीहत करना चाहूँ, जबकि अल्लाह यह चाहता हो कि वह तुम्हें गुमराह करे. वही तुम्हारा रब है और उसी की तरफ़ तुम्हें लौट कर जाना है.

35 क्या वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने इसे गढ़ लिया है. कहो कि अगर मैंने इसको गढ़ा है तो मेरा जुर्म मेरे ऊपर है और जो जुर्म तुम कर रहे हो, उससे मैं बरी हूँ.

36 और नूह की तरफ़ 'वही' की गई (ईश-संदेश प्रकट किया गया) कि अब तुम्हारी क़ौम में से कोई ईमान नहीं लाएगा सिवा उसके जो ईमान ला चुका. पस तुम उन कामों पर ग़मगीन न होना जो वे कर रहे हैं. 37 और हमारे रूबरू और हमारे हुक्म से तुम कश्ती बनाओ और ज़ालिमों के हक़ में मुझ से बात न करो, बेशक ये लोग ग़र्क़ होंगे. 38 और नूह कश्ती बनाने लगा. और

जब उसकी क़ौम का कोई सरदार उसपर गुज़रता तो वह उसकी हंसी उड़ाता, उन्होंने कहा, अगर
तुम हम पर हँसते हो तो हम भी तुम पर हंसेंगे. 39 तुम जल्द जान लोगे कि वे कौन हैं जिनपर वह
अज़ाब आता है जो उसे रुसवा कर दे और उसपर वह अज़ाब उतरता है जो दायमी है.

40 यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुँचा और तूफ़ान उबल पड़ा. हमने नूह से कहा कि
हर क़िस्म के जानवरों का एक-एक जोड़ा (नर व मादा) कश्ती में रख लो और अपने घर वालों
को भी, सिवा उन लोगों के जिनकी बाबत पहले कहा जा चुका है और सब ईमान वालों को भी.
और थोड़े ही लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाए थे. 41 और नूह ने कहा कि कश्ती में सवार हो
जाओ, अल्लाह के नाम से इसका चलना है और इसका ठहरना भी. बेशक मेरा रब बख़्शने वाला
मेहरबान है. 42 और कश्ती पहाड़ जैसी मौजों के दरमियान उन्हें लेकर चलने लगी. और नूह ने
अपने बेटे को पुकारा जो उससे अलग था. ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ सवार हो जा और मुन्किरों के
साथ मत रह. 43 उसने कहा, मैं किसी पहाड़ की पनाह ले लूंगा जो मुझे पानी से बचा लेगा. नूह ने
कहा कि आज कोई अल्लाह के हुक्म से बचाने वाला नहीं, मगर वह जिस पर अल्लाह रहम करे.
और दोनों के दरमियान मौज हायल (बाधित) हो गई और वह डूबने वालों में शामिल हो गया. 44
और कहा गया कि ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान! थम जा. और पानी सुखा
दिया गया. और मामले का फ़ैसला हो गया और कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई और कह दिया
गया कि दूर हो ज़ालिमों की क़ौम.

45 और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे रब! मेरा बेटा मेरे घर वालों में है,
और बेशक तेरा वादा सच्चा है. और तू सबसे बड़ा हाकिम है. 46 ख़ुदा ने कहा, ऐ नूह! वह तेरे
घर वालों में नहीं. उसके काम ख़राब हैं. पस मुझ से उस चीज़ के बारे में सवाल न करो जिसका
तुम्हें इल्म नहीं. मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि तुम जाहिलों में से न बनो. 47 नूह ने कहा, ऐ मेरे
रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि तुझसे वह चीज़ मांगूं जिसका मुझे इल्म नहीं. और अगर तू मुझे
माफ़ न करे और मुझ पर रहम न फ़रमाए तो मैं बर्बाद हो जाऊँगा.

48 कहा गया, ऐ नूह! उतरो, हमारी तरफ़ से सलामती के साथ और बरकतों के साथ,
(सलामती व बरकतें हों) तुम पर और उन गिरोहों पर जो तुम्हारे साथ हैं. और (उनसे ज़हूर में आने
वाले) गिरोह को हम फ़ायदा देंगे, फिर उनमें (जो ज़ालिम होंगे) हमारी तरफ़ से उन्हें एक दर्दनाक
अज़ाब पकड़ लेगा. 49 ये ग़ैब की ख़बरें हैं जिन को हम तुम्हारी तरफ़ 'वही' कर रहे हैं (प्रकट
कर रहे हैं). इससे पहले न तुम उन्हें जानते थे और न तुम्हारी क़ौम. पस सब्र करो बेशक आख़िरी
अंजाम डरने वालों के लिए है.

50 और आद की तरफ़, हमने उनके भाई हूद को भेजा. उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम!

अल्लाह की इबादत करो. उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं. तुमने महज़ झूठ गढ़ रखे हैं.
51 ऐ मेरी क़ौम! मैं इसपर तुम से कोई अज्र (प्रतिफल) नहीं माँगता. मेरा अज्र तो उसपर है जिसने मुझे पैदा किया है. क्या तुम नहीं समझते.
52 और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से माफ़ी चाहो, फिर उसकी तरफ़ पलटो. वह तुम्हारे ऊपर ख़ूब बारिशें बरसाएगा. और तुम्हारी क़ुव्वत पर मज़ीद क़ुव्वत का इज़ाफ़ा करेगा. और तुम मुजरिम होकर रूगर्दानी (अवहेलना) न करो.

53 उन्होंने कहा, ऐ हूद! तुम हमारे पास कोई खुली निशानी लेकर नहीं आए हो, और हम तुम्हारे कहने से अपने माबूदों (पूज्यों) को छोड़ने वाले नहीं हैं. और हम हरगिज़ तुम्हें मानने वाले नहीं हैं.
54 हम तो यही कहेंगे कि तुम्हारे ऊपर हमारे माबूदों में से किसी की मार पड़ गई है. हूद ने कहा, मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं बरी हूँ उनसे जिन को तुम शरीक करते हो
55 उसके सिवा. पस तुम सब मिलकर मेरे ख़िलाफ़ तदबीर (युक्ति) करो, फिर मुझे मोहलत न दो.
56 मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी. कोई जानदार ऐसा नहीं जिसकी चोटी उसके हाथ में न हो. बेशक मेरा रब सीधी राह पर है.

57 अगर तुम एराज़ (उपेक्षा) करते हो तो **मैंने तुम्हें वह पैग़ाम पहुँचा दिया जिसे देकर मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया था.** और मेरा रब तुम्हारी जगह तुम्हारे सिवा किसी और गिरोह को जानशीन (ख़लीफ़ा, उत्तराधिकारी) बनाएगा. तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे. बेशक मेरा रब हर चीज़ पर निगहबान है.

नोटः– दाई का काम यह है कि मदू तक पूरी ख़ैरख़ाही के साथ अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दे और मदू को यह मौक़ा दे कि चाहे तो वह उसे क़बूल करे या उससे एराज़ करे.

58 और जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने अपनी रहमत से बचा लिया हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे. और हमने उन्हें एक सख़्त अज़ाब से बचा लिया.
59 और ये आद थे कि उन्होंने अपने रब की निशानियों का इन्कार किया. और उसके रसूलों को नहीं माना और हर सरकश और मुख़ालिफ़ की बात की इत्तेबाअ (अनुसरण) की.
60 और उनके पीछे लानत लगा दी गई इस दुनिया में और क़यामत के दिन. सुन लो, आद ने अपने रब का इन्कार किया. सुन लो, दूरी है आद के लिए जो हूद की क़ौम थी.

61 और समूद की तरफ़ हमने उनके भाई सालेह को भेजा. उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो. उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. उसी ने तुम्हें ज़मीन से बनाया, और उसमें तुम्हें आबाद किया. पस माफ़ी चाहो, फिर उसकी तरफ़ रुजूअ करो. बेशक मेरा रब क़रीब है, क़बूल करने वाला है. 62 उन्होंने कहा, ऐ सालेह! इससे पहले हमें तुम से उम्मीद थी. क्या तुम हमें उनकी इबादत से रोकते हो जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते थे. और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो उसके बारे में हमें सख़्त शुबहा है और हम बड़े ख़लजान (दुविधा) में हैं. 63 उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम! बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह (सुस्पष्ट) दलील पर हूँ और उसने मुझे अपने पास से रहमत दी है तो मुझे ख़ुदा से कौन बचाएगा, अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूँ. (तुम जिसकी तरफ़ मुझे बुलाते हो उससे) तुम कुछ नहीं बढ़ाओगे मेरा सिवाय नुक़सान के.

64 और ऐ मेरी क़ौम! यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है. पस इसे छोड़ दो कि वह अल्लाह की ज़मीन में खाए. और इसे कोई तकलीफ़ न पहुँचाओ वरना बहुत जल्द तुम्हें अज़ाब पकड़ लेगा. 65 फिर उन्होंने उसके पांव काट डाले. तब सालेह ने कहा कि तीन दिन और अपने घरों में फ़ायदा उठा लो. यह एक वादा है जो झूठा न होगा. 66 फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने अपनी रहमत से सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से (भी महफ़ूज़ रखा). बेशक तेरा रब ही क़वी (शक्तिमान) और ज़बरदस्त है. 67 और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उन्हें एक हौलनाक आवाज़ ने पकड़ लिया फिर सुबह को वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए. 68 जैसे कि वे कभी उनमें बसे ही नहीं. सुनो, समूद ने अपने रब से कुफ़्र किया. सुनो, फिटकार है समूद के लिए.

69 और इब्राहीम के पास हमारे फ़रिश्ते ख़ुशख़बरी लेकर आए. कहा, तुम पर सलामती हो. इब्राहीम ने कहा, तुम पर भी सलामती हो. फिर देर न गुज़री कि इब्राहीम एक भुना हुआ बछड़ा ले आया. 70 फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं बढ़ रहे हैं तो उसे (कुछ) खटक हुई और दिल में उनसे डरा. उन्होंने कहा कि डरो नहीं, हम लूत की क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं. 71 और इब्राहीम की बीवी खड़ी थी, वह हंस पड़ी. पस हमने उसे इस्हाक़ की ख़ुशख़बरी दी और इस्हाक़ के आगे याक़ूब की. 72 उसने कहा, ऐ ख़राबी! क्या मैं (अब) बच्चा जनूंगी, हालाँकि मैं बुढ़िया हूँ और यह मेरा ख़ाविंद भी बूढ़ा है. यह तो एक अजीब बात है! 73 फ़रिश्तों ने कहा, क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर तअज्जुब करती हो. इब्राहीम के घर वालो, तुम पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें हैं. बेशक अल्लाह निहायत क़ाबिले तारीफ़ और बड़ी शान वाला है.

74 फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ़ दूर हुआ और उसे ख़ुशख़बरी मिली तो वह हमसे क़ौमे-

लूत के बारे में झगड़ने लगा. 75 बेशक इब्राहीम बड़ा हलीम (उदार) और नर्म दिल था और रुजूअ करने वाला था. 76 ऐ इब्राहीम! उसे छोड़ो. तुम्हारे रब का हुक्म आ चुका है और उनपर एक ऐसा अज़ाब आने वाला है जो लौटाया नहीं जा सकता.

77 और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास पहुँचे तो वह घबराया और उनके आने से दिल तंग हुआ. उसने कहा, आज का दिन बड़ा सख़्त है. 78 और उसकी क़ौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आए. और वे पहले से बुरे काम कर रहे थे. लूत ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! ये मेरी बेटियाँ हैं, वे तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा हैं. पस तुम अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के सामने रुसवा न करो. क्या तुम में कोई भला आदमी नहीं है. 79 उन्होंने कहा, तुम जानते हो कि हमें तुम्हारी बेटियों से कुछ ग़रज़ नहीं, और तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं.

80 लूत ने कहा, काश मेरे पास तुम से मुक़ाबले की क़ुव्वत होती या मैं जा बैठता किसी मुस्तहकम पनाह में (यानी अत्यंत मज़बूत आश्रयस्थान में). 81 फ़रिश्तों ने कहा, ऐ लूत! हम तेरे रब के भेजे हुए हैं. वे हरगिज़ तुम तक न पहुँच सकेंगे. पस तुम अपने लोगों को लेकर कुछ रात रहे निकल जाओ. और तुम में से कोई मुड़कर न देखे. (और अपने घर वालों को साथ लो,) सिवाय तुम्हारी औरत के. उसपर वही कुछ गुज़रने वाला है जो उन लोगों पर गुज़रेगा. उनके लिए सुबह का वक़्त मुक़र्रर है, क्या सुबह क़रीब नहीं. 82 फिर जब हमारा हुक्म आया तो हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उसपर पत्थर बरसाए कंकर के, तह–ब–तह, 83 तुम्हारे रब के पास से निशान लगाए हुए. और वह बस्ती उन ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं.

84 और मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा. उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. और नाप और तोल में कमी न करो. मैं तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूँ, और मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ. 85 और ऐ मेरी क़ौम! नाप और तोल को पूरा करो इंसाफ़ के साथ. और लोगों को उनकी चीज़ें घटाकर न दो. और ज़मीन पर फ़साद न मचाओ. 86 जो अल्लाह का दिया बचा रहे वह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम मोमिन हो. और मैं तुम्हारे ऊपर निगहबान (दारोग़ा) नहीं हूँ.

87 उन्होंने कहा, ऐ शुऐब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह सिखाती है कि हम उन चीज़ों को छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप–दादा करते थे. या अपने माल में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ तसर्रुफ़ (उपभोग) करना छोड़ दें. बस तुम ही तो एक दानिशमंद (प्रबुद्ध) और नेक चलन आदमी हो.

88 शुऐब ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! बताओ, अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह दलील पर हूँ और उसने अपनी जानिब से मुझे अच्छा रिज़्क़ भी दिया. और मैं नहीं चाहता कि मैं ख़ुद वही काम करूँ जिससे मैं तुम्हें रोक रहा हूँ. मैं तो सिर्फ़ इसलाह (सुधार) चाहता हूँ, जहाँ तक हो

सके. और मुझे तौफ़ीक़ तो अल्लाह ही से मिलेगी. उसी पर मैंने भरोसा किया है. और उसी की
तरफ़ मैं रुजूअ करता हूँ. 89 और ऐ मेरी क़ौम! ऐसा न हो कि मेरा विरोध करके तुम पर वह
आफ़त आ पड़े जो क़ौमे-नूह या क़ौमे-हूद या क़ौमे-सालेह पर आयी थी, और लूत की क़ौम तो
तुम से दूर भी नहीं. 90 और अपने रब से माफ़ी माँगो, फिर उसकी तरफ़ पलट आओ. बेशक मेरा
रब मेहरबान और मुहब्बत वाला है.

91 उन्होंने कहा, ऐ शुऐब! जो तुम कहते हो उसका बहुत सा हिस्सा हमारी समझ में नहीं
आता. और हम तो देखते हैं कि तुम हम में कमज़ोर हो. और अगर तुम्हारी बिरादरी न होती तो हम
तुम्हें संगसार कर देते (पत्थरों से मार डालते). और तुम हम पर कुछ भारी नहीं. 92 शुऐब ने कहा,
ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरी बिरादरी (मेरा क़बिला) तुम पर अल्लाह से ज़्यादा भारी है? और अल्लाह को
तुमने पसेपुश्त (पीछे) डाल दिया. बेशक मेरे रब के क़ाबू में है जो कुछ तुम करते हो. 93 और ऐ
मेरी क़ौम! तुम अपने तरीक़े पर काम किए जाओ और मैं अपने तरीक़े पर करता रहूँगा. जल्द ही
तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किसके ऊपर रुसवा करने वाला अज़ाब आता है और कौन झूठा है.
और इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हूँ.

94 और जब हमारा हुक्म आया, हमने शुऐब को और जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी
रहमत से बचा लिया. और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था, उन्हें कड़क ने पकड़ लिया. पस वे
अपने घरों में औंधे पड़े रह गए. 95 गोया कि कभी उनमें बसे ही न थे. सुनो, फिटकार है मदयन
वालों के लिए, जैसे फिटकार हुई थी समूद पर.

96 और हमने मूसा को अपनी निशानियों और वाज़ेह सनद (स्पष्ट प्रमाण) के साथ भेजा,
97 फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़. फिर वे फ़िरऔन के हुक्म पर चले, हालाँकि फ़िरऔन
का हुक्म रास्ती (भलाई) पर न था. 98 क़यामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे होगा और उन्हें
आग पर पहुँचाएगा. और कैसा बुरा घाट है जिस पर वे पहुँचेंगे. 99 और इस दुनिया में उनके पीछे
लानत लगा दी गई और क़यामत के दिन भी. कैसा बुरा इनाम है जो उन्हें मिला.

100 ये बस्तियों के कुछ हालात हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं. उनमें से कुछ अब तक क़ायम
हैं और कुछ मिट गईं. 101 और हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया. बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर
ज़ुल्म किया. फिर जब तेरे रब का हुक्म आ गया तो उनके माबूद (पूज्य) उनके कुछ काम न आए
जिन को वे अल्लाह के सिवा पुकारते थे. और उन्होंने उनके हक़ में बरबादी के सिवा और कुछ नहीं
बढ़ाया.

102 और तेरे रब की पकड़ ऐसी ही है, जबकि वह बस्तियों को उनके ज़ुल्म पर पकड़ता है.
बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक और सख़्त है. 103 इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो

आख़िरत के अज़ाब से डरें. वह एक ऐसा दिन है जिसमें सब लोग जमा होंगे. और वह हाज़िरी का दिन होगा. 104 और हम उसे एक मुद्दत के लिए टाल रहे हैं जो मुक़र्रर है. 105 जब वह दिन आएगा तो कोई जान उसकी इजाज़त के बग़ैर कलाम न कर सकेगी. पस उनमें कुछ बदबख़्त (बदनसीब) होंगे. और कुछ नेकबख़्त (ख़ुशनसीब).

106 पस जो लोग बदबख़्त हैं, वे आग में होंगे. वे वहाँ (सज़ा के चलते) चीख़ेंगे और चिल्लाएंगे. 107 वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, मगर जो तेरा रब चाहे. बेशक तेरा रब कर डालता है जो चाहता है. 108 और जो लोग नेकबख़्त हैं तो वे जन्नत में होंगे, वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, मगर जो तेरा रब चाहे, (तेरे रब की) बख़्शिश है बेइंतहा. 109 पस तू उन चीज़ों से शक में न रह, जिनकी ये लोग इबादत कर रहे हैं. ये तो बस उसी तरह इबादत कर रहे हैं जिस तरह उनसे पहले उनके बाप-दादा इबादत कर रहे थे. और हम उनका हिस्सा उन्हें पूरा-पूरा देंगे बग़ैर किसी कमी के.

110 और हमने मूसा को किताब दी. फिर उसमें फूट पड़ गई. और अगर तेरे रब की तरफ़ से पहले ही एक बात न आ चुकी होती तो उनके दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता. और उन्हें इसमें शुबहा है कि वह मुतमइन (संतुष्ट) नहीं होने देता 111 और यक़ीनन तेरा रब हर एक को उसके आमाल का पूरा बदला देगा. वह बाख़बर है उससे जो वे कर रहे हैं.

112 पस तुम जमे रहो जैसा कि तुम्हें हुक्म हुआ है. और वे भी जिन्होंने तुम्हारे साथ तौबा की है और हद से न बढ़ो, बेशक वह देख रहा है जो तुम करते हो. 113 और उनकी तरफ़ न झुको जिन्होंने ज़ुल्म किया, वरना तुम्हें आग पकड़ लेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई मददगार नहीं, फिर तुम कहीं मदद न पाओगे 114 और नमाज़ क़ायम करो दिन के दोनों हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में. बेशक नेकियाँ दूर करती हैं बुराइयों को. यह याददिहानी (अनुस्मरण) है याददिहानी हासिल करने वालों के लिए 115 और सब्र करो, अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ाया (नष्ट) नहीं करता.

116 पस क्यों न ऐसा हुआ कि तुम से पहले की क़ौमों में ऐसे अहले-ख़ैर होते जो लोगों को ज़मीन में फ़साद करने से रोकते. ऐसे थोड़े लोग निकले जिन को हमने उनमें से बचा लिया. और ज़ालिम लोग तो उसी ऐश में पड़े रहे जो उन्हें मिला था और वे मुजरिम थे. 117 और तेरा रब ऐसा नहीं कि वह बस्तियों को नाहक़ तबाह कर दे, हालाँकि उसके बाशिंदे इसलाह (सुधार) करने वाले हों.

118 और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक ही उम्मत बना देता, मगर वे हमेशा इख़्तिलाफ़ (मत-भिन्नता) में रहेंगे 119 सिवा उनके जिनपर तेरा रब रहम फ़रमाए. और उसने इसीलिए उन्हें पैदा किया है. और तेरे रब की बात पूरी हुई कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से

इकट्ठे भर दूँगा.

120 और हम रसूलों के अहवाल से सब चीज़ तुम्हें सुना रहे हैं. जिससे तुम्हारे दिल को मज़बूत करें और इसके ज़रीए तुम्हारे पास हक़ आया है और इसमें मोमिनों के लिए नसीहत और याददिहानी (reminder) है. 121 और जो लोग ईमान नहीं लाए उनसे कहो कि तुम अपने तरीक़े पर (अमल) करते रहो और हम अपने तरीक़े पर (अमल) कर रहे हैं. 122 और इंतज़ार करो, हम भी मुंतज़िर हैं. 123 और आसमानों और ज़मीन की छुपी बात अल्लाह के पास है और वही तमाम मामलों का मरजाअ है (यानी तमाम मामलात उसी की तरफ़ पलटने वाले हैं). पस तुम उसकी इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम कर रहे हो.

सूरह-12. यूसुफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़० लाम० रा०. ये वाज़ेह (स्पष्ट) किताब की आयतें हैं. 2 हमने इसे अरबी क़ुरआन बनाकर उतारा है, ताकि तुम समझो. 3 हम तुम्हें बेहतरीन सरगुज़िश्त (क़िस्सा) सुनाते हैं इस क़ुरआन की बदौलत जो हमने तुम्हारी तरफ़ 'वही' किया (प्रकट किया). इससे पहले बेशक तुम बेख़बरों में थे.

4 जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा कि अब्बाजान मैंने ख़्वाब में ग्यारह सितारे और सूरज व चांद देखे हैं. मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सज्दा कर रहे हैं. 5 उसके बाप ने कहा कि ऐ मेरे बेटे! तुम अपना यह ख़्वाब अपने भाइयों को नहीं सुनाना कि वे तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई साज़िश करने लगें. बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है. 6 और इसी तरह तुम्हारा रब तुम्हें मुन्तख़ब करेगा और तुम्हें बातों की हक़ीक़त तक पहुँचना सिखाएगा और तुम पर और आले-याक़ूब पर अपनी नेमत पूरी करेगा जिस तरह वह इससे पहले तुम्हारे अज्दाद (यानी तुम्हारे पूर्वज) इब्राहीम और इस्हाक़ पर अपनी नेमत पूरी कर चुका है. यक़ीनन तुम्हारा रब अलीम व हकीम (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

7 हक़ीक़त यह है कि यूसुफ़ और उसके भाइयों में पूछने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं. 8 जब उसके भाइयों ने आपस में कहा कि यूसुफ़ और उसका भाई हमारे बाप को हमसे ज़्यादा महबूब हैं. हालाँकि हम एक पूरा जत्था हैं. यक़ीनन हमारा बाप एक खुली हुई ग़लती में मुब्तिला है. 9 यूसुफ़ को क़तल कर दो या उसे किसी जगह फेंक दो, ताकि तुम्हारे बाप की तवज्जोह सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जाए. और उसके बाद तुम बिल्कुल ठीक हो जाना. 10 उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ़ को क़तल न करो. अगर तुम कुछ करने ही वाले हो तो उसे किसी अंधे कुवें में डाल दो. कोई राह चलता क़ाफ़िला उसे निकाल ले जाएगा.

11 उन्होंने अपने बाप से कहा, ऐ हमारे बाप! क्या बात है कि आप यूसुफ़ के मामले में हम पर भरोसा नहीं करते. हालाँकि हम तो उसके ख़ैरख़ाह हैं. 12 कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए, खाए और खेले, और हम उसके निगहबान हैं. 13 बाप ने कहा, मैं इससे ग़मगीन होता हूँ कि तुम उसे ले जाओ और मुझे अंदेशा है कि उसे कोई भेड़िया खा जाए, जबकि तुम उससे ग़ाफ़िल हो. 14 उन्होंने कहा कि अगर उसे भेड़िया खा गया, जबकि हम एक पूरी जमात हैं, तो हम बड़े ख़सारे (घाटे) वाले साबित होंगे.

15 फिर जब वे उसे ले गए और यह तै कर लिया कि उसे एक अंधे कुवें में डाल दें और हमने यूसुफ़ को 'वही' की (हमारा संदेश भेजा), कि तू उन्हें उनका यह काम जताएगा और वे तुझे न जानेंगे 16 और वे शाम को अपने बाप के पास रोते हुए आए. 17 उन्होंने कहा, ऐ हमारे बाप! हम दौड़ का मुक़ाबला करने लगे और यूसुफ़ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया. फिर उसे भेड़िया खा गया. और आप हमारी बात का यक़ीन नहीं करेंगे, चाहे हम सच्चे हों. 18 और वे यूसुफ़ की क़मीज़ पर झूठा ख़ून लगाकर ले आए. बाप ने कहा, नहीं, बल्कि तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हारे लिए एक बात बना दी है. अब सब्र ही बेहतर है. और जो बात तुम ज़ाहिर कर रहे हो उसपर अल्लाह ही से मदद माँगता हूँ.

19 और एक क़ाफ़िला आया तो उन्होंने अपना पानी भरने वाला भेजा. उसने अपना डोल लटकाया. उसने कहा, ख़ुशख़बरी हो, यह तो एक लड़का है. और उसे तिजारत का माल समझ कर महफ़ूज़ कर लिया. और अल्लाह ख़ूब जानता था जो वे कर रहे थे. 20 और उन्होंने उसे थोड़ी सी क़ीमत चंद दिरहम के एवज़ बेच दिया. और वे उससे बेरग़बत (उदासीन) थे.

21 और अहले-मिस्र में से जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा उसने अपनी बीवी से कहा कि इसे अच्छी तरह रखो. उम्मीद है कि वह हमारे लिए मुफ़ीद हो या हम उसे बेटा बना लें. और इस तरह हमने यूसुफ़ को उस मुल्क में जगह दी. और ताकि हम उसे बातों की तावील (यानी अर्थ निष्पत्ति करना) सिखाएं. और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब रहता है (यानी अपना काम अंजाम तक पहुँचाने पर प्रभुत्वशाली है), लेकिन अकसर लोग नहीं जानते. 22 और जब वह अपनी पुख़्तगी को पहुँचा, हमने उसे हुक्म और इल्म अता किया. और नेकी करने वालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं.

23 और यूसुफ़ जिस औरत के घर में था, वह उसे फुसलाने लगी और एक रोज़ दरवाज़े बंद कर दिए और बोली कि आ जा. यूसुफ़ ने कहा, ख़ुदा की पनाह. वह मेरा आक़ा है, उसने मुझे अच्छी तरह रखा है. बेशक ज़ालिम लोग कभी फ़लाह नहीं पाते. 24 और औरत ने उसका इरादा कर लिया और वह भी उसका इरादा करता, अगर वह अपने रब की बुरहान (स्पष्ट–प्रमाण) न देख लेता. ऐसा इसलिए हुआ, ताकि हम उससे बुराई और बेहयाई को दूर कर दें. बेशक वह हमारे चुने

हुए बंदों में से था.

25 और दोनों दरवाज़े की तरफ़ भागे. और औरत ने यूसुफ़ का कुरता पीछे से फाड़ दिया. और दोनों ने उसके शौहर को दरवाज़े पर पाया. औरत बोली जो तेरी घरवाली के साथ बुराई का इरादा करे उसकी सज़ा इसके सिवा क्या है कि उसे क़ैद किया जाए या उसे सख़्त अज़ाब दिया जाए. 26 यूसुफ़ ने कहा कि इसी ने मुझे फुसलाने की कोशिश की. और औरत के कुनबे वालों में से एक शख़्स ने गवाही दी कि अगर उसका कुरता आगे से फटा हुआ हो तो औरत सच्ची है और वह झूठा है. 27 और अगर उसका कुरता पीछे से फटा हुआ हो तो औरत झूठी है और वह सच्चा है. 28 फिर जब अज़ीज़ ने देखा कि उसका कुरता पीछे से फटा हुआ है तो उसने कहा कि बेशक यह तुम औरतों की चाल है. और तुम्हारी चालें बहुत बड़ी (यानी पुरफ़रेब) होती हैं. 29 यूसुफ़, इस मामले को नज़रंदाज़ करो. और ऐ औरत! तू अपनी ग़लती की माफ़ी माँग. बेशक तू ही ख़ताकार थी.

30 और शहर की औरतें कहने लगीं कि अज़ीज़ की बीवी अपने नौजवान ग़ुलाम के पीछे पड़ी हुई है. वह उसकी मुहब्बत में फ़रेफ़्ता है (यानी प्रेमिका हो गई है). हम देखते हैं कि वह खुली हुई ग़लती पर है. 31 फिर जब उसने उनका फ़रेब सुना तो उसने उन्हें बुला भेजा. और उनके लिए एक मजलिस तैयार की और उनमें से हर एक को एक–एक छुरी दी और यूसुफ़ से कहा कि तुम उनके सामने आओ. फिर जब औरतों ने उसे देखा तो वे दंग रह गईं. और उन्होंने अपने हाथ काट डाले. और उन्होंने कहा, पाक है अल्लाह! यह आदमी नहीं है, यह तो कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है. 32 उसने कहा, यह वही है जिसके बारे में तुम मुझे मलामत कर रही थीं और मैंने इसे रिझाने (यानी मोहित करने) की कोशिश की थी, मगर वह बच गया. और अगर उसने वह नहीं किया जो मैं उससे कह रही हूँ तो वह क़ैद में पड़ेगा और ज़रूर बेइज़्ज़त होगा. 33 यूसुफ़ ने कहा, ऐ मेरे रब! क़ैदख़ाना मुझे उस चीज़ से ज़्यादा पसंद है जिसकी तरफ़ ये मुझे बुला रही हैं. और अगर तूने उनके फ़रेब को मुझ से दफ़ा नहीं किया तो मैं उनकी तरफ़ मायल हो जाऊँगा और जाहिलों में से हो जाऊँगा. 34 पस उसके रब ने उसकी दुआ क़बूल कर ली और उनके फ़रेब को उससे दफ़ा कर दिया. बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है.

35 फिर निशानियाँ देख लेने के बाद उन लोगों की समझ में आया कि एक मुद्दत के लिए इसको क़ैद कर दें. 36 और क़ैदख़ाने में उसके साथ दो और जवान दाख़िल हुए. उनमें से एक ने (एक रोज़) कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ और दूसरे ने कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूँ जिसमें से चिड़ियाँ खा रही हैं. हमें इसकी ताबीर (अर्थ) बताओ. हम देखते हैं कि तुम नेक लोगों में से हो.

37 यूसुफ़ ने कहा, जो खाना तुम्हें मिलता है उसके आने से पहले मैं तुम्हें इन ख़्वाबों की ताबीर बता दूँगा. यह उस इल्म में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है. मैंने उन लोगों के मज़हब को छोड़ा जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वे लोग आख़िरत के मुन्किर (यानी मृत्यु–पश्चात जीवन का इन्कार करने वाले) हैं 38 और मैंने अपने बुज़ुर्गों इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब के मज़हब की पैरवी की. हमें यह हक़ नहीं कि हम किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक ठहराएं. यह अल्लाह का फ़ज़्ल है हमारे ऊपर और सब लोगों के ऊपर, मगर अकसर लोग शुक्र नहीं करते.

39 **ऐ मेरे जेल के साथियो! क्या जुदा–जुदा कई माबूद (पूज्य) बेहतर हैं या अल्लाह अकेला ज़बरदस्त.**

नोटः– हज़रत यूसुफ़ (अ.स.) के इस वाक़ये में हमें यह सबक़ मिलता है कि जो भी इंसान हमारे contact में आए, उसे हम ख़ुदा की रहमत के साये में लाने की कोशिश करें. और जो भी और जहाँ भी मौक़ा मिले, हमें उस मौक़े को दावत के हक़ में इस्तेमाल करना चाहिए.

40 तुम उसके सिवा नहीं पूजते हो, मगर कुछ नामों को जो तुमने और तुम्हारे बाप–दादा ने रख लिए हैं. अल्लाह ने इसकी कोई सनद नहीं उतारी. इक़्तेदार (प्रभुसत्ता) सिर्फ़ अल्लाह के लिए है. उसने हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो. यही सीधा दीन है. मगर बहुत लोग नहीं जानते.

41 ऐ मेरे क़ैदख़ाने के साथियो! तुम में से एक अपने आक़ा को शराब पिलाएगा. और जो दूसरा है उसे सूली दी जाएगी. फिर परिंदे उसके सर में से खाएंगे. उस अम्र (मामला) का फ़ैसला हो गया जिस अम्र के बारे में तुम पूछ रहे थे. 42 और यूसुफ़ ने उस शख़्स से कहा, जिसके बारे में उसने गुमान किया था कि वह बच जाएगा, कि अपने आक़ा के पास मेरा ज़िक्र करना. फिर शैतान ने उसे अपने आक़ा से ज़िक्र करना भुला दिया. पस वह क़ैदख़ाने में कई साल पड़ा रहा.

43 और बादशाह ने कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और दूसरी सात सूखी, ऐ दरबार वालो! मेरे ख़्वाब की ताबीर मुझे बताओ, अगर तुम ख़्वाब की ताबीर देते हो. 44 वे बोले ये ख़याली ख़्वाब हैं. और हमें ऐसे ख़्वाबों की ताबीर मालूम नहीं. 45 उन दो क़ैदियों में से जो शख़्स बच गया था और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया, उसने कहा कि मैं तुम लोगों को इसकी ताबीर बताऊँगा, पस मुझे (यूसुफ़ के पास) जाने दो.

46 (फिर वह यूसुफ़ के पास पहुंचा और कहा,) यूसुफ़ ऐ सच्चे! मुझे इस ख़्वाब का मतलब

बता कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं. और सात बालें हरी हैं और सात सूखी. ताकि मैं उन लोगों के पास जाऊँ, ताकि वे जान लें. 47 यूसुफ़ ने कहा कि तुम सात साल तक बराबर खेती करोगे. पस जो फ़सल तुम काटो उसे उसकी बालियों में छोड़ दो, मगर थोड़ा सा जो तुम खाओ. 48 फिर उसके बाद सात सख़्त साल आएंगे. उस ज़माने में वह ग़ल्ला खा लिया जाएगा जो तुम उस वक़्त के लिए जमा करोगे, सिवाय थोड़े के जो तुम महफ़ूज़ कर लोगे. 49 फिर उसके बाद एक साल आएगा जिसमें लोगों पर मेंह बरसेगा. और वे उसमें रस निचोड़ेंगे.

50 और बादशाह ने कहा कि उसे मेरे पास लाओ. फिर जब क़ासिद (संदेशवाहक) यूसुफ़ के पास आया तो यूसुफ़ ने कहा कि तुम अपने आक़ा के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि उन औरतों का क्या मामला है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे. मेरा रब तो उनके फ़रेब से ख़ूब वाक़िफ़ है. 51 बादशाह ने (उन औरतों से) पूछा, तुम्हारा क्या माजरा है, जब तुमने यूसुफ़ को फुसलाने की कोशिश की थी. उन्होंने कहा कि पाक है अल्लाह! हमने उसमें कुछ बुराई नहीं पाई. अज़ीज़ की बीवी ने कहा, अब हक़ खुल गया. मैंने ही उसे फुसलाने की कोशिश की थी और बिलाशुबहा वह सच्चा है.

52 यह इसलिए कि (अज़ीज़े-मिस्र) यह जान ले कि मैंने दरपर्दा (यानी उसकी ग़ैर-हाज़िरी में) उसकी ख़यानत नहीं की. और बेशक अल्लाह ख़यानत (विश्वासघात) करने वालों की चाल चलने नहीं देता. **पारा – 13** 53 और मैं अपने नफ़्स को बरी नहीं करता. नफ़्स (मन) तो बदी ही सिखाता है, मगर यह कि मेरा रब जिसपर रहम फ़रमाए. बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है.

54 और बादशाह ने कहा, उसे मेरे पास लाओ. मैं उसे ख़ास अपने लिए रखूंगा. फिर जब यूसुफ़ ने उससे बात की तो बादशाह ने कहा, आज से तुम हमारे यहाँ मुअज़्ज़ज़ और मोअतमद (सम्माननीय और विश्वसनीय) हुए. 55 यूसुफ़ ने कहा, मुझे मुल्क के ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर दो. मैं निगहबान हूँ और जानने वाला हूँ. 56 और इस तरह हमने यूसुफ़ को मुल्क में बाइख़्तियार बना दिया. वह उसमें जहाँ चाहे जगह बनाए. हम जिस पर चाहें अपनी इनायत मुतवज्जह कर देते हैं. और हम नेकी करने वालों का अज्र ज़ाया (नष्ट) नहीं करते. 57 और आख़िरत का अज्र (प्रतिफल) कहीं ज़्यादा बढ़कर है, ईमान और तक़वा (ईश–भय) वालों के लिए.

58 और यूसुफ़ के भाई मिस्र आए फिर उसके पास पहुँचे, पस यूसुफ़ ने उन्हें पहचान लिया. और उन्होंने यूसुफ़ को नहीं पहचाना. 59 और जब उसने उनका सामान तैयार कर दिया तो कहा कि अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास ले आना. तुम देखते नहीं हो कि मैं ग़ल्ला भी पूरा नाप कर

देता हूँ और बेहतरीन मेज़बानी करने वाला भी हूँ. 60 और अगर तुम उसे मेरे पास न लाए तो न मेरे पास तुम्हारे लिए ग़ल्ला है और न तुम मेरे पास आना. 61 उन्होंने कहा कि हम उसके बारे में उसके बाप को राज़ी करने की कोशिश करेंगे और हमें यह काम करना है.

62 और उसने अपने कारिंदों से कहा कि उनका माल उनके असबाब में रख दो, ताकि जब वे अपने घर पहुँचें तो उसे पहचान लें, शायद वे फिर आएं. 63 फिर जब वे अपने बाप के पास लौटे तो कहा कि ऐ बाप! हमसे ग़ल्ला रोक दिया गया, पस हमारे भाई (बिनयामीन) को हमारे साथ जाने दे कि हम ग़ल्ला लाएँ और हम उसके निगहबान हैं. 64 याक़ूब ने कहा, क्या मैं इसके बारे में तुम्हारा वैसा ही एतबार करूँ जैसा इससे पहले इसके भाई के बारे में तुम्हारा एतबार कर चुका हूँ. पस अल्लाह बेहतर निगहबान है और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है.

65 और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो देखा कि उनकी पूंजी भी उन्हें लौटा दी गई है. उन्होंने कहा, ऐ हमारे बाप! और हमें क्या चाहिए. यह हमारी पूंजी भी हमें लौटा दी गई है. अब हम जाएँगे और अपने अहल व अयाल (परिवारजनों) के लिए रसद लाएँगे. और अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे. और एक ऊंट का बोझ ग़ल्ला और ज़्यादा लाएँगे. यह ग़ल्ला तो थोड़ा है. 66 याक़ूब ने कहा, मैं उसे तुम्हारे साथ हरगिज़ नहीं भेजूंगा, जब तक तुम मुझ से ख़ुदा के नाम पर यह अहद न करो कि तुम उसे ज़रूर मेरे पास ले आओगे, इल्ला यह कि तुम सब घिर जाओ. फिर जब उन्होंने उसे अपना पक्का क़ौल (वादा) दे दिया, उसने कहा कि जो हम कह रहे हैं, उसपर अल्लाह निगहबान है.

67 और याक़ूब ने कहा, ऐ मेरे बेटो! तुम सब एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना, बल्कि अलग—अलग दरवाज़ों से दाख़िल होना. और मैं तुम्हें अल्लाह की किसी बात से नहीं बचा सकता. हुक्म तो बस अल्लाह का है. मैं उसी पर भरोसा करता हूँ और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए. 68 और जब वे दाख़िल हुए जहाँ से उनके बाप ने उन्हें हिदायत की थी, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से. वह बस याक़ूब के दिल में एक ख़याल था जो उसने पूरा किया. बेशक वह हमारी दी हुई तालीम से इल्म वाला था, मगर अक्सर लोग नहीं जानते.

69 और जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने अपने भाई को अपने पास रखा. कहा कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ़) हूँ. पस ग़मगीन न हो उससे जो वे कर रहे हैं. 70 फिर जब उनका सामान तैयार करा दिया तो पीने का प्याला अपने भाई के असबाब में रख दिया. फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम लोग चोर हो. 71 उन्होंने उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, तुम्हारी क्या चीज़ खोई गई है. 72 उन्होंने कहा, हम शाही पैमाना नहीं पा रहे हैं. और जो उसे लाएगा उसके लिए एक ऊंट के बोझ भर ग़ल्ला है और मैं उसका ज़िम्मेदार हूँ. 73 उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम तुम्हें मालूम है कि हम लोग इस मुल्क में फ़साद करने के लिए नहीं आए और न

हम कभी चोर थे. 74 उन्होंने कहा, अगर तुम झूठे निकले तो उस चोरी करने वाले की सज़ा क्या है. 75 उन्होंने कहा, उसकी सज़ा यह है कि जिस शख़्स के असबाब में मिले, पस वही शख़्स अपनी सज़ा है. हम लोग ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं. 76 फिर उसने उसके (छोटे) भाई से पहले उनके थैलों की तलाशी लेना शुरू किया. फिर उसके भाई के थैले से उसे बरामद कर लिया. इस तरह हमने यूसुफ़ के लिए तदबीर की. वह बादशाह के क़ानून की रू से अपने भाई को नहीं ले सकता था, मगर यह कि अल्लाह चाहे. हम जिसके दर्जे चाहते हैं, बुलंद कर देते हैं. और हर इल्म वाले के ऊपर एक इल्म वाला है.

77 उन्होंने कहा कि अगर यह चोरी करे तो इससे पहले इसका एक भाई भी चोरी कर चुका है. पस यूसुफ़ ने इस बात को अपने दिल में रखा. और इसे उनपर ज़ाहिर नहीं किया. उसने अपने जी में कहा, तुम ख़ुद ही बुरे लोग हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो, अल्लाह उसे ख़ूब जानता है. 78 उन्होंने कहा कि ऐ अज़ीज़! इसका एक बहुत बूढ़ा बाप है सो तू इसकी जगह हम में से किसी को रख ले. हम तुझे बहुत नेक देखते हैं. 79 उसने कहा, अल्लाह की पनाह कि हम उसके सिवा किसी को पकड़ें जिसके पास हमने अपनी चीज़ पाई है. इस सूरत में हम ज़रूर ज़ालिम ठहरेंगे.

80 जब वे उससे नाउम्मीद हो गए तो अलग होकर आपस में मशविरा करने लगे. उनके बड़े ने कहा, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप ने अल्लाह के नाम पर पक्का इक़रार लिया और इससे पहले यूसुफ़ के मामले में जो ज़्यादती तुम कर चुके हो, वह भी तुम्हें मालूम है. पस मैं इस सरज़मीन से हरगिज़ (कहीं) नहीं जाऊँगा जब तक मेरा बाप मुझे इजाज़त न दे या अल्लाह मेरे लिए कोई फ़ैसला फ़रमा दे. और वह सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है. 81 तुम लोग अपने बाप के पास जाओ और कहो कि ऐ हमारे बाप! तेरे बेटे ने चोरी की और हम वही बात कह रहे हैं जो हमें मालूम हुई और हम ग़ैब (अदृश्य) के निगहबान नहीं 82 और तू उस बस्ती के लोगों से पूछ ले जहाँ हम थे और उस क़ाफ़िले से पूछ ले जिसके साथ हम आए हैं. और हम बिल्कुल सच्चे हैं.

83 बाप ने कहा, बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है, पस मैं सब्र करुंगा. उम्मीद है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास लाएगा. वह जानने वाला व हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है. 84 और उसने रुख़ फेर लिया और कहा, हाय यूसुफ़, और ग़म से उसकी आँखें सफ़ेद पड़ गईं. वह घुटा-घुटा रहने लगा. 85 उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम तू यूसुफ़ ही की याद में रहेगा, यहाँ तक कि घुल जाए या हलाक हो जाए. 86 उसने कहा, मैं अपनी परेशानी और अपने ग़म का शिकवा सिर्फ़ अल्लाह से करता हूँ और मैं अल्लाह की तरफ़ से वे बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते. 87 ऐ मेरे बेटो! जाओ यूसुफ़ और उसके भाई की तलाश करो और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न होना. अल्लाह की रहमत से सिर्फ़ मुन्किर ही नाउम्मीद होते हैं.

88 फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे, उन्होंने कहा, ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे घर वालों को बड़ी तकलीफ़ पहुँच रही है और हम थोड़ी पूंजी लेकर आए हैं, तू हमें पूरा ग़ल्ला दे और हमें सदक़ा भी दे. बेशक अल्लाह सदक़ा करने वालों को उसका बदला देता है. 89 उसने कहा, क्या तुम्हें ख़बर है कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया, जबकि तुम्हें समझ न थी. 90 उन्होंने कहा, क्या सचमुच तुम ही यूसुफ़ हो. उसने कहा, हां, मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है. अल्लाह ने हम पर फ़ज़्ल फ़रमाया. जो शख़्स डरता है और सब्र करता है तो अल्लाह नेक काम करने वालों का अज्र (प्रतिफल) ज़ाया (नष्ट) नहीं करता.

91 भाइयों ने कहा, ख़ुदा की क़सम, अल्लाह ने तुम्हें हमारे ऊपर फ़ज़ीलत दी, और बेशक हम ग़लती पर थे. 92 यूसुफ़ ने कहा, आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, अल्लाह तुम्हें माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से ज्यादा मेहरबान है. 93 तुम मेरा यह कुरता ले जाओ और इसे मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, उसकी बिनाई (दृष्टि) पलट आएगी और तुम अपने घरवालों के साथ मेरे पास आ जाओ.

94 और जब क़ाफ़िला (मिस्र से) चला तो उसके बाप ने (कन्आन में) कहा कि अगर तुम मुझे बुढ़ापे में बहकी बातें करने वाला न समझो तो मैं यूसुफ़ की ख़ुशबू पा रहा हूँ. 95 लोगों ने कहा, ख़ुदा की क़सम, तुम तो अभी तक अपने पुराने ग़लत ख़याल में मुब्तिला हो. 96 पस जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया, उसने कुरता याक़ूब के चेहरे पर डाल दिया, पस उसकी बिनाई (दृष्टि) लौट आयी. उसने कहा, क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की जानिब से वे बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते. 97 बिरादराने–यूसुफ़ ने कहा, ऐ हमारे बाप! हमारे गुनाहों की माफ़ी हो, इसके लिए दुआ कीजिए. बेशक हम ख़तावार थे. 98 याक़ूब ने कहा, मैं अपने रब से तुम्हारे लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) की दुआ करूंगा. बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है.

99 पस जब वे सब यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने अपने वालिदैन को अपने पास बिठाया. और कहा कि मिस्र में इंशाअल्लाह अमन चैन से रहो 100 और उसने अपने वालिदैन को तख़्त पर बिठाया और सब उसके लिए सज्दे में झुक गए. और यूसुफ़ ने कहा, ऐ बाप! यह है मेरे ख़्वाब की ताबीर जो मैंने पहले देखा था. मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिया और उसने मेरे साथ एहसान किया कि उसने मुझे क़ैद से निकाला और तुम सबको देहात से यहाँ लाया बाद इसके कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान फ़साद डाल दिया था. बेशक मेरा रब जो कुछ चाहता है उसकी उम्दा तदबीर कर लेता है, वह जानने वाला व हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

101 ऐ मेरे रब! तूने मुझे हुकूमत में से हिस्सा दिया और मुझे बातों की ताबीर करना सिखाया. ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू मेरा कारसाज़ (काम बनानेवाला व सँवारनेवाला) है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी. मुझे फ़रमांबरदारी की हालत में वफ़ात दे

और मुझे नेक बंदों में शामिल फ़रमा.

102 यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम पर 'वही' कर रहे हैं (यानी प्रकट कर रहे हैं). और तुम उस वक़्त उनके पास मौजूद न थे जब यूसुफ़ के भाइयों ने अपनी राय पुख़्ता की और वे तदबीरें कर रहे थे 103 और तुम चाहे कितना ही चाहो, अकसर लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं.

104 **और तुम इसपर उनसे कोई मुआवज़ा (बदला) नहीं माँगते.**

यह क़ुरआन तो सिर्फ़ एक नसीहत है तमाम जहान वालों के लिए.

नोटः– '**यह तमाम जहान वालों के लिए नसीहत है**' फिर क्या यह क़ुरआन तमाम जहान वालों तक पहुँचे बग़ैर ही उनके लिए नसीहत बन सकता है? क्या अब कोई नया नबी आने वाला है जो क़ुरआन को तमाम जहान वालों तक पहुँचाएगा? हरगिज़ नहीं, अब क़ुरआन के मानने वालों का यह नागुज़ीर फ़रिज़ा है कि वे यह '**सारे इन्सानों की अमानत**' उन तक पहुँचा दें, ताकि अल्लाह के बंदे अल्लाह के पैग़ाम से आगाह हो जाएँ.

105 और आसमानों और ज़मीन में कितनी ही निशानियाँ हैं जिनपर उनका गुज़र होता रहता है और वे उनपर ध्यान नहीं करते. 106 और अकसर लोग जो ख़ुदा को मानते हैं वे उसके साथ दूसरों को शरीक भी ठहराते हैं. 107 क्या ये लोग इस बात से मुतमइन हैं कि उनपर अज़ाबे-इलाही की कोई आफ़त आ पड़े या अचानक उनपर क़यामत आ जाए और वे उससे बेख़बर हों.

108 **कहो, यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ समझ-बूझ कर, मैं भी और वे लोग भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है.** **और अल्लाह पाक है और मैं मुशरिकों (बहुदेववादियों) में से नहीं हूँ.**

नोटः– क़ुरआन के इस बयान से वाज़ेह है कि क़ुरआन के मुताबिक़ रसूलुल्लाह (स.) की पैरवी करने वाले कौन लोग हैं, वह लोग जो रसूलुल्लाह (स.) की इत्तेबाअ के तहत लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले हैं.

109 और हमने तुम से पहले मुख़्तलिफ़ बस्ती वालों में से जितने रसूल भेजे सब आदमी ही थे. हम उनकी तरफ़ 'वही' करते थे (हमारा संदेश प्रकट करते थे). क्या ये लोग ज़मीन पर चले फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो उनसे पहले थे और आख़िरत का (यानी मृत्यु-पश्चात जीवन का) घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो डरते हैं, क्या तुम समझते नहीं.
110 यहाँ तक कि जब पैग़म्बर मायूस हो गए और वे ख़याल करने लगे कि उनसे झूठ कहा गया था तो उन्हें हमारी मदद आ पहुँची. पस नजात (मुक्ति) मिली जिसे हमने चाहा और मुजरिम लोगों से हमारा अज़ाब टाला नहीं जा सकता.

111 उनके क़िस्सों में समझदार लोगों के लिए बड़ी इबरत (सीख) है. यह कोई गढ़ी हुई बात नहीं, बल्कि तसदीक़ (पुष्टि) है उस चीज़ की जो इससे पहले से मौजूद है. और तफ़सील है हर चीज़ की. और हिदायत व रहमत है ईमान वालों के लिए.

सूरह–13. अर–रअद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़० लाम० मीम० रा०. ये किताबे-इलाही की आयतें हैं. और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ़ से उतरा है, वह हक़ (सत्य) है. मगर अकसर लोग नहीं मानते.
2
अल्लाह ही है जिसने आसमान को बुलंद किया बग़ैर ऐसे सुतून (स्तंभ) के जो तुम्हें नज़र आएं. फिर वह अपने तख़्त पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ और उसने सूरज व चांद को एक क़ानून का पाबंद बनाया, हर एक, एक मुक़र्रर वक़्त पर चलता है. अल्लाह ही हर काम का इंतज़ाम करता है. वह निशानियों को खोल-खोल कर बयान करता है, ताकि तुम अपने रब से मिलने का यक़ीन करो.

3 और वही है जिसने ज़मीन को फैलाया. और उसमें पहाड़ और नदियां रख दीं और हर क़िस्म के फलों के जोड़े उसमें पैदा किए. वह रात को दिन पर उढ़ा देता है. बेशक इन चीज़ों में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करें.

4 और ज़मीन में पास—पास मुख़्तलिफ़ ख़ित्ते (भू—भाग) हैं और अंगूरों के बाग़ हैं और खेती है और खजूरें हैं, उनमें से कुछ इकहरे हैं और कुछ दोहरे (एक जड़ से एक डालवाले और कुछ दो डालवाले). सब एक ही पानी से सैराब होते हैं. और हम एक को दूसरे पर पैदावार में फ़ौक़ियत (श्रेष्ठता) देते हैं, बेशक इनमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करें.

5 और अगर तुम तअज्जुब (आश्चर्य) करो तो तअज्जुब के क़ाबिल उनका यह क़ौल है, 'जब हम मिट्टी हो जाएँगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा किए जाएँगे.' ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब का इन्कार किया और ये वे लोग हैं जिनकी गरदनों में तौक़ पड़े हुए हैं, वे आग वाले लोग हैं, वे

उसमें हमेशा रहेंगे.

6 वे भलाई से पहले बुराई के लिए जल्दी कर रहे हैं. हालाँकि उनसे पहले मिसालें गुज़र
चुकी हैं और तुम्हारा रब लोगों के ज़ुल्म के बावजूद उन्हें माफ़ करने वाला है. और बेशक तुम्हारा
रब सख़्त सज़ा देने वाला है.

7 और जिन लोगों ने इन्कार किया वे कहते हैं कि इस शख़्स पर उसके रब की तरफ़ से कोई
निशानी क्यों नहीं उतरी. तुम तो सिर्फ़ ख़बरदार कर देने वाले हो. और हर क़ौम के लिए एक राह
बताने वाला है.

8 अल्लाह जानता है हर मादा के हमल (गर्भ) को. और जो कुछ रहमों में घटता या बढ़ता है उसे
भी. और हर चीज़ का उसके यहाँ एक नपातुला पैमाना है. 9 वह पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला
है, सबसे बड़ा है, सबसे बरतर. 10 तुम में से कोई शख़्स चुपके से बात कहे और जो पुकार कर
कहे और जो रात में छुपा हुआ हो और दिन में चल रहा हो, ख़ुदा के लिए सब यकसां (समान) हैं.

11 हर शख़्स के आगे और पीछे उसके निगरां (रक्षक) हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी
देखभाल कर रहे हैं. बेशक अल्लाह किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता, जब तक कि वे उसे न
बदल डालें जो उनके जी में है. और जब अल्लाह किसी क़ौम पर कोई आफ़त लाना चाहता है तो
फिर उसके हटने की कोई सूरत नहीं और अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार नहीं.

12 वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है जिससे डर भी पैदा होता है और उम्मीद भी. और
वही है जो पानी से लदे हुए बादल उठाता है. 13 और बिजली की गरज उसकी हम्द (प्रशंसा) के
साथ उसकी पाकी बयान करती है और फ़रिश्ते भी उसके ख़ौफ़ से. और वह बिजलियां भेजता है,
फिर जिस पर चाहे उन्हें गिरा देता है और वे लोग ख़ुदा के बाब (विषय) में झगड़ते हैं, हालाँकि
वह ज़बरदस्त है, क़ुव्वत वाला है.

14 सिर्फ़ उसी को पुकारना ही हक़ के मुताबिक़ है. और उसके सिवा जिन को लोग पुकारते
हैं, वे उनकी इससे ज़्यादा दादरसी (सहायता) नहीं कर सकते जितना पानी उस शख़्स की करता है
जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलाए हुए हो, ताकि वह उसके मुँह तक पहुँच जाए और वह
उसके मुँह तक पहुँचने वाला नहीं. और मुन्किरीन की पुकार सब बेफ़ायदा है.

15 और आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब ख़ुदा ही को सज्दा करते हैं. ख़ुशी से या
मजबूरी से (कुछ ख़ुशी से सजदा कर रहे हैं और बक़या उसके लिए पाबंद हैं) और उनके साये भी
सुबह व शाम (ख़ुदा को सजदा करते हैं). **अस्-सज्दा** 16 कहो, आसमानों और ज़मीन का रब
कौन है. कह दो कि अल्लाह. कहो, क्या फिर भी तुमने उसके सिवा ऐसे मददगार बना रखे हैं जो
ख़ुद अपनी ज़ात के नफ़ा और नुक़सान का भी इख़्तियार नहीं रखते. कहो, क्या अंधा और आंखों

वाला दोनों बराबर हो सकते हैं या क्या अंधेरा और उजाला दोनों बराबर हो जाएँगे? क्या उन्होंने ख़ुदा के जो शरीक ठहराए हैं, तो क्या उन (शरीकों) ने भी पैदा किया है, जैसा कि अल्लाह ने पैदा किया, फिर पैदाइश उनकी नज़र में मुशतबह (संदिग्ध) हो गई? कहो, अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही है अकेला ज़बरदस्त.

17 अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा. फिर नाले अपनी—अपनी मिक़दार के मुवाफ़िक़ बह निकले. फिर सैलाब ने उभरते झाग को उठा लिया और इसी तरह का झाग उन चीज़ों में भी उभर आता है जिन्हें लोग ज़ेवर या असबाब बनाने के लिए आग में पिघलाते हैं. इस तरह अल्लाह हक़ (सत्य) और बातिल (असत्य) की मिसाल बयान करता है. पस झाग तो सूखकर जाता रहता है और जो चीज़ इंसानों को नफ़ा पहुँचाने वाली है वह ज़मीन में ठहर जाती है. अल्लाह इसी तरह मिसालें बयान करता है.

18 जिन लोगों ने अपने रब की पुकार पर लब्बैक कहा, उनके लिए भलाई है और जिन लोगों ने उसकी पुकार को न माना, अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है, और उसके बराबर और भी, तो वह सब अपनी रिहाई के लिए दे डालें (फिर भी उनकी रिहाई मुमकिन नहीं). उन लोगों का हिसाब सख़्त होगा और उनका ठिकाना जहन्नम होगा. और वह कैसा बुरा ठिकाना है!

19 जो शख़्स यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा गया है, वह हक़ (सत्य) है, क्या वह शख़्स उसके मानिंद हो सकता है जो अंधा है. नसीहत तो अक़्ल वाले लोग ही क़बूल करते हैं.

20 वे लोग जो अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करते हैं और उसके अहद को नहीं तोड़ते.
21 और जो उसे जोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और वे अपने रब से डरते हैं
और वे बुरे हिसाब का अंदेशा रखते हैं 22 और जिन्होंने अपने रब की रज़ा के लिए सब्र किया.
और नमाज़ क़ायम की. और हमारे दिए में से पोशीदा और एलानिया ख़र्च किया. और जो बुराई
को भलाई से मिटाते हैं. आख़िरत का घर ऐसे ही लोगों के लिए है. 23 अब्दि (हमेशा रहने के)
बाग़ जिनमें वे दाख़िल होंगे. और वे भी जो उसके अहल बनें, उनके आबा व अज्दाद (पूर्वज)
और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से. और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उनके पास आएंगे, 24
कहेंगे, तुम लोगों पर सलामती हो उस सब्र के बदले जो तुमने किया. पस क्या ही ख़ूब है यह
आख़िरत का घर.

25 और जो लोग अल्लाह के अहद को मज़बूत करने के बाद तोड़ते हैं और उसे काटते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद करते हैं, ऐसे लोगों पर लानत है और उनके लिए बुरा घर है.

26 **अल्लाह जिसे चाहता है रोज़ी ज़्यादा देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है. और वे दुनिया की ज़िंदगी पर ख़ुश हैं. और दुनिया की ज़िंदगी आख़िरत के मुक़ाबले में एक मताए-क़लील (अल्प सुख-सामग्री) के सिवा और कुछ नहीं.**

नोटः- आज इंसानों का यही हाल हो चुका है कि वे दुनिया की ज़िंदगी पर ख़ुश हैं, क्या मुस्लिम! और क्या ग़ैर-मुस्लिम! तक़रीबन सबके सब सारी दौड़-धूप अपनी और अपने बेटा-बेटी की दुनिया संवारने और उसे चमकाने के लिए कर रहे हैं. इसी मक़सद के लिए उन्होंने अपने आपको झोंक दिया है. मुस्लिम हज़रात रस्मी तौर पर दीन से तो रिश्ता रखे हुए हैं, लेकिन उनकी अमली ज़िंदगी इस बात का इज़हार है कि वे दुनिया की ज़िंदगी पर ख़ुश हैं. यही वजह है कि वे दावत की ज़िम्मेदारी से पूरी तरह ग़ाफ़िल हैं, क्योंकि दावत का ताल्लुक़ तो ख़ुद की और दूसरों की आख़िरत बनाने से है.

जहां तक ग़ैर-मुस्लिम हज़रात का ताल्लुक़ है उनका हाल यह है कि वे ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसके अंजाम से पूरी तरह ग़ाफ़िल हैं, वे पैसा कमाने और खाने-पीने की मशीनें बने हुए हैं. वे ऐसा जी रहे हैं जैसे ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसके अंजाम से उन्हें कुछ लेना-देना नहीं है.

27 **और जिन्होंने इन्कार किया वे कहते हैं कि इस शख़्स पर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई. कहो कि अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह रास्ता उसे दिखाता है जो उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो.**

नोटः- हिदायत पाने की क़ीमत संजीदगी है, जो शख़्स यह क़ीमत देगा उसे ही ख़ुदा हिदायत देगा. दाई को तो बस अपने ज़िम्मे का काम करना है.

28 **वे लोग जो ईमान लाए और जिनके दिल अल्लाह की याद से मुतमइन होते हैं. सुनो, अल्लाह की याद ही से दिलों को इत्मीनान हासिल होता है.**

नोटः- दिलों का ख़ालिक़ अल्लाह है, इसलिए अल्लाह का ही हक़ है कि लोग अपने दिलों में

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)
सिर्फ़ अल्लाह को यानी उसकी याद को बसाएं. लेकिन अक्सर लोगों ने अपने दिलों में ग़ैरूल्लाह को बसा रखा है. ऐसे लोगों को दिल का सुकून कैसे मिल सकता है. ईमानवाले तो वे हैं जो अपने दिलों में ख़ुदा को बसाते हैं.

इंसान के दिल में हक़ीक़ी जगह सिर्फ़ ख़ुदा के लिए होना चाहिए, जिन लोगों के दिल ख़ुदा की याद में जीते हैं, यही वे लोग हैं जिन्हें सच्चा सुकून हासिल होता है. जो दिल ख़ुदा की याद से खाली हैं, उन्हें सच्चा सुकून नहीं मिल सकता.

जो लोग सच्चे मानों में ख़ुदा की याद में जीने वाले हैं, वे ख़ुदा के काम से यानी **'दावत'** से हरगिज़ बेरग़बत नहीं हो सकते. क्योंकि ख़ुदा से मुहब्बत का अमली इज़हार यह है कि ख़ुदा के उन बंदों को ख़ुदा की तरफ़ बुलाया जाए जो ख़ुदा से दूर हैं. जो लोग **'दावत'** से बेरग़बत हैं, उन्होंने अपने दिलों में अभी तक ख़ुदा को बसाया ही नहीं.

29 जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए उनके लिए ख़ुशख़बरी है और अच्छा ठिकाना है.

30 **इसी तरह हमने तुम्हें भेजा है, एक उम्मत में जिससे पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताकि तुम लोगों को वह पैग़ाम सुना दो जो हमने तुम्हारी तरफ़ भेजा है. और वे मेहरबान ख़ुदा का इन्कार कर रहे हैं. कहो कि वही मेरा रब है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ़ लौटना है.**

नोटः– लोगों को अल्लाह का पैग़ाम सुनाने के लिए पैग़म्बरों को भेजा जाता था, ताकि अल्लाह के तख़्लिक़ी मंसूबे से लोगों को आगाह कर दिया जाए. अब चूंकि पैग़म्बर आने वाले नहीं हैं, लेकिन पैग़म्बराना काम की ज़रूरत पूरी तरह बाक़ी है, क्योंकि इन्सानों का पैदा होना जारी है, लिहाज़ा यह काम अब **'उम्मते–मुहम्मदी'** का नागुज़ीर फ़रिज़ा है कि वह उन लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दें जिन लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम नहीं पहुँचा.

31 और अगर ऐसा क़ुरआन उतरता जिससे पहाड़ चलने लगते, या उससे ज़मीन टुकड़े हो जाती या उससे मुरदे बोलने लगते, बल्कि सारा इख़्तियार अल्लाह ही के लिए है. क्या ईमान लाने वालों को इससे इत्मीनान नहीं कि अगर अल्लाह चाहता तो सारे लोगों को हिदायत दे देता. और इन्कार करने वालों पर कोई न कोई आफ़त आती रहती है, उनके आमाल के सबब से, या उनकी बस्ती के क़रीब कहीं नाज़िल होती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ जाए. यक़ीनन अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता.
32 और तुम से पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया तो मैंने इन्कार करने वालों को ढील दी, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया. तो देखो कैसी थी मेरी सज़ा.

33 फिर क्या (वह हस्ती) जो (हर शख़्स के आमाल पर नज़र रखी हुई है और) हर शख़्स से उसके आमाल का हिसाब करने वाली है (वह उन शरीकों की तरह हो सकती है? फिर भी), लोगों ने अल्लाह के शरीक बना लिए हैं. कहो कि उनका नाम लो. क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर दे रहे हो जिसे वह ज़मीन में नहीं जानता. या तुम ऊपर ही ऊपर बातें कर रहे हो, बल्कि इन्कार करने वालों को उनका फ़रेब ख़ुशनुमा बना दिया गया है. और वे रास्ते से रोक दिए गए हैं. और अल्लाह जिसे गुमराह करे उसे कोई राह बताने वाला नहीं.
34 उनके लिए दुनिया की ज़िंदगी में भी अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत सख़्त है. कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला नहीं.

35 और जन्नत की मिसाल जिसका मुत्तक़ियों (डर रखने वालों) से वादा किया गया है, यह है कि उसके नीचे नहरें बहती होंगी. उसका फल और साया हमेशा रहेगा. यह अंजाम उन लोगों का है जो ख़ुदा से डरें और मुन्किरों का अंजाम आग है.

36 और जिन लोगों को हमने किताब दी थी वे उस चीज़ पर ख़ुश हैं जो तुम पर उतारी गई है. और उन गिरोहों में ऐसे भी हैं जो उसके कुछ हिस्से का इन्कार करते हैं. कहो कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ और किसी को उसका शरीक न ठहराऊं. मैं उसी की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा लौटना है
37 और इसी तरह हमने उसे एक हुक्म की हैसियत से अरबी में उतारा है. और अगर तुम उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करो, बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो ख़ुदा के मुक़ाबले में तुम्हारा न कोई मददगार होगा और न कोई बचाने वाला.

38 और हमने तुम से पहले कितने रसूल भेजे और हमने उन्हें बीवियां और औलाद अता की और किसी रसूल के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म (आज्ञा) के बग़ैर कोई निशानी ले आए. हर एक वादा लिखा हुआ है.
39 अल्लाह जिसे चाहे मिटाता है और जिसे चाहे बाक़ी रखता है. और उसी के पास है असल किताब.

40 और जिस (सज़ा) का हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा दें (या ऐसा भी हो सकता है कि) हम तुम्हें (उससे पहले) वफ़ात दे दें,

तो अब तुम्हारे ऊपर सिर्फ़ पैग़ाम का पहुँचा देना है और हमारे ऊपर है हिसाब लेना.

41 क्या वे देखते नहीं कि हम ज़मीन की तरफ़ उसे उसके अतराफ़ (चौतरफ़ा) से कम करते चले आ रहे हैं. और अल्लाह फ़ैसला करता है, कोई उसके फ़ैसले को हटाने वाला नहीं और वह जल्द हिसाब लेने वाला है.
42 जो उनसे पहले थे, उन्होंने भी तदबीरें कीं, मगर तमाम तदबीरें अल्लाह के इख़्तियार में हैं. वह जानता है कि हर एक क्या कर रहा है और मुन्किरीन जल्द जान लेंगे कि आख़िरत का घर किस के लिए है.

43 और मुन्किरीन कहते हैं कि तुम ख़ुदा के भेजे हुए नहीं हो, कहो कि मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफ़ी है. और उसकी गवाही जिसके पास किताब का इल्म है.

सूरह–14. इब्राहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़॰ लाम॰ रा॰. **यह किताब है जिसे हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया है, ताकि तुम लोगों को अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ़ लाओ,** उनके रब के हुक्म से ख़ुदाए–अज़ीज़ व हमीद (प्रभुत्वशाली व प्रशंसनीय) के रास्ते की तरफ़,

नोटः– यहाँ क़ुरआन का मक़सदे–नुज़ूल बताया गया है, यह मक़सद इस बात का तक़ाज़ा करता है कि ख़ुदा की किताब लोगों तक पूरी ख़ैरख़ाही के साथ पहुँचाई जाए, ताकि लोगों को ज़ेहनी अंधेरों से बाहर आने का मौक़ा हासिल हो. ख़ुदा की तरफ़ से क़ुरआन की शकल में क़यामत तक के इन्सानों के लिए हक़ को दरयाफ़्त करने की रोशनी का इन्तेज़ाम हो चुका है. अब क़ुरआन के मानने वालों का यह काम है कि इस ख़ुदाई रोशनी को गुमराहियों के अंधेरों में लेकर पहुँचे, ताकि हक़ के तालिब हक़ को दरयाफ़्त कर सकें.

2 उस अल्लाह की तरफ़, जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों और ज़मीन में है. और इन्कार करने वालों के लिए एक अज़ाबे-शदीद (सख़्त अज़ाब) की तबाही है.

3 **जो आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी को पसंद करते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कजी (टेढ़) निकालना चाहते हैं. ये लोग रास्ते से भटक कर दूर जा पड़े हैं.**

4 **और हमने जो भी पैग़म्बर भेजा उसकी क़ौम की ज़बान में भेजा, ताकि वह उनसे (हमारा पैग़ाम साफ़-साफ़) बयान कर दे,** फिर अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है. वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है).

नोटः-

- क़ुरआन के इस बयान से पता चलता है कि मदू की ज़बान में पैग़ाम पहुँचाना ख़ुदा का तरीक़ा रहा है. सारे पैग़म्बर ख़ुदा का पैग़ाम मदू की ज़बान में लेकर आते थे. अब चूंकि पैग़म्बर आने वाले नहीं हैं. और ख़ुदा का पैग़ाम क़ुरआन की शकल में पूरी तरह महफ़ूज़ है. अब दाइयों की यह ज़िम्मेदारी है कि मदू तक उनकी ज़बानों में ख़ुदा का पैग़ाम यानी क़ुरआन पहुँचाएं, ताकि लोग ख़ुदा का creation plan जान लें, फिर कल ख़ुदा की अदालत में कोई यह कह न सके कि ख़ुदाया, हमें तो इस available guide book के बारे में कुछ भी पता नहीं था, और जिनपर यह guide book पहुँचाने की ज़िम्मेदारी थी, उन्होंने उसे हम तक नहीं पहुँचाया.
- मादरी ज़बान इन्सान की फ़ितरी ज़बान होती है, जबकि ग़ैर-मादरी ज़बान इन्सान ज़रूरत के तहत सीखता है. मादरी ज़बान में ही कोई पैग़ाम इन्सान गहराई के साथ समझ सकता है, गहराई के साथ उसपर ग़ौर कर सकता है. इस मामले में ख़ुदा के पैग़ाम का इस्तेसना (exception) नहीं हो सकता.

5 और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरों से निकाल कर उजाले में लाओ और उन्हें अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ. बेशक उनके अंदर बड़ी निशानियाँ हैं, हर उस शख़्स के लिए जो सब्र व शुक्र करने वाला हो.

6 और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अपने ऊपर अल्लाह के उस इनाम को याद करो,

जबकि उसने तुम्हें फ़िरऔन की क़ौम से छुड़ाया जो तुम्हें सख़्त तकलीफ़ें पहुँचाते थे और वे तुम्हारे लड़कों को मार डालते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िंदा रखते थे और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ा इम्तहान था. 7 और जब तुम्हारे रब ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें ज़्यादा दूँगा. और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अज़ाब बड़ा सख़्त है. 8 और मूसा ने कहा कि अगर तुम इन्कार करो और ज़मीन के सारे लोग भी मुन्किर हो जाएँ तो अल्लाह बेपरवा है, ख़ूबियों वाला है.

9 क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं. क़ौमे–नूह और आद और समूद और जो लोग उनके बाद हुए हैं, जिन्हें ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता. उनके पैग़म्बर उनके पास दलाइल (स्पष्ट प्रमाण) लेकर आए तो उन्होंने ऐसा कहते हुए अपने हाथ अपने मुँह पर रख लिए कि जो (पैग़ाम) तुम्हें देकर भेजा गया है, हम उसे नहीं मानते और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, हम उसके बारे में सख़्त उलझन वाले शक में पड़े हुए हैं.

10 उनके पैग़म्बरों ने कहा, क्या ख़ुदा के बारे में शक है जो आसमानों और ज़मीन को वजूद में लाने वाला है. वह तुम्हें बुला रहा है कि तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे और तुम्हें एक मुक़र्रर मुद्दत तक मोहलत दे. उन्होंने कहा कि तुम इसके सिवा कुछ नहीं कि हमारे जैसे एक आदमी हो. तुम चाहते हो कि हमें उन चीज़ों की इबादत से रोक दो जिनकी इबादत हमारे बाप–दादा करते थे. तुम हमारे सामने कोई खुली सनद ले आओ.

11 उनके रसूलों ने उनसे कहा, हम इसके सिवा कुछ नहीं कि तुम्हारे ही जैसे इंसान हैं, मगर अल्लाह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है, अपना इनाम फ़रमाता है और यह हमारे इख़्तियार में नहीं कि हम तुम्हें कोई मोजिज़ा (चमत्कार) दिखाएं, बग़ैर ख़ुदा के हुक्म के. और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए. 12 और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें, जबकि उसने हमें हमारे रास्ते बताए. और जो तकलीफ़ तुम हमें दोगे, हम उसपर सब्र करेंगे. और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए.

13 और इन्कार करने वालों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि या तो हम तुम्हें अपनी ज़मीन से निकाल देंगे या तुम्हें हमारी मिल्लत में वापस आना होगा. तो पैग़म्बरों के रब ने उनपर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि हम इन ज़ालिमों को हलाक कर देंगे. 14 और उनके बाद तुम्हें ज़मीन पर बसाएंगे. यह उस शख़्स के लिए है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे और जो मेरी वईद (चेतावनी) से डरे.

15 और उन्होंने फ़ैसला चाहा और (जब ख़ुदा का फ़ैसला हुआ तो) हर सरकश, ज़िद्दी नामुराद हुआ. 16 उसके आगे दोज़ख़ है और उसे पीप का पानी पीने को मिलेगा 17 वह उसे घूंट–घूंट पिएगा और उसे हलक़ से मुश्किल से उतार सकेगा. मौत हर तरफ़ से उसपर छाई हुई

होगी. मगर वह किसी तरह नहीं मरेगा और उसके आगे सख़्त अज़ाब होगा.

18 जिन लोगों ने अपने रब का इन्कार किया, उनकी मिसाल ऐसी है कि उनके आमाल उस
राख की तरह हैं जिसे एक तूफ़ानी दिन की आंधी ने उड़ा दिया हो. वे अपने किए में से कुछ भी न
पा सकेंगे. यही दूर की गुमराही है. 19 क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन
को बिल्कुल ठीक-ठीक पैदा किया है. अगर वह चाहे तो तुम लोगों को ले जाए और एक नई
मख़लूक़ ले आए. 20 और यह ख़ुदा पर कुछ दुश्वार भी नहीं (कुछ मुश्किल नहीं).

21 और ख़ुदा के सामने सब पेश होंगे. फिर कमज़ोर लोग उन लोगों से कहेंगे जो बड़ाई वाले थे, हम तुम्हारे ताबे (अधीन) थे तो क्या तुम अल्लाह के अज़ाब से कुछ हमें बचाओगे. वे कहेंगे कि अगर अल्लाह हमें कोई राह दिखाता तो हम तुम्हें भी ज़रूर वह राह दिखा देते. अब हमारे लिए यकसां (समान) है कि हम बेक़रार हों या सब्र करें, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं.

22 और जब मामले का फ़ैसला हो जाएगा तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तुम से सच्चा वादा किया था और मैंने तुम से वादा किया तो मैंने उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी की. और मेरा तुम्हारे ऊपर कोई ज़ोर न था. मगर यह कि मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने मेरी बात को मान लिया पस तुम मुझे इल्ज़ाम न दो, और तुम अपने आपको इल्ज़ाम दो. न मैं तुम्हारा मददगार हो सकता हूँ और न तुम मेरे मददगार हो सकते हो. मैं ख़ुद उससे बेज़ार हूँ कि तुम इससे पहले मुझे शरीक ठहराते थे. बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है.

23 और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल किए जाएँगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. उनमें वे अपने रब के हुक्म से हमेशा रहेंगे. उसमें उनकी एक दूसरे से मुलाक़ात सलाम के साथ होगी.

24 क्या तुमने नहीं देखा, किस तरह मिसाल बयान फ़रमाई अल्लाह ने कलिमे-तय्यिबा (शुभ
बात) की. वह एक पाकीज़ा दरख़्त की मानिंद है जिसकी जड़ ज़मीन में जमी हुई है. और जिसकी
शाख़ें आसमान तक पहुँची हुई हैं. 25 वह हर वक़्त पर अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से
और अल्लाह लोगों के लिए मिसाल बयान करता है, ताकि वे नसीहत हासिल करें. 26 और
कलिमे-ख़बीसा (अशुभ बात) की मिसाल एक ख़राब दरख़्त की है जो ज़मीन के ऊपर ही से
उखाड़ लिया जाए. उसे कोई इस्तहकाम (स्थैर्य) प्राप्त न हो.

27 अल्लाह ईमान वालों को एक पक्की बात से दुनिया और आख़िरत में (यानी मृत्यु-पश्चात जीवन में) मज़बूत करता है. और अल्लाह ज़ालिमों को भटका देता है. और अल्लाह करता है जो वह चाहता है.

28 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत के बदले कुफ़्र किया और जिन्होंने
अपनी क़ौम को हलाकत के घर में पहुँचा दिया, 29 जहन्नम, जिसमें वे दाख़िल होंगे और वह कैसा

बुरा ठिकाना है. 30 और उन्होंने अल्लाह के शरीक (समकक्ष) ठहराए, ताकि वे लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटका दें. कहो कि (चंद दिन) फ़ायदा उठा लो, आख़िरकार तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है.

31 मेरे जो बंदे ईमान लाए हैं उनसे कह दो कि वे नमाज़ क़ायम करें और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खुले और छुपे ख़र्च करें, इससे पहले कि वह दिन आए जिसमें न ख़रीद व फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती काम आएगी.

32 अल्लाह वह है जिसने आसमान और ज़मीन बनाए और आसमान से पानी उतारा. फिर उससे मुख़्तलिफ़ फल निकाले तुम्हारी रोज़ी के लिए और कश्ती को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया (तुम्हारे अधीन कर दिया) कि समुंदर में उसके हुक्म से चले और उसने दरियाओं को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया. 33 और उसने सूरज और चांद को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया कि बराबर चले जा रहे हैं और उसने रात और दिन को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया. 34 और उसने तुम्हें हर चीज़ में से दिया जो तुमने माँगा. **अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम गिन नहीं सकते.** बेशक इंसान बहुत बेइंसाफ़ और बड़ा नाशुक्रा है.

35 और जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब! इस शहर को अमन वाला बना. और मुझे और मेरी औलाद को इससे दूर रख कि हम बुतों की इबादत करें. 36 ऐ मेरे रब! इन बुतों ने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया. पस जिसने मेरी पैरवी की वह मेरा है. और जिसने मेरा कहा न माना तो तू बख़्शने वाला मेहरबान है.

37 ऐ हमारे रब! मैंने अपनी औलाद को एक बेखेती की वादी में तेरे मुहतरम घर के पास बसाया है. ऐ हमारे रब! ताकि वे नमाज़ क़ायम करें. पस तू लोगों के दिल उनकी तरफ़ मायल कर दे और उन्हें फलों की रोज़ी अता फ़रमा. ताकि वे शुक्र करें.

38 ऐ हमारे रब! तू जानता है जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ हम ज़ाहिर करते हैं. और अल्लाह से कोई चीज़ छुपी नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में. 39 शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ दिए. बेशक मेरा रब दुआ का सुनने वाला है. 40 ऐ मेरे रब! मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना. और मेरी औलाद में भी. ऐ हमारे रब मेरी दुआ क़बूल कर. 41 ऐ हमारे रब, मुझे माफ़ फ़रमा और मेरे वालिदैन को और मोमिनीन को उस रोज़ जबकि हिसाब क़ायम होगा.

42 और हरगिज़ मत ख़याल करो कि अल्लाह उससे बेख़बर है जो ज़ालिम लोग कर रहे हैं. वह उन्हें उस दिन के लिए ढील दे रहा है जिस दिन आँखें पथरा जाएँगी. 43 वे सिर उठाए हुए भाग रहे होंगे. उनकी नज़र उनकी तरफ़ हटकर न आएगी (यानी वे जिधर देख रहे होंगे बस उधर ही देखते होंगे) और उनके दिल बदहवास होंगे.

44 **और लोगों को उस दिन से डरा दो जिस दिन उनपर अज़ाब आ जाएगा. उस वक़्त ज़ालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें थोड़ी मोहलत और दे दे, हम तेरी दावत (आवाहन) क़बूल कर लेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे. (तब उन्हें कहा जाएगा,) क्या तुम इससे पहले क़समें खाकर नहीं कहा करते थे कि तुम पर कुछ ज़वाल (पतन) आना नहीं है.**

नोटः– जिस दिन से यहाँ आगाह किया जा रहा है वह दिन सारे इंसानों पर आने वाला है. तो इंसानों की ख़ैरख़ाही यही है कि उन्हें इस सबसे बड़े मसले से आगाह कर दिया जाए.

45 और तुम उन लोगों की बस्तियों में आबाद थे जिन्होंने अपने जानों पर ज़ुल्म किया. और तुम
पर खुल चुका था कि हमने उनके साथ क्या किया. और हमने तुम से मिसालें बयान कीं. 46 और
उन्होंने अपनी सारी तदबीरें (युक्तियां) कीं और उनकी तदबीरें अल्लाह के सामने थीं. अगरचे उनकी
तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जाएँ.

47 पस तुम अल्लाह को अपने पैग़म्बरों से वादाख़िलाफ़ी करने वाला न समझो. बेशक
अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला है. 48 जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी
जाएगी और आसमान भी. और सब एक ज़बरदस्त अल्लाह के सामने पेश होंगे. 49 और तुम उस
दिन मुजरिमों को ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ देखोगे. 50 उनके लिबास तारकोल (डामर) के होंगे.
और उनके चेहरों पर आग छाई हुई होगी 51 ताकि अल्लाह हर शख़्स को उसके किए का बदला दे.
बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है.

52 **यह (क़ुरआन) लोगों के लिए एक एलान है, ताकि इसके ज़रीए से वे आगाह कर दिये जाएँ, ताकि वे जान लें कि वही एक माबूद (पूज्य) है, ताकि दानिशमंद (प्रबुद्ध) लोग नसीहत हासिल करें.**

नोटः– 'इस क़ुरआन के ज़रीए से लोगों को आगाह कर दिया जाए, ताकि लोग जान लें कि उनका माबूद सिर्फ़ एक है,' यह जुमला बताता है कि लोगों तक क़ुरआन को पहुँचाना कितना नागुज़ीर है, क्योंकि अब क़यामत तक के इंसानों के लिए ख़ुदा की बात जानने का क़ुरआन के सिवा दूसरा कोई ज़रिया नहीं.

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)
दावत का काम करने वालों को यह ख़ूब समझ लेना चाहिए कि लोगों तक पहुँचाने की चीज़ क्या है? वह सिर्फ़ क़ुरआन है, ना कि दूसरा–दूसरा लिटरेचर. क़ुरआन में यह कहीं नहीं फ़रमाया कि तुम इंसानी तस्नीफ़ात के ज़रीए से लोगों को डराओ, बल्कि फ़रमाया, इस क़ुरआन के ज़रीए से लोगों को डराओ.

सूरह–15. अल–हिज्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़० लाम० रा०. ये आयतें हैं किताब की और एक वाज़ेह (सुस्पष्ट) क़ुरआन की.

पारा – 14
2 वह वक़्त आएगा जब इन्कार करने वाले लोग तमन्ना करेंगे कि काश वे
मानने वाले बने होते. 3 उन्हें छोड़ो कि वे खाएं और फ़ायदा उठाएं और ख़याली उम्मीद उन्हें
भुलावे में डाले रखे, पस आइंदा वे जान लेंगे. 4 और हमने इससे पहले जिस बस्ती को भी हलाक
किया है उसका एक मुक़र्रर वक़्त लिखा हुआ था. 5 कोई क़ौम न अपने मुक़र्रर वक़्त से आगे
बढ़ती है और न पीछे हटती है.

6 और ये लोग कहते हैं कि ऐ वह शख़्स जिस पर नसीहत उतरी है तू बेशक दीवाना है. 7
अगर तू सच्चा है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता. 8 हम फ़रिश्तों को सिर्फ़ फ़ैसले के
लिए उतारते हैं और उस वक़्त लोगों को मोहलत नहीं दी जाती.

9 **यह याददिहानी (यानी यह क़ुरआन) हम ही ने उतारा है और हम ही इसके मुहाफ़िज़ (संरक्षक) हैं.**

नोटः– नबियों का आना बंद होना, किसी पुरअसरार सबब से नहीं था. इसका सबब सिर्फ़ यह था कि ख़ुदा का कलाम ‘क़ुरआन’ महफ़ूज़ हो गया. अब यह काफी हो गया कि हर ज़माना और हर नसल के लोगों तक इस महफ़ूज़ क़ुरआन को पहुँचा दिया जाए, गोया कि अब क़ुरआन पैग़म्बर का क़ायम मुक़ाम है.

10 और हम तुम से पहले गुज़री हुई क़ौमों में रसूल भेज चुके हैं. 11 और जो रसूल भी उनके पास आया, वे उसका मज़ाक़ उड़ाते रहे.

नोटः– ख़ुदा की तरफ़ से जितने भी पैग़ंबर आए लोगों ने उनका मज़ाक़ उड़ाया उनको तकलीफ़ें दीं, लोगों ने किसी पैग़ंबर का इस्तक़बाल नहीं किया, किसी पैग़ंबर के पीछे लोगों की भीड़ नहीं दौड़ी. ख़ुदा अपने इल्म से इस बात को पेशगी जानता था कि जिन पैग़ंबरों को वह अपने पैग़ाम के साथ भेज रहा है, इस पर लोगों का क्या response रहेगा. इसके बावजूद ख़ुदा पैग़ंबरों को भेजता रहा. इससे ख़ुदा का पैग़ाम लोगों तक पहुंचना, ख़ुदा की नज़र में कितना ज़रूरी है इस चीज़ की अहमियत वाज़ेह होती है, चाहे लोगों का response जो भी हो.

12 इस तरह हम यह (मज़ाक़) मुजरिमीन के दिलों में डाल देते हैं. 13 वे इसपर ईमान नहीं
लाएँगे. और यह दस्तूर अगलों से होता आया है. 14 और अगर हम उनपर आसमान का कोई
दरवाज़ा खोल देते जिस पर वे चढ़ने लगते 15 तब भी वे कह देते कि हमारी आंखों को धोखा हो
रहा है, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है.

16 और हमने आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के लिए उसे रौनक़ दी. 17 और
उसे हर शैतान मरदूद से महफ़ूज़ किया. 18 अगर कोई चोरी छुपे सुनने के लिए कान लगाता है तो
एक रोशन शोला उसका पीछा करता है.

19 और हमने ज़मीन को फैलाया और उसपर हमने पहाड़ रख दिए और उसमें हर चीज़ एक
नपेतुले पैमाने से उगाई. 20 और हमने तुम्हारे लिए उसमें मईशत (जीविका) के असबाब बनाए
और (हम उन जीवधारियों को भी रोज़ी देते हैं) जिन्हें तुम रोज़ी नहीं देते.

21 और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों और हम उसे एक मुअय्यन
(निर्धारित) पैमाने के साथ ही उतारते हैं. 22 और हम ही हवाओं को बारआवर (वर्षा लाने वाली)
बनाकर चलाते हैं. फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं, फिर उस पानी से तुम्हें सैराब करते हैं.
और तुम्हारे इख़्तियार में (बस में) न था कि तुम उसका ज़ख़ीरा (संचय) करके रखते.

23 और बेशक हम ही ज़िंदा करते हैं और हम ही मारते हैं. और हम ही बाक़ी रह जाएँगे 24
और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं. 25 और बेशक
तुम्हारा रब उन सबको इकट्ठा करेगा. वह इल्म वाला व हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

26 और हमने इंसान को सने हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया 27 और उससे
पहले जिन्नों को हमने आग की लपट से पैदा किया.

28 और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं सने हुए गारे की सूखी मिट्टी से एक बशर (इंसान) पैदा करने वाला हूँ. 29 जब मैं उसे पूरा बना लूं और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उसके लिए सज्दे में गिर पड़ना. 30 पस तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया 31 मगर इबलीस (शैतान), कि उसने सज्दा करने वालों का साथ देने से इन्कार कर दिया. 32 ख़ुदा ने कहा, ऐ इबलीस! तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ. 33 इबलीस ने कहा कि मैं ऐसा नहीं कि बशर को सज्दा करूँ जिसे तूने सने हुए गारे की सूखी मिट्टी से पैदा किया है.

34 ख़ुदा ने कहा, तू यहाँ से निकल जा, क्योंकि तू मरदूद (धुत्कारा हुआ) है, 35 और बेशक तुझ पर रोज़े-जज़ा (यानी बदले के दिन) तक लानत है.

36 **इबलीस ने कहा, ऐ मेरे रब! तू मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे जिस दिन लोग उठाए जाएँगे.** 37 **ख़ुदा ने कहा, तुझे मोहलत है** 38 **उस मुक़र्रर वक़्त के दिन तक.** 39 **इबलीस ने कहा, ऐ मेरे रब! जैसे तूने मुझे गुमराह किया है उसी तरह मैं ज़मीन में उनके लिए मुज़य्यन करुंगा (यानी बुराइयों को नेकियों के रूप में दिखाऊंगा) और सबको गुमराह कर दूँगा.** 40 **सिवा उनके जो तेरे चुने हुए बंदे हैं.**

नोटः– शैतान इन्सान के लिए दुश्मन के सिवा कुछ नहीं, लेकिन यह दुश्मन छुपा वार करने वाला दुश्मन है. यह दुश्मन ज़ेहन पर वार करता है, न कि जिस्म पर. अब इन्सान का यह काम है कि अपने इस छुपे दुश्मन को पहचाने और उसको ज़ेहन से बाहर खदेड़े.

इम्तिहानी मक़सद से शैतान को अगरचे इन्सान को गुमराह करने की छूट हासिल है, लेकिन अल्लाह तआला ने इन्सान को इस दुश्मन से आगाह किया और हिदायत का रास्ता बताया. अब यह इन्सान के अपने ऊपर है कि वह किस रास्ते का इन्तख़ाब करता है. इस तरह इस दुनिया में इन्सान हालते-इम्तहान में है. और इस इम्तहान में जो कामयाब होंगे वही ख़ुदा के चुने हुए बंदे होंगे.

41 अल्लाह ने फ़रमाया, यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुँचता है. 42 बेशक जो मेरे बंदे हैं उनपर तेरा ज़ोर नहीं चलेगा, मगर वह जो गुमराह हैं, वही तेरी पैरवी करेंगे. 43 और उन सबके लिए जहन्नम का वादा है. 44 उसके सात दरवाज़े हैं. हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं.

45 बेशक डरने वाले बाग़ों और चशमों (स्रोतों) में होंगे. 46 (उनसे कहा जाएगा,) दाख़िल हो जाओ इनमें सलामती और अमन के साथ. 47 और उनके सीनों की कदूरतें (कीने, मन-मुटाव) हम निकाल देंगे, सब भाई-भाई की तरह रहेंगे तख़्तों पर आमने-सामने. 48 वहाँ उन्हें कोई तकलीफ़ नहीं पहुँचेगी और न वे वहाँ से निकाले जाएँगे.

49 **मेरे बंदों को ख़बर दे दो कि मैं बख़्शने वाला, रहमत वाला हूँ** 50 **और मेरी सज़ा, दर्दनाक सज़ा है.**

नोटः– अल्लाह यह चाहता है कि '**ज़िंदगी की हक़ीक़त बताने वाला उसका पैग़ाम**' उसके बंदों तक पहुँच जाए और उसके बंदें यह जान लें कि ज़िंदगी का अंजाम दो शक्लों में सामने आने वाला है. इन्हीं दोनों अंजाम का नाम जन्नत और जहन्नम है.

51 और उन्हें इब्राहीम के मेहमानों से आगाह करो. 52 जब वे उसके पास आए फिर उन्होंने
सलाम किया. इब्राहीम ने कहा कि हम तुम लोगों से डरते हैं. 53 उन्होंने कहा कि अंदेशा न करो हम
तुम्हें एक लड़के की बशारत (शुभ सूचना) देते हैं जो बड़ा आलिम होगा. 54 इब्राहीम ने कहा, क्या
तुम इस बुढ़ापे में मुझे औलाद की बशारत देते हो. पस तुम किस चीज़ की बशारत मुझे दे रहे हो.
55 उन्होंने कहा कि हम तुम्हें हक़ के साथ बशारत देते हैं. पस तू नाउम्मीद होने वालों में से न हो.
56 इब्राहीम ने कहा कि अपने रब की रहमत से गुमराहों के सिवा और कौन नाउम्मीद हो सकता है.

57 इब्राहीम ने कहा, ऐ भेजे हुए फ़रिश्तो! अब तुम्हारी मुहिम क्या है. 58 उन्होंने कहा कि
हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं. 59 मगर लूत के घर वाले कि हम उन सबको बचा
लेंगे 60 सिवाय उसकी बीवी के, हमने ठहरा लिया है कि वह ज़रूर मुजरिम लोगों में रह जाएगी.

61 फिर जब भेजे हुए फ़रिश्ते लूत के ख़ानदान के पास आए. 62 उन्होंने कहा कि तुम लोग
अजनबी मालूम होते हो. 63 उन्होंने कहा कि नहीं, बल्कि हम तुम्हारे पास वह चीज़ लेकर आए हैं
जिसमें ये लोग शक करते हैं. 64 और हम तुम्हारे पास हक़ के साथ आए हैं, और हम बिल्कुल
सच्चे हैं. 65 पस तुम कुछ रात रहे अपने घर वालों के साथ निकल जाओ. और तुम उनके पीछे
चलो और तुम में से कोई पीछे मुड़कर न देखे और वहाँ चले जाओ जहाँ तुम्हें जाने का हुक्म है.
66 और हमने लूत के पास यह हुक्म भेजा कि सुबह होते ही उन लोगों की जड़ कट जाएगी.

67 और शहर के लोग ख़ुश होकर आए. 68 उसने कहा, ये लोग मेरे मेहमान हैं, तुम लोग
मुझे रुसवा न करो. 69 और तुम अल्लाह से डरो और मुझे ज़लील न करो. 70 उन्होंने कहा, क्या
हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों से (यानी अजनबी लोगों को सहारा देने से) मना नहीं कर दिया. 71
उसने कहा, ये मेरी बेटियाँ हैं, अगर तुम्हें करना है (तो इनसे निकाह कर लो).

72 तेरी जान की क़सम, वे अपनी सरमस्ती में मदहोश थे. 73 पस दिन निकलते ही उन्हें
चिंघाड़ ने पकड़ लिया. 74 फिर हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उन लोगों पर कंकर के
पत्थर की बारिश कर दी. 75 बेशक इसमें निशानियाँ हैं, ध्यान करने वालों के लिए. 76 और यह

बस्ती एक सीधी राह पर वाक़ेअ (स्थित) है. 77 बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए.

78 और अयकावाले (यानी क़ौमे-शुऐब के लोग) यक़ीनन ज़ालिम थे. 79 पस हमने उनसे इंतक़ाम लिया. और ये दोनों बस्तियां खुले रास्ते पर वाक़ेअ (स्थित) हैं. 80 और हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया. 81 और हमने उन्हें अपनी निशानियाँ दीं. मगर वे उससे मुँह फेरते रहे 82 और वे पहाड़ों को तराश कर उनमें घर बनाते थे कि अमन में रहें. 83 पस उन्हें सुबह के वक़्त सख़्त आवाज़ ने पकड़ लिया. 84 पस उनका किया हुआ उनके कुछ काम न आया.

85 और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है बामाना मक़सद (अर्थपूर्ण उद्देश्य) के बग़ैर नहीं बनाया और बिलाशुबहा क़यामत आने वाली है. पस तुम ख़ूबी के साथ दरगुज़र (क्षमा) करो. 86 बेशक तुम्हारा रब सबका ख़ालिक़ (सृष्टा) है, जानने वाला है.

87 और हमने तुम्हें सात मसानी (यानी बार-बार पढ़ी जाने वाली सात आयतें) और क़ुरआने-अज़ीम अता किया है.

88 **तुम इस दुनिया की मताअ (सुख—सामग्री) की तरफ़ आँख उठाकर न देखो जो हमने उनमें से मुख़्तलिफ़ लोगों को दी हैं और उनपर ग़म न करो और ईमान वालों पर अपने शफ़क़त (स्नेह) के बाज़ू झुका दो.**

नोटः– जो इंसान आख़िरत का मुसाफिर है वह इसी दुनिया में माल व मताअ समेटने की होड़ में शामिल नहीं होता. मौजूदा ज़िंदगी दुनिया चमकाने के लिए नहीं है, बल्कि अपनी आख़िरत चमकाने का पहला और आख़िरी मौक़ा है.

89 और कहो कि मैं एक खुला हुआ डराने वाला हूँ. 90 इसी तरह हमने तक़सीम करने वालों पर भी (किताब) उतारी थी 91 जिन्होंने अपने क़ुरआन के टुकड़े—टुकड़े कर दिए (यानी मनमर्ज़ी तावीलात और ताबीरात कीं). 92 पस तेरे रब की क़सम, हम उन सबसे ज़रूर पूछेंगे, 93 जो कुछ वे करते थे.

94 पस जिस चीज़ का तुम्हें हुक्म मिला है, उसे खोलकर सुना दो और मुशरिकों से एराज़ (उपेक्षा) करो. 95 हम तुम्हारी तरफ़ से उन मज़ाक़ उड़ाने वालों के लिए काफ़ी हैं 96 जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को शरीक करते हैं. पस अनक़रीब वे जान लेंगे. 97 और हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं उससे तुम्हारा दिल तंग होता है. 98 पस तुम अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह करो. और सज्दा करने वालों में से बनो 99 और अपने रब की इबादत करो. यहाँ तक कि तुम्हारे पास यक़ीनी बात आ जाए.

सूरह-16. अन-नहल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 आ गया अल्लाह का फ़ैसला, पस उसकी जल्दी न करो. वह पाक है और बरतर है उससे
जिसे वे शरीक ठहराते हैं. 2 वह फ़रिश्तों को अपने हुक्म से (अपने) पैग़ाम के साथ उतारता है
अपने बंदों में से जिस पर चाहता है कि लोगों को ख़बरदार कर दो कि मेरे सिवा कोई इबादत के
लायक़ नहीं. पस तुम मुझ से डरो. 3 उसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है.
वह बरतर है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं.

4 उसने इंसान को एक बूंद से बनाया. फिर वह यकायक खुल्लम खुल्ला झगड़ने लगा 5 और
उसने चौपायों को बनाया उनमें तुम्हारे लिए पोशाक भी है और ख़ुराक भी और दूसरे फ़ायदे भी,
और उनमें से खाते भी हो. 6 और उनमें तुम्हारे लिए रौनक़ है, जबकि शाम के वक़्त उन्हें (चरा
कर) लाते हो और जब सुबह के वक़्त (उन्हें चराने) ले जाते हो 7 और वे तुम्हारे बोझ ऐसे
मक़ामात तक पहुँचाते हैं, जहाँ तुम सख़्त मेहनत के बग़ैर नहीं पहुँच सकते थे. बेशक तुम्हारा रब
बड़ा शफ़ीक़ (करुणामय) और मेहरबान है. 8 और उसने घोड़े और ख़च्चर और गधे पैदा किए,
ताकि तुम उनपर सवार हो और ज़ीनत (साज-सज्जा) के लिए भी और वह ऐसी चीज़ें पैदा करता
है जो तुम नहीं जानते.

9 और अल्लाह तक पहुँचती है सीधी राह. और कुछ रास्ते टेढ़े भी हैं और अगर अल्लाह
चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता.

10 वही है (अल्लाह) जिसने आसमान से पानी उतारा, तुम उसमें से पीते हो और उसी से दरख़्त
होते हैं जिनमें तुम चराते हो. 11 वह उसी से तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर
और हर क़िस्म के फल उगाता है. बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं.

12 और उसने तुम्हारे काम में लगा दिया रात को और दिन को और सूरज को और चांद को
और सितारे भी उसके हुक्म के अधीन (ताबे) हैं. बेशक इसमें निशानियाँ हैं अक़्लमंद लोगों के
लिए. 13 और ज़मीन में जो चीज़ें मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तुम्हारे लिए फैलाईं, बेशक इसमें निशानी
है उन लोगों के लिए जो सबक़ हासिल करें.

14 और वही है जिसने समुंदर को तुम्हारे काम में लगा दिया, ताकि तुम उसमें से ताज़ा गोश्त
खाओ और उससे ज़ेवर निकालो जिसे तुम पहनते हो और तुम कश्तियों को देखते हो कि उसमें
चीरती हुई चलती हैं, ताकि तुम उसका फ़ज़्ल (अनुग्रह) तलाश करो, ताकि तुम शुक्र करो.

15 और उसने ज़मीन में पहाड़ रख दिए, ताकि वह तुम्हें लेकर डगमगाने न लगे और उसने

नहरें और रास्ते बनाए, ताकि तुम राह पाओ. 16 और बहुत सी दूसरी अलामतें (चिन्ह) भी हैं, और लोग तारों से भी रास्ता मालूम करते हैं.

17 फिर क्या जो पैदा करता है वह बराबर है उसके जो कुछ पैदा नहीं कर सकता, क्या तुम सोचते नहीं. 18 अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम उन्हें गिन न सकोगे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है. 19 और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो.

20 और जिन्हें लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वे ख़ुद पैदा किए हुए हैं. 21 वे मुर्दा हैं जिनमें जान नहीं और वे नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएँगे. 22 तुम्हारा माबूद एक ही माबूद (पूज्य) है, मगर जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुन्किर हैं और वे तकब्बुर (घमंड) करते हैं 23 अल्लाह यक़ीनन जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं. बेशक वह तकब्बुर करने वालों को पसंद नहीं करता.

24 और जब उनसे कहा जाए कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ उतारी है तो कहते हैं कि अगले लोगों की कहानियाँ,

25 **ताकि वे क़यामत के दिन अपने बोझ भी पूरे उठाएं और उन लोगों के बोझ में से भी जिन्हें वे बग़ैर किसी इल्म के गुमराह कर रहे हैं. याद रखो बहुत बुरा है वह बोझ जिसे वे उठा रहे हैं.**

नोटः– जो लोग दूसरों को बेबुनियाद बातों से गुमराह करते हैं, यह गुमराह करना, उन करने वालों के हक़ में बहुत ख़तरनाक है. वे ख़ुदा की नज़र में सादे मुजरिम नहीं हैं, बल्कि कई गुना बड़े मुजरिम हैं.

26 उनसे पहले वालों ने भी तदबीरें कीं. फिर अल्लाह उनकी इमारत पर बुनियादों से आ गया. पस छत ऊपर से उनके ऊपर गिर पड़ी और उनपर अज़ाब वहाँ से आ गया, जहाँ से उन्हें गुमान भी न था. 27 फिर क़यामत के दिन अल्लाह उन्हें रुसवा करेगा और कहेगा कि वे मेरे शरीक कहाँ हैं जिनके लिए तुम झगड़ा किया करते थे. जिन्हें इल्म दिया गया था, वे कहेंगे कि आज रुसवाई और अज़ाब है मुन्किरों पर.

28 जिन लोगों को फ़रिश्ते इस हाल में वफ़ात (मौत) देंगे कि वे अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे होंगे तो उस वक़्त वे सिपर डाल देंगे (यानी पूरी तरह सरेंडर हो जाएँगे) कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे, हां बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते थे. 29 अब जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल

हो जाओ. उसमें हमेशा-हमेशा रहो. पस कैसा बुरा ठिकाना है तकब्बुर (घमंड) करने वालों का.

30 और जो तक़वा वाले (यानी ख़ुदा से डरने वाले) हैं उनसे कहा गया कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ उतारी है तो उन्होंने कहा कि नेक बात. जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत का घर बेहतर है और क्या ख़ूब घर है तक़वा वालों का. 31 हमेशा रहने के बाग़ हैं जिनमें वे दाख़िल होंगे, उनके नीचे से नहरें जारी होंगी. उनके लिए वहाँ सब कुछ होगा जो वे चाहें, अल्लाह परहेज़गारों को ऐसा ही बदला देगा. 32 जिनकी रूह फ़रिश्ते इस हालत में क़ब्ज़ करते हैं कि वे पाक हैं. फ़रिश्ते कहते हैं तुम पर सलामती हो, जन्नत में दाख़िल हो जाओ, अपने आमाल के बदले में.

33 क्या ये लोग इसके मुंतज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएं या तुम्हारे रब का हुक्म आ जाए. ऐसा ही उनसे पहले वालों ने किया. और अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे. 34 फिर उन्हें उनके बुरे काम की सज़ाएं मिलीं. और जिस चीज़ का वे मज़ाक़ उड़ाते थे उसने उन्हें घेर लिया.

35 और जिन लोगों ने शिर्क किया वे कहते हैं, अगर अल्लाह चाहता तो हम उसके सिवा किसी चीज़ की इबादत न करते, न हम और न हमारे बाप-दादा, और न हम उसके (हुक्म के) बग़ैर किसी चीज़ को हराम ठहराते. ऐसा ही उनसे पहले वालों ने किया था, पस रसूलों के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़—साफ़ पहुँचा देना है.

36 और हमने हर उम्मत में एक रसूल भेजा (इस पैग़ाम के साथ) कि अल्लाह की इबादत करो और ताग़ूत (बड़ा उपद्रवी यानी शैतान) से बचो, पस उनमें से कुछ को अल्लाह ने हिदायत दी और किसी पर गुमराही साबित हुई. पस ज़मीन में चल फिरकर देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ. 37 अगर तुम उनकी हिदायत के हरीस (लालसा रखने वाले) हो तो (जान लो कि) अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह कर देता है और ऐसे लोगों का कोई मददगार नहीं.

38 और ये लोग अल्लाह की क़समें खाते हैं, सख़्त क़समें कि जो शख़्स मर जाएगा अल्लाह उसे (कभी) नहीं उठाएगा. क्यों नहीं, (वह तुम्हें ज़रूर उठाएगा) यह उसके ऊपर एक पक्का वादा है, लेकिन अकसर लोग नहीं जानते. 39 ताकि उनके सामने उस चीज़ को खोल दे जिसमें वे इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं और इन्कार करने वाले लोग जान लें कि वे झूठे थे. 40 जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो इतना ही हमारा कहना होता है कि हम उसे कहते हैं, हो जा, तो वह हो जाती है.

41 और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए अपना वतन छोड़ा, बाद इसके कि उनपर ज़ुल्म किया गया, हम उन्हें दुनिया में ज़रूर अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का सवाब तो बहुत बड़ा है, काश वे जानते. 42 वे ऐसे (लोग) हैं जो सब्र करते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं.

43 और हमने तुम से पहले भी आदमियों ही को रसूल बनाकर भेजा, जिनकी तरफ़ हम 'वही' (यानी ईश-संदेश प्रकट) करते थे, पस अहले-इल्म से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते.

44 हमने भेजा था उन्हें दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) और किताबों के साथ. और हमने तुम पर भी याददिहानी उतारी (यानी उपदेश-ग्रंथ उतारा), ताकि तुम लोगों पर उस चीज़ को वाज़ेह कर दो जो उनकी तरफ़ उतारी गई है, ताकि वे ग़ौर करें.

45 क्या वे लोग जो बुरी तदबीरें कर रहे हैं, वे इस बात से बेफ़िक्र हैं कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा दे या उनपर अज़ाब वहाँ से आ जाए जहाँ से उन्हें गुमान भी न हो 46 या उन्हें चलते-फिरते पकड़ ले, तो वे लोग ख़ुदा को आजिज़ नहीं कर सकते 47 या (ऐसा भी हो सकता है कि) उन्हें उस (आने वाली मुसीबत) का खटका लगा हुआ हो (और वे उस से बचने की फ़िक्र में हों) तब उन्हें पकड़ ले. पस तुम्हारा रब शफ़ीक़ (करुणामय) और मेहरबान है.

48 क्या वे नहीं देखते कि अल्लाह ने जो चीज़ भी पैदा की है उसके साये दाईं तरफ़ और बाईं तरफ़ झुक जाते हैं, अल्लाह को सज्दा करते हुए, और वे सब आजिज़ (नम्र) हैं. 49 और अल्लाह ही को सज्दा करती हैं जितनी चीज़ें चलने वाली आसमानों और ज़मीन में हैं. और फ़रिश्ते भी और वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते. 50 वे अपने ऊपर अपने रब से डरते हैं और वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है. अस्-सज्दा

51 और अल्लाह ने फ़रमाया कि दो माबूद (पूज्य) मत बनाओ. वह एक ही माबूद है तो मुझ ही से डरो 52 और उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है. और उसी की इताअत (आज्ञापालन) है हमेशा. तो क्या तुम अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो.

53 और तुम्हारे पास जो नेमत भी है वह अल्लाह ही की तरफ़ से है. फिर जब तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है तो उससे फ़रियाद करते हो. 54 फिर जब वह तुम से तकलीफ़ दूर कर देता है तो तुम में से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है, 55 ताकि मुन्किर हो जाएँ उस चीज़ से जो हमने उन्हें दी है. पस चंद रोज़ फ़ायदे उठा लो. जल्द ही तुम जान लोगे. 56 और ये लोग हमारी दी हुई चीज़ों में से उनका हिस्सा लगाते हैं जिनके मुतआल्लिक़ उन्हें कुछ इल्म नहीं. ख़ुदा की क़सम, जो झूठ तुम गढ़ रहे हो उसकी तुम से ज़रूर बाज़पुर्स (पूछगछ) होगी.

57 और वे अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं, वह उससे पाक है, और अपने लिए वह (पसंद करते हैं) जो दिल चाहता है. 58 और जब उनमें से किसी को बेटी की ख़ुशख़बरी दी जाए तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और वह जी में घुटता रहता है. 59 जिस चीज़ की उसे ख़ुशख़बरी दी गई है, उससे आर (यानी शरम महसूस) करते हुए लोगों से छुपा फिरता है. (और इस सोच में पड़ जाता है कि) उसे ज़िल्लत के साथ रख छोड़े या उसे मिट्टी में गाड़ दे. क्या ही बुरा फ़ैसला है जो वे करते हैं. 60 बुरी मिसाल है उन लोगों के लिए जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते. और अल्लाह के लिए आला मिसालें हैं. वह ग़ालिब और हकीम (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) है.

61 और अगर अल्लाह लोगों को उनके ज़ुल्म पर पकड़ता तो ज़मीन पर किसी जानदार को भी नहीं छोड़ता. लेकिन वह एक मुक़र्रर वक़्त तक लोगों को मोहलत देता है. फिर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ जाएगा तो वे न एक घड़ी पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे.

62 और वे अल्लाह के लिए वह चीज़ ठहराते हैं जिसे अपने लिए नापसंद करते हैं और उनकी ज़बानें झूठ बयान करती हैं कि उनके लिए भलाई है. लाज़िमन (निश्चय ही) उनके लिए दोज़ख़ है और वे ज़रूर उसमें पहुँचा दिए जाएँगे.

63 ख़ुदा की क़सम हमने तुम से पहले मुख़्तलिफ़ क़ौमों की तरफ़ रसूल भेजे. फिर शैतान ने उनके काम उन्हें अच्छे करके दिखाए. पस वही आज उनका साथी है और उनके लिए एक दर्दनाक अज़ाब है. 64 और हमने तुम पर किताब सिर्फ़ इसलिए उतारी है कि तुम उन्हें वह चीज़ खोल कर सुना दो जिसमें वे इख़्तिलाफ़ (मत—भिन्नता) कर रहे हैं और वह हिदायत व रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ.

65 और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा. फिर उससे ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िंदा कर दिया. बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सुनते हैं.

66 और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में सबक़ है. हम उनके पेटों के अंदर के गोबर और ख़ून के दरमियान से तुम्हें ख़ालिस दूध पिलाते है, ख़ुशगवार पीने वालों के लिए 67 और खजूर और अंगूर के फलों से भी (हम तुम्हें सेहतमन्द ग़िज़ा देते हैं). तुम उनसे नशे की चीज़ें भी बनाते हो और खाने की अच्छी चीज़ें भी. बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं.

68 और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर 'वही' की (उसे अंतःप्रेरणा दी) कि पहाड़ों और दरख़्तों और जहाँ टट्टियां बांधते हैं उनमें घर बना. 69 फिर हर क़िस्म के फलों का रस चूस और अपने रब की हमवार की हुई राहों पर चल. उनके पेटों से पीने की चीज़ निकलती है, उसके रंग मुख़्तलिफ़ हैं, उसमें लोगों के लिए शिफ़ा (आरोग्य) है. बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं.

70 और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वही तुम्हें वफ़ात (मौत) देता है. और तुम में से कुछ वे हैं जो नाकारा उम्र तक पहुँचाए जाते हैं कि जानने के बाद वे कुछ न जानें. बेशक अल्लाह इल्म वाला है, क़ुदरत वाला है.

71 और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर रोज़ी में बड़ाई दी है. पस जिन्हें बड़ाई दी गई है, वे अपनी रोज़ी अपने ग़ुलामों को नहीं दे देते कि वे उसमें बराबर हो जाएँ. फिर क्या वे अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं.

72 और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम ही में से बीवियां बनाईं और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किए और तुम्हें सुथरी चीज़ें खाने के लिए दीं. फिर क्या ये बातिल (असत्य) पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं. 73 और वे अल्लाह के सिवा उन चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनके लिए आसमान से किसी रोज़ी पर इख़्तियार रखती हैं और न ज़मीन से, और न वे क़ुदरत रखती हैं. 74 पस तुम अल्लाह के लिए मिसालें न बयान करो. बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते.

75 और अल्लाह मिसाल बयान करता है एक ग़ुलाम ममलूक की, जो किसी चीज़ पर इख़्तियार नहीं रखता, और एक शख़्स है जिसे हमने अपने पास से अच्छा रिज़्क़ दिया है, वह उसमें से पोशीदा और एलानिया ख़र्च करता है. क्या ये यकसां (समान) होंगे. सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, लेकिन उनमें अकसर लोग नहीं जानते.

76 अल्लाह एक और मिसाल बयान करता है कि दो शख़्स हैं जिनमें से एक गूंगा है, कोई काम नहीं कर सकता और वह अपने मालिक पर एक बोझ है. वह उसे जहाँ भेजता है, वह कोई काम दुरुस्त करके नहीं लाता. क्या वह और ऐसा शख़्स बराबर हो सकते हैं जो इंसाफ़ की तालीम देता है और वह एक सीधी राह पर है.

77 और आसमानों और ज़मीन की पोशीदा (छुपी) बातें अल्लाह ही के लिए हैं और क़यामत का मामला बस ऐसा होगा जैसे आँख झपकना, बल्कि इससे भी जल्द. बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है.

78 और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेटों से निकाला, तुम किसी चीज़ को न जानते थे. और उसने तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल बनाए, ताकि तुम शुक्र करो.

79 क्या लोगों ने परिंदों को नहीं देखा कि आसमान की फ़ज़ा में मुसख़्ख़र हो रहे हैं (यानी अल्लाह ने उन्हें किस तरह फ़ज़ा में उड़ने का सामर्थ्य प्रदान किया है). उन्हें सिर्फ़ अल्लाह थामे हुए है. बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ. 80 और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को सुकून का मक़ाम बनाया और तुम्हारे लिए जानवरों की खाल के घर बनाए जिन्हें

तुम अपने सफ़र के दिन और क़याम के दिन हल्का पाते हो. और उनकी ऊन और उनके रूयें और उनके बालों से घर का सामान और फ़ायदे की चीज़ें एक मुद्दत तक के लिए बनाईं.

81 और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों के साये बनाए और तुम्हारे लिए पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई (यानी आश्रयस्थान बनाए) और तुम्हारे लिए ऐसे लिबास बनाए जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं और ऐसे लिबास बनाए जो लड़ाई में तुम्हें बचाते हैं. इस तरह अल्लाह तुम पर अपनी नेमतें पूरी करता है, ताकि तुम फ़रमांबरदार बनो.

82 **तो अब अगर वे एराज़ (उपेक्षा) करें तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है.**

नोटः- मदू जो चाहे रिस्पॉन्स देने के लिए आज़ाद है, लेकिन दाई की यह ज़िम्मेदारी है कि अल्लाह का पैग़ाम मदू तक पूरी ख़ैरख़ाही के साथ पहुँचा दे.

83 वे लोग ख़ुदा की नेमत को पहचानते हैं, फिर वे उसके मुन्किर हो जाते हैं और उनमें अकसर नाशुक्र हैं.

84 और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उठाएंगे. फिर इन्कार करने वालों को न (हीले पेश करने की) इजाज़त दी जाएगी. और न उनसे तौबा ली जाएगी. 85 और जब ज़ालिम लोग अज़ाब को देखेंगे तो वह अज़ाब न उनसे हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी.

86 और जब मुशरिक (बहुदेववादी) लोग अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे रब! यही हमारे वे शुरका (ईश्वरत्व के साझीदार) हैं जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारते थे. तब वे बात उनके ऊपर डाल देंगे कि तुम झूठे हो. 87 और उस दिन वे अल्लाह के आगे झुक जाएँगे और उनकी इफ़्तिरा-परदाज़ियां उनसे गुम हो जाएँगी (यानी गढ़े हुए झूठ उनसे गुम हो जाएँगे). 88
जिन्होंने इन्कार किया और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोका, हम उनके अज़ाब पर अज़ाब का इज़ाफ़ा करेंगे उस फ़साद की वजह से जो वे करते थे.

89 और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उन्हीं में से उनपर उठाएंगे और तुम्हें उन लोगों पर गवाह बना कर लाएँगे और हमने तुम पर किताब उतारी है हर चीज़ को खोल देने के लिए. वह हिदायत और रहमत और बशारत (शुभ सूचना) है फ़रमांबरदारों के लिए.

90 बेशक अल्लाह हुक्म देता है अद्ल (न्याय) का और एहसान (परोपकार) का और क़राबतदारों (रिश्तेदारों) को देने का. और अल्लाह रोकता है बेहयाई के कामों से और बुराई से और सरकशी से. अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम याददिहानी (यानी सबक़) हासिल करो.

91 और तुम अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) को पूरा करो, और तुम (आपस में) अहद कर लो. तो क़समों को पक्का करने के बाद न तोड़ो. और तुम अल्लाह को ज़ामिन भी बना चुके हो. बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो. 92 और तुम उस औरत की मानिंद न बनो जिसने अपना मेहनत से काता हुआ सूत टुकड़े–टुकड़े करके तोड़ दिया. तुम अपनी क़समों को आपस में फ़साद डालने का ज़रिया बनाते हो, महज़ इस लिए कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए. अल्लाह इसके ज़रीए से तुम्हारी आज़माइश करता है और वह क़यामत के दिन उस चीज़ को अच्छी तरह तुम पर ज़ाहिर कर देगा जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ (मत–भिन्नता) कर रहे हो.

93 और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वह बेराह कर देता है जिसे चाहता है और हिदायत दे देता है जिसे चाहता है और ज़रूर तुम से तुम्हारे आमाल की पूछ होगी.

94 और तुम अपनी क़समों को आपस में फ़रेब का ज़रिया न बनाओ कि कोई क़दम जमने के बाद फिसल जाए और तुम इस बात की सज़ा चखो कि तुमने अल्लाह की राह से रोका और तुम्हारे लिए एक बड़ा अज़ाब है. 95 और अल्लाह के अहद (वचन) को थोड़े फ़ायदे के लिए न बेचो. जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो.

96 जो कुछ तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बाक़ी रहने वाला है. और जो लोग सब्र करेंगे, हम उनके कामों का अच्छे से अच्छा अज्र उन्हें ज़रूर देंगे. 97 जो शख़्स कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो हम उसे ज़िंदगी देंगे, एक अच्छी ज़िंदगी. और जो कुछ वे करते रहे उसका हम उन्हें बेहतरीन बदला देंगे.

98 पस जब तुम क़ुरआन को पढ़ो तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँगो. 99 उसका ज़ोर उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान वाले हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं. 100 उसका ज़ोर सिर्फ़ उन लोगों पर चलता है जो उससे ताल्लुक़ रखते हैं और जो अल्लाह के साथ शिर्क करते हैं.

101 और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलते हैं, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वह उतारता है, तो वे कहते हैं कि (यह पैग़ाम) तुम गढ़ लाए हो, बल्कि उनमें अकसर लोग इल्म नहीं रखते. 102 कहो कि इसे रूहुल–क़ुदुस (पवित्र आत्मा) ने तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ उतारा है, ताकि वह ईमान वालों को साबित क़दम रखे और वह हिदायत और ख़ुशख़बरी हो फ़रमांबरदारों के लिए.

103 और हमें मालूम है कि ये लोग कहते हैं कि इसे तो एक आदमी सिखाता है. जिस शख़्स की तरफ़ वे मंसूब करते हैं. उसकी ज़बान अजमी (ग़ैर–अरबी) है और यह क़ुरआन साफ़ अरबी ज़बान में है. 104 बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, अल्लाह उन्हें

कभी राह नहीं दिखाएगा और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है. 105 झूठ तो वे लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते. और ऐसे ही लोग झूठे हैं.

106 जो शख़्स ईमान लाने के बाद अल्लाह का इन्कार करेगा, सिवा उसके जिस पर ज़बरदस्ती की गई हो, बशर्ते कि उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो, लेकिन जो शख़्स दिल खोलकर मुन्किर हो जाए (हक़ का इन्कार करे) तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उन्हें बड़ी सज़ा होगी. 107 यह इस वास्ते कि उन्होंने आख़िरत के (यानी मृत्यु-पश्चात ज़िंदगी के) मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी को पसंद किया और अल्लाह मुन्किरों को रास्ता नहीं दिखाता. 108 ये वे लोग हैं कि अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आंखों पर मुहर कर दी है और ये लोग बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं. 109 लाज़िमी बात है कि आख़िरत में ये लोग घाटे में रहेंगे.

110 फिर तेरा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने आज़माइश में डाले जाने के बाद हिजरत की (यानी अल्लाह और उसके दीन के लिए अपना वतन छोड़ा), फिर जिहाद किया और क़ायम रहे, तो इन बातों के बाद बेशक तेरा रब बख़्शने वाला, मेहरबान है. 111 जिस दिन हर शख़्स अपनी ही तरफ़दारी में बोलता हुआ आएगा. और हर शख़्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा और उनपर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा.

112 अल्लाह एक बस्ती की मिसाल बयान करता है कि वह बस्ती अमन व इत्मीनान में थी. बस्ती वालों को उनका रिज़्क़ फ़राग़त के साथ हर तरफ़ से पहुँच रहा था. फिर उन्होंने ख़ुदा की नेमतों की नाशुक्री की तो अल्लाह ने उन्हें उनके आमाल के सबब से भूख और ख़ौफ़ का मज़ा चखाया. 113 और उनके पास एक रसूल उन्हीं में से आया तो उसे उन्होंने झूठा बताया फिर उन्हें अज़ाब ने पकड़ लिया और वे ज़ालिम थे.

114 पस जो चीज़ें अल्लाह ने तुम्हें हलाल और पाक दी हैं उनमें से खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो. अगर तुम उसकी इबादत करते हो. 115 उसने तो तुम पर सिर्फ़ मुरदार को हराम किया है और ख़ून को और सूअर के गोश्त को और जिस पर ग़ैरुल्लाह (यानी अल्लाह के सिवा दूसरों) का नाम लिया गया हो. फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए, बशर्ते कि वह न तालिब हो और न हद से बढ़ने वाला हो, तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.

116 और अपनी ज़बानों के गढ़े हुए झूठ की बिना पर यह न कहो कि यह हलाल है, और यह हराम है कि तुम अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाओ. जो लोग अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाएंगे वे फ़लाह (सफलता) नहीं पाएंगे. 117 वे थोड़ा सा फ़ायदा उठा लें, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है.

118 और यहूदियों पर हमने वे चीज़ें हराम कर दी थीं जो हम इससे पहले तुम्हें बता चुके हैं कि हमने उनपर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे.

119 फिर तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने जहालत से बुराई कर ली, उसके बाद तौबा की और अपनी इसलाह की तो तुम्हारा रब उसके बाद बख़्शने वाला मेहरबान है.

120 बेशक इब्राहीम एक अलग उम्मत था, अल्लाह का फ़रमांबरदार, और उसकी तरफ़ यकसू (एकाग्रचित्त), और वह शिर्क करने वालों में से न था (यानी ख़ुदा का साझीदार बनाने वालों
में से नहीं था). 121 वह उसकी नेमतों का शुक्र करने वाला था. ख़ुदा ने उसे चुन लिया था. और
सीधे रास्ते की तरफ़ उसकी रहनुमाई की. 122 और हमने उसे दुनिया में भी भलाई दी और
आख़िरत में भी वह अच्छे लोगों में से होगा. 123 फिर हमने तुम्हारी तरफ़ 'वही' की (यानी
ईश-वाणी प्रकट की), कि इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करो जो यकसू था और वह शिर्क करने
वालों में से न था.

124 सबत उन्हीं लोगों पर आयद किया गया था जिन्होंने उसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया था. और बेशक तुम्हारा रब क़यामत के दिन उनके दरमियान फ़ैसला कर देगा जिस बात में वे इख़्तिलाफ़ कर रहे थे.

125 **अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिकमत (सूझबूझ) और अच्छी नसीहत के साथ बुलाओ और उनसे अच्छे तरीक़े से बहस करो. बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसकी राह से भटका हुआ है और वह उन्हें भी ख़ूब जानता है जो राह पर चलने वाले हैं.**

नोटः– दावत का अमल एक ऐसा अमल है जो इंतहाई संजीदगी और ख़ैरख़ाही के जज़्बे के तहत उभरता है. ख़ुदा के सामने जवाबदेही का एहसास आदमी को मजबूर करता है कि वह ख़ुदा के बंदों के सामने दाई बन कर खड़ा हो. वह दूसरों को इसलिए पुकारता है, क्योंकि वह समझता है कि मैंने अगर ऐसा नहीं किया तो क़यामत के दिन मैं पकड़ा जाऊँगा. इस नफ़्सियात का फ़ितरी (स्वाभाविक) नतीजा है कि आदमी का दावती अमल वह अंदाज़ इख़्तियार कर लेता है जिसे हिकमत, अच्छी नसीहत और अच्छी बहस कहा गया है.

126 और अगर तुम बदला लो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ किया गया है
और अगर तुम सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के लिए बहुत बेहतर है 127 और सब्र करो और
तुम्हारा सब्र ख़ुदा ही की तौफ़ीक़ से है और तुम उनपर ग़म न करो और जो कुछ तदबीरें वे कर रहे

हैं उससे तंग दिल न हो. 128 बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जो परहेज़गार (यानी अल्लाह की पकड़ का अंदेशा रखते हुए ज़िंदगी गुज़ारने वाले) हैं और जो नेकी करने वाले हैं.

पारा – 15

सूरह–17. बनी इसराईल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 पाक है वह जो ले गया एक रात अपने बंदे को मसजिदे-हराम से दूर की उस मस्जिद तक जिसके माहौल को हमने बाबरकत बनाया है, ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएं. बेशक वह सुनने वाला, देखने वाला है.

2 और हमने मूसा को किताब दी और उसे बनी इसराईल के लिए हिदायत बनाया कि मेरे सिवा किसी को अपना कारसाज़ (कार्य—साधक) न बनाओ. 3 तुम उन लोगों की औलाद हो जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था, बेशक वह एक शुक्रगुज़ार बंदा था.

4 और हमने बनी इसराईल को किताब में बता दिया था कि तुम दो मर्तबा ज़मीन में ख़राबी करोगे और बड़ी सरकशी दिखाओगे. 5 फिर जब उनमें से पहला वादा आया तो हमने तुम पर अपने बंदे भेजे, निहायत ज़ोर वाले. वे घरों में घुस पड़े और वादा पूरा होकर रहा. 6 फिर हमने तुम्हारी बारी उनपर लौटा दी और माल व औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हें ज़्यादा बड़ी जमात बना दिया.

7 अगर तुम अच्छा काम करोगे तो तुम अपने लिए अच्छा करोगे और अगर तुम बुरा काम करोगे तब भी अपने लिए बुरा करोगे. फिर जब दूसरे वादे का वक़्त आया तो हमने और बंदे भेजे कि वे तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें और मस्जिद (यानी बैतुल-मक़्दिस) में घुस जाएँ जिस तरह उसमें पहली बार घुसे थे और जिस चीज़ पर उनका ज़ोर चले उसे बर्बाद कर दें. 8 बईद (असंभव) नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर रहम करे. और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी वही करेंगे और हमने जहन्नम को मुन्किरीन के लिए क़ैदख़ाना बना दिया है.

9 बिला शुबहा यह क़ुरआन वह राह दिखाता है जो बिल्कुल सीधी है और वह बशारत (शुभ सूचना) देता है ईमान वालों को जो अच्छे अमल करते हैं कि उनके लिए बड़ा अज्र (प्रतिफल) है. 10 और यह कि जो लोग आख़िरत को (यानी मृत्यु-पश्चात जीवन को) नहीं मानते, उनके लिए हमने एक दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है.

11 और इंसान बुराई माँगता है जिस तरह उसे भलाई माँगना चाहिए और इंसान बड़ा जल्दबाज़ है. 12 हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया. फिर हमने रात की निशानी को मिटा दिया और दिन की निशानी को हमने रोशन कर दिया, ताकि तुम अपने रब का फ़ज़्ल

(अनुग्रह) तलाश करो और ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम करो. और हमने हर चीज़ को ख़ूब खोलकर बयान किया है.

13 और हमने हर इंसान की क़िस्मत उसके गले के साथ बांध दी है. और हम क़यामत के दिन उसके लिए एक किताब निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा. 14 पढ़ अपनी किताब. आज अपना हिसाब लेने के लिए तू ख़ुद ही काफ़ी है. 15 जो शख़्स हिदायत की राह चलता है तो वह अपने ही लिए चलता है. और जो शख़्स बेराह होता है, वह भी अपने ही नुक़सान के लिए बेराह होता है. और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा. और हम कभी सज़ा नहीं देते जब तक हम किसी रसूल को न भेजें.

16 और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं तो उसके ख़ुश-ऐश (संपन्न) लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे उसमें नाफ़रमानी करते हैं. तब उनपर बात साबित हो जाती है. फिर हम उस बस्ती को तबाह व बर्बाद कर देते हैं. 17 और नूह के बाद हमने कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं. और तेरा रब काफ़ी है अपने बंदों के गुनाहों को जानने के लिए और उन्हें देखने के लिए.

18 जो शख़्स आजिला (जल्द हासिल होने वाली दुनिया) को चाहता हो, उसे हम उसमें से दे देते हैं, जितना भी हम जिसे देना चाहें. फिर हमने उसके लिए जहन्नम ठहरा दी है, वह उसमें दाख़िल होगा बदहाल और रांदह (ठुकराया हुआ) होकर. 19 और जिसने आख़िरत को चाहा और उसके लिए दौड़-धूप की, जैसी दौड़-धूप करना चाहिए और वह मोमिन हो तो ऐसे लोगों की कोशिश मक़बूल होगी.

20 हम हर एक को तेरे रब की बख़्शिश में से पहुँचाते हैं, इन्हें भी और उन्हें भी. और तेरे रब की बख़्शिश किसी के ऊपर बंद नहीं. 21 देखो हमने उनके एक को दूसरे पर किस तरह फ़ौक़ियत (प्राधान्य) दी है. और यक़ीनन आख़िरत और भी ज़्यादा बड़ी है दर्जे के एतबार से और फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) के एतबार से.

22 तू अल्लाह के साथ किसी और को माबूद (पूज्य) न बना, वरना तू मलामत-ज़दा (निंदित) और बेकस होकर रह जाएगा. 23 और तेरे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा सलूक करो. अगर वे तेरे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ, उनमें से एक या दोनों, तो उन्हें उफ़ न कहो और न उन्हें झिड़को, और उनसे एहतराम के साथ बात करो. 24 और उनके सामने नर्मी से इज्ज़ के बाज़ू झुका दो (यानी उनके साथ पूरी तरह नम्रतापूर्वक व्यवहार करो). और कहो कि ऐ रब! इन दोनों पर रहम फ़रमा जैसा कि इन्होंने मुझे बचपन में पाला. 25 तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है. अगर तुम नेक रहोगे तो वह तौबा करने वालों को माफ़ कर देने वाला है.

26 **और रिश्तेदार को उसका हक़ दो और मिस्कीन को और मुसाफ़िर को. और फ़ुज़ूलख़र्च न करो.** 27 **बेशक फ़ुज़ूलख़र्च करने वाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है.**

नोटः– हदीस में आया है कि '**नहर पर भी पानी ज़ाया मत करो**'. इस हुक्म में जो हिकमत है उससे बंदे के अंदर शुक्र का एहसास पैदा करना मतलूब है, जबकि इंसानों का दुश्मन शैतान इंसानों के अंदर नाशुक्री पैदा करना चाहता है इसीलिए वह उन्हें फ़ुज़ूलख़र्ची की तरग़ीब देता है. शैतान चाहता है कि इंसानों का माल वक़्ती (क्षणिक) ख़्वाहिशों में लूट जाए, ताकि इंसान अपने रब को राज़ी करने के कामों में अपना माल न लगा सके.

ख़ुदा को मौजूदा दुनिया में अपने बंदों से सादा ज़िंदगी मतलूब है, ताकि उनकी सारी तवज्जोह हक़ीक़ी ज़िंदगी की तामीर पर लगी रहे. इंसान की ख़्वाहिशें सच्चे माने में, मौजूदा दुनिया में कभी पूरी होने वाली नहीं हैं. जैसा कि हदीस में आया है कि '**हक़ीक़ी ख़ुशियों की ज़िंदगी सिर्फ़ आख़िरत में मुमकिन है.**' इंसान की भलाई इसी में है कि वह ज़िंदगी की इस हक़ीक़त को समझे और उसी के मुताबिक़ अपने ज़िंदगी का नक़्शा बनाए और ज़िंदगी की इस हक़ीक़त से दूसरों को आगाह करे.

28 और अगर तुम्हें अपने रब के फ़ज़्ल (अनुग्रह) के इंतज़ार में जिसकी तुम्हें उम्मीद है, उनसे एराज़ करना (बचना) पड़े तो तुम उनसे नर्मी की बात कहो.

29 और न तो अपना हाथ गर्दन से बांध लो और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ दो कि तुम मलामत-ज़दा (निंदित) और आजिज़ (असहाय) बनकर रह जाओ. 30 बेशक तेरा रब जिसे चाहता है ज़्यादा रिज़्क़ देता है. और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है. बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है.

31 और अपनी औलाद को मुफ़लिसी के अंदेशे से क़तल न करो, हम उन्हें भी रिज़्क़ देते हैं और तुम्हें भी. बेशक उन्हें क़तल करना बड़ा गुनाह है. 32 और ज़िना (व्यभिचार) के क़रीब न जाओ, वह बेहयाई है और बुरा रास्ता है.

33 और जिस जान को ख़ुदा ने मुहतरम ठहराया है उसे क़तल मत करो, मगर हक़ पर. और जो शख़्स नाहक़ क़तल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इख़्तियार दिया है. पस वह क़तल में हद से न गुज़रे, उसकी मदद की जाएगी.

34 और तुम यतीम (अनाथ) के माल के पास न जाओ, मगर जिस तरह कि बेहतर हो.

यहाँ तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए. और अहद (वचन) को पूरा करो. बेशक अहद की पूछ होगी. 35 और जब नाप कर दो तो पूरा नापो और ठीक तराज़ू से तोल कर दो. यह बेहतर तरीक़ा है और उसका अंजाम भी अच्छा है.

36 और ऐसी चीज़ के पीछे न लगो जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं. बेशक कान और आँख और दिल सब की आदमी से पूछ होगी. 37 और ज़मीन में अकड़ कर न चलो. तुम ज़मीन को फाड़ नहीं सकते और तुम पहाड़ों की ऊंचाई के बराबर हो नहीं सकते. 38 ये सारे बुरे काम तेरे रब के नज़दीक नापसंदीदा हैं.

39 ये उन हिकमत वाली (विवेकपूर्ण) बातों में से हैं जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी तरफ़ 'वही' की हैं (प्रकट की है). और अल्लाह के साथ कोई और माबूद न बनाना, वरना तुम जहन्नम में डाल दिए जाओगे, मलामत-ज़दा (निंदित) और रांदह (ठुकराया हुआ) होकर.

40 क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुनकर दिए और अपने लिए फ़रिश्तों में से बेटियाँ बना लीं. बेशक तुम बड़ी सख़्त बात कहते हो. 41 **और हमने इस क़ुरआन में तरह-तरह से बयान किया है, ताकि वे याददिहानी (अनुस्मरण) हासिल करें.** लेकिन उनकी बेज़ारी बढ़ती ही जाती है. 42 कहो कि अगर अल्लाह के साथ और भी माबूद (पूज्य) होते जैसा कि ये लोग कहते हैं तो वे अर्श वाले की तरफ़ ज़रूर रास्ता निकालते. 43 अल्लाह पाक और बरतर है उससे जो ये लोग कहते हैं. 44 सातों आसमान और ज़मीन और जो उनमें हैं सब उसकी पाकी बयान करते हैं. और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान न करती हो. मगर तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते. बिला शुबहा वह हिल्म (उदारता) वाला, बख़्शने वाला है.

45 और जब तुम क़ुरआन पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के दरमियान एक छुपा हुआ पर्दा हायल कर देते हैं जो आख़िरत को नहीं मानते. 46 और हम उनके दिलों पर पर्दा रख देते हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में गिरानी (बोझ) पैदा कर देते हैं और जब तुम क़ुरआन में तन्हा अपने रब का ज़िक्र करते हो तो वे नफ़रत के साथ पीठ फेर लेते हैं.

47 और हम जानते हैं कि जब वे तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं तो वे किस लिए सुनते हैं और जबकि वे आपस में सरगोशियां करते हैं. ये ज़ालिम कहते हैं कि तुम लोग तो बस एक सहरज़दा (जादूग्रस्त) आदमी के पीछे चल रहे हो 48 देखो तुम्हारे ऊपर वह कैसी-कैसी मिसालें चस्पा कर रहे हैं. ये लोग खोए गए, वे रास्ता नहीं पा सकते.

49 और वे कहते हैं कि क्या जब हम हड्डीयाँ और रेज़ा-रेज़ा हो जाएँगे तो क्या हम नए सिरे से उठाए जाएँगे. 50 कहो कि तुम पत्थर या लोहा हो जाओ 51 या और कोई चीज़ जो तुम्हारे ख़याल में इनसे भी ज़्यादा मुश्किल हो. फिर वे कहेंगे कि वह कौन है जो हमें दुबारा ज़िंदा करेगा.

तुम कहो कि वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया है. फिर वे तुम्हारे आगे अपना सर हिलाएँगे और कहेंगे कि यह कब होगा, कहो कि अजब नहीं कि उसका वक़्त क़रीब आ पहुँचा हो, 52 जिस दिन ख़ुदा तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी हम्द (प्रशंसा) करते हुए उसकी पुकार पर चले आओगे और तुम यह ख़याल करोगे कि तुम बहुत थोड़ी मुद्दत रहे.

53 और मेरे बंदों से कहो कि वही बात कहें जो बेहतर हो. शैतान उनके दरमियान फ़साद डालता है. बेशक शैतान इंसान का खुला हुआ दुश्मन है.

54 तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर वह चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे. और हमने तुम्हें उनका ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा. 55 और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है उन्हें जो आसमानों और ज़मीन में हैं और हमने कुछ नबियों को कुछ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी है और हमने दाऊद को ज़बूर दी.

56 कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) समझ रखा है. वे न तुम से किसी मुसीबत को दूर करने का इख़्तियार रखते हैं और न उसे बदल सकते हैं. 57 जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे ख़ुद अपने रब का क़ुर्ब (निकटता) ढूंढते हैं कि उनमें से कौन सबसे ज़्यादा क़रीब हो जाए. और वे अपने रब की रहमत के उम्मीदवार हैं. और वे उसके अज़ाब से डरते हैं. वाक़ई तुम्हारे रब का अज़ाब डरने ही की चीज़ है.

58 और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम क़यामत से पहले हलाक न करें या सख़्त अज़ाब न दें. यह बात किताब में लिखी हुई है.

59 और हमें निशानियाँ भेजने से नहीं रोका, मगर उस चीज़ ने कि अगलों ने उन्हें झुठला दिया. और हमने समूद को ऊंटनी दी उन्हें समझाने के लिए. फिर उन्होंने उसपर ज़ुल्म किया. और निशानियाँ हम सिर्फ़ डराने के लिए भेजते हैं.

60 और जब हमने तुम से कहा कि तुम्हारे रब ने लोगों को घेरे में ले लिया है. और वह रूया (अलौकिक दृश्य) जो हमने तुम्हें दिखाया वह सिर्फ़ लोगों की जांच के लिए था, और उस दरख़्त को भी जिसकी क़ुरआन में मज़म्मत (निंदा) की गई है. और हम उन्हें डराते हैं, लेकिन उनकी बढ़ी हुई सरकशी बढ़ती ही जा रही है.

61 और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया, मगर इबलीस (शैतान) ने नहीं किया. उसने कहा, क्या मैं ऐसे शख़्स को सज्दा करूँ जिसे तूने मिट्टी से बनाया है.

62 **उसने कहा, ज़रा देख, यह शख़्स जिसे तूने मुझ पर इज़्ज़त दी है, अगर तू मुझे क़यामत के दिन तक मोहलत दे तो मैं थोड़े लोगों के सिवा आदम की तमाम औलाद को खा जाऊँगा.**

नोटः– शैतान Anti-Dawat मिशन चला रहा है. अहले-ईमान को दावत मिशन चलाना है. शैतान लोगों को जहन्नम की तरफ़ बुला रहा है. अहले-ईमान को लोगों को जन्नत की तरफ़ बुलाना है.

63 ख़ुदा ने कहा कि जा, उनमें से जो भी तेरा साथी बना तो जहन्नम तुम सबका पूरा—पूरा बदला
है. 64 और उनमें से जिस पर तेरा बस चले, तू अपनी आवाज़ से उनका क़दम उखाड़ दे और उनपर अपने सवार और प्यादे चढ़ा ला और उनके माल और औलाद में उनका साझी बन जा और उनसे वादा कर. और शैतान का वादा एक धोखे के सिवा और कुछ नहीं. 65 बेशक जो मेरे बंदे हैं
उनपर तेरा ज़ोर नहीं चलेगा और तेरा रब कारसाज़ी के लिए (बंदों के काम बनाने के लिए) काफ़ी है.

66 तुम्हारा रब वह है जो तुम्हारे लिए समुंदर में कश्ती चलाता है, ताकि तुम उसका फ़ज़्ल
(अनुग्रह) तलाश करो. बेशक वह तुम्हारे ऊपर मेहरबान है. 67 और जब समुंदर में तुम पर कोई
आफ़त आती है तो तुम उन माबूदों (पूज्यों) को भूल जाते हो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे. फिर जब वह तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है तो तुम दुबारा फिर जाते हो, और इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है.

68 क्या तुम इससे निडर हो गए कि ख़ुदा तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ लाकर ज़मीन में धंसा दे या
तुम पर पत्थर बरसाने वाली आंधी भेज दे, फिर तुम किसी को अपना कारसाज़ न पाओ. 69 या
तुम इससे निडर हो गए कि वह तुम्हें दुबारा समुंदर में ले जाए फिर तुम पर हवा का सख़्त तूफ़ान भेज दे और तुम्हें तुम्हारे इन्कार के सबब से ग़र्क़ कर दे. फिर तुम इसपर कोई हमारा पीछा करने वाला न पाओ.

70 और हमने आदम की औलाद को इज़्ज़त दी और हमने उन्हें ख़ुश्की और तरी में सवार किया और उन्हें पाकीज़ा (साफ़-सुथरी) चीज़ों का रिज़्क़ दिया और हमने उन्हें अपनी बहुत सी मख़्लूक़ात पर फ़ौक़ियत (श्रेष्ठता) दी.

71 जिस दिन हम हर गिरोह को उसके रहनुमा के साथ बुलाएँगे. पस जिसका आमालनामा (कर्म—पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा, वे लोग अपना आमालनामा पढ़ेंगे और उनके साथ

ज़रा भी नाइंसाफ़ी न की जाएगी. 72 **और जो शख़्स (ख़ुदा ने आँखें देने के बावजूद) इस दुनिया में अंधा बना रहा, वह आख़िरत में भी अंधा रहेगा** और बहुत दूर पड़ा होगा रास्ते से.

73 और क़रीब था कि ये लोग फ़ितने में डाल कर तुम्हें उससे हटा दें, जो हमने तुम पर 'वही' की है (प्रकट किया है), ताकि तुम उसके सिवा हमारी तरफ़ ग़लत बात मंसूब करो और तब वे तुम्हें अपना दोस्त बना लेते. 74 और अगर हमने तुम्हें जमाए न रखा होता तो क़रीब था कि तुम उनकी तरफ़ कुछ झुक पड़ो. 75 फिर हम तुम्हें ज़िंदगी और मौत दोनों का दोहरा (अज़ाब) चखाते. उसके बाद तुम हमारे मुक़ाबले में अपना कोई मददगार न पाते.

76 और ये लोग इस सरज़मीन से तुम्हारे क़दम उखाड़ने लगे थे, ताकि तुम्हें इससे निकाल दें. और अगर ऐसा होता तो तुम्हारे बाद ये भी बहुत कम ठहर पाते. 77 जैसा कि उन रसूलों के बारे में हमारा तरीक़ा रहा है जिन्हें हमने तुम से पहले भेजा था और तुम हमारे तरीक़े में तब्दीली न पाओगे.

78 नमाज़ क़ायम करो सूरज ढलने के बाद से रात के अंधेरे तक. और ख़ास कर फ़जर की क़िरात. बेशक फ़जर की क़िरात मशहूद होती है (यानी उस वक़्त फ़रिश्तों की उपस्थिति होती है).

79 और रात को तहज्जुद पढ़ो, यह नफ़ील है तुम्हारे लिए. उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हें मक़ामे-महमूद (प्रशंसित–स्थल) पर खड़ा करे.

80 और कहो कि ऐ मेरे रब! मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना और मुझे निकाल सच्चा निकालना. और मुझे अपने पास से मददगार क़ुव्वत (शक्ति) अता कर 81 और कहो कि हक़ (सत्य) आया और बातिल (असत्य) मिट गया. बेशक बातिल मिटने ही वाला था.

82 और हम क़ुरआन में से उतारते हैं जिसमें शिफ़ा (निदान) और रहमत है ईमान वालों के लिए, और ज़ालिमों के लिए इससे नुक़सान के सिवा और कुछ नहीं बढ़ता.

83 और आदमी पर जब हम इनाम करते हैं तो वह एराज़ (उपेक्षा) करता है और पीठ मोड़ लेता है. और जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो वह नाउम्मीद हो जाता है. 84 कहो कि हर एक अपने तरीक़े पर अमल कर रहा है. अब तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि कौन ज़्यादा ठीक रास्ते पर है.

85 और वे तुम से रूह (आत्मा) के बारे में पूछते हैं. कहो कि रूह मेरे रब के हुक्म से है. और तुम्हें बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है.

86 और अगर हम चाहें तो वह सब कुछ तुम से छीन लें जो हमने 'वही' के ज़रीए तुम्हें दिया है (प्रकट किया है), फिर तुम उसके लिए हमारे मुक़ाबले में कोई हिमायती न पाओ, 87 मगर यह सिर्फ़ तुम्हारे रब की रहमत है, बेशक तुम्हारे ऊपर उसका बड़ा फ़ज़्ल है.

88 **कहो कि अगर तमाम इंसान और जिन्नात जमा हो जाएँ कि ऐसा क़ुरआन बना लाएँ तब भी वे इसके जैसा न ला सकेंगे.** अगरचे वे एक दूसरे के मददगार बन जाएँ. 89 **और हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मिसालें तरह–तरह से बयान की हैं,** फिर भी अकसर लोग इन्कार ही पर जमे रहे.

नोटः– 'उम्मते–मुहम्मदी' के पास अल्लाह की वह किताब मौजूद है जो तमाम जिन्न–व–इन्स मिलकर भी बना नहीं सकते. उम्मत को अपनी दावती ज़िम्मेदारी से बरी होने के लिए दूसरा लिटरेचर पहुँचाने की हरगिज़ ज़रूरत नहीं है. लोगों तक पहुँचाने की चीज़ सिर्फ़ **'कुरआन'** है. जिसमें ख़ालिक़ ने लोगों की हिदायत के लिए हर तरह की मिसाल बयान कर दी है.

ऐसे आला कलाम के बाद भी जो लोग इन्कार पर जमे रहें, उन्हें कोई दूसरी चीज़, कोई दूसरा लिटरेचर सच्चाई तक नहीं पहुँचा सकता. इसलिए दाई को चाहिए कि कुरआन को पहुँचा दें और अपनी दावती ज़िम्मेदारी से बरी हो जाएँ.

90 और वे कहते हैं कि हम हरगिज़ तुम पर ईमान नहीं लाएँगे, जब तक तुम हमारे लिए ज़मीन से कोई चशमा (स्रोत) जारी न कर दो 91 या तुम्हारे पास खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो जाए, फिर तुम उस बाग़ के बीच में बहुत सी नहरें जारी कर दो. 92 या जैसा कि तुम कहते हो, हमारे ऊपर आसमान से टुकड़े गिरा दो या अल्लाह और फ़रिश्तों को लाकर हमारे सामने खड़ा कर दो 93 या तुम्हारे पास सोने का कोई घर (स्वर्ण–सदन) हो जाए या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने को भी न मानेंगे, जब तक तुम वहाँ से हम पर कोई किताब न उतार दो, जिसे हम पढ़ें. कहो कि मेरा रब पाक है, मैं तो सिर्फ़ एक बशर (इंसान) हूँ, अल्लाह का रसूल.

94 और **जब उनके पास हिदायत आ गई** तो उन्हें ईमान लाने से इसके सिवा और कोई चीज़ रुकावट नहीं बनी कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने बशर (इंसान) को रसूल बनाकर भेजा है.

नोटः– जब हिदायत का पैग़ाम पहुँच जाएगा, तभी मदू को यह मौक़ा मिलेगा कि उसके बारे में क्या रिस्पॉन्स दे. क़ुरआन सारे इंसानों के लिए किताबे-हिदायत है. क़ुरआन के मानने वालों पर यह ज़िम्मेदारी है कि वे क़ुरआन को उन इंसानों तक पहुँचा दें जिन तक वह नहीं पहुँचा है, क्योंकि अब यह काम करने के लिए ख़ुदा की तरफ़ से कोई पैग़ंबर आने वाला नहीं.

95 कहो कि अगर ज़मीन में फ़रिश्ते होते कि उसमें चलते-फिरते तो अलबत्ता हम उनपर
आसमान से फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजते. 96 कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरमियान
गवाही के लिए काफ़ी है. बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है.

97 अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला है. और जिसे वह बेराह कर दे तो तुम
उनके लिए अल्लाह के सिवा किसी को मददगार न पाओगे. और हम क़यामत के दिन उन्हें उनके
मुँह के बल अंधे और गूंगे और बहरे इकट्ठा करेंगे, उनका ठिकाना जहन्नम है. जब–जब उसकी
आग धीमी होगी हम उसे मज़ीद भड़का देंगे. 98 यह है उनका बदला इस सबब से कि उन्होंने
हमारी निशानियों का इन्कार किया. और कहा कि जब हम हड्डीयाँ और रेज़ा-रेज़ा हो जाएँगे तो
क्या हम नए सिरे से पैदा करके उठाए जाएँगे.

99 क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया,
वह इसपर क़ादिर है कि उनके मानिंद दुबारा पैदा कर दे और उसने उनके लिए एक मुद्दत मुक़र्रर
कर रखी है, जिसमें कोई शक नहीं. इसपर भी ज़ालिम लोग इन्कार किए बग़ैर नहीं रहे.

100 कहो कि अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के मालिक होते तो इस सूरत में
तुम ख़र्च हो जाने के अंदेशे से ज़रूर हाथ रोक लेते और इंसान बड़ा ही तंग दिल है.

101 और हमने मूसा को नौ निशानियाँ खुली हुई दीं. तो बनी इसराईल से पूछ लो, जबकि
वह उनके पास आया तो फ़िरऔन ने उससे कहा कि ऐ मूसा! मेरा ख़याल है कि ज़रूर तुम पर किसी
ने जादू कर दिया है. 102 मूसा ने कहा कि तू ख़ूब जानता है कि उन्हें आसमानों और ज़मीन के रब
ही ने उतारा है, आँखें खोल देखने के लिए और मेरा ख़याल है कि ऐ फ़िरऔन! तू ज़रूर शामतज़दा
(प्रकोपित) आदमी है. 103 फिर फ़िरऔन ने चाहा कि उन्हें इस सरज़मीन से उखाड़ दे. पस हमने

उसे और जो उसके साथ थे सबको ग़र्क़ कर दिया. 104 और हमने बनी इसराईल से कहा कि तुम
ज़मीन में रहो. फिर जब आख़िरत का वादा आ जाएगा तो हम तुम सबको इकट्ठा करके लाएँगे.

105 **और हमने क़ुरआन को हक़ के साथ उतारा है और वह
हक़ ही के साथ उतरा है. और हमने तुम्हें सिर्फ़ ख़ुशख़बरी
देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है**

नोटः– क़ुरआन बे-आमेज़ (विशुद्ध, ख़ालिस) सच्चाई का एलान है, मगर बे-आमेज़ सच्चाई हमेशा लोगों के लिए सबसे कम क़ाबिले-क़बूल होती है. इसी बिना पर अल्लाह तआला ने दाई पर यह ज़िम्मेदारी नहीं डाली कि वह लोगों को ज़रूर मनवा ले. दाई की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ यह है कि उसे पूरे ख़ैरख़ाही के साथ लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना है.

106 और हमने क़ुरआन को थोड़ा–थोड़ा करके उतारा, ताकि तुम उसे लोगों के सामने
ठहर–ठहर कर पढ़ो. और उसे हमने ब–तदरीज (क्रमवार) उतारा है.
107 कहो कि तुम इसपर ईमान लाओ या ईमान न लाओ, वे लोग जिन्हें इससे पहले इल्म
दिया गया था जब वह उनके सामने पढ़ा जाता है तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं. 108
और वे कहते हैं कि हमारा रब पाक है. बेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा होता है. 109 और वे
ठोड़ियों के बल रोते हुए गिरते हैं और क़ुरआन उनका ख़ुशूअ (विनय) बढ़ा देता है. अस्–सज्दा
110 कहो कि चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान (यानी कृपाशील) कहकर पुकारो,
उसके लिए सब अच्छे नाम हैं. और तुम अपनी नमाज़ न बहुत पुकार कर पढ़ो और न बिल्कुल
चुपके–चुपके पढ़ो. और दोनों के दरमियान का तरीक़ा इख़्तियार करो. 111 और कहो कि तमाम
ख़ूबियां उस अल्लाह के लिए हैं जो न औलाद रखता है और न बादशाही में कोई उसका शरीक है.
और न कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार है. और तुम उसकी ख़ूब बड़ाई बयान करो.

सूरह–18. अल–कहफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने अपने बंदे पर किताब उतारी. और उसमें कोई कजी
(टेढ़) नहीं रखी. 2 बिल्कुल ठीक, ताकि वह अल्लाह की तरफ़ से एक सख़्त अज़ाब से आगाह
कर दे. और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दे, जो नेक आमाल करते हैं कि उनके लिए अच्छा

बदला है. 3 (यानी जन्नत) वे उसमें हमेशा रहेंगे. 4 और उन लोगों को डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है. 5 उन्हें इस बात का कोई इल्म नहीं और न उनके बाप-दादा को. यह बड़ी भारी बात है जो उनके मुँह से निकल रही है, वे सिर्फ़ झूठ कहते हैं.

6 **शायद तुम उनके पीछे ग़म से अपने को हलाक कर डालोगे, अगर वे इस बात पर ईमान न लाएँ.**

नोटः- आज का मुसलमान रसूले ख़ुदा (स.अ.) से मुहब्बत व इश्क़ के बड़े-बड़े दावे करता है, लेकिन बदक़िस्मती से वह रसूलुल्लाह (स.अ.) से हक़ीक़ी मुहब्बत की कसौटी क्या है और उसका तक़ाज़ा क्या है, इस चीज़ को दरयाफ़्त न कर सका.

क़ुरआन के इस बयान से इस बात का पता चलता है कि रसूलुल्लाह (स.अ.) की सरगर्मियों में तर्जीह (priority) का रुख़ किधर था. वह पूरी तरह दावत की तरफ़ था. लोगों की हक़ीक़ी ख़ैरख़ाही की तरफ़ था. आप इन्सानों को अल्लाह की रहमत के साये में लाने के हरीस थे. आपने ख़ैरख़ाही की आख़िरी हद तक अपने आपको दावते-इलल्लाह के काम में झोंक दिया था. इससे वाज़ेह होता है कि रसूलुल्लाह (स.अ.) से सच्ची मुहब्बत का तक़ाज़ा क्या हो सकता है? आपका सच्चा पैरोकार कौन हो सकता है? आपका सच्चा पैरोकार बिलाशुबहा वही हो सकता है जो अपने आपको उसी काम में झोंक दे. जिस काम में बख़ौल क़ुरआन के रसूले ख़ुदा (स.अ.) ने अपने आपको झोंक दिया था.

दाई दिल के गहराइयों के साथ इन्सान की हिदायत के लिए तड़पता है. वह हर इन्सान की हिदायत का हरीस होता है. वह उनकी गुमराहियों को देखकर बेचैन होता है.

7 **जो कुछ ज़मीन पर है उसे हमने ज़मीन की रौनक़ बनाया है,**
ताकि हम लोगों को जांचें कि उनमें कौन अच्छा अमल करने वाला है
8 **और हम ज़मीन की तमाम चीज़ों को एक साफ़ मैदान बना देंगे.**

नोटः- सारी इन्सानियत ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसका अंजाम भूलकर उन फ़ानी चीज़ों के पीछे दौड़ रही है, जो आख़िरकार मिट जाने वाली हैं. इंसान को जो चीज़ें दुनिया में मिली हैं वह इनाम के तौर पर नहीं मिली हैं, बल्कि इम्तहान के लिए वक़्ती तौर पर दी गई हैं. लेकिन इंसान की सारी दौड़-धूप इन्हीं फ़ानी और वक़्ती चीज़ों को पाने के लिए हो रही है. इंसान के इसी धोके को तोड़ने का नाम ही दावत है.

9 क्या तुम ख़याल करते हो कि कहफ़ और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से बहुत अजीब निशानी थे. 10 जब उन नौजवानों ने ग़ार में पनाह ली, फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब! हमें अपने पास से रहमत दे और हमारे मामले को दुरुस्त कर दे. 11 पस हमने ग़ार में उनके कानों पर सालों–साल (दीर्घ काल) के लिए (नींद का पर्दा) डाल दिया. 12 फिर हमने उन्हें उठाया, ताकि हम मालूम करें कि दोनों गिरोहों में से कौन ठहरने की मुद्दत का ज़्यादा ठीक शुमार करता है.

13 हम तुम्हें उनका असल क़िस्सा सुनाते हैं. वे कुछ नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनकी हिदायत में मज़ीद तरक़्क़ी दी 14 और हमने उनके दिलों को मज़बूत कर दिया, जबकि वे उठे और कहा कि हमारा रब वही है जो आसमानों और ज़मीन का रब है. हम उसके सिवा किसी दूसरे माबूद को नहीं पुकारेंगे. अगर हम ऐसा करेंगे तो हम बहुत बेजा बात करेंगे. 15 ये हमारी क़ौम के लोगों ने उसके सिवा दूसरे माबूद बना रखे हैं. ये उनके हक़ में वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते. फिर उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे.

16 और जब तुम उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से जिनकी वे ख़ुदा के सिवा इबादत करते हैं तो अब चलकर ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर अपनी रहमत फैलाएगा. और तुम्हारे काम के लिए सरोसामान मुहय्या करेगा.

17 और तुम सूरज को देखते कि जब वह तुलूअ (उदय) होता है तो उनके ग़ार से दाईं जानिब को बचा रहता है और जब डूबता है तो उनसे बाईं जानिब को कतरा जाता है और वे ग़ार के अंदर एक वसीअ (विस्तृत) जगह में हैं. यह अल्लाह की निशानियों में से है जिसे अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है और जिसे अल्लाह बेराह कर दे तो तुम उसके लिए कोई मददगार, राह बताने वाला न पाओगे.

18 और तुम उन्हें देखकर यह समझे कि वे जाग रहे हैं, हालाँकि वे सो रहे थे. हम उन्हें दाएं और बाएं करवट बदलवाते रहते थे. और उनका कुत्ता ग़ार के दहाने पर दोनों हाथ फैलाए बैठा था. अगर तुम उन्हें झांक कर देखते तो उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे अंदर उनकी दहशत बैठ जाती.

19 और इसी तरह हमने उन्हें जगाया, ताकि वे आपस में पूछ–गछ करें. उनमें से एक कहने वाले ने कहा, तुम कितनी देर यहाँ ठहरे. उन्होंने कहा कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे. वे बोले कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि तुम कितनी देर यहाँ रहे. पस अपने में से किसी को यह चांदी का सिक्का देकर शहर भेजो, पस वह देखे कि पाकीज़ा खाना कहाँ मिलता है, और तुम्हारे लिए उसमें से कुछ खाना लाए. और वह पूरे होशियारी (सावधानी) के साथ जाए और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे. 20 अगर वे तुम्हारी ख़बर पा जाएँगे तो तुम्हें पत्थरों से मार

डालेंगे या तुम्हें अपने दीन में लौटा लेंगे और फिर तुम कभी फ़लाह न पाओगे.

21 और इस तरह हमने लोगों को उनके हाल से आगाह कर दिया, ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि क़यामत में कोई शक नहीं. जब लोग आपस में उनके मामले में झगड़ रहे थे. फिर कहने लगे कि उनके ग़ार पर एक इमारत बना दो. उनका रब उन्हें ख़ूब जानता है. जो लोग उनके मामले में ग़ालिब आए, उन्होंने कहा कि हम उनके ग़ार पर एक इबादतगाह बनाएंगे.

22 कुछ लोग कहेंगे कि वे तीन थे, और चौथा उनका कुत्ता था. और कुछ लोग कहेंगे कि वे पांच थे और छठा उनका कुत्ता था, ये लोग बेतहक़ीक़ बात कह रहे हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि वे सात थे और आठवां उनका कुत्ता था. कहो कि मेरा रब बेहतर जानता है कि वे कितने थे. थोड़े ही लोग उन्हें जानते हैं. पस तुम सरसरी बात से ज़्यादा उनके मामले में बहस न करो और न उनके बारे में उनमें से किसी से कुछ पूछो.

23 और तुम किसी काम के बारे में यूं न कहो कि मैं इसे कल कर दूँगा, 24 मगर यह कि अल्लाह चाहे. और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद करो. और कहो कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझे भलाई की इससे ज़्यादा क़रीब राह दिखा दे.

25 और वे लोग अपने ग़ार में तीन सौ साल रहे (कुछ लोग मुद्दत की शुमार में) नौ साल और बढ़ गए हैं, 26 कहो कि अल्लाह उनके रहने की मुद्दत को ज़्यादा जानता है. आसमानों और ज़मीन का ग़ैब उसके इल्म में है, क्या ख़ूब है वह देखने वाला और सुनने वाला. ख़ुदा के सिवा उनका कोई मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने इख़्तियार में शरीक करता है.

27 **और तुम्हारे रब की जो किताब तुम पर 'वही' (यानी प्रकट) की जा रही है, उसे (लोगों को) सुनाओ, ख़ुदा की बातों को कोई बदलने वाला नहीं. और उसके सिवा तुम कोई पनाह नहीं पा सकते.**

नोटः-

- इस आयत की तशरीह में इब्ने-जरीर ने लिखा है, अल्लाह फ़रमाता है कि 'ऐ मुहम्मद (स.)! अगर तुमने लोगों को क़ुरआन नहीं सुनाया (यानी लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम नहीं पहुँचाया) तो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे लिए कोई जाए-पनाह (यानी पनाह की जगह) नहीं होगी.'

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)

- ख़त्मे-नबुवत के बाद **'उम्मते-मुहम्मदी'** मक़ामे-नबुवत पर है, यानी उम्मत को भी नबी वाला काम करना है. अगर उम्मत ने नबी वाला काम अंजाम नहीं दिया तो ख़ुदा के मुक़ाबले में उम्मत के लिए भी कोई जाए-पनाह नहीं होगी. ख़ुदा का पैग़ाम लोगों तक पहुँचाने के मामले में **'उम्मते-मुहम्मदी'** के लिए दूसरा कोई ऑप्शन नहीं.
- प्रिंटिंग प्रेस के दौर से पहले अल्लाह का पैग़ाम लोगों को पढ़कर सुनाया जाता था. लेकिन अब प्रिंटिंग प्रेस के दौर में दाई को अल्लाह की किताब लोगों तक पहुँचाना है. इस पैग़ाम-रिसानी के काम के लिए पहले पैग़म्बर आते थे. अब यह काम पैग़ंबर की पैरवी करने वालों को करना है.

28 और अपने आपको उन लोगों के साथ जमाए रखो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं, वे उसकी रज़ा (प्रसन्नता) के तालिब हैं. और तुम्हारी आँखें हयाते-दुनिया की रौनक़ की ख़ातिर उनसे हटने न पाएं. और तुम ऐसे शख़्स का कहना न मानो जिसके क़ल्ब (हृदय) को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया. और वह अपनी ख़्वाहिश पर चलता है. और उसका मामला हद से गुज़र गया है.

29 **और कहो कि यह 'क़ुरआन' हक़ (सत्य) है तुम्हारे रब की तरफ़ से, पस जो शख़्स चाहे इसे माने और जो शख़्स चाहे न माने.**

हमने ज़ालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी लपटें उन्हें अपने घेरे में ले लेंगी. और अगर वे पानी के लिए फ़रियाद करेंगे तो उनकी फ़रियाद की पूर्ति (फ़रियाद-रसी) ऐसे पानी से की जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा. वह चेहरों को भून डालेगा. कैसा बुरा पानी होगा और कैसा बुरा ठिकाना.

नोटः-

- हक़ को मानने या न मानने का ताल्लुक़ पैग़ाम पहुँचाने के बाद आता है न कि उससे पहले. इसलिए पैग़ाम पहुँचाने के मामले में दाई के सामने दूसरा कोई ऑप्शन नहीं.

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)

- **दाई का काम हक़ को पेश कर देना है और मदू इस दुनिया में हक़ को मानने और न मानने के लिए आज़ाद है. हक़ को न मानना कोई सादा बात नहीं है, हक़ को न मानने का अंजाम जहन्नम है.**
- जहन्नम सबसे बुरी जगह है, वह पूरी तरह ख़ुदा की रहमतों से ख़ाली जगह है. वह पूरी तरह मसाएल और मसाएल से भरी हुई जगह है. जहन्नमीयों को बेशुमार मसाएल का सामना होगा. जहन्नमी अगर किसी मसले का हल तलाशने की कोशिश करेगा. तो वह मज़ीद बड़े मसले में मुब्तिला हो जाएगा. और ऐसा ही बार-बार होगा जब भी वह किसी मसले का हल तलाशने की कोशिश करेगा. वह प्यास से परेशान होकर पानी-पानी चिल्लाएगा तो उसे ठंडक पहुँचाने वाला पानी वहाँ नहीं मिलेगा. दुनिया में ख़ुदा अपनी रहमत से प्यास बुझाने वाला, जिस्म और रूह को ठंडक पहुँचाने वाला पानी देता था. इसी तरह दुनिया में वह ख़ुदा की बेशुमार नियामतों से फ़ायदा उठाता था. लेकिन इन तमाम नियामतों के **'देनेवाले'** की तरफ़ बेरुखी इख़्तियार करते हुए ज़िंदगी गुज़ारता था. ऐसी ज़िंदगी इंसान को किस ख़तरनाक अंजाम पर पहुँचाने वाली है. इससे इंसान को आगाह करना सबसे बड़ा करने का काम है.

जहन्नम से इंसान को बचाना ही इंसान की सबसे बड़ी ख़ैरख़ाही हो सकती है.

30 बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसे लोगों का अज्र (प्रतिफल) ज़ाया नहीं करेंगे, जो अच्छे काम करेंगे.
31 उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वहाँ उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएँगे. और वे बारीक और दबीज़ (गाढ़े) रेशम के सब्ज़ कपड़े पहनेंगे, तख़्तों पर टेक लगाए हुए. कैसा अच्छा बदला है और कैसी अच्छी जगह.

32 तुम उनके सामने एक मिसाल पेश करो. दो शख़्स थे. उनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग़ दिए. और उनके गिर्द खजूर के दरख़्तों का इहाता बनाया और दोनों के दरमियान खेती रख दी.
33 दोनों बाग़ अपना पूरा फल लाए, उनमें कुछ कमी नहीं की. और दोनों बाग़ों के बीच हमने नहर जारी कर दी
34 और उसे ख़ूब फल मिला तो उसने अपने साथी से बात करते हुए कहा कि मैं तुझसे माल में ज़्यादा हूँ और तादाद में भी ज़्यादा ताक़तवर हूँ.
35 वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ और वह अपने आप पर ज़ुल्म कर रहा था. उसने कहा कि मैं नहीं समझता कि यह कभी बर्बाद हो जाएगा.
36 और मैं नहीं समझता कि क़यामत कभी आएगी. और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटा दिया गया तो ज़रूर इससे ज़्यादा अच्छी जगह मुझे मिलेगी.

37 उसके साथी ने बात करते हुए कहा-क्या तुम उस ज़ात से इन्कार कर रहे हो जिसने तुम्हें

मिट्टी से बनाया, फिर पानी की एक बूंद से. फिर तुम्हें पूरा आदमी बना दिया. 38 लेकिन मेरा रब तो वही अल्लाह है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता. 39 और जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए तो तुमने क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है, अल्लाह के बग़ैर किसी में कोई क़ुव्वत (शक्ति) नहीं. अगर तुम देखते हो कि मैं माल और औलाद में तुम से कम हूँ 40 तो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे तुम्हारे बाग़ से बेहतर बाग़ दे दे. और तुम्हारे बाग़ पर आसमान से कोई आफ़त भेज दे जिससे वह बाग़ साफ़ मैदान होकर रह जाए 41 या उसका पानी ख़ुश्क हो जाए, फिर तुम उसे किसी तरह न पा सको.

42 और उसके फल पर आफ़त आयी तो जो कुछ उसने उसपर ख़र्च किया था उसपर वह हाथ मलता रह गया. और वह बाग़ अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ पड़ा था. और वह कहने लगा कि ऐ काश, मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न ठहराता! 43 और उसके पास कोई जत्था न था जो ख़ुदा के सिवा उसकी मदद करता और न वह ख़ुद अपने बचाव के लिए कुछ कर सका. 44 यहाँ सारा इख़्तियार सिर्फ़ ख़ुदाए-बरहक़ का है. वह बेहतरीन अज्र (प्रतिफल) और बेहतरीन अंजाम अता करने वाला है.

45 और उन्हें दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल सुनाओ. जैसे कि पानी जिसे हमने आसमान से उतारा. फिर उससे ज़मीन की नबातात (पौध) ख़ूब घनी हो गईं, फिर वह रेज़ा-रेज़ा हो गईं जिसे हवाएं उड़ाती फिरती हैं. और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है. 46 माल और औलाद दुनियावी ज़िंदगी की रौनक़ हैं. और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ तुम्हारे रब के नज़दीक सवाब के एतबार से बेहतर हैं और उम्मीद का बेहतर ज़रिया है.

47 और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएँगे. और तुम ज़मीन को बिल्कुल साफ़ मैदान देखोगे. और हम उन सबको जमा करेंगे. फिर हम उनमें से किसी को न छोड़ेंगे.

48 **और सब लोग तेरे रब के सामने सफ़ बांधकर पेश किए जाएँगे.** तुम हमारे पास आ गए जिस तरह हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुमने यह गुमान किया कि हम तुम्हारे लिए कोई वादे का वक़्त मुक़र्रर नहीं करेंगे.

49 और रजिस्टर रखा जाएगा तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उसमें जो कुछ है, वे उससे डरते होंगे और कहेंगे कि हाय ख़राबी! कैसी है यह किताब कि इसने न कोई छोटी बात दर्ज करने से छोड़ी है और न कोई बड़ी बात. और जो कुछ उन्होंने किया है, वह सब सामने पाएंगे. और तेरा रब किसी के ऊपर ज़ुल्म नहीं करेगा.

50 और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया, मगर इबलीस (शैतान) ने नहीं किया, वह जिन्नों में से था. पस उसने अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी

की. अब क्या तुम उसे और उसकी औलाद को मेरे सिवा अपना दोस्त बनाते हो, हालाँकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं. यह ज़ालिमों के लिए बहुत बुरा बदल है.

51 मैंने उन्हें न आसमानों और ज़मीन पैदा करने के वक़्त बुलाया. और न ख़ुद उनके पैदा करने के वक़्त बुलाया. और मैं ऐसा नहीं कि गुमराह करने वालों को अपना मददगार बनाऊँ.

52 और जिस दिन ख़ुदा कहेगा कि जिन्हें तुम मेरा शरीक समझते थे उन्हें पुकारो. पस वे उन्हें पुकारेंगे, मगर वे उन्हें कोई जवाब न देंगे. और हम उनके दरमियान (अदावत की) आड़ कर देंगे. 53 और मुजरिम लोग आग को देखेंगे और समझ लेंगे कि वे उसमें गिरने वाले हैं और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे.

54 **और हमने इस क़ुरआन में लोगों की हिदायत के लिए हर क़िस्म की मिसाल बयान की है** और इंसान सबसे ज़्यादा झगड़ालू है.

नोटः- अब दाई का काम यह है कि क़ुरआन को पूरे ख़ैरख़ाही के साथ लोगों तक पहुंचा दें.

55 और लोगों को बाद इसके कि उन्हें हिदायत पहुँच चुकी, ईमान लाने से और अपने रब से बख़्शिश माँगने से नहीं रोका, मगर उस चीज़ ने कि अगलों का मामला उनके लिए भी ज़ाहिर हो जाए (यानी सत्य के प्रमाण उनके सामने स्पष्ट रूप से आने के बावजूद उन्होंने सत्य का स्वीकार नहीं किया.), या अज़ाब उनके सामने आ खड़ा हो.

56 **और रसूलों को हम सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजते हैं, और मुन्किर लोग नाहक़ की बातें लेकर झूठा झगड़ा करते हैं, ताकि उसके ज़रीए से हक़ को नीचा कर दें और उन्होंने मेरी निशानियों को और डर सुनाने को (चेतावनी को) मज़ाक़ बना दिया.**

नोटः- दाई का काम ख़ुशख़बरी देना और डर सुनाना है. फिर हक़ को नहीं मानने वाले नाहक़ की बातें करेंगे, झूठे झगड़े निकालेंगे, हक़ को नीचा करने की कोशिश करेंगे. इन सबके बावजूद दाई को अपनी ज़िम्मेदारी का काम अंजाम देना है. और जो लोग हक़ के इन्कार पर आमादा हैं, वह इम्तिहानी मक़सद से मिली हुई वक़्ती आज़ादी का गलत इस्तेमाल करेंगे.

57 उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा, **जिसे उसके रब की आयतों के ज़रीए याददिहानी की जाए** तो वह उससे मुँह फेर ले और अपने हाथों के अमल को भूल जाए. हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में डाट है (यानी अल्लाह का पैग़ाम सुनने से उन्हें कानों में बोझ महसूस होता है). और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वे कभी राह पर आने वाले नहीं हैं.

58 और तुम्हारा रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है. अगर वह उनके किए पर उन्हें पकड़ता तो फ़ौरन उनपर अज़ाब भेज देता, मगर उनके लिए एक मुक़र्रर वक़्त है और वे उसके मुक़ाबले में कोई पनाह की जगह न पाएंगे.
59 और ये बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया, जबकि वे ज़ालिम हो गए. और हमने उनकी हलाकत का एक वक़्त मुक़र्रर किया था.

60 और जब मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि मैं चलता रहूँगा, यहाँ तक कि या तो दो दरियाओं के मिलने की जगह पर पहुँच जाऊँ, फिर उसके लिए मुझे वर्षों तक चलना क्यों न पड़े.
61 पस जब वे दरियाओं के मिलने की जगह पहुँचे तो वे अपनी मछली को भूल गए. और मछली ने दरिया में तेज़ी से अपनी राह ली (और उनकी नज़रों से ओझल हो गई).
62 फिर जब वे आगे बढ़े तो मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि हमारा खाना लाओ, हमारे इस सफ़र से हमें बड़ी थकान हो गई.

63 शागिर्द ने कहा, क्या आपने देखा, जब हम उस पत्थर के पास ठहरे थे तो मैं मछली को भूल गया. और मुझे शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करता. और मछली अजीब तरीक़े से निकल कर दरिया में चली गई.
64 मूसा ने कहा, उसी मौक़े की तो हमें तलाश थी. पस दोनों अपने क़दमों के निशान देखते हुए वापस लौटे.
65 तो उन्होंने वहाँ हमारे बंदों में से एक बंदे को पाया जिसे हमने अपने पास से रहमत दी थी और जिसे अपने पास से एक इल्म सिखाया था.

66 मूसा ने उससे कहा, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ, ताकि आप मुझे उस इल्म में से सिखा दें जो आपको सिखाया गया है.
67 उसने कहा कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते
68 और तुम उस चीज़ पर कैसे सब्र कर सकते हो जो तुम्हारी वाक़फ़ियत (जानकारी) के दायरे से बाहर है.
69 मूसा ने कहा, इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे और मैं किसी बात में आपकी नाफ़रमानी नहीं करुंगा.
70 उसने कहा कि अगर तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझ से कोई बात न पूछना, जब तक कि मैं ख़ुद तुम से उसका ज़िक्र न करूँ.

71 फिर दोनों चले. यहाँ तक कि जब वे कश्ती में सवार हुए तो उस शख़्स ने कश्ती में छेद कर दिया. मूसा ने कहा, क्या आपने इस कश्ती में इसलिए छेद किया है कि कश्ती वालों को ग़र्क़

कर दें. यह तो आपने बड़ी सख़्त चीज़ कर डाली. 72 उसने कहा, मैंने तुम से नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे. 73 मूसा ने कहा, मेरी भूल पर मुझे न पकड़िए और मेरे मामले में सख़्ती से काम न लीजिए. 74 फिर वे दोनों चले, यहाँ तक कि वे एक लड़के से मिले तो उस शख़्स ने उसे मार डाला. मूसा ने कहा, क्या आपने एक मासूम जान को मार डाला, हालाँकि उसने किसी का ख़ून नहीं किया था. यह तो आपने एक नामाक़ूल बात की है.

पारा – 16

75 उस शख़्स ने कहा कि क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे. 76 मूसा ने कहा कि इसके बाद अगर मैं आपसे किसी चीज़ के मुतआल्लिक़ पूछूं तो आप मुझे साथ न रखें. आप मेरी तरफ़ से उज़्र की हद को पहुँच गए. 77 फिर दोनों चले. यहाँ तक कि जब वे एक बस्ती वालों के पास पहुँचे तो बस्ती वालों से खाना माँगा. उन्होंने उनकी मेज़बानी से इन्कार कर दिया. फिर उन्हें वहाँ एक दीवार मिली जो गिरने को ही थी तो उसने उसे सीधा कर दिया. मूसा ने कहा, अगर आप चाहते तो उसपर कुछ उजरत (मेहनताना) ले लेते. 78 उसने कहा कि अब यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई है. मैं तुम्हें उन चीज़ों की हक़ीक़त बताऊँगा जिनपर तुम सब्र न कर सके.

79 कश्ती का मामला यह है कि वह चंद मिसकीनों की थी जो दरिया में मेहनत करते थे. तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ, और उनके आगे एक बादशाह था जो हर कश्ती को ज़बरदस्ती छीन कर ले लेता था.

80 और लड़के का मामला यह है कि उसके माँ-बाप ईमानदार थे. हमें अंदेशा हुआ कि वह बड़ा होकर अपनी सरकशी और नाफ़रमानी से उन्हें तंग करेगा. 81 पस हमने चाहा कि उनका रब उन्हें उसकी जगह ऐसी औलाद दे जो पाकीज़गी में उससे बेहतर हो और शफ़क़त करने वाली हो.

82 और दीवार का मामला यह है कि वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी. और उस दीवार के नीचे उनका एक ख़ज़ाना दफ़न था और उनका बाप एक नेक आदमी था, पस तुम्हारे रब ने चाहा कि वे दोनों अपनी जवानी की उम्र को पहुँचें और अपना ख़ज़ाना निकालें. यह तुम्हारे रब की रहमत से हुआ. और मैंने उसे अपनी राय से नहीं किया. यह है हक़ीक़त उन बातों की जिनपर तुम सब्र न कर सके.

83 और वे तुम से ज़ुलक़रनैन का हाल पूछते हैं. कहो कि मैं उसका कुछ हाल तुम्हारे सामने बयान करूंगा. 84 हमने उसे ज़मीन में इक़्तेदार (शासन) दिया था. और हमने उसे हर चीज़ का सामान दिया था.

85 फिर ज़ुलक़रनैन एक राह के पीछे चला. 86 यहाँ तक कि वह सूरज के गुरुब होने के मक़ाम तक पहुँच गया. उसने सूरज को देखा कि वह एक काले पानी में डूब रहा है और वहाँ उसे एक क़ौम

मिली. हमने कहा कि ऐ ज़ुलक़रनैन! तुम चाहो तो उन्हें सज़ा दो और चाहो तो उनके साथ अच्छा सलूक करो. 87 उसने कहा कि जो उनमें से ज़ुल्म करेगा, हम उसे सज़ा देंगे. फिर वह अपने रब के पास पहुँचाया जाएगा, फिर वह उसे सख़्त सज़ा देगा. 88 और जो शख़्स ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा उसके लिए अच्छी जज़ा है और हम भी उसके साथ आसान मामला करेंगे.

89 फिर वह एक राह पर चला. 90 यहाँ तक कि जब वह सूरज निकलने की जगह पहुँचा तो उसने सूरज को एक ऐसी क़ौम पर उगते हुए पाया जिनके लिए हमने सूरज के ऊपर कोई आड़ नहीं रखी थी (यानी जिनके पास धूप से बचाव का कोई ज़रिया नहीं था). 91 यह इसी तरह है. और हम ज़ुलक़रनैन के अहवाल (हालात) से बाख़बर हैं.

92 फिर वह एक राह पर चला. 93 यहाँ तक कि जब वह दो पहाड़ों के दरमियान पहुँचा तो उनके पास उसने एक क़ौम को पाया जो कोई बात समझ नहीं पाती थी. 94 उन्होंने कहा कि ऐ ज़ुलक़रनैन! याजूज और माजूज हमारे मुल्क में फ़साद फैलाते हैं तो क्या हम तुम्हें कोई महसूल (शुल्क) इस (काम) के लिए मुक़र्रर कर दें कि तुम हमारे और उनके दरमियान कोई रोक बना दो.

95 ज़ुलक़रनैन ने जवाब दिया कि जो कुछ मेरे रब ने मुझे दिया है वह बहुत है. तुम मेहनत से मेरी मदद करो. मैं तुम्हारे और उनके दरमियान एक दीवार बना दूँगा. 96 तुम लोहे के तख़्ते लाकर मुझे दो. यहाँ तक कि जब उसने दोनों के दरमियानी ख़ला (रिक्त जगह) को भर दिया तो लोगों से कहा कि आग दहकाओ, यहाँ तक कि जब उसे आग (की तरह लाल) कर दिया तो कहा कि लाओ अब मैं उसपर पिघला हुआ तांबा डाल दूँ. 97 पस याजूज व माजूज न उसपर चढ़ सकते थे और न उसमें सुराख़ कर सकते थे. 98 ज़ुलक़रनैन ने कहा कि यह मेरे रब की रहमत है. फिर जब मेरे रब का वादा आएगा तो वह उसे ढाकर बराबर कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है.

99 और उस दिन हम लोगों को छोड़ देंगे. वे मौजों की तरह एक दूसरे में घुसेंगे. और सूर फूंका जाएगा पस हम सबको एक साथ जमा करेंगे 100 और उस दिन हम जहन्नम को मुन्किरों के सामने लाएँगे, 101 जिनकी आंखों पर हमारी याददिहानी से पर्दा पड़ा रहा और वे कुछ सुनने के लिए तैयार न थे.

102 क्या इन्कार करने वाले यह समझते हैं कि वे मेरे सिवा मेरे बंदों को अपना कारसाज़ बनाएं. हमने मुन्किरों की मेहमानी के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है.

103 **कहो, क्या मैं तुम्हें बता दूँ कि अपने आमाल के एतबार से सबसे ज़्यादा घाटे में कौन लोग हैं.** 104 **वे लोग**

जिनकी कोशिश दुनिया की ज़िंदगी में अकारत हो गई और वे समझते रहे कि वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं.

नोटः– यह कितना ख़तरनाक है कि इंसान ख़ुदा को नाराज़ करने वाले आमाल करता रहे और समझता रहे कि वह बहुत अच्छे काम कर रहा है. ख़ुदा को ईमान वालों से सबसे ज़्यादा मतलूब काम दावत का काम है. लेकिन मौजूदा मुसलमान सब कुछ कर रहे हैं, मगर इस सबसे ज़्यादा मतलूब काम को तक़रीबन छोड़े हुए हैं.

105 यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की निशानियों का और उससे मिलने का इन्कार किया.
पस उनका किया हुआ बर्बाद हो गया. फिर क़यामत के दिन हम उन्हें कोई वज़न न देंगे. 106 यह
जहन्नम उनका बदला है, इसलिए कि उन्होंने इन्कार किया और मेरी निशानियों और मेरे रसूलों का
मज़ाक़ उड़ाया.

107 बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया, उनके लिए फ़िरदौस के
बाग़ों की मेहमानी है. 108 उसमें वे हमेशा रहेंगे. वहाँ से कभी निकलना न चाहेंगे.

109 कहो कि अगर समुंदर मेरे रब की निशानियों को लिखने के लिए रोशनाई (स्याही) हो जाए तो समुंदर ख़त्म हो जाएगा, इससे पहले कि मेरे रब की बातें ख़त्म हों, अगरचे हम उसके साथ उसी के मानिंद और समुंदर मिला दें.

110 कहो कि मैं तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूँ. मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) सिर्फ़ एक ही माबूद है. पस जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो, उसे चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठहराए.

सूरह–19. मरयम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 काफ़० हा० या० अइन० सॉद०. 2 यह उस रहमत का ज़िक्र है जो तेरे रब ने अपने बंदे
ज़करिया पर की. 3 जब उसने अपने रब को छुपी आवाज़ से पुकारा.

4 ज़करिया ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं. और सर में बालों की सफ़ेदी
फैल गई है और ऐ मेरे रब! तुझसे माँग कर मैं कभी महरूम नहीं रहा. 5 और मैं अपने बाद रिश्तेदारों
की तरफ़ से अंदेशा रखता हूँ. और मेरी बीवी बांझ है, पस मुझे अपने पास से एक वारिस दे 6 जो
मेरी जगह ले और याक़ूब की आल (संतति) की भी. और ऐ मेरे रब! उसे अपना पसंदीदा बना.

7 ऐ ज़करिया! हम तुम्हें एक लड़के की बशारत (शुभ सूचना) देते हैं जिसका नाम यहया होगा. हमने इससे पहले इस नाम का कोई आदमी नहीं बनाया. 8 उसने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा, जबकि मेरी बीवी बांझ है. और मैं बुढ़ापे के इंतहाई दर्जे को पहुँच चुका हूँ.

9 जवाब मिला कि ऐसा ही होगा. तेरा रब फ़रमाता है कि यह मेरे लिए आसान है. मैंने इससे पहले तुम्हें पैदा किया, हालाँकि तुम कुछ भी न थे. 10 ज़करिया ने कहा कि ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर कर दे. फ़रमाया कि तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन शब व रोज़ लोगों से बात न कर सकोगे, हालाँकि तुम तंदुरुस्त होंगे. 11 फिर ज़करिया इबादत की मेहराब से निकल कर लोगों के पास आया और उनसे इशारे से कहा कि तुम सुबह व शाम ख़ुदा की पाकी बयान करो.

12 ऐ यहया! किताब को मज़बूती से पकड़ो. और हमने उसे बचपन ही में दीन की समझ अता की. 13 और अपनी तरफ़ से उसे नर्मदिली और पाकीज़गी (पवित्रता) अता की. और वह परहेज़गार 14 और अपने वालिदैन का ख़िदमतगुज़ार था. वह सरकश व नाफ़रमान नहीं था. 15 और उसपर सलामती है, जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन वह ज़िंदा करके उठाया जाएगा.

16 और किताब में मरयम का ज़िक्र करो, जबकि वह अपने लोगों से अलग होकर शरक़ी (पूर्वी) मकान में चली गई. 17 फिर उसने अपने आपको उनसे परदे में कर लिया. फिर हमने उसके पास अपना फ़रिश्ता भेजा, जो उसके सामने एक पूरा आदमी बनकर ज़ाहिर हुआ. 18 मरयम ने कहा, मैं तुझसे ख़ुदाए-रहमान की पनाह माँगती हूँ अगर तू ख़ुदा से डरने वाला है. 19 उसने कहा, मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुम्हें एक पाकीज़ा लड़का दूँ. 20 मरयम ने कहा, मुझे कैसे लड़का होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने नहीं छुआ और न मैं बदकार (बदचलन) हूँ. 21 फ़रिश्ते ने कहा कि ऐसा ही होगा. तेरा रब फ़रमाता है कि यह मेरे लिए आसान है. (यह) इसलिए कि हम उसे लोगों के लिए निशानी बना दें और अपनी जानिब से एक रहमत. और यह एक तयशुदा बात है.

22 पस मरयम ने उसका हमल (गर्भ) उठा लिया और वह उसे लेकर एक दूर की जगह चली गई. 23 फिर दर्देज़ह (प्रसव—पीड़ा) उसे खजूर के दरख़्त की तरफ़ ले गया. उसने कहा, काश मैं इससे पहले मर जाती और भूली-बिसरी चीज़ हो जाती.

24 फिर मरयम को उसने (यानी फ़रिश्ते ने) उसके नीचे से आवाज़ दी कि ग़मगीन न हो. तुम्हारे रब ने तुम्हारे नीचे एक चशमा (स्रोत) जारी कर दिया है 25 और तुम खजूर के तने को अपनी तरफ़ हिलाओ. उससे तुम्हारे ऊपर पकी हुई खजूरें गिरेंगी. 26 पस खाओ और पियो और आँखें ठंडी करो. फिर अगर तुम कोई आदमी देखो तो उससे कह दो कि मैंने रहमान का रोज़ा मान

रखा है तो आज मैं किसी इंसान से नहीं बोलूंगी.

27 फिर वह उसे गोद में लिए हुए अपनी क़ौम के पास आयी. लोगों ने कहा, ऐ मरयम! तुमने बड़ा तूफ़ान कर डाला. 28 ऐ हारून की बहन! न तुम्हारा बाप कोई बुरा आदमी था और न तुम्हारी माँ बदकार (बदचलन) थी.

29 फिर मरयम ने उसकी तरफ़ इशारा किया. लोगों ने कहा, हम इससे किस तरह बात करें जो कि गोद का बच्चा है. 30 बच्चा बोला, मैं अल्लाह का बंदा हूँ. उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया. 31 और मैं जहाँ कहीं भी हूँ उसने मुझे बरकत वाला बनाया है. और उसने मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की है, जब तक मैं ज़िंदा रहूँ. 32 और मुझे मेरी माँ का ख़िदमतगुज़ार बनाया है. और मुझे सरकश, बदबख़्त नहीं बनाया है. 33 और मुझ पर सलामती है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन मैं ज़िंदा करके उठाया जाऊँगा.

34 यह है ईसा इब्ने-मरयम, सच्ची बात जिसमें लोग झगड़ रहे हैं. 35 अल्लाह ऐसा नहीं कि वह कोई औलाद बनाए. वह पाक है. जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो कहता है कि हो जा, तो वह हो जाता है.

36 और बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा रब भी, पस तुम उसी की इबादत करो. यही सीधा रास्ता है. 37 फिर उनके फ़िरक़ों (समुदायों) ने आपस में मतभेद किया. पस इन्कार करने वालों के लिए एक बड़े दिन के आने से ख़राबी है. 38 जिस दिन ये लोग हमारे पास आएंगे. वे ख़ूब सुनते और ख़ूब देखते होंगे, मगर आज ये ज़ालिम खुली हुई गुमराही में हैं.

39 **और इन लोगों को उस हसरत (पश्चाताप) के दिन से डरा दो, जब मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा. लेकिन वे ग़फ़लत में हैं और वे ईमान नहीं ला रहे हैं.**

नोटः-

- आदमी दुनिया में नाकामी से दो-चार होता है तो उसे मौक़ा होता है कि वह दोबारा नई ज़िंदगी शुरू कर सके. उसके पास साथी और मददगार होते हैं जो मुश्किल हालात में उसे संभालने के लिए खड़े हो जाते हैं, मगर आख़िरत की नाकामी ऐसी नाकामी है जिसके बाद संभलने का कोई इमकान नहीं. कैसा अजीब हसरत का लमहा होगा जब आदमी यह जानेगा कि वह सब कुछ कर सकता था, मगर उसने नहीं किया, यहाँ तक कि करने का वक़्त ही ख़त्म हो गया. इस आने वाले मरहले से इंसान को आगाह करना ही दावत का काम है.

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)

- क़ुरआन के मानने वालों पर यह फ़र्ज़ है कि वे लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम यानी क़ुरआन पहुँचा दें, ताकि लोग ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसके अंजाम से आगाह हो जाएँ. लेकिन मौजूदा मुसलमान एक तरफ़ दावती ज़िम्मेदारी के ताल्लुक़ से इस क़दर ग़ाफ़िल हैं कि वे सवाल करते हैं कि 'क्या ग़ैर-मुस्लिम हज़रात को क़ुरआन दिया जा सकता है?' तो दूसरी तरफ़ लोग पैदा हो रहे हैं और ग़फ़लत की ज़िंदगी गुज़ार कर मर रहे हैं. अपने रब का पैग़ाम जाने बग़ैर, ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसका अंजाम समझे बग़ैर मर रहे हैं. यह बहुत संगीन सुरतेहाल है. अगर मुसलमान अपने आपको न बदले, अपने करने के काम को न जाने तो इसके ख़तरनाक नतीजे हश्र में सामने आएंगे.

40 बेशक हम ही ज़मीन और ज़मीन के रहने वालों के वारिस होंगे. और लोग हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएँगे.

41 और किताब में इब्राहीम का ज़िक्र करो. बेशक वह सच्चा था और नबी था. 42 जब उसने अपने बाप से कहा कि ऐ मेरे बाप! ऐसी चीज़ की इबादत क्यों करते हो जो न सुने और न देखे, और न तुम्हारे कुछ काम आ सके. 43 ऐ मेरे बाप! मेरे पास ऐसा इल्म आया है जो तुम्हारे पास नहीं है तो तुम मेरे कहने पर चलो. मैं तुम्हें सीधा रास्ता दिखाऊंगा. 44 ऐ मेरे बाप! शैतान की इबादत न करो, बेशक शैतान ख़ुदाए-रहमान की नाफ़रमानी करने वाला है. 45 ऐ मेरे बाप! मुझे डर है कि तुम्हें ख़ुदाए-रहमान का कोई अज़ाब पकड़ ले और तुम शैतान के साथी बनकर रह जाओ.

46 बाप ने कहा कि ऐ इब्राहीम! क्या तुम मेरे माबूदों (पूज्यों) से फिर गए हो. अगर तुम बाज़ न आए तो मैं तुम्हें संगसार कर दूँगा (यानी पत्थरों से मार डालूंगा). और तुम मुझ से हमेशा के लिए दूर हो जाओ 47 इब्राहीम ने कहा, तुम पर सलामती हो. मैं अपने रब से तुम्हारे लिए बख़्शिश की दुआ करुंगा, बेशक वह मुझ पर मेहरबान है. 48 और मैं तुम लोगों को छोड़ता हूँ और उन्हें भी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो. और मैं अपने रब ही को पुकारूंगा. उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकार कर महरूम (वंचित) नहीं रहूँगा.

49 पस जब वह लोगों से जुदा हो गया. और उनसे जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे तो हमने उसे इस्हाक़ और याक़ूब अता किए और हमने उनमें से हर एक को नबी बनाया. 50 और उन्हें अपनी रहमत का हिस्सा दिया और हमने उनका नाम नेक और बुलंद किया.

51 और किताब में मूसा का ज़िक्र करो. बेशक वह चुना हुआ था और रसूल व नबी था.
52 और हमने उसे कोहे-तूर के दाहिनी जानिब से पुकारा और उसे हमने राज़ की बातें करने के

लिए क़रीब किया. 53 और अपनी रहमत से हमने उसके भाई हारून को नबी बनाकर उसे दिया.

54 और किताब में इस्माईल का ज़िक्र करो. वह वादे का सच्चा था और रसूल व नबी था. 55 वह अपने लोगों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था. और अपने रब के नज़दीक पसंदीदा था. 56 और किताब में इदरीस का ज़िक्र करो. बेशक वह सच्चा था और नबी था. 57 और हमने उसे बुलंद रुतबे तक पहुँचाया.

58 ये वे लोग हैं पैग़म्बरों में से जिनपर अल्लाह ने अपना फ़ज़्ल फ़रमाया. आदम की औलाद में से और उन लोगों की (औलाद) में से जिन्हें हमने नूह के साथ (कश्ती में) सवार किया था. और इब्राहीम और इसराईल की नस्ल से और उन लोगों में से जिन्हें हमने हिदायत बख़्शी और उन्हें मक़बूल बनाया. जब उन्हें ख़ुदाए-रहमान की आयतें सुनाई जातीं तो वे सज्दा करते हुए और रोते हुए गिर पड़ते. **अस्-सज्दा**

59 फिर उनके बाद ऐसे नाख़ल्फ़ जानशीन (बुरे उत्तराधिकारी) हुए जिन्होंने नमाज़ को खो दिया और ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गए, पस अनक़रीब वे अपनी ख़राबी को देखेंगे, 60 अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान ले आया और नेक काम किया तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनकी ज़रा भी हक़-तलफ़ी नहीं की जाएगी.

61 उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनका रहमान ने अपने बंदों से ग़ायबाना वादा कर रखा है. और यह वादा पूरा होकर रहना है. 62 उसमें वे लोग कोई फ़ुज़ूल बात नहीं सुनेंगे, सिवाय सलाम के. और उसमें उनका रिज़्क़ सुबह व शाम मिलेगा, 63 यह वह जन्नत है जिसका वारिस हम अपने बंदों में से उन्हें बनाएंगे जो ख़ुदा से डरने वाले हों.

64 और हम नहीं उतरते, मगर तुम्हारे रब के हुक्म से. उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे है और जो उसके बीच में है. और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं. 65 वह रब है आसमानों का और ज़मीन का और जो उनके बीच में है (उनका भी), पस तुम उसी की इबादत करो और उसकी इबादत पर क़ायम रहो. क्या तुम उसका कोई हमसिफ़त (उसके गुणों जैसा) जानते हो.

66 **और इंसान कहता है, क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर ज़िंदा करके निकाला जाऊँगा.** 67 **क्या इंसान को याद नहीं आता कि हमने उसे इससे पहले पैदा किया और वह कुछ भी न था.**

नोटः- इंसान एक अब्दि मख़लूक़ है. वह मर कर ख़त्म नहीं होता, बल्कि हमेशा रहने की दुनिया में चला जाता है. मौजूदा दुनिया में इंसान का इम्तिहान हो रहा है और मौत के बाद की दुनिया में इस इम्तिहान का अंजाम सामने आएगा. यही बात इंसान को बताना है. इसी काम का नाम दावत है.

68 पस तेरे रब की क़सम, हम उन्हें जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर उन्हें जहन्नम के गिर्द इस
तरह हाज़िर करेंगे कि वे घुटनों के बल गिरे होंगे.

69 फिर हम हर गिरोह में से उन लोगों को जुदा करेंगे जो रहमान के मुक़ाबले में सबसे
ज़्यादा सरकश बने हुए थे. 70 फिर हम ऐसे लोगों को ख़ूब जानते हैं जो जहन्नम में दाख़िल होने के
ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं 71 और तुम में से कोई नहीं जिसका उसपर से गुज़र न हो, यह तेरे रब के ऊपर
लाज़िम बात है जो पूरी होकर रहेगी. 72 फिर हम उन लोगों को बचा लेंगे जो डरते थे और
ज़ालिमों को उसमें गिरा हुआ छोड़ देंगे.

73 और जब उन्हें हमारी खुली—खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो इन्कार करने वाले ईमान
लाने वालों से कहते हैं कि दोनों गिरोहों में से कौन बेहतर हालत में है और किस की मजलिस
ज़्यादा अच्छी है. 74 लेकिन उनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं जो उनसे ज़्यादा
असबाब (संसाधन) वाली और उनसे ज़्यादा शान वाली थीं.

75 कहो कि जो शख़्स गुमराही में होता है तो रहमान उसे ढील दिया करता है, यहाँ तक कि
जब वे देख लेंगे उस चीज़ को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है, अज़ाब या क़यामत, तो उन्हें
मालूम हो जाएगा कि किस का हाल बुरा है और किस का जत्था कमज़ोर.

76 और अल्लाह हिदायत पकड़ने वालों की हिदायत में इज़ाफ़ा करता है और बाक़ी रहने
वाली नेकियाँ तुम्हारे रब के नज़दीक अज्र (प्रतिफल) के एतबार से बेहतर हैं और अंजाम के
एतबार से भी बेहतर.

77 क्या तुमने उसे देखा जिसने हमारी आयतों का इन्कार किया और कहा कि मुझे माल
और औलाद मिलकर रहेंगे. 78 क्या उसने ग़ैब में झांक कर देखा है या उसने अल्लाह से कोई
अहद (वचन) ले लिया है, 79 हरगिज़ नहीं, जो कुछ वह कहता है उसे हम लिख लेंगे और
उसकी सज़ा में इज़ाफ़ा करेंगे. 80 और जिन चीज़ों का वह दावेदार है उसके वारिस हम बनेंगे और
वह हमारे पास अकेला आएगा.

81 और उन्होंने अल्लाह के सिवा माबूद (पूज्य) बनाए हैं, ताकि वे उनके लिए मददगार बनें.
82 हरगिज़ नहीं, वे उनकी इबादत का इन्कार करेंगे और उनके मुख़ालिफ़ बन जाएँगे.

83 क्या तुमने नहीं देखा कि हमने मुन्किरों पर शैतानों को छोड़ दिया है, वे उन्हें ख़ूब उभार
रहे हैं. 84 पस तुम उनके लिए जल्दी न करो. हम उनकी गिनती पूरी कर रहे हैं. 85 जिस दिन हम
डरने वालों को रहमान की तरफ़ मेहमान बनाकर जमा करेंगे. 86 और मुजरिमों को जहन्नम की
तरफ़ प्यासा हांकेंगे. 87 किसी को शफ़ाअत का इख़्तियार न होगा, मगर उसे जिसने रहमान के
पास से इजाज़त ली हो.

88 और ये लोग कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया है. 89 यह तुमने बड़ी संगीन बात कही है. 90 क़रीब है कि उससे आसमान फट पड़ें और ज़मीन टुकड़े हो जाए और पहाड़ टूट कर गिर पड़ें, 91 इसपर कि लोग रहमान की तरफ़ औलाद की निस्बत करते हैं. 92 हालाँकि रहमान की यह शान नहीं कि वह औलाद इख़्तियार करे.

93 आसमानों और ज़मीन में कोई नहीं जो रहमान का बंदा होकर न आए. 94 उसके पास उनका शुमार है और उसने उन्हें अच्छी तरह गिन रखा है 95 और उनमें से हर एक क़यामत के दिन उसके सामने अकेला आएगा. 96 अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए उनके (दिलों में एक दूसरे के) लिए ख़ुदा मुहब्बत पैदा कर देगा.

97 **पस हमने इस क़ुरआन को तुम्हारी ज़बान में इसलिए आसान कर दिया है, ताकि तुम मुत्तक़ियों को (यानी अल्लाह से डरने वाले लोगों को इस क़ुरआन के ज़रीए से) ख़ुशख़बरी सुना दो. और हठधर्म लोगों को डरा दो.**

नोटः– क़ुरआन इसलिए नाज़िल किया गया कि उसके ज़रीए से अल्लाह से डरने वालों को ख़ुशख़बरी दी जाए और सरकश व हठधर्म लोगों को डरा दिया जाए. कोई कितना ही हठधर्म क्यों न हो, दाई को अपने ज़िम्मे का काम हर हाल में करना है.

98 और इनसे पहले हम कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं. क्या तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनकी कोई आहट सुनते हो.

सूरह–20. ता० हा०

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ता० हा०. 2 हमने क़ुरआन तुम पर इसलिए नहीं उतारा कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ. 3
बल्कि ऐसे शख़्स की नसीहत के लिए जो डरता हो. 4 यह उसकी तरफ़ से उतारा गया है जिसने
ज़मीन को और ऊंचे आसमानों को पैदा किया है. 5 वह रहमत वाला है, अर्श पर क़ायम है. 6
उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जो उन दोनों के दरमियान है और जो कुछ ज़मीन के नीचे है.

7 और तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो, वह चुपके से कही हुई बात को जानता है.

और उससे ज़्यादा छुपी बात को भी. 8 वह अल्लाह है. उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. तमाम अच्छे नाम उसी के हैं.

9 और क्या तुम्हें मूसा की बात पहुँची है. 10 जबकि उसने एक आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि ठहरो, मैंने एक आग देखी है, शायद मैं उसमें से तुम्हारे लिए एक अंगारा लाऊं या उस आग पर मुझे रास्ते का पता मिल जाए.

11 फिर जब वह उसके पास पहुँचा तो आवाज़ दी गई कि ऐ मूसा! 12 मैं ही तुम्हारा रब हूँ, पस तुम अपने जूते उतार दो, क्योंकि तुम तुवा की मुक़द्दस (पवित्र) वादी में हो. 13 और मैंने तुम्हें चुन लिया है. पस जो 'वही' की जा रही है (जो ईश-संदेश प्रकट किया जा रहा है) उसे सुनो. 14 मैं ही अल्लाह हूँ. मेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. पस तुम मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो. 15 बेशक क़यामत आने वाली है. मैं उसे छुपाए रखना चाहता हूँ. ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला मिले. 16 पस उससे तुम्हें वह शख़्स ग़ाफ़िल न कर दे जो उसपर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिशों पर चलता है कि तुम हलाक हो जाओ.

17 और यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है ऐ मूसा! 18 उसने कहा, यह मेरी लाठी है. मैं इसपर टेक लगाता हूँ और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ. इसमें मेरे लिए दूसरे काम भी हैं. 19 फ़रमाया कि ऐ मूसा! इसे ज़मीन पर डाल दो. 20 उसने उसे डाल दिया तो यकायक वह एक दौड़ता हुआ सांप बन गया. 21 फ़रमाया कि उसे पकड़ लो और मत डरो, हम फिर उसे उसकी पहली हालत पर लौटा देंगे.

22 और तुम अपना हाथ अपनी बग़ल से मिला लो, वह चमकता हुआ निकलेगा बग़ैर किसी ऐब के. यह दूसरी निशानी है. 23 ताकि हम अपनी बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियाँ तुम्हें दिखाएं. 24 तुम फ़िरऔन के पास जाओ. वह हद से निकल गया है (सरकश हो गया है).

25 मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब! मेरे सीने को मेरे लिए खोल दे. 26 और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे. 27 और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे, 28 ताकि लोग मेरी बात समझें. 29 और मेरे ख़ानदान से मेरे लिए एक मुआविन (सहायक) मुक़र्रर कर दे, 30 हारून को जो मेरा भाई है. 31 उसके ज़रीए से मेरी कमर को मज़बूत कर दे. 32 और उसे मेरे काम में शरीक कर दे, 33 ताकि हम दोनों कसरत (अधिकता) से तेरी पाकी बयान करें 34 और कसरत से तेरा चर्चा करें. 35 बेशक तू हमें देख रहा है. 36 फ़रमाया कि दे दिया गया तुम्हें ऐ मूसा तुम्हारा सवाल!

37 और हमने तुम्हारे ऊपर एक बार और एहसान किया है 38 जबकि हमने तुम्हारी माँ की तरफ़ 'वही' की (यानी इलहाम किया) उस 'वही' में यह (पैग़ाम) था, 39 कि उसे संदूक़ में रखो, फिर उसे दरिया में डाल दो, फिर दरिया उसे किनारे पर डाल देगी. उसे एक शख़्स उठा लेगा

जो मेरा भी दुश्मन है और उसका भी दुश्मन है. और मैंने अपनी तरफ़ से तुम पर एक मुहब्बत डाल दी, ताकि तुम मेरी निगरानी में परवरिश पाओ. 40 जबकि तुम्हारी बहन चलती हुई आयी, फिर वह कहने लगी, क्या मैं तुम लोगों को उसका पता दूँ जो इस बच्चे की परवरिश अच्छी तरह करे. पस हमने तुम्हें तुम्हारी माँ की तरफ़ लौटा दिया, ताकि उसकी आँख ठंडी हो और उसे ग़म न रहे. और तुमने एक शख़्स को क़तल कर दिया. फिर हमने तुम्हें उस ग़म से नजात दी. और हमने तुम्हें ख़ूब जांचा. फिर तुम कई साल मदयन वालों में रहे. फिर तुम एक अंदाज़े पर आ गए ऐ मूसा!

41 और **मैंने तुम्हें अपने लिए मुन्तख़ब किया है.**
42 **जाओ तुम और तुम्हारा भाई मेरी निशानियों के साथ. और तुम दोनों** मेरी याद में सुस्ती न करना. 43 **तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ कि वह सरकश हो गया है.** 44 **पस उससे नर्मी के साथ बात करना, शायद वह नसीहत क़बूल करे या डर जाए.**

नोटः– 'मैंने तुम्हें अपने लिए मुन्तख़ब किया है' इससे वाज़ेह है कि पैग़ाम रिसानी के काम को ख़ुदा ख़ुद अपना काम बता रहा है. दावत का काम ख़ुदा का काम है. इस बात की गहराई को अगर कोई दाई समझ ले. तो इस काम से ज़्यादा पुर-लज़्ज़त काम उसके लिए दूसरा नहीं हो सकता. इस काम के लिए पहले पैग़ंबर भेजे जाते थे, अब इसी काम को **'उम्मते-मुहम्मदी'** को अंजाम देना है.

यहाँ दूसरी बात यह वाज़ेह होती है कि ख़ुदा का पैग़ाम सरकश से सरकश इंसान तक भी पूरी ख़ैरख़ाही के साथ पहुँचाना है, चाहे वह उस पैग़ाम को क़बूल करे या ना करे.

45 दोनों ने कहा, ऐ हमारे रब! हमें अंदेशा है कि वह हम पर ज़्यादती करे या सरकशी करने
लगे. 46 फ़रमाया कि तुम अंदेशा न करो. मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुन रहा हूँ और देख रहा हूँ.
47 पस तुम उसके पास जाओ और कहो कि हम दोनों तेरे रब के भेजे हुए हैं, पस तू बनी इसराईल
को हमारे साथ जाने दे. और उन्हें न सता. हम तेरे रब के पास से एक निशानी भी लाए हैं. और
सलामती उस शख़्स के लिए है जो हिदायत की पैरवी करे. 48 हम पर यह 'वही' (यानी ईश-
वाणी प्रकट) की गई है कि उस शख़्स पर अज़ाब होगा जो झुठलाए और एराज़ (उपेक्षा) करे.

49 फ़िरऔन ने कहा, फिर तुम दोनों का रब कौन है, ऐ मूसा! 50 मूसा ने कहा, हमारा रब

वह है जिसने हर चीज़ को उसकी सूरत अता की, फिर रहनुमाई फ़रमाई. 51 फ़िरऔन ने कहा, फिर अगली क़ौमों का क्या हाल है. 52 मूसा ने कहा, उसका इल्म मेरे रब के पास एक दफ़तर में है. मेरा रब न ग़लती करता है और न भूलता है.

53 वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया. और उसमें तुम्हारे लिए राहें निकालीं और आसमान से पानी उतारा. फिर हमने उसके ज़रीए से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की नबातात (यानी पौधे) पैदा किये. 54 खाओ और अपने मवेशियों को चराओ. बेशक उसमें अक़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं. 55 उसी से (यानी मिट्टी से) हमने तुम्हें पैदा किया है और उसी में हम तुम्हें लौटाएंगे और उसी से हम तुम्हें दुबारा निकालेंगे.

56 और हमने फ़िरऔन को अपनी सब निशानियाँ दिखाईं तो उसने झुठलाया और इन्कार किया. 57 उसने कहा, ऐ मूसा! क्या तुम इसलिए हमारे पास आए हो कि अपने जादू से हमें हमारे मुल्क से निकाल दो. 58 तो हम तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लाएँगे. पस तुम हमारे और अपने दरमियान एक वादा मुक़र्रर कर लो, न हम उसके ख़िलाफ़ करें और न तुम. यह मुक़ाबला एक हमवार (खुले) मैदान में हो.

59 मूसा ने कहा, तुम्हारे लिए वादे का दिन मेले वाला दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े तक जमा किए जाएँ. 60 फ़िरऔन वहाँ से हटा, फिर अपने सारे दांव जमा किए, उसके बाद वह मुक़ाबले पर आया. 61 मूसा ने कहा कि तुम्हारा बुरा हो अल्लाह पर झूठ न बांधो कि वह तुम्हें किसी आफ़त से ग़ारत कर दे. और जिसने ख़ुदा पर झूठ बांधा वह नाकाम हुआ.

62 फिर उन्होंने अपने मामले में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया. और उन्होंने चुपके—चुपके बाहम (आपस में) मशविरा किया. 63 उन्होंने कहा, ये दोनों यक़ीनन जादूगर हैं, वे चाहते हैं कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और तुम्हारे उम्दा तरीक़े का ख़ात्मा कर दें. 64 पस तुम अपनी तदबीरें इकट्ठा करो. फिर मुत्तहिद (एकजुट) होकर आओ और वही जीत गया जो आज ग़ालिब रहा.

65 उन्होंने कहा, ऐ मूसा! या तो तुम डालो या हम पहले डालने वाले बनें. 66 मूसा ने कहा कि तुम ही पहले डालो तो यकायक उनकी रस्सियां और उनकी लाठियां उनके जादू के ज़ोर से उसे इस तरह दिखाई दीं, गोया कि वे दौड़ रही हैं. 67 पस मूसा अपने दिल में कुछ डर गया. 68 हमने कहा कि तुम डरो नहीं, तुम ही ग़ालिब रहोगे. 69 और जो तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसे डाल दो, वह उन्हें निगल जाएगा जो उन्होंने बनाया है. यह जो कुछ उन्होंने बनाया है, वह जादूगर का फ़रेब है. और जादूगर कभी कामयाब नहीं होता, चाहे वह कैसे आए. 70 पस जादूगर सज्दे में गिर पड़े. उन्होंने कहा कि हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाए.

71 फ़िरऔन ने कहा कि तुमने उसे मान लिया, इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त देता. वही तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है. तो अब मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुख़ालिफ़ सिम्तों से (जानिब से) कटवाऊंगा. और मैं तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूँगा. और तुम जान लोगे कि हम में से किस का अज़ाब ज़्यादा सख़्त है और ज़्यादा देर तक रहने वाला है.

72 जादूगरों ने कहा कि हम तुझे हरगिज़ उन दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) पर तरजीह नहीं देंगे जो हमारे पास आए हैं. और उस ज़ात पर जिसने हमें पैदा किया है, पस तुझे जो कुछ करना है, उसे कर डाल. तू इसी दुनिया की ज़िंदगी में कर सकता है.
73 हम अपने रब पर ईमान लाए, ताकि वह हमारे गुनाहों को बख़्श दे और उस जादू को भी जिस पर तूने हमें मजबूर किया. और अल्लाह बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है.

74 **बेशक जो शख़्स मुजरिम बनकर अपने रब के सामने हाज़िर होगा तो उसके लिए जहन्नम है, उसमें वह न मरेगा और न जिएगा.**
75 **और जो शख़्स अपने रब के पास मोमिन होकर आएगा जिसने नेक अमल किए हों, तो ऐसे लोगों के लिए बड़े ऊंचे दर्जे हैं.**

नोटः– इन दो में से एक सूरत में ज़िंदगी का अंजाम हर शख़्स के सामने आने वाला है. इसी आने वाले अंजाम से आगाह करने का नाम दावत है.

76 उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी. वे उनमें हमेशा रहेंगे. और यह बदला है उस शख़्स का जो पाकीज़गी इख़्तियार करे.

77 और हमने मूसा को 'वही' की (ईश-संदेश प्रकट किया), कि रात के वक़्त मेरे बंदों को लेकर निकलो. फिर उनके लिए समुंदर में सूखा रास्ता बना लो, तुम न तआक़ुब (पीछा किए जाने) से डरो और न किसी और चीज़ से डरो.
78 फिर फ़िरऔन ने अपने लशकरों के साथ उनका पीछा किया, फिर उन्हें समुंदर के पानी ने ढांप लिया, जैसा कि ढांप लिया
79 और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और उसे सही राह नहीं दिखाई.

80 ऐ बनी इसराईल! हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दी और तुम से तूर के दाईं जानिब वादा ठहराया. और हमने तुम्हारे ऊपर मन्न और सलवा उतारा.
81 खाओ हमारी दी हुई पाक रोज़ी और उसमें सरकशी न करो कि तुम्हारे ऊपर मेरा ग़ज़ब नाज़िल हो. और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह तबाह हुआ.
82 अलबत्ता जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल करे और सीधी राह पर रहे तो उसके लिए मैं बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला हूँ.

83 और ऐ मूसा! अपनी क़ौम को छोड़कर जल्द आने पर तुम्हें किस चीज़ ने उभारा. 84 मूसा ने कहा, वे लोग भी मेरे पीछे ही हैं. और ऐ मेरे रब! मैं तेरी तरफ़ जल्द आ गया, ताकि तू राज़ी हो. 85 फ़रमाया, हमने तुम्हारी क़ौम को तुम्हारे बाद एक फ़ितने में डाल दिया. और सामरी ने उसे गुमराह कर दिया.

86 फिर मूसा अपनी क़ौम की तरफ़ ग़ुस्से और रंज में भरे हुए लौटे. उन्होंने कहा, ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम से तुम्हारे रब ने एक अच्छा वादा नहीं किया था. क्या तुम पर ज़्यादा ज़माना गुज़र गया. या तुमने चाहा कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब का ग़ज़ब (प्रकोप) नाज़िल हो, इसलिए तुमने मुझ से वादाख़िलाफ़ी की.

87 उन्होंने कहा कि हमने अपने इख़्तियार से आपके साथ वादाख़िलाफ़ी नहीं की. बल्कि क़ौम के ज़ेवरात का बोझ हमसे उठवाया गया था तो हमने उसे (सामरी के कहने पर आग में) फेंक दिया. फिर इस तरह सामरी ने ढाल लिया. 88 पस उसने उनके लिए एक बछड़ा बरामद कर दिया. एक मूर्ति जिससे गाय की सी आवाज़ निकलती थी. फिर उसने कहा कि यह तुम्हारा माबूद (पूज्य) है और मूसा का माबूद भी, मूसा इसे भूल गए. 89 क्या वे देखते नहीं थे कि वह न किसी बात का जवाब देता है और न कोई नफ़ा या नुक़सान पहुँचा सकता है.

90 और हारून ने उनसे पहले ही कहा था, ऐ मेरी क़ौम! तुम इस बछड़े के ज़रीए से बहक गए हो और तुम्हारा रब तो रहमान है. पस मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो. 91 उन्होंने कहा कि हम तो इसी की परस्तिश (पूजा) में लगे रहेंगे, जब तक कि मूसा हमारे पास लौट न आए.

92 मूसा ने कहा कि ऐ हारून! जब तुमने देखा कि वे बहक गए हैं तो तुम्हें किस चीज़ ने रोका 93 कि तुम मेरी पैरवी करो. क्या तुमने मेरे कहने के ख़िलाफ़ किया. 94 हारून ने कहा कि ऐ मेरी माँ के बेटे! तुम मेरी दाढ़ी न पकड़ो और न मेरा सर. मुझे यह डर था कि तुम कहोगे कि तुमने बनी इसराईल के दरमियान फूट डाल दी और मेरी बात का लिहाज़ न किया.

95 मूसा ने कहा कि ऐ सामरी! तेरा क्या मामला है. 96 उसने कहा कि मुझे वह चीज़ नज़र आयी जो दूसरों को नज़र नहीं आयी तो मैंने रसूल के नक़्शेक़दम (पद चिन्हों) से एक मुट्ठी उठाई और वह इसमें डाल दी. मेरे नफ़्स (अंत:करण) ने मुझे ऐसा ही समझाया. 97 मूसा ने कहा कि दूर हो. अब तेरे लिए ज़िंदगी भर यह है कि तू कहे कि मुझे न छूना. और तेरे लिए एक और वादा है जो तुझसे टलने वाला नहीं. और तू अपने इस माबूद (पूज्य) को देख जिस पर तू बराबर मोअतकिफ़ रहता था (यानी निष्ठावान की तरह तू उसकी उपासना करता था), हम उसे जलाएँगे फिर उसे दरिया में बिखेर कर बहा देंगे. 98 तुम्हारा माबूद तो सिर्फ़ अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं. उसका इल्म हर चीज़ पर हावी है.

99 इसी तरह हम तुम्हें उनके अहवाल (वृत्तांत) सुनाते हैं जो पहले गुज़र चुके. और हमने
तुम्हें अपने पास से एक नसीहतनामा दिया है. 100 जो इससे एराज़ (उपेक्षा) करेगा वह क़यामत
के दिन एक भारी बोझ उठाएगा. 101 वे उसमें हमेशा रहेंगे और यह बोझ क़यामत के दिन उनके
लिए बहुत बुरा होगा. 102 जिस दिन सूर में फूँक मारी जाएगी और मुजरिमों को उस दिन हम इस
हाल में जमा करेंगे कि ख़ौफ़ से उनकी आँखें नीली होंगी. 103 आपस में चुपके—चुपके कहते
होंगे कि तुम सिर्फ़ दस दिन रहे होंगे. 104 हम ख़ूब जानते हैं जो कुछ वे कहेंगे. जबकि उनका
सबसे ज़्यादा वाक़िफ़कार कहेगा कि तुम सिर्फ़ एक दिन ठहरे.

105 और लोग तुम से पहाड़ों की बाबत पूछते हैं. कहो कि मेरा रब उन्हें उड़ाकर बिखेर
देगा. 106 फिर ज़मीन को साफ़ मैदान बनाकर छोड़ देगा. 107 तुम इसमें न कोई कजी (टेढ़)
देखोगे और न कोई ऊँचान. 108 उस दिन सब पुकारने वाले के पीछे चल पड़ेंगे. ज़रा भी कोई
कजी न होगी (यानी कोई ज़रा भी अकड़ दिखा न सकेगा). तमाम आवाज़ें रहमान के आगे दब
जाएँगी. तुम एक सरसराहट (यानी चलने से होने वाली धीमी आवाज़) के सिवा कुछ न सुनोगे.

109 उस दिन सिफ़ारिश नफ़ा न देगी, मगर ऐसा शख़्स जिसे रहमान ने इजाज़त दी हो और
उसके लिए बोलना पसंद किया हो. 110 वह सबके अगले और पिछले अहवाल को जानता है.
और उनका इल्म उसका इहाता नहीं कर सकता. 111 और तमाम चेहरे उस हय्युल-क़य्यूम
(जीवंत एवं शाश्वत हस्ती) के सामने झुके होंगे. और ऐसा शख़्स नाकाम रहेगा जो ज़ुल्म लेकर
आया होगा. 112 और जिसने नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा तो उसे न
किसी ज़्यादती का अंदेशा होगा और न किसी कमी का.

113 और इसी तरह हमने अरबी का क़ुरआन उतारा है और इसमें हमने तरह-तरह से वईद
(चेतावनी) बयान की है, ताकि लोग डरें या वह उनके दिल में कुछ सोच डाल दे. 114 पस बरतर है
अल्लाह, बादशाहे-हक़ीक़ी. और तुम क़ुरआन के लेने में जल्दी न करो, जब तक उसकी 'वही' (यानी
उसका प्रकटीकरण) तकमील को न पहुँच जाए. और कहो कि ऐ मेरे रब! मेरा इल्म ज़्यादा कर दे.

115 और हमने आदम को इससे पहले हुक्म दिया था तो वह भूल गया और हमने उसमें
अज़्म (दृढ़-संकल्प) नहीं पाया. 116 और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो
तो उन्होंने सज्दा किया, मगर इबलीस (शैतान) कि उसने इन्कार किया. 117 फिर हमने कहा कि
ऐ आदम! यह बिलाशुबहा तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है तो कहीं वह तुम दोनों को
जन्नत से निकलवा न दे, फिर तुम महरूम होकर रह जाओ.

118 यहाँ तुम्हारे लिए यह है कि तुम न भूखे रहोगे और न तुम नंगे होंगे. 119 और तुम यहाँ
न प्यासे होंगे, और न तुम्हें धूप लगेगी. 120 फिर शैतान ने उसे बहकाया. शैतान ने कहा, ऐ

आदम! क्या मैं तुम्हें हमेशगी (अमरत्व) का दरख़्त बताऊँ. और ऐसी बादशाही जिसमें कभी कमज़ोरी न आए. 121 पस उन दोनों ने उस दरख़्त का फल खा लिया तो उन दोनों की शर्मगाहें एक दूसरे के सामने खुल गईं. और दोनों अपने आपको जन्नत के पत्तों से ढाँकने लगे. और आदम ने अपने रब के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी की तो वह भटक गया. 122 फिर उसके रब ने उसे नवाज़ा. पस उसकी तौबा क़बूल की और उसे हिदायत दी.

123 ख़ुदा ने कहा कि तुम दोनों यहाँ से उतरो. तुम एक दूसरे के दुश्मन होंगे. फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, वह न गुमराह होगा और न महरूम रहेगा. 124 और जो शख़्स मेरी नसीहत से एराज़ (उपेक्षा) करेगा तो उसके लिए तंगी का जीना होगा. और क़यामत के दिन हम उसे अंधा उठाएंगे. 125 वह कहेगा कि ऐ मेरे रब! तूने मुझे अंधा क्यों उठाया मैं तो आंखों वाला था. 126 इरशाद होगा कि इसी तरह तुम्हारे पास हमारी आयतें आयीं तो तुमने उनका कुछ ख़याल न किया तो इसी तरह आज तुम्हारा कुछ ख़याल न किया जाएगा.

नोटः– जिसे अल्लाह की आयतों में हिदायत न मिले, फिर वह शख़्स अल्लाह की नज़र में अंधा है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी.

127 और इसी तरह हम बदला देंगे उसे जो हद से गुज़र जाए और जो अपने रब की निशानियों पर ईमान न लाए. और आख़िरत का (यानी मृत्यु-पश्चात जीवन का) अज़ाब बड़ा सख़्त है और बहुत बाक़ी रहने वाला.

128 क्या लोगों को इस बात से समझ न आयी कि उनसे पहले हमने कितने गिरोह हलाक कर दिए. ये उनकी बस्तियों में चलते हैं, बेशक उसमें अहले-अक़्ल के लिए बड़ी निशानियाँ हैं.
129 और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बात पहले तय न हो चुकी होती. और मोहलत की एक मुद्दत मुक़र्रर न होती तो ज़रूर उनका फ़ैसला चुका दिया जाता. 130 पस जो ये कहते हैं, उसपर सब्र करो. और अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह (महिमा-गान) करो, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात के औक़ात में भी तस्बीह करो और दिन के किनारों पर भी, ताकि तुम राज़ी हो जाओ (ताकि तुम्हें आत्मशांति मिले).

131 **और हरगिज़ उन चीज़ों की तरफ़ आँख उठाकर भी न देखो जिन्हें हमने उनके कुछ गिरोहों को उनकी आज़माइश के लिए दे रखा है. और तुम्हारे रब का रिज़्क़ ज़्यादा बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है.**

नोटः– दुनिया की चमक-धमक ना बेहतर है और ना बाक़ी रहने वाली है, इसीलिए मोमिन की नज़र आख़िरत पर होती है जो बेहतर भी है और बाक़ी रहने वाली भी है.

132 और अपने लोगों को नमाज़ का हुक्म दो और उसके पाबंद रहो. हम तुम से कोई रिज़्क़ नहीं माँगते. रिज़्क़ तो तुम्हें हम देंगे और बेहतर अंजाम तो तक़वा (ईश-भय) ही के लिए है.

133 और लोग कहते हैं कि यह अपने रब के पास से हमारे लिए कोई निशानी क्यों नहीं लाते. क्या उन्हें पहले की किताबों की दलील नहीं पहुँची?

134 **और अगर हम उन्हें इससे पहले किसी अज़ाब से हलाक कर देते तो वे कहते कि ऐ हमारे रब! तूने हमारे पास रसूल क्यों न भेजा कि हम ज़लील और रुसवा होने से पहले तेरे पैग़ामात की पैरवी करते.**

नोटः– अब चूंकि रसूल आने वाला नहीं है. लेकिन इंसानों का पैदा होना जारी है. अगर इन इंसानों तक ख़ुदा का पैग़ाम न पहुँचे तो वह लोग अल्लाह की अदालत में अहले-ईमान के ख़िलाफ़ शिकायत करेंगे. कहेंगे कि **'ख़ुदाया जिनके पास तेरा पैग़ाम मौजूद था और जिनपर उसे पहुँचाने की ज़िम्मेदारी थी, उन्होंने उसे हम तक नहीं पहुँचाया. वह अगर उसे हम तक पहुँचाते तो हम उसकी पैरवी करते और आज रुसवाई से हमारा सामना नहीं होता.'**

135 कहो कि हर एक मुन्तज़िर है तो तुम भी इंतज़ार करो. आइंदा तुम जान लोगे कि कौन सीधी राह वाला है और कौन मंज़िल तक पहुँचा.

पारा – 17

सूरह–21. अल–अंबिया

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 **लोगों के लिए उनका हिसाब नज़दीक आ पहुँचा. और वे ग़फ़लत में पड़े हुए एराज़ (उपेक्षा) कर रहे हैं.**

नोटः– आज लोगों का हाल बिलाशुबहा ऐसा ही हो चुका है. लेकिन सहाबा–कराम का यह हाल था कि रसूले ख़ुदा (स.) उनके बीच मौजूद होने के बावजूद बादलों में, तेज़ हवाओं में क़यामत की आमद को महसूस करते थे, मगर आज लोगों का हाल यह है कि क़यामत की बहुतसी निशानियाँ ज़ाहिर होने के बावजूद भी क़यामत को दूर की चीज़ समझते हैं. बिलाशुबहा यह धोका है. लोग ऐसे ही धोके में रहेंगे और क़यामत उनपर अचानक आ जाएगी.

2 उनके रब की तरफ़ से जो भी नई नसीहत उनके पास आती है, वे उसे हंसी करते हुए सुनते
हैं. 3 उनके दिल ग़फ़लत में पड़े हुए हैं. और ज़ालिमों ने आपस में यह सरगोशी (कानाफूसी) की,
कि यह शख़्स तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है. फिर तुम क्यों आंखों देखे उसके जादू में फँसते
हो. 4 रसूल ने कहा कि मेरा रब हर बात को जानता है, चाहे वह आसमान में हो या ज़मीन में.
और वह सुनने वाला, जानने वाला है.

5 बल्कि वे कहते हैं, ये परागंदा ख़्वाब (दुस्वप्न) हैं. बल्कि इसे उसने गढ़ लिया है. बल्कि
वह एक शायर हैं. उसे चाहिए कि हमारे पास उस तरह की कोई निशानी लाएँ जिस तरह की
निशानियों के साथ पिछले रसूल भेजे गए थे. 6 उनसे पहले किसी बस्ती के लोग भी जिन्हें हमने
हलाक किया, ईमान नहीं लाए तो क्या ये लोग ईमान लाएँगे.

7 और तुम से पहले भी जिसे हमने रसूल बनाकर भेजा, आदमियों ही में से भेजा. हम
उनकी तरफ़ 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजते थे. पस तुम अहले–किताब से पूछ लो, अगर तुम
नहीं जानते. 8 और हमने उन रसूलों को ऐसे जिस्म नहीं दिए कि वे खाना न खाते हों. और वे
हमेशा रहने वाले न थे. 9 फिर हमने उनसे वादा पूरा किया. पस उन्हें और जिस–जिस को हमने
चाहा बचा लिया. और हमने हद से गुज़रने वालों को हलाक कर दिया.

10 हमने तुम्हारी तरफ़ एक किताब उतारी है जिसमें तुम्हारे लिए याददिहानी है, फिर क्या तुम
समझते नहीं. 11 और कितनी ही ज़ालिम बस्तियां हैं जिन्हें हमने पीस डाला. और उनके बाद

दूसरी क़ौम को उठाया. 12 पस जब उन्होंने हमारा अज़ाब आते देखा तो वे उससे भागने लगे. 13 भागो मत. और अपने सामाने-ऐश की तरफ़ और अपने मकानों की तरफ़ वापस चलो, ताकि तुम से पूछा जाए. 14 उन्होंने कहा, हाय हमारी कमबख़्ती, बेशक हम लोग ज़ालिम थे. 15 पस वे यही पुकारते रहे. यहाँ तक कि हमने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे खेती कट गई हो और आग बुझ गई हो.

16 और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया. 17 अगर हम कोई खेल बनाना चाहते तो उसे हम अपने पास से बना लेते, अगर हमें यह करना होता.

नोटः- अल्लाह तआला ने इस बामाना कायनात की तख़्लीक़ खेल के तौर पर नहीं की है. मक़सदे-तख़्लीक़ का ज़िक्र क़ुरआन में दूसरे मक़ामात पर आ चुका है. लेकिन इंसान ने इस कुर्रे-अर्ज़ (पृथ्वी) को खेल और तमाशे से भर दिया है. अब यह कहना दुरुस्त होगा कि हर पैदा होने वाला बच्चा अपने हाथ में खिलौना लेकर पैदा होता है. और खेल व तमाशे की राह पर उसकी ज़िंदगी परवान चढ़ती है. घर-घर में टी.व्ही., हर हाथ में मोबाइल, टी.व्ही. और मोबाइल में 24 घंटे खेल व तमाशा जारी है. टी.व्ही. और मोबाइल अपने आप में बुरी चीज़ें नहीं हैं, लेकिन इंसान इन चीज़ों का इस क़दर बुरा इस्तेमाल कर रहा है कि ज़मीन खेल व तमाशा, फ़ितना व फ़साद से भर गई है.

इंसान का यह अमल ख़ुदा के मक़सदे-तख़्लीक़ के ऐन ख़िलाफ़ है. यह सुरतेहाल बताती है कि ख़ुदा इस दुनिया को अब ज़्यादा देर तक नहीं चलने देगा जो उसके मक़सदे-तख़्लीक़ से इन्तेहा दर्जे तक दूर चली गई है. इस सूरतेहाल का तक़ाज़ा है कि दाई को हर दूसरे काम को पीछे छोड़ते हुए सारी तर्जीह दावत को देने का अब आख़िरी वक़्त आ गया है. खेल व तमाशे से डूबी हुई सारी इन्सानियत बिल्कुल क़यामत के किनारे पर खड़ी हुई है. हर घर में टी.व्ही. और हर हाथ में मोबाइल पहुँच चुका, लेकिन हर घर में क़ुरआन अभी तक नहीं पहुँचा. अब दाई को इस काम के लिए आख़िरी तौर पर झोंक देना है. दाई जब इस क़ुरआन की आयत से गुज़रता है तो वह तड़प उठता है कि अल्लाह ने एक बामाना मक़सद के तहत इस दुनिया को बनाया था. लेकिन दुनिया वालों ने किस तरह खेल व तमाशे से उसे भर दिया.

18 बल्कि हम हक़ (सत्य) को बातिल (असत्य) पर मारेंगे, तो वह उसका सर तोड़ देगा, तो वह यकायक जाता रहेगा और तुम्हारे लिए उन बातों से बड़ी ख़राबी है जो तुम बयान करते हो.

19 और उसी के हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं. और जो (फ़रिश्ते) उसके पास हैं, वे उसकी इबादत से सरताबी (विमुखता) नहीं करते और न काहिली (सुस्ती) करते हैं. 20 वे रात दिन उसे याद करते हैं, कभी नहीं थकते.

21 क्या उन्होंने ज़मीन में से माबूद (पूज्य) ठहराए हैं जो किसी को ज़िंदा करते हों. 22 अगर इन दोनों में (यानी ज़मीन व आसमान में) अल्लाह के सिवा माबूद होते तो दोनों दरहम—बरहम हो जाते. पस अल्लाह, अर्श का मालिक, उन बातों से पाक है जो ये लोग बयान करते हैं. 23 वह जो कुछ करता है उसपर, वह पूछा न जाएगा (यानी वह किसी को उत्तरदायी नहीं है) और लोगों से पूछ होगी (सब लोग उसके सामने उत्तरदायी हैं).

24 क्या उन्होंने ख़ुदा के सिवा और माबूद (पूज्य) बनाए हैं. उनसे कहो कि तुम अपनी दलील लाओ. यह नसीहत उन लोगों के लिए है जो मेरे साथ हैं और यही नसीहत उन लोगों के लिए भी थी जो मुझ से पहले हुए. बल्कि उनमें से अकसर हक़ को नहीं जानते. पस वे एराज़ (उपेक्षा) कर रहे हैं. 25 और हमने तुम से पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसकी तरफ़ हमने यह 'वही' न की हो (यह ईश-संदेश न भेजा हो) कि मेरे सिवा (यानी अल्लाह के सिवा) कोई माबूद नहीं, पस तुम मेरी इबादत करो.

26 और वे कहते हैं कि रहमान ने औलाद बनाई है, वह इससे पाक है, बल्कि (फ़रिश्ते) तो उसके मुअज़्ज़ज़ (सम्माननीय) बंदे हैं. 27 वे उससे आगे बढ़कर बात नहीं करते. और वे उसी के हुक्म के मुताबिक़ अमल करते हैं. 28 अल्लाह उनके अगले और पिछले अहवाल को जानता है. और वे सिफ़ारिश नहीं कर सकते, मगर उसके लिए जिसे अल्लाह पसंद करे. और वे उसकी हैबत से डरते रहते हैं. 29 और उनमें से जो शख़्स कहेगा कि ख़ुदा के सिवा मैं भी माबूद (पूज्य) हूँ तो हम उसे जहन्नम की सज़ा देंगे. हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं.

30 क्या इन्कार करने वालों ने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों बंद थे, फिर हमने उन्हें खोल दिया. और हमने पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया. क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाते.

31 और हमने ज़मीन में पहाड़ बनाए कि वह उन्हें लेकर झुक न जाए और उसमें हमने कुशादा रास्ते बनाए, ताकि लोग राह पाएं. 32 और हमने आसमान को एक महफ़ूज़ (सुरक्षित) छत बनाया. और वे उसकी निशानियों से एराज़ (उपेक्षा) किए हुए हैं. 33 और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चांद बनाए. सब अपनी-अपनी मदार (कक्ष) में तैर रहे हैं.

34 और हमने तुम से पहले भी किसी इंसान को हमेशा की ज़िंदगी नहीं दी तो क्या अगर तुम्हें मौत आ जाए तो वे हमेशा रहने वाले हैं.

35 **हर जान को मौत का मज़ा चखना है.**

और हम तुम्हें बुरी हालत और अच्छी हालत से आज़माते हैं, परखने के लिए. और तुम सब हमारी तरफ़ लौटाए जाओगे.

नोटः– यह ज़िंदगी इम्तिहान के लिए है. मौत इस इम्तिहान का ख़ातमा है, लेकिन मौत ज़िंदगी का ख़ातमा नहीं. मौत के बाद इंसान हमेशा रहने की दुनिया में पहुँचा दिया जाता है.

36 और मुन्किर लोग जब तुम्हें देखते हैं तो वे सब तुम्हें मज़ाक़ बना लेते हैं. क्या यही है जो तुम्हारे माबूदों (पूज्यों) का ज़िक्र किया करता है. और ख़ुद ये लोग रहमान के ज़िक्र का इन्कार करते हैं.

37 इंसान उजलत (जल्दबाज़ी) के ख़मीर से पैदा हुआ है. मैं तुम्हें अनक़रीब अपनी निशानियाँ दिखाऊंगा, पस तुम मुझ से जल्दी न करो 38 और लोग कहते हैं कि यह वादा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो. 39 काश इन मुन्किरों को उस वक़्त की ख़बर होती, जबकि वे आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से. और न उन्हें कोई मदद पहुँचेगी. 40 बल्कि वह अचानक उनपर आ जाएगी, पस उन्हें बदहवास कर देगी. फिर वे न उसे दफ़ा कर सकेंगे और न उन्हें मोहलत दी जाएगी. 41 और तुम से पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया. फिर जिन लोगों ने उनमें से मज़ाक़ उड़ाया था उन्हें उस चीज़ ने घेर लिया जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे.

42 कहो कि कौन है जो रात और दिन में रहमान से तुम्हारी हिफ़ाज़त करता है. बल्कि वे लोग अपने रब की याददिहानी से एराज़ (उपेक्षा) कर रहे हैं. 43 क्या उनके लिए हमारे सिवा कुछ माबूद (पूज्य) हैं जो उन्हें बचा लेते हैं. (बल्कि) वे ख़ुद अपनी हिफ़ाज़त की क़ुदरत नहीं रखते. और न हमारे मुक़ाबले में कोई उनका साथ दे सकता है.

44 बल्कि हमने उन्हें और उनके बाप—दादा को दुनिया का सामान दिया. यहाँ तक कि इसी हाल में उनपर लम्बी मुद्दत गुज़र गई. क्या वे नहीं देखते कि हम ज़मीन को उसके अतराफ़ से (यानी चारों तरफ़ से) घटाते चले जा रहे हैं. फिर क्या यही लोग ग़ालिब (वर्चस्वशील) रहने वाले हैं.

45 **कहो कि मैं बस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के ज़रीए से तुम्हें डराता हूँ.** **और बहरे पुकार को नहीं सुनते, जबकि उन्हें डराया जाए**

46 और अगर तेरे रब के अज़ाब का झोंका उन्हें लग जाए तो वे कहने लगेंगे कि हाय हमारी

बदबख़्ती, बेशक हम ज़ालिम थे.

47 और हम क़यामत के दिन इंसाफ़ की तराज़ू रखेंगे. पस किसी जान पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा. और अगर राई के दाने के बराबर भी किसी का अमल होगा तो हम उसे हाज़िर कर देंगे. और हम हिसाब लेने के लिए काफ़ी हैं.

48 हमने मूसा और हारून को फ़ुरक़ान (सत्य–असत्य जांचने की कसौटी) और रोशनी और नसीहत अता की ख़ुदातरसों (ईश–भीरु लोगों) के लिए, 49 जो बिना देखे अपने रब से डरते हैं और वे क़यामत का ख़ौफ़ रखने वाले हैं. 50 और यह एक बाबरकत याददिहानी है जो हमने उतारी है, तो क्या तुम इसके मुन्किर हो.

51 और हमने इससे पहले इब्राहीम को इसकी हिदायत अता की. और हम उसे ख़ूब जानते थे. 52 जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि ये क्या मूर्तियां हैं जिनपर तुम जमे बैठे हो. 53 उन्होंने कहा कि हमने अपने बाप–दादा को उनकी इबादत करते हुए पाया है. 54 इब्राहीम ने कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बाप–दादा एक खुली गुमराही में मुब्तिला रहे.

55 उन्होंने कहा, क्या तुम हमारे पास सच्ची बात लाए हो या तुम मज़ाक़ कर रहे हो. 56 इब्राहीम ने कहा, बल्कि तुम्हारा रब वह है जो आसमानों और ज़मीन का रब है. जिसने उन्हें पैदा किया. और मैं इस बात की गवाही देने वाला हूँ 57 और ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक तदबीर (युक्ति) करुंगा, जबकि तुम पीठ फेरकर (यहां से) चले जाओगे. 58 पस उसने उन्हें टुकड़े–टुकड़े कर दिया, सिवा उनके एक बड़े के, ताकि वे उसकी तरफ़ रुजूअ करें.

59 उन्होंने कहा कि किसने हमारे बुतों के साथ ऐसा किया है, बेशक वह बड़ा ज़ालिम है. 60 लोगों ने कहा कि हमने एक नौजवान (युवक) को इनका तज़किरा करते हुए सुना था जिसे इब्राहीम कहा जाता है. 61 उन्होंने कहा कि उसे सब आदमियों के सामने हाज़िर करो. ताकि वे देखें. 62 उन्होंने कहा कि ऐ इब्राहीम! क्या हमारे माबूदों (पूज्यों) के साथ तुमने ऐसा किया है. 63 इब्राहीम ने कहा, बल्कि उनके इस बड़े ने ऐसा किया है तो उनसे पूछ लो अगर ये बोलते हों.

64 फिर उन्होंने अपने जी में सोचा फिर कहने लगे कि हक़ीक़त में तुम ही नाहक़ पर हो. 65 फिर अपने सरों को झुका लिया. ऐ इब्राहीम! तुम जानते हो कि ये बोलते नहीं.

66 **इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हो जो तुम्हें न कोई फ़ायदा पहुँचा सकें और न कोई नुक़सान.** 67 **अफ़सोस है तुम पर भी और उन चीज़ों पर**

भी जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, क्या तुम समझते नहीं? 68 **उन्होंने कहा कि इसे आग में जला दो और अपने माबूदों (पूज्यों) की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है.** 69 **हमने कहा कि ऐ आग! तू इब्राहीम के लिए ठंडक और सलामती बन जा.**

नोटः– क़ुरआन के इस बयान से वाज़ेह है कि हज़रत इब्राहिम उन लोगों को हक़ का पैग़ाम पहुँचा रहे थे जो बुतपरस्ती और शिर्क में मुब्तिला थे. इसके बिल्कुल बरअक्स आज का मुसलमान जो ख़ुद को हक़-परस्त समझता है, लेकिन एक अजीब सवाल करता है कि 'क्या ग़ैर-मुस्लिम हज़रात तक हक़ का पैग़ाम (यानी क़ुरआन) पहुँचाया जा सकता है.' जबकि आज हक़ का पैग़ाम पहुँचाना बेइन्तिहा आसान है. आज का नमरूद किसी दाई को आग में नहीं डाल सकता. आज का फ़िरऔन किसी दाई को क़तल की धमकी नहीं दे सकता.

मज़ीद यह वाज़ेह हो कि इसी दावत के काम पर अल्लाह का ज़ालिमों से **दाई को बचाने का वादा है.** (क़ुरआन 5:67) यह हिफ़ाज़त का वादा और किसी काम पर नहीं है. इसी काम को अंजाम देने पर अहले-ईमान को ख़ुदा इस दुनिया में ज़ालिमों की साज़िशों से बचाएगा और आख़िरत में जहन्नम से बचाएगा.

70 और उन्होंने उसके साथ बुराई करना चाहा तो हमने उन्हीं लोगों को नाकाम बना दिया.

71 और हम उसे और लूत को (ज़ालिमों से) नजात देकर उस ज़मीन की तरफ़ ले आए
जिसमें हमने दुनिया वालों के लिए बरकतें रखी हैं. 72 और हमने उसे इस्हाक़ दिया और फिर
मज़ीद याक़ूब. और हमने उन सबको नेक बनाया. 73 और हमने उन्हें इमाम (नायक) बनाया जो
हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे. और हमने उन्हें नेक अमली और नमाज़ की इक़ामत और ज़कात
की अदायगी का हुक्म भेजा और वे हमारी इबादत करने वाले थे.

74 और लूत को हमने हिकमत व इल्म (विवेक एवं ज्ञान) अता किया. और उसे उस बस्ती
से नजात दी जो गंदे काम करती थी. बिलाशुबहा वे बहुत बुरे, फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोग थे.
75 और हमने उसे अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह नेकों में से था.

76 और नूह को, जबकि इससे पहले उसने (हमें) पुकारा तो हमने उसकी दुआ क़बूल की.
पस हमने उसे और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से नजात दी. 77 और उन लोगों के मुक़ाबले में
उसकी मदद की जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया. बेशक वे बहुत बुरे लोग थे. पस हमने उन
सबको ग़र्क़ कर दिया.

78 और दाऊद और सुलैमान को जब वे दोनों खेत के बारे में फ़ैसला कर रहे थे, जबकि उसमें कुछ लोगों की बकरियाँ रात के वक़्त जा पड़ीं. और हम उनके इस फ़ैसले को देख रहे थे.
79 पस हमने सुलैमान को उसकी समझ दे दी. और हमने दोनों को हिकमत और इल्म (यानी विवेक एवं ज्ञान) अता किया था. और हमने दाऊद के साथ ताबे कर दिया था पहाड़ों को कि वे उसके साथ तस्बीह करते थे और परिंदों को भी. और (यह सब) हम ही करने वाले थे. 80 और
हमने उसे तुम्हारे लिए एक जंगी लिबास की कारीगरी (शिल्पकला) सिखाई. ताकि वह तुम्हें लड़ाई में महफ़ूज़ रखे. तो क्या तुम शुक्र करने वाले हो.

81 और हमने सुलैमान के लिए तेज़ हवा को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया जो उसके हुक्म से उस सरज़मीन की तरफ़ चलती थी जिसमें हमने बरकतें रखी हैं. और हम हर चीज़ को जानने
वाले हैं. 82 और शयातीन में से भी हमने उसके ताबे (अधीन) कर दिया था जो उसके लिए ग़ोता लगाते थे. और उसके सिवा दूसरे काम करते थे और हम उन्हें संभालने वाले थे.

83 और अय्यूब को (याद करो), जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे बीमारी लग
गई है और तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है. 84 तो हमने उसकी दुआ क़बूल की और उसे जो तकलीफ़ थी उसे दूर कर दिया. और हमने उसे उसका कुंबा (परिवार) अता किया और उसी के साथ उसके बराबर और भी (यानी उसके परिवार को हमने पहले से दुगना बड़ा बना दिया), अपनी तरफ़ से रहमत और नसीहत इबादत करने वालों के लिए.

85 और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल को, ये सब सब्र करने वालों में से थे. 86
और हमने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया. बेशक वे नेक अमल करने वालों में से थे.

87 और मछली वाले (यूनुस) को (याद करो), जबकि वह अपनी क़ौम से बरहम (गुस्सा) होकर चला गया. फिर उसने यह समझा कि हम उसे न पकड़ेंगे फिर उसने अंधेरे में (यानी मछली के पेट में से) हमें पुकारा कि तेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, तू पाक है, बेशक मैं क़सूरवार हूँ.
88 तो हमने उसकी दुआ क़बूल की और उसे ग़म से नजात दी. इसी तरह हम ईमान वालों को नजात देते हैं. 89 और ज़करिया को, जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि ऐ मेरे रब! तू मुझे अकेला न छोड़ और तू बेहतरीन वारिस है. 90 तो हमने उसकी दुआ क़बूल की और उसे
यहया अता किया. और उसकी बीवी को उसके लिए दुरुस्त कर दिया. **ये लोग नेक कामों में दौड़ते थे और हमें उम्मीद और ख़ौफ़ के साथ पुकारते थे. और हमारे आगे झुके हुए थे (पूरी तरह इज्ज़ के साथ ज़िंदगी गुज़ारते थे)**.

नोटः– यह कुरआन के मुताबिक़ ख़ुदा के मतलूब बंदों की तस्वीर है.

91 और वह ख़ातून जिसने अपनी नामूस (सतीत्व) को बचाया तो हमने उसके अंदर अपनी रूह फूँक दी और उसे और उसके बेटे को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया.

92 और यह तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है और मैं ही तुम्हारा रब हूँ तो तुम मेरी इबादत करो. 93 और उन्होंने अपने दीन को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर डाला. सब हमारे पास आने वाले हैं. 94 पस जो शख़्स नेक अमल करेगा और वह ईमान वाला होगा तो उसकी मेहनत की नाक़द्री न होगी, और हम उसे लिख लेते हैं.

95 और जिस बस्ती वालों के लिए हमने हलाकत मुक़द्दर कर दी है उनके लिए हराम है कि वे रुजूअ करें. 96 यहाँ तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिए जाएँगे और वे हर बुलंदी से निकल पड़ेंगे. 97 और सच्चा वादा नज़दीक आ लगेगा तो उन लोगों की निगाहें फटी रह जाएँगी जिन्होंने इन्कार किया था. हाय हमारी कमबख़्ती, हम इससे ग़फ़लत में पड़े रहे. बल्कि हम ज़ालिम थे.

98 बेशक तुम और जिन्हें तुम ख़ुदा के सिवा पूजते थे सब जहन्नम का ईंधन हैं. वहीं तुम्हें जाना है. 99 अगर ये वाक़ई माबूद (पूज्य) होते तो उसमें न पड़ते. और सब उसमें हमेशा रहेंगे. 100 उसमें उनके लिए चिल्लाना है और वे उसमें कुछ न सुनेंगे. 101 बेशक जिनके लिए हमारी तरफ़ से भलाई का पहले फ़ैसला हो चुका है, वे उससे दूर रखे जाएँगे. 102 वे उसकी आहट भी न सुनेंगे. और वे अपनी पसंदीदा चीज़ों में हमेशा रहेंगे. 103 उन्हें बड़ी घबराहट ग़म में न डालेगी. और फ़रिश्ते उनका इस्तक़बाल करेंगे. यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुम से वादा किया गया था.

104 जिस दिन हम आसमान को लपेट देंगे जिस तरह तूमार (पुस्तिका) में औराक़ (पन्ने) लपेट दिए जाते हैं. जिस तरह पहले हमने तख़्लीक़ की इब्तिदा की थी उसी तरह हम फिर उसका इआदा (पुनरावृत्ति) करेंगे. यह हमारे ज़िम्मे वादा है और हम उसे करके रहेंगे. 105 और ज़बूर में हम नसीहत के बाद लिख चुके हैं कि ज़मीन के वारिस हमारे नेक बंदे होंगे. 106 इसमें एक बड़ी ख़बर है, इबादत-गुज़ार लोगों के लिए.

107 **और हमने तुम्हें तो बस दुनिया वालों के लिए रहमत बनाकर भेजा है.**

नोटः- रसूलुल्लाह (स.) जिस पैग़ाम को देकर भेजे गए वह पैग़ामे-रहमत है. जो सारे इंसानों के लिए है, इसी निस्बत से आप रहमतुल्लील-आलमीन हैं. इसलिए आपका लाया हुआ पैग़ाम सारे इंसानों तक पहुँचाना ज़रूरी है. और यही काम अब **'उम्मते-मुहम्मदी'** को अंजाम देना है.

108 कहो कि मेरे पास जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है, वह यह है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य)
सिर्फ़ एक माबूद है, तो क्या तुम इताअत-गुज़ार (आज्ञाकारी) बनते हो. 109 पस अगर वे एराज़
(उपेक्षा) करें तो कह दो कि मैं तुम्हें साफ़ तौर पर इत्तिला कर चुका हूँ. और मैं नहीं जानता कि वह
चीज़ जिसका तुम से वादा किया जा रहा है, क़रीब है या दूर. 110 बेशक वह खुली बात को भी
जानता है और उस बात को भी जिसे तुम छुपाते हो. 111 और मुझे नहीं मालूम, शायद वह तुम्हारे
लिए इम्तहान हो और फ़ायदा उठा लेने की एक मोहलत हो. 112 पैग़म्बर ने कहा कि ऐ मेरे रब!
हक़ के साथ फ़ैसला कर दे. और हमारा रब रहमान (कृपाशील) है, उसी से हम उन बातों पर मदद
माँगते हैं जो तुम बयान करते हो.

सूरह-22. अल-हज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 **ऐ लोगो! अपने रब से डरो. बेशक क़यामत का भूकंप बड़ी
भारी चीज़ है.** 2 **जिस दिन तुम उसे देखोगे, हर दूध पिलाने
वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी. और हर हमल
(गर्भ) वाली अपना हमल डाल देगी. और लोग तुम्हें
मदहोश नज़र आएंगे, हालाँकि वे मदहोश नहीं होंगे. बल्कि
अल्लाह का अज़ाब बड़ा ही सख़्त है.**

नोटः- यहाँ जिस मसले से आगाह किया जा रहा है, वह चंद इन्सानों या किसी खास गिरोह का मसला नहीं है, बल्कि सारे इंसानों का मसला है. ख़ुदा अपनी किताब में सारे इन्सानों के साथ जो मसला पेश आने वाला है उससे उन्हें आगाह कर रहा है, कुरआन के मानने वालों का काम यह है कि वे ख़ुदा के इस पैग़ाम को सारे इन्सानों तक पहुँचा दें.

3 और लोगों में कोई ऐसा भी है जो इल्म के बग़ैर अल्लाह के बारे में झगड़ता है. और हर
सरकश शैतान की पैरवी करने लगता है. 4 उसके बारे में यह लिख दिया गया है कि जो शख़्स उसे
दोस्त बनाएगा, तो वह उसे बेराह कर देगा और उसे अज़ाबे-जहन्नम का रास्ता दिखाएगा.
5 ऐ लोगो! अगर तुम दुबारा जी उठने के मुतआल्लिक़ शक में हो तो हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा

किया है, फिर नुत्फ़ा (वीर्य) से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर गोश्त की बोटी से, शक्ल वाली और बग़ैर शक्ल वाली भी, ताकि हम तुम पर वाज़ेह करें. और हम रहमों (गर्भों) में ठहरा देते हैं जो चाहते हैं, एक मुअय्यन (निश्चित) मुद्दत तक. फिर हम तुम्हें बच्चा बनाकर बाहर लाते हैं. ताकि तुम अपनी पूरी जवानी तक पहुँच जाओ. और तुम में से कोई शख़्स पहले ही मर जाता है और कोई शख़्स बदतरीन उम्र तक पहुँचा दिया जाता है, ताकि वह जान लेने के बाद फिर कुछ न जाने. और तुम ज़मीन को देखते हो कि ख़ुश्क पड़ी है फिर जब हम उसपर पानी बरसाते हैं तो वह तरो-ताज़ा हो जाती है और उभर आती है और वह तरह-तरह की ख़ुशनुमा चीज़ें उगाती है जोड़ों की शकल में. 6 यह इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है और वह बेजानों में जान डालता है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है. 7 और यह कि क़यामत आने वाली है, उसमें कोई शक नहीं और अल्लाह ज़रूर उन लोगों को उठाएगा जो क़ब्रों में हैं.

8 और लोगों में कोई शख़्स है जो अल्लाह की बात में झगड़ता है, इल्म और हिदायत और रोशन किताब के बग़ैर 9 तकब्बुर (घमंड) करते हुए, ताकि वह अल्लाह की राह से बेराह कर दे. उसके लिए दुनिया में रुसवाई है और क़यामत के दिन हम उसे जलती आग का अज़ाब चखाएंगे. 10 यह तुम्हारे हाथ के किए हुए कामों का बदला है और अल्लाह अपने बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं.

11 और लोगों में कोई है जो किनारे पर रहकर अल्लाह की इबादत करता है. पस अगर उसे कोई फ़ायदा पहुँचा तो वह उस इबादत पर क़ायम हो गया. और अगर कोई आज़माइश पेश आयी तो उलटा फिर गया. उसने दुनिया भी खो दी और आख़िरत भी. यही खुला हुआ ख़सारा (घाटा) है.

12 वह ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारता है जो न उसे नुक़सान पहुँचा सकती और न उसे नफ़ा पहुँचा सकती. यह इन्तहा दर्जे की गुमराही है. 13 वह ऐसी चीज़ को पुकारता है जिसका नुक़सान उसके नफ़े से ज़्यादा क़रीब है. कैसा बुरा कारसाज़ है और कैसा बुरा रफ़ीक़ (साथी). 14 बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल किए ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. अल्लाह करता है जो वह चाहता है.

15 जो शख़्स यह गुमान रखता हो कि ख़ुदा दुनिया और आख़िरत में उसकी मदद नहीं करेगा तो उसे चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक ताने. फिर उसे काट डाले और देखे कि क्या उसकी तदबीर उसके ग़ुस्से को दूर करने वाली बनती है. 16 और इस तरह हमने क़ुरआन को खुली-खुली दलीलों के साथ उतारा है. और बेशक अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत दे देता है.

17 इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने यहूदियत इख़्तियार की, और साबी और नसारा और मजूस और जिन्होंने शिर्क किया (यानी ख़ुदा का साझीदार ठहराया). अल्लाह उन सबके दरमियान क़यामत के रोज़ फ़ैसला फ़रमाएगा. बेशक अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है.

18 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के आगे सज्दा करते हैं जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं. और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाए और बहुत से इंसान. और बहुत से ऐसे हैं जिनपर अज़ाब साबित हो चुका है और जिसे ख़ुदा ज़लील कर दे तो उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं. बेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है. अस्‌-सज्दा

19 ये दो फ़रीक़ (पक्ष) हैं, जिन्होंने अपने रब के बारे में झगड़ा किया. पस जिन्होंने इन्कार किया उनके लिए आग के कपड़े काटे जाएँगे. उनके सरों के ऊपर से खौलता हुआ पानी डाला जाएगा. 20 इससे उनके पेट की चीज़ें तक गल जाएँगी और खालें भी 21 और उनके लिए वहाँ लोहे के हथौड़े होंगे. 22 जब भी वे घबराकर उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसमें धकेल दिए जाएँगे और (कहा जाएगा) चखते रहो जलने का अज़ाब.

23 बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, अल्लाह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी. उन्हें वहाँ सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे और वहाँ उनकी पोशाक रेशम होगी. 24 और उन्हें पाकीज़ा क़ौल (कथन) की हिदायत बख़्शी गई थी. और उन्हें ख़ुदाए-हमीद (प्रशंसित) का रास्ता दिखाया गया था.

25 बेशक जिन लोगों ने इन्कार किया और वे लोगों को अल्लाह की राह से और मसजिदे-हराम से रोकते हैं, जिसे हमने लोगों के लिए बनाया है जिसमें मक़ामी (स्थानीय) बाशिंदे और बाहर से आने वाले बराबर हैं. और जो इस मस्जिद में रास्ती (शालीनता) से हटकर ज़ुल्म का तरीक़ा इख़्तियार करेगा उसे हम दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखाएंगे.

26 और जब हमने इब्राहीम को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) की जगह बता दी, कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न करना और मेरे घर को पाक रखना तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों के लिए और क़याम करने वालों के लिए और रुकूअ व सज्दा करने वालों के लिए.

27 और लोगों में हज का एलान कर दो, वे तुम्हारे पास आएंगे. पैरों पर चलकर और दुबले ऊँटों पर सवार होकर जो कि दूर दराज़ रास्तों से आएंगे 28 ताकि वे अपने फ़ायदे की जगह पर पहुँचें और चंद मालूम दिनों में उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें बख़्शे हैं. पस उसमें से खाओ और मुसीबतज़दा मोहताज को खिलाओ. 29 तो चाहिए कि वे अपना मैल कुचैल ख़त्म कर दें. और अपनी नज़्रें (मन्नतें) पूरी करें. और इस क़दीम (प्राचीन) घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें.

30 यह बात हो चुकी और जो शख़्स अल्लाह की हुरमतों की ताज़ीम (मर्यादाओं का आदर) करेगा तो वह उसके हक़ में उसके रब के नज़दीक बेहतर है और तुम्हारे लिए चौपाए हलाल कर दिए गए हैं, सिवा उनके जो तुम्हें पढ़कर सुनाए जा चुके हैं. तो तुम बुतों की गंदगी से बचो और

झूठी बात से बचो.

31 अल्लाह की तरफ़ यकसू (एकाग्र) रहो, उसके साथ शरीक न ठहराओ. और जो शख़्स
अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो गोया वह आसमान से गिर पड़ा. फिर चिड़ियां उसे उचक लें या
हवा उसे किसी दूर दराज़ मक़ाम पर ले जाकर डाल दे.

32 यह बात हो चुकी. और जो शख़्स अल्लाह के शआइर (प्रतीकों) का पूरा लिहाज़ रखेगा
तो यह दिल के तक़वे (ईश–भय) की बात है. 33 तुम्हें उनसे एक मुक़र्रर वक़्त तक फ़ायदा
उठाना है. फिर उन्हें क़ुर्बानी के लिए क़दीम (प्राचीन) घर की तरफ़ ले जाना है.

34 और हमने हर उम्मत के लिए क़ुर्बानी करना मुक़र्रर किया, ताकि वे उन चौपायों पर
अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें अता किए हैं. पस तुम्हारा इलाह (पूज्य–प्रभु) एक ही इलाह है
तो तुम उसी के होकर रहो और आजिज़ी (नम्रता) करने वालों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो.
35 जिनका हाल यह है कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल कांप उठते हैं. और
जो उनपर पड़े उसे सहने वाले और नमाज़ की पाबंदी करने वाले और जो कुछ हमने उन्हें दिया है,
वे उसमें से ख़र्च करते हैं.

36 और क़ुर्बानी के ऊँटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की यादगार बनाया है. उनमें तुम्हारे
लिए भलाई है. पस उन्हें खड़ा करके उनपर अल्लाह का नाम लो. फिर जब वे करवट के बल गिर
पड़ें तो उनमें से खाओ और बेसवाल मोहताज (न माँगने वाले मोहताज) और साइल (माँगने वाले
मोहताज) को खिलाओ. इस तरह हमने इन जानवरों को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया, ताकि तुम शुक्र
अदा करो. 37 और अल्लाह को न उनका गोश्त पहुँचता है और न उनका ख़ून, बल्कि अल्लाह को
सिर्फ़ तुम्हारा तक़वा पहुँचता है (यानी अल्लाह के लिए तुम्हारे मन में जो समर्पण-भाव है, वह
पहुँचता है). इस तरह अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया है. ताकि तुम अल्लाह की
बख़्शी हुई हिदायत पर उसकी बड़ाई बयान करो और नेकी करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो.

38 बेशक अल्लाह उन लोगों की मुदाफ़िअत (बचाव) करता है जो ईमान लाए. बेशक
अल्लाह बदअहदों (वचन तोड़ने वालों) और नाशुक्रों को पसंद नहीं करता. 39 इजाज़त दे दी गई
उन लोगों को जिनसे लड़ाई की जा रही है इस वजह से कि उनपर ज़ुल्म किया गया है. और बेशक
अल्लाह उनकी मदद पर क़ादिर है. 40 वे लोग जो अपने घरों से बेवजह निकाले गए. सिर्फ़ इसलिए
कि वे कहते हैं कि हमारा रब (प्रभु) अल्लाह है. और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे के ज़रीए
हटाता न रहे (दफ़अ न करे) तो ख़ानक़ाहें (आश्रम) और गिरजा और इबादतख़ाने और मसजिदें
जिनमें अल्लाह का नाम कसरत (अधिकता) से लिया जाता है, ढा दिए जाते. और अल्लाह ज़रूर
उसकी मदद करेगा जो अल्लाह की मदद करे. बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, ज़ोर वाला है.

41 ये वे लोग हैं जिन्हें अगर हम ज़मीन पर ग़लबा दें तो वे नमाज़ का एहतमाम करेंगे और ज़कात अदा करेंगे और भलाई का हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे और सब कामों का अंजाम ख़ुदा ही के इख़्तियार में है.

42 और अगर वे तुम्हें झुठलाएँ तो उनसे पहले क़ौमे-नूह और आद और समूद झुठला चुके हैं 43 और क़ौमे-इब्राहीम और क़ौमे-लूत 44 और मदयन के लोग भी. और मूसा को झुठलाया गया. फिर मैंने मुन्किरों को ढील दी. फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया. पस कैसा हुआ मेरा अज़ाब.

45 पस कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया और वे ज़ालिम थीं. पस अब वे अपनी छतों पर उलटी पड़ी हैं और कितने ही बेकार कुवें और कितने पुख़्ता महल जो वीरान पड़े हुए हैं. 46 क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि उनके दिल ऐसे हो जाते कि वे उनसे समझते या उनके कान ऐसे हो जाते कि वे उनसे सुनते. क्योंकि आँखें अंधी नहीं होती, बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं.

47 और ये लोग तुम से अज़ाब के लिए जल्दी किए हुए हैं. और अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ करने वाला नहीं है. और तेरे रब के यहाँ का एक दिन तुम्हारे शुमार के एतबार से एक हज़ार साल के बराबर होता है. 48 और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें मैंने ढील दी और वे ज़ालिम थीं. फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है.

49 कहो कि ऐ लोगो! मैं तुम्हारे लिए एक खुला हुआ डराने वाला हूँ. 50 पस जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) है और इज़्ज़त की रोज़ी. 51 और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए दौड़े, वही दोज़ख़ वाले हैं.

52 और हमने तुम से पहले जो भी रसूल और नबी भेजा तो जब उसने कुछ पढ़ा तो शैतान ने उसके पढ़ने में मिला दिया. फिर अल्लाह शैतान के डाले हुए को मिटा देता है. फिर अल्लाह अपनी आयतों को पुख़्ता कर देता है. और अल्लाह इल्म वाला व हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है. 53 ताकि जो कुछ शैतान ने मिलाया है उससे वह उन लोगों को जांचे जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल सख़्त हैं. और ज़ालिम लोग मुख़ालिफ़त में बहुत दूर निकल गए हैं 54 और ताकि वे लोग जिन्हें इल्म मिला है जान लें कि यह सच है, तेरे रब की तरफ़ से है. फिर वे उसपर यक़ीन लाएँ. और उनके दिल उसके आगे झुक जाएँ. और अल्लाह ईमान लाने वालों को ज़रूर सीधा रास्ता दिखाता है.

55 और इन्कार करने वाले लोग, हमेशा उसकी तरफ़ से शक में पड़े रहेंगे, यहाँ तक कि अचानक उनपर क़यामत आ जाए. या एक मनहूस दिन का अज़ाब आ जाए. 56 उस दिन सारा इख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह को होगा. वह उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा. पस जो लोग ईमान लाए

और अच्छे काम किए वे नेमत के बाग़ों में होंगे 57 और जिन्होंने इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है.

58 और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में अपना वतन छोड़ा, फिर वे क़तल कर दिए गए या वे मर गए, अल्लाह ज़रूर उन्हें अच्छा रिज़्क़ देगा. और बेशक अल्लाह ही सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला है. 59 वह उन्हें ऐसी जगह पहुँचाएगा जिससे वे राज़ी होंगे. और बेशक अल्लाह जानने वाला, हिल्म (उदारता) वाला है.

60 यह हो चुका, और जो शख़्स बदला ले वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया था, और फिर उसपर ज़्यादती की जाए तो अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा. बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, दरगुज़र करने वाला है.

61 यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है. और अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है. 62 यह इसलिए कि अल्लाह ही हक़ (सत्य) है और वे सब बातिल (असत्य) हैं, जिन्हें अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते हैं. और बेशक अल्लाह ही सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है.

63 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया. फिर ज़मीन सरसब्ज़ हो गई. बेशक अल्लाह बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) है, ख़बर रखने वाला है. 64 उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है. बेशक अल्लाह ही है जो बेनियाज़ (निस्पृह) है, तारीफ़ों वाला है.

65 क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने ज़मीन की चीज़ों को तुम्हारे काम में लगा रखा है और कश्ती को भी, वह उसके हुक्म से समुंदर में चलती है. और वह आसमान को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है, मगर यह कि उसके हुक्म से. बेशक अल्लाह लोगों पर नर्मी करने वाला, मेहरबान है.
66 और वही है जिसने तुम्हें ज़िंदगी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है. फिर वह तुम्हें ज़िंदा करेगा. बेशक इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है.

67 और हमने हर उम्मत के लिए एक तरीक़ा मुक़र्रर किया कि वे उसकी पैरवी करते थे. पस वे इस मामले में तुम से झगड़ा न करें. और तुम अपने रब की तरफ़ बुलाओ. यक़ीनन तुम सीधे
रास्ते पर हो. 68 अगर वे तुम से झगड़ा करें तो कहो कि अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम कर
रहे हो. 69 अल्लाह क़यामत के दिन तुम्हारे दरमियान उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसमें तुम
इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कर रहे हो. 70 क्या तुम नहीं जानते कि आसमान व ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह के इल्म में है. सब कुछ एक किताब में है. बेशक यह अल्लाह के लिए आसान है.

71 और वे अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हैं जिनके हक़ में अल्लाह ने कोई दलील

नहीं उतारी और न उनके बारे में उन्हें कोई इल्म है. और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं.

72 **और जब उन्हें हमारी वाज़ेह (सुस्पष्ट) आयतें पढ़कर सुनाई**
जाती हैं तो तुम मुन्किरों के चेहरों पर बुरे आसार देखते हो. गोया कि वे उन लोगों पर हमला कर देंगे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुना रहे हैं. कहो कि क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि इससे बदतर चीज़ क्या है. वह आग है. उसका अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जिन्होंने इन्कार किया और वह बहुत बुरा ठिकाना है.

73 **ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है तो इसे ग़ौर से सुनो. तुम लोग ख़ुदा के सिवा जिन्हें पुकारते हो, वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते. अगरचे सबके सब उसके लिए जमा हो जाएँ. और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वे उसे उससे छुड़ा नहीं सकते. मदद चाहने वाले भी कमज़ोर**
और जिनसे मदद चाही गई वे भी कमज़ोर. 74 **उन्होंने अल्लाह**
की क़द्र न पहचानी जैसा कि उसके पहचानने का हक़ है. बेशक अल्लाह ताक़तवर है, ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है.

नोटः- इस आयत में ख़ुदा उन लोगों से मुख़ातिब है, जो उसके सिवा दूसरों को पुकारते हैं, अब दाई का काम यह है कि वह इस तौहीद के पैग़ाम को उन लोगों तक पहुँचा दे जो ख़ुदा को छोड़कर दूसरी-दूसरी चीज़ों की परस्तिश में लगे हुए हैं.

75 अल्लाह फ़रिश्तों में से अपना पैग़ाम पहुँचाने वाला चुनता है. और इंसानों में से
भी. बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है. 76 वह जानता है जो कुछ उनके
आगे है और जो कुछ उनके पीछे है. और अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं सारे
मामलात. 77 ऐ ईमान वालो! रुकूअ और सज्दा करो. और अपने रब की इबादत
करो और भलाई के काम करो, ताकि तुम कामयाब हो. **अस्-सज्दा** 78 और

अल्लाह की राह में जिहाद करो, जैसा कि जिहाद करने का हक़ है. **उसी ने तुम्हें चुना है (अपने काम के लिए).** और उसने दीन के मामले में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी. तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन. **उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा, इससे पहले और इस क़ुरआन में भी, ताकि रसूल तुम पर (हक़ की) गवाही दे और तुम लोगों पर (हक़ की) गवाही देने वाले बनो.** पस नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो. और अल्लाह को मज़बूत पकड़ो, वही तुम्हारा मालिक है. पस कैसा अच्छा मालिक है और कैसा अच्छा मददगार.

नोटः-

- आयत 75 से पैग़ाम पहुँचाने के ताल्लुक़ से बात शुरू होती है, फिर आयत 77 में ख़ुदा सीधे **'उम्मते-मुहम्मदी'** से मुख़ातिब है, फिर आयत 78 में ख़ुदा **'उम्मते मुहम्मदी'** से कह रहा है कि मैंने तुम्हें अपने दावती मिशन के लिए चुन लिया है.

दौरे-नबुवत में ख़ुदा अपने पैग़ाम-रिसानी के लिए इंसानों में से पैग़ंबरों को चुनता रहा, लेकिन ख़त्मे-नबुवत के बाद उसने अपने इसी काम के लिए **'उम्मते-मुहम्मदी'** को चुन लिया है. आयत 77 व 78 में ख़ुदा सीधे **'उम्मते-मुहम्मदी'** से मुख़ातिब है और वह उन्हें उनका मिशन बता रहा है.

आयत 78 में लफ़्ज़े **'जिहाद'** आया है, उससे मुराद **'दावती जिहाद'** है, जैसा कि सूरह फ़ुरक़ान में आयत 52 में ख़ुदा ने **'दावती जिहाद'** को ही सबसे बड़ा जिहाद कहा है. क़यामत तक **'दावती जिहाद'** करने के लिए ख़ुदा ने **'उम्मते-मुहम्मदी'** को चुन लिया है, जिसकी मज़ीद वज़ाहत इसी आयत में आगे है.

- इसी तरह यहाँ यह बात भी वाज़ेह होती है कि रुकूअ, सज्दा, नमाज़, ज़कात के साथ दूसरे इंसानों पर हक़ की गवाही देने वाला इंसान ही ख़ुदा की नज़र में मुस्लिम है. नमाज़, रोज़ा...... यह जैसे फ़रिज़े हैं इसी तरह दावत भी एक अहम फ़रिज़ा है. नमाज़, रोज़े का ताल्लुक़ अपनी ज़ात से है और दावत का ताल्लुक़ दूसरे इंसानों से. जिस तरह हम नमाज़, रोज़े के हुक्म पर लब्बैक कहते हैं उसी तरह दावत के हुक्म पर भी हमें लब्बैक कहना चाहिए.

पारा – 18

सूरह–23. अल–मोमिनून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 यक़ीनन फ़लाह पाई ईमान वालों ने.

नोटः– सच्चे अहले–ईमान के लिए यक़ीनी कामयाबी है. सच्चा मोमिन वही है जो उस ईमान का दाई बन जाए जिसकी उसे दरयाफ़्त हुई है. कोई शख़्स हक़ीक़ी मोमिन है और वह दाई नहीं है ऐसा नहीं हो सकता.

2 जो अपनी नमाज़ में झुकने वाले हैं 3 और जो लग़्व (घटिया, निरर्थक) बातों से बचते हैं.
4 और जो ज़कात अदा करने वाले हैं 5 और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं, 6
सिवा अपनी बीवियों के और उन औरतों के जो उनके अधीन दासियाँ हों कि उनपर वे क़ाबिले
मलामत नहीं. 7 अलबत्ता जो इसके अलावा चाहें तो वही ज़्यादती करने वाले हैं. 8 और जो
अपनी अमानतों और अपने अहद (वचन) का ख़याल रखने वाले हैं. 9 और जो अपनी नमाज़ों
की हिफ़ाज़त करते हैं. 10 यही लोग वारिस होंगे 11 फ़िरदौस के. वे उसमें हमेशा रहेंगे.

12 और हमने इंसान को मिट्टी के ख़ुलासा (सत) से पैदा किया. 13 फिर हमने पानी की एक
बूंद की शक्ल में उसे एक महफ़ूज़ ठिकाने में रखा. 14 फिर हमने पानी की बूंद को एक जनीन
(भ्रूण) की शक्ल दी. फिर जनीन को गोश्त का एक लोथड़ा बनाया. पस लोथड़े के अंदर हड्डियां
पैदा कीं. फिर हमने हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया. फिर हमने उसे एक नई सूरत में बना कर खड़ा
किया. पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह, बेहतरीन पैदा करने वाला. 15 फिर इसके बाद तुम्हें ज़रूर
मरना है. 16 फिर तुम क़यामत के दिन उठाए जाओगे.

17 और हमने तुम्हारे ऊपर सात रास्ते बनाए. और हम मख़लूक़ (सृष्टि) से बेख़बर नहीं.
18 और हमने आसमान से ठीक हिसाब के साथ (एक ख़ास मिक़दार में) पानी बरसाया. फिर
हमने उसे ज़मीन में ठहरा दिया. और हम उसे वापस लेने पर क़ादिर हैं. 19 फिर हमने उससे तुम्हारे
लिए खजूर और अंगूर के बाग़ पैदा किए. तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं. और तुम उनमें से
खाते हो. 20 और हमने वह दरख़्त पैदा किया जो तूरे–सीना से निकलता है, वह तेल लिए हुए
उगता है. और खाने वालों के लिए सालन भी. 21 और तुम्हारे लिए मवेशियों में सबक़ है. हम
तुम्हें उनके पेट की चीज़ से पिलाते हैं. और तुम्हारे लिए उनमें बहुत फ़ायदे हैं. और तुम उन्हें खाते
हो. 22 और तुम उनपर और कश्तियों पर सवारी करते हो.

23 और हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो. उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. क्या तुम डरते नहीं. 24 तो उसकी क़ौम के सरदार जिन्होंने इन्कार किया था, उन्होंने कहा कि यह तो बस तुम्हारे जैसा एक आदमी है. वह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर बरतरी हासिल करे. और अगर अल्लाह चाहता तो वह फ़रिश्ते भेजता. हमने यह बात अपने पिछले बड़ों में नहीं सुनी. 25 यह तो बस एक शख़्स है जिसे जुनून हो गया है. पस तुम उसका एक मुद्दत तक इंतज़ार करो.

26 नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब! तू मेरी मदद फ़रमा कि इन्होंने मुझे झुठला दिया. 27 तो हमने उसे 'वही' की (उसकी तरफ़ ईश-संदेश भेजा), कि तुम कश्ती तैयार करो हमारी निगरानी में और हमारी हिदायत के मुताबिक़. तो जब हमारा हुक्म आ जाए और ज़मीन से पानी उबल पड़े तो हर क़िस्म के जानवरों में से एक-एक जोड़ा लेकर उसमें सवार हो जाओ. और अपने घर वालों को भी (सवार कर लो), सिवा उनके जिनके बारे में पहले फ़ैसला हो चुका है. और जिन्होंने ज़ुल्म किया है उनके मामले में मुझ से बात न करना. बेशक उन्हें डूबना है.

28 फिर जब तुम और तुम्हारे साथी कश्ती में बैठ जाएँ तो कहो कि शुक्र है अल्लाह का, जिसने हमें ज़ालिम लोगों से नजात दी 29 और कहो कि ऐ मेरे रब! तू मुझे उतार बरकत का उतारना और तू बेहतर उतारने वाला है. 30 बेशक इसमें निशानियाँ हैं और बेशक हम बंदों को आज़माते हैं.

31 फिर हमने उनके बाद दूसरा गिरोह पैदा किया. 32 फिर उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेजा, कि तुम अल्लाह की इबादत करो. उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. क्या तुम डरते नहीं. 33 और उसकी क़ौम के सरदारों ने जिन्होंने इन्कार किया और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया, और उन्हें हमने दुनिया की ज़िंदगी में आसूदगी (सम्पन्नता) दी थी, (उन सरदारों ने) कहा, यह तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है. वही खाता है जो तुम खाते हो, और वही पीता है जो तुम पीते हो. 34 और अगर तुमने अपने ही जैसे एक आदमी की बात मानी तो तुम बड़े घाटे में रहोगे.

35 क्या यह शख़्स तुम से कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे तो फिर तुम निकाले जाओगे. 36 बहुत ही बईद (असंभव) और बहुत ही बईद है जो बात उनसे कही जा रही है. 37 ज़िंदगी तो यही हमारी दुनिया की ज़िंदगी है. यहीं हम मरते हैं और जीते हैं. और हम दुबारा उठाए जाने वाले नहीं हैं. 38 यह तो बस एक ऐसा शख़्स है जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा है. और हम उसे मानने वाले नहीं.

39 रसूल ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरी मदद फ़रमा कि उन्होंने मुझे झुठला दिया. 40 फ़रमाया

कि ये लोग जल्द ही पछताएंगे. 41 पस उन्हें एक सख़्त आवाज़ ने हक़ के मुताबिक़ पकड़ लिया. फिर हमने उन्हें ख़स व ख़ाशाक (कूड़ा-कचरा) कर दिया. पस दूर हो ज़ालिम क़ौम.

42 फिर हमने उनके बाद दूसरी क़ौमें पैदा कीं. 43 कोई क़ौम न अपने वादे से आगे जाती और न उससे पीछे रहती. 44 फिर हमने लगातार अपने रसूल भेजे. जब भी किसी क़ौम के पास उसका रसूल आया तो उन्होंने उसे झुठलाया. तो हमने एक के बाद एक को हलाक कर दिया. और हमने उन्हें कहानियाँ बना दिया. पस दूर हों वे लोग, जो ईमान नहीं लाते.

45 फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को भेजा अपनी निशानियों और खुली दलील के साथ 46 फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास तो उन्होंने तकब्बुर (घमंड) किया और वे मग़रूर (अभिमानी) लोग थे. 47 पस उन्होंने कहा, क्या हम अपने जैसे दो आदमियों की बात मान लें, हालाँकि उनकी क़ौम के लोग हमारे ताबेदार हैं. 48 पस उन्होंने उन दोनों को झुठला दिया, फिर वे हलाक कर दिए गए. 49 और हमने तो मूसा को किताब दी थी, ताकि वे राह पाएं.

50 और हमने मरयम के बेटे को और उसकी माँ को एक निशानी बनाया और हमने उन्हें एक ऊंची ज़मीन पर ठिकाना दिया जो सुकून की जगह थी और वहाँ चशमा जारी था.

51 ऐ पैग़म्बरों! सुथरी चीज़ें खाओ और नेक काम करो. मैं जानता हूँ जो कुछ तुम करते हो. 52 और यह तुम्हारा दीन, एक ही दीन है. और मैं तुम्हारा रब हूँ, तो तुम मुझ से डरो.

53 फिर लोगों ने अपने दीन (धर्म) को आपस में टुकड़े–टुकड़े कर लिया. हर गिरोह के पास जो कुछ है उसी पर वह नाज़ां (गौरवान्वित) है. 54 पस उन्हें उनकी बेहोशी में कुछ दिन छोड़ दो. 55 क्या वे समझते हैं कि हम उन्हें जो माल और औलाद दिए जा रहे हैं 56 तो हम उन्हें फ़ायदा पहुँचाने में सरगर्म हैं. बल्कि वे बात को नहीं समझते.

57 बेशक जो लोग अपने रब की हैबत से डरते हैं. 58 और जो लोग अपने रब की आयतों पर यक़ीन रखते हैं. 59 और जो लोग अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते. 60 और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं और उनके दिल कांपते हैं कि वे अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं. 61 ये लोग भलाइयों की राह में सबक़त (अग्रसरता) कर रहे हैं और वे उनपर पहुँचने वाले हैं सबसे आगे. 62 और हम किसी पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालते. और हमारे पास एक किताब है जो बिल्कुल ठीक बोलती है, और उनपर ज़ुल्म नहीं होगा.

63 बल्कि उनके दिल इसकी तरफ़ से ग़फ़लत में हैं. और उनके कुछ काम इसके अलावा हैं, वे उन्हें करते रहेंगे. 64 यहाँ तक कि जब हम उनके ख़ुशहाल लोगों को अज़ाब में पकड़ेंगे तो वे फ़रियाद करने लगेंगे. 65 अब फ़रियाद न करो. अब हमारी तरफ़ से तुम्हारी कोई मदद न होगी. 66 **तुम्हें मेरी आयतें सुनाई जाती थीं तो तुम पीठ पीछे भागते थे,** 67 उससे

तकब्बुर (घमंड) करके. गोया किसी क़िस्सा कहने वाले को छोड़ रहे हो.

68 फिर क्या उन्होंने इस कलाम पर ग़ौर नहीं किया. या उनके पास ऐसी चीज़ आयी है जो उनके अगले बाप-दादा के पास नहीं आयी. 69 या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं. इस वजह से वे उसे नहीं मानते. 70 या वे कहते हैं कि उसे जुनून है. बल्कि वह उनके पास हक़ (सत्य) लेकर आया है. और उनमें से अक्सर को हक़ बात बुरी लगती है. 71 और अगर हक़ उनकी ख़्वाहिशों के ताबे (अधीन) होता तो आसमान और ज़मीन और जो उनमें हैं सब तबाह हो जाते. बल्कि हमने उनके पास उनकी नसीहत भेजी है तो वे अपनी नसीहत से एराज़ (उपेक्षा) कर रहे हैं.

72 क्या तुम उनसे कोई माल माँग रहे हो तो तुम्हारे रब का माल तुम्हारे लिए बेहतर है. और वह बेहतरीन रोज़ी देने वाला है. 73 और यक़ीनन तुम उन्हें एक सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाते हो. 74 और जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते, वे रास्ते से हट गए हैं.

75 और अगर हम उनपर रहम करें और उनपर जो तकलीफ़ है वह दूर कर दें तब भी वे अपनी सरकशी में लगे रहेंगे, बहके हुए. 76 और हमने उन्हें अज़ाब में पकड़ा. लेकिन न वे अपने रब के आगे झुके और न उन्होंने आजिज़ी की. 77 यहाँ तक कि जब हम उनपर सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे तो उस वक़्त वे हैरतज़दा रह जाएंगे.

78 और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए. तुम बहुत कम शुक्र अदा करते हो. 79 और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया. और तुम उसी की तरफ़ जमा किए जाओगे. 80 और वही है जो जिलाता है और मारता है और उसी के इख़्तियार में है रात और दिन का बदलना. तो क्या तुम समझते नहीं.

81 बल्कि उन्होंने वही बात कही जो अगलों ने कही थी. 82 उन्होंने कहा कि क्या जब हम मर जाएँगे और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएँगे तो क्या हम दुबारा उठाए जाएँगे. 83 इसका वादा हमें और इससे पहले हमारे बाप-दादा को भी दिया गया. ये महज़ अगलों के अफ़साने हैं.

84 कहो कि ज़मीन और जो कुछ उसमें है, यह किस का है, (बताओ) अगर तुम जानते हो. 85 वे कहेंगे कि अल्लाह का है. कहो कि फिर तुम सोचते नहीं. 86 कहो कि कौन मालिक है सात आसमानों का और कौन मालिक है अर्शे-अज़ीम का. 87 वे कहेंगे कि सब अल्लाह का है. कहो, फिर क्या तुम डरते नहीं. 88 कहो कि कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का इख़्तियार है और वह पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो. 89 वे कहेंगे कि यह अल्लाह के लिए है. कहो कि फिर कहाँ से तुम मस्हूर (जादूग्रस्त) किए जाते हो.

90 बल्कि हम उनके पास हक़ लाए हैं और बेशक वे झूठे हैं. 91 अल्लाह ने कोई बेटा नहीं बनाया और उसके साथ कोई और माबूद (पूज्य) नहीं. ऐसा होता तो हर माबूद अपनी मख़लूक़

को लेकर अलग हो जाता. और एक दूसरे पर चढ़ाई करता. अल्लाह पाक है उससे जो वे बयान करते हैं. 92 वह खुले और छुपे का जानने वाला है. वह बहुत ऊपर है उससे जिसे ये शरीक बताते हैं.

93 कहो कि ऐ मेरे रब! अगर तू मुझे वह दिखा दे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है. 94 तो ऐ मेरे रब! मुझे ज़ालिम लोगों में शामिल न कर. 95 और बेशक हम क़ादिर हैं कि हम उनसे जो वादा कर रहे हैं, वह तुम्हें दिखा दें.

96 तुम बुराई को उस तरीक़े से दूर करो जो बेहतर हो. हम ख़ूब जानते हैं, जो ये लोग कहते हैं. 97 और कहो कि ऐ मेरे रब! मैं पनाह माँगता हूँ शैतानों के वसवसों से. 98 और ऐ मेरे रब! मैं तुझसे पनाह माँगता हूँ कि वे मेरे पास आएं.

99 यहाँ तक कि जब उनमें से किसी पर मौत आती है तो वह कहता है कि ऐ मेरे रब! मुझे वापस भेज दे. 100 ताकि जिसे मैं छोड़ आया हूँ उसमें कुछ नेकी कमाऊं. हरगिज़ नहीं,यह एक बात है जो वह कह रहा है. और उनके आगे एक पर्दा है, उस दिन तक के लिए, जबकि वे उठाए जाएँगे. 101 फिर जब सूर फूंका जाएगा तो उस दिन उनके दरमियान न कोई रिश्ता रहेगा और न कोई किसी को पूछेगा. 102 पस जिनके पल्ले भारी होंगे वही लोग कामयाब होंगे. 103 और जिनके पल्ले हल्के होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, वे जहन्नम में हमेशा रहेंगे. 104 उनके चेहरों को आग झुलस देगी और वे उसमें बदशक्ल हो रहे होंगे.

105 **क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं तो तुम उन्हें झुठलाते थे.** 106 **वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमारी बदबख़्ती ने हमें घेर लिया था और हम गुमराह लोग थे.** 107 **ऐ हमारे रब! हमें इससे निकाल ले, फिर अगर हम दुबारा ऐसा करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं.** 108 **ख़ुदा कहेगा कि दूर हो, इसी में पड़े रहो और मुझ से बात न करो.**

नोटः– अल्लाह तआला का यह मनसूबा है कि अल्लाह का पैग़ाम सारे इंसानों तक पहुँचा दिया जाए, इस मामले में किसी भी उज्र की गुंजाइश नहीं.

दाई का काम अल्लाह का पैग़ाम मदू तक पहुँचा देना है. फिर मदू इस इम्तिहानी दुनिया में आज़ाद है कि चाहे तो वह अल्लाह के पैग़ाम को माने या उसे झुठला दे. मानने या न मानने का मौक़ा किसी को उसी वक़्त मिल सकता है, जब उसके सामने वह पैग़ाम पेश किया जाए.

यह मानना या न मानना कोई सादा बात नहीं है. मानने में इंसान की अब्दि (हमेशा की) कामयाबी है और न मानने में इंसान की अब्दि नाकामी.

109 मेरे बंदों में एक गिरोह था जो कहता था कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, पस तू हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू बेहतरीन रहम फ़रमाने वाला है. 110 पस तुमने उन्हें मज़ाक़ बना लिया. यहाँ तक कि उनके पीछे तुमने हमारी याद भुला दी और तुम उनपर हँसते रहे. 111 मैंने उन्हें आज उनके सब्र का बदला दिया कि वही हैं कामयाब होने वाले.

112 इरशाद होगा कि वर्षों के शुमार से तुम कितनी देर ज़मीन में रहे. 113 वे कहेंगे, हम एक दिन रहे या एक दिन से भी कम. तो गिनती वालों से पूछ लीजिए. 114 इरशाद होगा कि तुम थोड़ी ही मुद्दत रहे. काश तुम जानते होते.

115 **तो अब क्या तुम यह ख़याल करते हो कि हमने तुम्हें बेमक़सद पैदा किया है और तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे.**

नोटः– इन्सानों की सबसे बड़ी ख़ैरख़्वाही यह है कि उन्हें मक़सदे-हयात से आगाह किया जाए. उन्हें बताया जाए कि उनके रब ने उन्हें बेमक़सद पैदा नहीं किया है. इन्सानों की बेहतरी इसी में है कि वे अपने ख़ालिक़ के मक़सदे-तख़्लीक़ को जानें, और उसी के मुताबिक़ अपने ज़िंदगी का नक़्शा बनाएं.

116 पस बहुत बरतर (उच्च) है अल्लाह, बादशाहे-हक़ीक़ी, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. वह मालिक है अर्शे-अज़ीम का. 117 और जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे, जिसके हक़ में उसके पास कोई दलील नहीं. तो उसका हिसाब उसके रब के पास है, बेशक मुन्किरों को फ़लाह न होगी. 118 और कहो कि ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा, तू बेहतरीन रहम फ़रमाने वाला है.

सूरह–24. अन–नूर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 यह एक सूरह है, जिसे हमने उतारा है और इसे हमने फ़र्ज़ किया है. और इसमें हमने साफ़–साफ़ आयतें उतारी हैं, ताकि तुम याद रखो. 2 ज़ानी (व्यभिचारी) औरत और ज़ानी मर्द दोनों में से हर एक को सौ कोड़े (दुर्रे) मारो. और तुम्हें उन दोनों पर अल्लाह के दीन के मामले में रहम नहीं आना चाहिए. अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो. और चाहिए कि दोनों की सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक गिरोह मौजूद रहे. 3 ज़ानी निकाह न करे,

मगर ज़ानिया (व्यभिचारिणी) के साथ या मुशरिका (बहुदेववादी स्त्री) के साथ. और ज़ानिया के साथ निकाह न करे, मगर ज़ानी या मुशरिक (बहुदेववादी पुरुष). और यह हराम कर दिया गया अहले–ईमान पर.

4 और जो लोग पाक दामन औरतों पर ऐब लगाएं, फिर चार गवाह न ले आएं उन्हें अस्सी कोड़े मारो और उनकी गवाही कभी क़बूल न करो. यही लोग नाफ़रमान हैं. 5 लेकिन जो लोग उसके बाद तौबा करें और इसलाह (सुधार) कर लें तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.

6 और जो लोग अपनी बीवियों पर ऐब लगाएं और उनके पास उनके अपने सिवा और गवाह न हों तो ऐसे शख़्स की गवाही की सूरत यह है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि बेशक वह सच्चा है. 7 और पाँचवी बार यह कहे कि उसपर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूठा हो. 8 और औरत से सज़ा इस तरह टल जाएगी कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि यह शख़्स झूठा है. 9 और पाँचवी बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर यह शख़्स सच्चा हो. 10 और अगर तुम लोगों पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती (तो तुम बड़ी मुसीबत में पड़ जाते) और यह कि अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला व हिकमत वाला (क्षमाशील एवं बुद्धिमान) है.

11 जिन लोगों ने यह तूफ़ान बरपा किया, वह तुम्हारे अंदर ही की एक जमात है. तुम उसे अपने हक़ में बुरा न समझो, बल्कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है. उनमें से हर आदमी के लिए वह है जितना उसने गुनाह कमाया. और जिसने उसमें सबसे बड़ा हिस्सा लिया, उसके लिए बड़ा अज़ाब है.

12 जब तुम लोगों ने उसे सुना तो मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने एक दूसरे के बाबत नेक गुमान क्यों न किया और क्यों न कहा कि यह खुला हुआ बोहतान (आक्षेप) है. 13 ये लोग उसपर चार गवाह क्यों न लाए. पस जब वे गवाह नहीं लाए तो अल्लाह के नज़दीक वही झूठे हैं.

14 और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो जिन बातों में तुम पड़ गए थे, उसके सबब तुम पर कोई बड़ी आफ़त आ जाती. 15 जबकि तुम उसे अपनी ज़बानों से नक़ल कर रहे थे. और अपने मुँह से ऐसी बात कह रहे थे जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं था. और तुम उसे एक मामूली बात समझ रहे थे. हालाँकि वह अल्लाह के नज़दीक बहुत भारी बात है. 16 और जब तुमने उसे सुना तो यूं क्यों न कहा कि हमें ज़ेबा नहीं कि हम ऐसी बात मुँह से निकालें, (अल्लाह) तू पाक है, यह बहुत बड़ा बोहतान (यानी झूठा इल्ज़ाम) है. 17 अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना, अगर तुम मोमिन हो. 18 अल्लाह तुम से साफ़–साफ़ अहकाम बयान करता है. और अल्लाह जानने वाला व हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

19 बेशक जो लोग यह चाहते हैं कि मुसलमानों में बेहयाई का चर्चा हो, उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा है. और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते. 20 और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती, और यह कि अल्लाह नर्मी करने वाला है, रहम करने वाला है.

21 ऐ ईमान वालो! तुम शैतान के क़दमों पर न चलो. और जो शख़्स शैतान के क़दमों पर चलेगा तो वह उसे बेहयाई और बदी ही का काम करने को कहेगा. और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई शख़्स पाक न हो सकता. लेकिन अल्लाह ही जिसे चाहता है पाक कर देता है. और अल्लाह सुनने वाला है, जानने वाला है.

22 **और तुम में से जो लोग फ़ज़्ल वाले और वुस्अत (सामर्थ्य) वाले हैं, वे इस बात की क़सम न खाएं कि वे अपने रिश्तेदारों और मिसकीनों और ख़ुदा की राह में हिजरत करने वालों को (कुछ) नहीं देंगे. और चाहिए कि वे माफ़ कर दें और दरगुज़र करें. क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ करे. और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है.**

नोटः- ख़ुदा से ख़ैर व माफ़ी की उम्मीद करना उसी वक़्त बामाना है, जब इन्सान दूसरे इन्सानों के साथ ख़ैर का और दरगुज़र का मामला करे. इंसान जिस चीज़ की अल्लाह से उम्मीद रखता है वैसा ही मामला उसे दूसरे ख़ुदा के बंदों के साथ करना ज़रूरी है.

23 बेशक जो लोग पाक दामन, बेख़बर, ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाते हैं, उनपर दुनिया और आख़िरत में लानत की गई. और उनके लिए बड़ा अज़ाब है. 24 उस दिन, जबकि उनकी ज़बानें उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगी और उनके हाथ और उनके पांव भी उन कामों की (गवाही देंगे) जो ये लोग करते थे. 25 उस दिन अल्लाह उन्हें उनका बदला पूरा-पूरा देगा. और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही हक़ है और (हक़ को) ज़ाहिर करने वाला है.

26 ख़बीसात (यानी बुरी औरतें) ख़बीसों (यानी बुरे लोगों) के लिए हैं और ख़बीस, ख़बीसात के लिए हैं. और तय्यिबात (अच्छी औरतें) तय्यबों (अच्छे लोगों) के लिए हैं और तय्यब, तय्यिबात के लिए. वे लोग बरी हैं उन बातों से जो ये कहते हैं. उनके लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी है.

27 ऐ ईमान वालो! तुम अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल न होना, जब तक इजाज़त हासिल न कर लो और घर वालों को सलाम न कर लो. यह तुम्हारे लिए बेहतर है, ताकि तुम याद

रखो. 28 फिर अगर वहाँ किसी को न पाओ तो उनमें दाख़िल न होना, जब तक तुम्हें इजाज़त न दे दी जाए. और अगर तुम से कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाओ. यह तुम्हारे लिए बेहतर है. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो. 29 तुम पर इसमें कुछ गुनाह नहीं कि तुम उन घरों में दाख़िल हो जिनमें कोई न रहता हो. उनमें तुम्हारे फ़ायदे की कोई चीज़ हो. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो.

30 मोमिन मर्दों से कहो, वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें. यह उनके लिए पाकीज़ा है. बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो वे करते हैं.

31 और मोमिन औरतों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें. और अपनी ज़ीनत (बनाव–सिंगार) को ज़ाहिर न करें. मगर जो उसमें से ज़ाहिर हो जाए और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहें. और अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर न करें, मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप पर या अपने शौहर के बाप पर या अपने बेटों पर या अपने शौहर के बेटों पर या अपने भाइयों पर या अपने भाइयों के बेटों पर या अपनी बहनों के बेटों पर या अपनी औरतों पर या अपने ममलूक (ग़ुलाम) पर या ज़ेरेदस्त (अधीन) मर्दों पर, जो (औरतों से) कुछ ग़रज़ नहीं रखते. या ऐसे लड़कों पर जो औरतों के परदे की बातों से अभी नावाक़िफ़ हों. वे अपने पांव ज़ोर से न मारें कि उनकी छुपी ज़ीनत मालूम हो जाए. और ऐ ईमान वालो! तुम सब मिलकर अल्लाह की तरफ़ तौबा करो, ताकि तुम फ़लाह पाओ.

32 और तुम में जो बेनिकाह (अविवाहित) हों उनका निकाह कर दो. और तुम्हारे ग़ुलामों और दासियों में से जो निकाह के लायक़ हों उनका भी. अगर वे ग़रीब होंगे तो अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा. और अल्लाह वुस्अत (सामर्थ्य) वाला है, जानने वाला है. 33 और जो निकाह का मौक़ा न पाएं उन्हें चाहिए कि वे ज़ब्त करें, यहाँ तक कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन्हें ग़नी कर दे. और तुम्हारे ममलूकों (ग़ुलामों) में से जो मुकातब होने के तालिब हों (यानी ग़ुलामी से मुक्त होने के लिए लिखित करार करना चाहते हों) तो उन्हें मुकातब बना लो, अगर तुम उनमें सलाहियत (क्षमता) पाओ. और उन्हें उस माल में से दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है. और अपने दासियों को पेशे पर मजबूर न करो, जबकि वे पाक दामन रहना चाहती हों, महज़ इसलिए कि दुनियावी ज़िंदगी का कुछ फ़ायदा तुम्हें हासिल हो जाए. और जो शख़्स उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह इस जबर के बाद (उन्हें) बख़्शने वाला मेहरबान है. 34 और बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ रोशन आयतें उतारी हैं और उन लोगों की मिसालें भी जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं और डरने वालों के लिए नसीहत भी.

35 अल्लाह आसमानों और ज़मीन की रोशनी है. उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है जैसे एक

ताक़, जिसमें एक चिराग़ हो, चिराग़ एक शीशे के अंदर हो. शीशा ऐसा है जैसे एक चमकदार तारा. वह ज़ैतून के एक ऐसे मुबारक दरख़्त के तेल से रोशन किया जाता है जो न पूर्वी है और न पश्चिमी. उसका तेल ऐसा है गोया आग के छुए बग़ैर ही ख़ुद–ब–ख़ुद जल उठेगा, रोशनी के ऊपर रोशनी. अल्लाह अपनी रोशनी की राह दिखाता है जिसे चाहता है. और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है. और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है.

36 ऐसे घरों में जिनके बारे में अल्लाह ने हुक्म दिया है कि वे बुलंद किए जाएँ और उनमें उसके नाम का ज़िक्र किया जाए, उनमें सुबह व शाम अल्लाह की याद करते हैं 37 वे लोग, जिन्हें तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं करती और न नमाज़ की इक़ामत से और न ज़कात की अदायगी से. वे उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आँखें उलट जाएँगी. 38 कि अल्लाह उन्हें उनके अमल का बेहतरीन बदला दे और उन्हें मज़ीद (अतिरिक्त) अपने फ़ज़्ल से नवाज़े. और अल्लाह जिसे चाहता है, बेहिसाब देता है.

39 और जिन लोगों ने इन्कार किया उनके आमाल ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में सराब (यानी चमकती हुई रेत). प्यासा उसे पानी ख़याल करता है, यहाँ तक कि जब वह उसके पास आया तो उसे कुछ न पाया. और उसने वहाँ अल्लाह को मौजूद पाया, पस उसने उसका हिसाब चुका दिया. और अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है. 40 या जैसे एक गहरे समुंदर में अंधेरा हो, मौज के ऊपर मौज उठ रही हो, ऊपर से बादल छाए हुए हों, ऊपर तले बहुत से अंधेरे, अगर कोई अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख पाए. और जिसे अल्लाह रोशनी न दे तो उसके लिए कोई रोशनी नहीं.

41 क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह की पाकी बयान करते हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं और चिड़ियां भी पर को फैलाए हुए. हर एक अपनी नमाज़ को और अपनी तस्बीह को जानता है. और अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं. 42 और अल्लाह ही की हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में. और अल्लाह ही की तरफ़ है सब की वापसी.

43 क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह बादलों को चलाता है. फिर उन्हें आपस में मिला देता है. फिर उन्हें तह–ब–तह कर देता है. फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके बीच से निकलती है और वह आसमान से उसके अंदर के पहाड़ों से (यानी वह बर्फ़ के पहाड़ों से) ओले बरसाता है. फिर उसे जिस पर चाहता है गिराता है. और जिससे चाहता है, उन्हें हटा देता है. उसकी बिजली की चमक से (ऐसा) मालूम होता है कि निगाहों को (वह) उचक ले जाएगी. 44 अल्लाह रात और दिन को बदलता रहता है. बेशक उसमें सबक़ है आँख वालों के लिए.

45 और अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया. फिर उनमें से कोई अपने पेट के बल चलता है. और उनमें से कोई दो पांवों पर चलता है. और उनमें से कोई चार पैरों पर चलता है.

अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है. बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है. 46 हमने खोलकर बताने वाली आयतें उतार दी हैं. और अल्लाह जिसे चाहता है, सीधी राह की हिदायत देता है.

47 और वे कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हमने इताअत (आज्ञापालन) की. मगर उनमें से एक गिरोह उसके बाद फिर जाता है. और ये लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं. 48 और जब उन्हें अल्लाह और रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है, ताकि ख़ुदा का रसूल उनके दरमियान फ़ैसला करे तो उनमें से एक गिरोह रूगर्दानी (अवहेलना) करता है. 49 और अगर हक़ उन्हें मिलने वाला हो तो उसकी तरफ़ फ़रमांबरदार बनकर आ जाते हैं. 50 क्या उनके दिलों में बीमारी है या वे शक में पड़े हुए हैं या उन्हें यह अंदेशा है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ ज़ुल्म करेंगे, बल्कि यही लोग ज़ालिम हैं.

51 ईमान वालों का क़ौल (कथन) तो यह है कि जब वे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ बुलाए जाते हैं, ताकि रसूल उनके दरमियान फ़ैसला करे तो वे कहते हैं कि हमने सुना और हमने माना. और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं. 52 और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे और वह अल्लाह से डरे और वह उसकी मुख़ालिफ़त (विरोध) से बचे तो यही लोग हैं जो कामयाब होंगे.

53 और वे अल्लाह की क़समें खाते हैं, बड़ी सख़्त क़समें, कि अगर तुम उन्हें हुक्म दो तो वे ज़रूर निकलेंगे. कहो कि क़समें न खाओ दस्तूर के मुताबिक़ इताअत (आज्ञापालन) चाहिए. बेशक अल्लाह को मालूम है जो तुम करते हो.

54 **कहो कि अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो. फिर अगर तुम रूगर्दानी (अवहेलना) करोगे तो रसूल पर वह बोझ है जो उसपर डाला गया है और तुम पर वह बोझ है जो तुम पर डाला गया है. और अगर तुम उसकी इताअत करोगे तो हिदायत पाओगे.**

और रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़–साफ़ पहुँचा देना है.

नोटः– अब ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाने का यही काम रसूल की पैरवी करने वालों के ज़िम्मे है. जो लोग इस ज़िम्मेदारी को पूरा करेंगे वही लोग ख़ुदा की नज़र में रसूल की पैरवी करने वाले क़रार पाएंगे. पैग़ाम पहुँचाने का जो बोझ रसूल पर डाला गया था वही बोझ रसूल की पैरवी करने वालों पर डाला गया है. बोझ से मुराद दावती ज़िम्मेदारी है. यानी रसूल के बाद **'उम्मते–मुहम्मदी'** पर वही बोझ है जो रसूल पर था. यानी उम्मत को पैग़ाम पहुँचा कर अपने ऊपर से इस बोझ को उतारना है.

55 अल्लाह ने वादा फ़रमाया है तुम में से उन लोगों के साथ जो ईमान लाएँ और नेक अमल करें कि वह उन्हें ज़मीन में इक़्तेदार (सत्ता) देगा, जैसा कि उसने पहले लोगों को इक़्तेदार दिया था. और उनके लिए उनके दीन को जमा देगा जिसे उनके लिए पसंद किया है. और उनकी ख़ौफ़ की हालत के बाद उसे अमन से बदल देगा. वे सिर्फ़ मेरी इबादत करेंगे और किसी चीज़ को मेरा शरीक नहीं बनाएंगे. और जो इसके बाद इन्कार करे तो ऐसे ही लोग नाफ़रमान हैं.

56 और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो, ताकि तुम पर रहम किया जाए. 57 जो लोग इन्कार कर रहे हैं उनके बारे में यह गुमान न करो कि वे ज़मीन में अल्लाह को आजिज़ कर देंगे. और उनका ठिकाना आग है और वह निहायत बुरा ठिकाना है.

58 ऐ ईमान वालो! तुम्हारे ममलूकों (ग़ुलामों) को और तुम में जो बुलूग़ (युवावस्था) को नहीं पहुँचे उन्हें तीन वक़्तों में इजाज़त लेना चाहिए. फ़जर की नमाज़ से पहले, और दोपहर को जब तुम अपने कपड़े उतारते हो, और ईशां की नमाज़ के बाद. ये तीन वक़्त तुम्हारे लिए परदे के हैं. इनके बाद न तुम पर कोई गुनाह है और न उनपर. तुम एक दूसरे के पास बार-बार आते जाते रहते हो. इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वज़ाहत करता है. और अल्लाह जानने वाला व हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है. 59 और जब तुम्हारे बच्चे अक़्ल की हद को पहुँच जाएँ तो वे भी उसी तरह इजाज़त लें जिस तरह उनके अगले इजाज़त लेते रहे हैं. इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वज़ाहत करता है और अल्लाह अलीम व हकीम (सर्वज्ञानी एवं बुद्धिमान) है. 60 और बड़ी बूढ़ी औरतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखतीं, उनपर कोई गुनाह नहीं अगर वे अपनी चादरें उतार कर रख दें, बशर्ते कि वे ज़ीनत (बनाव—सिंगार) की नुमाइश करने वाली न हों. और अगर वे भी एहतियात करें तो उनके लिए बेहतर है. और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है.

61 अंधे पर कोई तंगी नहीं और लंगड़े पर कोई तंगी नहीं और बीमार पर कोई तंगी नहीं और न तुम लोगों पर कोई तंगी है कि तुम अपने घरों से खाओ या अपने बाप-दादा के घरों से, या अपनी माँओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से, या अपनी फुफियों के घरों से, या अपने मामुओं के घरों से, या अपनी ख़ालाओं के घरों से या जिस घर की कुंजियों के तुम मालिक हो या अपने दोस्तों के घरों से. तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम लोग मिलकर खाओ या अलग—अलग. फिर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों को सलाम करो जो बाबरकत और पाकीज़ा दुआ है अल्लाह की तरफ़ से. इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों की वज़ाहत करता है, ताकि तुम समझो.

62 ईमान वाले वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर यक़ीन लाएँ. और जब किसी इज्तिमाई (सामूहिक) काम के मौक़े पर रसूल के साथ हों तो जब तक तुम से इजाज़त न ले लें वहाँ से न जाएँ. जो लोग तुम से इजाज़त लेते हैं, वही अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं. पस जब वे अपने किसी काम के लिए तुम से इजाज़त माँगे तो तुम उनमें से जिसको चाहो, इजाज़त दे दो. और उनके लिए अल्लाह से माफ़ी माँगो. बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला रहम करने वाला है.

63 तुम लोग रसूल के बुलाने को इस तरह का बुलाना न समझो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो. अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो एक दूसरे की आड़ लेते हुए चुपके से चले जाते हैं. पस जो लोग उसके हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हैं उन्हें डरना चाहिए कि उनपर कोई आज़माइश आ जाए. या उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ ले. 64 याद रखो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह का है. अल्लाह उस हालत को जानता है जिस पर तुम हो. और जिस दिन लोग उसकी तरफ़ लाए जाएँगे तो जो कुछ उन्होंने किया था, वह उससे उन्हें बाख़बर कर देगा. और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है.

सूरह–25. अल–फ़ुरक़ान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 **बड़ी बाबरकत है वह ज़ात जिसने अपने बंदे पर फ़ुरक़ान उतारा, ताकि वह जहान वालों के लिए डराने वाला हो.**

नोटः– रसूलुल्लाह (स.अ.) ने अपनी 23 साला पैग़ंबराना ज़िंदगी में लोगों को ख़ुदा के तख़्लिक़ी मंसूबे से आगाह करने का काम पूरी ख़ैरख़ाही के साथ अंजाम दिया. जहान वालों को आगाह करने का यही काम अब '**उम्मते–मुहम्मदी**' को क़यामत तक करना है.

2 वह जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है. उसने कोई बेटा नहीं बनाया और बादशाही में कोई उसका शरीक नहीं. उसने हर चीज़ को पैदा किया और उसका एक नपातुला पैमाना मुक़र्रर किया. 3 और लोगों ने उसके सिवा ऐसे माबूद (पूज्य) बनाए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, वे ख़ुद पैदा किए जाते हैं. और वे ख़ुद अपने लिए न किसी नुक़सान का इख़्तियार रखते हैं और न किसी नफ़ा का. और न वे किसी के मरने का इख़्तियार रखते हैं और न किसी के जीने का और न मरने के बाद (किसी को) दोबारा ज़िंदा करने का.

4 और मुन्किर लोग कहते हैं कि यह सिर्फ़ एक झूठ है जिसे उसने गढ़ा है. और कुछ दूसरे लोगों ने उसमें उसकी मदद की है. (ऐसा कहने वाले) ये लोग ज़ुल्म और झूठ के मुरतकिब हैं (यानी बहुत ज़ालिम और झूठे हैं.). 5 और वे कहते हैं कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं जिन्हें उसने लिखवा लिया है. पस वे उसे सुबह व शाम सुनाई जाती हैं. 6 कहो कि इसे उसने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन के भेद को जानता है. बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है.

7 और वे कहते हैं कि यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है. क्यों न उसके पास कोई फ़रिश्ता भेजा गया कि वह उसके साथ रहकर डराता 8 या उसके लिए कोई ख़ज़ाना उतारा जाता. या उसके लिए कोई बाग़ होता जिससे वह खाता. और ज़ालिमों ने कहा कि तुम लोग एक सहरज़दा (जादूग्रस्त) आदमी की पैरवी कर रहे हो. 9 देखो वे कैसी–कैसी मिसालें तुम्हारे लिए बयान कर रहे हैं. पस वे बहक गए हैं, फिर वे राह नहीं पा सकते.

10 बड़ा बाबरकत है वह. अगर वह चाहे तो तुम्हें उससे भी बेहतर चीज़ दे दे. ऐसे बाग़ात जिनके नीचे नहरें जारी हों, और तुम्हें बहुत से महल दे दे. 11 बल्कि उन्होंने क़यामत को झुठला दिया है. और हमने ऐसे शख़्स के लिए जो क़यामत को झुठलाए दोज़ख़ तैयार कर रखी है. 12 जब वह उन्हें दूर से देखेगी तो वे उसका बिफरना और दहाड़ना सुनेंगे. 13 और जब वे उसकी किसी तंग जगह में बांध कर डाल दिए जाएँगे तो वे वहाँ मौत को पुकारेंगे. 14 आज एक मौत को न पुकारो, और बहुत सी मौतों को पुकारो. 15 कहो, क्या यह बेहतर है या हमेशा की जन्नत जिसका वादा ख़ुदा से डरने वालों से किया गया है, वह उनके लिए बदला और ठिकाना होगी. 16 उसमें उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहेंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे. यह तेरे रब के ज़िम्मे एक वादा है, वाजिबुल अदा (यानी पूरा होकर रहने वाला वादा).

17 और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और उन्हें भी जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं, फिर वह कहेगा, क्या तुमने मेरे इन बंदों को गुमराह किया या ये ख़ुद रास्ते से भटक गए. 18 वे कहेंगे कि पाक है तेरी ज़ात. हमें यह सज़ावार न था कि हम तेरे सिवा दूसरों को कारसाज़ तजवीज़ करें. मगर तूने इन्हें और इनके बाप–दादा को दुनिया का सामान दिया. यहाँ तक कि वे नसीहत को भूल गए और हलाक होने वाले बने. 19 पस उन्होंने तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा ठहरा दिया. अब न तुम ख़ुद टाल सकते हो और न कोई मदद पा सकते हो. और तुम में से जो शख़्स ज़ुल्म करेगा हम उसे एक बड़ा अज़ाब चखाएंगे.

20 और हमने तुम से पहले जितने पैग़म्बर भेजे सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते थे. और हमने तुम्हें एक दूसरे के लिए आज़माइश बनाया है. क्या तुम सब्र करते हो. और तुम्हारा रब सब कुछ देखता है.

पारा – 19 21 और जो लोग हमारे सामने पेश होने का अंदेशा नहीं रखते वे कहते हैं कि हमारे ऊपर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गए. या हम अपने रब को देख लेते. उन्होंने अपने जी में अपने को बहुत बड़ा समझा और वे हद से गुज़र गए हैं सरकशी में. 22 जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे. उस दिन मुजरिमों के लिए कोई ख़ुशख़बरी न होगी. और वे कहेंगे कि पनाह, पनाह! 23 और हम उनके हर अमल की तरफ़ बढ़ेंगे जो उन्होंने किया था और फिर उसे उड़ती हुई ख़ाक बना देंगे. 24 जन्नत वाले उस दिन बेहतरीन ठिकाने में होंगे. और निहायत अच्छी आरामगाह में.

25 और जिस दिन बादल से आसमान फट जाएगा. और फ़रिश्ते लगातार उतारे जाएँगे. 26 उस दिन हक़ीक़ी बादशाही सिर्फ़ रहमान की होगी. और वह दिन मुन्किरों पर बड़ा सख़्त होगा. 27 और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथों को काटेगा, वह कहेगा कि काश मैंने रसूल के साथ राह इख़्तियार की होती! 28 हाय मेरी शामत, काश मैं फ़लाँ शख़्स को दोस्त न बनाता! 29 उसने मुझे नसीहत से बहका दिया बाद इसके कि वह मेरे पास आ चुकी थी. और शैतान है ही इंसान को दग़ा देने वाला.

30 और रसूल कहेगा कि ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने इस कुरआन को बिल्कुल नज़रंदाज़ कर दिया.

नोटः–

- कुरआन के सिलसिले में असल करने का काम यह है कि उसपर ईमान रखने वाले उससे अपनी ज़िंदगी के लिए रहनुमाई हासिल करें और दुनिया की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में उसके तर्जुमे करके उसको तमाम इंसानों तक पहुँचाए. इसके सिवा कुरआन का कोई भी दूसरा इस्तेमाल करने से उसका हक़ अदा नहीं हो सकता.

  उम्मत बाद के ज़माने में कुरआन को किताबे–महजूर बना देगी, इसका मतलब यही है कि उम्मत का यह हाल हो जाएगा कि उम्मत के लिए कुरआन जब न किताबे–हिदायत रहे और न किताबे–दावत, यही वह हालत है जिसको किताबे–महजूर बना देना कहा गया है. कुरआन की असल हैसियत यह है कि वह अपने लिए किताबे–हिदायत है और दूसरों के लिए किताबे–दावत.
- कुरआन समझ कर न पढ़ना, उसमें ग़ौर–व–फ़िक्र न करना, उसकी तालीमात से अमली ज़िंदगी का रिश्ता न होना और कुरआन का दाई न बनना यही कुरआन को नज़रंदाज़

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)
कर देना है. ऐसा जो लोग कर रहे हैं उन्हें सोचना चाहिए कि ऐसे लोगों के बारे में रसूले-ख़ुदा (स.अ.) की ख़ुदा की अदालत में क्या गवाही होगी?

- हदीस में आया है कि 'बाद के ज़माने में मसजिदों में भीड़ होगी, लेकिन वह हिदायत से ख़ाली होंगी.'

दुनियाभर में लाखों-करोड़ों मुसलमान क़ुरआन का हिफ़्ज़ करते हैं. रमज़ान में मसजिदों में ख़त्मे-क़ुरआन होता है, शबीना का एहतमाम किया जाता है. मुसलमानों के घरों में मौक़ा-ब-मौक़ा क़ुरआन-ख़ानी होती है. बज़ाहिर सब तरफ़ क़ुरआन की धूम है. फिर क्या वजह है कि क़ुरआन वाला पैग़ंबर अल्लाह की अदालत में यह गवाही देगा की 'मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को पीठ पीछे डाल दिया था. इस क़ुरआन को पूरी तरह छोड़ रखा था.' इसकी सादा वजह है और वह यह कि 'क़ुरआन' की असल हैसियत 'किताबे-दावत' की है. क़ुरआन को ख़ुद क़ुरआन में 'हुदल्लीन्नास' कहा गया है. मुसलमानों ने बज़ाहिर क़ुरआन को पकड़ रखा है, लेकिन उन्होंने दावते-क़ुरआन को छोड़ रखा है. ख़ुद क़ुरआन से यह बात साबित है कि क़ुरआन का हक़ीक़ी क़ारी वही है जो क़ुरआन का दाई बन जाए.

जो लोग यह चाहते हैं कि उनपर अल्लाह की अदालत में यह इल्ज़ाम न आए कि उन्होंने क़ुरआन को किताबे-महजूर बना दिया था. तो उनके लिए वाहिद सूरत यही है कि वह क़ुरआन के दाई बन जाएं.

31 और इसी तरह हमने मुजरिमों में से हर नबी के दुश्मन बनाए. और तुम्हारा रब काफ़ी है रहनुमाई के लिए और मदद करने के लिए.

32 और इन्कार करने वालों ने कहा कि इसके ऊपर पूरा क़ुरआन क्यों नहीं उतारा गया. ऐसा इसलिए किया गया, ताकि इसके ज़रीए से हम तुम्हारे दिल को मज़बूत करें और हमने इसे ठहर-ठहर कर उतारा है.
33 और ये लोग कितना भी अजीब सवाल तुम्हारे सामने लाएँ, मगर हम उसका ठीक जवाब और बेहतरीन वज़ाहत तुम्हें बता देंगे.
34 जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की तरफ़ ले जाए जाएँगे. उन्हीं का बुरा ठिकाना है. और वही हैं राह से बहुत भटके हुए.

35 और हमने मूसा को किताब दी. और उसके साथ उसके भाई हारून को मददगार बनाया.
36 फिर हमने उनसे कहा कि तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया है. फिर हमने उन्हें बिल्कुल तबाह कर दिया.
37 और नूह की क़ौम को भी हमने ग़र्क़ कर दिया, जबकि उन्होंने रसूलों को झुठलाया और हमने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दिया.

और हमने ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है. 38 और आद और समूद को और अर–रस वालों को और उनके दरमियान बहुत सी क़ौमों को. 39 और हमने उनमें से हर एक को मिसालें सुनाईं और हमने हर एक को बिल्कुल बर्बाद कर दिया. 40 और ये लोग उस बस्ती पर से गुज़रे हैं जिस पर बुरी तरह पत्थर बरसाए गए. क्या वे उसे देखते नहीं रहे हैं. बल्कि वे लोग दुबारा उठाए जाने की उम्मीद नहीं रखते.

41 और वे जब तुम्हें देखते हैं तो वे तुम्हारा मज़ाक़ बना लेते हैं. क्या यही है जिसे ख़ुदा ने रसूल बनाकर भेजा है. 42 इसने तो हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से हटा ही दिया होता अगर हम उनकी (परस्तिश) पर जमे न रहते. और जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा जब वे अज़ाब को देखेंगे कि सबसे ज़्यादा बेराह कौन है.

43 क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है, पस क्या तुम उसका ज़िम्मा ले सकते हो 44 या तुम ख़याल करते हो कि उनमें से अकसर सुनते और समझते हैं? वे तो महज़ जानवरों की तरह हैं, बल्कि वे उनसे भी ज़्यादा बेराह हैं.

45 क्या तुमने अपने रब की तरफ़ नहीं देखा कि वह किस तरह साये को फैला देता है. और अगर वह चाहता तो वह उसे ठहरा देता. फिर हमने सूरज को उसपर दलील बनाया. 46 फिर हमने आहिस्ता–आहिस्ता उसे अपनी तरफ़ समेट लिया. 47 और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दा और नींद को राहत बनाया और दिन को नींद से बेदार होकर (ज़िंदगी आगे जारी रखने का) ज़रिया बनाया. 48 और वही है जो अपनी रहमत से पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है. और हम आसमान से पाक पानी उतारते हैं. 49 ताकि उसके ज़रिये से मुर्दा ज़मीन में जान डाल दें. और उसे अपनी मख़्लूक़ात में से बहुत से जानवरों और इंसानों को पिलाएँ.

50 और हमने इसे उनके दरमियान तरह–तरह से बयान किया है, ताकि वे सोचें. फिर भी अकसर लोग नाशुक्री किए बग़ैर नहीं रहते. 51 और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते.

52 **तो तुम मुन्किरों की बात न मानो (यानी उनकी बातों का असर न लो) और**

इस (क़ुरआन) के ज़रिये से उनके साथ जिहाद करो– बड़ा जिहाद.

नोटः– क़ुरआन का पैग़ाम इंसानों तक पहुँचाना और क़ुरआन के ज़रीए से लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाना..... यह अमल अल्लाह की नज़र में बड़ा जिहाद है.

53 और वही है जिसने दो समुंदरों को मिलाया. एक मीठा है प्यास बुझाने वाला और दूसरा खारी व कड़वा है. और उसने उनके दरमियान एक पर्दा रख दिया और एक मज़बूत आड़. 54 और वही है जिसने इंसान को पानी से पैदा किया. फिर उसे ख़ानदान वाला और ससुराल वाला बनाया. और तुम्हारा रब बड़ी क़ुदरत वाला है.

55 और वे अल्लाह को छोड़कर उन चीज़ों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नफ़ा पहुँचा सकती हैं और न नुक़सान. और मुन्किर तो अपने रब के ख़िलाफ़ (बुरे लोगों का) मददगार बना हुआ है.

56 **और हमने तुम्हें सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है.** 57 **तुम कहो कि मैं तुम से इसपर कोई उजरत (बदला) नहीं माँगता, मगर यह कि जो चाहे वह अपने रब का रास्ता पकड़ ले.**

नोटः– दाई का काम अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा देना है. मदू इस के लिए आज़ाद है कि चाहे तो अपने रब का रास्ता इख्तियार करे और चाहे तो न करे.

58 और ज़िंदा ख़ुदा पर, जो कभी मरने वाला नहीं, भरोसा रखो और उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह करो. और वह अपने बंदों के गुनाहों से बाख़बर रहने के लिए काफ़ी है. 59 जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है, छः दिन में. फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ. वह रहमान (कृपावंत) है, उसके बारे में किसी जानने वाले से पूछो. 60 और जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते हैं कि रहमान क्या है. क्या हम उसे सज्दा करें जिसे तू हमसे कहे. और उनका बिदकना और बढ़ जाता है. अस्-सज्दा

61 बड़ी बाबरकत है वह ज़ात जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और (सूरज की शकल में) उसमें एक चिराग़ रखा और एक चमकता चांद. 62 और वही है जिसने रात और दिन को एक दूसरे के बाद आने वाला बनाया, उस शख़्स के लिए जो सबक़ लेना चाहे और शुक्रगुज़ार बनना चाहे.

63 और रहमान के बंदे वे हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी (नम्रता) के साथ चलते हैं. और जब जाहिल लोग उनसे बात करते हैं तो वे कह देते हैं कि तुम्हें सलाम. 64 और जो अपने रब के आगे सज्दा और क़याम में रातें गुज़ारते हैं. 65 और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब! जहन्नम के अज़ाब को हमसे दूर रख. 66 बेशक उसका अज़ाब पूरी तबाही है. बेशक वह बुरा ठिकाना है और बुरा मक़ाम

है. 67 और वे लोग कि जब वे ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं और न कंजूसी करते हैं, बल्कि उनका ख़र्च करना दोनों इन्तेहाओं के दरमियान एतदाल पर क़ायम रहता है (यानी वह बीच के मार्ग का अवलंब करते हैं).

68 और जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को नहीं पुकारते. और वे अल्लाह की हराम की हुई किसी जान को क़तल नहीं करते, मगर हक़ पर. और वे बदकारी (व्यभिचार) नहीं करते. और जो शख़्स ऐसे काम करेगा तो वह सज़ा से दो चार होगा. 69 क़यामत के दिन उसका अज़ाब बढ़ता चला जाएगा. और वह उसमें हमेशा ज़लील होकर रहेगा. 70 मगर जो शख़्स तौबा करे और ईमान लाए और नेक काम करे तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराइयों को भलाइयों से बदल देगा. और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. 71 और जो शख़्स तौबा करे और नेक काम करे तो वह दरहक़ीक़त अल्लाह की तरफ़ रुजूअ कर रहा है.

72 और वे लोग (यानी ईमान वाले) झूठे काम में शामिल नहीं होते. और जब किसी बेहूदा चीज़ से उनका गुज़र होता है तो संजीदगी के साथ गुज़र जाते हैं. 73 और वे ऐसे हैं कि जब उन्हें उनके रब की आयतों के ज़रीए नसीहत की जाती है तो वे उनपर बहरे और अंधे होकर नहीं गिरते. 74 और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हमें हमारी बीवी और औलाद की तरफ़ से आंखों की ठंडक अता फ़रमा और हमें परहेज़गारों का इमाम बना.

75 ये लोग हैं कि उन्हें बालाख़ाने (उच्च भवन) मिलेंगे इसलिए कि उन्होंने सब्र किया. और उनमें उनका इस्तक़बाल दुआ और सलाम के साथ होगा. 76 वे उनमें हमेशा रहेंगे. वह ख़ूब जगह है ठहरने की और ख़ूब जगह है रहने की. 77 कहो कि मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता. अगर तुम उसे न पुकारो. पस तुम झुठला चुके तो वह चीज़ अनक़रीब होकर रहेगी.

सूरह–26. अश–शुअरा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ता० सीन० मीम०. 2 ये वाज़ेह किताब की आयतें हैं.

3 **शायद तुम अपने को हलाक कर डालोगे इसपर कि वे ईमान नहीं लाते.**

नोटः– इसी तरह हदीस में आया है कि '**लोग आग में गिर रहे हैं और मैं उनकी कमर पकड़ कर पीछे खींच रहा हूँ.**'

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)

यह दुनिया की ज़िंदगी इम्तिहानी ज़िंदगी है, यहाँ इंसान को **ज़िंदगी की हक़ीक़त** समझने का **मक़सदे-हयात** जानने का पहला और आख़िरी मौक़ा दिया गया है. अगर इंसान अपनी ज़िंदगी में यह मौक़ा गंवा देता है, तो उसे दूसरा मौक़ा हरगिज़ मिलने वाला नहीं. इसके बाद वह जिस point पर पहुँचेगा वह point of no-return, point of no-correction होगा, यानी वह ऐसा मुक़ाम होगा जहाँ से वापसी मुमकिन नहीं, जहाँ कोई इसलाह की सूरत नहीं. यही वह संगीन सुरते-हाल है जो दाई को तड़पा देती है और मदू का आख़िरी दर्जे तक ख़ैरख़ाह बना देती है.

4 अगर हम चाहें तो उनपर आसमान से निशानी उतार दें. फिर उनकी गरदनें उसके आगे
झुक जाएँ. 5 उनके पास रहमान की तरफ़ से कोई भी नई नसीहत ऐसी नहीं आती जिससे वे बेरुख़ी
न करते हों. 6 पस उन्होंने झुठला दिया. तो अब अनक़रीब उन्हें उस चीज़ की हक़ीक़त मालूम हो
जाएगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे.

7 क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा कि हमने उसमें किस क़द्र तरह—तरह की उम्दा चीज़ें
जोड़ा-जोड़ा उगाई हैं. 8 बेशक उसमें निशानी है और उनमें से अकसर लोग ईमान नहीं लाते. 9
और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है, रहम करने वाला है.

10 **और जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा कि तुम ज़ालिम क़ौम के पास जाओ,**

नोटः- क़ुरआन के इस बयान से वाज़ेह है कि ज़ालिम से ज़ालिम क़ौम तक, सरकश से सरकश इंसान तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाना है. लेकिन अब ज़माना बहुत ज़्यादा बदल गया है. आज के दाई के लिए वैसे सख़्त हालात बिल्कुल नहीं हैं जिन हालात में पैग़ंबरों ने दावत का काम अंजाम दिया. आज करने वाले के लिए दावत का काम बहुत आसान है. आज का दाई ख़ुदा की किताब बग़ैर किसी अंदेशे के वक़्त के फ़िरऔन और नमरूद तक आसानी से पहुँचा सकता है.

11 फ़िरऔन की क़ौम के पास, क्या वे नहीं डरते. 12 मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे अंदेशा
है कि वे मुझे झुठला देंगे. 13 और मेरा सीना तंग होता है और मेरी ज़बान नहीं चलती. पस तू
हारून के पास पैग़ाम भेज दे. 14 और मेरे ऊपर उनका एक जुर्म भी है पस मैं डरता हूँ कि वे मुझे
क़तल कर देंगे.

15 फ़रमाया कभी नहीं. पस तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं. 16 पस तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो कि हम ख़ुदावंदे–आलम के रसूल हैं, 17 कि तू बनी इसराईल को हमारे साथ जाने दे. 18 फ़िरऔन ने कहा, क्या हमने तुम्हें बचपन में अपने यहाँ नहीं पाला. और तुमने अपने उम्र के कई साल हमारे यहाँ गुज़ारे. 19 और तुमने अपना वह फ़ेल (कृत्य) किया, जो किया. और तुम नाशुक्रों में से हो.

20 मूसा ने कहा. उस वक़्त मैंने किया था और मुझ से ग़लती हो गई. 21 फिर मुझे तुम लोगों से डर लगा तो मैं तुम से भाग गया. फिर मुझे मेरे रब ने दानिशमंदी (सूझबूझ) अता फ़रमाई और मुझे रसूलों में से बना दिया. 22 और यह एहसान है जो तुम मुझे जता रहे हो कि तुमने बनी इसराईल को ग़ुलाम बना लिया.

23 फ़िरऔन ने कहा कि रब्बुल–आलमीन क्या है. 24 मूसा ने कहा, आसमानों और ज़मीन का रब और उन सबका जो उनके दरमियान हैं, अगर तुम यक़ीन लाने वाले हो. 25 फ़िरऔन ने अपने इर्द–गिर्द वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं हो. 26 मूसा ने कहा, वह तुम्हारा भी रब है. और तुम्हारे अगले बुज़ुर्गों का भी. 27 फ़िरऔन ने कहा, तुम्हारा यह रसूल, जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है जुनूनी है. 28 मूसा ने कहा, मशरिक़ (पूर्व) व मग़रिब (पश्चिम) का रब और जो कुछ उनके दरमियान है, अगर तुम अक़्ल रखते हो. 29 फ़िरऔन ने कहा, अगर तुमने मेरे सिवा किसी को माबूद (पूज्य) बनाया तो मैं तुम्हें क़ैद कर दूँगा. 30 मूसा ने कहा, क्या अगर मैं कोई वाज़ेह दलील पेश करूँ तब भी. 31 फ़िरऔन ने कहा, फिर उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो. 32 फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया तो यकायक वह एक सरीह (साक्षात) अज़दहा बन गया. 33 और उसने अपना हाथ खींचा तो यकायक वह देखने वालों के लिए चमक रहा था. 34 फ़िरऔन ने अपने इर्द–गिर्द के सरदारों से कहा, यक़ीनन यह शख़्स एक माहिर जादूगर है. 35 वह चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दे. पस तुम क्या मशविरा देते हो.

36 दरबारियों ने कहा कि इसे और इसके भाई को मोहलत दीजिए. और शहरों में हरकारे भेजिए कि 37 वे आपके पास तमाम माहिर जादूगरों को लाएँ. 38 पस जादूगर एक दिन मुक़र्रर वक़्त पर इकट्ठा किए गए 39 और लोगों से कहा गया कि क्या तुम जमा होंगे. 40 ताकि हम जादूगरों का साथ दें अगर वे ग़ालिब रहने वाले हों. 41 फिर जब जादूगर आए तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा, क्या हमारे लिए कोई इनाम है अगर हम ग़ालिब रहे. 42 फ़िरऔन ने कहा, हां, और तुम उस सूरत में मुक़र्रब (निकटवर्ती) लोगों में शामिल हो जाओगे.

43 मूसा ने उनसे कहा कि तुम्हें जो कुछ डालना हो, डालो. 44 पस उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं. और कहा कि फ़िरऔन के इक़बाल की क़सम, हम ही ग़ालिब रहेंगे. 45

फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाला तो अचानक वह उन ढकोसलों (स्वांग) को निगलने लगा जो उन्होंने बनाया था. 46 फिर जादूगर सज्दे में गिर पड़े. 47 उन्होंने कहा, हम ईमान लाए रब्बुल-आलमीन पर 48 जो मूसा और हारून का रब है.

49 फ़िरऔन ने कहा, तुमने उसे मान लिया, इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ. बेशक वही तुम्हारा उस्ताद है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है. पस अब तुम्हें मालूम हो जाएगा. मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूंगा और तुम सबको सूली पर चढ़ाऊँगा. 50 उन्होंने कहा कि कुछ हरज नहीं. हम अपने मालिक के पास पहुँच जाएँगे. 51 हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताओं को माफ़ कर देगा. इसलिए कि हम पहले ईमान लाने वाले बने.

52 और हमने मूसा को 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि मेरे बंदों को लेकर रात को निकल जाओ. बेशक तुम्हारा पीछा किया जाएगा. 53 पस फ़िरऔन ने शहरों में हरकारे भेजे. 54 ये लोग थोड़ी सी जमात हैं. 55 और उन्होंने हमें ग़ुस्सा दिलाया है. 56 और हम एक मुस्तैद (चुस्त) जमात हैं. 57 पस हमने उन्हें बाग़ों और चशमों (स्रोतों) से निकाला, 58 और ख़ज़ानों और उम्दा मकानात से. 59 (फ़िरऔन वालों के साथ) यह हुआ, और हमने बनी इसराईल को उन चीज़ों का वारिस बना दिया.

60 पस उन्होंने सूरज निकलने के वक़्त उनका पीछा किया. 61 फिर जब दोनों जमाअतें आमने-सामने हुईं तो मूसा के साथियों ने कहा कि हम तो पकड़े गए. 62 मूसा ने कहा कि हरगिज़ नहीं, बेशक मेरा रब मेरे साथ है. वह मुझे राह बताएगा. 63 फिर हमने मूसा को 'वही' की (मूसा की तरफ़ यह ईश-संदेश भेजा), कि अपना असा दरिया पर मारो. पस वह फट गया और हर हिस्सा ऐसा हो गया जैसे बड़ा पहाड़. 64 और हमने दूसरे फ़रीक़ (पक्ष) को भी उसके क़रीब पहुँचा दिया. 65 और हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे बचा लिया. 66 फिर दूसरों को ग़र्क़ कर दिया. 67 बेशक उसके अंदर निशानी है. और उनमें से अकसर मानने वाले नहीं हैं. 68 और बेशक तेरा रब ज़बरदस्त है, रहमत वाला है.

69 और उन्हें इब्राहीम का क़िस्सा सुनाओ. 70 जबकि उसने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो. 71 उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत करते हैं और बराबर उसपर जमे रहेंगे. 72 इब्राहीम ने कहा, क्या वे तुम्हारी सुनते हैं जब तुम उन्हें पुकारते हो. 73 या वे तुम्हें नफ़ा नुक़सान पहुँचाते हैं. 74 उन्होंने कहा, बल्कि हमने अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते हुए पाया है.

75 इब्राहीम ने कहा, क्या तुमने उन चीज़ों को देखा भी जिनकी इबादत करते हो (यानी उनके बारे में क्या कभी ग़ौर किया), 76 तुम भी और तुम्हारे बड़े भी. 77 ये सब मेरे दुश्मन हैं,

सिवा एक ख़ुदावंदे–आलम के 78 जिसने मुझे पैदा किया, फिर वही मेरी रहनुमाई फ़रमाता है. 79 और वही है जो मुझे खिलाता है और पिलाता है. 80 और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझे शिफ़ा देता है. 81 और जो मुझे मौत देगा फिर मुझे ज़िंदा करेगा. 82 और वह जिससे मैं उम्मीद रखता हूँ कि बदले के दिन मेरी ख़ता माफ़ करेगा.

83 ऐ मेरे रब! मुझे हिकमत (विवेक) अता फ़रमा और मुझे नेक लोगों में शामिल फ़रमा. 84 और मेरा बोल सच्चा रख बाद के आने वालों में. 85 और मुझे बाग़े–नेमत के वारिसों में से बना. 86 और मेरे बाप को माफ़ फ़रमा, बेशक वह गुमराहों में से है. 87 और मुझे उस दिन रुसवा न कर, जबकि लोग उठाए जाएँगे. 88 जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद. 89 मगर वह जो अल्लाह के पास क़ल्बे–सलीम (पाकदिल) लेकर आए.

90 और जन्नत डरने वालों के क़रीब लाई जाएगी. 91 और जहन्नम गुमराहों के लिए ज़ाहिर की जाएगी. 92 और उनसे कहा जाएगा. कहाँ हैं वे जिनकी तुम इबादत करते थे, 93 अल्लाह के सिवा. क्या वे तुम्हारी मदद करेंगे या वे अपना बचाव कर सकते हैं? 94 फिर उसमें औंधे मुँह डाल दिए जाएँगे, वे और गुमराह लोग 95 और इबलीस (शैतान) का लश्कर, सबके सब. 96 वे उसमें बाहम झगड़ते हुए कहेंगे. 97 ख़ुदा की क़सम, हम खुली हुई गुमराही में थे, 98 जबकि हम तुम्हें ख़ुदावंदे–आलम के बराबर करते थे. 99 और हमें तो बस मुजरिमों ने रास्ते से भटकाया.

100 **तो अब कोई हमारी सिफ़ारिश करने वाला नहीं.** 101 **और न कोई मुख़्लिस (निष्ठावान) दोस्त.** 102 **पस काश हमें फिर वापस जाना हो कि हम ईमान वालों में से बनें.**

नोटः– इंसान का सबसे बड़ा मसला आख़िरत का मसला है. आख़िरत की कामयाबी ही हक़ीक़ी कामयाबी है. और आख़िरत की नाकामी ही हक़ीक़ी नाकामी है. आख़िरत वह जगह है जहाँ इंसान को सुधार का कोई मौक़ा नहीं होगा, वापसी का कोई मौक़ा नहीं होगा. मामले की यह संगीनी दावत की अहमियत को वाज़ेह करती है.

103 बेशक इसमें निशानी है. 104 और उनमें अकसर लोग ईमान लाने वाले नहीं. और बेशक तेरा रब ज़बरदस्त है, रहमत वाला है.

105 नूह की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया. 106 जबकि उनके भाई नूह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं हो. 107 मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ. 108 पस तुम लोग अल्लाह से

डरो. और मेरी बात मानो. 109 और मैं इसपर तुम से कोई अज्र (बदला) नहीं माँगता. मेरा अज्र तो सिर्फ़ रब्बुल-आलमीन के ज़िम्मे है. 110 पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो. 111 उन्होंने कहा, क्या हम तुम्हें मान लें, जबकि तुम्हारी पैरवी रज़ील (नीच) लोगों ने की है. 112 नूह ने कहा कि मुझे क्या ख़बर जो वे करते रहे हैं. 113 उनका हिसाब तो मेरे रब के ज़िम्मे है, अगर तुम समझो. 114 और मैं मोमिनों को दूर करने वाला नहीं हूँ. 115 मैं तो बस एक खुला हुआ डराने वाला हूँ.

116 उन्होंने कहा कि ऐ नूह! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर संगसार कर दिए जाओगे. 117 नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया. 118 पस तू मेरे और उनके दरमियान वाज़ेह फ़ैसला फ़रमा दे. और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं उन्हें नजात दे. 119 फिर हमने उसे और उसके साथियों को एक भरी हुई कश्ती में बचा लिया. 120 फिर उसके बाद हमने बाक़ी लोगों को ग़र्क़ कर दिया. 121 यक़ीनन उसमें निशानी है, और उनमें से अकसर लोग मानने वाले नहीं. 122 और बेशक तेरा रब ही ज़बरदस्त है, रहमत वाला है.

123 आद ने रसूलों को झुठलाया. 124 जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा कि क्या तुम लोग डरते नहीं. 125 मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूँ. 126 पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो. 127 और मैं इसपर तुम से कोई बदला नहीं माँगता. मेरा बदला सिर्फ़ ख़ुदावंदे-आलम के ज़िम्मे है.

128 **क्या तुम हर ऊंची ज़मीन पर लाहासिल (व्यर्थ) एक यादगार इमारत बनाते हो** 129 **और बड़े-बड़े महल तामीर करते हो, गोया तुम्हें उनमें हमेशा रहना है.**

नोटः- हर ज़माने में इंसान हमेशा रहने के मुक़ाम को भुला रहा और हमेशा रहने के मुक़ाम की तामीर से ग़फ़लत में रहा. मौजूदा ज़िंदगी इंसान को आख़िरत की तामीर के लिए दी गई है, लेकिन इंसान इसी दुनिया को सबकुछ जानकर ज़िंदगी का नक़्शा बनाता रहा. इसी ग़फ़लत को तोड़ने के लिए पहले पैग़ंबर आते थे. इसी ग़फ़लत को तोड़ने का नाम दावत का काम है.

130 और जब किसी पर हाथ डालते हो तो जाबेराना तरीक़े से (यानी दमनकारी बनकर) डालते हो. 131 पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो. 132 और उस अल्लाह से डरो जिसने

उन चीज़ों से तुम्हें मदद पहुँचाई जिन्हें तुम जानते हो. 133 उसने तुम्हारी मदद की चौपायों और औलाद से 134 और बाग़ों और चशमों (स्रोतों) से. 135 मैं तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ.

136 उन्होंने कहा, हमारे लिए बराबर है, चाहे तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न बनो. 137 यह तो बस अगले लोगों की एक आदत है. 138 और हम पर हरगिज़ अज़ाब आने वाला नहीं है. 139 पस उन्होंने उसे झुठला दिया, फिर हमने उन्हें हलाक कर दिया. बेशक उसके अंदर निशानी है. और उनमें से अकसर लोग मानने वाले नहीं हैं. 140 और बेशक तुम्हारा रब ही ज़बरदस्त है, रहमत वाला है.

141 समूद ने रसूलों को झुठलाया. 142 जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं. 143 मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूँ. 144 पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो. 145 और मैं तुम से इसपर कोई बदला नहीं माँगता. मेरा बदला सिर्फ़ ख़ुदावंदे-आलम के ज़िम्मे है. 146 क्या तुम्हें उन चीज़ों में बेफ़िक्री से रहने दिया जाएगा जो यहाँ हैं, 147 बाग़ों और चशमों में. 148 और खेतों और रस भरे गुच्छों वाले खजूरों में. 149 और तुम पहाड़ खोदकर फ़ख्र करते हुए मकान बनाते हो. 150 पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो 151 और हद से गुज़र जाने वालों की बात न मानो 152 जो ज़मीन में ख़राबी करते हैं. और इसलाह नहीं करते.

153 उन्होंने कहा, तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है. 154 तुम सिर्फ़ हमारे जैसे एक आदमी हो, पस तुम कोई निशानी लाओ अगर तुम सच्चे हो, 155 सालेह ने कहा, यह एक ऊंटनी है. इसके लिए पानी पीने की एक बारी है और एक मुक़र्रर दिन की बारी तुम्हारे लिए है. 156 और इसे बुराई के साथ मत छेड़ना, वरना एक बड़े दिन का अज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा. 157 फिर उन्होंने उस ऊंटनी को मार डाला, फिर पशेमान (यानी पछतावा करने वाले) होकर रह गए. 158 फिर उन्हें अज़ाब ने पकड़ लिया. बेशक उसमें निशानी है और उनमें से अकसर मानने वाले नहीं. 159 और बेशक तुम्हारा रब ही ज़बरदस्त है, रहमत वाला है.

160 लूत की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया. 161 जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं. 162 मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूँ. 163 पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो. 164 मैं इसपर तुम से कोई बदला नहीं माँगता. मेरा बदला तो ख़ुदावंदे-आलम के ज़िम्मे है. 165 क्या तुम दुनिया वालों में से मर्दों के पास जाते हो. 166 और तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए जो बीवियां पैदा की हैं, उन्हें छोड़े रहते हो, बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो.

167 उन्होंने कहा कि ऐ लूत! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर तुम (बस्ती से) निकाल दिए

जाओगे. 168 उसने कहा, मैं तुम्हारे अमल से सख़्त बेज़ार हूँ. 169 ऐ मेरे रब! तू मुझे और मेरे घर वालों को उनके अमल से नजात दे. 170 पस हमने उसे और उसके सब घर वालों को बचा लिया. 171 मगर एक बुढ़िया कि वह (पीछे) रहने वालों में रह गई. 172 फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया. 173 और हमने उनपर बरसाई एक बारिश, पस कैसी बुरी बारिश थी जो उनपर बरसी, जिन्हें डराया गया था. 174 बेशक उसमें निशानी है और उनमें से अकसर मानने वाले नहीं. 175 और बेशक तेरा रब ही ज़बरदस्त है, रहमत वाला है.

176 अयका वालों ने रसूलों को झुठलाया. 177 जब शुऐब ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं. 178 मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूँ. 179 पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो. 180 और मैं इसपर तुम से कोई बदला नहीं माँगता. मेरा बदला ख़ुदावंदे–आलम के ज़िम्मे है. 181 तुम लोग पूरा—पूरा नापो और नुक़सान देने वालों में से न बनो. 182 और सीधी तराज़ू से तोलो 183 और लोगों को उनकी चीज़ें घटाकर न दो और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ. 184 और उस ज़ात से डरो जिसने तुम्हें पैदा किया है और पिछली नसलों को भी.

185 उन्होंने कहा कि तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है. 186 और तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो. और हम तो तुम्हें झूठे लोगों में से ख़याल करते हैं. 187 पस हमारे ऊपर आसमान से कोई टुकड़ा गिराओ अगर तुम सच्चे हो. 188 शुऐब ने कहा, मेरा रब ख़ूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो. 189 पस उन्होंने उसे झुठला दिया. फिर उन्हें बादल वाले दिन के अज़ाब ने पकड़ लिया. बेशक वह एक बड़े दिन का अज़ाब था. 190 बेशक उसमें निशानी है और उनमें से अकसर मानने वाले नहीं. 191 और बेशक तुम्हारा रब ज़बरदस्त है, रहमत वाला है.

192 और बेशक यह ख़ुदावंदे–आलम का उतारा हुआ कलाम है. 193 इसे अमानतदार फ़रिश्ता लेकर उतरा है 194 तुम्हारे दिल पर, ताकि तुम डराने वालों में से बनो. 195 साफ़ अरबी ज़बान में 196 और इसका ज़िक्र अगले लोगों की किताबों में है 197 और क्या उनके लिए यह निशानी नहीं है कि इसे बनी इसराईल के उलमा (धर्मपंडित) जानते हैं.

198 और अगर हम इसे किसी अजमी पर (यानी अरबी ज़बान न जानने वाले पर) उतारते 199 फिर वह उन्हें पढ़कर सुनाता तो वे इसपर ईमान लाने वाले न बनते. 200 इसी तरह हमने ईमान न लाने को मुजरिमों के दिलों में डाल रखा है. 201 ये लोग ईमान नहीं लाएँगे, जब तक सख़्त अज़ाब न देख लें. 202 पस वह उनपर अचानक आ जाएगा और उन्हें ख़बर भी नहीं होगी. 203 फिर वे कहेंगे कि क्या हमें कुछ मोहलत मिल सकती है.

204 क्या वे हमारे अज़ाब को जल्द माँग रहे हैं. 205 बताओ कि अगर हम उन्हें चंद साल तक फ़ायदा पहुँचाते रहें 206 फिर उनपर वह चीज़ आ जाए जिससे उन्हें डराया जा रहा है 207 तो

यह फ़ायदामंदी उनके किस काम आएगी. 208 और हमने किसी बस्ती को भी हलाक नहीं किया, मगर उसके लिए डराने वाले थे 209 याद दिलाने के लिए, और हम ज़ालिम नहीं हैं. 210 और इस (क़ुरआन को) शैतान लेकर नहीं उतरे हैं, 211 न यह उनके लिए लायक़ है और न वे ऐसा कर सकते हैं. 212 वे इसे सुनने से रोक दिए गए हैं.

213 पस तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो कि तुम भी सज़ा पाने वालों में से हो जाओ. 214 और अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ. 215 और उन लोगों के लिए अपने बाज़ू झुकाए रखो जो मोमिनीन में दाख़िल होकर तुम्हारी पैरवी करें. 216 पस अगर वे तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो कहो कि जो कुछ तुम कर रहे हो, मैं उससे बरी हूँ. 217 और ज़बरदस्त व मेहरबान ख़ुदा पर भरोसा रखो. 218 जो देखता है तुम्हें, जबकि तुम उठते हो 219 और तुम्हारी चलत–फिरत नमाज़ियों के साथ, 220 बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है.

221 क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं. 222 वे हर झूठे गुनाहगार पर उतरते हैं. 223 वे कान लगाते हैं और उनमें से अकसर झूठे हैं. 224 और शायरों के पीछे बेराह लोग चलते हैं. 225 क्या तुम नहीं देखते कि वे हर वादी में भटकते हैं 226 और वह कहते हैं जो वह करते नहीं. 227 मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए और उन्होंने अल्लाह को बहुत याद किया और उन्होंने बदला लिया बाद इसके कि उनपर ज़ुल्म हुआ. और ज़ुल्म करने वालों को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि उन्हें कैसी जगह लौटकर जाना है.

सूरह–27. अन–नम्ल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ता० सीन०. ये आयतें हैं क़ुरआन की और एक वाज़ेह किताब की. 2 रहनुमाई और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए. 3 जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और वे आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं. 4 जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके कामों को हमने उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया है, पस वे भटक रहे हैं. 5 ये लोग हैं जिनके लिए बुरी सज़ा है और वे आख़िरत में सख़्त ख़सारे (घाटे) में होंगे. 6 और बेशक क़ुरआन तुम्हें एक हकीम व अलीम (बुद्धिमान और ज्ञानवान) की तरफ़ से दिया जा रहा है.

7 जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मैंने एक आग देखी है. मैं वहाँ से कोई ख़बर लाता हूँ या आग का कोई अंगारा लाता हूँ, ताकि तुम तापो. 8 फिर जब वह उसके पास पहुँचा तो आवाज़ दी गई कि मुबारक है वह जो आग में है और जो उसके पास है. और पाक है अल्लाह जो रब है सारे जहान का.

9 ऐ मूसा! मैं हूँ अल्लाह, ज़बरदस्त और हिकमत वाला (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान). 10
और तुम अपना असा (डंडा) डाल दो. फिर जब उसने उसे इस तरह हरकत करते देखा जैसे वह सांप हो तो वह पीछे की तरफ़ मुड़ा और पलट कर न देखा. ऐ मूसा! डरो नहीं, मेरे हुज़ूर पैग़म्बर डरा नहीं करते.
11 मगर जिसने ज़्यादती की. फिर उसने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल दिया. तो मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूँ.
12 और तुम अपना हाथ अपने गरेबान में डालो, वह किसी ऐब के बग़ैर सफ़ेद निकलेगा. यह दोनों मिलकर नौ निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसकी क़ौम के पास जाओ. बेशक वे नाफ़रमान लोग हैं.
13 पस जब उनके पास हमारी वाज़ेह निशानियाँ आईं, उन्होंने कहा, यह खुला हुआ जादू है.
14 और उन्होंने उनका इन्कार किया, हालाँकि उनके दिलों ने उनका यक़ीन कर लिया था, ज़ुल्म और घमंड की वजह से. पस देखो कैसा बुरा अंजाम हुआ मुफ़्सिदों (उपद्रवियों) का.

15 हमने दाऊद और सुलैमान को इल्म अता किया. और उन दोनों ने कहा कि शुक्र है अल्लाह के लिए जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बंदों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) अता फ़रमाई.
16 और दाऊद का वारिस सुलैमान हुआ. और कहा कि ऐ लोगो! हमें परिंदों की बोली सिखाई गई है, और हमें हर क़िस्म की चीज़ दी गई. बेशक यह खुला हुआ फ़ज़्ल है.

17 और सुलैमान के लिए उसका लश्कर जमा किया गया, जिन्न और इंसान और परिंदे, फिर उनकी जमाअतें बनाई जातीं.
18 (एक मर्तबा सुलैमान (अ.) अपने लश्कर के साथ चले,) यहाँ तक कि जब वह चींटियों की वादी पर पहुँचे. एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियों! अपने सुराख़ों में दाख़िल हो जाओ, कहीं सुलैमान और उसका लश्कर तुम्हें कुचल न डालें और उन्हें ख़बर भी न हो.
19 पस सुलैमान उसकी बात पर मुस्कराते हुए हंस पड़ा और कहा, ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझे और मेरे वालिदैन को अता की है और यह कि मैं नेक काम करूँ जो तुझे पसंद हो और अपनी रहमत से तू मुझे अपने नेक बंदों में दाख़िल कर.

20 और सुलैमान ने परिंदों का जायज़ा लिया तो कहा, क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ. क्या वह कहीं ग़ायब हो गया है.
21 मैं उसे सख़्त सज़ा दूँगा. या उसे ज़िबह कर दूँगा, या वह मेरे सामने कोई साफ़ हुज्जत लाए.
22 ज़्यादा देर नहीं गुज़री थी कि उसने आकर कहा, कि मैं एक चीज़ की ख़बर लाया हूँ जिसकी आपको ख़बर न थी. और मैं सबा से तुम्हारे लिए एक यक़ीनी ख़बर लेकर आया हूँ.
23 मैंने पाया कि एक औरत उनपर बादशाही करती है और उसे सब चीज़ मिली है.
24 और उसका एक बड़ा तख़्त है. मैंने उसे और उसकी क़ौम को पाया कि सूरज को सज्दा करते हैं अल्लाह के सिवा. और शैतान ने उनके आमाल उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिए, फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया, पस वे राह नहीं पाते,
25 कि वे अल्लाह को सज्दा न करें जो

आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ को निकालता है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो. 26 अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, मालिक अर्शे-अज़ीम (महान सिंहासन) का. अस्-सज्दा

27 सुलैमान ने कहा, हम देखेंगे कि तूने सच कहा या तू झूठों में से है. 28 मेरा यह ख़त लेकर जा. फिर इसे उन लोगों की तरफ़ डाल दे. फिर उनसे हट जाना. फिर देखना कि वे क्या रद्देअमल (प्रतिक्रिया) ज़ाहिर करते हैं. 29 मलिका सबा ने कहा कि ऐ दरबार वालो! मेरी तरफ़ एक बावक़अत (सम्माननीय) ख़त डाला गया है. 30 वह सुलैमान की तरफ़ से है. और वह है- शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है. 31 कि तुम मेरे मुक़ाबले में सरकशी न करो. और मतीअ (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आ जाओ. 32 मलिका ने कहा कि ऐ दरबारियो! मेरे मामले में मुझे राय दो. मैं किसी मामले का फ़ैसला नहीं करती, जब तक तुम लोग मौजूद न हो. 33 उन्होंने कहा, हम लोग ज़ोरआवर हैं और सख़्त लड़ाई वाले हैं और फ़ैसला आपके इख़्तियार में है. पस आप देख लें कि आप क्या हुक्म देती हैं. 34 मलिका ने कहा कि बादशाह लोग जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे ख़राब कर देते हैं और उसके इज़्ज़त वालों को ज़लील कर देते हैं. और यही, यह लोग करेंगे. 35 और मैं उनकी तरफ़ एक हदिया (उपहार) भेजती हूँ, फिर देखती हूँ कि सफ़ीर (दूत) क्या जवाब लाते हैं.

36 फिर जब सफ़ीर (दूत) सुलैमान के पास पहुँचा, सुलैमान ने (उससे) कहा, क्या तुम लोग माल से मेरी मदद करना चाहते हो. पस अल्लाह ने जो कुछ मुझे दिया है वह उससे बेहतर है, जो उसने तुम्हें दिया है. बल्कि तुम ही अपने तोहफ़े से ख़ुश हो. 37 उनके पास वापस जाओ. हम उनपर ऐसे लश्कर लेकर आएंगे जिनका मुक़ाबला वे न कर सकेंगे और हम उन्हें वहाँ से बेइज़्ज़त करके निकाल देंगे. और वे ख़्वार (ज़लील) होंगे.

38 सुलैमान ने कहा, ऐ दरबार वालो! तुम में से कौन उसका तख़्त (सिंहासन) मेरे पास लाता है, इससे पहले की वे लोग फ़रमांबरदार (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आएं. 39 जिन्नों में से एक क़वी-हैकल (यानी ज़बरदस्त ताक़तवर) जिन्न ने कहा, मैं उसे आपके पास ले आऊँगा, इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें, और मैं इसपर क़ुदरत रखने वाला, अमानतदार हूँ.

40 **जिसके पास किताबे(-इलाही) का एक इल्म था, उसने कहा, मैं आपके पलक झपकने से पहले उसे ला दूँगा. फिर जब सुलैमान ने तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा तो उसने कहा,**

यह मेरे रब का फ़ज़ल है. ताकि वह मुझे जांचे कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री.

और जो शख़्स शुक्र करे तो अपने ही लिए शुक्र करता है. और जो शख़्स नाशुक्री करे तो मेरा रब बेनियाज़ (निस्पृह) है, करम करने वाला है.

नोटः-

- जब लोगों के ग़ैर-माफ़िक़ हालात होते हैं तो कुछ लोग यह बात कहते हुए नज़र आते हैं, 'हमारा इम्तिहान लिया जा रहा है', लेकिन यह बात सही नहीं. मौजूदा दुनिया में अच्छे हालात भी इम्तिहान हैं और बुरे हालात भी इम्तिहान. यहां ना अच्छे हालात इनाम और नवाज़िश के तौर पर हैं और ना बुरे हालात सज़ा के तौर पर. इंसान को चाहिए की दोनों हालात को इम्तिहान समझे. तभी वह इम्तिहान में कामयाब हो सकता है.
- मौजूदा मुसलमानों के घरों पर, दुकानों पर इस आयत का एक हिस्सा यानी '**हाज़ा मिन फ़ज़ली रब्बी**' के बोर्डस नज़र आते हैं, लेकिन आयत के बाक़ी और अहम हिस्से को वे उन बोर्डस पर नहीं लिखते, इसकी वजह यह है कि उन्होंने अमली ज़िंदगी में बाक़ी हिस्से को छोड़ रखा है, हालांकि जिस हिस्से को उन्होंने छोड़ रखा है, आयत का वही हिस्सा यह बताता है कि मौजूदा दुनिया में अल्लाह ने अपनी नेमतें क्यों अता की हैं.

मुसलमानों को जो कुछ मिला है उसके शुक्र का अमली इज़हार यह होता कि वे अपनी ज़रूरत से ज़ायद को ख़ुदा के मिशन में लगा कर ख़ुदा की तरफ़ लौटाते, क्योंकि इससे बेहतर माल का दूसरा इस्तेमाल नहीं.

इंसानियत का क़ाफ़िला ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसके अंजाम से बेख़बर जहन्नम की तरफ़ बढ़ रहा है. और मौजूदा मुसलमानों की अकसरीयत 'हाज़ा मिन फ़ज़ली रब्बी' के बोर्डस् लगा कर ख़ुशफ़हमी में मुब्तिला हैं. यह ख़ुदा के पास कैसे क़ाबिले-माफ़ी हो सकता है? सोचिए!

41 सुलैमान ने कहा कि उसके तख़्त (सिंहासन) का रूप बदल दो, देखें वह समझ पाती है
या उन लोगों में से हो जाती है जिन्हें समझ नहीं. 42 पस जब वह आयी तो कहा गया क्या तुम्हारा
तख़्त ऐसा ही है. उसने कहा, गोया कि यह वही है. और हमें इससे पहले मालूम हो चुका था. और
हम फ़रमांबरदारों में से हैं. 43 और उसे रोक रखा था उन चीज़ों ने जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजती
थी. वह मुन्किर लोगों में से थी. 44 उससे कहा गया कि महल में दाख़िल हो. पस जब उसने उसे

देखा तो उसे ख़याल किया कि वह गहरा पानी है और अपनी दोनों पिंडलियां खोल दीं. सुलैमान ने कहा, यह तो एक महल है जो शीशों से बनाया गया है. उसने कहा कि ऐ मेरे रब! मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया. और मैं सुलैमान के साथ होकर अल्लाह रब्बुल-आलमीन पर ईमान लाई.

45 और हमने समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा, कि अल्लाह की इबादत करो, फिर वे दो फ़रीक़ (पक्ष) बनकर आपस में झगड़ने लगे. 46 उसने कहा, कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी कर रहे हो. तुम अल्लाह से माफ़ी क्यों नहीं चाहते कि तुम पर रहम किया जाए. 47 उन्होंने कहा, हम तो तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को मनहूस समझते हैं. उसने कहा कि तुम्हारी बुरी क़िस्मत अल्लाह के पास है, बल्कि तुम तो आज़माए जा रहे हो.

48 और शहर में नौ शख़्स थे जो ज़मीन में फ़साद करते थे और इसलाह (सुधार) का काम नहीं करते थे. 49 उन्होंने कहा कि तुम लोग अल्लाह की क़सम खाओ कि हम उसे और उसके लोगों को चुपके से हलाक कर देंगे. फिर उसके सरपरस्त (संरक्षक) से कह देंगे कि हम उसके घर वालों की हलाकत के वक़्त मौजूद न थे. और बेशक हम सच्चे हैं. 50 और उन्होंने एक तदबीर (युक्ति) की और हमने भी एक तदबीर की और उन्हें ख़बर भी न हुई. 51 पस देखो कैसा हुआ उनकी तदबीर का अंजाम. हमने उन्हें और उनकी पूरी क़ौम को हलाक कर दिया. 52 पस ये हैं उनके घर, वीरान पड़े हुए, उनके ज़ुल्म के सबब से. बेशक इसमें सबक़ है उन लोगों के लिए जो जानें. 53 और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए और जो डरते थे.

54 और लूत को जब उसने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम बेहयाई करते हो, जानबूझकर. 55 क्या तुम मर्दों के साथ शहवतरानी करते हो औरतों को छोड़कर, बल्कि तुम लोग बेसमझ हो. 56 फिर उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से निकाल दो, ये लोग पाक-साफ़ बनते हैं. 57 फिर हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी, सिवा उसकी बीवी के, जिसका पीछे रह जाना हमने तै कर दिया था. 58 और हमने उनपर बरसाया एक हौलनाक बरसाना. पस कैसा बुरा बरसाव (वर्षण) था उनपर जिन्हें आगाह किया जा चुका था. 59 कहो, हम्द है अल्लाह के लिए और सलाम उसके उन बंदों पर जिन्हें उसने मुन्तख़ब फ़रमाया. क्या अल्लाह बेहतर है या वे, जिन्हें वे शरीक करते हैं?

पारा – 20 60 भला वह कौन है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया? और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा. फिर हमने उससे रौनक़ वाले बाग़ उगाए. तुम्हारे बस में (यानी वश में) न था कि तुम उन दरख़्तों को उगा सकते. क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) है. बल्कि वे राह से इन्हेराफ़ करने वाले (यानी सन्मार्ग से दूर जाने वाले) लोग हैं. 61

भला किसने ज़मीन को ठहरने के लायक़ बनाया और उसके दरमियान नदियाँ जारी कीं. और उसके लिए उसने पहाड़ बनाए. और दो समुंदरों के दरमियान पर्दा डाल दिया. क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है. बल्कि उनके अक्सर लोग नहीं जानते.

62 कौन है जो बेबस की पुकार को सुनता है और उसके दुख को दूर कर देता है. और तुम्हें ज़मीन का जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाता है. क्या अल्लाह के सिवा कोई और माबूद (पूज्य) है. तुम बहुत कम नसीहत पकड़ते हो. 63 कौन है जो तुम्हें ख़ुश्की और समुंदर के अंधेरों में रास्ता दिखाता है? और कौन अपनी रहमत के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? अल्लाह बहुत बरतर है उससे जिन्हें वे शरीक ठहराते हैं. 64 कौन है जो ख़ल्क़ की इब्तिदा (यानी सृष्टि का प्रारंभ) करता है और फिर उसे दोहराता है? और कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? कहो कि अपनी दलील लाओ, अगर तुम सच्चे हो.

65 कहो कि अल्लाह के सिवा, आसमानों और ज़मीन में कोई ग़ैब (अदृश्य) का इल्म नहीं रखता. और वे नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएँगे. 66 **बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म उलझ गया है. बल्कि वे उसकी तरफ़ से शक में हैं. बल्कि वे उससे अंधे हैं.** 67 और इन्कार करने वालों ने कहा, क्या जब हम मिट्टी हो जाएँगे और हमारे बाप-दादा भी, तो क्या हम ज़मीन से निकाले जाएँगे. 68 इसका वादा हमें भी दिया गया और इससे पहले हमारे बाप-दादा को भी. यह महज़ अगलों की कहानियाँ हैं. 69 कहो कि ज़मीन में चलो-फिरो, पस देखो कि मुजरिमों का अंजाम क्या हुआ.

70 और उनपर ग़म न करो और दिल तंग न हो उन तदबीरों पर जो वे कर रहे हैं. 71 और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा, (बताओ) अगर तुम सच्चे हो. 72 कहो कि जिस चीज़ की तुम जल्दी कर रहे हो, शायद उसमें से कुछ तुम्हारे पास आ लगा हो. 73 और बेशक तुम्हारा रब लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है. मगर उनमें से अक्सर शुक्र नहीं करते. 74 और बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उनके सीने छुपाए हुए हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं. 75 और आसमानों और ज़मीन की कोई पोशीदा चीज़ नहीं है जो एक वाज़ेह किताब में दर्ज न हो.

76 बेशक यह क़ुरआन बनी इसराईल पर बहुत सी चीज़ों को वाज़ेह कर रहा है जिनमें वे इख़्तिलाफ़ (मतभेद) रखते हैं. 77 और वह हिदायत व रहमत है ईमान वालों के लिए. 78 बेशक तुम्हारा रब अपने हुक्म के ज़रीए उनके दरमियान फ़ैसला करेगा और वह ज़बरदस्त है, जानने वाला है. 79 पस अल्लाह पर भरोसा करो. बेशक तुम सरीह हक़ (सुस्पष्ट सत्य) पर हो. 80 तुम

मुरदों को नहीं सुना सकते और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जबकि वे पीठ
फेरकर चले जाएँ. 81 और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से बचाकर रास्ता दिखाने वाले हो. तुम
तो सिर्फ़ उन्हें सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, फिर फ़रमांबरदार बन जाते हैं.

82 और जब उनपर बात आ पड़ेगी तो हम उनके लिए ज़मीन से एक दाब्बह निकालेंगे जो
उनसे कलाम करेगा कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं रखते थे. 83 और जिस दिन हम हर
उम्मत में से एक गिरोह उन लोगों का जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, फिर उनकी
जमातबंदी की जाएगी. 84 यहाँ तक कि जब वे आ जाएँगे तो ख़ुदा कहेगा कि तुमने मेरी आयतों
को झुठलाया, हालाँकि तुम्हारा इल्म उनका अहाता न कर सका, या बोलो कि तुम क्या करते थे.
85 और उनपर बात पूरी हो जाएगी, इस सबब से कि उन्होंने ज़ुल्म किया, पस वे कुछ न बोल
सकेंगे. 86 क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई, ताकि लोग उसमें आराम करें और दिन कि
उसमें देखें. बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो यक़ीन करते हैं.

87 और जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो घबरा उठेंगे जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में
हैं, मगर वह जिसे अल्लाह चाहे. और सब चले आएंगे उसके आगे आजिज़ी से. 88 और तुम
पहाड़ों को देखकर गुमान करते हो कि वे जमे हुए हैं, और वे चलेंगे जैसे बादल चलें. यह अल्लाह
की कारीगरी है जिसने हर चीज़ को मोहक्कम (सुदृढ़) किया है. बेशक वह जानता है जो तुम करते
हो. 89 जो शख़्स भलाई लेकर आएगा तो उसके लिए उससे बेहतर है, और वे उस दिन घबराहट
से महफ़ूज़ होंगे. 90 और जो शख़्स बुराई लेकर आया तो ऐसे लोग औंधे मुँह आग में डाल दिए
जाएँगे. तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे.

91 मुझे यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहरे(–मक्का) के रब की इबादत करूँ जिसने इसे
मुहतरम (आदरणीय) ठहराया और हर चीज़ उसी की है. और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं
फ़रमांबरदारी करने वालों में से बनूँ. 92 और यह कि क़ुरआन को सुनाऊँ. फिर जो शख़्स राह पर
आएगा तो वह अपने लिए राह पर आएगा और जो गुमराह हुआ तो कह दो कि मैं तो सिर्फ़ डराने
वालों में से हूँ. 93 और कहो कि सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, वह तुम्हें अपनी निशानियाँ
दिखाएगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो.

सूरह–28. अल–क़सस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ता० सीन० मीम०. 2 ये वाज़ेह किताब की आयतें हैं.

3 **हम मूसा और फ़िरऔन का कुछ हाल तुम्हें ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ.**

नोटः- क़ुरआन में इंसानी तारीख़ के जो मुख़्तलिफ़ वाक़यात बयान हुए हैं, वह ख़ालिसतन ईमान वालों के लिए सबक़ के मक़सद से बयान किए गये हैं. जिसमें बहुत गहरा सबक़ है. मालूमाती बातें बयान करना क़ुरआन का मक़सद नहीं.

4 बेशक फ़िरऔन ने ज़मीन में सरकशी की. और उसने उसके बाशिंदों को गिरोहों में तक़सीम कर दिया. उनमें से एक गिरोह को उसने कमज़ोर कर रखा था. वह उनके लड़कों को ज़बह करता था और उनकी औरतों को ज़िंदा रखता था. बेशक वह फ़साद करने वालों में से था.
5 और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो ज़मीन में कमज़ोर कर दिए गए थे और उन्हें पेशवा (नायक) बनाएं और उन्हें वारिस बना दें 6 और उन्हें ज़मीन में इक़्तेदार (सत्ता) अता करें. और फ़िरऔन व हामान और उनकी फ़ौजों को उनसे वही दिखा दें जिससे वे डरते थे.

7 और हमने मूसा की माँ को इल्हाम (दिव्य संकेत) किया कि उसे दूध पिलाओ. फिर जब तुम्हें उसके बारे में डर हो तो तुम उसे दरिया में डाल दो. और न अंदेशा करो और न ग़मगीन हो. हम उसे तुम्हारे पास लौटा कर लाएँगे. और उसे पैग़म्बरों में से बनाएंगे. 8 फिर उसे फ़िरऔन के घर वालों ने उठा लिया, ताकि वह उनके लिए दुश्मन हो और ग़म का बायस बने. बेशक फ़िरऔन और हामान और उनके लश्कर ख़ताकार थे. 9 और फ़िरऔन की बीवी ने कहा कि यह आँख की ठंडक है, मेरे लिए और तुम्हारे लिए. इसे क़तल न करो. क्या अजब कि यह हमें नफ़ा दे या हम इसे बेटा बना लें. और वे (क्या कर रहे हैं) समझते न थे.

10 और मूसा की माँ का दिल बेचैन हो गया. क़रीब था कि वह उसे ज़ाहिर कर दे अगर हम उसके दिल को न संभालते कि वह यक़ीन करने वालों में से रहे. 11 और उसने उसकी बहन से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा. तो वह उसे अजनबी बनकर देखती रही और उन लोगों को ख़बर नहीं हुई. 12 और हमने पहले ही मूसा से आयाओं को (यानी दूसरे के बच्चे को दूध पिलाने वालियों को) रोक रखा था. तो लड़की ने कहा, क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता दूँ जो इसे तुम्हारे लिए पालें और वे इसकी ख़ैरख़ाही करें. 13 पस हमने उसे उसकी माँ की तरफ़ लौटा दिया, ताकि उसकी आँखें ठंडी हों और वह ग़मगीन न हो, ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, मगर अकसर लोग नहीं जानते. 14 और जब मूसा अपनी जवानी को पहुँचा और पूरा हो गया (यानी जब परिपक्वता को पहुँचा) तो हमने उसे हिकमत और इल्म (विवेक और दिव्य ज्ञान) अता

किया और हम इसी तरह बदला देते हैं नेकी करने वालों को.

15 और शहर में वह ऐसे वक़्त में दाख़िल हुआ, जबकि शहर वाले ग़फ़लत में थे तो उसने वहाँ दो आदमियों को लड़ते हुए पाया. एक उसकी अपनी क़ौम का था और दूसरा दुश्मनों में से था. तो जो उसकी क़ौम में से था उसने उसके ख़िलाफ़ मदद तलब की जो उसके दुश्मनों में से था. पस मूसा ने उसे घूंसा मारा. फिर उसका काम तमाम कर दिया. मूसा ने कहा कि यह शैतान के काम से है (यानी मेरे हाथ से यह शैतानी कृत्य हो गया). बेशक वह दुश्मन है, खुला गुमराह करने वाला. 16 उसने कहा कि ऐ मेरे रब! मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है. पस तू मुझे बख़्श दे तो ख़ुदा ने उसे बख़्श दिया. बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है. 17 उसने कहा कि ऐ मेरे रब! जैसा तूने मेरे ऊपर फ़ज़ल किया तो मैं कभी मुजरिमों का मददगार नहीं बनूँगा.

18 फिर सुबह को वह शहर में उठा डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ. तो देखा कि वही शख़्स जिसने कल मदद मांगी थी, वही आज फिर उसे मदद के लिए पुकार रहा है. मूसा ने उससे कहा, बेशक तुम सरीह गुमराह हो. 19 फिर जब उसने चाहा कि उसे पकड़े जो उन दोनों का दुश्मन था तो उसने कहा कि ऐ मूसा! क्या तुम मुझे क़तल करना चाहते हो जिस तरह तुमने कल एक शख़्स को क़तल किया. तो तुम ज़मीन में सरकश बनकर रहना चाहते हो. तुम इसलाह करने वालों (यानी सुधार करने वालों) में से बनना नहीं चाहते. 20 और एक शख़्स शहर के किनारे से दौड़ता हुआ आया. उसने कहा, ऐ मूसा! दरबार वाले मशविरा कर रहे हैं कि तुम्हें मार डालें. पस तुम निकल जाओ, मैं तुम्हारे ख़ैरख़ाहों में से हूँ. 21 फिर वह वहाँ से निकला डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ. उसने कहा कि ऐ मेरे रब! मुझे ज़ालिम लोगों से नजात दे.

22 और जब उसने मदयन का रुख़ किया तो उसने कहा, उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखा दे. 23 और जब वह मदयन के पानी पर पहुँचा तो वहाँ लोगों की एक जमात को पानी पिलाते हुए पाया. और उनसे अलग एक तरफ़ दो औरतों को देखा कि वे अपनी बकरियों को रोके हुए खड़ी हैं. मूसा ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या माजरा है. उन्होंने कहा कि हम पानी नहीं पिलाते, जब तक चरवाहे अपनी बकरियां न हटा लें. और हमारा बाप बहुत बूढ़ा है 24 तो उसने उनके जानवरों को पानी पिलाया. फिर साये की तरफ़ हट गया. फिर कहा कि ऐ मेरे रब! तू जो चीज़ मेरी तरफ़ उतारे मैं उसका मोहताज हूँ.

25 फिर उन दोनों में से एक आयी शर्म से चलती हुई. उसने कहा कि मेरा बाप आपको बुला रहा है कि आपने हमारी ख़ातिर जो पानी पिलाया उसका आपको बदला दे. फिर जब वह उसके पास आया और उससे सारा क़िस्सा बयान किया तो उसने कहा कि अंदेशा न करो. तुमने ज़ालिमों से नजात पाई. 26 उनमें से एक ने कहा कि ऐ बाप! इसे मुलाज़िम रख लीजिए. बेहतरीन

आदमी जिसे आप मुलाज़िम रखें वही है जो मज़बूत और अमानतदार हो. 27 (लड़कीयों के वालिद ने) कहा कि मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो लड़कियों में से एक का निकाह तुम्हारे साथ कर दूँ. इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी मुलाज़िमत करो. फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो वह तुम्हारी तरफ़ से है. और मैं तुम पर मशक़्क़त डालना नहीं चाहता. इंशाअल्लाह तुम मुझे भला आदमी पाओगे. 28 मूसा ने कहा कि यह बात मेरे और आपके दरमियान तै है. इन दोनों मुद्दतों (मियाद) में से जो भी मैं पूरी करूँ तो मुझ पर कोई जबर न होगा. और अल्लाह हमारे क़ौल व क़रार पर गवाह है.

29 फिर मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और वह अपने घर वालों के साथ रवाना हुआ तो उसने तूर की तरफ़ से एक आग देखी. उसने अपने घर वालों से कहा कि तुम ठहरो, मैंने एक आग देखी है. शायद मैं वहाँ से कोई ख़बर ले आऊं या आग का अंगारा, ताकि तुम तापो. 30 फिर जब वह वहाँ पहुँचा तो वादी के दाहिने किनारे से बरकत वाले ख़ित्ते में दरख़्त से पुकारा गया कि ऐ मूसा! मैं अल्लाह हूँ, सारे जहान का मालिक. 31 और यह कि तुम अपना असा (डंडा) डाल दो. तो जब उसने उसे हरकत करते हुए देखा कि गोया सांप है, तो वह पीठ फेरकर भागा और उसने मुड़कर न देखा. ऐ मूसा! आगे आओ और न डरो. तुम बिल्कुल महफ़ूज़ हो. 32 अपना हाथ गरेबान में डालो, वह चमकता हुआ निकलेगा बग़ैर किसी मरज़ के, और ख़ौफ़ (दूर करने) के वास्ते अपना बाज़ू अपनी तरफ़ मिला लो. पस यह तुम्हारे रब की तरफ़ से दो दलीलें (प्रमाण) हैं फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास जाने के लिए. बेशक वे नाफ़रमान लोग हैं.

33 मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब मैंने उनमें से एक शख़्स को क़तल किया है तो मैं डरता हूँ कि वे मुझे मार डालेंगे. 34 और मेरा भाई हारून वह मुझ से ज़्यादा फ़सीह (वाक—कुशल) है ज़बान में, पस तू उसे मेरे साथ मददगार की हैसियत से भेज कि वह मेरी ताईद करे. मैं डरता हूँ कि वे लोग मुझे झुठला देंगे. 35 फ़रमाया कि हम तुम्हारे भाई के ज़रीए तुम्हारे बाज़ू को मज़बूत कर देंगे और हम तुम दोनों को ग़लबा देंगे तो वे तुम लोगों तक न पहुँच सकेंगे. हमारी निशानियों के साथ, तुम दोनों और तुम्हारी पैरवी करने वाले ही ग़ालिब रहेंगे.

36 फिर जब मूसा उन लोगों के पास हमारी वाज़ेह निशानियों के साथ पहुँचा, उन्होंने कहा कि यह महज़ गढ़ा हुआ जादू है. और यह बात हमने अपने अगले बाप-दादा में नहीं सुनी. 37 और मूसा ने कहा, मेरा रब ख़ूब जानता है उसे जो उसकी तरफ़ से हिदायत लेकर आया है और जिसे आख़िरत का घर मिलेगा. बेशक ज़ालिम फ़लाह नहीं पाएंगे. 38 और फ़िरऔन ने कहा कि ऐ दरबार वालो! मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा किसी माबूद को नहीं जानता, तो ऐ हामान! मेरे लिए मिट्टी को आग दे, फिर मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना, ताकि मैं मूसा के रब को झांक कर देखूं, और मैं तो इसे एक झूठा आदमी समझता हूँ.

39 और उसने और उसकी फ़ौजों ने ज़मीन में नाहक़ घमंड किया और उन्होंने समझा कि उन्हें हमारी तरफ़ लौट कर आना नहीं है. 40 तो हमने उसे और उसकी फ़ौजों को पकड़ा. फिर उन्हें समुंदर में फेंक दिया. तो देखो कि ज़ालिमों का अंजाम क्या हुआ. 41 और हमने उन्हें सरदार बनाया कि (वे) आग की तरफ़ बुलाते हैं. और क़यामत के दिन उन्हें मदद नहीं मिलेगी. 42 और हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी. और क़यामत के दिन वे बदहाल लोगों में से होंगे, 43 और हमने पहले की उम्मतों को हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी. लोगों के लिए बसीरत (सूझबूझ) का सामान, और हिदायत व रहमत, ताकि वे नसीहत पकड़ें.

44 और तुम पहाड़ के मग़रिबी (पश्चिमी) जानिब मौजूद नहीं थे, जबकि हमने मूसा को अहकाम दिए और न तुम गवाहों में शामिल थे. 45 लेकिन हमने बहुत सी नसलें पैदा कीं फिर उनपर बहुत ज़माना गुज़र गया. और तुम मदयन वालों में भी न रहते थे कि उन्हें हमारी आयतें सुनाते. मगर हम हैं पैग़म्बर भेजने वाले. 46 और तुम तूर के किनारे नहीं थे, जब हमने मूसा को पुकारा, लेकिन यह तुम्हारे रब का इनाम है, ताकि तुम एक ऐसी क़ौम को डरा दो जिनके पास तुम से पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वे नसीहत पकड़ें.

47 **और अगर ऐसा न होता कि उनपर उनके आमाल के सबब से कोई आफ़त आयी तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और हम ईमान वालों में से होते.**

नोटः– अब चूंकि रसूल आने वाले नहीं हैं और अब ख़ुदा की महफ़ूज़ किताब क़ुरआन रसूल का क़ायम मुक़ाम है. अगर क़ुरआन लोगों तक नहीं पहुँचाया जाए तो ख़ुदा की अदालत में उन लोगों को यह कहने का मौक़ा मिलेगा कि क़ुरआन के मानने वालों ने हम तक क़ुरआन क्यों नहीं पहुँचाया, अगर वे हम तक पहुँचाते तो हम उसकी आयातों की पैरवी करते और हम ईमान वालों में से होते.

48 फिर जब उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ (सत्य) आया तो उन्होंने कहा कि क्यों न इसे वैसी चीज़ मिली जैसी मूसा को मिली थी. क्या लोगों ने उसका इन्कार नहीं किया जो इससे पहले मूसा को दिया गया था, उन्होंने कहा कि दोनों जादू हैं (यानी जो मूसा (अ.) को और मुहम्मद(स.)

को दिया गया जादू हैं.) एक दूसरे के मददगार, और उन्होंने कहा कि हम दोनों का इन्कार करते हैं.

49 कहो कि तुम अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो हिदायत करने में इन दोनों से बेहतर हो, मैं उसकी पैरवी करुंगा अगर तुम सच्चे हो. 50 पस अगर ये लोग तुम्हारा कहा न कर सकें तो जान लो कि वे सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिश की पैरवी कर रहे हैं. और उससे ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह की हिदायत को छोड़कर अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे. बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता. 51 और हमने उन लोगों के लिए मुसलसल अपना कलाम भेजा, ताकि वे नसीहत पकड़ें.

52 जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब दी है, वे इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं. 53 और जब वह उन्हें सुनाया जाता है तो वे कहते हैं कि हम इसपर ईमान लाए. बेशक यह हक़ (सत्य) है हमारे रब की तरफ़ से, हम तो पहले ही से इसे मानने वाले हैं. 54 ये लोग हैं कि उन्हें उनका अज्र (प्रतिफल) दोहरा दिया जाएगा, इसपर कि उन्होंने सब्र किया. और वे बुराई को भलाई से दूर करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं 55 और जब वे लग़्व (घटिया निरर्थक) बात सुनते हैं तो उससे एराज़ (उपेक्षा) करते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल. तुम्हें सलाम, हम बेसमझ लोगों से उलझना नहीं चाहते. 56 तुम जिसे चाहो हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है. और वह ख़ूब जानता है हिदायत क़बूल करने वालों को.

57 और वे कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ होकर इस हिदायत पर चलने लगें तो हम अपनी ज़मीन से उचक लिए जाएँगे. क्या हमने उन्हें अमन व अमान वाले हरम में जगह नहीं दी. जहाँ हर क़िस्म के फल खींचे चले आते हैं, हमारी तरफ़ से रिज़्क़ के तौर पर, लेकिन उनमें से अकसर लोग नहीं जानते.

58 और हमने कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं जो अपने सामाने मईशत (जीविका के साधन) पर नाज़ां थीं (फ़ख्र करती थीं). पस ये हैं उनकी बस्तियां जो उनके बाद आबाद नहीं हुईं, मगर बहुत कम, और हम ही उनके वारिस हुए 59 और तेरा रब बस्तियों को हलाक करने वाला न था, जब तक उनकी बड़ी बस्ती में किसी पैग़म्बर को न भेज ले जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाए और हम हरगिज़ बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं, मगर यह कि वहाँ के लोग ज़ालिम हों.

60 **और जो चीज़ भी तुम्हें दी गई है तो वह बस दुनिया की ज़िंदगी का सामान और उसकी रौनक़ है. और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है, फिर क्या तुम समझते नहीं.** 61 भला वह शख़्स जिससे हमने

अच्छा वादा किया है, फिर वह उसे पाने वाला है, क्या उस शख़्स जैसा हो सकता है जिसे हमने सिर्फ़ दुनियावी ज़िंदगी का फ़ायदा दिया है, फिर क़यामत के दिन वह हाज़िर किए जाने वालों में से है.

62 और जिस दिन ख़ुदा उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहाँ हैं मेरे वे शरीक जिनका तुम दावा करते थे. 63 जिनपर बात साबित हो चुकी होगी वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! ये वे लोग हैं जिन्हें हमने बहकाया. हमने उन्हें उसी तरह बहकाया जिस तरह हम ख़ुद बहके थे. हम इनसे बरा-त (यानी ख़ुद को अलग) करते हैं. ये लोग हमारी इबादत नहीं करते थे.

64 और कहा जाएगा कि अपने शरीकों को बुलाओ तो वे उन्हें पुकारेंगे, तो वे उन्हें जवाब नहीं देंगे. और वे अज़ाब को देखेंगे. काश वे हिदायत इख़्तियार करने वाले होते.

65 और जिस दिन ख़ुदा उन्हें पुकारेगा और पूछेगा कि तुमने पैग़ाम पहुँचाने वालों को क्या जवाब दिया था?

नोटः- ख़ुदा के इस सवाल में यह सवाल भी शामिल है कि क्या तुम्हें मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया गया था, क्योंकि पैग़ाम को response देने का ताल्लुक़ पैग़ाम पहुँचने के बाद ही आता है. जिस तरह मदू से सवाल होगा तो क्या उनसे सवाल नहीं होगा जिन पर पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी है. उनसे भी ज़रूर सवाल होगा. यह सवाल बताता है कि पैग़ाम पहुँचाना कितना नागुज़ीर है. इससे यह बात भी वाज़ेह होती है कि दाई का काम पैग़ाम पहुँचाना है और ख़ुदा का काम हिसाब लेना.

66 फिर उस दिन उनकी तमाम बातें गुम हो जाएँगी. तो वे आपस में भी न पूछ सकेंगे. 67 अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किया तो उम्मीद है कि वह फ़लाह (सफलता) पाने वालों में से होगा.

68 और तेरा रब पैदा करता है जो चाहे और वह पसंद करता है जिसे चाहे. उनके हाथ में नहीं है पसंद करना. अल्लाह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक ठहराते हैं 69 और तेरा रब जानता है जो कुछ उनके सीने छुपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं. 70 और वही अल्लाह है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. उसी के लिए हम्द (प्रशंसा) है दुनिया में और आख़िरत में. और उसी के लिए फ़ैसला है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे.

71 कहो कि बताओ, अगर अल्लाह क़यामत के दिन तक तुम पर हमेशा के लिए रात कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (पूज्य) है जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आए. तो क्या तुम लोग सुनते नहीं. 72 कहो कि बताओ अगर अल्लाह क़यामत तक तुम पर हमेशा के लिए दिन कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए जिसमें तुम सुकून हासिल करते हो. क्या तुम लोग देखते नहीं. 73 और उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया, ताकि तुम उसमें सुकून हासिल करो और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल (जीविका) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो.

74 और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहाँ हैं मेरे शरीक जिनका तुम गुमान रखते थे. 75 और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएँगे. फिर लोगों से कहेंगे कि अपनी दलील लाओ, तब वे जान लेंगे कि हक़ बात अल्लाह की है और वे बातें उनसे गुम हो जाएँगी जो वे गढ़ते थे.

76 क़ारून मूसा की क़ौम में से था. फिर वह उनके ख़िलाफ़ सरकश हो गया. और हमने उसे इतने ख़ज़ाने दिए थे कि उनकी कुंजियां उठाने से कई ताक़तवर मर्द थक जाते थे. जब उसकी क़ौम ने उससे कहा कि इतराओ मत, अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता.

77 **और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उससे आख़िरत के तालिब बनो. और दुनिया में से अपने हिस्से को न भूलो. और लोगों के साथ भलाई करो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है. और ज़मीन में फ़साद के तालिब न बनो, अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता.**

नोटः– मौजूदा दुनिया में अल्लाह ने इंसान को जो कुछ दिया है उससे इंसान को आख़िरत का तालिब बनना है, जैसे माल, औलाद, सेहत, हालात, वक़्त... जैसा की हदीस में आया है कि **मुफ़लिसी से पहले मालदारी को ग़नीमत जानो, मसरूफ़ीयत से पहले फ़ुरसत को ग़नीमत जानो, बीमारी से पहले सेहत को ग़नीमत जानो, बुढ़ापे से पहले जवानी को ग़नीमत जानो और मौत से पहले ज़िंदगी को ग़नीमत जानो.**

इंसान को इन सारे चीज़ों को ग़नीमत जानते हुए आख़िरत का तालिब बनना है.

78 उसने कहा, यह माल मुझे एक इल्म की बिना पर मिला है जो मेरे पास है. क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह उससे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर चुका है जो उससे ज़्यादा

क़ुव्वत और जमीयत (जन-समूह) रखती थीं. और मुजरिमों से उनके गुनाहों (के बारे में) सफाई (स्पष्टीकरण) लेने की ज़रूरत नहीं होती.

79 **पस वह अपनी क़ौम के सामने अपनी पूरी आराइश (भव्यता) के साथ निकला. जो लोग हयाते-दुनिया के तालिब थे उन्होंने कहा, काश हमें भी वही मिलता जो क़ारून को दिया गया है, बेशक वह बड़ी क़िस्मत वाला है,** 80 **और जिन लोगों को इल्म मिला था (यानी जिन लोगों को हक़ की गहरी पहचान हुई थी) उन्होंने कहा, तुम्हारा बुरा हो, अल्लाह का सवाब बेहतर है उस शख़्स के लिए जो ईमान लाए और नेक अमल करे. और यह उन्हीं को मिलता है जो सब्र करने वाले हैं.**

नोटः- जिन लोगों को हक़ की गहरी पहचान हो जाए, वह हक़ के दाई बने बग़ैर रह नहीं सकते. इसी तरह जो लोग हयाते-दुनिया के तालिब हैं, वे आख़िरत के दाई नहीं बन सकते. आख़िरत का दाई वही बन सकता है जो ख़ुद आख़िरत का तालिब हो.

81 फिर हमने उसे और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया. फिर उसके लिए कोई जमात न उठी जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करती. और न वह ख़ुद ही अपने को बचा सका. 82
और जो लोग कल उसके जैसा होने की तमन्ना कर रहे थे, वे कहने लगे कि अफ़सोस, बेशक अल्लाह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है. अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो हमें भी ज़मीन में धंसा देता. अफ़सोस, बेशक इन्कार करने वाले फ़लाह (सफलता) नहीं पाएंगे.

83 यह आख़िरत का घर हम उन लोगों को देंगे जो ज़मीन में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फ़साद करना. और आख़िरी अंजाम डरने वालों के लिए है. 84 जो शख़्स नेकी लेकर आएगा उसके लिए उससे बेहतर है और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा तो जो लोग बुराई करते हैं उन्हें वही मिलेगा जो उन्होंने किया.

85 **बेशक जिसने तुम पर क़ुरआन को फ़र्ज़ किया है वह तुम्हें एक अच्छे अंजाम तक पहुँचा कर रहेगा. कहो कि मेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन हिदायत लेकर आया है और कौन खुली हुई गुमराही में है.**

नोटः- अच्छे अंजाम तक पहुँचने की guide book क़ुरआन है. ख़ुदा की नज़र में क़ुरआन का मानने वाला वह है जिसकी अपनी ज़िंदगी क़ुरआन के मुताबिक़ हो और वह दूसरों के लिए क़ुरआन का दाई बन जाए.

86 और तुम्हें यह उम्मीद न थी कि तुम पर किताब उतारी जाएगी. मगर तुम्हारे रब की मेहरबानी से. पस तुम मुन्किरों के मददगार न बनो. 87 और वे तुम्हें अल्लाह की आयतों से रोक न दें, जबकि वे तुम्हारी तरफ़ उतारी जा चुकी हैं. **और तुम लोगों को अपने रब की तरफ़ बुलाओ** और मुशरिकों में से न बनो. 88 और अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो. उसके सिवा कोई माबूद नहीं. हर चीज़ हलाक (विनष्ट) होने वाली है सिवा उसकी ज़ात के. फ़ैसला उसी के लिए है (हर प्रकार का निर्णयाधिकार उसी को है) **और तुम लोग उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे.**

सूरह-29. अल-अन्कबूत

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़० लाम० मीम०.

2 **क्या लोग यह समझते हैं कि वे महज़ यह कहने पर छोड़ दिए जाएँगे कि हम ईमान लाए और उन्हें जांचा नहीं जाएगा.** 3 और हमने उन लोगों को जांचा है जो इनसे पहले थे, पस अल्लाह उन लोगों को (जांच के ज़रीए) मालूम करेगा जो सच्चे हैं और वह झूठों को भी ज़रूर मालूम करेगा.

नोटः– ईमान की शुरूआत क़ौल से होती है, मगर उस ईमान की हक़ीक़त अमली इम्तिहान के बाद सामने आती है. जिन लोगों का ईमान अमल के इम्तिहान में खरा साबित होगा, वही लोग कामयाब होंगे, महज़ क़ौल को दोहरा लेने से किसी को कामयाबी मिलने वाली नहीं.

4 जो लोग बुराइयाँ कर रहे हैं, क्या वे समझते हैं कि वे हमसे बच जाएँगे. बहुत बुरा फ़ैसला है जो वे कर रहे हैं. 5 जो शख़्स अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता है तो अल्लाह का वादा ज़रूर आने वाला है. और वह सुनने वाला है, जानने वाला है. 6 और जो शख़्स मेहनत करे तो वह अपने ही लिए मेहनत करता है. बेशक अल्लाह जहान वालों से बेनियाज़ (निस्पृह) है. 7 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया तो हम उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर देंगे और उन्हें उनके (अच्छे) आमाल का बेहतरीन बदला देंगे जो वे करते थे.

8 और हमने इंसान को ताकीद की, कि वह अपने माँ-बाप के साथ नेक सलूक करे. और अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू ऐसी चीज़ को मेरा शरीक

ठहराए जिसका तुझे कोई इल्म नहीं तो उनकी इताअत (आज्ञापालन) न कर.

तुम सबको मेरे पास लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते थे.

नोटः– क़ुरआन में जगह–जगह ख़ुदा की तरफ़ लौटने का ज़िक्र है, इससे इस बात का पता चलता है कि ख़ुदा ने इंसान को पैदा करके यूं ही नहीं छोड़ दिया कि इंसान जैसे चाहे ज़िंदगी गुज़ारे, उससे कोई हिसाब लेने वाला नहीं, बल्कि इंसान को ख़ुदा की तरफ़ लौटना है और अपनी ज़िंदगी का हिसाब देना है. इसी बात से इंसानों को आगाह करने का नाम दावत है.

9 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए तो हम उन्हें नेक बंदों में दाख़िल करेंगे.

10 और लोगों में कोई ऐसा है जो कहता है कि हम अल्लाह पर ईमान लाए. फिर जब अल्लाह की राह में उसे सताया जाता है तो वह लोगों के सताने को अल्लाह के अज़ाब की तरह समझ लेता है. और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई मदद आ जाए तो वे कहेंगे कि हम तो तुम्हारे साथ थे. क्या अल्लाह उससे अच्छी तरह बाख़बर नहीं जो लोगों के दिलों में है.
11 और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और वह ज़रूर मालूम करेगा मुनाफ़िक़ीन (पाखंडियों) को (यानी वह सब को छाँटकर रहेगा).

12 और मुन्किर लोग ईमान वालों से कहते हैं कि तुम हमारे रास्ते पर चलो और हम तुम्हारे गुनाहों को उठा लेंगे. और वे उनके गुनाहों में से कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं. बेशक वे झूठे हैं.
13
और वे अपने बोझ उठाएंगे, और अपने बोझ के साथ कुछ और बोझ भी. और ये लोग जो झूठी बातें बनाते हैं, क़यामत के दिन उसके बारे में उनसे पूछ होगी.

14 और हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो वह उनके अंदर पचास साल कम एक हज़ार साल रहा. फिर उन्हें तूफ़ान ने पकड़ लिया और वे ज़ालिम थे.
15 फिर हमने नूह को और कश्ती वालों को बचा लिया. और हमने इस वाक़ये (घटना) को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया.

16 और इब्राहीम को (याद करो), जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो. यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो.
17 तुम लोग अल्लाह को छोड़कर महज़ बुतों को पूजते हो और तुम झूठी बातें गढ़ते हो. अल्लाह के सिवा तुम जिनकी इबादत करते

हो वे तुम्हें रिज़्क़ देने का इख़्तियार नहीं रखते. पस तुम अल्लाह के पास रिज़्क़ तलाश करो और उसकी इबादत करो और उसका शुक्र अदा करो. उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे.

18 **और अगर तुम झुठलाओगे तो तुम से पहले बहुत सी क़ौमें झुठला चुकी हैं. और रसूल पर साफ़–साफ़ पहुँचा देने के सिवा कोई ज़िम्मेदारी नहीं.**

नोटः– तारीख़ में बहुतसी क़ौमें झुठलाती रहीं इसके बावजूद ख़ुदा पैग़ाम पहुंचाने वालों को भेजता रहा. ख़ुदा के इस मंसूबे से दो बातों का पता चलता है. पहली बात क़ौमों का उमूमी response चाहे जो भी हो उन तक पैग़ाम पहुँच जाना बहुत ज़रूरी है. दूसरी बात पैग़ामे-रिसानी के ज़रीए से जो भी positive output (सकारात्मक नतीजा) निकले वह ख़ुदा की नज़र में बहुत क़ीमती है, अगरचे वह बहुत थोड़ा ही क्यों न हो.

19 क्या लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह किस तरह ख़ल्क़ (सृष्टि) को शुरू करता है, फिर
वह उसे दोहराएगा. बेशक यह अल्लाह पर आसान है. 20 कहो कि ज़मीन में चलो-फिरो, फिर
देखो कि अल्लाह ने किस तरह ख़ल्क़ को शुरू किया, फिर वह उसे दुबारा उठाएगा. बेशक अल्लाह
हर चीज़ पर क़ादिर है. 21 वह जिसे चाहेगा अज़ाब देगा और जिस पर चाहेगा रहम करेगा. और
उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे. 22 और तुम न ज़मीन में आजिज़ करने वाले हो और न
आसमान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार. 23
और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का और उससे मिलने का इन्कार किया तो वही मेरी रहमत
से महरूम हुए और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है.

24 फिर उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा कि उसे क़तल कर दो
या उसे जला दो. तो अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया. बेशक इसके अंदर निशानियाँ हैं उन लोगों के
लिए जो ईमान लाए. 25 और उसने कहा कि तुमने अल्लाह के सिवा जो बुत बनाए हैं, बस वह तुम्हारे
आपसी दुनिया के ताल्लुक़ात की वजह से है, फिर क़यामत के दिन तुम में से हर एक दूसरे का
इन्कार करेगा और एक दूसरे पर लानत करेगा. और आग तुम्हारा ठिकाना होगी और कोई तुम्हारा
मददगार न होगा. 26 फिर लूत ने उसे माना और कहा कि मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत करता हूँ.
बेशक वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है). 27 और हमने अता
किए उसे इस्हाक़ और याक़ूब और उसकी नस्ल में नबुवत और किताब रख दी. और हमने दुनिया
में उसे अज्र (प्रतिफल) अता किया और आख़िरत में यक़ीनन वह नेकोकारों में से होगा.

28 और लूत को, जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो कि तुम से पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया. 29 क्या तुम मर्दों के पास जाते हो और राहज़नी (डकैती) करते हो. और अपनी मजलिस में बुरा काम करते हो. पस उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उसने कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे ऊपर अल्लाह का अज़ाब लाओ. 30 लूत ने कहा कि ऐ मेरे रब! मुफ़्सिद (फ़सादी) लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद फ़रमा.

31 और जब हमारे भेजे हुए इब्राहीम के पास बशारत लेकर पहुँचे, उन्होंने कहा कि हम उस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं. बेशक उसके लोग सख़्त ज़ालिम हैं. 32 इब्राहीम ने कहा कि उसमें तो लूत भी है. उन्होंने कहा कि हम ख़ूब जानते हैं कि वहाँ कौन हैं. हम उसे और उसके घर वालों को बचा लेंगे, मगर उसकी बीवी, कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी. 33 फिर जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) लूत के पास आए तो वह उनसे परेशान हुआ और दिल तंग हुआ. और उन्होंने कहा कि तुम न डरो और न ग़म करो. हम तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे, मगर तुम्हारी बीवी, कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी. 34 हम इस बस्ती के बाशिंदों पर एक आसमानी अज़ाब उनकी बदकारियों की सज़ा में नाज़िल करने वाले हैं. 35 और हमने उस बस्ती के कुछ निशान रहने दिए हैं उन लोगों की इबरत (सीख) के लिए जो अक़्ल रखते हैं.

36 और मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को. पस उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो. और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखो और ज़मीन में फ़साद फैलाने वाले न बनो. 37 तो उन्होंने उसे झुठला दिया. पस ज़लज़ले ने उन्हें आ पकड़ा. फिर वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए.

38 और आद और समूद को (भी हमने हलाक किया), और तुम पर उनका हाल खुल चुका है उनके (वीरान) घरों से. और उनके आमाल को शैतान ने उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया. फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया और वे होशियार लोग थे.

39 और क़ारून को और फ़िरऔन को और हामान को (हमने हलाक कर दिया). और मूसा उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आया तो उन्होंने ज़मीन में घमंड किया और वे हमसे भाग जाने वाले न थे. 40 पस हमने हर एक को उसके गुनाह में पकड़ा. फिर उनमें से कुछ पर हमने पथराव करने वाली हवा भेजी. और उनमें से कुछ को कड़क ने आ पकड़ा. और उनमें से कुछ को हमने ज़मीन में धंसा दिया. और उनमें से कुछ को हमने ग़र्क़ कर दिया. और अल्लाह उनपर ज़ुल्म करने वाला न था. मगर वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे.

41 जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे कारसाज़ बनाए हैं उनकी मिसाल मकड़ी की सी है. उसने एक घर बनाया. और बेशक तमाम घरों से ज़्यादा कमज़ोर मकड़ी का घर है. काश कि लोग

जानते. 42 बेशक अल्लाह जानता है उन चीज़ों को जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं. और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है). 43 और ये मिसालें हैं जिन्हें हम लोगों के लिए बयान करते रहे हैं और इन्हें वही लोग समझते हैं जो इल्म वाले हैं. 44 अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को बरहक़ (अर्थपूर्ण उद्देश्य के साथ) पैदा किया है. बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए.

पारा – 21 45 तुम उस किताब को पढ़ो जो तुम पर 'वही' की गई है (जो तुम्हारी तरफ़ उतारी गई है). और नमाज़ क़ायम करो. बेशक नमाज़ बेहयाई से और बुरे कामों से रोकती है. और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो.

46 और तुम अहले-किताब से बहस न करो, मगर उस तरीक़े पर जो बेहतर है, मगर जो उनमें बेइंसाफ़ हैं. और कहो कि हम ईमान लाए उस चीज़ पर जो हमारी तरफ़ भेजी गई है. और उसपर जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गई है. हमारा माबूद (पूज्य) और तुम्हारा माबूद एक है और हम उसी की फ़रमांबरदारी करने वाले हैं.

47 और इसी तरह हमने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी. तो जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे उसपर ईमान लाते हैं (यानी अहले-किताब में से). और उन लोगों में से भी कुछ ईमान लाते हैं (यानी अहले-मक्का में से). और हमारी आयतों का इन्कार सिर्फ़ मुन्किर ही करते हैं. 48 और तुम इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिखते थे. ऐसी हालत में बातिलपरस्त (असत्यवादी) लोग शुबहा में पड़ते. 49 बल्कि ये खुली हुई आयतें हैं, उन लोगों के सीनों में, जिन्हें इल्म अता हुआ है. और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करते, मगर वे जो ज़ालिम हैं.

50 और वे कहते हैं कि उसपर उसके रब की तरफ़ से निशानियाँ क्यों नहीं उतारी गईं. कहो कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं. और मैं सिर्फ़ खुला हुआ डराने वाला हूँ. 51 क्या उनके लिए यह काफ़ी नहीं है कि हमने तुम पर किताब उतारी जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है. बेशक इसमें रहमत और याददिहानी है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं. 52 कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाही के लिए काफ़ी है. वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है. और जो लोग बातिल (असत्य) पर ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह का इन्कार किया, वही ख़सारे (घाटे) में रहने वाले हैं.

53 और ये लोग तुम से अज़ाब जल्द माँग रहे हैं. और अगर एक वक़्त मुक़र्रर न होता तो उनपर अज़ाब आ जाता. और यक़ीनन वह उनपर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर भी नहीं होगी. 54 वे तुम से अज़ाब जल्द माँग रहे हैं. और जहन्नम मुन्किरों को घेरे हुए है. 55 जिस दिन अज़ाब उन्हें ऊपर से ढाँक लेगा और पांव के नीचे से भी, और उन्हें कहा जाएगा कि चखो उसे जो तुम करते थे.

56 ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो! बेशक मेरी ज़मीन वसीअ (विस्तृत) है तो तुम मेरी ही इबादत करो.

57 **हर जान को मौत का मज़ा चखना है. फिर तुम हमारी तरफ़ लौटाए जाओगे.**

नोटः– मौत ज़िंदगी की सबसे बड़ी, सबसे कड़वी और नाक़ाबिले-इन्कार सच्चाई है. मौत ज़िंदगी का ख़ातमा नहीं, बल्कि अब्दि ज़िंदगी का आग़ाज़ है. मौत वह मरहला है, जब इंसान को अपनी ज़िंदगी का हिसाब देने के लिए अपने रब की तरफ़ लौटना है. अगर मौत का मज़ा चखना न होता या फिर मौत ज़िंदगी का हमेशा के लिए ख़ातमा कर देती तो इन चीज़ों के बारे में सोचने की कोई ज़रूरत नहीं होती. लेकिन मौत ज़िंदगी का ख़ातमा नहीं है, बल्कि ज़िंदगी का अब्दि अंजाम है.

इस सुरतेहाल का तक़ाज़ा है कि दाई को ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसका अंजाम बताने वाला पैग़ाम (यानी क़ुरआन) सारे इंसानों तक पहुँचाना है. पैग़ाम पहुँचाने के मामले में दाई के सामने ऐसा ऑप्शन हरगिज़ नहीं है कि पैग़ाम पहुँचाए तब भी ठीक और ना पहुँचाए तक भी ठीक. यह ठीक-ठाक वाला मामला उस सूरत में ठीक हो सकता था, जबकि किसी इंसान को मरना न होता. और मर कर अपने रब के हुज़ूर ज़िंदगी का हिसाब देने के लिए जाना न होता.

58 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उन्हें हम जन्नत के बालाख़ानों
(उच्च भवनों) में जगह देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे. क्या ही अच्छा अज्र
है अमल करने वालों का. 59 जिन्होंने सब्र किया और जो अपने रब पर भरोसा रखते हैं. 60 और
कितने जानवर हैं जो अपना रिज़्क़ उठाए नहीं फिरते. अल्लाह उन्हें रिज़्क़ देता है और तुम्हें भी.
और वह सुनने वाला, जानने वाला है.

61 और अगर तुम उनसे पूछो कि किसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को, और
(किसने) मुसख़्ख़र किया सूरज को और चांद को, तो वे ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह ने. फिर वे कहाँ
से फेर दिए जाते हैं. 62 अल्लाह ही अपने बंदों में से जिसका चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है
और जिसका चाहता है तंग कर देता है. बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है. 63 और
अगर तुम उनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी उतारा, फिर उससे ज़मीन को ज़िंदा किया उसके

मर जाने के बाद, तो ज़रूर वे कहेंगे कि अल्लाह ने. कहो कि सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है. बल्कि उनमें से अकसर लोग नहीं समझते.

64 **और यह दुनिया की ज़िंदगी कुछ नहीं है, मगर एक खेल और दिल का बहलावा. और आख़िरत का घर ही असल ज़िंदगी की जगह है, काश कि वे जानते.**

नोटः– इंसान के गुमराही का असल सबब यह है कि वह दुनिया की रौनक़ों और दुनिया के मसाएल में इतना गुम होता है कि उनसे ऊपर उठकर सोच नहीं पाता. हक़ीक़त को पाने के लिए अपने आपको ज़ाहिर से ऊपर उठाना पड़ता है, बेशतर (बहुसंख्यक) लोग अपने आपको ज़ाहिर से ऊपर उठा नहीं पाते, इसीलिए बेशतर लोग हक़ीक़त को पाने वाले भी नहीं बनते.

65 पस जब वे कश्ती में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए. फिर जब वह उन्हें नजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ ले जाता है तो वे फ़ौरन शिर्क
करने लगते हैं. 66 ताकि हमने जो नेमत उन्हें दी है उसकी नाशुक्री करें और चंद दिन फ़ायदा उठाएं. पस वे अनक़रीब जान लेंगे.

67 क्या वे देखते नहीं कि हमने एक पुरअमन हरम बनाया. और उनके गिर्द व पेश (आस पास से) लोग उचक लिए जाते हैं (उसकी तरफ़ लोग खींचे चले आते हैं). तो क्या वे बातिल
(असत्य) को मानते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुक्री करते हैं. 68 और उस शख़्स से बड़ा
ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे या हक़ को झुठलाए, जबकि वह उसके पास आ
चुका. क्या मुन्किरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं होगा. 69 और जो लोग हमारी ख़ातिर मशक़्क़त
उठाएंगे, उन्हें हम अपने रास्ते दिखाएंगे. और यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों के साथ है.

सूरह-30. अर-रूम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ० लाम० मीम०. 2 रूमी मग़लूब हो गए (यानी उन्होंने शिकस्त खाई), 3 पास के
इलाक़े में और वे अपनी मग़लूबियत (शिकस्त) के बाद अनक़रीब ग़ालिब होंगे. 4 चंद वर्षों में.
अल्लाह ही के हाथ में सब काम है, पहले भी और पीछे भी. और उस दिन ईमान वाले ख़ुश होंगे, 5
अल्लाह की मदद से. वह जिसकी चाहता है मदद करता है. और वह ज़बरदस्त है, रहमत वाला है. 6

अल्लाह का वादा है. अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता, लेकिन अकसर लोग नहीं जानते.
7 **वे दुनिया की ज़िंदगी के सिर्फ़ ज़ाहिर को जानते हैं, और वे आख़िरत से बेख़बर हैं.**

8 क्या उन्होंने अपने जी में ग़ौर नहीं किया, अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ
उनके दरमियान है बरहक़ पैदा किया है. और सिर्फ़ एक मुक़र्रर मुद्दत के लिए. और लोगों में बहुत
से हैं जो अपने रब से मुलाक़ात के मुन्किर हैं. 9 क्या वे ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा
अंजाम हुआ उन लोगों का जो उनसे पहले थे. वे उनसे ज़्यादा ताक़त रखते थे. और उन्होंने ज़मीन
को जोता और उसे उससे ज़्यादा आबाद किया था जितना इन्होंने आबाद किया है. और उनके पास
उनके रसूल वाज़ेह निशानियाँ लेकर आए. पस अल्लाह उनपर ज़ुल्म करने वाला न था. मगर वे ख़ुद
ही अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे. 10 फिर जिन लोगों ने बुरा काम किया था, उनका अंजाम
बुरा हुआ, इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया. और वे उनकी हंसी उड़ाते थे.

11 अल्लाह ख़ल्क़ (सृष्टि) को पहली बार पैदा करता है, फिर वही दुबारा उसे पैदा करेगा.
फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे 12 और जिस दिन क़यामत बरपा होगी, उस दिन मुजरिम
लोग हैरतज़दा रह जाएँगे. 13 और उनके शरीकों में से उनका कोई सिफ़ारिशी नहीं होगा और वे
अपने शरीकों के मुन्किर हो जाएँगे. 14 और जिस दिन क़यामत बरपा होगी उस दिन सब लोग
जुदा-जुदा हो जाएँगे. 15 पस जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए, वे एक बाग़ में
मसरूर (प्रसन्न) होंगे. 16 और जिन लोगों ने इन्कार किया और हमारी आयतों को और आख़िरत
के पेश आने को झुठलाया तो वे अज़ाब में पकड़े हुए होंगे. 17 पस तुम अल्लाह की पाकी बयान
करो, जब तुम शाम करते हो और जब तुम सुबह करते हो. 18 और आसमानों और ज़मीन में उसी
के लिए हम्द (प्रशंसा) है और तीसरे पहर और जब तुम ज़ुहर करते हो.

19 वह ज़िंदा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िंदा से निकालता है. और वह ज़मीन
को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िंदा करता है और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे. 20 और
उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है. फिर यकायक तुम बशर
(इन्सान) बनकर फैल जाते हो. 21 और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारी जिन्स से
तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो. और उसने तुम्हारे दरमियान
मुहब्बत व रहमत रख दी. बेशक इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं.

22 और उसकी निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और तुम्हारी बोलियों
और तुम्हारे रंगों का इख़्तिलाफ़ (यानी रंगों का अलग-अलग) होना. बेशक इसमें बहुत सी
निशानियाँ हैं इल्म वालों के लिए. 23 और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन में सोना

और तुम्हारा उसके फ़ज़्ल (जीविका) को तलाश करना है. बेशक इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं. 24 और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है, ख़ौफ़ के साथ और उम्मीद के साथ. और वह आसमान से पानी उतारता है फिर उससे ज़मीन को ज़िंदा करता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद. बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं.

25 और उसकी निशानियों में से यह है कि आसमान व ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं. फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकारेगा तो तुम उसी वक़्त ज़मीन से निकल पड़ोगे. 26 और आसमानों और ज़मीन में जो भी है उसी का है. सब उसी के ताबे (अधीन) हैं 27 और वही है जो पहली बार पैदा करता है फिर वही दुबारा पैदा करेगा. और यह उसके लिए ज़्यादा आसान है. और आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए सबसे बरतर सिफ़त (गुण) है. और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है).

28 वह तुम्हारे लिए ख़ुद तुम्हारी ज़ात से एक मिसाल बयान करता है. क्या तुम्हारे ग़ुलामों में कोई तुम्हारे उस माल में शरीक है जो हमने तुम्हें दिया है कि तुम और वह उसमें बराबर हों. और जिस तरह तुम अपनों का लिहाज़ करते हो उसी तरह उनका भी लिहाज़ करते हो. इस तरह हम आयतें खोलकर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं. 29 बल्कि अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वालों ने बग़ैर दलील अपने ख़्वाहिशात (व ख़यालात) की पैरवी कर रखी है. तो उसे कौन हिदायत दे सकता है जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो. और कोई उनका मददगार नहीं.

30 पस तुम यकसू होकर अपना रुख़ इस दीन की तरफ़ रखो, अल्लाह की फ़ितरत जिस पर उसने लोगों को बनाया है. अल्लाह के बनाए हुए को बदलना नहीं. यही सीधा दीन है. लेकिन अकसर लोग नहीं जानते. 31 उसी की तरफ़ मुतवज्जह रहो और उसी से डरो और नमाज़ क़ायम करो और मुशरिकीन में से न बनो 32 जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर लिया. और बहुत से गिरोह हो गए. हर गिरोह अपने तरीक़े पर नाज़ां (मग्न) है जो उसके पास है.

33 और जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वे अपने रब को पुकारते हैं उसी की तरफ़ मुतवज्जह होकर. फिर जब वह अपनी तरफ़ से उन्हें मेहरबानी चखाता है तो उनमें से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है 34 कि जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसके मुन्किर हो जाएँ. तो चंद दिन फ़ायदा उठा लो, अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा. 35 क्या हमने उनपर कोई सनद उतारी है कि वह उन्हें ख़ुदा के साथ शिर्क करने को कह रही है.

36 और जब हम लोगों को मेहरबानी चखाते हैं तो वे उससे ख़ुश हो जाते हैं. और अगर उनके आमाल के सबब से उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो यकायक वे मायूस हो जाते हैं. 37 क्या वे देखते नहीं कि अल्लाह जिसे चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसे चाहे कम. बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं. 38 पस रिश्तेदार को उसका हक़ दो और मिस्कीन को और मुसाफ़िर को. यह बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं और वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं. 39 और जो सूद तुम देते हो, इसलिए कि लोगों के माल में शामिल होकर वह बढ़ जाए, तो अल्लाह के नज़दीक वह नहीं बढ़ता. और जो ज़कात तुम दोगे अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए तो यही लोग हैं जो अल्लाह के यहाँ अपने माल को बढ़ाने वाले हैं.

40 अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर उसने तुम्हें रोज़ी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है, फिर वह तुम्हें ज़िंदा करेगा. क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा है जो इनमें से कोई काम करता हो. वह पाक है और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं. 41 ख़ुश्की और तरी में फ़साद फैल गया लोगों के अपने हाथों की कमाई से, ताकि अल्लाह मज़ा चखाए उन्हें उनके कुछ आमाल का, शायद की वे बाज़ आएं. 42 कहो कि ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो इससे पहले गुज़रे हैं. उनमें से अकसर मुशरिक (बहुदेववादी) थे.

43 **पस अपना रुख़ दीने–क़य्यिम (यानी हक़ पर क़ायम धर्म) की तरफ़ सीधा रखो. इससे पहले कि अल्लाह की तरफ़ से ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं है. उस दिन लोग जुदा–जुदा हो जाएँगे.** 44 **जिसने इन्कार किया तो उसका इन्कार उसी पर पड़ेगा. और जिसने नेक अमल किया तो ये लोग अपने ही लिए सामान कर रहे हैं.**

45 ताकि अल्लाह ईमान लाने वालों को और नेक अमल करने वालों को अपने फ़ज़्ल से जज़ा (प्रतिफल) दे. बेशक अल्लाह मुन्किरों को पसंद नहीं करता.

46 और उसकी निशानियों में से यह है कि वह हवाएं भेजता है ख़ुशख़बरी देने के लिए और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत से नवाज़े. और ताकि कश्तियां उसके हुक्म से चलें. और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो. और ताकि तुम उसका शुक्र अदा करो. 47 और हमने तुम से पहले रसूलों को भेजा उनकी क़ौम की तरफ़. पस वे उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए. तो हमने उन लोगों से इंतक़ाम लिया जिन्होंने जुर्म किया था. और हम पर यह हक़ था कि हम मोमिनों की मदद करें.

48 अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है. पस वे बादल को उठाती हैं. फिर अल्लाह उन्हें आसमान में फैला देता है जिस तरह चाहता है. और वह उन्हें तह–ब–तह करता है. फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके अंदर से निकलती है. फिर जब वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसे पहुँचा देता है

तो यकायक वे ख़ुश हो जाते हैं. 49 और वे उसके नाज़िल किए जाने से पहले, (यानी बारिश की आमद की) ख़ुशी से पहले, नाउम्मीद थे. 50 पस अल्लाह की रहमत के आसार (निशान) को देखो, वह किस तरह ज़मीन को ज़िंदा कर देता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद. बेशक वही मुरदों को ज़िंदा करने वाला है. और वह हर चीज़ पर क़ादिर है. 51 और अगर हम एक हवा भेज दें, फिर वे खेती को ज़र्द हुई देखें तो उसके बाद वे इन्कार करने लगेंगे. 52 तो तुम मुरदों को नहीं सुना सकते, और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते जबकि वे पीठ फेरकर चले जा रहे हों. 53 और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से निकाल कर राह पर ला सकते हो. तुम सिर्फ़ उसे सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाने वाला हो. पस यही लोग इताअत (आज्ञापालन) करने वाले हैं.

54 अल्लाह ही है जिसने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद क़ुव्वत (शक्ति) दी, फिर क़ुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा तारी कर दिया. वह जो चाहता है पैदा करता है. और वह इल्म वाला, क़ुदरत वाला है. 55 और जिस दिन क़यामत बरपा होगी, मुजरिम क़सम खाकर कहेंगे कि वे (दुनिया में) एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे. इस तरह वे फेरे जाते थे. 56 और जिन लोगों को इल्म व ईमान अता हुआ था, वे कहेंगे कि अल्लाह की किताब में तो तुम हश्र (जीवित हो उठने) के दिन तक पड़े रहे. पस यह हश्र (जीवित हो उठने) का दिन है, लेकिन तुम जानते न थे. 57 पस उस दिन ज़ालिमों को उनकी मअज़रत (सफ़ाई पेश करना) कुछ नफ़ा न देगी और न उनसे माफ़ी माँगने के लिए कहा जाएगा.

58 और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं. और अगर तुम उनके पास कोई निशानी ले आओ तो जिन लोगों ने इन्कार किया है, वे यही कहेंगे कि तुम सब बातिल (असत्य) पर हो. 59 इस तरह अल्लाह मुहर कर देता है उन लोगों के दिलों पर जो नहीं जानते. 60 पस तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है. और तुम्हें बेबरदाश्त न कर दें वे लोग जो यक़ीन नहीं रखते.

सूरह-31. लुक़मान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़० लाम० मीम०. 2 ये पुर-हिकमत (ज्ञानपूर्ण) किताब की आयतें हैं, 3 हिदायत और रहमत नेकी करने वालों के लिए. 4 जो कि नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं. और वे आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं. 5 ये लोग अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं और यही लोग फ़लाह (सफलता) पाने वाले हैं.

6 और लोगों में कोई ऐसा है जो उन बातों का ख़रीदार बनता है जो ग़ाफ़िल करने वाली हैं. ताकि अल्लाह की राह से गुमराह करे (लोगों को), बग़ैर किसी इल्म के. और उसकी हंसी उड़ाए. ऐसे लोगों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है. 7 और जब उन्हें हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह तकब्बुर (घमंड) करता हुआ मुँह मोड़ लेता है, जैसे उसने सुना ही नहीं, जैसे उसके कानों में बहरापन है. तो उसे एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो. 8 बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया. उनके लिए नेमत के बाग़ हैं. 9 उसमें वे हमेशा रहेंगे. यह अल्लाह का पुख़्ता वादा है और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है).

10 अल्लाह ने आसमानों को पैदा किया, ऐसे सुतूनों (स्तंभों) के बग़ैर जो तुम्हें नज़र आएं. और उसने ज़मीन में पहाड़ रख दिए कि वे तुम्हें लेकर झुक न जाए. और उसमें हर क़िस्म के जानदार फैला दिए. और हमने आसमान से पानी उतारा, फिर ज़मीन में हर क़िस्म की उम्दा चीज़ें उगाईं. 11 यह है अल्लाह की तख़्लीक़, तो तुम मुझे दिखाओ कि उसके सिवा जो हैं उन्होंने क्या पैदा किया है. बल्कि ज़ालिम लोग खुली गुमराही में हैं.

12 और हमने लुक़मान को हिकमत (बुद्धिमानी) अता फ़रमाई कि अल्लाह का शुक्र करो. और जो शख़्स शुक्र करेगा तो वह अपने ही लिए शुक्र करेगा और जो नाशुक्री करेगा तो अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है ख़ूबियों वाला है. 13 और जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि ऐ मेरे बेटे! अल्लाह के साथ शरीक न ठहराना, बेशक शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है.

14 और हमने इंसान को उसके माँ–बाप के मामले में ताकीद की. उसकी माँ ने दुख पर दुख उठाकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष में उसका दूध छुड़ाना हुआ. कि तू मेरा शुक्र कर और अपने वालिदैन का. मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है 15 और अगर वे दोनों तुझ पर ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज़ को शरीक ठहराए जो तुझे मालूम नहीं तो उनकी बात न मानना. और दुनिया में उनके साथ नेक बर्ताव करना. और तुम उस शख़्स के रास्ते की पैरवी करना जिसने मेरी तरफ़ रुजूअ किया है. फिर तुम सबको मेरे पास आना है. फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे.

16 ऐ मेरे बेटे! कोई अमल अगर राई के दाने के बराबर हो फिर वह किसी पत्थर के अंदर हो या आसमानों में हो या ज़मीन में हो, अल्लाह उसे हाज़िर कर देगा. बेशक अल्लाह बारीकबीं (यानी हर चीज़ पर बारीक नज़र रखने वाला) है, बाख़बर है. 17 ऐ मेरे बेटे! नमाज़ क़ायम कर, अच्छे काम की नसीहत कर और (दूसरों को) बुराई से रोक और जो मुसीबत तुझे पहुँचे उसपर सब्र कर. बेशक यह हिम्मत के कामों में से है. 18 और लोगों से बेरुख़ी न कर. और ज़मीन में अकड़ कर न चल. बेशक अल्लाह किसी अकड़ने वाले और फ़ख़्र (गर्व) करने वाले को पसंद नहीं करता. 19 और अपनी चाल में मियानारवी (शालीनता) इख़्तियार कर और अपनी आवाज़ को

पस्त कर, बेशक सबसे बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है.

20 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा दिया है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है. और उसने अपनी खुली और छुपी नेमतें तुम पर तमाम कर दीं. और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, किसी इल्म और किसी हिदायत और किसी रोशन किताब के बग़ैर. 21 और जब उनसे कहा जाता है कि तुम पैरवी करो उस चीज़ की जो अल्लाह ने उतारी है तो वे कहते हैं कि नहीं, हम उस चीज़ की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है. क्या अगर शैतान उन्हें आग के अज़ाब की तरफ़ बुला रहा हो तब भी!

22 और जो शख़्स अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ झुका दे और वह नेक अमल करने वाला भी हो तो उसने मज़बूत रस्सी पकड़ ली. और अल्लाह ही की तरफ़ है तमाम मामलात का अंजामकार. 23 और जिसने इन्कार किया तो उसका इन्कार तुम्हें ग़मगीन न करे. हमारी ही तरफ़ है उनकी वापसी. तो हम उन्हें बता देंगे जो कुछ उन्होंने किया. बेशक अल्लाह दिलों की बात से भी वाक़िफ़ है. 24 उन्हें हम थोड़ी मुद्दत फ़ायदा देंगे. फिर उन्हें एक सख़्त अज़ाब की तरफ़ खींच लाएँगे.

25 और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया, तो वे ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह ने. कहो कि सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, बल्कि उनमें से अकसर नहीं जानते. 26 अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में. बेशक अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, ख़ूबियों वाला है. 27 और अगर ज़मीन में जो दरख़्त हैं वे क़लम बन जाएँ और समुंदर, सात मज़ीद (अतिरिक्त) समुंदरों के साथ, रोशनाई बन जाएँ, तब भी अल्लाह की बातें (यानी उसकी ख़ूबियाँ लिखना) ख़त्म न हों. बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है).

28 तुम सबका पैदा करना और (मौत के बाद) ज़िंदा करना बस ऐसा ही है जैसा एक शख़्स का. बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है. 29 क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है. और उसने सूरज और चांद को काम में लगा दिया है. हर एक चलता है एक मुक़र्रर वक़्त तक. और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है. 30 यह इस वजह से है कि अल्लाह ही हक़ है. और उसके सिवा जिन चीज़ों को वे पुकारते हैं, वे बातिल हैं. बेशक अल्लाह बरतर (सर्वोच्च) है, बड़ा है.

31 क्या तुमने देखा नहीं कि कश्ती समुंदर में अल्लाह के फ़ज़्ल (अनुग्रह) से चलती है, ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाए. बेशक उसमें निशानियाँ हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए. 32 और जब मौज उनके सर पर बादल की तरह छा जाती है, वे अल्लाह को पुकारते हैं उसके लिए दीन को ख़ालिस करते हुए. फिर जब वह उन्हें नजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ ले आता है तो उनमें कुछ एतदाल (संतुलित मार्ग) पर रहते हैं. और हमारी निशानियों का इन्कार

वही लोग करते हैं जो बदअहद (वचन तोड़ने वाले) और नाशुक्रगुज़ार (कृतघ्न) हैं.

33 **ऐ लोगो! अपने रब से डरो और उस दिन से डरो, जबकि कोई बाप अपने बेटे की तरफ़ से बदला न देगा और न कोई बेटा अपने बाप की तरफ़ से कुछ बदला देने वाला होगा. बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है**

तो दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें धोखे में न डाले,

न धोखेबाज़ (शैतान) तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए.

नोटः– आज इन्सानों की अकसरीयत धोके में मुब्तिला है. उनकी सबसे बड़ी ख़ैरख़ाही यही है कि उन्हें ज़िंदगी की हक़ीक़त बताई जाए. वे इसी दुनिया की ज़िंदगी को सब कुछ समझ कर जी रहे हैं और इस ज़िंदगी के अंजाम से पूरी तरह ग़ाफ़िल हैं. उन इंसानों की ख़ैरख़ाही यह है कि उन्हें बताया जाए कि वह वक़्त अनक़रीब हर एक पर आने वाला है, जब कोई बाप अपने बेटे के काम नहीं आएगा और कोई बेटा अपने बाप के किसी काम नहीं आएगा, जैसा कि मौजूदा दुनिया में बाप–बेटे एक दूसरे के काम आते हैं.

34 बेशक अल्लाह ही को क़यामत का इल्म है और वही बारिश बरसाता है और वह जानता है जो कुछ रहम (गर्भ) में है. और कोई शख़्स नहीं जानता कि कल वह क्या कमाई करेगा. और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा. बेशक अल्लाह जानने वाला है, बाख़बर है.

सूरह–32. अस्–सजदा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अलिफ़० लाम० मीम०. 2 यह नाज़िल की हुई किताब है, इसमें कुछ शुबहा नहीं,
ख़ुदावंदे–आलम की तरफ़ से है. 3 क्या वे कहते हैं कि इस शख़्स ने इसे ख़ुद गढ़ लिया है. बल्कि
यह हक़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से, ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके पास तुम से पहले कोई
डराने वाला नहीं आया, ताकि वे राह पर आ जाएँ.

4 अल्लाह ही है जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और जो उनके दरमियान है छः
दिनों में, फिर वह अर्श (सिंहासन) पर क़ायम हुआ. उसके सिवा न तुम्हारा कोई मददगार है और
न कोई सिफ़ारिश करने वाला. तो क्या तुम ध्यान नहीं करते. 5 वह आसमान से ज़मीन तक तमाम
मामलात की तदबीर करता है. फिर वे उसकी तरफ़ लौटते हैं एक ऐसे दिन में जिसकी मिक़दार

तुम्हारी गिनती से हज़ार साल के बराबर है. 6 वही है पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला. ज़बरदस्त है, रहमत वाला है. 7 उसने जो चीज़ भी बनाई ख़ूब बनाई. और उसने इंसान की तख़्लीक़ की इब्तिदा मिट्टी से की. 8 फिर उसकी नस्ल हक़ीर पानी के निचोड़ (अर्क़) से चलाई. 9 फिर उसके आज़ा (शरीर के अंग) दुरुस्त किए. और उसमें अपनी रूह फूंकी. तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए. तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो.

10 और उन्होंने कहा कि क्या जब हम ज़मीन में गुम हो जाएँगे तो क्या हमें फिर नए सिरे से पैदा किया जाएगा. बल्कि वे अपने रब की मुलाक़ात के मुन्किर हैं. 11 कहो कि मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी जान क़ब्ज़ करता है जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है. फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे.

12 और अगर तुम देखो, जबकि ये मुजरिम लोग अपने रब के सामने सर झुकाए होंगे (और कह रहे होंगे). ऐ हमारे रब! हमने देख लिया और हमने सुन लिया तू हमें वापस भेज दे कि हम नेक काम करें. अब हम यक़ीन करने वाले बन गए. 13 और अगर हम चाहते तो हर शख़्स को उसकी हिदायत दे देते. लेकिन मेरी बात साबित हो चुकी कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से इकट्ठा भर दूँगा. 14 तो अब मज़ा चखो इस बात का कि तुमने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था. हमने भी तुम्हें भुला दिया. और अपने किए की बदौलत हमेशा का अज़ाब चखो.

नोटः– इस दुनिया की ज़िंदगी में इन्सान को, **'ख़ुदा का मतलूब इन्सान'** बनने का पहला और आख़िरी मौक़ा दिया जाता है. यह मौक़ा अगर इन्सान गंवा देता है तो उसे दूसरा मौक़ा किसी सूरत में मिलने वाला नहीं. यह संगीन सुरते–हाल इस बात का तक़ाज़ा करती है कि दाई को आख़िरी हद तक जाकर मदू की ख़ैरख़ाही करना है. यही बात क़ुरआन में दूसरी जगह इस तरह से आयी है कि **'अगर लोग ईमान न लाएँ तो क्या तुम अपने आपको हलाक कर लोगे.'** इससे वाज़ेह है कि दाई को आख़िरी हद तक मदू का ख़ैरख़ाह होना चाहिए.

15 हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन्हें (हमारी) आयतों के ज़रीए से याददिहानी की जाती है तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह

करते हैं. और वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते. **अस्-सज्दा** 16 उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं. वे अपने रब को पुकारते हैं डर से और उम्मीद से. और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं. 17 तो किसी को ख़बर नहीं कि उन लोगों के लिए उनके आमाल के बदले में आंखों की क्या ठंडक छुपा कर रखी गई है?

18 तो क्या जो मोमिन है, वह उस शख़्स जैसा होगा जो नाफ़रमान है. दोनों बराबर नहीं हो सकते. 19 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनके लिए जन्नत की क़यामगाहें (स्वर्गीय निवासस्थान) हैं, यह ज़ियाफ़त (सत्कार) है, उन कामों की वजह से जो वे करते थे. 20 और जिन लोगों ने नाफ़रमानी की तो उनका ठिकाना आग है, वे लोग जब उससे निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए जाएँगे. और उनसे कहा जाएगा कि आग का अज़ाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे. 21 और हम उन्हें बड़े अज़ाब से पहले क़रीब का अज़ाब चखाएंगे, शायद कि वे बाज़ आ जाएँ. 22 और उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के ज़रीए नसीहत की जाए. फिर वह उनसे मुँह मोड़े, हम ऐसे मुजरिमों से ज़रूर बदला लेंगे.

23 और हमने मूसा को किताब दी. तो तुम उसके मिलने में कुछ शक न करो. और हमने उसे बनी इसराईल के लिए हिदायत बनाया. 24 और हमने उनमें पेशवा बनाए जो हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करते थे. जबकि उन्होंने सब्र किया. और वे हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे. 25 बेशक तेरा रब क़यामत के दिन उनके दरमियान उन मामलों में फ़ैसला कर देगा जिनमें वे बाहम इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करते थे. 26 क्या उनके लिए यह चीज़ हिदायत देने वाली न बनी कि उनसे पहले हमने कितनी क़ौमों को हलाक कर दिया. जिनकी बस्तियों में ये लोग आते जाते हैं. बेशक इसमें निशानियाँ हैं, क्या ये लोग सुनते नहीं.

27 क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को चटियल ज़मीन की तरफ़ हांककर ले जाते हैं. फिर हम उससे खेती निकालते हैं जिससे उनके चौपाए खाते हैं और वे ख़ुद भी. फिर क्या वे देखते नहीं. 28 और वे कहते हैं कि यह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो.

29 **कहो कि फ़ैसले के दिन उन लोगों का ईमान नफ़ा न देगा जिन्होंने इन्कार किया. और न उन्हें मोहलत दी जाएगी.**

नोटः– इंसान को मौजूदा दुनिया में हक़ को क़बूल करने का पहला और आख़िरी मौक़ा दिया गया है. जो कोई यह मौक़ा गँवा देगा, उसके लिए दूसरा मौक़ा हरगिज़ नहीं. अल्लाह की अदालत में हर इंसान सच्चाई को मानने के लिए मजबूर होगा, लेकिन जिन लोगों ने हालते-इम्तिहान में सच्चाई को नहीं माना, उन्हें उस वक़्त मानना नफ़ा न देगा.

30 तो उनसे दूर रहो और इंतज़ार करो, ये भी मुंतज़िर हैं.

सूरह-33. अल-अहज़ाब

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ऐ नबी! अल्लाह से डरो और मुन्किरों और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) की इताअत
(आज्ञापालन) न करो, बेशक अल्लाह जानने वाला व हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.
2 और पैरवी करो उस चीज़ की जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर 'वही' (यानी प्रकट) की जा
रही है, बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो तुम लोग करते हो. 3 और अल्लाह पर भरोसा रखो,
और अल्लाह कारसाज़ होने के लिए (यानी बंदों का काम बनाने के लिए) काफ़ी है.

4 अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रखे, और न तुम्हारी बीवियों को जिनसे
तुम ज़िहार करते हो, तुम्हारी माँ बनाया (ज़िहार यानी तलाक देने की एक सूरत, जिसमें शौहर
अपनी बीवी से कहता था कि तुम मेरे लिए मेरी माँ की पीठ की तरह हो.) और न तुम्हारे मुँह बोले
बेटों को तुम्हारा बेटा बना दिया. ये सब तुम्हारे अपने मुँह की बातें हैं. और अल्लाह हक़ बात कहता
है और वह सीधा रास्ता दिखाता है. 5 मुँह बोले बेटों को उनके बापों की निस्बत से पुकारो यह
अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा मुंसिफ़ाना बात है. फिर अगर तुम उनके बाप को न जानो तो वे तुम्हारे
दीनी भाई हैं और तुम्हारे रफ़ीक़ हैं. और जिस चीज़ में तुम से भूल-चूक हो जाए तो उसका तुम
पर कुछ गुनाह नहीं, मगर जो तुम दिल से इरादा करके करो (उसपर ज़रूर पकड़ होगी). और
अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है.

6 और नबी का हक़ मोमिनों पर उनकी अपनी जान से भी ज़्यादा है, और नबी की बीवियां
उनकी माएं हैं. और रिश्तेदार ख़ुदा की किताब में, दूसरे मोमिनीन और मुहाजिरीन की बनिस्बत,
एक दूसरे से ज़्यादा ताल्लुक़ रखते हैं. मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से अच्छा सलूक करना
चाहो. यह किताब में लिखा हुआ है.

7 और जब हमने पैग़म्बरों से उनका अहद (वचन) लिया और तुम से और नूह से और
इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से. और हमने उनसे पुख़्ता अहद लिया. 8 ताकि अल्लाह
सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में सवाल करे, और मुन्किरों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब
तैयार कर रखा है.

9 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो, जब तुम पर
फ़ौजें चढ़ आयीं तो हमने उनपर एक आंधी भेजी और ऐसी फ़ौज जो तुम्हें दिखाई न देती थी. और
अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो. 10 जबकि वे तुम पर चढ़ आए, तुम्हारे ऊपर की

तरफ़ से और तुम्हारे नीचे की तरफ़ से. और जब आँखें खुल गईं और दिल गलों तक पहुँच गए और तुम अल्लाह के साथ तरह–तरह के गुमान करने लगे. 11 उस वक़्त ईमान वाले इम्तहान में डाले गए और बिल्कुल हिला दिए गए.

12 और जब मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, कहते थे कि अल्लाह और उसके रसूल ने जो वादा हमसे किया था वह सिर्फ़ फ़रेब था. 13 और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि ऐ यसरिबवालो (मदिनावालो)! तुम्हारे लिए ठहरने का मौक़ा नहीं, तो तुम लौट चलो. और उनमें से एक गिरोह पैग़म्बर से इजाज़त माँगता था, वह कहता था कि हमारे घर ग़ैर–महफ़ूज़ हैं, और वे ग़ैर–महफ़ूज़ नहीं. वे तो सिर्फ़ भागना चाहते थे. 14 और अगर मदीना के अतराफ़ से उनपर कोई घुस आता और उन्हें फ़ितने की दावत देता तो वे मान लेते और वे उसमें बहुत कम देर करते. 15 और उन्होंने इससे पहले अल्लाह से अहद किया था कि वे पीठ न फेरेंगे. और अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) की पूछ होगी. 16 कहो कि अगर तुम मौत से या क़तल से भागो तो यह भागना तुम्हारे कुछ काम न आएगा. और इस हालत में तुम्हें सिर्फ़ थोड़े दिनों तक फ़ायदा उठाने का मौक़ा मिलेगा. 17 कहो, कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचाए अगर वह तुम्हें नुक़सान पहुँचाना चाहे, या वह तुम पर रहमत करना चाहे. और वे अपने लिए अल्लाह के मुक़ाबले में कोई हिमायती और मददगार न पाएंगे.

18 अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो तुम में से रोकने वाले हैं और जो अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ. और वे लड़ाई में कम ही आते हैं. 19 वे तुम से बुख़्ल (कृपणता) करते हैं. पस जब ख़ौफ़ पेश आता है तो तुम देखते हो कि वे तुम्हारी तरफ़ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आँखें उस शख़्स की आंखों की तरह गर्दिश कर रही हैं जिस पर मौत की बेहोशी तारी हो. फिर जब ख़तरा दूर हो जाता है तो वे माल की हिर्स में तुम से तेज़–ज़बानी के साथ मिलते हैं. ये लोग यक़ीन नहीं लाए तो अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए. और यह अल्लाह के लिए आसान है. 20 वे समझते हैं कि फ़ौजें अभी गई नहीं हैं. और अगर फ़ौजें आ जाएँ तो ये लोग पसंद करेंगे, कि काश हम बदुओं (देहातियों) के साथ देहात में हों, तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें. और अगर वे तुम्हारे साथ होते तो लड़ाई में कम ही हिस्सा लेते.

21 **तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना है, उस शख़्स के लिए जो अल्लाह का और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो और कसरत से अल्लाह को याद करे.**

नोटः– अल्लाह और आख़िरत का उम्मीदवार बनने के लिए रसूल की पैरवी शर्त है, रसूल ख़ुद पूरे मानों में '**ख़ुदा का मतलूब इन्सान**' होता है और दूसरे इन्सानों के लिए ख़ुदा का मतलूब इन्सान बनने के लिए अमली नमूना. सब्र, एराज़, दावत, ज़िक्र, शुक्र यह अल्लाह के मतलूब औसाफ़ (गुण) रसूल की शख़्सियत में पूरी तरह मौजूद होते हैं. और यही औसाफ़ अल्लाह तआला को दूसरे बंदों से भी मतलूब हैं.

रसूलुल्लाह (स.) के ताल्लुक़ से सूरह कहफ़, आयत 6 और सूरह अश-शुअरा, आयत 3 में आया है, '**शायद तुम उनके पीछे ग़म से अपने को हलाक कर डालोगे, अगर वे इस बात पर ईमान न लाएँ**' क़ुरआन के इस बयान से पता चलता है कि रसूलुल्लाह (स.) किस तरह लोगों की हिदायत के हरीस और उनके ख़ैरख़ाह थे. जिस तरह आप इबादत व अख़लाक़ के मामले में कामिल नमूना हैं. उसी तरह दावत के मामले में भी आप कामिल नमूना हैं. जो लोग अल्लाह और आख़िरत के उम्मीदवार बनना चाहते हैं उनके लिए रसूल के सिवा और कोई नमूना नहीं. वही लोग रसूल के सच्चे पैरोकार हैं जो अपनी ज़िंदगी का नक़्शा रसूल की ज़िंदगी को सामने रखते हुए बनाएँ.

22 और जब ईमान वालों ने फ़ौजों को देखा, वे बोले, यह वही है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा. और उस (सूरते-हाल) ने उनके ईमान और इताअत में इज़ाफ़ा कर दिया. 23 ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) को पूरा कर दिखाया. पस उनमें से कोई अपना ज़िम्मा पूरा कर चुका और उनमें से कोई मुंतज़िर है. और उन्होंने ज़रा भी तब्दीली नहीं की. 24 ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) को अज़ाब दे अगर चाहे या उनकी तौबा क़बूल करे. बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.

25 और अल्लाह ने मुन्किरों को उनके ग़ुस्से के साथ फेर दिया (उन्हें ख़ाली हाथ वापस जाना पड़ा) कि उनकी कुछ भी मुराद पूरी न हुई और मोमिनीन की तरफ़ से अल्लाह लड़ने के लिए काफ़ी हो गया. अल्लाह क़ुव्वत (शक्ति) वाला है, ज़बरदस्त है. 26 और अल्लाह ने उन अहले-किताब को जिन्होंने हमलावरों का साथ दिया उनके क़िलों से उतारा. और उनके दिलों में उसने रोब डाल

दिया, तुम उनके एक गिरोह को क़तल कर रहे हो और एक गिरोह को क़ैद कर रहे हो. 27 और उसने उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का तुम्हें वारिस बना दिया. और ऐसी ज़मीन का भी जिस पर तुमने क़दम नहीं रखा. और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है.

28 ऐ नबी! अपनी बीवियों से कहो कि अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ माल व मताअ देकर ख़ूबी के साथ रुख़सत कर दूँ. 29 और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुम में से नेक किरदार वालों के लिए बड़ा अज्र मुहय्या कर रखा है. 30 ऐ नबी की बीवियो! तुम में से जो कोई खुली बेहयाई करेगी, उसे दोहरा अज़ाब दिया जाएगा. और यह अल्लाह के लिए आसान है.

पारा – 22 31 और तुम में से जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करेगी और नेक अमल करेगी तो हम उसे उसका दोहरा अज्र देंगे. और हमने उसके लिए बाइज़्ज़त रोज़ी तैयार कर रखी है. 32 ऐ नबी की बीवियो! तुम आम औरतों की तरह नहीं हो. अगर तुम अल्लाह से डरो तो तुम लहजे में नर्मी न इख़्तियार करो कि जिसके दिल में बीमारी है वह लालच में पड़ जाए और मारूफ़ (सामान्य नियम) के मुताबिक़ बात कहो.

33 और तुम अपने घर में क़रार से रहो और पहले की जाहिलीयत की तरह दिखलाती न फिरो. और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो. अल्लाह तो चाहता है कि तुम अहले-बैत (रसूल के घर वालों) से आलूदगी (अशुद्धता) को दूर करे और तुम्हें पूरी तरह पाक कर दे. 34 और तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतों और हिकमत (विवेकपूर्ण ज्ञान) की जो तालीम होती है उसे याद रखो. बेशक अल्लाह बारीकबीं (सूक्ष्म से सूक्ष्म चीज़ का भी ज्ञान रखने वाला) है, ख़बर रखने वाला है.

35 बेशक इताअत (आज्ञापालन) करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें. और ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें. और फ़रमांबरदारी करने वाले मर्द और फ़रमांबरदारी करने वाली औरतें. और रास्तबाज़ (सत्यनिष्ठ) मर्द और रास्तबाज़ औरतें. और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें. और ख़ुशूअ (विनय) करने वाले मर्द और ख़ुशूअ करने वाली औरतें. और सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें. और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें. और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें. और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें. इनके लिए अल्लाह ने मग़फ़िरत और बड़ा अज्र मुहय्या कर रखा है.

36 किसी मोमिन मर्द या किसी मोमिन औरत के लिए गुंजाइश नहीं है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फ़ैसला कर दें तो फिर उनके लिए उसमें इख़्तियार बाक़ी रहे. और

जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा तो वह सरीह गुमराही में पड़ गया.

37 और जब तुम उस शख़्स से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने इनाम किया और तुमने इनाम किया कि अपनी बीवी को रोके रखो और अल्लाह से डरो. और तुम अपने दिल में वह बात छुपाए हुए थे जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था. और तुम लोगों से डर रहे थे, और अल्लाह ज़्यादा हक़दार है कि तुम उससे डरो. फिर जब ज़ैद उससे अपनी ग़रज़ तमाम कर चुका, हमने तुम से उसका निकाह कर दिया, ताकि मुसलमानों पर अपने मुँह बोले बेटों की बीवियों के बारे में कुछ तंगी न रहे, जबकि वे उनसे अपनी ग़रज़ पूरी कर लें. और अल्लाह का हुक्म होने वाला ही था.

38 पैग़म्बर के लिए उसमें कोई हरज नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए मुक़र्रर कर दिया हो. यही अल्लाह की सुन्नत (तरीक़ा) उन पैग़म्बरों के साथ रही है जो पहले गुज़र चुके हैं. और अल्लाह का हुक्म एक क़तई फ़ैसला होता है.

39 **वे अल्लाह के पैग़ामों को पहुँचाते थे** **और उसी से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे. और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है.**

नोटः– दाई का काम अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना है और अपनी ज़ाती ज़िंदगी में उसे अल्लाह का परहेज़गार बंदा बनना है.

40 **मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और नबियों के ख़ातम (यानी अंतिम संदेशवाहक) हैं. और अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखने वाला है.**

नोटः– यहाँ अल्लाह तआला वाज़ेह अलफ़ाज़ में फ़रमा रहा है कि मुहम्मद (स.अ.) आख़िरी नबी हैं, आप के बाद कोई नबी आने वाला नहीं है. ख़त्मे-नबुवत वाक़ेअ हो गई, लेकिन कारे-नबुवत तो क़यामत तक मतलूब है, क्योंकि क़यामत तक इंसानों की आमद जारी है.

41 ऐ ईमान वालो! अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करो. 42 और उसकी तस्बीह करो सुबह
और शाम. 43 वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी, ताकि तुम्हें तारीकियों

से निकाल कर रोशनी में लाए. और वह मोमिनों पर बहुत मेहरबान है. 44 जिस रोज़ वे उससे मिलेंगे, उनका इस्तक़बाल सलाम से होगा. और उसने उनके लिए बाइज़्ज़त सिला (प्रतिफल) तैयार कर रखा है.

45 ऐ नबी! हमने तुम्हें गवाही देने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है. 46 और अल्लाह की तरफ़, उसके इज़्न (आज्ञा) से, दावत देने वाला (आवाहनकर्ता) और एक रोशन चिराग़. 47 और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो कि उनके लिए अल्लाह की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) है.48 और तुम मुन्किरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानो और उनके सताने को नज़रंदाज़ करो और अल्लाह पर भरोसा रखो. और अल्लाह भरोसे के लिए काफ़ी है.

नोटः– दावत का काम अंजाम देने के लिए एक तरफ़ दाई को अल्लाह पर कामिल एतमाद होना बहुत ज़रूरी है. तो दूसरी तरफ़ बंदों के मामले में उसका तरीक़ा सब्र–व–एराज़ का तरीक़ा होना चाहिए.

49 ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो तो उनके बारे में तुम पर कोई इद्दत लाज़िम नहीं है जिसका तुम शुमार करो. पस उन्हें कुछ मताअ (सामग्री) दे दो और ख़ूबी के साथ उन्हें रुख़सत कर दो.

50 ऐ नबी! हमने तुम्हारे लिए हलाल कर दीं तुम्हारी वे बीवियां जिनकी महर तुम दे चुके हो और वे औरतें भी जो तुम्हारी ममलूका हैं (यानी तुम्हारी मिल्कियत में हैं) जो अल्लाह ने ग़नीमत में तुम्हें दी हैं और तुम्हारे चचा की बेटियाँ और तुम्हारी फुफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामुओं की बेटियाँ और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियाँ जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की हो. और उस मुसलमान औरत को भी जो अपने आपको पैग़म्बर को दे दे, बशर्ते कि पैग़म्बर उसे निकाह में लाना चाहे, यह ख़ास तुम्हारे लिए है, मुसलमानों से अलग. हमें मालूम है जो हमने उनपर उनकी बीवियों और उनकी दासियों के बारे में फ़र्ज़ किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है.

51 तुम उनमें से जिस—जिस को चाहो दूर रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो. और जिन्हें दूर किया था उनमें से फिर किसी को तलब करो तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं. इसमें ज़्यादा तवक़्क़ो (संभावना) है कि उनकी आँखें ठंडी रहेंगी, और वे रंजीदा न होंगी. और वे इसपर राज़ी रहें जो तुम उन सबको दो. और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है. और अल्लाह जानने वाला है, बुर्दबार (उदार) है. 52 इनके अलावा और औरतें तुम्हारे लिए हलाल नहीं हैं. और न यह दुरुस्त है कि तुम उनकी जगह दूसरी बीवियां कर लो, अगरचे उनकी सूरत तुम्हें अच्छी लगे. मगर जो तुम्हारी ममलूका (मिल्कियत में) हो. और अल्लाह हर चीज़ पर निगरां है.

53 ऐ ईमान वालो! नबी के घरों में मत जाया करो, मगर जिस वक़्त तुम्हें खाने के लिए इजाज़त दी जाए, ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के मुंतज़िर न रहो. लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो दाख़िल हो जाओ. फिर जब तुम खा चुको तो उठकर चले जाओ और बातों में लगे हुए बैठे न रहो. इस बात से नबी को नागवारी होती है. मगर वह तुम्हारा लिहाज़ करते हैं. और अल्लाह हक़ बात कहने में किसी का लिहाज़ नहीं करता. और जब तुम रसूल की बीवियों से कोई चीज़ माँगो तो परदे की ओट से माँगो. यह तरीक़ा तुम्हारे दिलों के लिए ज़्यादा पाकीज़ा है और उनके दिलों के लिए भी. और तुम्हारे लिए जायज़ नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ दो और न यह जायज़ है कि तुम उनके बाद उनकी बीवियों से कभी निकाह करो. यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी संगीन बात है. 54 तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ तो अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है.

55 (पैग़म्बर की बीवियों पर) अपने बापों के बारे में कोई गुनाह नहीं है. और न अपने बेटों के बारे में और न अपने भाइयों के बारे में और न अपने भतीजों के बारे में और न अपने भांजों के बारे में और न अपनी (मेलजोल की) औरतों के बारे में और न अपनी दासियों के बारे में. और तुम अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर निगाह रखता है.

56 **अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं. ऐ ईमान वालो! तुम भी उसपर दुरूद व सलाम भेजो.**

नोटः– ख़ुदा का नबी लोगों में ख़ुदा के पैग़ाम को लेकर जाता है. चूंकि यह इम्तिहानी दुनिया होने की वजह से ख़ुदा के एलची को लोग तरह-तरह से सताते हैं, लेकिन नबी के मिशन में ख़ुदा और उसके फ़रिश्ते पूरी तरह उस के साथ शामिल हैं. पूरी तरह उसके ख़ैरख़ाह हैं. ऐ ईमान वालों! तुम भी नबी के मिशन में पूरी तरह शामिल हो जाओ.

57 जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को अज़िय्यत (यातना) देते हैं, अल्लाह ने उनपर दुनिया और आख़िरत में लानत की और उनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है. 58 और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को अज़िय्यत देते हैं, बग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ किया हो तो उन्होंने बोहतान का और सरीह गुनाह का बोझ उठाया.

59 ऐ नबी! अपनी बीवियों से कहो और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की औरतों से कि नीचे कर लिया करें अपने ऊपर थोड़ी सी अपनी चादरें उससे जल्दी पहचान हो जाएगी तो वे सताई न जाएँगी. और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है. 60 मुनाफ़िक़ीन (यानी पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और जो मदीना में झूठी ख़बरें फैलाने वाले हैं, अगर वे बाज़ न आए तो हम तुम्हें उनके पीछे लगा देंगे. फिर वे तुम्हारे साथ मदीना में बहुत कम रह पाएंगे. 61 फिटकारे हुए, जहाँ पाए जाएँगे पकड़े जाएँगे और बुरी तरह मारे जाएँगे. 62 यह अल्लाह का दस्तूर है उन लोगों के बारे में जो पहले गुज़र चुके हैं. और तुम अल्लाह के दस्तूर में कोई तब्दीली न पाओगे.

63 लोग तुम से क़यामत के बारे में पूछते हैं. कहो कि उसका इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह के पास है. और तुम्हें क्या ख़बर, शायद क़यामत क़रीब आ लगी हो. 64 बेशक अल्लाह ने मुन्किरों को रहमत से दूर कर दिया है. और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार है, 65 उसमें वे हमेशा रहेंगे. वे न कोई हामी पाएंगे और न कोई मददगार. 66 जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट–पलट किए जाएँगे, वे कहेंगे, ऐ काश, हमने अल्लाह की इताअत की होती और हमने रसूल की इताअत (आज्ञापालन) की होती. 67 और वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना तो उन्होंने हमें रास्ते से भटका दिया. 68 ऐ हमारे रब! उन्हें दोहरा अज़ाब दे और उनपर भारी लानत कर.

69 ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने मूसा को अज़िय्यत (यातना) पहुँचाई तो अल्लाह ने उसे उन लोगों की बातों से बरी साबित किया. और वह अल्लाह के नज़दीक बाइज़्ज़त था. 70 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और दुरुस्त बात कहो. 71 वह तुम्हारे आमाल सुधारेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा. और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे उसने बड़ी कामयाबी हासिल की.

72 हमने अमानत को आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने उसे उठाने से इन्कार किया और वे उससे डर गए, और इंसान ने उसे उठा लिया. बेशक वह ज़ालिम और जाहिल था. 73 ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को सज़ा दे. और अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर तवज्जोह फ़रमाए. और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है.

सूरह-34. सबा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 तारीफ़ ख़ुदा के लिए है जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है और उसी की तारीफ़ है आख़िरत में और वह हिकमत वाला व जानने वाला (बुद्धिमान एवं सर्वज्ञानी) है. 2 वह जानता है जो कुछ ज़मीन के अंदर दाख़िल होता है और जो कुछ उससे निकलता है. और जो आसमान से उतरता है और जो उसमें चढ़ता है. और वह रहमत वाला है, बख़्शने वाला है.

3 और जिन्होंने इन्कार किया वे कहते हैं कि हम पर क़यामत नहीं आएगी. कहो कि क्यों नहीं, क़सम है ग़ैब का इल्म रखने वाले मेरे परवरदिगार की, वह ज़रूर तुम पर आएगी. उससे ज़र्रा बराबर कोई चीज़ छुपी नहीं, न आसमानों में और न ज़मीन में. और न कोई चीज़ उससे छोटी और न बड़ी, मगर वह एक खुली किताब में है. 4 ताकि वह उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और नेक काम किया. यही लोग हैं जिनके लिए माफ़ी है और इज़्ज़त की रोज़ी. 5 और जिन लोगों ने हमारी आयतों को आजिज़ (परास्त) करने की कोशिश की, उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अज़ाब है. 6 और जिन्हें इल्म दिया गया है, वे जानते हैं कि तुम्हारे रब की तरफ़ से जो तुम्हारे पास भेजा गया है, वह हक़ है और वह ख़ुदाए-अज़ीज़ व हमीद (प्रभुत्वशाली व प्रशंस्य) का रास्ता दिखाता है.

7 और जिन्होंने इन्कार किया वे कहते हैं, क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी बताएँ जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम बिल्कुल रेज़ा-रेज़ा हो जाओगे तो फिर तुम्हें नए सिरे से बनना है. 8 क्या उसने अल्लाह पर झूठ बांधा है या उसे किसी तरह का जुनून है. बल्कि जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते, वही अज़ाब में और दूर की गुमराही में मुब्तिला हैं. 9 तो क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन की तरफ़ नज़र नहीं की जो उनके आगे है और उनके पीछे भी. अगर हम चाहें तो उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उनपर आसमान से टुकड़ा गिरा दें. बेशक इसमें निशानी है हर उस बंदे के लिए जो मुतवज्जह होने वाला हो.

10 और हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से बड़ी नेमत दी. ऐ पहाड़ो! तुम भी उसके साथ तस्बीह में शिरकत करो. और इसी तरह परिंदों को हुक्म दिया. और हमने लोहे को उसके लिए नर्म कर दिया 11 कि तुम कुशादा ज़िरहें (कवच) बनाओ और कड़ियों को अंदाज़े से जोड़ो. और नेक अमल करो, जो कुछ तुम करते हो उसे मैं देख रहा हूँ.

12 और सुलैमान के लिए हमने हवा को मुसख़्ख़र (अधीन) कर दिया, उसकी सुबह की

मंज़िल एक महीने की होती और उसकी शाम की मंज़िल एक महीने की. और हमने उसके लिए तांबे का चशमा बहा दिया. और जिन्नात में से ऐसे थे जो उसके रब के हुक्म से उसके आगे काम करते थे. और उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरे तो हम उसे आग का अज़ाब चखाएंगे. 13 वे उसके लिए बनाते जो वह चाहता, इमारतें और तस्वीरें और हौज़ जैसे लगन (थाल) और जमी हुई देगें. ऐ आले-दाऊद! शुक्रगुज़ारी के साथ अमल करो और मेरे बंदों में कम ही शुक्रगुज़ार हैं.

14 फिर जब हमने उसपर मौत का फ़ैसला नाफ़िज़ किया तो किसी चीज़ ने उन्हें उसके मरने का पता नहीं दिया, मगर ज़मीन के कीड़े ने, वह उसकी लाठी को खाता था. पस जब वह गिर पड़ा तब जिन्नों पर खुला कि अगर वे ग़ैब (अदृश्य) को जानते तो इस ज़िल्लत की मुसीबत में न रहते.

15 सबा के लिए उनके अपने मस्कन (आवासीय क्षेत्र) में निशानी थी. दो बाग़ दाएं और बाएं, (हमने उनसे कहा कि) अपने रब के रिज़्क़ से खाओ और उसका शुक्र करो. उम्दा शहर और बख़्शने वाला रब. 16 पस उन्होंने सरताबी (विमुखता) की तो हमने उनपर बांध का सैलाब भेज दिया और उनके बाग़ों को दो ऐसे बाग़ों से बदल दिया जिनमें बदमज़ा फल और झाव के दरख़्त और कुछ थोड़े से बेर होते थे. 17 यह हमने उनकी नाशुक्री का बदला दिया और ऐसा बदला हम उसी को देते हैं जो नाशुक्र हो.

18 और हमने उनके और उनकी बस्तियों के दरमियान, जहाँ हमने बरकत रखी थी, ऐसी बस्तियां आबाद कीं जो (एक बस्ती से दूसरी बस्ती) नज़र आती थीं. और हमने उनके दरमियान सफ़र की मंज़िलें ठहरा दीं. उनमें रात दिन अमन के साथ चलो. 19 फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब! हमारे सफ़रों के दरमियान दूरी डाल दे. और उन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो हमने उन्हें अफ़साना बना दिया और हमने उन्हें बिल्कुल तितर-बितर कर दिया. बेशक इसमें निशानी है हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए.

20 और इबलीस (शैतान) ने उनके ऊपर अपना गुमान सच कर दिखाया. पस उन्होंने उसकी पैरवी की, मगर ईमान वालों का एक गिरोह. 21 और इबलीस को उनके ऊपर कोई इख़्तियार न था, मगर यह कि हम मालूम कर लें उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से (अलग करके) जो उसके बारे में शक में हैं और तुम्हारा रब हर चीज़ पर नज़र रखे हुए है.

22 कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) समझ रखा है, वे न आसमानों में ज़र्रा बराबर इख़्तियार रखते और न ज़मीन में और न इन दोनों में उनकी कोई शिरकत है. और न इनमें से कोई उसका मददगार है. 23 और उसके सामने कोई शफ़ाअत (सिफ़ारिश) काम नहीं आती, मगर उसके लिए जिसके लिए वह इजाज़त दे. यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर होगी तो वे पूछेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया. वे कहेंगे कि हक़ बात का हुक्म

फ़रमाया. और वह सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है.

24 कहो कि कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रिज़्क़ देता है. कहो कि अल्लाह. और हम में से और तुम में से कोई एक हिदायत पर है या खुली हुई गुमराही में. 25 कहो कि जो क़सूर हमने किया उसकी कोई पूछ तुम से नहीं होगी. और जो कुछ तुम कर रहे हो उसकी बाबत हमसे नहीं पूछा जाएगा. 26 कहो कि हमारा रब हमें जमा करेगा, फिर हमारे दरमियान हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमाएगा. और वह फ़ैसला फ़रमाने वाला है, इल्म वाला है. 27 कहो, मुझे उन्हें दिखाओ जिन्हें तुमने शरीक बनाकर ख़ुदा के साथ मिला रखा है. हरगिज़ नहीं, बल्कि वह अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है.

28 हमने तुम्हें सिर्फ़ इसलिए भेजा है कि तुम हो तमाम इंसानों के लिए

ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले, मगर अकसर लोग नहीं जानते.

नोटः– रसूलुल्लाह (स.) को अल्लाह तालाह ने भेजा ही इसलिए कि आप सारे इन्सानों को ख़ुदा के तख़्लिक़ी मंसूबे से आगाह कर दें. आप उन्हें बता दें कि अल्लाह ने उन्हें क्यों पैदा किया है. अल्लाह को उनसे कैसी ज़िंदगी मतलूब है और ज़िंदगी का अंजाम किन सूरतों में सामने आने वाला है. आप इस दुनिया में पैग़ंबर की हैसियत से सिर्फ़ 23 साल रहे और आपने अपनी ज़िंदगी में मक्का और उसके आस-पास के इलाक़ों में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने का काम बराहेरास्त अंजाम दिया, **फिर आप तमाम इन्सानों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले कैसे होंगे?** इसका जवाब है कि **आप अपनी उम्मत के ज़रीए से क़यामत तक के तमाम इन्सानों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले हैं.** आपके मानने वालों पर यह ज़िम्मेदारी है कि वह आपका लाया हुआ पैग़ाम तमाम इन्सानों तक पहुँचा दें. ख़त्मे-नबुवत वाक़ेअ हो गई, लेकिन कारे-नबुवत क़यामत तक मतलूब है. इसी कारे-नबुवत को नबी के मानने वालों को अंजाम देना है.

रसूलुल्लाह स. ने हज्जतुल-विदा के मौक़े पर मौजूद सहाबा से ख़िताब (संबोधित) करते हुए कहा कि क्या मैंने तुम तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया. सहाबा ने कहा, हाँ, आपने पहुँचा दिया. फिर रसूलुल्लाह स. ने कहा कि **तुम लोग अल्लाह का पैग़ाम उन तमाम इन्सानों तक पहुँचा दो जो यहां मौजूद नहीं हैं.** इस फ़रमाने-रसूल के बाद सहाबा उस वक़्त की आबाद

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)
दुनिया में फैल गए. रिवायत में आता है जिस सहाबिए-रसूल की सवारी जिस रुख पर थी उस रुख पर वह निकल पड़े. सहाबा के बाद ताबईन ने इस काम को जारी रखा, एक ताबई हज़रत उक़्बा बिन नाफ़ेअ दावती सफ़र करते हुए अफ़्रीका कॉन्टिनन्ट के किनारे पर पहुँचे वहाँ उनके सामने हज़ारों किलोमीटर का अटलांटिक समुंदर था, उसको देखकर उन्होंने कहा कि **ख़ुदाया! अगर मुझे पता होता कि इस समुंदर के उस पार भी कोई इन्सान है तो मैं अपना घोड़ा इस समुंदर में डाल देता, यहाँ तक कि तेरे सिवा किसी की इबादत न की जाए.** दौरे-अव्वल के अहले-ईमान की दावती कोशिशों के नतीजे में आज दुनिया के कोने-कोने में मुसलमान आबाद हैं. लेकिन मौजूदा मुसलमान दावत की ज़िम्मेदारी से इस क़दर ग़ाफ़िल हैं कि दुनिया में 150 करोड़ मुसलमान होने के बावजूद, printing press और internet का दौर होने के बावजूद, हवाई जहाज और तेज़ रफ़्तार सवारियों का दौर होने के बावजूद हर घर में ख़ुदा का पैग़ाम नहीं पहुँचा. अब आख़िरी वक़्त आ गया है कि मुसलमान दावत के ताल्लुक़ से अपनी नागुज़ीर ज़िम्मेदारी को समझें और अपनी ग़फ़लत को तोड़ें और उसे अपनी-अपनी हैसियत के मुताबिक़ अदा करें, वरना मुसलमान इस दुनिया में ख़ुदा की नुसरत से महरूम और आख़िरत में जन्नत से महरूम कर दिए जाएंगे.

29 और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो. 30 कहो कि तुम्हारे लिए एक ख़ास दिन का वादा है कि उससे न एक पल पीछे हट सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो.

31 **और जिन लोगों ने इन्कार किया वे कहते हैं कि हम हरगिज़ न इस क़ुरआन को मानेंगे** **और न उसे जो इससे पहले (नाज़िल हुआ) है. और अगर तुम उस वक़्त को देखो, जबकि ये ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएँगे. एक दूसरे पर बात डालता होगा. जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे वे बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान वाले होते.**

नोटः- अगर क़ुरआन को पेश किया ही न जाए तो उसे मानने या न मानने का सवाल कहाँ से पैदा होता है? इससे वाज़ेह है कि दाई ने क़ुरआन को पेश करके अपना दावती फ़र्ज़ अदा किया.

अगर लोगों पर क़ुरआन पेश ही न किया जाए तो लोगों के पास अल्लाह कि अदालत में एक ज़बरदस्त उज़्र (हीला) होगा, वह यह कि अगर हम तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँच जाता तो हम ज़रूर ईमान वाले होते.

32 बड़ा बनने वाले कमज़ोर लोगों को जवाब देंगे, **क्या हमने तुम्हें हिदायत से रोका था. जबकि वह तुम्हें पहुँच चुकी थी,** बल्कि तुम ख़ुद मुजरिम हो.

नोटः– आख़िरत में बड़े मुजरिम और छोटे मुजरिम दोनों यह गवाही देंगे कि हिदायत उन तक पहुँच चुकी थी. क़ुरआन के इस बयान से पैग़ाम पहुँचाने की अहमियत वाज़ेह होती है.

33 और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, नहीं, बल्कि तुम्हारी रात दिन की तदबीरों से, जबकि तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें और उसके शरीक ठहराएं. और वे अपनी पशेमानी (पछतावे) को छुपाएंगे, जबकि वे अज़ाब देखेंगे. और हम मुन्किरों की गर्दन में तौक़ डालेंगे. वे वही बदला पाएंगे जो वे करते थे.

34 **और हमने जिस बस्ती में भी कोई डराने वाला भेजा तो उसके ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम तो उसके मुन्किर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो.**

नोटः– दाई को अपना काम करना है. चाहे मदू का रिस्पॉन्स जो भी हो.

35 और उन्होंने कहा कि हम माल और औलाद में ज़्यादा हैं और हम कभी सज़ा पाने वाले नहीं. 36 कहो कि मेरा रब जिसे चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है. और जिसे चाहता है कम कर देता है, लेकिन अकसर लोग नहीं जानते. 37 **और तुम्हारे माल व तुम्हारी औलाद वह चीज़ नहीं जो दर्जे में तुम्हें हमारा मुक़र्रब (निकटवर्ती) बना दे,** अलबत्ता जो ईमान लाया और उसने नेक अमल किया, ऐसे लोगों के लिए उनके अमल का दुगना बदला है. और वे बालाख़ानों (उच्च भवनों) में इत्मीनान से रहेंगे. 38 और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए सरगर्म हैं वे अज़ाब में दाख़िल किए जाएँगे. 39 कहो कि मेरा रब अपने बंदों में से जिसे

चाहता है कुशादा रोज़ी देता है और जिसे चाहता है तंग कर देता है. और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे तो वह उसका बदला देगा. और वह बेहतर रिज़्क़ देने वाला है.

40 और जिस दिन वह उन सबको जमा करेगा फिर वह फ़रिश्तों से पूछेगा, क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे. 41 वे कहेंगे, पाक है तेरी ज़ात! हमारा ताल्लुक़ तुझसे है, न कि इन लोगों से! बल्कि ये जिन्नों की इबादत करते थे. उनमें से अकसर लोग उन्हीं के मोमिन थे. 42 पस आज तुम में से कोई एक दूसरे को न फ़ायदा पहुँचा सकता है, और न नुक़सान. और हम ज़ालिमों से कहेंगे कि आग का अज़ाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे.

43 **और जब उन्हें हमारी खुली–खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं कि यह तो बस एक शख़्स है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे जिनकी तुम्हारे बाप–दादा इबादत करते थे. और उन्होंने कहा, यह तो महज़ एक झूठ है गढ़ा हुआ. और उन मुन्किरों के सामने जब हक़ आया तो उन्होंने कहा कि यह तो बस खुला हुआ जादू है.**

नोटः– चाहे मदू की तरफ़ से जो भी रिस्पॉन्स हो दाई को अल्लाह का पैग़ाम खोल खोलकर सुना देना है.

44 और हमने उन्हें किताबें नहीं दी थीं जिन्हें वे पढ़ते हों. और हमने तुम से पहले उनके पास कोई डराने वाला नहीं भेजा. 45 और उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया. और ये उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे जो हमने उन्हें दिया था. पस उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, तो कैसा था उनपर मेरा अज़ाब.

46 कहो, मैं तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूँ. यह कि तुम ख़ुदा के वास्ते खड़े हो जाओ, दो–दो और एक–एक, फिर सोचो (कि तुम्हारे साथी में आख़िर जुनून की कौनसी बात है?) तो तुम जानोगे कि तुम्हारे साथी में कोई जुनून नहीं है. **वह तो बस एक सख़्त अज़ाब से पहले तुम्हें डराने वाला है.** 47 कहो कि मैंने तुम से कुछ

मुआवज़ा माँगा हो तो वह तुम्हारा ही है. मेरा मुआवज़ा तो बस अल्लाह के ऊपर है. और वह हर चीज़ पर गवाह है.

48 कहो कि मेरा रब हक़ को (बातिल पर) मारेगा, वह छुपी चीज़ों को जानने वाला है. 49
कहो कि हक़ (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य) न आग़ाज़ करता है और न इआदा (पुनरावृत्ति).

50 **कहो कि अगर मैं गुमराही पर हूँ तो मेरी गुमराही का वबाल मुझ पर है और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो यह उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की बदौलत है जो मेरा रब मेरी तरफ़ भेज रहा है. बेशक वह सुनने वाला है, क़रीब है.**

नोटः– इंसान के लिए हिदायत का ज़रिया सिर्फ़ वही-ए-इलाही (यानी ख़ुदा की तरफ़ से आया हुआ संदेश) है. दूसरी कोई भी चीज़ इंसान के लिए हक़ीक़ी रहनुमाई का ज़रिया नहीं बन सकती, क्योंकि इंसान की हक़ीक़ी रहनुमाई सिर्फ़ इंसान का ख़ालिक़ ही कर सकता है.

51 और अगर तुम देखो, जब ये घबराए हुए होंगे. पस वे भाग न सकेंगे और क़रीब ही से
पकड़ लिए जाएँगे. 52 और वे कहेंगे कि हम उसपर ईमान लाए. और इतनी दूर से उनके लिए
उसका पाना कहाँ (यानी बदला पाने के दिन ईमान लाने का मौक़ा कहाँ?). 53 और इससे पहले
उन्होंने उसका इन्कार किया. और बिना देखे दूर जगह से बातें फेंकते रहे (यानी बेबुनियाद
अटकलपच्चू दौड़ाते रहे). 54 और उनमें व उनकी आरज़ू में आड़ कर दी जाएगी जैसा कि इससे
पहले उन जैसे (यानी उनके सहमार्गी) लोगों के साथ किया गया. वे बड़े धोखे वाले शक में पड़े रहे.

सूरह-35. फ़ातिर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है. फ़रिश्तों को
पैग़ामरसां (संदेशवाहक) बनाने वाला, जिनके पर हैं दो-दो और तीन-तीन और चार-चार. वह
पैदाइश में जो चाहे ज़्यादा कर देता है. बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है. 2 अल्लाह जो रहमत
लोगों के लिए खोले तो कोई उसका रोकने वाला नहीं. और जिसे वह रोक ले तो कोई उसे खोलने
वाला नहीं. और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है).

3 ऐ लोगो! अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो. क्या अल्लाह के सिवा कोई और

ख़ालिक़ है जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ देता हो. उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. तो तुम कहाँ से धोखा खा रहे हो. 4 और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएँ तो तुम से पहले भी बहुत से पैग़म्बर झुठलाए जा चुके हैं. और सारे मामले अल्लाह ही की तरफ़ रुजूअ (प्रवृत्त) होने वाले हैं.

5 **ऐ लोगो! बेशक अल्लाह का वादा बरहक़ है. तो दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें धोखे में न डाले.** **और न वह बड़ा धोखेबाज़ तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए.** 6 **बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम उसे दुश्मन ही समझो वह तो अपने गिरोह को इसीलिए बुलाता है कि वे दोज़ख़ वालों में से हो जाएँ.** 7 **जिन लोगों ने इन्कार किया उनके लिए सख़्त अज़ाब है. और जो ईमान लाए और नेक अमल किया उनके लिए माफ़ी है और बड़ा अज्र (प्रतिफल) है.**

नोटः– शैतान इंसान का सिर्फ़ दुश्मन और सिर्फ़ दुश्मन ही है. शैतान का मिशन ज़्यादा से ज़्यादा इंसानों को अपने साथ जहन्नम में ले जाने का मिशन है. शैतान चाहता है कि लोग ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसके अंजाम से बेख़बर रहें और दुनिया की वक़्ती रौनक़ों में गुम हो कर रह जाएँ. ऐसी सूरत में दाई का काम यह है कि इंसानों को शैतान की साज़िशों से आगाह करे और उन्हें ज़िंदगी की हक़ीक़त व उसका अंजाम याद दिलाए.

शैतान Anti-Dawat मिशन चला रहा है, दाई को दावत मिशन चलाना है. शैतान इन्सानों को जहन्नम की तरफ़ बुला रहा है, दाई को इन्सानों को जन्नत की तरफ़ बुलाना है.

8 **क्या ऐसा शख़्स जिसे उसका बुरा अमल अच्छा करके दिखाया गया, फिर वह उसे अच्छा समझने लगे,** **पस अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है. पस उनपर अफ़सोस करके तुम अपने को हलकान (व्यथित) न करो. अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं.**

नोटः– गुमराही कभी गुमराही के लेबल के साथ ज़ाहिर नहीं होती, यही वजह है कि इन्सान बुराई को अच्छा काम समझ कर करता है. शैतान इस मेहनत में लगा हुआ है कि वह बुराई को अच्छाई बताकर लोगों को गुमराह करे. इसमें इन्सान का यह इम्तिहान हो रहा है कि वह ज़ाहिर से आगे बढ़कर गुमराही को पहचान पाता है या नहीं.

9 और अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है. फिर वे बादल को उठाती हैं. फिर हम उसे एक मुर्दा ज़मीन (भूप्रदेश) की तरफ़ ले जाते हैं. पस हमने उससे उस ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद फिर ज़िंदा कर दिया. इसी तरह होगा दुबारा जी उठना. 10 जो शख़्स इज़्ज़त चाहता हो तो इज़्ज़त तमामतर अल्लाह के लिए है. उसकी तरफ़ पाकीज़ा (पावन) कलाम चढ़ता है और अमले-सालेह (सत्कर्म) उसे ऊपर उठाता है. और जो लोग बुरी तदबीरें कर रहे हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है. और उनकी तदबीरें नाबूद (विनष्ट) होकर रहेंगी.

11 और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया. फिर पानी की बूंद से, फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया. और कोई औरत न हामिला (गर्भवती) होती है और न (शिशु को) जन्म देती है, मगर उसके इल्म से. और न कोई उम्र वाला बड़ी उम्र पाता है और न किसी की उम्र घटती है, मगर वह एक किताब में दर्ज है. बेशक यह अल्लाह पर आसान है.

12 और दोनों दरिया यकसां (समान) नहीं. एक मीठा है प्यास बुझाने वाला, पीने के लिए ख़ुशगवार. और दूसरा खारी व कड़वा है. और तुम दोनों से ताज़ा गोश्त खाते हो और ज़ीनत की चीज़ निकालते हो जिसे पहनते हो. और तुम देखते हो जहाज़ों को कि वे उसमें फाड़ते हुए चलते हैं. ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र अदा करो. 13 वह दाख़िल करता है रात को दिन में और वह दाख़िल करता है दिन को रात में. और उसने सूरज और चांद को (अपने हुक्म के) ताबे करके (काम में लगा दिया है). हर एक चलता है एक मुक़र्रर वक़्त के लिए. यह अल्लाह ही तुम्हारा रब है, उसी के लिए बादशाही है. और उसके सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो वे खजूर की गुठली के एक छिलके के भी मालिक नहीं. 14 अगर तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे. और अगर वे सुनें तो वे तुम्हारी फ़रियादरसी नहीं कर सकते. और वे क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क का इन्कार करेंगे. और एक बाख़बर की तरह कोई तुम्हें नहीं बता सकता.

15 ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह तो बेनियाज़ (निस्पृह) है, तारीफ़ वाला है. 16 अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और एक नई मख़लूक़ ले आए. 17 और यह अल्लाह के लिए कुछ मुश्किल नहीं. 18 और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा. और अगर कोई भारी बोझ वाला अपना बोझ उठाने के लिए पुकारे तो उसमें से ज़रा भी न उठाया जाएगा, अगरचे वह क़रीबी संबंधी क्यों न हो. तुम तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बग़ैर देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं. और जो शख़्स पाक होता है, वह अपने लिए पाक होता है और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है.

19 और अंधा और आंखों वाला बराबर नहीं. 20 और न अंधेरा और न उजाला. 21 और न साया और न धूप. 22 और ज़िंदा और मुर्दा बराबर नहीं हो सकते. बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे

वह चाहता है. और तुम उन्हें सुनाने वाले नहीं बन सकते जो क़ब्रों में हैं. 23 तुम तो बस एक ख़बरदार करने वाले हो.

24 **हमने तुम्हें हक़ (सत्य) के साथ भेजा है, ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर. और कोई उम्मत ऐसी नहीं जिसमें कोई डराने वाला न आया हो.**

नोटः– इससे वाज़ेह है कि ख़ुदा चाहता है कि सारे इन्सान ख़ुदा के तख़्लिक़ी प्लॅन से आगाह कर दिए जाएँ. ताकि वे जान लें कि ज़िंदगी का अंजाम जन्नत व जहन्नम की शक्ल में सामने आने वाला है.

25 और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाते हैं तो इनसे पहले जो लोग हुए हैं, उन्होंने भी झुठलाया. उनके पास उनके पैग़म्बर खुले दलाइल और सहीफ़े (ग्रंथ) और रोशन किताब लेकर आए. 26 फिर जिन लोगों ने न माना उन्हें मैंने पकड़ लिया, तो देखो कि कैसा हुआ उनके ऊपर मेरा अज़ाब.

27 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा. फिर हमने उससे मुख़्तलिफ़ रंगों के फल पैदा कर दिए. और पहाड़ों में भी सफ़ेद और सुर्ख़ मुख़्तलिफ़ रंगों के टुकड़े हैं और गहरे स्याह भी. 28 और इसी तरह इंसानों और जानवरों और चौपायों में भी मुख़्तलिफ़ रंग के हैं. अल्लाह से उसके बंदों में से सिर्फ़ वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं. बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, बख़्शने वाला है.

29 जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से छुपे और खुले ख़र्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी मंद नहीं होगी, 30 ताकि अल्लाह उन्हें उनका पूरा अज्र दे. और उनके लिए अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा कर दे. बेशक वह बख़्शने वाला है, क़द्र करने वाला है. 31 और हमने तुम्हारी तरफ़ जो किताब 'वही' की है (उतारी है), वह हक़ है और उस (हक़) की तसदीक़ करने वाली है जो इसके पहले से मौजूद है. बेशक अल्लाह अपने बंदों की ख़बर रखने वाला है, देखने वाला है.

32 फिर हमने किताब का वारिस बनाया उन लोगों को जिन्हें हमने अपने बंदों में से चुन लिया. पस उनमें से कुछ अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं और उनमें से कुछ बीच की चाल पर हैं. और उनमें से कुछ अल्लाह की तौफ़ीक़ से भलाइयों में सबक़त (अग्रसरता) करने वाले हैं. यही सबसे बड़ा फ़ज़्ल है. 33 हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनमें ये लोग दाख़िल होंगे, वहाँ उन्हें सोने के

कंगन और मोती पहनाए जाएँगे, और वहाँ उनका लिबास रेशम होगा. 34 और वे कहेंगे, शुक्र है अल्लाह का जिसने हमसे ग़म को दूर किया. बेशक हमारा रब माफ़ करने वाला, क़द्र करने वाला है. 35 जिसने हमें अपने फ़ज़्ल से आबाद रहने के घर में उतारा, इसमें हमें न कोई मशक़्क़त पहुँचेगी और न कभी थकान लाहक़ होगी.

36 और जिन्होंने इन्कार किया उनके लिए जहन्नम की आग है, न उन्हें सज़ाए-मौत का फ़ैसला सुनाया जाएगा कि वे मर जाएँ और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जाएगा. हम हर मुन्किर को ऐसी ही सज़ा देते हैं.

37 **और वे लोग उसमें चिल्लाएंगे. ऐ हमारे रब! हमें निकाल ले. हम नेक अमल करेंगे, उससे मुख़्तलिफ़ जो हम किया करते थे. क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र न दी कि जिसे समझना होता वह समझ सकता. और तुम्हारे पास डराने वाला आया. अब चखो (मज़ा अपने इन्कार का और अब) ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं.**

नोटः- इंसान को दुनिया में ज़िंदगी सिर्फ़ एक बार मिलती है, यह पहला और आख़िरी मौक़ा है जिसके ज़रीए इंसान ख़ुदा का मतलूब इंसान या ग़ैर-मतलूब इंसान बन सकता है. यह मौक़ा गँवाने के बाद इंसान जिस मक़ाम (point) पर पहुँचेगा वह point of no-return, point of no-correction होगा, यानी वहाँ से कोई वापसी नहीं, कोई इसलाह का दूसरा मौक़ा नहीं. यह संगीन सुरतेहाल इस बात का तक़ाज़ा करती है कि दाई को इंसान की हर मुमकिन ख़ैरख़ाही करना चाहिए, ताकि यह पहला और आख़िरी मौक़ा गँवाने से पहले इंसान ज़िंदगी की हक़ीक़त जान लें, मक़सदे-हयात को समझ लें.

38 अल्लाह आसमानों और ज़मीन के ग़ैब (अदृश्य) को जानने वाला है. बेशक वह दिल की बातों से भी बाख़बर है. 39 वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में आबाद किया. तो जो शख़्स इन्कार करेगा, उसका इन्कार उसी पर पड़ेगा. और मुन्किरों के लिए उनका इन्कार, उनके रब के नज़दीक, नाराज़ी ही बढ़ने का सबब होता है. और मुन्किरों के लिए उनका इन्कार ख़सारे (घाटे) ही में इज़ाफ़ा करेगा.

40 कहो, ज़रा तुम देखो अपने उन शरीकों को जिन्हें तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो. मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में से क्या बनाया है. या उनकी आसमानों में कोई हिस्सेदारी है. या हमने उन्हें कोई किताब दी है तो वे उसकी किसी दलील पर हैं. बल्कि ये ज़ालिम एक दूसरे से सिर्फ़ धोखे की बातों का वादा कर रहे हैं. 41 बेशक अल्लाह ही आसमानों और ज़मीनों को थामे हुए है कि वे टल न जाएँ. और अगर वे टल जाएँ तो उसके सिवा कोई और उन्हें थाम नहीं सकता. बेशक वह तहम्मुल (उदारता) वाला है, बख़्शने वाला है.

42 **और उन्होंने अल्लाह की ताकीदी क़समें (यानी जोश व क़रोश के साथ पुख़्ता क़समें) खाई थीं कि अगर उनके पास कोई डराने वाला आया तो वे हर एक उम्मत से ज़्यादा हिदायत क़बूल करने वाले होंगे. फिर जब उनके पास एक डराने वाला आया तो सिर्फ़ उनकी बेज़ारी (अरुचि) ही को तरक़्क़ी हुई,**

नोटः– पैग़ंबर इंसानों को ख़ुदा के तख़्लिक़ी मंसूबे से आगाह करने के लिए आते थे. अब चूंकि पैग़ंबर आने वाले नहीं है, अब यह पैग़ंबर वाले काम की ज़िम्मेदारी **'उम्मते–मुहम्मदी'** की है. अगर उम्मत ने यह काम अंजाम नहीं दिया तो कल अल्लाह की अदालत में वे लोग जिन तक अल्लाह का पैग़ाम नहीं पहुँचा, उम्मत के ख़िलाफ़ यह शिकायत कर सकते हैं कि **अगर हम तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचता तो हम ज़रूर उसे अपनाते.**

43 ज़मीन में अपने को बड़ा समझने की वजह से, और उनकी बुरी तदबीरों को. और बुरी तदबीरों का वबाल तो बुरी तदबीर करने वालों ही पर पड़ता है. तो क्या ये उसी दस्तूर के मुंतज़िर हैं जो अगले लोगों के बारे में ज़ाहिर हुआ. पस तुम ख़ुदा के दस्तूर में न कोई तब्दीली पाओगे और न ख़ुदा के दस्तूर को टलता हुआ पाओगे. 44 क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा हुआ अंजाम उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़रे हैं, और वे क़ुव्वत (शक्ति) में उनसे बढ़े हुए थे. और ख़ुदा ऐसा नहीं कि कोई चीज़ उसे आजिज़ (निर्बल) कर दे, न आसमानों में और न ज़मीन में. बेशक वह इल्म वाला है, क़ुदरत वाला है.

45 और अगर अल्लाह लोगों के आमाल पर उन्हें पकड़ता तो ज़मीन पर वह एक जानदार को भी न छोड़ता. लेकिन वह उन्हें एक मुक़र्रर मुद्दत तक मोहलत देता है. फिर जब उनकी मुद्दत पूरी हो जाएगी तो अल्लाह अपने बंदों को ख़ुद देखने वाला है.

सूरह–36. या० सीन०

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 या० सीन०. 2 क़सम है बाहिकमत (ज्ञानपूर्ण) क़ुरआन की. 3 बेशक तुम रसूलों में से
हो. 4 निहायत सीधे रास्ते पर. 5 यह ख़ुदाए-अज़ीज़ (प्रभुत्वशाली) व रहीम (दयावान) की तरफ़
से उतारा गया है. 6 ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके बाप-दादाओं को नहीं डराया गया.
पस वे बेख़बर हैं.

7 उनमें से अकसर लोगों पर बात साबित हो चुकी है तो वे ईमान नहीं लाएँगे. 8 हमने उनकी
गरदनों में तौक़ डाल दिए हैं सो वे ठोडियों तक हैं, पस उनके सिर ऊंचे हो रहे हैं. 9 और हमने एक
आड़ उनके सामने कर दी है और एक आड़ उनके पीछे कर दी. फिर हमने उन्हें ढाँक दिया तो उन्हें
दिखाई नहीं देता. 10 और उनके लिए यकसां (समान) है, तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वे
ईमान नहीं लाएँगे. 11 तुम तो सिर्फ़ उस शख़्स को डरा सकते हो जो नसीहत पर चले और ख़ुदा से
डरे, बिना देखे. तो ऐसे शख़्स को माफ़ी की और बाइज़्ज़त सवाब की बशारत (शुभ सूचना) दे दो.

12 यक़ीनन हम मुरदों को ज़िंदा करेंगे. और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा और जो
उन्होंने पीछे छोड़ा. और हर चीज़ हमने दर्ज कर ली है एक खुली किताब में 13 और उन्हें बस्ती
वालों की मिसाल सुनाओ, जबकि उसमें रसूल आए.

14 जबकि हमने उनके पास दो रसूल भेजे तो उन्होंने दोनों को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से
उनकी ताईद की, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं. 15 लोगों ने कहा कि तुम तो हमारे
ही जैसे बशर (इंसान) हो और रहमान ने कोई चीज़ नहीं उतारी है, तुम महज़ झूठ बोलते हो. 16
उन्होंने कहा कि हमारा रब जानता है कि हम बेशक तुम्हारे पास भेजे गए हैं.

17 और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ (ख़ुदा का पैग़ाम) वाज़ेह तौर पर पहुँचा देना है.

नोटः– अब पैग़ाम पहुँचाने का यह ज़िम्मा **'उम्मते मुहम्मदी'** पर है. दौरे-रिसालत में इंसानों तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाना जितना ज़रूरी था, दौरे-रिसालत के बाद के इंसानों तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाना उतना ही ज़रूरी है, क्योंकि ख़ुदा का पैग़ाम जिस मसले से इंसान को आगाह करता है, वह क़यामत तक के हर इंसान से जुड़ा हुआ मसला है.

18 **लोगों ने कहा कि हम तो तुम्हें मनहूस समझते हैं, अगर तुम लोग बाज़ न आए तो हम तुम्हें संगसार करेंगे और तुम्हें हमारी तरफ़ से सख़्त तकलीफ़ पहुँचेगी.**

नोटः– पैग़ंबरों ने दौरे-जबर (यानी दौरे-बादशाहत) में दावती काम अंजाम दिया, जबकि उन्हें बहुत सख़्त हालात में यह काम करना पड़ा. मौजूदा ज़माना पूरे माने में दौरे-आज़ादी है. अल्लाह तआला ने ख़त्मे-नबुवत के बाद ज़माने में बहुत ज़्यादा तब्दीली की, अल्लाह तआला ख़त्मे-नबुवत के बाद आम अहले ईमान पर यह ज़िम्मेदारी डालने वाला था तो उसने ज़माने को इस तरह बदल दिया कि कोई भी अहले-ईमान बाआसानी दावती ज़िम्मेदारी को अदा कर सके. आज हर इन्सान को कोई भी मज़हब इख़्तियार करने और उसकी तब्लीग़ करने की पूरी आज़ादी है. ऐसा ज़माना तारीख़ में पहली बार आया है. तो अब अहले-ईमान को चाहिए कि अपनी दावती ज़िम्मेदारी अदा करने के लिए अपने आपको झोंक दे.

19 उन्होंने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है, क्या यह बातें सिर्फ़ तुम इसलिए करते हो कि तुम्हें नसीहत की गई. बल्कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो.

20 **और शहर के दूर मक़ाम से एक शख़्स दौड़ता हुआ आया. उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम, तुम रसूलों की पैरवी करो!** 21 **उन लोगों की पैरवी करो जो तुम से कोई बदला नहीं माँगते. और वे ठीक रास्ते पर हैं.**

नोटः– रसूलों की पैरवी करने वाला वही इंसान है जो दूसरों को रसूलों की पैरवी की तरफ़ बुलाए.

पारा – 23

22 और मैं क्यों न इबादत करूँ उस ज़ात की जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे. 23 क्या मैं उसके सिवा दूसरों को माबूद (पूज्य) बनाऊँ. अगर रहमान मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आएगी और न वे मुझे छुड़ा सकेंगे. 24 बेशक उस वक़्त मैं एक खुली हुई गुमराही में हूँगा. 25 **मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो तुम भी मेरी बात सुन लो.** 26 इरशाद हुआ कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ.

उसने कहा, काश मेरी क़ौम जानती 27 **कि मेरे रब ने मुझे बख़्श दिया और मुझे इज़्ज़तदार लोगों में शामिल कर दिया.**

नोटः- 20, 21, 22, 23, 24, 25 यह आयतें बतातीं हैं कि सच्चा ईमान वही है जो इंसान को उस ईमान का दाई बना देता है जिस की उसे दरयाफ़्त हुई है. 26 और 27 यह आयतें बतातीं हैं कि दावत का बदला जन्नत है, दावत का बदला ख़ुदा की बख़्शीश है, दावत का बदला यह है कि ख़ुदा उस बंदे को हमेशा के लिए इज़्ज़तदार लोगों में शामिल कर दे.

दावत से मदू को फ़ायदा हो या न हो, दाई का फ़ायदा यक़ीनी है. मदू को फ़ायदा सिर्फ़ उस वक़्त होगा, जब मदू हक़ जानने के मामले में संजीदा होगा.

इंसान को ख़ालिक़ ने अपनी इबादत के लिए पैदा किया है. इंसान इस दुनिया में हालते-इम्तिहान में है. इम्तहान की मुद्दत ख़त्म होने पर उसे ख़ालिक़ की तरफ़ लौटना है और अपने ज़िंदगी का हिसाब देना है. इंसान की बेहतरी इसी में है कि वह ख़ालिक़ का सच्चा बंदा बन जाए, अगर ख़ालिक़ बंदे की पकड़ फ़रमाए तो उसे ख़ालिक़ से कोई बचा नहीं सकता.

28 और उसके बाद उसकी क़ौम पर हमने आसमान से कोई फ़ौज नहीं उतारी, और हम
फ़ौज नहीं उतारा करते. 29 बस एक धमाका हुआ तो यकायक वे सब बूझकर रह गए. 30
**अफ़सोस है बंदों के ऊपर, जो रसूल भी उनके पास आया वे उसका मज़ाक़
ही उड़ाते रहे.** 31 क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं.
अब वे उनकी तरफ़ वापस आने वाली नहीं. 32 और उनमें कोई ऐसा नहीं जो इकट्ठा होकर हमारे
पास हाज़िर न किया जाए.

33 और एक निशानी उनके लिए मुर्दा ज़मीन है. उसे हमने ज़िंदा किया और उससे हमने
ग़ल्ला निकाला. पस वे उसमें से खाते हैं. 34 और उसमें हमने खजूर के और अंगूर के बाग़ बनाए.
और उसमें हमने चशमे (स्रोत) जारी किए. 35 ताकि लोग उसके फल खाएं. और उसे उनके हाथों
ने नहीं बनाया. तो क्या वे शुक्र नहीं करते. 36 पाक है वह ज़ात जिसने हर चीज़ के जोड़े बनाए,
उनमें से भी जिन्हें ज़मीन उगाती है और ख़ुद उनके अंदर से भी. और उनमें से भी जिन्हें वे नहीं जानते.

37 और एक निशानी उनके लिए रात है, हम उससे दिन को खींच लेते हैं तो वे अंधेरे में रह
जाते हैं. 38 और सूरज, वह उसके लिए तय की हुई राह पर चलता रहता है. यह अज़ीज़ व
अलीम (प्रभुत्वशाली और ज्ञानवान) का बांधा हुआ हिसाब है. 39 और चांद के लिए हमने
मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं, यहाँ तक कि वह ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी शाख़. 40 न सूरज

के वश में है कि वह चांद को पकड़ ले और न रात दिन से पहले आ सकती है. और सब एक–एक दायरे में तैर रहे हैं.

41 और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनकी नस्ल को भरी हुई कश्ती में सवार
किया. 42 और हमने उनके लिए उसी के मानिंद और चीज़ें पैदा कीं जिनपर वे सवार होते हैं. 43
और अगर हम चाहें तो उन्हें ग़र्क़ कर दें, फिर न कोई उनकी फ़रियाद सुनने वाला हो और न वे
बचाए जा सकें. 44 मगर यह हमारी रहमत है और उन्हें एक निर्धारित वक़्त तक फ़ायदा देना है.

45 और जब उनसे कहा जाता है कि उससे डरो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है,
ताकि तुम पर रहम किया जाए. 46 और उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी भी उनके पास
ऐसी नहीं आती जिससे वे बेरुख़ी (उपेक्षा) न करते हों. 47 और जब उनसे कहा जाता है कि
अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो तो जिन लोगों ने इन्कार किया वे ईमान लाने वालों से कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलाएँ जिन्हें अल्लाह चाहता तो वह उन्हें खिला देता. तुम लोग तो खुली गुमराही में हो.

48 और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो. 49 ये लोग बस एक
चिंघाड़ की राह देख रहे हैं जो उन्हें आ पकड़ेगी और वे झगड़ते ही रह जाएँगे. 50 फिर वे न कोई
वसीयत कर पाएंगे और न अपने लोगों की तरफ़ लौट सकेंगे. 51 और सूर फूंका जाएगा तो यकायक
वे क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ चल पड़ेंगे. 52 वे कहेंगे, हाय हमारी बदबख़्ती, हमारी क़ब्र से
किसने हमें उठाया- यह वही है जिसका रहमान ने वादा किया था और पैग़म्बरों ने सच कहा था.
53 बस वह एक चिंघाड़ होगी, फिर यकायक सब जमा होकर हमारे पास हाज़िर कर दिए जाएँगे.

54 पस आज के दिन किसी शख़्स पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा. और तुम्हें वही बदला मिलेगा जो
तुम करते थे. 55 बेशक जन्नत के लोग आज अपने मशग़लों में ख़ुश होंगे (यानी हर्षमयी activities
में व्यस्त होंगे). 56 और उनकी बीवियां, सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए हुए बैठी होंगी.

57 **उनके लिए वहाँ मेवे होंगे और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे माँगेंगे.**

नोटः– इंसान को मनचाही ज़िंदगी सिर्फ़ आख़िरत में मिल सकती है. सच्ची ख़ुशी और मसर्रत की ज़िंदगी इस दुनिया में मुमकिन ही नहीं. आख़िरत में सच्ची ख़ुशियों की अब्दि ज़िंदगी पाने के लिए मौजूदा दुनिया में इंसान को रब चाही ज़िंदगी गुज़ारना होगा.

58 उन्हें सलाम कहलाया जाएगा मेहरबान रब की तरफ़ से. 59 और ऐ मुजरिमो! आज
तुम अलग हो जाओ.

60 ऐ औलादे आदम! क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना. बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है. 61 और यह कि तुम मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है.

नोटः- ख़ुदा का यह मुख़ातिबत आदम की सारी औलाद से है. इंसानों का ख़ुदा उनसे कह रहा है कि वह कौनसा रास्ता है, जो सिराते-मुस्तक़ीम है, जिस पर उन्हें चलना है. और कौनसा रास्ता गुमराही का रास्ता है जिससे उन्हें बचना है.

62 और उसने तुम में से बहुत से गिरोहों को गुमराह कर दिया. तो क्या तुम समझते नहीं थे.
63 यह है जहन्नम जिसका तुम से वादा किया जाता था. 64 अब अपने कुफ़्र के बदले में इसमें
दाख़िल हो जाओ. 65 आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और
उनके पांव गवाही देंगे जो कुछ ये लोग करते थे.

66 और अगर हम चाहते तो उनकी आंखों को मिटा देते. फिर वे रास्ते की तरफ़ दौड़ते तो
उन्हें कहाँ नज़र आता. 67 और अगर हम चाहते तो उनकी जगह ही पर उनकी सूरतें बदल देते तो
वे न आगे बढ़ सकते और न पीछे लौट सकते. 68 और हम जिसकी उम्र ज़्यादा कर देते हैं तो उसे
उसकी पैदाइश में पीछे लौटा देते हैं, तो क्या वे समझते नहीं.

69 और हमने उसे शेर(-शायरी) नहीं सिखाई और न यह उसके लायक़ है. यह तो सिर्फ़ एक नसीहत है और वाज़ेह (सुस्पष्ट) क़ुरआन है 70 ताकि वह उस शख़्स को ख़बरदार कर दे जो ज़िंदा हो और इन्कार करने वालों पर हुज्जत क़ायम हो जाए.

नोटः- यह क़ुरआन कोई शेर-शायरी नहीं है, बल्कि यह क़ुरआन सारे इन्सानों के लिए संजीदा नसीहत है, बिल्कुल वाज़ेह अंदाज़ में नसीहत. क़ुरआन का मक़सद यह है कि उसके ज़रिये से हक़ के तालिब हक़ को पालें और हक़ का इन्कार करने वालों पर हुज्जत क़ायम हो जाए. कौन हक़ का तालिब है और कौन हक़ का इन्कार करनेवाला है यह छटनी उमूमी दावत के बग़ैर मुमकिन नहीं. उमूमी दावत के बाद ही हक़ का तालिब हक़ को पा लेगा और इन्कार करने वाले पर हुज्जत क़ायम हो जाएगी, यानी वह यह कह न सकेगा कि मुझ तक हक़ का पैग़ाम (यानी क़ुरआन) पहुँचा ही नहीं.

71 क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने अपने हाथ की बनाई हुई चीज़ों में से उनके लिए मवेशी पैदा किए, तो वे उनके मालिक हैं. 72 और हमने उन्हें उनका ताबे (अधीन) बना दिया, तो उनमें से कोई उनकी सवारी है और किसी को वे खाते हैं. 73 और उनके लिए उनमें फ़ायदे हैं और पीने की चीज़ें भी, तो क्या वे शुक्र नहीं करते. 74 और उन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) बनाए कि शायद उनकी मदद की जाए. 75 वे उनकी मदद न कर सकेंगे, बल्कि वे उनकी फ़ौज होकर हाज़िर किए जाएँगे. 76 तो उनकी बात तुम्हें ग़मगीन न करे. हम जानते हैं जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं.

77 क्या इंसान ने नहीं देखा कि हमने उसे एक बूंद से पैदा किया, फिर वह सरीह झगड़ालू बन गया. 78 और वह हम पर मिसाल चसपां करता है और वह अपनी पैदाइश को भूल गया. वह कहता है कि हड्डियों को कौन ज़िंदा करेगा, जबकि वे बोसीदा हो गई होंगी. 79 कहो, उन्हें वही ज़िंदा करेगा जिसने उन्हें पहली मर्तबा पैदा किया. और वह सब तरह से पैदा करना जानता है. 80 वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे भरे दरख़्त से आग पैदा कर दी. फिर तुम उससे आग जलाते हो. 81 क्या जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वह इसपर क़ादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा कर दे. हां वह क़ादिर है. और वही है असल पैदा करने वाला, जानने वाला. 82 उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो वह कहता है कि हो जा तो वह हो जाती है. 83 पस पाक है वह ज़ात जिसके हाथ में हर चीज़ का इख़्तियार है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे.

सूरह–37. अस–साफ़्फ़ात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है क़तार दर क़तार सफ़ बांधने वाले फ़रिश्तों की. 2 फिर डांटने वालों की झिड़क कर. 3 फिर उनकी जो नसीहत सुनाने वाले हैं. 4 कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) एक ही है. 5 आसमानों और ज़मीन का रब और जो कुछ उनके दरमियान है और सारे मशरिक़ों (पूर्वी दिशाओं) का रब.

6 हमने आसमाने–दुनिया को सितारों की ज़ीनत (शोभा) से सजाया है. 7 और हर शैतान सरकश से उसे महफ़ूज़ किया है. 8 वे मलाए–आला (आकाश लोक) की तरफ़ कान नहीं लगा सकते और वे हर तरफ़ से मारे जाते हैं, 9 भगाने के लिए. और उनके लिए एक दायमी (स्थाई) अज़ाब है. 10 मगर जो शैतान कोई बात उचक ले तो एक दहकता हुआ शोला उसका पीछा करता है.

11 पस उनसे पूछो कि उनकी पैदाइश ज़्यादा मुश्किल है या उन चीज़ों की जो हमने पैदा की हैं. हमने उन्हें चिपकती मिट्टी से पैदा किया है. 12 बल्कि तुम तअज्जुब करते हो (यानी तुम ख़ुदा

की अज़मत पर हैरत करते हो) और वे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं. 13 और जब उन्हें समझाया जाता है तो वे समझते नहीं. 14 और जब वे कोई निशानी देखते हैं तो वे उसे हंसी में टाल देते हैं. 15 और कहते हैं कि यह तो बस खुला हुआ जादू है. 16 क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियां बन जाएँगे तो फिर हम उठाए जाएँगे. 17 और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी. 18 कहो कि हां, और तुम ज़लील भी होंगे.

19 पस वह तो एक झिड़की (यानी एक ज़ोर की आवाज़) होगी, फिर उसी वक़्त वे देखने लगेंगे 20 और वे कहेंगे कि हाय हमारी कमबख़्ती यह तो जज़ा (बदले) का दिन है. 21 यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते थे. 22 जमा करो उन्हें जिन्होंने ज़ुल्म किया और उनके साथियों को और उन माबूदों को जिनकी वे इबादत करते थे, 23 अल्लाह के सिवा, फिर उन सबको दोज़ख़ का रास्ता दिखाओ 24 और उन्हें ठहराओ, उनसे कुछ पूछना है. 25 तुम्हें क्या हुआ कि तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते. 26 बल्कि आज तो वे फ़रमांबरदार हैं.

27 और वे एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर सवाल व जवाब करेंगे. 28 कहेंगे, तुम हमारे पास दाईं तरफ़ से आते थे. 29 वे जवाब देंगे, बल्कि तुम ख़ुद ईमान लाने वाले नहीं थे. 30 और हमारा तुम्हारे ऊपर कोई ज़ोर नहीं था, बल्कि तुम ख़ुद ही सरकश लोग थे. 31 पस हम सब पर हमारे रब की बात पूरी होकर रही, हमें उसका मज़ा चखना ही है. 32 हमने तुम्हें गुमराह किया, हम ख़ुद भी गुमराह थे. 33 पस वे सब उस दिन अज़ाब में मुशतरक (सहभागी) होंगे.

34 हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं. 35 यही वे लोग थे, जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं तो वे तकब्बुर (घमंड) करते थे. 36 और वे कहते थे कि क्या हम एक दीवाने शायर के कहने से अपने माबूदों को छोड़ दें. 37 बल्कि वह हक़ लेकर आया है. और वह रसूलों की पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) का मिस्दाक़ (पुष्टि रूप) है. 38 बेशक तुम्हें दर्दनाक अज़ाब चखना होगा. 39 और तुम्हें उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे.

40 मगर जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं. 41 उनके लिए मालूम रिज़्क़ होगा. 42 (जैसे) मेवे (वग़ैरा), और वे निहायत इज़्ज़त से होंगे, 43 आराम के बाग़ों में. 44 तख़्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे. 45 उनके पास ऐसा प्याला लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा. 46 साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पीने वालों के लिए लज़्ज़त. 47 न उसमें कोई ज़रर (हानिकारकता) होगा और न उससे अक़्ल ख़राब होगी. 48 और उनके पास नीची निगाह वाली, बड़ी आंखों वाली औरतें होंगी. 49 गोया कि वे अंडे हैं जो छुपा कर रखे गए हों.

50 फिर जन्नती लोग एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बात करेंगे. 51 उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक मुलाक़ाती था. 52 वह कहा करता था कि क्या तुम भी तसदीक़

(पुष्टि) करने वालों में से हो.
53 क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाएँगे तो क्या हमें जज़ा मिलेगी.
54 वह कहेगा, क्या तुम उसे झांक कर देखोगे.
55 तो वह झांकेगा और उसे जहन्नम के बीच में देखेगा.
56 कहेगा कि ख़ुदा की क़सम तू तो मुझे तबाह कर देने वाला था.
57 और अगर मेरे रब का फ़ज़ल न होता तो मैं भी उन्हीं लोगों में होता जो पकड़े हुए आए हैं.
58 क्या अब हमें मरना नहीं है,
59 मगर पहली बार जो हम मर चुके और अब हमें अज़ाब न होगा.

60 **बेशक यही बड़ी कामयाबी है (यानी आख़िरत की कामयाबी).**
61 **ऐसी ही कामयाबी के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए.**

नोटः– आख़िरत की कामयाबी ही कामयाबी है, उसके मुक़ाबले में दुनिया की कामयाबी बज़ाहिर कितनी ही बड़ी हो, कितनी ही पुरकशीश हो, कितनी ही पुररौनक़ हो सिर्फ़ धोका है और धोका! यह बात ख़ुद इंसान का ख़ालिक़ कह रहा है. यह बात दुनिया का ख़ालिक़ कह रहा है. ख़ालिक़ के इस बयान की रोशनी में लोगों को अपना हिसाब करना चाहिए कि वह किस कामयाबी को पाने के लिए दौड़–धूप कर रहे हैं. किस कामयाबी को पाने के लिए उन्होंने अपने आपको झोंक दिया है.

62 यह ज़ियाफ़त (सत्कार) अच्छी है या ज़क़्क़ूम का दरख़्त.
63 हमने उसे ज़ालिमों के लिए फ़ितना बनाया है.
64 वह एक दरख़्त है जो दोज़ख़ की तह से निकलता है.
65 उसका ख़ोशा ऐसा है जैसे शैतानों के सर.
66 तो वे लोग उससे खाएंगे. फिर उसी से पेट भरेंगे.
67 फिर उन्हें खौलता हुआ पानी मिलाकर दिया जाएगा.
68 फिर उनकी वापसी दोज़ख़ ही की तरफ़ होगी.
69 उन्होंने अपने बाप–दादा को गुमराही में पाया.
70 फिर वे भी उन्हीं के क़दम–बक़दम दौड़ते रहे,
71 और उनसे पहले भी जो लोग गुज़रे उनमें अकसर गुमराह थे.
72 और हमने उनमें भी डराने वाले भेजे.
73 तो देखो, उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जिन्हें डराया गया था.
74 मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे थे.

75 और हमें नूह ने पुकारा तो हम क्या ख़ूब पुकार सुनने वाले हैं.
76 और हमने उसे और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से बचा लिया.
77 और हमने उसकी नस्ल को बाक़ी रहने वाला बनाया.
78 और हमने उसके तरीक़े पर बाद आने वालों में से एक गिरोह को छोड़ा.
79 सलाम है नूह पर तमाम दुनिया वालों में.
80 हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं.
81 बेशक वह

हमारे मोमिन बंदों में से था. 82 फिर हमने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया (और उसे बचा लिया).

83 और उसी के तरीक़े वालों में से इब्राहीम भी था. 84 जबकि वह आया अपने रब के पास क़ल्बे-सलीम (पाक दिल) के साथ. 85 जब उसने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो. 86 क्या तुम अल्लाह के सिवा मनगढ़त माबूदों को चाहते हो 87 तो ख़ुदावंदे-आलम के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है.

88 फिर इब्राहीम ने सितारों पर एक नज़र डाली. 89 पस कहा कि मैं बीमार हूँ. 90 फिर वे लोग उसे छोड़कर चले गए. 91 तो वह उनके बुतों में घुस गया, कहा कि क्या तुम खाते नहीं हो. 92 तुम्हें क्या हुआ कि तुम कुछ बोलते नहीं. 93 फिर उन्हें मारा पूरी क़ुव्वत के साथ. 94 फिर लोग उसके पास दौड़े हुए आए. 95 इब्राहीम ने कहा, क्या तुम लोग उन चीज़ों को पूजते हो जिन्हें ख़ुद तराशते हो. 96 और अल्लाह ही ने पैदा किया है तुम्हें भी और उन चीज़ों को भी जिन्हें तुम बनाते हो. 97 उन्होंने कहा, इसके लिए एक मकान बनाओ फिर इसे दहकती आग में डाल दो. 98 पस उन्होंने उसके ख़िलाफ़ एक कार्रवाई करनी चाही तो हमने उन्हीं को नीचा कर दिया. 99 और उसने कहा कि मैं अपने रब की तरफ़ जा रहा हूँ, वह मेरी रहनुमाई फ़रमाएगा. 100 ऐ मेरे रब! मुझे नेक औलाद अता फ़रमा. 101 तो हमने उसे एक बुर्दबार (संयमी) लड़के की बशारत (शुभ सूचना) दी.

102 पस जब वह उसके साथ चलने फिरने की उम्र को पहुँचा, उसने कहा कि ऐ मेरे बेटे! मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि तुम्हें ज़बह कर रहा हूँ तो तुम सोच लो कि तुम्हारी क्या राय है. उसने कहा कि ऐ मेरे बाप! आपको जो हुक्म दिया जा रहा है उसे कर डालिए, इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएंगे. 103 पस जब दोनों मतीअ (आज्ञाकारी) हो गए और इब्राहीम ने उसे माथे के बल डाल दिया. 104 और हमने उसे आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम! 105 तुमने ख़्वाब को सच कर दिखाया. बेशक हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं. 106 यक़ीनन यह एक खुली हुई आज़माइश थी 107 और हमने एक बड़ी क़ुर्बानी के एवज़ उसे छुड़ा लिया. 108 और हमने उस(की राह) पर बाद वालों में से एक गिरोह को छोड़ा. 109 सलामती हो इब्राहीम पर. 110 हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं. 111 बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था. 112 और हमने उसे इस्हाक़ की ख़ुशख़बरी दी, एक नबी सालेहीन (नेकों) में से. 113 और हमने उसे और इस्हाक़ को बरकत दी. और उन दोनों की नस्ल में अच्छे भी हैं और ऐसे भी जो अपने नफ़्स पर सरीह ज़ुल्म करने वाले हैं.

114 और हमने मूसा और हारून पर एहसान किया. 115 और उन्हें और उनकी क़ौम को एक बड़ी मुसीबत से नजात दी. 116 और हमने उनकी मदद की तो वही ग़ालिब आने वाले बने.

117 और हमने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी. 118 और हमने उन दोनों को सीधा रास्ता दिखाया. 119 और हमने उनके तरीक़े पर बाद वालों में से एक गिरोह को छोड़ा. 120 सलामती हो मूसा और हारून पर. 121 हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं. 122 बेशक वे दोनों हमारे मोमिन बंदों में से थे.

123 और इलियास भी पैग़म्बरों में से था. 124 जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम डरते नहीं. 125 क्या तुम बअल (नामी बुत) को पुकारते हो और बेहतरीन ख़ालिक़ को छोड़ देते हो, 126 अल्लाह को जो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप-दादा का भी. 127 पस उन्होंने उसे झुठलाया तो वे पकड़े जाने वालों में से होंगे. 128 मगर जो अल्लाह के ख़ास बंदे थे. 129 और हमने उसके तरीक़े पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा. 130 सलामती हो इलियास पर. 131 हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं. 132 बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था.

133 और बेशक लूत भी पैग़म्बरों में से था. 134 जबकि हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी. 135 मगर एक बुढ़िया जो पीछे रह जाने वालों में से थी. 136 फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया. 137 और तुम उनकी बस्तियों पर गुज़रते हो सुबह को भी 138 और रात को भी, तो क्या तुम नहीं समझते.

139 और बेशक यूनुस भी रसूलों में से था. 140 जबकि वह भाग कर भरी हुई कश्ती पर पहुँचा. 141 फिर क़ुरआ डाला गया (क़ुरआ डालना यानी कई में से एक का चयन करने की एक पद्धति है), तो वही ख़तावार निकला. 142 फिर उसे मछली ने निगल लिया. और वह अपने को मलामत कर रहा था. 143 पस अगर वह तस्बीह करने वालों में से न होता 144 तो लोगों के उठाए जाने के दिन तक उसके पेट ही में रहता. 145 फिर हमने उसे एक मैदान में डाल दिया और वह निढाल था. 146 और हमने उसपर एक बेलदार दरख़्त उगा दिया. 147 और हमने उसे एक लाख या उससे ज़्यादा लोगों की तरफ़ भेजा. 148 फिर वे लोग ईमान लाए तो हमने उन्हें फ़ायदा उठाने दिया एक मुद्दत तक.

149 पस उनसे पूछो क्या तुम्हारे रब के लिए बेटियाँ हैं और उनके लिए बेटे. 150 क्या हमने फ़रिश्तों को औरत बनाया है और (ऐसा कहने वाले, क्या हमारे बनाने को) देख रहे थे? 151 सुन लो, ये लोग सिर्फ़ मनगढ़त के तौर पर ऐसा कहते हैं 152 कि अल्लाह औलाद रखता है और यक़ीनन वे झूठे हैं. 153 क्या अल्लाह ने बेटों के मुक़ाबले में बेटियाँ पसंद की हैं. 154 तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा हुक्म लगा रहे हो? 155 फिर क्या तुम सोच से काम नहीं लेते? 156 क्या तुम्हारे पास कोई वाज़ेह दलील है? 157 तो अपनी किताब लाओ अगर तुम सच्चे हो.

158 उन्होंने ख़ुदा और जिन्नात में भी रिश्तेदारी क़रार दी है. और जिन्नों को मालूम है कि

यक़ीनन वे पकड़े हुए आएंगे. 159 अल्लाह पाक है उन बातों से जो ये बयान करते हैं. 160 मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं. 161 पस तुम और जिनकी तुम इबादत करते हो, 162 ख़ुदा से किसी को फेर नहीं सकते. 163 मगर उसे जो जहन्नम में पड़ने वाला है. 164 और (फ़रिश्तों ने कहा,) हम में से हर एक का एक मुअय्यन (निश्चित) मक़ाम है. 165 और हम ख़ुदा के हुज़ूर बस सफ़बस्ता (पंक्तिबद्ध) रहने वाले हैं. 166 और हम उसकी तस्बीह करने वाले हैं.

167 और ये लोग कहा करते थे 168 कि अगर हमारे पास पहलों की कोई तालीम होती 169 तो हम अल्लाह के ख़ास बंदे होते. 170 फिर उन्होंने उसका इन्कार कर दिया तो अनक़रीब वे जान लेंगे. 171 और अपने भेजे हुए बंदों के लिए हमारा यह फ़ैसला पहले ही हो चुका है. 172 कि बेशक वही ग़ालिब किए जाएँगे. 173 और हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहने वाला है. 174 तो कुछ मुद्दत तक उनसे रुख़ फेर लो 175 और देखते रहो, अनक़रीब वे भी देख लेंगे.

176 क्या वे हमारे अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं. 177 पस जब वह उनके सहन (आंगन) में उतरेगा तो बड़ी ही बुरी होगी उन लोगों की सुबह जिन्हें उससे डराया जा चुका है. 178 तो कुछ मुद्दत के लिए उनसे रुख़ फेर लो. 179 और देखते रहो, अनक़रीब वे ख़ुद देख लेंगे. 180 पाक है तेरा रब, इज़्ज़त का मालिक, उन बातों से जो ये लोग बयान करते हैं. 181 और सलाम है पैग़म्बरों पर. 182 और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का.

सूरह–38. सॉद०

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 सॉद०. क़सम है नसीहत वाले क़ुरआन की. 2 बल्कि जिन लोगों ने इन्कार किया, वे घमंड और ज़िद में हैं. 3 उनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं, तो वे पुकारने लगे और वह वक़्त बचने का नहीं था.

4 और उन लोगों ने तअज्जुब किया कि उनके पास उनमें से एक डराने वाला आया. और इन्कार करने वालों ने कहा कि यह जादूगर है, झूठा है. 5 क्या उसने इतने माबूदों (पूज्यों) की जगह एक माबूद कर दिया, यह तो बड़ी अजीब बात है. 6 और उनके सरदार उठ खड़े हुए कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, यह कोई मतलब की बात है. 7 हमने यह बात पिछले मज़हब में नहीं सुनी, यह सिर्फ़ एक बनाई बात है. 8 क्या हम सब में से इसी शख़्स पर कलामे–इलाही नाज़िल किया गया. बल्कि ये लोग मेरी याददिहानी की तरफ़ से शक में हैं. बल्कि उन्होंने अब तक मेरे अज़ाब का मज़ा नहीं चखा.

9 क्या तेरे रब की रहमत के ख़ज़ाने उनके पास हैं जो ज़बरदस्त है, फ़य्याज़ (दाता) है. 10

क्या आसमानों और ज़मीन और उनके दरमियान की चीज़ों की बादशाही उनके इख़्तियार में है.
फिर वे सीढ़ियां लगाकर चढ़ जाएँ (फिर वे उनके लिए मुमकिन रास्तों का इस्तेमाल करते हुए
आसमान की तरफ़ चढ़ते क्यों नहीं?). 11 एक लश्कर यह भी है, यहाँ तबाह होगा सब लशकरों
में से. 12 उनसे पहले क़ौमे-नूह और आद और मेख़ों (कीलों) वाला फ़िरऔन ने झुठलाया. 13
और समूद और क़ौमे-लूत और अयकावालों ने भी झुठलाया. ये लोग बड़ी-बड़ी जमाअतें थे.
14 उन सब ने रसूलों को झुठलाया तो मेरा अज़ाब नाज़िल होकर रहा. 15 और ये लोग सिर्फ़ एक
चिंघाड़ के मुंतज़िर हैं, जिसके बाद कोई ढील नहीं. 16 और उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब! हमारा
हिस्सा हमें हिसाब के दिन से पहले दे दे.

17 जो कुछ वे कहते हैं उसपर सब्र करो, और हमारे बंदे दाऊद को याद करो जो क़ुव्वत
वाला, रुजूअ करने वाला था. 18 हमने पहाड़ों को उसके साथ मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया था
कि वे उसके साथ सुबह व शाम तस्बीह करते थे, 19 और परिंदे भी, जो जमा होकर (उसके साथ
तस्बीह करते थे). सब अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वाले थे. 20 और हमने उसकी सल्तनत
मज़बूत की और उसे हिकमत अता की और मामलात का फ़ैसला करने की सलाहियत दी.

21 और क्या तुम्हें ख़बर पहुँची है मुक़दमा वालों की, जबकि वे दीवार फांदकर इबादतख़ाने
में दाख़िल हो गए. 22 (इस तरह) जब वे दाऊद के पास पहुँचे तो वह उनसे घबरा गया, उन्होंने
कहा कि आप डरें नहीं, हम दो फ़रीक़े-मामला (विवाद के पक्ष) हैं, एक ने दूसरे पर ज़्यादती की
है तो आप हमारे दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला कीजिए, बेइंसाफ़ी न कीजिए और हमें राहेरास्त
(सन्मार्ग) बताइए.

23 यह मेरा भाई है, इसके पास निन्यानवे दुंबियाँ हैं और मेरे पास सिर्फ़ एक दुंबी है. तो वह
कहता है कि वह भी मेरे हवाले कर दे. और उसने गुफ़्तगू में मुझे दबा लिया. 24 दाऊद ने कहा,
उसने तुम्हारी दुंबी को अपनी दुंबियों में मिलाने का मुतालबा करके वाक़ई तुम पर ज़ुल्म किया है.
और अकसर शुरका (साझीदार) एक दूसरे पर ज़्यादती किया करते हैं, सिवाय उनके जो ईमान
रखते हैं और नेक अमल करते हैं, और ऐसे लोग बहुत कम हैं. और दाऊद को ख़याल आया कि
हमने उसका इम्तहान लिया है, तो उसने अपने रब से माफ़ी मांगी और सज्दे में गिर गया. और
रुजूअ हुआ. **अस्-सज्दा** 25 फिर हमने उसे वह माफ़ कर दिया. और बेशक हमारे यहाँ उसके
लिए तक़र्रुब (सान्निध्य) है और अच्छा अंजाम.

26 ऐ दाऊद! हमने तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा (हाकिम) बनाया है तो लोगों के दरमियान इंसाफ़ के
साथ फ़ैसला करो और ख़्वाहिश की पैरवी न करो वह तुझे अल्लाह की राह से भटका देगी. जो लोग
अल्लाह की राह से भटकते हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है इस वजह से कि वे रोज़े-हिसाब को भूले रहे.

27 हमने ज़मीन और आसमान और जो उनके दरमियान है अबस (व्यर्थ) नहीं पैदा किया, यह उन लोगों का गुमान है जिन्होंने इन्कार किया, तो जिन लोगों ने इन्कार किया उनके लिए बरबादी है आग से. 28 क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनकी मानिंद कर देंगे जो ज़मीन में फ़साद करने वाले हैं. या हम परहेज़गारों को बदकारों जैसा कर देंगे.

29 यह एक बाबरकत किताब है जो हमने तुम्हारी तरफ़ उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि अक़्ल वाले इससे नसीहत हासिल करें.

30 और हमने दाऊद को सुलैमान अता किया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ़ बहुत
रुजूअ करने वाला. 31 जब शाम के वक़्त उसके सामने तेज़ रफ़्तार, उम्दा घोड़े पेश किए गए. 32
तो उसने कहा, मैंने दोस्त रखा माल की मुहब्बत को अपने रब की याद से, यहाँ तक कि (सूरज)
छुप गया ओट में (और वह घोड़े नज़रों से ओझल हो गए). 33 (उसने कहा) उन्हें मेरे पास वापस
लाओ. फिर वह झाड़ने लगा (उनकी) पिंडलियाँ और गरदनें.

34 और हमने सुलैमान को आज़माया. और हमने उसके तख़्त पर एक धड़ डाल दिया, फिर
उसने रुजूअ किया. 35 उसने कहा कि ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ कर दे और मुझे ऐसी सल्तनत दे जो मेरे
बाद किसी के लिए सज़ावार (उपलब्ध) न हो. बेशक तू बड़ा देने वाला है. 36 तो हमने हवा को उसके
ताबे (अधीन) कर दिया. वह उसके हुक्म से नर्मी के साथ चलती थी जिधर वह चाहता. 37 और
जिन्नात को भी उसका ताबे कर दिया. हर तरह की तामीरात के माहिर और ग़ोताख़ोर. 38 और दूसरे
जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए रहते. 39 यह हमारी अता (देन) है, तो (जिसे) चाहे उसे दो या (अपने पास)
रोके रखो, कोई हिसाब नहीं. 40 और उसके लिए हमारे यहाँ क़ुर्ब (समीपता) है और बेहतर अंजाम.

41 और हमारे बंदे अय्यूब को याद करो. जब उसने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझे
तकलीफ़ और अज़ाब में डाल दिया है. 42 (हमने कहा, ज़मीन पर) अपना पांव मारो. (फिर एक पानी
का सोता फूट निकला) यह ठंडा पानी है, नहाने के लिए और पीने के लिए. 43 और हमने उसे
उसका कुंबा अता किया और उनके साथ उनके बराबर और भी, अपनी तरफ़ से रहमत के तौर पर
और अक़्ल वालों के लिए नसीहत के तौर पर. 44 (हमने उससे कहा कि) अपने हाथ में सींकों का
(यानी झाड़ू की तरह सुखी काड़ियों का) एक मुट्ठा लो और उससे मारो और क़सम न तोड़ो. बेशक
हमने उसे साबिर (धैर्यवान) पाया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ़ बहुत रुजूअ करने वाला.

45 और हमारे बंदो, इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब को याद करो, वे हाथों वाले और आंखों वाले थे. 46 हमने उन्हें एक ख़ास बात के साथ मख़सूस किया था कि वह आख़िरत की याददिहानी है. 47 और वे हमारे यहाँ चुने हुए नेक लोगों में से हैं. 48 और इस्माईल और अल-यसअ और ज़ुलकिफ़्ल को याद करो, सब नेक लोगों में से थे.

49 यह नसीहत है, और बेशक अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा ठिकाना है, 50 हमेशा के बाग़, जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले होंगे. 51 वे उनमें तकिया लगाए बैठे होंगे. और बहुत से मेवे और मशरूबात (पेय पदार्थ) तलब करते होंगे. 52 और उनके पास शर्मीली हमसिन (हमउम्र) बीवियां होंगी. 53 यह है वह चीज़ जिसका तुम से रोज़े-हिसाब आने पर वादा किया जाता है.

54 **यह हमारा रिज़्क़ है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं.**

नोटः- आख़िरत का रिज़्क़ ही हक़ीक़ी रिज़्क़ है, जो कि इनाम के तौर पर दिया जाएगा. दुनिया में जो कुछ इंसान को दिया जाता है, वह इम्तिहान के लिए दिया जाता है.

55 यह बात हो चुकी, और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है. 56 जहन्नम, उसमें वे दाख़िल होंगे. पस क्या ही बुरी जगह है. 57 यह खौलता हुआ पानी और पीप है, तो ये लोग उन्हें चखें. 58 और इस क़िस्म की दूसरी और भी चीज़ें होंगी. 59 यह एक फ़ौज तुम्हारे पास घुसी चली आ रही है, उनके लिए कोई ख़ुशामदीद (स्वागत-सत्कार) नहीं. वे आग में पड़ने वाले हैं.

60 **वे कहेंगे, (नहीं) बल्कि तुम ही (आग में पड़ने वाले हो, अब) तुम्हारे लिए कोई ख़ुशामदीद नहीं. तुम्हीं तो यह हमारे आगे लाए हो, पस कैसा बुरा है यह ठिकाना!**

61 **वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! जो शख़्स इस (अज़ाब) को हमारे आगे लाया है, उसे तू दुगना अज़ाब दे, जहन्नम में.**

नोटः- जन्नत पाने का फ़ॉर्मूला यह है कि आप दूसरों को जन्नत की तरफ़ बुलाएँ. इसी तरह जहन्नम से बचने का फ़ॉर्मूला यह है कि आप दूसरों को जहन्नम से बचाने की कोशिश करें.

जो लोग दूसरों को जहन्नम में पहुँचाने का ज़रिया बनेंगे, उनके लिए जहन्नमी लोग उन्हें दुगना अज़ाब देने की अल्लाह तआला से दरख़्वास्त करेंगे. इस दरख़्वास्त पर अल्लाह तआला का क्या फ़ैसला होगा वह तो मैदाने-हश्र में ही मालूम होगा, लेकिन जहन्नमी लोगों के इस मुतालबे से वाज़ेह होता है कि जो लोग उन्हें जहन्नम में पहुँचाने का ज़रिया बने. **उन्हें यह लोग अल्लाह की अदालत में कटघरे में खड़ा करने की कोशिश करेंगे.** और अल्लाह तआला से यह मुतालबा करेंगे कि उन्हें जहन्नम का दुगना अज़ाब दिया जाए.

62 और वे कहेंगे, क्या बात है कि हम उन लोगों को यहाँ नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे. 63 क्या हमने उन्हें मज़ाक़ बना लिया था या उनसे निगाहें चूक रही हैं. 64 बेशक यह बात सच्ची है, अहले–दोज़ख़ का आपस में झगड़ना.

65 कहो कि मैं तो सिर्फ़ एक डराने वाला हूँ. और कोई माबूद (पूज्य) नहीं, मगर अल्लाह, यकता (एक) और ग़ालिब (वर्चस्वशील). 66 वह रब है आसमानों और ज़मीन का और उन चीज़ों का जो उनके दरमियान हैं, वह ज़बरदस्त है, बख़्शने वाला है. 67 कहो कि यह एक बड़ी ख़बर है, 68 जिससे तुम बेपरवाह हो रहे हो. 69 मुझे आलमे–बाला (आकाश लोक) की कुछ ख़बर नहीं थी, जबकि वे आपस में तकरार कर रहे थे. 70 मेरे पास तो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) बस इसलिए आती है कि मैं एक खुला डराने वाला हूँ.

71 जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक बशर (इंसान) बनाने वाला हूँ. 72 फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूं और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सज्दे में गिर पड़ना. 73 पस तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया, 74 मगर इबलीस (शैतान), कि उसने घमंड किया और वह इन्कार करने वालों में से हो गया. 75 (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि ऐ इबलीस! किस चीज़ ने तुझे रोक दिया कि तू उसे सज्दा करे जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया. यह तूने तकब्बुर (घमंड) किया या तू बड़े दर्जे वालों में से है. 76 उसने कहा कि मैं आदम से बेहतर हूँ. तूने मुझे आग से पैदा किया है और उसे मिट्टी से. 77 फ़रमाया कि तू यहाँ से निकल जा, क्योंकि तू मरदूद (धुत्कारा हुआ) है. 78 और तुझ पर मेरी लानत है जज़ा के दिन तक.

79 इबलीस ने कहा कि ऐ मेरे रब! मुझे मोहलत दे उस दिन तक के लिए जब लोग दुबारा उठाए जाएँगे. 80 फ़रमाया कि तुझे मोहलत दी गई, 81 मुअय्यन (निश्चित) वक़्त तक के लिए. 82 उसने कहा कि तेरी इज़्ज़त की क़सम, मैं उन सबको गुमराह करके रहूँगा, 83 सिवाय तेरे उन बंदों के जिन्हें तूने ख़ालिस कर लिया है. 84 फ़रमाया, तो हक़ यह है और मैं हक़ ही कहता हूँ 85 कि मैं जहन्नम को तुझसे और उन तमाम लोगों से भर दूँगा जो उनमें से तेरी पैरवी करेंगे.

86 कहो कि मैं इसपर तुम से कोई अज्र (मेहनताना) नहीं माँगता और न मैं तकल्लुफ़ (बनावटी अमल) करने वालों में से हूँ. 87 **यह (क़ुरआन) तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए.** 88 और तुम जल्द उसकी दी हुई ख़बर को जान लोगे.

सूरह–39. अज़–ज़ुमर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 यह किताब अल्लाह की तरफ़ से उतारी गई है जो ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है

(प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है). 2 बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ़ हक़ के साथ उतारी है, पस तुम अल्लाह ही की इबादत करो, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए. 3 आगाह, दीन ख़ालिस सिर्फ़ अल्लाह के लिए है. और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे हिमायती बना रखे हैं, कि हम तो उनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि वे हमें ख़ुदा से क़रीब कर दें. बेशक अल्लाह उनके दरमियान उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं. अल्लाह ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं देता जो झूठा है, हक़ को मानने वाला नहीं है.

4 अगर अल्लाह चाहता कि वह बेटा बनाए तो अपनी मख़लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता, वह पाक है. वह अल्लाह है, अकेला, सब पर ग़ालिब. 5 उसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया. वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है. और उसने सूरज और चांद को क़ाबू में कर रखा है. हर एक, एक तयशुदा मुद्दत पर चलता है. सुन लो कि वह ज़बरदस्त है, बख़्शने वाला है.

6 अल्लाह ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसने उसी से उसका जोड़ा बनाया. और उसी ने तुम्हारे लिए नर व मादा चौपायों की आठ क़िस्में उतारीं. वह तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट में बनाता है, एक ख़िलक़त (सृजनरूप) के बाद दूसरी ख़िलक़त, तीन तारीकियों के अंदर. यही अल्लाह तुम्हारा रब है. बादशाही उसी की है. उसके सिवा कोई माबूद नहीं. फिर तुम कहाँ से फेरे जाते हो.

7 अगर तुम इन्कार करो तो अल्लाह तुम से बेनियाज़ (निस्पृह) है, लेकिन वह अपने बंदों के लिए इन्कार को पसंद नहीं करता. और अगर तुम शुक्र करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसंद करता है. और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा. फिर तुम्हारे रब ही की तरफ़ तुम्हारी वापसी है. तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे. बेशक वह दिलों की बात को जानने वाला है.

8 और जब इंसान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह अपने रब को पुकारता है, उसकी तरफ़ रुजूअ (प्रवृत्त) होकर. फिर जब वह उसे अपने पास से नेमत दे देता है तो वह उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और वह दूसरों को अल्लाह का बराबर ठहराने लगता है, ताकि उसकी राह से गुमराह कर दे. कहो कि अपने कुफ़्र से थोड़े दिन फ़ायदा उठा ले, बेशक तू आग वालों में से है. 9 भला जो शख़्स रात की घड़ियों में सज्दा और क़याम की हालत में आजिज़ी (विनय) कर रहा हो, आख़िरत से डरता हो और अपने रब की रहमत का उम्मीदवार हो, कहो, क्या जानने वाले और न जानने वाले दोनों बराबर हो सकते हैं. नसीहत तो वही लोग पकड़ते हैं जो अक़्ल वाले हैं.

10 कहो कि ऐ मेरे बंदो! जो ईमान लाए हो, अपने रब से डरो. जो लोग इस दुनिया में नेकी करेंगे उनके लिए नेक सिला (प्रतिफल) है. और अल्लाह की ज़मीन वसीअ (विस्तृत) है. बेशक

सब्र करने वालों को उनका अज्र बेहिसाब दिया जाएगा.

11 कहो, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूँ, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए. 12 और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले ख़ुद मुस्लिम (आज्ञाकारी) बनूँ. 13 कहो कि अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करूँ तो मैं एक हौलनाक दिन के अज़ाब से डरता हूँ. 14 कहो कि मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए.

15 **पस तुम उसके सिवा जिसकी चाहे इबादत करो. कहो कि असली घाटे वाले तो वे हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने घर वालों को क़यामत के दिन घाटे में डाला.**

सुन लो यही खुला हुआ घाटा है.

16 **उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के सायबान होंगे और उनके नीचे से भी. यह चीज़ है जिससे अल्लाह अपने बंदों को डराता है. ऐ मेरे बंदो! पस मुझ से डरो.**

17 और जो लोग शैतान से बचे कि वे उसकी इबादत करें और वे अल्लाह की तरफ़ रुजूअ हुए, उनके लिए ख़ुशख़बरी है, तो मेरे बंदों को ख़ुशख़बरी दे दो 18 जो बात को ग़ौर से सुनते हैं. फिर उसके बेहतर (मफ़हूम) की पैरवी करते हैं. यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बख़्शी है और यही हैं जो अक़्ल वाले हैं.

19 क्या जिस पर अज़ाब की बात साबित हो चुकी, पस क्या तुम ऐसे शख़्स को बचा सकते हो जो कि आग में है. 20 लेकिन जो लोग अपने रब से डरे, उनके लिए बालाख़ाने (उच्च भवन) हैं जिनके ऊपर और बालाख़ाने हैं बने हुए, जिनके नीचे नहरें बहती हैं. यह अल्लाह का वादा है. अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता.

21 क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा. फिर उसे ज़मीन के चशमों (स्रोतों) में जारी कर दिया. फिर वह उससे मुख़्तलिफ़ क़िस्म की खेतियाँ निकालता है, फिर वह ख़ुश्क हो जाती है, तो तुम उसे ज़र्द देखते हो. फिर वह उसे रेज़ा-रेज़ा कर देता है. बेशक इसमें नसीहत है अक़्ल वालों के लिए. 22 क्या वह शख़्स जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया, पस वह अपने रब की तरफ़ से एक रोशनी पर है. तो ख़राबी है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह की नसीहत के मामले में सख़्त हो गए. ये लोग खुली हुई गुमराही में हैं.

23 अल्लाह ने बेहतरीन कलाम उतारा है. एक ऐसी किताब आपस में मिलती–जुलती, बार–बार दोहराई हुई, इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरने वाले हैं. फिर उनके बदन और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह की याद की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते हैं. यह अल्लाह की हिदायत है, इससे वह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है. और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं.

24 क्या वह शख़्स जो क़यामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अज़ाब की सिपर (ढाल) बनाएगा, और ज़ालिमों से कहा जाएगा कि चखो मज़ा उस कमाई का जो तुम करते थे. 25 उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया तो उनपर अज़ाब वहाँ से आ गया जिधर उनका ख़याल भी न था. 26 तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई का मज़ा चखाया और आख़िरत का अज़ाब और भी बड़ा है, काश ये लोग जानते.

27 और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं, ताकि वे नसीहत हासिल करें. 28 यह अरबी क़ुरआन है, इसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि लोग डरें. 29 अल्लाह मिसाल बयान करता है एक शख़्स की जिसकी मिल्कियत में कई ज़िद्दी आक़ा (स्वामी) शरीक हैं. और दूसरा शख़्स पूरा का पूरा एक ही आक़ा का ग़ुलाम है. क्या इन दोनों का हाल यकसां (समान) होगा. सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, लेकिन अकसर लोग नहीं जानते. 30 तुम्हें भी मरना है और वे भी मरने वाले हैं. 31 फिर तुम लोग क़यामत के दिन अपने रब के सामने अपना मुक़दमा पेश करोगे.

पारा – 24 32 उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा. और सच्चाई को झुठला दिया, जबकि वह उसके पास आयी. क्या ऐसे मुन्किरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं होगा? 33 और जो शख़्स सच्चाई लेकर आया और जिसने उसकी तसदीक़ (पुष्टि) की, यही लोग अल्लाह से डरने वाले हैं. 34 उनके लिए उनके रब के पास वह सब है जो वे चाहेंगे, यह बदला है नेकी करने वालों का 35 ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे आमाल को दूर कर दे और उनके नेक कामों के एवज़ उन्हें उनका सवाब दे.

36 क्या अल्लाह अपने बंदे के लिए काफ़ी नहीं. और ये लोग उसके सिवा दूसरों से तुम्हें डराते हैं, और अल्लाह जिसे गुमराह कर दे उसे कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं. 37 और अल्लाह जिसे हिदायत दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं. क्या अल्लाह ज़बरदस्त, इंतक़ाम (प्रतिशोध, बदला) लेने वाला नहीं है?

38 और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों को और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वे कहेंगे कि अल्लाह ने. कहो, तुम्हारा क्या ख़याल है, अल्लाह के सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो, अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो क्या ये उसकी दी हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं, या अल्लाह मुझ पर कोई मेहरबानी करना चाहे तो क्या ये उसकी मेहरबानी को रोकने वाले बन सकते हैं. कहो कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं. 39 कहो
कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह अमल करो, मैं भी अमल कर रहा हूँ, तो तुम जल्द जान लोगे
40 कि किस पर रुसवा करने वाला अज़ाब आता है और किस पर वह अज़ाब आता है जो कभी टलने वाला नहीं.

41 **हमने लोगों की हिदायत के लिए यह किताब तुम पर हक़ के साथ उतारी है.** तो अब जो शख़्स हिदायत हासिल करेगा वह अपने ही लिए करेगा. और जो शख़्स बेराह होगा तो उसका बेराह होना उसी पर पड़ेगा. **और तुम उनके ऊपर ज़िम्मेदार नहीं हो.**

नोटः- क़ुरआन सारे इंसानों के लिए किताबे-हिदायत है, लेकिन यह इंसानों के लिए हिदायत का ज़रिया उसी वक़्त बन सकता है, जब यह किताब उन तक पहुँचा दी जाए. अल्लाह का पैग़ाम बंदों तक पहुँचाने के लिए ख़ुदा की तरफ़ से पहले पैग़ंबर भेजे जाते थे. अब चूंकि कोई पैग़ंबर आने वाला नहीं है, तो अब पैग़ाम पहुँचाने की यह ज़िम्मेदारी '**उम्मते-मुहम्मदी**' पर है.
दाई का काम सिर्फ़ पैग़ाम पहुँचाना है, मदू के रिस्पॉन्स के ताल्लुक़ से दाई की कोई ज़िम्मेदारी नहीं.

42 अल्लाह ही वफ़ात देता है जानों को उनकी मौत के वक़्त, और जिनकी मौत नहीं आयी उन्हें सोने के वक़्त. फिर वह उन्हें रोक लेता है जिनकी मौत का फ़ैसला कर चुका है और दूसरों को एक वक़्ते-मुक़र्रर तक के लिए रिहा कर देता है. बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं.

43 क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़कर दूसरों को सिफ़ारिशी बना रखा है. कहो, अगरचे वे न कुछ इख़्तियार रखते हों और न कुछ समझते हों. 44 कहो, सिफ़ारिश सारी की सारी अल्लाह के

इख़्तियार में है. आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है. फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे. 45 और जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिल कुढ़ते हैं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते. और जब अल्लाह के सिवा दूसरों का ज़िक्र होता है तो उस वक़्त वे ख़ुश हो जाते हैं. 46 कहो कि ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, ग़ायब और हाज़िर के जानने वाले, तू अपने बंदों के दरमियान उस चीज़ का फ़ैसला करेगा जिसमें वे इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं. 47 और अगर ज़ुल्म करने वालों के पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है और उसी के बराबर और भी, तो वे क़यामत के दिन सख़्त अज़ाब से बचने के लिए उसे फ़िदये में (यानी बदले में) दे दें (तब भी वे नहीं बच सकते). और अल्लाह की तरफ़ से उन्हें वह मामला पेश आएगा जिसका उन्हें गुमान भी न था. 48 और उनके सामने आ जाएँगे उनके बुरे आमाल और वह चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे.

49 पस जब इंसान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम अपनी तरफ़ से उसे नेमत दे देते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे (मेरे) इल्म की बिना पर दिया गया है. बल्कि यह आज़माइश है, मगर उनमें से अकसर लोग नहीं जानते. 50 उनसे पहले वालों ने भी यह बात कही तो जो कुछ वे कमाते थे वह उनके काम न आया. 51 पस उनपर वे बुराइयाँ आ पड़ीं जो उन्होंने कमाई थीं. और उन लोगों में से जो ज़ालिम हैं उनके सामने भी उनकी कमाई के बुरे नतीजे जल्द आएंगे. वे हमें आजिज़ (निर्बल) कर देने वाले नहीं हैं. 52 क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह जिसे चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और वही तंग कर देता है? बेशक इसके अंदर निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाने वाले हैं.

53 कहो कि ऐ मेरे बंदो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो. बेशक अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ़ कर देता है, वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है. 54 और तुम अपने रब की तरफ़ रुजूअ करो और उसके फ़रमांबरदार बन जाओ. इससे पहले कि तुम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम्हारी कोई मदद न की जाए.

55 और तुम पैरवी करो अपने रब की भेजी हुई किताब के बेहतर पहलू की, इससे पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो.

56 **कहीं कोई शख़्स यह कहे कि अफ़सोस मेरी कोताही पर जो मैंने ख़ुदा की जनाब में की, और मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों में शामिल रहा.** 57 **या कोई यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं भी डरने वालों में से होता.** 58 **या अज़ाब को देखकर कोई शख़्स यह कहे कि काश मुझे दुनिया में फिर जाना हो तो**

मैं नेक बंदों में से हो जाऊँ. 59 **हाँ, तेरे पास मेरी आयतें आयीं फिर तूने उन्हें झुठलाया और तकब्बुर (घमंड) किया और तू मुन्किरों में शामिल रहा.**

नोटः– ख़ुदा कि अदालत में ख़ुदा जब अपने बंदों से हिसाब लेगा तब ख़ुदा यह कहेगा, **'तेरे पास मेरी आयतें आईं, फिर तूने उन्हें झुठलाया.'** क़ुरआन के इस बयान से यह वाज़ेह होता है कि ख़ुदा का पैग़ाम उसके बंदों तक पहुँचना कितना नागुज़ीर है. दाई का काम ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचा देना है और ख़ुदा का काम अपने बंदों से हिसाब लेना है.

60 और तुम क़यामत के दिन उन लोगों के चेहरे स्याह देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला था. क्या घमंड करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं होगा. 61 और जो लोग डरते रहे. अल्लाह उन लोगों को कामयाबी के साथ नजात (मुक्ति) देगा, और उन्हें कोई तकलीफ़ न पहुँचेगी और न वे ग़मगीन होंगे.

62 अल्लाह हर चीज़ का ख़ालिक़ है और वही हर चीज़ पर निगहबान है. 63 **आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ उसी के पास हैं. और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया वही घाटे में रहने वाले हैं.** 64 कहो कि ऐ नादानो! क्या तुम मुझे ग़ैरूल्लाह की (यानी अल्लाह के सिवा किसी और की) इबादत करने के लिए कहते हो. 65 और तुम्हारी तरफ़ और तुम से पहले वालों की तरफ़ भी 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा अमल ज़ाया हो जाएगा. और तुम ख़सारे (घाटे) में रहोगे. 66 बल्कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो और शुक्र करने वालों में से बनो.

67 और लोगों ने अल्लाह की क़द्र न की जैसा कि उसकी क़द्र करने का हक़ है. और ज़मीन सारी उसकी मुट्ठी में होगी क़यामत के दिन और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में. वह पाक और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं. 68 और सूर फूंका जाएगा तो आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, मगर जिसे अल्लाह चाहे. फिर दुबारा उसमें फूंका जाएगा तो यकायक सब के सब उठकर देखने लगेंगे

69 **और ज़मीन अपने रब के नूर (आलोक) से चमक उठेगी. और किताब रख दी जाएगी और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किए जाएँगे. और लोगों के दरमियान ठीक–ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा और उनपर कोई ज़ुल्म न होगा.**

नोटः– यहाँ **'गवाह'** से मुराद ग़ैरे–पैग़ंबर दाई हैं. जैसा कि सूरह बक़रह (आयत 143) में और सूरह हज (आयत 78) में फ़रमाया कि **'पैग़ंबर तुम पर हक़ की गवाही दे और तुम लोगों पर हक़ की गवाही देने वाले बनो.'**

इससे मालूम हुआ कि दावत का काम कितना अहम काम है. जिस काम की बुनियाद पर **इंसानों के अब्दि (हमेशा के) मुस्तक़बिल का फ़ैसला** होने वाला हो.

70 और हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा. और वह ख़ूब जानता है जो कुछ वे करते हैं.

71 **और जिन लोगों ने इन्कार किया वे गिरोह–गिरोह बनाकर जहन्नम की तरफ़ हांके जाएँगे. यहाँ तक कि जब वे उसके पास पहुँचेंगे उसके दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और उसके मुहाफ़िज़ (पहरेदार) उनसे कहेंगे,**

क्या तुम्हारे पास तुम्हीं लोगों में से पैग़म्बर नहीं आए

जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते थे

और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की मुलाक़ात से डराते थे. वे कहेंगे कि हां, लेकिन अज़ाब का वादा मुन्किरों पर पूरा होकर रहा.

नोटः– क़ुरआन के इस बयान से यह बात वाज़ेह होती है कि अल्लाह की अदालत में जिन लोगों के ताल्लुक़ से जहन्नम का फ़ैसला होगा. वे जहन्नमी लोग इस बात का इक़रार करेंगे कि **'हां, हम तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचा दिया गया था'**

पैग़ाम पहुँचाने का यह काम कोई सादा काम नहीं है, इसी काम के ऊपर जन्नत और जहन्नम के फ़ैसले होने वाले हैं. जिस तरह जहन्नमीयों से पूछा जाएगा कि 'क्या तुम तक अल्लाह का पैग़ाम

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)
पहुँचा दिया गया था?' उसी तरह उनसे भी यह पूछा जाएगा जिनपर पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी थी कि '**क्या तुमने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था?**' (सूरह 5:109)

इससे यह वाज़ेह होता है कि ख़ुदा की यह मंशा है कि सारे इंसानों तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँच जाए, फिर उनका रब उनके रिस्पॉन्स के मुताबिक़ उनके बारे में फ़ैसला करेगा.

यहाँ एक अहम बात यह भी वाज़ेह होती है कि लोगों तक पहुँचाने की चीज़ सिर्फ़ ख़ुदा का पैग़ाम है, जहन्नम के दारोग़ा यह नहीं पूछेंगे कि '**क्या तुम तक इस्लामी लिटरेचर (यानी इस्लाम के बारे में लिखी हुई इंसानी तस्नीफ़ात) पहुंचाई गई या नहीं.**' बल्कि वह यह पूछेंगे कि '**तुम तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचाया गया या नहीं.**' इससे साफ़ वाज़ेह होता है कि लोगों तक तर्जीही तौर पर पहुंचाने की वाहिद चीज़ क्या है, वह ख़ुदा का पैग़ाम '**क़ुरआन**' है.

72 कहा जाएगा कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए. पस कैसा बुरा ठिकाना है तकब्बुर (घमंड) करने वालों का.

73 और जो लोग अपने रब से डरे वे गिरोह दर गिरोह जन्नत की तरफ़ ले जाए जाएँगे. यहाँ
तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे और उसके दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और उसके मुहाफ़िज़ (पहरेदार)
उनसे कहेंगे कि सलाम हो तुम पर, ख़ुशहाल रहो, पस इसमें दाख़िल हो जाओ हमेशा के लिए.
74 और वे कहेंगे कि शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया
और हमें इस ज़मीन का वारिस बना दिया. हम जन्नत में जहाँ चाहें रहें. पस क्या ख़ूब बदला है
अमल करने वालों का. 75 और तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द हलक़ा बनाए हुए अपने
रब की हम्द व तस्बीह करते होंगे. और लोगों के दरमियान ठीक–ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा
और कहा जाएगा कि सारी हम्द अल्लाह के लिए है, आलम का ख़ुदावंद.

सूरह–40. अल–मोमिन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हा० मीम०. 2 यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बरदस्त है, जानने
वाला है. 3 ख़ताओं को माफ़ करने वाला और तौबा क़बूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला,
बड़ी क़ुदरत वाला है. उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. उसी की तरफ़ लौटना है.

4 अल्लाह की आयतों में वही लोग टेढ़ निकालते हैं (यानी विवाद उत्पन्न करते हैं) जो
मुन्किर हैं. तो उन लोगों का शहरों में चलना फिरना तुम्हें धोखे में न डाले. 5 उनसे पहले नूह की

क़ौम ने झुठलाया. और उनके बाद के गिरोहों ने भी. और हर उम्मत ने इरादा किया कि अपने रसूल को पकड़ लें और उन्होंने नाहक़ के झगड़े निकाले, ताकि उससे हक़ को पसपा (परास्त) कर दें तो मैंने उन्हें पकड़ लिया. फिर कैसी थी मेरी सज़ा. 6 और इसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर पूरी हो चुकी है जिन्होंने इन्कार किया कि वे आग वाले हैं.

7 जो अर्श को उठाए हुए हैं और जो उसके इर्द–गिर्द हैं, वे अपने रब की तस्बीह करते हैं, उसकी हम्द के साथ. और वे उसपर ईमान रखते हैं. और वे ईमान वालों के लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) की दुआ करते हैं. ऐ हमारे रब! तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ का इहाता किए हुए है. पस तू माफ़ कर दे उन लोगों को जो तौबा करें और तेरे रास्ते की पैरवी करें और तू उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा. 8 ऐ हमारे रब! और तू उन्हें हमेशा रहने वाले बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है. और उन्हें भी जो सालेह हों उनके वालिदैन और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से. बेशक तू ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है. 9 और उन्हें बुराइयों से बचा ले. और जिसे तूने उस दिन बुराइयों से बचाया तो उनपर तूने रहम किया. और यही बड़ी कामयाबी है.

10 जिन लोगों ने इन्कार किया, उन्हें पुकार कर कहा जाएगा, ख़ुदा की बेज़ारी तुम से उससे ज़्यादा है जितनी बेज़ारी तुम्हें अपने आप पर है. **जब तुम्हें ईमान की तरफ़ बुलाया जाता था तो तुम इन्कार करते थे.** 11 वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! तूने हमें दो बार मौत दी और दो बार हमें ज़िंदगी दी, पस हमने अपने गुनाहों का इक़रार किया, तो क्या निकलने की कोई सूरत है.
12 **यह तुम पर इसलिए है कि जब अकेले अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाता था तो तुम इन्कार करते थे.** और जब उसके साथ शरीक किया जाता तो तुम मान लेते. पस फ़ैसला अल्लाह के इख़्तियार में है जो अज़ीम है, बड़े मर्तबे वाला है.

13 वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है और आसमान से तुम्हारे लिए रिज़्क़ उतारता है. और नसीहत सिर्फ़ वही शख़्स क़बूल करता है जो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वाला हो. 14
पस अल्लाह ही को पुकारो, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करके, चाहे मुन्किरों को नागवार क्यों न हो.

15 **वह बुलंद दर्जों वाला, अर्श का मालिक है. वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजता है, ताकि वह मुलाक़ात के दिन से डराए.**

नोटः– वही–ए–इलाही का मक़सद यह है कि लोगों को इस बात से आगाह किया जाए कि एक दिन आने वाला है, जिस दिन उन्हें उनके रब की अदालत में पेश किया जाएगा, जहाँ उन्हें अपने रब को अपने ज़िंदगी का हिसाब देना होगा. फिर उनका रब उनके अब्दि अंजाम का फ़ैसला करेगा.

16 जिस दिन कि वे ज़ाहिर होंगे. अल्लाह से उनकी कोई चीज़ छुपी हुई न होगी. आज बादशाही किस की है, अल्लाह वाहिद सब पर ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) की. 17 आज हर शख़्स को उसके किए का बदला मिलेगा, आज कोई ज़ुल्म न होगा. बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है.

18 **और उन्हें क़रीब आने वाली मुसीबत के दिन से डराओ, जबकि दिल हलक़ तक आ पहुँचेंगे, वे ग़म से भरे हुए होंगे. ज़ालिमों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिशी जिसकी बात मानी जाए.**

नोटः- जिस मसले का यहाँ ज़िक्र हो रहा है वह सारे इंसानों का सबसे बड़ा मसला है, ख़ुदा चाहता है कि इस सबसे बड़े मसले से उन्हें पूरी तरह आगाह कर दिया जाए, इसी काम का नाम दावत है.

19 वह निगाहों की चोरी को जानता है और उन बातों को भी जिन्हें सीने छुपाए हुए हैं. 20 और
अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करेगा. और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ का फ़ैसला नहीं करते. बेशक अल्लाह सुनने वाला है, देखने वाला है.

21 क्या वे ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं. वे उनसे बहुत ज़्यादा थे कुव्वत में और उन आसार के एतबार से भी जो उन्होंने ज़मीन में छोड़े. फिर अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया और कोई उन्हें अल्लाह से बचाने
वाला न था. 22 यह इसलिए हुआ कि उनके पास उनके रसूल खुली निशानियाँ लेकर आए तो उन्होंने इन्कार किया. तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया. यक़ीनन वह ताक़तवर है, सख़्त सज़ा देने वाला है.

23 और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ और खुली दलील के साथ भेजा, 24
फ़िरऔन और हामान और क़ारून के पास, तो उन्होंने कहा कि यह एक जादूगर है, झूठा है. 25
फिर जब वह हमारी तरफ़ से हक़ लेकर उनके पास पहुँचा, उन्होंने कहा कि इन लोगों के बेटों को क़तल कर डालो जो इसके साथ ईमान लाएँ और उनकी औरतों को ज़िंदा रखो. और उन मुन्किरों की तदबीर महज़ बेअसर रही.

26 और फ़िरऔन ने कहा, मुझे छोड़ो, मैं मूसा को क़तल कर डालूं और वह अपने रब को पुकारे, मुझे अंदेशा है कि कहीं वह तुम्हारा दीन (धर्म) बदल डाले या मुल्क में फ़साद फैला दे.
27 और मूसा ने कहा कि मैंने अपने और तुम्हारे रब की पनाह ली हर उस मुतकब्बिर (घमंडी) से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता.

28 और आले-फ़िरऔन में से एक मोमिन शख़्स, जो अपने ईमान को छुपाए हुए था, बोला, क्या तुम लोग एक शख़्स को सिर्फ़ इस बात पर क़तल कर दोगे कि वह कहता है कि मेरा

रब अल्लाह है, हालाँकि वह तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली दलीलें भी लेकर आया है. और अगर वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा. और अगर वह सच्चा है तो उसका कोई हिस्सा तुम्हें पहुँच कर रहेगा. जिसका वादा वह तुम से करता है. बेशक अल्लाह ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रने वाला हो, झूठा हो.

29 **ऐ मेरी क़ौम! आज तुम्हारी सल्तनत है कि तुम ज़मीन में ग़ालिब हो. फिर अल्लाह का अज़ाब आ जाए, तो उससे बचाने के लिए कौन हमारी मदद करेगा. फ़िरऔन ने कहा, मैं तुम्हें वही राय देता हूँ जिसे मैं समझ रहा हूँ, और मैं तुम्हारी रहनुमाई ठीक भलाई के रास्ते की तरफ़ कर रहा हूँ.**

नोटः– इस इम्तिहान की दुनिया में गुमराह लीडर भी गुमराही का मिशन अच्छे लेबल के साथ चलाता है. यहाँ बुराई अकसर बुराई के form में ज़ाहिर नहीं होती. अब इंसान को यह समझना होता है कि कौन हक़ पर खड़ा है और कौन बातिल पर.

30 और **जो शख़्स ईमान लाया था, उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मैं डरता हूँ कि तुम पर और गिरोहों जैसा दिन आ जाए,** 31 **जैसा दिन क़ौमे-नूह और आद और समूद और उनके बाद वालों पर आया. और अल्लाह अपने बंदों पर कोई ज़ुल्म करना नहीं चाहता.**

नोटः– जो शख़्स ईमान लाया था वह अपनी क़ौम के ऊपर दाई बनकर खड़ा हो गया. इस आयत से इस बात का पता चलता है कि ईमान से दावत जुड़ी हुई है. यहाँ ख़ुदा उस शख़्स का ज़िक्र ईमान वाला कहकर कर रहा है जो दावत का काम अंजाम दे रहा था.

32 और ऐ मेरी क़ौम! मैं डरता हूँ कि तुम पर चीख़ पुकार का दिन आ जाए, 33 जिस दिन तुम पीठ फेरकर भागोगे. और तुम्हें ख़ुदा से बचाने वाला कोई नहीं होगा. और जिसे ख़ुदा गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं.

34 और इससे पहले यूसुफ़ तुम्हारे पास खुले दलाइल के साथ आए तो तुम उनकी लाई हुई बातों की तरफ़ से शक ही में पड़े रहे. यहाँ तक कि जब उनकी वफ़ात हो गई तो तुमने कहा कि अल्लाह इनके बाद हरगिज़ कोई रसूल नहीं भेजेगा. इसी तरह अल्लाह उन लोगों को गुमराह कर देता है जो हद से गुज़रने वाले और शक करने वाले होते हैं. 35 जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते

हैं बग़ैर किसी दलील के जो उनके पास आयी हो. अल्लाह और ईमान वालों के नज़दीक यह सख़्त मबग़ूज़ (अप्रिय) है. इसी तरह अल्लाह मुहर कर देता है हर मग़रूर (अभिमानी), सरकश के दिल पर.

36 और फ़िरऔन ने कहा कि ऐ हामान! मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना, ताकि मैं रास्तों पर पहुँचूं, 37 आसमानों के रास्तों तक, पस मूसा के माबूद (पूज्य) को झांक कर देखूँ, और मैं तो उसे झूठा ख़याल करता हूँ. और इस तरह फ़िरऔन के लिए उसकी बदअमली ख़ुशनुमा बना दी गई और वह सीधे रास्ते से रोक दिया गया. और फ़िरऔन की तदबीर ग़ारत होकर रही.

38 **और जो शख़्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें सही रास्ता बता रहा हूँ.** 39 **ऐ मेरी क़ौम! यह दुनिया की ज़िंदगी महज़ चंद रोज़ा है और असल ठहरने का मक़ाम आख़िरत (यानी मृत्यु-पश्चात दुनिया) है.** 40 **जो शख़्स बुराई करेगा तो वह उसके बराबर बदला पाएगा. और जो शख़्स नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, वहाँ वे बेहिसाब रिज़्क़ पाएंगे.** 41 **और ऐ मेरी क़ौम! क्या बात है कि मैं तो तुम्हें नजात (मुक्ति) की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझे आग की तरफ़ बुला रहे हो.** 42 **तुम मुझे बुला रहे हो कि मैं ख़ुदा के साथ कुफ़्र करूँ और ऐसी चीज़ को उसका शरीक बनाऊँ जिसका मुझे कोई इल्म नहीं. और मैं तुम्हें ज़बरदस्त मग़्फ़िरत (क्षमा) करने वाले ख़ुदा की तरफ़ बुला रहा हूँ.**

नोटः- इस सूरह का नाम सूरह 'मोमिन' है. इस सूरह में एक बंदे-मोमिन की दावती तक़रीर के कुछ हिस्से नक़ल किए गए हैं. वह मोमिन बंदा फ़िरऔन के शाही ख़ानदान से ताल्लुक़ रखता था. अगरचे वह वक़्ती तौर पर अपने ईमान को छुपाए हुए था, लेकिन हक़ की दरयाफ़्त का लावा उस के अंदर उबल रहा था, जो फ़िरऔन के दरबार में एक मौक़े पर फूट पड़ा. इससे वाज़ेह है कि हक़ीक़ी मोमिन वही है जो उस हक़ का दाई बन जाए जिसे उसने दरयाफ़्त किया है. आयत 38 में भी आयत 30 की तरह ईमान और दावत का जुड़ाव नज़र आता है, क्योंकि हक़ीक़ी मोमिन दाई बने बग़ैर रह नहीं सकता.

43 यक़ीनी बात है कि तुम जिस चीज़ की तरफ़ मुझे बुलाते हो उसकी कोई आवाज़ न दुनिया में है और न आख़िरत में. और बेशक हम सब की वापसी अल्लाह ही की तरफ़ है और हद से गुज़रने

वाले ही आग में जाने वाले हैं.
44 पस तुम आगे चलकर मेरी बात को याद करोगे. और मैं अपना
मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ. बेशक अल्लाह तमाम बंदों का निगराँ (निगाह रखने वाला) है.
45 फिर अल्लाह ने उस (मोमिन बंदे को) उनकी बुरी तदबीरों से बचा लिया. और फ़िरऔन
वालों को बुरे अज़ाब ने घेर लिया.
46 आग, जिस पर वे सुबह व शाम पेश किए जाते हैं. और
जिस दिन क़यामत क़ायम होगी, फ़िरऔन वालों को सख़्ततरीन अज़ाब में दाख़िल करो.

47 **और जब वे दोज़ख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग बड़ा बनने वालों
से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबे (अधीन) थे, तो क्या तुम हमसे आग का कोई
हिस्सा हटा सकते हो.**
48 **बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही इसमें हैं. अल्लाह ने बंदों
के दरमियान फ़ैसला कर दिया.**
49 **और जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के
निगहबानों से कहेंगे कि तुम अपने रब से दरख़्वास्त करो कि हमारे अज़ाब में से
एक दिन की तख़्फ़ीफ़ (कमी) कर दे.**

50 **वे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल वाज़ेह दलीलें लेकर नहीं आए. वे कहेंगे कि हां.**

निगहबान कहेंगे, फिर तुम ही दरख़्वास्त करो. और मुन्किरों की पुकार अकारत ही जाने वाली है.

नोटः– हक़ के इन्कार का अंजाम किस ख़तरनाक सूरत में सामने आने वाला है इससे अल्लाह अपने बंदों को पेशगी आगाह कर रहा है. यह आगाही वाला कलाम उन लोगों तक पहुँचाना नागुज़ीर है जिन तक वह नहीं पहुँचा.

51 **बेशक हम मदद करते हैं अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनिया की ज़िंदगी में, और उस दिन भी, जब गवाह (दाई) खड़े होंगे,**

नोटः– यहाँ रसूल और रसूल के पैरोकारों की दुनिया व आख़िरत में जिस मदद का वादा

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)
अल्लाह तआला कर रहा है, वह मदद दुनिया की ज़िंदगी संवारने या उसे चमकाने के लिए नहीं है. वह सिर्फ़ इसलिए है कि वे दुनिया में ख़ुदा की तरफ़ से हक़ के दाई बनकर खड़े होते हैं और लोगों पर हक़ की गवाही देते हैं.

दावत कोई सादा काम नहीं है, दावत ख़ुद रब्बे-कायनात का काम है जो बंदों के ज़रीए अंजाम दिया जाता है. जो लोग इस काम के लिए उठेंगे उन्हें दुनिया व आख़िरत में ख़ुदा की नुसरत व रहमत हासिल होगी.

इस आयत में रसूलों के साथ ईमान वालों की मदद का भी वादा किया जा रहा है. इस वादे का ताल्लुक़ ख़ालिसतन उस काम से है जिस काम के लिए रसूल आते थे. अगरचे रसूलों का आना बंद हो गया, लेकिन रसूलों वाले काम की ज़रूरत पूरी तरह बाक़ी है और क़यामत तक बाक़ी रहेगी. अब जो लोग रसूलों वाले काम के लिए उठेंगे वे लोग ख़ुदा कि मदद के मुस्तहिक़ करार पाएंगे.

52 जिस दिन ज़ालिमों को उनकी मअज़रत (सफ़ाई पेश करना) कुछ फ़ायदा न देगी और
उनके लिए लानत होगी और उनके लिए बुरा ठिकाना होगा. 53 और हमने मूसा को हिदायत अता
की और बनी इसराईल को किताब का वारिस बनाया, 54 रहनुमाई और नसीहत अक़्ल वालों के
लिए. 55 पस तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा बरहक़ है और अपने क़सूर की माफ़ी चाहो.
और शाम व सुबह अपने रब की तस्बीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ.

56 जो लोग किसी सनद के बग़ैर अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं, जो उनके पास आयी हो, उनके दिलों में सिर्फ़ बड़ाई है कि वे उस तक कभी पहुँचने वाले नहीं. पस तुम अल्लाह की पनाह माँगो, बेशक वह सुनने वाला है, देखने वाला है.

57 यक़ीनन आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इंसानों को पैदा करने की निस्बत ज़्यादा
बड़ा काम है, लेकिन अकसर लोग नहीं जानते. 58 और अंधा और आंखों वाला यकसां
(समान) नहीं हो सकता, और नेक अमल (सत्कर्म) करने वाले मोमिन बंदे और वे जो बुराई करने
वाले हैं एकसा नहीं हो सकते हैं. तुम लोग बहुत कम सोचते हो. 59 बेशक क़यामत आकर रहेगी.
उसमें कोई शक नहीं, मगर अकसर लोग नहीं मानते.

60 और तुम्हारे रब ने फ़रमा दिया है कि मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दरख़्वास्त क़बूल करुंगा.
जो लोग मेरी इबादत से सरताबी करते हैं (यानी मुँह मोड़ते हैं), वे अनक़रीब ज़लील होकर जहन्नम
में दाख़िल होंगे. 61 अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई, ताकि तुम उसमें आराम करो,
और दिन को रोशन किया. बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है, मगर अकसर लोग

शुक्र नहीं करते. 62 यही अल्लाह तुम्हारा रब है, हर चीज़ का पैदा करने वाला, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. फिर तुम कहाँ से बहकाए जाते हो. 63 इसी तरह वे लोग बहकाए जाते रहे हैं जो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे.

64 अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह बनाया और आसमान को छत बनाया और तुम्हारा नक़्शा बनाया पस उम्दा नक़्शा बनाया. और उसने तुम्हें उम्दा चीज़ों का रिज़्क़ दिया. यह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह जो रब है सारे जहान का. 65 वही (हमेशा) ज़िंदा (रहने वाला) है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. पस तुम उसी को पुकारो. दीन (धर्म) को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए. सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का.

66 कहो, मुझे इससे मना कर दिया गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, जबकि मेरे पास खुली दलीलें आ चुकीं. और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अपने आपको रब्बुल-आलमीन (सृष्टि के प्रभु) के हवाले कर दूँ. 67 वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े (वीर्य) से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर वह तुम्हें बच्चे की शक्ल में निकालता है, फिर वह तुम्हें बढ़ाता है, ताकि तुम अपनी पूरी ताक़त को पहूँचो, फिर ताकि तुम बूढ़े हो जाओ. और तुम में से कोई पहले ही मर जाता है. और ताकि तुम मुक़र्रर वक़्त तक पहुँच जाओ और ताकि तुम सोचो. 68 वही है जो जिलाता है और मारता है. पस जब वह किसी काम का फ़ैसला कर लेता है तो बस उसे कहता है कि हो जा, तो वह हो जाता है.

69 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं. वे कहाँ से फेरे जाते हैं. 70 जिन्होंने किताब को झुठलाया और उस चीज़ को भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा. तो अनक़रीब वे जानेंगे, 71 जबकि उनकी गरदनों में तौक़ होंगे. और ज़ंजीरें, वे घसीटे जाएँगे 72 खौलते हुए पानी में. फिर वे आग में झोंक दिए जाएँगे. 73 फिर उनसे कहा जाएगा, कहाँ हैं वे जिन्हें तुम शरीक करते थे 74 अल्लाह के सिवा. वे कहेंगे, वे हमसे खोए गए, बल्कि हम इससे पहले किसी चीज़ को पुकारते न थे. इस तरह अल्लाह गुमराह करता है मुन्किरों को. 75 यह इस सबब से कि तुम ज़मीन में नाहक़ ख़ुश होते थे और इस सबब से कि तुम घमंड करते थे. 76 जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए. पस कैसा बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का.

77 पस सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा बरहक़ है. फिर जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा देंगे. या तुम्हें वफ़ात देंगे, पस उनकी वापसी हमारी ही तरफ़ है.

78 और हमने तुम से पहले बहुत से रसूल भेजे, उनमें से कुछ के हालात हमने तुम्हें सुनाए हैं और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनके हालात हमने तुम्हें नहीं सुनाए. और किसी रसूल को यह मक़दूर (सामर्थ्य)

न था कि वह अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर कोई निशानी ले आए. फिर जब अल्लाह का हुक्म आ गया तो हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला कर दिया गया. और ग़लतकार लोग उस वक़्त ख़सारे (घाटे) में रह गए.

79 अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए, ताकि तुम कुछ से सवारी का काम लो और उनमें से कुछ को तुम खाते हो. 80 और तुम्हारे लिए उनमें और भी फ़ायदे हैं, ताकि तुम उनके ज़रीए से अपनी ज़रूरत तक पहूँचो जो तुम्हारे दिलों में हो और उनपर और कश्ती पर तुम सवार किए जाते हो 81 इस तरह वह तुम्हें और भी निशानियाँ दिखाता है तो तुम अल्लाह की किन–किन निशानियों का इन्कार करोगे.

82 क्या वे ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़रे हैं. वे इनसे ज़्यादा थे, और कुव्वत (शक्ति) में और निशानियों में जो कि वे ज़मीन पर छोड़ गए, बढ़े हुए थे. पस उनकी कमाई उनके कुछ काम न आयी. 83 पस जब उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलें लेकर आए तो वे अपने उस इल्म पर नाज़ां रहे (फ़ख़्र करते रहे) जो उनके पास था, और उनपर वह अज़ाब आ पड़ा जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे. 84 फिर जब उन्होंने हमारा अज़ाब देखा, कहने लगे कि हम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाए (जिसके सिवा दूसरा कोई ईश्वर नहीं) और हम इन्कार करते हैं जिन्हें हम उसके साथ शरीक करते थे. 85 पस उनका ईमान उनके काम न आया, जबकि उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया. यही अल्लाह की सुन्नत (तरीक़ा) है जो उसके बंदों में जारी रही है, और उस वक़्त इन्कार करने वाले ख़सारे (घाटे) में रह गए.

सूरह–41. हा० मीम० अस–सजदा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हा० मीम०. 2 यह बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले की तरफ़ से उतारा हुआ कलाम है.

3 **यह एक किताब है जिसकी आयतें खोल–खोल कर बयान की गई हैं, अरबी ज़बान का क़ुरआन, उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं.**

4 **ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला. मगर उन लोगों में से अकसर ने इससे मुँह मोड़ा. पस वे नहीं सुन रहे हैं.**

नोटः– क़ुरआन में ख़ुद क़ुरआन को **'खुशखबरी देने वाला और डराने वाला'** कहा गया, यही अलफ़ाज़ पैग़ंबर के लिए भी आए हैं. इससे वाज़ेह है कि अब, जबकि पैग़ंबर आने वाला नहीं है. ख़ुद क़ुरआन पैग़ंबर का क़ायम मुक़ाम है. अब क़ुरआन के मानने वालों का काम यह है कि वह ख़ुदा का पैग़ाम यानी **'क़ुरआन'** सारे इंसानों तक पहुँचा दें.

5 और उन्होंने कहा, हमारे दिल उससे परदे में हैं जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो और हमारे कानों में डाट है (यानी अल्लाह का पैग़ाम सुनने से हमारे कानों में बोझ महसूस होता है). और हमारे और तुम्हारे दरमियान में एक हिजाब (ओट) है. पस तुम अपना काम करो, हम भी अपना काम कर रहे हैं.

6 कहो, मैं तो एक बशर (इंसान) हूँ तुम जैसा. मेरे पास यह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) बस एक ही माबूद है, पस तुम सीधे रहो उसी की तरफ़ और उससे माफ़ी चाहो. और ख़राबी है मुशरिकों के लिए, 7 जो ज़कात नहीं देते और वे आख़िरत के मुन्किर हैं. 8 बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए ऐसा अज्र (प्रतिफल) है जो मौक़ूफ़ (बाधित) होने वाला नहीं.

9 कहो, क्या तुम लोग उस हस्ती का इन्कार करते हो जिसने ज़मीन को दो दिन में बनाया, और तुम उसके हमसर (समकक्ष) ठहराते हो. वह रब है तमाम जहान वालों का. 10 और उसने ज़मीन में उसके ऊपर पहाड़ बनाए. और उसमें फ़ायदे की चीज़ें रख दीं. और उसमें उसकी ग़िज़ाएं ठहरा दीं चार दिन में (यानी चार कालावधियों में), पूरा हुआ पूछने वालों के लिए. 11 फिर वह आसमान की तरफ़ मुतवज्जह हुआ, और वह धुआँ था. फिर उसने आसमान और ज़मीन से कहा कि तुम दोनों आओ ख़ुशी से या नाख़ुशी से. दोनों ने कहा कि हम ख़ुशी से हाज़िर हैं. 12 फिर उसने दो दिन में उसके सात आसमान बनाए और हर आसमान में उसका हुक्म भेज दिया. और हमने आसमाने-दुनिया को चिराग़ों से ज़ीनत (साज-सज्जा) दी, और उसे महफ़ूज़ कर दिया. यह अज़ीज़ व अलीम (प्रभुत्वशाली व ज्ञानवान) की मंसूबाबंदी है.

13 पस अगर वे एराज़ (उपेक्षा) करते हैं तो कहो कि मैं तुम्हें उसी तरह के अज़ाब से डराता हूँ जैसा अज़ाब आद व समूद पर नाज़िल हुआ. 14 जबकि उनके पास रसूल आए, उनके आगे से और उनके पीछे से कि अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत न करो. उन्होंने कहा कि अगर हमारा रब चाहता तो वह फ़रिश्ते उतारता, पस हम उस चीज़ के मुन्किर हैं जिसे देकर तुम भेजे गए हो.

15 आद का यह हाल था कि उन्होंने ज़मीन में बग़ैर किसी हक़ के घमंड किया, और उन्होंने कहा, कौन है जो कुव्वत (शक्ति) में हमसे ज़्यादा है. क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिस ख़ुदा ने उन्हें पैदा किया है, वह कुव्वत में उनसे ज़्यादा है और वे हमारी निशानियों का इन्कार करते रहे. 16 तो हमने चंद मनहूस दिनों में उनपर सख़्त तूफ़ानी हवा भेज दी, ताकि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई का अज़ाब चखाएं, और आख़िरत का अज़ाब इससे भी ज़्यादा रुसवाकुन है और उन्हें कोई मदद नहीं पहुँचेगी.

17 **और वे जो समूद थे, तो हमने उन्हें हिदायत का रास्ता दिखाया, मगर उन्होंने हिदायत के मुक़ाबले में अंधेपन को पसंद किया, तो उन्हें अज़ाबे–ज़िल्लत के कड़के ने पकड़ लिया, उनकी बदकिरदारियों की वजह से.**

नोटः– हिदायत को क़बूल न करने का जो अंजाम होता है उससे बाख़बर करने के मक़सद से क़ुरआन से पहले जो क़ौमे गुज़रीं उनकी मिसालें क़ुरआन में पेश की जा रही हैं.

18 और हमने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और जो डरने वाले थे. 19 और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन आग की तरफ़ जमा किए जाएँगे, फिर वे जुदा–जुदा किए जाएँगे, 20 यहाँ तक कि जब वे उसके पास आ जाएँगे, उनके कान और उनकी आँखें और उनकी खालें उनपर उनके आमाल की गवाही देंगी. 21 और वे अपनी खालों से कहेंगे, तुमने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी. वे कहेंगी कि हमें उसी अल्लाह ने गोयाई (बोलने की सलाहियत) दी है जिसने हर चीज़ को गोया कर दिया है. और उसी ने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया और उसी के पास तुम लाए गए हो. 22 और तुम अपने को इससे छुपा न सकते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दें, लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से उन आमाल को नहीं जानता जो तुम करते हो. 23 और तुम्हारे उसी गुमान ने जो कि तुमने अपने रब के साथ किया था तुम्हें बर्बाद किया, पस तुम ख़सारा (घाटा) उठाने वालों में से हो गए. 24 पस अगर वे सब्र करें तो आग ही उनका ठिकाना है, और अगर वे माफ़ी माँगें तो उन्हें माफ़ी नहीं मिलेगी.

25 और हमने उनपर कुछ साथी मुसल्लत कर दिए तो उन्होंने उनके आगे और पीछे की हर चीज़ उन्हें ख़ुशनुमा बनाकर दिखाई. और उनपर वही बात पूरी होकर रही जो जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों पर पूरी हुई जो इनसे पहले गुज़र चुके थे. बेशक वे ख़सारे (घाटे) में रह जाने वाले थे.

26 और कुफ़्र करने वालों ने कहा कि इस क़ुरआन को न सुनो और इसमें ख़लल डालो, ताकि तुम ग़ालिब रहो. 27 पस हम इन्कार करने वालों को सख़्त अज़ाब चखाएंगे और उन्हें उनके अमल का बदतरीन बदला देंगे. 28 यह अल्लाह के दुश्मनों का बदला है, यानी आग. उनके लिए उसमें हमेशगी का ठिकाना होगा, इस बात के बदले में कि वे हमारी आयतों का इन्कार करते थे.

29 **और कुफ़्र करने वाले कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें उन लोगों को दिखा जिन्होंने जिन्नों और इंसानों में से हमें गुमराह किया,**

हम उन्हें अपने पांवों के नीचे डालेंगे, ताकि वे ज़लील हों.

नोटः– जो लोग आख़िरत की अदालत में नाकाम क़रार दिए जाएँगे और उनके हक़ में

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)
जहन्नम का फ़ैसला हो जाएगा. ऐसे लोगों की नफ़्सियात अपने गुमराहकुन रहनुमाओं के बारे में क्या होगी वह क़ुरआन के इस बयान से वाज़ेह है.

इंसानों में दो क़िस्म के इंसान हैं. एक वे जो शैतानों और झूठे लीडरों को अपना रहनुमा बनाते हैं. ये लोग दुनिया में ख़ूब एक दूसरे से दोस्ती रखते हैं. मगर आख़िरत में सूरतेहाल बिल्कुल बरअक्स होगी. वहाँ पैरवी करने वाले लोग जब देखेंगे कि उनके झूठे रहनुमाओं ने उन्हें जहन्नम में पहुँचाया है तो वे उनसे सख़्त मुतनफ़्फ़िर (नफ़रतज़दा) हो जाएँगे. और चाहेंगे कि उन्हें हक़ीर व ज़लील करके अपने दिल की तस्कीन हासिल करें.

30 जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह हमारा रब है, फिर वे साबितक़दम रहे, यक़ीनन उनपर फ़रिश्ते उतरते हैं और उनसे कहते हैं कि तुम न अंदेशा करो और न रंज करो और उस जन्नत की बशारत (शुभ सूचना) से ख़ुश हो जाओ जिसका तुम से वादा किया गया है.

31 हम दुनिया की ज़िंदगी में तुम्हारे साथी हैं और आख़िरत में भी. और तुम्हारे लिए वहाँ हर चीज़ है जिसे तुम्हारा दिल चाहे और तुम्हारे लिए उसमें हर वह चीज़ है जो तुम तलब करोगे, 32 ग़फ़ूर व रहीम (क्षमाशील व दयावान) की तरफ़ से मेहमानी के तौर पर.

नोटः– इंसान मौजूदा दुनिया में उन चीज़ों के पीछे दौड़ रहा है जिनके पाने की कोई हक़ीक़त नहीं, अगर इंसान उन्हें पा भी ले तो अनक़रीब वह सब चीज़ें उससे छीन जाने वाली हैं. जो लोग ज़िंदगी की हक़ीक़त जानकर रब–चाही ज़िंदगी गुज़ारेंगे, आख़िरत में वे लोग ख़ुदा के मेहमान होंगे. जिनका मेज़बान ख़ुदा हो, फिर उन्हें क्या नहीं मिलेगा.

33 **और उससे बेहतर किस की बात हो सकती है, जो लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाता है और नेक अमल करता है और कहता है कि मैं फ़रमांबरदारों में से हूँ.**

नोटः– अल्लाह की नज़र में सबसे बेहतर काम क्या है? वह है लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाना और अपनी ज़ाती ज़िंदगी को उसी पर ढालना. लेकिन इसी सबसे बेहतर काम को उम्मत ने सबसे ज़्यादा छोड़ रखा है. उम्मत की बेहतरी इसी में है कि वह दोबारा इसी सबसे बेहतर काम की तरफ़ वापस आए. इसी काम को अंजाम देने पर उम्मत की दुनिया में फलाह है और आख़िरत में नजात.

34 और भलाई और बुराई दोनों बराबर नहीं, तुम जवाब में वह कहो जो उससे बेहतर हो
फिर तुम देखोगे कि तुम में और जिसमें दुश्मनी थी, वह ऐसा हो गया जैसे कोई दोस्त क़राबत वाला
(घनिष्ठ दोस्त). 35 और यह बात उसी को मिलती है जो सब्र करने वाले हैं, और यह बात उसी
को मिलती है जो बड़ा नसीबे वाला (भाग्यवान) है. 36 और अगर शैतान तुम्हारे दिल में कुछ
वसवसा डाले तो अल्लाह की पनाह माँगो. बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है.

37 **और उसकी निशानियों में से है रात व दिन और सूरज व चांद. तुम सूरज और**
चांद को सज्दा न करो, बल्कि उस अल्लाह को सज्दा करो जिसने इन सबको पैदा
किया है, अगर तुम उसी की इबादत करने वाले हो.

नोटः– लोगों को ख़ालिक़े–हक़ीक़ी की तरफ़ बुलाने का नाम ही दावत है. लोगों को यह बताना है कि तुम मख़लूक़ के नहीं, बल्कि ख़ालिक़ के बंदे बनो.

38 पस अगर वे तकब्बुर (घमंड) करें तो जो लोग तेरे रब के पास हैं, वे शब व रोज़ उसी
की तस्बीह करते हैं और वे कभी नहीं थकते. अस्–सज्दा

39 और उसकी निशानियों में से यह है कि तुम ज़मीन को फ़रसूदा (मृत) हालत में देखते हो
फिर जब हम उसपर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूल जाती है. बेशक जिसने उसे ज़िंदा
कर दिया, वह मुरदों को भी ज़िंदा कर देने वाला है. बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है. 40 **जो**
लोग हमारी आयतों को उलटे माने (मतलब) पहनाते हैं, वे हमसे छुपे हुए नहीं
हैं. क्या जो आग में डाला जाएगा वह अच्छा है या वह शख़्स जो
क़यामत के दिन अमन के साथ आएगा. जो कुछ चाहे कर लो, बेशक
वह देखता है जो तुम कर रहे हो. 41 **जिन लोगों ने अल्लाह की नसीहत**
का इन्कार किया, जबकि वह उनके पास आ गई, और
बेशक यह एक ज़बरदस्त किताब है. 42 इसमें बातिल (असत्य) न इसके आगे से आ
सकता है और न इसके पीछे से, यह हकीम व हमीद (बुद्धिमान एवं प्रशंसनीय) की तरफ़ से उतारी
गई है. 43 तुम्हें वही बातें कही जा रही हैं जो तुम से पहले रसूलों को कही गई हैं. बेशक तुम्हारा
रब मग़्फ़िरत वाला (क्षमाशील) है और दर्दनाक सज़ा देने वाला भी.

44 और अगर हम इसे अजमी (ग़ैर—अरबी) कुरआन बनाते तो वे कहते कि इसकी आयतें

साफ़–साफ़ क्यों नहीं बयान की गईं. क्या अजमी किताब और अरबी लोग. कहो कि वह ईमान लाने वालों के लिए तो हिदायत और शिफ़ा (आत्मिक आरोग्य का साधन) है, और लोग जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में डाट है और वह उनके हक़ में अंधापन है. ये लोग गोया कि दूर की जगह से पुकारे जा रहे हैं.

45 और हमने मूसा को किताब दी थी तो उसमें इख़्तिलाफ़ पैदा किया गया. और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले तै न हो चुकी होती तो उनके दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता. और ये लोग उसकी तरफ़ से ऐसे शक में हैं जिसने उन्हें तरद्दुद (असमंजस) में डाल रखा है. 46
जो शख़्स नेक अमल करेगा तो अपने ही लिए करेगा और जो शख़्स बुराई करेगा तो उसका वबाल उसी पर आएगा. तेरा रब बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं.

पारा – 25 47 क़यामत का इल्म अल्लाह ही से मुतआल्लिक़ है. और कोई फल अपने ख़ोल (कवच) से नहीं निकलता और न कोई औरत हामिला (गर्भवती) होती और न जनती है, मगर यह सब उसके इल्म से होता है. और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा कि मेरे शरीक कहाँ हैं, वे कहेंगे कि हम आपसे यही अर्ज़ करते हैं कि हम में कोई इसका दावेदार नहीं. 48 और जिन्हें वे पहले पुकारते थे वे सब उनसे गुम हो जाएँगे, और वे समझ लेंगे कि उनके लिए कोई बचाव की सूरत नहीं.

49 और इंसान भलाई माँगने से नहीं थकता. और अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुँच जाए तो मायूस व दिल शिकस्ता (निराश) हो जाता है. 50 और अगर हम उसे तकलीफ़ के बाद जो कि उसे पहुँची थी, अपनी मेहरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो वह कहता है, यह तो मेरा हक़ ही है, और मैं नहीं समझता कि क़यामत कभी आएगी. और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो उसके पास भी मेरे लिए बेहतरी ही है. पस हम उन मुन्किरों को उनके आमाल से ज़रूर आगाह करेंगे. और उन्हें सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे.

51 और जब हम इंसान पर फ़ज़्ल करते हैं तो वह एराज़ (उपेक्षा) करता है और अपनी करवट फेर लेता है. और जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो वह लम्बी–लम्बी दुआएं करने वाला बन जाता है. 52 कहो कि बताओ, अगर यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से आया हो, फिर तुमने इसका इन्कार किया तो उस शख़्स से ज़्यादा गुमराह और कौन होगा जो मुख़ालिफ़त (विरोध) में बहुत दूर चला जाए.

53 **हम उन्हें अपनी निशानियाँ दिखाएंगे आफ़ाक़ (बाहरी दुनिया) में भी और ख़ुद उनके अंदर भी. यहाँ तक कि उनपर ज़ाहिर हो जाएगा कि यह क़ुरआन हक़ है. और क्या यह बात काफ़ी नहीं कि तेरा रब हर चीज़ का गवाह है.**

नोटः– डेढ़ हज़ार साल पहले यह पेशीनगोई की गई कि क़ुरआन के बाद ज़ाहिर होने वाले वाक़यात व हक़ाइक़ क़ुरआन की तसदीक़ करते चले जाएँगे. क़ुरआन आइंदा आने वाले तमाम ज़मानों में अपनी सदाक़त (सच्चाई) को न सिर्फ़ बाक़ी रखेगा, बल्कि मज़ीद वाज़ेह और मुदल्लल करता चला जाएगा. क़ुरआन हमेशा वक़्त की किताब रहेगा.

यह बात हैरतअंगेज़ तौर पर सद फ़ी सद दुरुस्त साबित हुई है. इल्मी तहक़ीक़ात, तारीख़ी वाक़यात, ज़मानी इनक़िलाबात सब क़ुरआन के हक़ में जमा होते चले गए, यहाँ तक कि आज ग़ैर–मुस्लिम मुहक़्क़िक़ीन (शोधकर्ता) भी गवाही दे रहे हैं कि क़ुरआन अपनी नादिर ख़ुसूसियात (अद्वितीय विशिष्टताओं) की बिना पर ख़ुद इस बात का सुबूत है कि वह ख़ुदा की किताब है. किसी इंसानी तस्नीफ़ (किताब) में ऐसी अब्दि (शाश्वत) ख़ुसूसियात पाई नहीं जा सकतीं.

क़ुरआन के मानने वालों पर यह ज़िम्मेदारी है कि वे क़ुरआन को सारे इन्सानों तक पहुँचा दें, ताकि हिदायत पाने वाले हिदायत पालें और बाक़ी लोगों पर हुज्जत तमाम हो जाए.

54 सुन लो, ये लोग अपने रब की मुलाक़ात में शक रखते हैं, सुन लो, वह हर चीज़ का इहाता किए हुए है (हर चीज़ को घेरे हुए है).

सूरह–42. अश–शूरा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हा० मीम०. 2 अइन० सीन० क़ाफ़०. 3 इसी तरह अल्लाह ग़ालिब व हकीम (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) 'वही' करता है (ईश–संदेश प्रकट करता है) तुम्हारी तरफ़ और उनकी तरफ़ जो तुम
से पहले गुज़रे हैं. 4 उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, वह सबसे ऊपर है,
सबसे बड़ा. 5 क़रीब है कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़े और फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह करते हैं उसी की हम्द (प्रशंसा) के साथ और ज़मीन वालों के लिए माफ़ी माँगते हैं. सुन लो कि अल्लाह ही माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है. 6 और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे कारसाज़
(कार्य–साधक) बनाए हैं, अल्लाह उनके ऊपर निगहबान है और तुम उनके ऊपर ज़िम्मेदार नहीं.

7 **और हमने इसी तरह तुम्हारी तरफ़ अरबी क़ुरआन उतारा है, ताकि तुम मक्का वालों को और उसके आस–पास वालों को डरा दो** और उन्हें जमा होने के दिन से डरा दो जिसके आने में कोई शक नहीं. एक गिरोह जन्नत में होगा और एक गिरोह आग में.

नोटः– क़ुरआन इसीलिए नाज़िल किया गया कि लोगों को क़ुरआन के ज़रीए से आगाह कर दिया जाए ताकि लोग ख़ुदा के तख़्लिक़ी मंसूबे को जान लें.

रसूलुल्लाह (स.) ने अपने 23 साला पैग़ंबराना ज़िंदगी में मक्का और उसके आस–पास के इलाक़ों में दावत का काम अंजाम दिया. फिर हज्जतुल–विदाअ के बाद सहाबा उस ज़माने की आबाद दुनिया में अपनी दावती ज़िम्मेदारी अदा करने के लिए फैल गये. जिसके नतीजे में सारी आबाद दुनिया में इस्लाम फैल गया. आज ख़ुदा के फ़ज़्ल से दुनिया के कोने–कोने में मुसलमान आबाद हैं. आज मुसलमान सिर्फ़ यह करें कि वे अपने आस–पास के उन इन्सानों तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचा दें जिन तक वह नहीं पहुँचा है.

अगर मुसलमानों को उनके करने का यह काम समझ में आ जाए तो क़ुरआन दुनिया के हर कच्चे–पक्के मकान में ब–आसानी पहुँच सकता है.

8 और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको एक ही उम्मत बना देता. लेकिन वह जिसे
चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है और ज़ालिमों का कोई हामी व मददगार नहीं. 9 क्या
उन्होंने उसके सिवा दूसरे कारसाज़ (कार्य–साधक) बना रखे हैं, पस अल्लाह ही कारसाज़ है और
वही मुरदों को ज़िंदा करता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है. 10 और जिस किसी बात में तुम
इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करते हो उसका फ़ैसला अल्लाह ही के सुपुर्द है. वही अल्लाह मेरा रब है, उसी
पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ करता हूँ.

11 वह आसमानों का और ज़मीन का पैदा करने वाला है. उसने तुम्हारी जिन्स से तुम्हारे
जोड़े पैदा किए और जानवरों के भी जोड़े बनाए. उसके ज़रीए वह तुम्हारी नस्ल चलाता है. कोई
चीज़ उसके मिस्ल नहीं (यानी उसके जैसा दूसरा कोई नहीं जिससे उसकी तुलना की जा सके)
और वह सुनने वाला, देखने वाला है. 12 उसी के इख़्तियार में आसमानों और ज़मीन की कुंजियां
हैं. वह जिसके लिए चाहता है ज़्यादा रोज़ी कर देता है और जिसे चाहता है कम कर देता है. बेशक
वह हर चीज़ का इल्म रखने वाला है.

13 अल्लाह ने तुम्हारे लिए वही दीन (धर्म) मुक़र्रर किया है जिसका उसने नूह को हुक्म दिया था और जिसकी 'वही' हमने तुम्हारी तरफ़ की है (यानी जिसका प्रकटीकरण हमने तुम्हारी तरफ़ किया है) और जिसका हुक्म हमने इब्राहीम को और मूसा को और ईसा को दिया था कि दीन को क़ायम रखो और उसमें इख़्तिलाफ़ (मत-भिन्नता, बिखराव) न डालो.

मुशरिकीन पर वह बात बहुत गिराँ (भार) है जिसकी तरफ़ तुम उन्हें बुला रहे हो.

अल्लाह जिसे चाहता है, अपनी तरफ़ चुन लेता है. और वह अपनी तरफ़ उसीकी रहनुमाई करता है जो उसकी तरफ़ मुतवज्जह होता है.

नोटः- इस आयत से वाज़ेह है कि रसूलुल्लाह (स.) ने मुश्रिकीन को दीने-हक़ की तरफ़ बुलाया. यही काम आपकी उम्मत को भी करना है. दावते-हक़ के ताल्लुक़ से चाहे उनका response जो भी हो. जहाँ तक हक़ को क़बूल करने का मामला है, यह सिर्फ़ उस इन्सान के लिए मुमकिन होता है जो हक़ को पाने के मामले में संजीदा हो, हक़ का तालिब हो.

14 और जो लोग मुतफ़र्रिक़ (विभाजित) हुए वे इल्म आने के बाद हुए, सिर्फ़ आपस की ज़िद की वजह से. और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से एक वक़्ते-मुअय्यन (निर्धारित समय सीमा) तक की बात तै न हो चुकी होती तो उनके दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता. और जिन लोगों को उनके बाद किताब दी गई, वे उसकी तरफ़ से शक में पड़े हुए हैं जिसने उन्हें तरद्दुद (असमंजस) में डाल दिया है.

15 पस तुम उसी की तरफ़ बुलाओ और उसपर जमे रहो जिस तरह तुम्हें हुक्म हुआ है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो. और कहो कि अल्लाह ने जो किताब उतारी है, मैं उसपर ईमान लाता हूँ. और मुझे यह हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे दरमियान इंसाफ़ करूँ. अल्लाह हमारा रब है और तुम्हारा रब भी. हमारे आमाल हमारे लिए हैं और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए हैं. हम में और तुम में कुछ झगड़ा नहीं. अल्लाह हम सबको जमा करेगा और उसी के पास जाना है.
16 और जो लोग अल्लाह के बारे में हुज्जत कर रहे हैं, बाद इसके कि उसे मान लिया गया, उनकी हुज्जत उनके रब के नज़दीक बातिल (झूठ) है और उनपर ग़ज़ब है और उनके लिए सख़्त अज़ाब है.

17 अल्लाह ही है जिसने हक़ के साथ किताब उतारी और तराज़ू भी. और तुम्हें क्या ख़बर शायद वह घड़ी (यानी क़यामत) क़रीब हो. 18 जो लोग उसका यक़ीन नहीं रखते वे उसकी जल्दी कर रहे हैं. और जो लोग यक़ीन रखने वाले हैं, वे उससे डरते हैं और वे जानते हैं कि वह बरहक़ है. याद रखो कि जो लोग उस घड़ी के बारे में झगड़ते हैं, वे गुमराही में बहुत दूर निकल गए हैं.

19 अल्लाह अपने बंदों पर मेहरबान है. वह जिसे चाहता है रोज़ी देता है. और वह क़ुव्वत वाला है, ज़बरदस्त है. 20 जो शख़्स आख़िरत की खेती चाहे हम उसे उसकी खेती में तरक़्क़ी देंगे. और जो शख़्स दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ दे देते हैं और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं.

21 क्या उनके कुछ शरीक हैं, जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुक़र्रर किया है जिसकी अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी. और अगर फ़ैसले की बात तै न पा चुकी होती तो उनका फ़ैसला कर दिया जाता. और बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है. 22 तुम ज़ालिमों को देखोगे कि वे डर रहे होंगे उससे जो उन्होंने कमाया. और वह उनपर ज़रूर पड़ने वाला है. और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए, वे जन्नत के बाग़ों में होंगे. उनके लिए उनके रब के पास वह सब होगा जो वे चाहेंगे, यही बड़ा इनाम है. 23 यह चीज़ है जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह अपने उन बंदों को देता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया. कहो कि मैं इसपर तुम से कोई बदला नहीं चाहता, मगर क़राबतदारी (रिश्ते-नातों) की मुहब्बत (क़ायम रहे). और जो शख़्स कोई नेकी करेगा, हम उसके लिए उसमें भलाई बढ़ा देंगे. बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, क़द्रदान (गुणग्राही) है.

24 क्या वे कहते हैं कि इसने अल्लाह पर झूठ बांधा है. पस अगर अल्लाह चाहे तो वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे. और अल्लाह बातिल (असत्य) को मिटाता है और हक़ (सत्य) को साबित करता है अपनी बातों से. बेशक वह दिलों की बातें जानता है. 25 और वही है जो अपने बंदों की तौबा क़बूल करता है और बुराइयों को माफ़ करता है और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो. 26 और वह उन लोगों की दुआएं क़बूल करता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया. और वह उन्हें अपने फ़ज़्ल से ज़्यादा दे देता है. और जो इन्कार करने वाले हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है.

27 और अगर अल्लाह अपने बंदों के लिए रोज़ी को खोल देता तो वे ज़मीन में फ़साद करते. लेकिन वह ठीक-ठीक पैमाने के साथ उतारता है जितना चाहता है. बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला है, देखने वाला है. 28 और वही है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैला देता है और वह काम बनाने वाला है, क़ाबिले तारीफ़ है. 29 और उसी की निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना. और वे जानदार जो उसने उनके दरमियान फैलाए हैं. और वह उन्हें जमा करने पर क़ादिर है जब वह उन्हें जमा करना चाहे.

30 और जो मुसीबत तुम को पहुँचती है तो वह तुम्हारे हाथों के किए हुए कामों ही के सबब से है, बहुत से क़सूरों को तो वह माफ़ कर देता है. 31 और तुम ज़मीन में ख़ुदा के क़ाबू से निकल नहीं सकते. और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई काम बनाने वाला है और न कोई मददगार.

32 और उसकी निशानियों में से यह है कि जहाज़ समुंदर में चलते हैं जैसे पहाड़. 33 अगर वह चाहे तो वह हवा को रोक दे फिर वे समुंदर की सतह पर ठहरे रह जाएँ. बेशक इसके अंदर निशानियाँ हैं हर उस शख़्स के लिए जो सब्र करने वाला, शुक्र करने वाला है. 34 या वह उन्हें तबाह कर दे उनके आमाल के सबब से और माफ़ कर दे बहुत से लोगों को, 35 **ताकि जान लें वे लोग जो हमारी निशानियों में झगड़ते हैं कि उनके लिए भागने की कोई जगह नहीं.**

36 **पस जो कुछ तुम्हें मिला है वह महज़ (चंद दिन) दुनियावी ज़िंदगी में बरतने के लिए है. और जो कुछ अल्लाह के पास है वह ज़्यादा बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है** उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और वे अल्लाह पर भरोसा रखते हैं.

37 और वे लोग जो बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं और जब उन्हें ग़ुस्सा आता है तो वे माफ़ कर देते हैं 38 और वे जिन्होंने अपने रब की दावत (आवाहन) को क़बूल किया और नमाज़ क़ायम की और वे अपना काम आपस के मशविरे से करते हैं. और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं. 39 और वे लोग कि जब उनपर चढ़ाई होती है तो वे बदला लेते हैं. 40 और बुराई का बदला है वैसी ही बुराई. फिर जिसने माफ़ कर दिया और इसलाह की तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है. बेशक वह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता. 41 और जो शख़्स अपने मज़लूम होने के बाद बदला ले तो ऐसे लोगों के ऊपर कुछ इल्ज़ाम नहीं. 42 इल्ज़ाम सिर्फ़ उनपर है जो लोगों के ऊपर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी करते हैं. यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अज़ाब है. 43 और जिस शख़्स ने सब्र किया और माफ़ कर दिया तो बेशक ये हिम्मत के काम हैं.

44 और जिस शख़्स को अल्लाह भटका दे तो उसके बाद उसका कोई कारसाज़ (काम बनानेवाला एवं सँवारनेवाला) नहीं. और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे अज़ाब को देखेंगे तो **वे कहेंगे कि क्या वापस जाने की कोई सूरत है.**
45 और तुम उन्हें देखोगे कि वे दोज़ख़ के सामने लाए जाएँगे, वे ज़िल्लत से झुके हुए होंगे. छुपी निगाह से देखते होंगे. और ईमान वाले कहेंगे कि **ख़सारे (घाटे) वाले वही लोग हैं जिन्होंने क़यामत के दिन अपने आपको और अपने**

मुताल्लिक़ीन (संबंधियों) को ख़सारे में डाल दिया. सुन लो, ज़ालिम
लोग दायमी (स्थायी) अज़ाब में रहेंगे. 46 और उनके लिए कोई मददगार न होंगे जो अल्लाह के
मुक़ाबले में उनकी मदद करें. और ख़ुदा जिसे भटका दे तो उसके लिए कोई रास्ता नहीं.

47 **(ऐ लोगो!) तुम अपने रब की दावत (आवाहन) क़बूल करो, इससे पहले कि ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए ख़ुदा की तरफ़ से हटना न होगा.** उस दिन तुम्हारे लिए कोई पनाह न होगी और न तुम किसी चीज़ को रद्द कर सकोगे.

48 **तो अब अगर वे एराज़ (उपेक्षा) करें तो हमने तुम्हें उनके ऊपर निगरां बनाकर नहीं भेजा है. तुम्हारा ज़िम्मा सिर्फ़ पैग़ाम पहुँचा देना है. और इंसान को जब हम अपनी रहमत से नवाज़ते हैं तो वह उसपर ख़ुश हो जाता है. और अगर उनके आमाल के बदले में उनपर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो आदमी नाशुक्री करने लगता है.**

नोटः– दाई मदू के ऊपर दारोग़ा नहीं है. दाई का काम ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाना है.

49 आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है.
वह जिसे चाहता है बेटियाँ अता करता है और जिसे चाहता है बेटे अता करता है 50 या उन्हें जमा
कर देता है बेटे भी और बेटियाँ भी. और जिसे चाहता है बेऔलाद रखता है. बेशक वह जानने
वाला है, क़ुदरत वाला है.

51 और किसी आदमी की यह ताक़त नहीं कि अल्लाह उससे कलाम करे, मगर 'वही' (यानी ईश–वाणी) के ज़रीए से या परदे के पीछे से या वह किसी फ़रिश्ते को भेजे कि वह 'वही' कर दे उसके इज़्न (आज्ञा) से जो वह चाहे. बेशक वह सबसे ऊपर है, हिकमत वाला है (बुद्धिमान है).

52 **और इसी तरह हमने तुम्हारी तरफ़ भी 'वही' की है, एक रूह अपने हुक्म से. तुम न जानते थे कि किताब क्या है और न यह जानते थे कि ईमान क्या है. लेकिन हमने इस (क़ुरआन) को एक नूर (सन्मार्ग दिखाने वाला प्रकाश)**

बनाया, **इससे हम हिदायत देते हैं** अपने बंदों में से

जिसे चाहते हैं. और बेशक तुम एक सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई कर रहे हो.

नोटः– हिदायत पाने का ज़रिया सिर्फ़ '**क़ुरआन**' है, इससे यह बात वाज़ेह होती है कि मदू तक पहुँचाने की चीज़ क्या है, वह सिर्फ़ '**क़ुरआन**' है.

53 उस अल्लाह के रास्ते की तरफ़ जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों और ज़मीन में है. सुन लो, सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटने वाले हैं.

सूरह–43. अज़–ज़ुख़रुफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हा० मीम०. 2 क़सम है इस वाज़ेह किताब की. 3 हमने इसे अरबी ज़बान का क़ुरआन
बनाया है, ताकि तुम समझो. 4 और बेशक यह असल किताब में हमारे पास है, बुलंद और
पुरहिकमत (ज्ञानपूर्ण).

5 क्या हम तुम्हारी नसीहत से इसलिए नज़र फेर लेंगे कि तुम लोग हद से गुज़रने वाले हो 6
और हमने पहले लोगों में कितने ही नबी भेजे. 7 और उन लोगों के पास कोई नबी नहीं आया
जिसका उन्होंने मज़ाक़ न उड़ाया हो. 8 फिर जो लोग उनसे ज़्यादा ताक़तवर थे उन्हें हमने हलाक
कर दिया. और अगले लोगों की मिसालें गुज़र चुकीं.

9 और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वे ज़रूर
कहेंगे कि उन्हें ज़बरदस्त, जानने वाले ने पैदा किया. 10 जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श
बनाया. और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए, ताकि तुम राह पाओ. 11 और जिसने आसमान से
पानी उतारा एक ख़ास मिक़दार में, फिर हमने उससे मुर्दा ज़मीन को ज़िंदा कर दिया, इसी तरह तुम
निकाले जाओगे. 12 और जिसने तमाम क़िस्में बनाईं और तुम्हारे लिए वे कश्तियां और चौपाए
बनाए जिनपर तुम सवार होते हो. 13 ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो. फिर तुम अपने रब
की नेमत को याद करो, जबकि तुम उनपर बैठो. और कहो कि पाक है वह जिसने इन चीज़ों को
हमारे क़ाबू में कर दिया, और हम इस क़ाबिल नहीं थे कि उन्हें (अपने) क़ाबू में करते. 14 और
बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं.

15 और उन लोगों ने ख़ुदा के बंदों में से ख़ुदा का जुज़ (अंश) ठहराया, बेशक इंसान खुला

नाशुक्रा है. 16 क्या ख़ुदा ने अपनी मख़्लूक़ात में से बेटियाँ पसंद कीं और तुम्हें बेटों से नवाज़ा?
17 और जब उनमें से किसी को उस चीज़ की ख़बर दी जाती है जिसे वह रहमान की तरफ़ मंसूब करता है तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और वह ग़म से भर जाता है. 18 क्या वह जो आराइश (आभूषणों) में परवरिश पाए और झगड़े में बात न कह सके. 19 और फ़रिश्ते जो रहमान के बंदे हैं उन्हें उन्होंने औरत क़रार दे रखा है. क्या वे उनकी पैदाइश के वक़्त मौजूद थे. उनका यह दावा लिख लिया जाएगा और उनसे पूछ होगी.

20 और वे कहते हैं कि अगर रहमान चाहता तो हम उनकी इबादत न करते. उन्हें इसका कोई इल्म नहीं. वे महज़ बेतहक़ीक़ बात कह रहे हैं. 21 क्या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब दी है तो उन्होंने उसे मज़बूत पकड़ रखा है.

22 **बल्कि वे कहते हैं कि हमने अपने बाप–दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उनके पीछे चल रहे हैं.** 23 **और इसी तरह हमने तुम से पहले जिस बस्ती में भी कोई नज़ीर (डराने वाला) भेजा तो उसके ख़ुशहाल लोगों ने कहा कि हमने अपने बाप–दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उनके पीछे चले जा रहे हैं.** 24 **नज़ीर ने कहा, अगरचे मैं उससे ज़्यादा सही रास्ता तुम्हें बताऊँ जिस पर तुमने अपने बाप–दादा को पाया है. उन्होंने कहा कि हम उसके मुन्किर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो.**

नोटः– इंसानी तारीख़ में इंसान मक़सदे–तख़्लीक़ जानने के मामले में नाकाम रहा उसका सबब यह है कि जिस माहौल में वह पैदा हुआ उसने उस माहौल की तरफ़ देखा, उस माहौल में जो culture और जो civilization रायज थी उसी तक उसकी नज़र गई. ज़िंदगी से ताल्लुक़ रखने वाली सच्चाई जानने के लिए इंसान को ख़ालिक़ की तरफ़ रुख़ करना होगा. ज़िंदगी की हक़ीक़त ज़िंदगी देने वाला ही बता सकता है. मक़सदे–तख़्लीक़ सिर्फ़ ख़ालिक़ ही बता सकता है, ना कि बाप–दादा या वह माहौल जिसमें इंसान पैदा होता है.

25 तो हमने उनसे इंतक़ाम (प्रतिशोध) लिया, पस देखो कि कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का.

26 और जब इब्राहीम ने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा कि मैं उन चीज़ों से बरी हूँ जिसकी तुम इबादत करते हो. 27 मगर वह जिसने मुझे पैदा किया, पस बेशक वह मेरी रहनुमाई करेगा 28 और इब्राहीम यही कलमा अपने पीछे अपनी औलाद में छोड़ गया, ताकि वे उसकी तरफ़ रुजूअ करें. 29 बल्कि मैंने उन्हें और उनके बाप–दादा को दुनिया का सामान दिया, यहाँ तक कि उनके पास हक़ (सत्य) आया और रसूल खोल कर सुना देने वाला. 30 और जब उनके पास हक़ आ गया तो उन्होंने कहा कि यह जादू है और हम इसके मुन्किर हैं.

31 और उन्होंने कहा कि यह क़ुरआन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया. 32 क्या ये लोग तेरे रब की रहमत को तक़सीम करते हैं. दुनिया की ज़िंदगी में उनकी रोज़ी को तो हमने तक़सीम किया है और हमने एक को दूसरे पर फ़ौक़ियत (उच्चता) दी है, ताकि वे एक दूसरे से काम लें. और तेरे रब की रहमत उससे बेहतर है जो ये जमा कर रहे हैं. 33 और अगर यह बात न होती कि सब लोग एक ही तरीक़े के हो जाएँगे तो जो लोग रहमान का इन्कार करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चांदी की बना देते और ज़ीने भी जिनपर वे चढ़ते हैं. 34 और उनके घरों के दरवाज़े भी और तख़्त भी जिनपर वे तकिया लगाकर बैठते हैं. 35 और सोने के भी, और ये चीज़ें तो सिर्फ़ दुनिया की ज़िंदगी का सामान हैं और आख़िरत तेरे रब के पास मुत्तक़ियों के लिए (यानी आख़िरत में जवाबदेही का एहसास रखने वाले लोगों के लिए) है.

36 और जो शख़्स रहमान की नसीहत से एराज़ (उपेक्षा) करता है तो हम उसपर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, पस वह उसका साथी बन जाता है 37 और वे उन्हें राहे–हक़ (सन्मार्ग) से रोकते रहते हैं. और ये लोग समझते हैं कि वे हिदायत पर हैं. 38 यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो वह कहेगा कि काश मेरे और तेरे दरमियान मशरिक़ और मग़रिब की दूरी होती. पस क्या ही बुरा साथी था तू! 39 और जबकि तुम ज़ुल्म कर चुके तो आज यह बात तुम्हें कुछ भी फ़ायदा नहीं देगी कि तुम अज़ाब में एक दूसरे के शरीक हो.

40 पस क्या तुम बहरों को सुनाओगे या तुम अंधों को राह दिखाओगे और उन्हें जो खुली हुई गुमराही में हैं. 41 पस अगर हम तुम्हें उठा लें तो हम उनसे बदला लेने वाले हैं. 42 या तुम्हें दिखा देंगे वह चीज़ जिसका हमने उनसे वादा किया है. पस हम उनपर पूरी तरह क़ादिर हैं. 43 पस तुम उसे मज़बूती से थामे रहो जो तुम्हारे ऊपर 'वही' की गई है (जो ईश–वाणी प्रकट की गई है). बेशक तुम एक सीधे रास्ते पर हो. 44 और यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीहत है. और अनक़रीब तुम से पूछ होगी. 45 और हमारे उन पैग़ंबरों को पूछ लो, जिन्हें हमने तुम से पहले भेजा है कि क्या हमने रहमान से सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) ठहराए थे कि उनकी इबादत की जाए.

46 और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, तो उसने कहा कि मैं ख़ुदावंदे–आलम का रसूल हूँ. 47 पस जब वह उनके पास हमारी निशानियों के साथ आया तो वे उसपर हँसने लगे. 48 और हम उन्हें जो निशानियाँ दिखाते थे वह पहली से बढ़कर होती थीं. और हमने उन्हें अज़ाब में पकड़ा, ताकि वे रुजूअ करें. 49 और उन्होंने कहा कि ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब से दुआ करो, उस अहद (वचन) की बिना पर जो उसने तुम से किया है, हम ज़रूर राह पर आ जाएँगे. 50 फिर जब हमने वह अज़ाब उनसे हटा दिया तो उन्होंने अपना अहद तोड़ दिया.

51 और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के दरमियान पुकार कर कहा कि ऐ मेरी क़ौम! क्या मिस्र
की बादशाही मेरी नहीं है, और ये नहरें जो मेरे नीचे बह रही हैं. क्या तुम लोग देखते नहीं. 52
बल्कि मैं बेहतर हूँ उस शख़्स से जो कि हक़ीर (तुच्छ) है और जो साफ़ बोल नहीं सकता. 53
(अगर यह हमसे बेहतर है तो) फिर क्यों न उसपर सोने के कंगन आ पड़े और फ़रिश्ते उसके साथ
परा बांध कर क्यों नहीं आते (यानी उसके साथ फ़रिश्तों का क़ाफ़िला क्यों नहीं होता?). 54 पस
उसने अपनी क़ौम को बेअक़्ल कर दिया. फिर उन्होंने उसकी बात मान ली. ये नाफ़रमान क़िस्म के
लोग थे. 55 फिर जब उन्होंने हमें ग़ुस्सा दिलाया तो हमने उनसे बदला लिया. और हमने उन
सबको ग़र्क़ कर दिया. 56 फिर हमने उन्हें माज़ी (अतीत) की दास्तान बना दिया और दूसरों के
लिए एक इबरत का ज़रिया (यानी सबक़ लेने का ज़रिया).

57 और जब इब्ने–मरयम की मिसाल दी गई तो तुम्हारी क़ौम के लोग उसपर चिल्ला उठे.
58 और उन्होंने कहा कि हमारे माबूद (पूज्य) अच्छे हैं या वह. यह मिसाल वे तुम से सिर्फ़
झगड़ने के लिए बयान करते हैं. बल्कि ये लोग झगड़ालू हैं. 59 ईसा तो बस हमारा एक बंदा था
जिस पर हमने फ़ज़्ल फ़रमाया और उसे बनी इसराईल के लिए एक मिसाल बना दिया. 60 और
अगर हम चाहें तो तुम्हारे अंदर से फ़रिश्ते बना दें जो ज़मीन में तुम्हारे जानशीन (उत्तराधिकारी) हों.
61 और बेशक ईसा क़यामत की एक निशानी है, तो तुम इसमें शक न करो और मेरी पैरवी करो.
यही सीधा रास्ता है. 62 और शैतान तुम्हें इससे रोकने न पाए. बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है.

63 और जब ईसा खुली निशानियों के साथ आया, उसने कहा कि मैं तुम्हारे पास हिकमत
(ज्ञानपूर्ण बात) लेकर आया हूँ और, ताकि मैं तुम पर वाज़ेह कर दूँ कुछ बातें जिनमें तुम
इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कर रहे हो. पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो.
64 बेशक अल्लाह ही मेरा रब है और तुम्हारा रब भी. तो तुम उसी की इबादत करो. यही सीधा
रास्ता है. 65 फिर गिरोहों ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया. पस तबाही है उन लोगों के लिए जिन्होंने
ज़ुल्म किया, एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से.

66 **ये लोग बस क़यामत का इंतज़ार कर रहे हैं कि वह
उनपर अचानक आ पड़े और उन्हें ख़बर भी न हो.** 67
तमाम दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाय डरने वालों के.

नोटः– यह कौन लोग है जिनका यहाँ ज़िक्र हो रहा है, बिलाशुबहा वह लोग जो आख़िरत को

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)
भूल कर ज़िंदगी जी रहे हैं. उनका ज़िंदगी जीना ख़ुदा के लिए जीना नहीं है. उनकी दूसरों से दोस्ती ख़ुदा के लिए दोस्ती नहीं है. बिलाशुबहा यह धोके की ज़िंदगी है.

सहाबा-ए-कराम का यह हाल था कि वह हवाओं में, बादलों में क़यामत की आमद को महसूस करते थे, जबकि ख़ुद ख़ुदा का रसूल उनके बीच में मौजूद था. लेकिन आज क़यामत को दूर की चीज़ बताने के लिए लोगों के पास बेहिसाब ख़ुद-साख़्ता बातें हैं, तावीलात हैं, ऐसे लोग क़यामत को दूर की चीज़ समझते रहेंगे और क़यामत अचानक उनपर आ जाएगी.

68 ऐ मेरे बंदो! आज तुम पर न कोई ख़ौफ़ है और न तुम ग़मगीन होंगे. 69 जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाए और फ़रमांबरदार रहे. 70 जन्नत में दाख़िल हो जाओ तुम और तुम्हारी बीवियां, तुम शाद किए जाओगे (यानी तुम्हें हर तरह की खुशियां व सम्मान अता किया जाएगा).
71 उनके सामने सोने की रिकाबियां और प्याले पेश किए जाएँगे. और वहाँ वे चीज़ें होंगी जिन्हें जी चाहेगा और जिनसे आंखों को लज़्ज़त होगी. और तुम यहाँ हमेशा रहोगे. 72 और यह वह जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिए गए उसकी वजह से जो तुम करते थे. 73 तुम्हारे लिए इसमें बहुत से मेवे हैं जिनमें से तुम खाओगे.

74 बेशक मुजरिम लोग हमेशा दोज़ख़ के अज़ाब में रहेंगे. 75 वह उनसे हल्का न किया जाएगा और वे उसमें मायूस पड़े रहेंगे. 76 और हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे ख़ुद ही ज़ालिम थे. 77 और वे पुकारेंगे कि ऐ मालिक! तुम्हारा रब हमारा ख़ात्मा ही कर दे (ऐसा वे जहन्नम के दारोग़ा से कहेंगे). फ़रिश्ता कहेगा, तुम्हें इसी तरह पड़े रहना है. 78 **हम तुम्हारे पास हक़ (सत्य) लेकर आए, मगर तुम में से अकसर हक़ से बेज़ार रहे.** 79 क्या उन्होंने कोई बात ठहरा ली है तो हम भी एक बात ठहरा लेंगे. 80 क्या उनका गुमान है कि हम उनके राज़ों को नहीं जानते और उनके मशविरों को नहीं सुन रहे हैं. हां, और हमारे भेजे हुए उनके पास लिखते रहते हैं.

81 कहो कि अगर रहमान की कोई औलाद होती तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करने वाला होता. 82 आसमानों और ज़मीन का ख़ुदावंद, अर्श का मालिक. वह उन बातों से पाक है जिसे लोग बयान करते हैं. 83 पस उन्हें छोड़ दो कि वे बहस करें और (अलफ़ाज़ का खेल) खेलते रहें, यहाँ तक कि वे उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है.

84 और वही है जो आसमान में ख़ुदावंद है और वही ज़मीन में ख़ुदावंद है और वह हिकमत वाला व इल्म वाला (बुद्धिमान एवं ज्ञानवान) है. 85 और बड़ी बाबरकत है वह ज़ात जिसकी बादशाही आसमानों और ज़मीन में है और जो कुछ उनके दरमियान है. और उसी के पास क़यामत

की ख़बर है. और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे.

86 और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे सिफ़ारिश का इख़्तियार नहीं रखते, मगर वे जो हक़ की गवाही देंगे और वे जानते होंगे. 87 और अगर तुम उनसे पूछो कि उन्हें किसने पैदा किया है तो वे यही कहेंगे कि अल्लाह ने. फिर वे कहाँ भटक जाते हैं. 88 और उसे रसूल के इस कहने की ख़बर है कि ऐ मेरे रब! ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते. 89 पस उनसे दरगुज़र करो (रुख़ फेर लो) और कहो कि सलाम है तुम्हें, अनक़रीब उन्हें मालूम हो जाएगा.

सूरह–44. अद–दुख़ान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हा० मीम०. 2 क़सम है इस वाज़ेह (सुस्पष्ट) किताब की. 3 हमने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा है, बेशक हम आगाह करते रहे हैं. 4 उस रात में हर हिकमत वाला मामला (विवेकपूर्ण प्रयोजन) तै किया जाता है, 5 हमारे हुक्म से. बेशक हम (पैग़ाम) भेजते रहे हैं. 6 तेरे रब की रहमत से, वही सुनने वाला है, जानने वाला है. 7 आसमानों और ज़मीन का रब और जो कुछ उनके दरमियान है (उनका रब भी), अगर तुम यक़ीन करने वाले हो. 8 उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं. वही ज़िंदा करता है और मारता है, तुम्हारा भी रब और तुम्हारे अगले बाप–दादा का भी रब.

9 बल्कि वे शक में पड़े हुए खेल रहे हैं. 10 पस इंतज़ार करो उस दिन का जब आसमान एक खुले हुए धुऐं के साथ ज़ाहिर होगा. 11 वह लोगों को घेर लेगा. यह एक दर्दनाक अज़ाब है. 12 (वे कहेंगे,) ऐ हमारे रब! हम पर से अज़ाब टाल दे, हम ईमान लाते हैं. 13 उनके लिए नसीहत कहाँ, और उनके पास रसूल आ चुका था खोल कर सुनाने वाला. 14 फिर उन्होंने उससे पीठ फेरी और कहा कि यह तो एक सिखाया हुआ दीवाना है. 15 हम कुछ वक़्त के लिए अज़ाब को हटा दें, तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे. 16 जिस दिन हम पकड़ेंगे बड़ी पकड़ उस दिन हम पूरा बदला लेंगे.

17 और उनसे पहले हमने फ़िरऔन की क़ौम को आज़माया. और उनके पास एक मुअज़्ज़ज़ (सम्माननीय) रसूल आया 18 कि अल्लाह के बंदों को मेरे हवाले करो. मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूँ. 19 और यह कि अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो. मैं तुम्हारे सामने एक वाज़ेह दलील पेश करता हूँ. 20 और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह ले चुका हूँ, इस बात से कि तुम मुझे संगसार (पत्थरों से मार डालना) करो. 21 और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो तुम मुझ से अलग रहो.

22 पस मूसा ने अपने रब को पुकारा कि ये लोग मुजरिम हैं. 23 तो अब तुम मेरे बंदों को रात ही रात में लेकर चले जाओ, तुम्हारा पीछा किया जाएगा. 24 और तुम दरिया को थमा हुआ छोड़ दो, उनका लश्कर डूबने वाला है. 25 उन्होंने कितने ही बाग़ और चशमे (स्रोत) सब छोड़ दिए 26 और खेतियाँ और उम्दा मकानात 27 और आराम के सामान जिनमें वे ख़ुश रहते थे. 28 इसी तरह हुआ और हमने दूसरी क़ौम को उनका मालिक बना दिया. 29 पस न उनपर आसमान रोया और न ज़मीन, और न उन्हें मोहलत दी गई.

30 और हमने बनी इसराईल को ज़िल्लत वाले अज़ाब से नजात दी. 31 यानी फ़िरऔन से, बेशक वह सरकश और हद से निकल जाने वालों में से था. 32 और हमने उन्हें अपने इल्म से दुनिया वालों पर तरजीह (वरीयता) दी. 33 और हमने उन्हें ऐसी निशानियाँ दीं जिनमें खुली हुई आज़माइश थी.

34 ये लोग कहते हैं, 35 बस यही हमारा पहला मरना है और हम फिर उठाए नहीं जाएँगे. 36 अगर तुम सच्चे हो तो ले आओ हमारे बाप-दादा को. 37 क्या ये बेहतर हैं या 'तुब्बा' की क़ौम और जो उनसे पहले थे. हमने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक वे नाफ़रमान थे.

38 **और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया.** 39 **उन्हें हमने हक़ के साथ बनाया है, लेकिन उनके अकसर लोग नहीं जानते.** 40 **बेशक फ़ैसले का दिन उन सबका तयशुदा वक़्त है.** 41 **जिस दिन कोई रिश्तेदार किसी रिश्तेदार के काम नहीं आएगा और न उनकी कुछ हिमायत की जाएगी.** 42 **हां, मगर वह जिस पर अल्लाह रहम फ़रमाए. बेशक वह ज़बरदस्त है, रहमत वाला है.**

43 ज़क्क़ूम का दरख़्त 44 गुनाहगार का खाना होगा, 45 तेल की तलछट जैसा, वह पेट में खौलेगा 46 जिस तरह गर्म पानी खौलता है. 47 उसे पकड़ो और उसे घसीटते हुए जहन्नम के बीच तक ले जाओ. 48 फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अज़ाब उंडेल दो. 49 चख इसे, तू बड़ा मुअज़्ज़ज़, मुकर्रम (यानी बड़ा ही सामर्थ्यवान और प्रतिष्ठित समझता था ख़ुद को). 50 यह वही चीज़ है जिसमें तुम शक करते थे.

51 बेशक ख़ुदा से डरने वाले अमन की जगह में होंगे, 52 बाग़ों और चशमों (स्रोतों) में. 53 बारीक रेशम और दबीज़ रेशम के लिबास पहने हुए आमने-सामने बैठे होंगे. 54 यह बात इसी तरह है, और हम उनसे ब्याह देंगे हूरें बड़ी—बड़ी आंखों वाली. 55 वे उसमें तलब करेंगे हर क़िस्म

के मेवे निहायत इत्मीनान से. 56 वे वहाँ मौत को न चखेंगे, मगर वह मौत जो पहले आ चुकी है और अल्लाह ने उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया. 57 यह तेरे रब के फ़ज़ल से होगा, यही है बड़ी कामयाबी.

58 पस हमने इस किताब को तुम्हारी ज़बान में आसान बना दिया है, ताकि लोग नसीहत हासिल करें.

59 पस तुम भी इंतज़ार करो, वे भी इंतज़ार कर रहे हैं.

सूरह–45. अल–जासिया

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हा० मीम०. 2 यह नाज़िल की हुई किताब है. अल्लाह ग़ालिब व हिकमत वाले (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) की तरफ़ से. 3 बेशक आसमानों और ज़मीन में निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिए. 4 और तुम्हारे बनाने में और उन हैवानात में जो उसने ज़मीन में फैला रखे हैं, निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं 5 और रात और दिन के आने जाने में और उस रिज़्क़ में जिसे अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उससे ज़मीन को ज़िंदा कर दिया उसके मर जाने के बाद, और हवाओं की गर्दिश में भी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं.

6 ये अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम हक़ के साथ तुम्हें सुना रहे हैं. फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद कौन सी बात है जिस पर वे ईमान लाएँगे.

नोटः– ख़ुदा की बात से बेहतर किस की बात हो सकती है? अगर लोगों को ख़ुदा की बात समझ में न आए तो फिर वह कौनसी बात है जो उनके समझ में आएगी.

दाई को अपने ज़िम्मे का काम अदा करने के लिए मदू तक सिर्फ़ **'क़ुरआन'** को पहुँचाना ज़रूरी है, ना कि दूसरा–दूसरा लिटरेचर. मज़ीद ख़ैरख़ाही के लिए **'क़ुरआन'** के साथ तशरिही लिटरेचर मदू तक पहुँचाया जा सकता है, लेकिन मदू तक पहुँचाने की असल चीज़ **'क़ुरआन'** ही है. मदू तक **'क़ुरआन'** पहुँचाए बग़ैर ना दाई अपनी दावती ज़िम्मेदारी से बरी हो सकता है और ना मदू तक पैग़ाम पहुँचाने का हक़ अदा हो सकता है.

7 ख़राबी है हर शख़्स के लिए जो झूठा हो. 8 जो ख़ुदा की आयतों को सुनता है, जबकि वे उसके सामने पढ़ी जाती हैं फिर वह तकब्बुर (घमंड) के साथ अड़ा रहता है, गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं. पस तुम उसे एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो. 9 और जब वह हमारी आयतों में से किसी चीज़ की ख़बर पाता है तो वह उसे मज़ाक़ बना लेता है. ऐसे लोगों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है. 10 उनके आगे जहन्नम है. और जो कुछ उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम आने वाला नहीं. और न वे जिन्हें उन्होंने अल्लाह के सिवा कारसाज़ बनाया (उनके काम आने वाले हैं). और उनके लिए बड़ा अज़ाब है. 11 यह हिदायत है, और जिन्होंने अपने रब की आयतों का इन्कार किया उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अज़ाब है.

12 अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए समुंदर को मुसख़्ख़र कर दिया (तुम्हारे वश में कर दिया), ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियाँ चलें और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो. 13 और उसने आसमानों और ज़मीन की तमाम चीज़ों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया, सबको अपनी तरफ़ से. बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं.

14 ईमान वालों से कहो कि उन लोगों से दरगुज़र करें जो ख़ुदा के दिनों की उम्मीद नहीं रखते (यानी आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते), ताकि अल्लाह एक क़ौम को उसकी कमाई का बदला दे. 15 **जो शख़्स नेक अमल करेगा तो उसका फ़ायदा उसी के लिए है. और जिस शख़्स ने बुरा किया तो उसका वबाल उसी पर पड़ेगा. फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे.**

16 और हमने बनी इसराईल को किताब और हुक्म और नबुवत दी और उन्हें पाकीज़ा रिज़्क़ अता किया और हमने उन्हें दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) बख़्शी. 17 और हमने उन्हें दीन के बारे में खुली-खुली दलीलें दीं. फिर उन्होंने इख़्तिलाफ़ (मतभेद) नहीं किया, मगर इसके बाद कि उनके पास इल्म आ चुका था, आपस की ज़िद की वजह से. बेशक तेरा रब क़यामत के दिन उनके दरमियान फ़ैसला कर देगा उन चीज़ों के बारे में जिनमें वे आपस में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करते थे. 18 फिर हमने तुम्हें दीन के एक वाज़ेह (स्पष्ट) तरीक़े पर क़ायम किया. पस तुम उसी पर चलो और उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते. 19 ये लोग अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकते. और ज़ालिम लोग एक दूसरे के साथी हैं, और डरने वालों का साथी अल्लाह है. 20 इस (क़ुरआन) में लोगों के लिए बसीरत (सूझबूझ) की बातें हैं और हिदायत व रहमत उन लोगों के लिए जो यक़ीन करें.

21 क्या वे लोग जिन्होंने बुरे कार्य किए हैं, यह ख़याल करते हैं कि हम उन्हें उन लोगों की

मानिंद कर देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, उन सबका जीना और मरना यकसां (समान) हो जाए. बहुत बुरा फ़ैसला है जो वे कर रहे हैं. 22 और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हिकमत (यानी विवेकपूर्ण उद्देश्य) के साथ पैदा किया और ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला दिया जाए और उनपर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा.

23 क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश (इच्छा) को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है और अल्लाह ने उसके इल्म के बावजूद उसे गुमराही में डाल दिया और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया. पस ऐसे शख़्स को कौन हिदायत दे सकता है, इसके बाद कि अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया हो, क्या तुम ध्यान नहीं करते.

24 और वे कहते हैं कि हमारी इस दुनिया की ज़िंदगी के सिवा कोई और ज़िंदगी नहीं. हम मरते हैं और जीते हैं और हमें सिर्फ़ ज़माने की गर्दिश (कालचक्र) हलाक करती है. और उन्हें इस बारे में कोई इल्म नहीं. वे महज़ गुमान की बिना पर ऐसा कहते हैं. 25 और जब उन्हें हमारी खुली–खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो उनके पास कोई हुज्जत इसके सिवा नहीं होती कि हमारे बाप–दादा को ज़िंदा करके लाओ अगर तुम सच्चे हो. 26 कहो कि अल्लाह ही तुम्हें ज़िंदा करता है, फिर वह तुम्हें मारता है, फिर वह क़यामत के दिन तुम्हें जमा करेगा, उसमें कोई शक नहीं, लेकिन अकसर लोग नहीं जानते.

27 और अल्लाह ही की बादशाही है आसमानों में और ज़मीन में और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी उस दिन अहले–बातिल (असत्यवादी) ख़सारे (घाटे) में पड़ जाएँगे. 28 और तुम देखोगे कि हर गिरोह घुटनों के बल गिर पड़ेगा. हर गिरोह अपने नामए–आमाल (कर्म–पत्र) की तरफ़ बुलाया जाएगा. (कहा जाएगा,) आज तुम्हें उस अमल का बदला दिया जाएगा जो तुम कर रहे थे. 29 यह हमारा दफ़्तर है जो तुम्हारे बारे में ठीक–ठीक गवाही (शहादत) दे रहा है. हम लिखवाते जा रहे थे जो कुछ तुम करते थे.

30 पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनका रब उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा. यही खुली कामयाबी है.

31 **और जिन्होंने इन्कार किया, (उनसे पूछा जाएगा) क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर सुनाई नहीं जाती थीं.**

पस तुमने तकब्बुर (घमंड) किया और तुम मुजरिम लोग थे. 32 और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वादा हक़ है और क़यामत में कोई शक नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि

क़यामत क्या है, हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम उसपर यक़ीन करने वाले नहीं.

33 और उनपर उनके आमाल की बुराइयाँ खुल जाएँगी और वह चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे. 34 **और कहा जाएगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जिस तरह तुमने अपने इस दिन के आने को भुलाए रखा. और तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं.** 35 **यह इस वजह से कि तुमने अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ उड़ाया. और दुनिया की ज़िंदगी ने तुम्हें धोखे में रखा.** पस आज न वे उससे निकाले जाएँगे और न उनका उज़्र् क़बूल किया जाएगा.

36 पस सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है आसमानों का और रब है ज़मीन का, रब है तमाम आलम का. 37 और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में. और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है.

पारा – 26

सूरह–46. अल–अहक़ाफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हा० मीम०. 2 यह किताब अल्लाह ज़बरदस्त, हिकमत वाले की तरफ़ से (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान की तरफ़ से) उतारी गई है. 3 हमने आसमानों और ज़मीन को और उनके दरमियान की चीज़ों को नहीं पैदा किया, मगर हक़ के साथ और मुअय्यन (निश्चित) मुद्दत के लिए. और जो लोग मुन्किर हैं, वे उससे बेरुख़ी करते हैं जिससे उन्हें डराया गया है.

4 कहो कि तुमने ग़ौर भी किया उन चीज़ों पर जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में क्या बनाया है या आसमान (को बनाने व चलाने) में उनकी कुछ साझेदारी है? मेरे पास इससे पहले की कोई किताब ले आओ या कोई इल्म जो चला आता हो, अगर तुम सच्चे हो. 5 और उस शख़्स से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारे जो क़यामत तक उसका जवाब नहीं दे सकते, और उन्हें उनके पुकारने की भी ख़बर नहीं. 6 और जब लोग इकट्ठा किए जाएँगे तो वे इनके दुश्मन होंगे और उनकी इबादत के मुन्किर बन जाएँगे.

7 **और जब हमारी खुली–खुली आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो मुन्किर लोग इस हक़ की बाबत, जबकि वह उनके पास पहुँचता है,** कहते हैं कि यह खुला हुआ जादू है. 8 क्या ये लोग कहते हैं कि उसने

इसे अपनी तरफ़ से बना लिया है, कहो कि अगर मैंने इसे अपनी तरफ़ से बनाया है तो तुम लोग मुझे ज़रा भी अल्लाह से बचा नहीं सकते. जो बातें तुम बनाते हो अल्लाह उन्हें ख़ूब जानता है. वह मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाही के लिए काफ़ी है. और वह बख़्शने वाला, रहमत वाला है.

9 कहो कि मैं कोई अनोखा रसूल नहीं हूँ. और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या. मैं तो सिर्फ़ उसी का इत्तेबाअ (अनुसरण) करता हूँ जो मेरी तरफ़ 'वही' (ईश-वाणी) के ज़रीए आता है, मैं तो सिर्फ़ एक खुला हुआ आगाह करने वाला हूँ. 10 कहो, क्या तुमने कभी सोचा कि अगर यह क़ुरआन अल्लाह की जानिब से हो और तुमने इसे नहीं माना, और बनी इसराईल में से एक गवाह ने इस जैसी किताब पर गवाही दी है. पस वह ईमान लाया और तुमने तकब्बुर (घमंड) किया. बेशक अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता.

11 और इन्कार करने वाले ईमान लाने वालों के बारे में कहते हैं कि अगर यह कोई अच्छी चीज़ होती तो वे इसपर हमसे पहले न दौड़ते. और चूंकि उन्होंने इससे हिदायत नहीं पाई तो अब वे कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है.

12 **और इससे पहले मूसा की किताब थी रहनुमा और रहमत. और अब यह एक किताब है** जो उसे सच्चा करती है, अरबी ज़बान में, **ताकि उन लोगों को डराए जिन्होंने ज़ुल्म किया. और वह ख़ुशख़बरी है नेक लोगों के लिए.**

नोटः– ख़ुदा की तरफ़ से जितनी भी किताबें आईं, इस मक़सद के तहत आईं कि इंसानों को ख़ुदा के तख़्लिक़ी मंसूबे से आगाह कर दिया जाए.

13 बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वे उसपर जमे रहे तो उन लोगों पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वे ग़मगीन होंगे. 14 यही लोग जन्नत वाले हैं जो उसमें हमेशा रहेंगे, उन आमाल के बदले जो वे दुनिया में करते थे.

15 और हमने इंसान को हुक्म दिया कि वह अपने माँ-बाप के साथ भलाई करे. उसकी माँ ने तकलीफ़ के साथ उसे पेट में रखा. और तकलीफ़ के साथ उसे जना. और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में हुआ. यहाँ तक कि जब वह अपनी पुख़्तगी को पहुँचा और चालीस वर्ष को पहुँच गया तो वह कहने लगा कि ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे एहसान का शुक्र करूँ जो तूने मुझ

पर किया और मेरे माँ–बाप पर किया और यह कि मैं वह नेक अमल करूँ जिससे तू राज़ी हो. और (ऐ मेरे रब!) मेरी औलाद में भी मुझे नेक औलाद दे. मैंने तेरी तरफ़ रुजूअ किया और मैं फ़रमांबरदारों में से हूँ. 16 ये लोग हैं जिनके अच्छे आमाल को हम क़बूल करेंगे और उनकी बुराइयों से दरगुज़र करेंगे, वे अहले–जन्नत में से होंगे, सच्चा वादा जो उनसे किया जाता था.

17 और जिसने अपने माँ–बाप से कहा कि मैं बेज़ार हूँ तुम से. क्या तुम मुझे यह ख़ौफ़ दिलाते हो कि मैं क़ब्र से निकाला जाऊँगा, हालाँकि मुझ से पहले बहुत सी क़ौमें गुज़र चुकी हैं और वे दोनों अल्लाह से फ़रियाद करते हैं (और बेटे से कहते हैं) कि अफ़सोस है तुझ पर, तू ईमान ला, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है. पस वह कहता है कि यह सब अगलों की कहानियाँ हैं. 18 ये वे लोग हैं जिनपर अल्लाह का क़ौल पूरा हुआ उन गिरोहों के साथ जो उनसे पहले गुज़रे जिन्नों और इंसानों में से. बेशक वे ख़सारे (घाटे) में रहे.

19 और हर एक के लिए उनके आमाल के एतबार से दर्जे होंगे, ताकि अल्लाह सबको उनके आमाल का पूरा बदला दे और उनपर ज़ुल्म नहीं होगा. 20 और जिस दिन इन्कार करने वाले आग के सामने लाए जाएँगे, तुम अपनी अच्छी चीज़ें दुनिया की ज़िंदगी में ले चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी, इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक़ तकब्बुर (घमंड) करते थे और इस वजह से कि तुम नाफ़रमानी करते थे.

21 **और आद के भाई (हूद) को याद करो. जबकि उसने अपनी क़ौम को अहक़ाफ़ में डराया और डराने वाले उससे पहले भी गुज़र चुके थे और उसके बाद भी आए कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो. मैं तुम पर एक हौलनाक दिन के अज़ाब से डरता हूँ.**

नोटः– ख़त्मे–नबुवत के बाद **'डराने वाले'** यानी पैग़ंबरों का आना बंद हो गया, लेकिन इंसानों का पैदा होना जारी है. अब इन इंसानों तक यह पैग़ाम कौन पहुँचाएगा कि **'ऐ लोगो! अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, उसके सिवा कोई माबूद नहीं.'** अब यह पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी **'उम्मते–मुहम्मदी'** पर है.

22 उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से फेर दो. पस अगर तुम सच्चे हो तो वह चीज़ हम पर लाओ जिसका तुम हमसे वादा करते हो. 23 उसने कहा कि इसका इल्म तो अल्लाह को है, और मैं तो तुम्हें वह पैग़ाम पहुँचा रहा हूँ जिसके साथ मुझे भेजा गया है. लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग नादानी की बातें करते हो.

24 पस जब उन्होंने उसे बादल की शक्ल में अपनी वादियों की तरफ़ आते हुए देखा तो उन्होंने कहा कि यह तो बादल है जो हम पर बरसेगा. नहीं, बल्कि यह वह चीज़ है जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे. एक आँधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब है. 25 वह हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से उखाड़ फेंकेगी. पस वे ऐसे हो गए कि उनके घरों के (खंडर के) सिवा वहाँ कुछ नज़र न आता था. मुजरिमों को हम इसी तरह सज़ा देते हैं.

26 और हमने उन लोगों को उन बातों में क़ुदरत दी थी कि तुम्हें उन बातों में क़ुदरत नहीं दी और हमने उन्हें कान और आँख और दिल दिए. मगर वे कान उनके कुछ काम न आए और न आँखें और न दिल. क्योंकि वे अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और उन्हें उस चीज़ ने घेर लिया जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे. 27 और हमने तुम्हारे आस पास की बस्तियाँ भी तबाह कर दीं. और हमने बार–बार अपनी निशानियाँ बताईं, ताकि वे बाज़ आएं. 28 पस क्यों न उनकी मदद की उन्होंने जिन को उन्होंने ख़ुदा के तक़र्रुब (समीपता) के लिए माबूद (पूज्य) बना रखा था. बल्कि वे सब उनसे खोए गए और यह उनका झूठ था और उनकी गढ़ी हुई बात थी.

29 और जब हम जिन्नात के एक गिरोह को तुम्हारी तरफ़ ले आए,

वे क़ुरआन सुनने लगे.

पस जब वे उसके पास आए तो कहने लगे कि चुप रहो.

फिर जब क़ुरआन पढ़ा जा चुका तो वे लोग डराने वाले बनकर अपनी क़ौम की तरफ़ वापस गए.

30 उन्होंने कहा कि ऐ हमारी क़ौम! हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है, उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की तसदीक़ (पुष्टि) करती हुई जो उसके पहले से मौजूद हैं. वह हक़ की तरफ़ और एक सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करती है. 31 ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की दावत (आवाहन) क़बूल करो और उसपर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को

माफ़ कर देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा. 32 और जो शख़्स अल्लाह के दाई (आवाहनकर्ता) की दावत पर लब्बैक नहीं कहेगा तो वह ज़मीन में (अल्लाह को) हरा नहीं सकता और अल्लाह के सिवा उसका कोई मददगार न होगा. ऐसे लोग खुली हुई गुमराही में हैं.

नोटः– 'क़ुरआन' सुनने या पढ़ने की हक़ीक़त यह है कि 'क़ुरआन' का सुननेवाला या पढ़ने वाला 'क़ुरआन' का दाई बन जाए. उसने 'क़ुरआन' पढ़कर भी 'क़ुरआन' नहीं पढ़ा जो 'क़ुरआन' का दाई नहीं बना, उसने 'क़ुरआन' सुन कर भी 'क़ुरआन' नहीं सुना जो 'क़ुरआन' का दाई नहीं बना.

33 क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और वह उनके पैदा करने से नहीं थका, क्या वह इसपर क़ुदरत नहीं रखता है कि वह मुरदों को ज़िंदा कर दे, हां वह हर चीज़ पर क़ादिर है. 34 और जिस दिन ये इन्कार करने वाले आग के सामने लाए जाएँगे, (उनसे पूछा जाएगा) क्या यह हक़ीक़त नहीं है? वे कहेंगे कि हां, हमारे रब की क़सम. इरशाद होगा फिर चखो अज़ाब उस इन्कार के बदले जो तुम कर रहे थे.

35 **पस तुम सब्र करो जिस तरह हिम्मत वाले पैग़म्बरों ने सब्र किया. और उनके लिए जल्दी न करो. जिस दिन ये लोग उस चीज़ को देखेंगे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो गोया कि वे दिन की एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे.**

(तुम्हारा काम) यह पैग़ाम पहुँचा देना है.

पस वही लोग बर्बाद होंगे जो नाफ़रमानी करने वाले हैं.

सूरह-47. मुहम्मद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 जिन लोगों ने इन्कार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, अल्लाह ने उनके आमाल को रायगां (विफल) कर दिया. 2 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए और उस चीज़ को माना जो मुहम्मद पर उतारी गयी है, और वह हक़ है उनके रब की तरफ़ से, अल्लाह ने उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर दीं और उनका हाल दुरुस्त कर दिया. 3 यह इसलिए कि जिन लोगों ने इन्कार किया

उन्होंने बातिल (असत्य) की पैरवी की. और जो लोग ईमान लाए उन्होंने हक़ (सत्य) की पैरवी की जो उनके रब की तरफ़ से है. इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनकी मिसालें बयान करता है.

4 पस जब मुन्किरों से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उनकी गरदनें मारो. यहाँ तक कि जब ख़ूब क़तल कर चुको तो उन्हें मज़बूती के साथ युद्धबंदी बना लो. फिर उसके बाद या तो एहसान करके छोड़ना है या मुआवज़ा लेकर, यहाँ तक कि जंग अपने हथियार रख दे. यह है काम. और अगर अल्लाह चाहता तो वह उनसे बदला ले लेता, लेकिन वह (चाहता है कि) तुम लोगों को एक दूसरे से आज़माए. और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएँगे, अल्लाह उनके आमाल को हरगिज़ ज़ाया (नष्ट) नहीं करेगा. 5 वह उनकी रहनुमाई फ़रमाएगा और उनका हाल दुरुस्त कर देगा. 6
और उन्हें (उस) जन्नत में दाख़िल करेगा जिसकी उन्हें पहचान करा दी है.

7 **ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दमों को जमा देगा.**

नोटः– अल्लाह की मदद करना यह है कि अल्लाह के बंदों पर अल्लाह के तख़्लिक़ी मंसूबे को वाज़ेह कर दिया जाए.

अल्लाह को अहले–ईमान से जो रोल मतलूब है वह 'अन्सारुल्लाह' (यानी अल्लाह को मदद करने वाले) का रोल है, यह रोल क्या है, यह रोल दावत का रोल है, इसी रोल को अदा करने के लिए अंबिया आते थे. अब यही रोल **'उम्मते–मुहम्मदी'** को अदा करना है.

8 और जिन लोगों ने इन्कार किया उनके लिए तबाही है और अल्लाह उनके आमाल को ज़ाया कर देगा.

9 **यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारी है. पस अल्लाह ने उनके आमाल को अकारत कर दिया.**

नोटः– अल्लाह ने नाज़िल की हुई चीज़ नापसंद करने का सवाल उस वक़्त पैदा होता है, जबकि वह उन तक पहुँच जाए. इससे मालूम हुआ कि दाई का काम पूरी ख़ैरख़ाही के साथ अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना है. और इस मामले में रिस्पॉन्स के लिए इस इम्तिहानी दुनिया में मदू पूरी तरह से आज़ाद है. ख़ुदा के पैग़ाम को नापसंद करना, ख़ुदा की नज़र में मुन्किर बन जाना है.

10 क्या ये लोग मुल्क में चले फिरे नहीं कि वे उन लोगों का अंजाम देखते जो उनसे पहले
गुज़र चुके हैं, अल्लाह ने उन्हें उखाड़ फेंका और मुन्किरों के सामने उन्हीं की मिसालें आनी हैं. 11

यह इस सबब से कि अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ (यानी ईमान वालों के काम बनानेवाला) है और मुन्किरों का कोई कारसाज़ नहीं.

12 बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. और जिन लोगों ने इन्कार किया वे बरत रहे हैं और खा रहे हैं जैसे कि चौपाए खाएं, और आग उन लोगों का ठिकाना है. 13 और कितनी ही बस्तियां हैं जो कुव्वत (शक्ति) में तुम्हारी उस बस्ती से ज़्यादा थीं जिसने तुम्हें निकाला है. हमने उन्हें हलाक कर दिया. पस कोई उनका मददगार न हुआ.

14 क्या वह जो अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह (स्पष्ट) दलील पर है. वह उसकी तरह हो जाएगा जिसकी बदअमली उसके लिए ख़ुशनुमा बना दी गई है और वे अपनी ख़्वाहिशात (इच्छाओं) पर चल रहे हैं. 15 जन्नत की मिसाल जिसका वादा डरने वालों से किया गया है उसकी कैफ़ियत यह है कि उसमें नहरें हैं ऐसे पानी की जिसमें तब्दीली नहीं होगी (उसकी शुद्धता हमेशा क़ायम रहेगी) और नहरें होंगी दूध की जिसका मज़ा कभी नहीं बदलेगा और नहरें होंगी शराब की जो पीने वालों के लिए लज़ीज़ होंगी और नहरें होंगी शहद की जो बिल्कुल साफ़ होगा. और उनके लिए वहाँ हर क़िस्म के फल होंगे. और उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश (क्षमा) होगी. क्या ये लोग उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा आग में रहेंगे और उन्हें खौलता हुआ पानी पीने के लिए दिया जाएगा, पस वह उनकी आंतों को टुकड़े—टुकड़े कर देगा.

16 तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो इल्म वालों से पूछते हैं कि उन्होंने अभी क्या कहा. यही लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी. और वे अपनी ख़्वाहिशों पर चलते हैं. 17 और जिन लोगों ने हिदायत की राह इख़्तियार की तो अल्लाह उन्हें और ज़्यादा हिदायत देता है और उन्हें उनकी परहेज़गारी (ईश—परायणता) अता करता है.

18 **ये लोग तो बस इसके मुंतज़िर हैं कि क़यामत उनपर अचानक आ जाए, तो उसकी अलामतें ज़ाहिर हो चुकी हैं. पस जब वह आ जाएगी तो उनके लिए नसीहत हासिल करने का मौक़ा कहाँ रहेगा.**

नोटः– सहाबा-ए-कराम का यह हाल था कि रसूले-ख़ुदा (स.) उनके बीच मौजूद होने के बावजूद सहाबा तेज़ हवाओं में, बादलों में क़यामत के फट पड़ने का अंदेशा रखते थे, जबकि मौजूदा मुसलमान क़यामत को बहुत दूर की चीज़ समझ कर ज़िंदगी गुज़ार रहा है इसी का यह नतीजा है कि मौजूदा मुसलमान क़यामत की आमद पर ज़बानी तौर पर अक़ीदे का इज़हार करता है, लेकिन अमलन उसकी सारी दौड़-धूप अपनी दुनिया चमकाने और संवारने के लिए जारी है. यही वह रविश है जिसने मौजूदा मुसलमानों को दावत के अहमतरीन फ़रीज़े से ग़ाफ़िल कर दिया है.

19 पस जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और माफ़ी माँगों अपने क़सूर के लिए और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए. और अल्लाह जानता है तुम्हारे चलने फिरने को और तुम्हारे ठिकानों को.

20 और जो लोग ईमान लाए हैं, वे कहते हैं कि कोई सूरह क्यों नहीं उतारी जाती. पस जब एक वाज़ेह सूरह उतार दी गई और उसमें जंग का भी ज़िक्र था तो तुमने देखा कि जिनके दिलों में बीमारी है, वे तुम्हारी तरफ़ इस तरह देख रहे हैं जैसे किसी पर मौत छा गई हो. पस ख़राबी है उनके
लिए. 21 हुक्म मानना है और भली बात कहना है. पस जब मामले का क़तई फ़ैसला हो जाए तो
अगर वे अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिए बहुत बेहतर होता. 22 पस अगर तुम फिर गए तो
इसके सिवा तुम से कुछ उम्मीद नहीं कि तुम ज़मीन में फ़साद करो और आपस के रिश्तों को तोड़
दो. 23 यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने अपनी रहमत से दूर किया, पस उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आंखों को अंधा कर दिया.

24 **क्या ये लोग क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते या उनके दिलों पर ताले लगे हुए हैं.**
25 **जो लोग पीठ फेरकर हट गए, बाद इसके कि हिदायत उनपर वाज़ेह हो गई, शैतान ने उन्हें फ़रेब दिया और अल्लाह ने उन्हें ढील दे दी.**
26 **यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने उन लोगों से, जो कि ख़ुदा की उतारी हुई चीज़ को नापसंद करते हैं कहा, कि कुछ बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे. और अल्लाह उनकी राज़दारी को जानता है.**

नोटः– क़ुरआन ग़ौर–व–फ़िक्र के लिए है, उसके मुताबिक़ अमल करने के लिए है, वह महज़ अलफ़ाज़ की तिलावत करने के लिए नहीं है. अगर इन्सान क़ुरआन को समझ कर न पढ़े तो ऐसी सूरत में वह कैसे ग़ौर–व–फ़िक्र करने वाला बनेगा? वह उसके मुताबिक़ कैसे अमल करने वाला बनेगा? वह क़ुरआन का दाई कैसे बनेगा?

27 पस उस वक़्त क्या होगा, जबकि फ़रिश्ते उनकी रूहें क़ब्ज़ करते होंगे, उनके मुँह और
उनकी पीठों पर मारते हुए 28 यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज़ की पैरवी की जो अल्लाह को ग़ुस्सा दिलाने वाली थी और उन्होंने उसकी रज़ा को नापसंद किया. पस अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए.

29 जिन लोगों के दिलों में बीमारी है क्या वे ख़याल करते हैं कि अल्लाह उनके कीने (द्वेषों)

को कभी ज़ाहिर नहीं करेगा. 30 और अगर हम चाहते तो हम उनको तुम्हें दिखा देते, पस तुम उनकी अलामतों से उन्हें पहचान लेते. और तुम उनके अंदाज़े-कलाम से ज़रूर उन्हें पहचान लोगे. और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है.

31 और हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे, ताकि हम उन लोगों को जान लें जो तुम में जिहाद करने वाले हैं और साबितक़दम रहने वाले हैं और हम तुम्हारे हालात की जांच कर लें. 32 बेशक जिन लोगों ने इन्कार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की मुख़ालिफ़त की, जबकि हिदायत उनपर वाज़ेह हो चुकी थी, वे अल्लाह को कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे. और अल्लाह उनके आमाल को ज़ाया कर देगा.

33 ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने आमाल को बर्बाद न करो. 34 बेशक जिन लोगों ने इन्कार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका. फिर वे मुन्किर ही मर गए, अल्लाह उन्हें कभी नहीं बख़्शेगा. 35 पस तुम हिम्मत न हारो और सुलह की दरख़्वास्त न करो. और तुम ही ग़ालिब रहोगे. और अल्लाह तुम्हारे साथ है. और वह हरगिज़ तुम्हारे आमाल में कमी नहीं करेगा.

36 **दुनिया की ज़िंदगी तो महज़ एक खेल तमाशा है** और अगर तुम ईमान लाओ और तक़वा (ईश-भय) इख़्तियार करो तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे अज्र अता करेगा और वह तुम्हारे माल तुम से न माँगेगा. 37 अगर वह तुम से तुम्हारे माल तलब करे फिर आख़िर तक तलब करता रहे तो तुम बुख़्ल (कंजूसी) करने लगो और अल्लाह तुम्हारे कीने को ज़ाहिर कर दे. 38 हां, तुम वे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है, पस तुम में से कुछ लोग हैं जो बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं. और जो शख़्स बुख़्ल करता. तो वह अपने आप से बुख़्ल करता है. और अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, तुम मोहताज हो. और अगर तुम फिर जाओ तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम ले आएगा, फिर वे तुम जैसे नहीं होंगे.

सूरह-48. अल-फ़तह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 **बेशक हमने तुम्हें खुली फ़तह दे दी.**
2 **ताकि अल्लाह तुम्हारी अगली और पिछली ख़ताएं माफ़ कर**

दे. और तुम्हारे ऊपर अपनी नेमत की तकमील कर दे. और तुम्हें सीधा रास्ता दिखाए. 3 **और अल्लाह तुम्हें ज़बरदस्त मदद अता करे.**

नोटः– नबुवत मिलने के बाद 13 साल तक रसूलुल्लाह (स.) मक्का में इस्लाम की दावत-व-तब्लीग़ का काम करते रहे. आपके चचा अबू-तालिब और आपकी अहलिया हज़रत खदिजा (र.) के इन्तक़ाल के बाद मक्का में हालात इतने सख़्त हुए कि वहाँ रहकर अब दावते-दीन का काम करना नामुमकिन हो चुका था. तो अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (स.) और आपके असहाब को हिजरत की इजाज़त दे दी. आप अपने असहाब के साथ मदीना चले गए. लेकिन मक्का के मुशरिकीन ख़ामोश नहीं बैठे, उन्हें मदीना में इस्लाम का मरकज़ बनना गवारा नहीं था. चुनाँचे मुशरिकीने-मक्का के जारेहाना इक़दाम के नतीजे में बदर और ओहद की जंगें हुई. यह जंगों को नतीजा जो भी हो, वह दावत के हक़ में नहीं थीं. इस जंगी माहौल के चलते दावती सरगर्मियां तक़रीबन ठप हो चुकी थीं, क्योंकि पुरअमन हालात में ही दावत की planning और programming की जा सकती है. सन 6 हिजरी में रसूलुल्लाह (स.) ने मुशिरकीने-मक्का से ना-जंग मुहायदा किया, जो पूरी तरह मुशरिकीन की एकतरफा शर्तों के मुताबिक़ था. जिसे इस्लामी तारीख़ (Islamic History) में सुलह-हुदैबिया कहा जाता है. यह मुहायदा मक्का के पास हुदैबिया के मुक़ाम पर हुआ. एकतरफा शर्तों की वजह कुछ सहाबा को यह सुलह, ज़िल्लत आमेज़ सुलह नज़र आ रही थी, लेकिन इस मुहायदे ने दावत के नए इमकानात को खोला. इसलिए अल्लाह तआला ने इसे फतह क़रार दिया. इस सुलह के बाद रसूलुल्लाह और आपके असहाब मदीना वापिस आए तो पूरी तरह दावती सरगर्मियों में मसरूफ़ हो गए. इन्हीं सरगर्मियों के दौरान आपने अपने हम ज़माना हुकमरानों के नाम दावती ख़ुतूत रवाना किए.

सुलह-हुदैबिया के मौक़े पर आपके साथियों की तादाद तक़रीबन 1 हज़ार थी. इस सुलह के दो साल बाद सन 8 हिजरी में आप मक्का के सफ़र पर निकले तो आपके साथियों की तादाद तक़रीबन 10 हज़ार थी. यह दावत का करिश्मा था. इसका नतीजा यह हुआ कि मक्का बिला-जंग फतह हो गया.

दावत अल्लाह के नज़दीक इतना बड़ा अमल है कि कोई अल्लाह का बंदा दावत के बंद दरवाज़े को खोलता है. तो अल्लाह उस बंदे की अगली और पिछली सारी ख़ताएं माफ़ कर देता है. दावत ख़ुदा को सबसे ज़्यादा मतलूब अमल है. दावत ही के ज़रीए ख़ुदा का मंसूबा इंसानों पर वाज़ेह होता है.

4 वही है जिसने मोमिनों के दिल में इत्मीनान उतारा, ताकि उनके ईमान में मज़ीद ईमान का इज़ाफ़ा हो. और आसमानों और ज़मीन की फ़ौजें अल्लाह ही की हैं. और अल्लाह जानने वाला व

हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है. 5 ताकि अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे. और ताकि उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर दे. और यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामयाबी है. 6 और ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को अज़ाब दे जो अल्लाह के साथ बुरे गुमान रखते थे. बुराई की गर्दिश उन्हीं पर है. और उनपर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ और उनपर उसने लानत की. और उनके लिए उसने जहन्नम तैयार कर रखी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है. 7 और आसमानों और ज़मीन की फ़ौजें अल्लाह ही की हैं. और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) है.

8 **बेशक हमने तुम्हें (हक़ की) गवाही देने वाला और बशारत (शुभ–सूचना) देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है.**

नोटः– दाई का असल काम यह होता है कि वह लोगों को ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसका अंजाम वाज़ेह तौर पर बता दे, ताकि लोग यह जान लें कि मौत के बाद की अब्दि ज़िंदगी में किन लोगों के लिए ख़ुदा की तरफ़ से इनाम है और किन लोगों के लिए सज़ा.

9 ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसकी ताज़ीम (सम्मान) करो. और तुम अल्लाह की तस्बीह करो सुबह व शाम. 10 जो लोग तुम से बैअत (प्रतिज्ञा) करते हैं, वे दरहक़ीक़त अल्लाह से बैअत करते हैं. अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है. फिर जो शख़्स उसे तोड़ेगा उसके तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा. और जो शख़्स उस अहद (वचन) को पूरा करेगा जो उसने अल्लाह से किया है तो अल्लाह उसे बड़ा अज्र अता फ़रमाएगा.

11 जो देहाती पीछे रह गए, वे अब तुम से कहेंगे कि हमें हमारे माल (धन–संपत्ति) और हमारे बाल–बच्चों ने मशग़ूल रखा, पस आप हमारे लिए माफ़ी की दुआ फ़रमाएं. यह अपनी ज़बानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है. तुम कहो कि कौन है जो अल्लाह के सामने तुम्हारे लिए कुछ इख़्तियार रखता हो, अगर अल्लाह तुम्हें कोई नुक़सान या नफ़ा पहुँचाना चाहे. बल्कि अल्लाह उससे बाख़बर है जो तुम कर रहे हो. 12 बल्कि तुमने यह गुमान किया कि रसूल और मोमिनीन कभी अपने घर वालों की तरफ़ लौटकर नहीं आएंगे. और यह ख़याल तुम्हारे दिलों को बहुत भला नज़र आया और तुमने बहुत बुरे गुमान किए. और तुम बर्बाद होने वाले लोग हो गए. 13 और जो ईमान न लाया अल्लाह पर और उसके रसूल पर तो हमने ऐसे मुन्किरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है. 14 और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है.

वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अज़ाब दे. और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है.

15 जब तुम ग़नीमत का माल (यानी युद्ध के बाद पराभूत पक्ष की तरफ़ से प्राप्त होने वाला माल) लेने के लिए चलोगे तो पीछे रह जाने वाले लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो. वे चाहते हैं कि अल्लाह की बात को बदल दें. कहो कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते. अल्लाह पहले ही यह फ़रमा चुका है. तो वे कहेंगे, बल्कि तुम लोग हमसे हसद करते हो, (नहीं,) बल्कि यही लोग बहुत कम समझते हैं.

16 पीछे रहने वाले देहातियों से कहो कि अनक़रीब तुम ऐसे लोगों की तरफ़ बुलाए जाओगे जो बड़े ज़ोरआवर हैं, तुम उनसे लड़ोगे या वे इस्लाम लाएँगे. पस अगर तुम हुक्म मानोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज्र देगा और अगर तुम रूगर्दानी (अवहेलना) करोगे जैसा कि तुम इससे पहले रूगर्दानी कर चुके हो तो वह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा. 17 न अंधे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न बीमार पर कोई गुनाह है. और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करेगा उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. और जो शख़्स रूगर्दानी करेगा, उसे वह दर्दनाक अज़ाब देगा.

18 अल्लाह ईमान वालों से राज़ी हो गया, जबकि वे तुम से दरख़्त के नीचे बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे, अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था. पस उसने उनपर सकीनत (शांति) नाज़िल फ़रमाई और उन्हें इनाम में एक क़रीबी फ़तह दे दी. 19 और बहुत सी ग़नीमतें भी जिन्हें वे हासिल करेंगे. और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है. 20 और अल्लाह ने तुम से बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिन्हें तुम लोगे, पस यह उसने तुम्हें फ़ौरी तौर पर दे दिया. और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए, ताकि अहले-ईमान के लिए यह एक निशानी बन जाए. और ताकि वह तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाए. 21 और एक फ़तह और भी है जिस पर तुम अभी क़ादिर नहीं हुए. अल्लाह ने उसका इहाता कर रखा है (उसे घेरे में ले रखा है). और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है.

22 और अगर ये मुन्किर लोग तुम से लड़ते तो ज़रूर पीठ फेरकर भागते, फिर वे न कोई हिमायती पाते और न मददगार. 23 यह अल्लाह की सुन्नत (तरीक़ा) है जो पहले से चली आ रही है. और तुम अल्लाह की सुन्नत में कोई तब्दीली न पाओगे. 24 और वही है जिसने मक्का की वादी में उनके हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए. बाद इसके कि तुम्हें उनपर क़ाबू दे दिया था. और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है.

25 वही लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम्हें मसजिदे-हराम से रोका और कुर्बानी के जानवरों को भी रोके रखा कि वे अपनी जगह पर न पहुँचें. और अगर (मक्का में) बहुत से मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें न होतीं जिन्हें तुम लाइल्मी (अज्ञानता) में पीस डालते, फिर उनके सबब

तुम पर बेख़बरी में इल्ज़ाम आता, (यह इसलिए हुआ), ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करे. और अगर वे लोग अलग हो गए होते तो उनमें जो मुन्किर थे उन्हें हम दर्दनाक सज़ा देते.

26 जब इन्कार करने वालों ने अपने दिलों में हमिय्यत (हठ) पैदा की, जाहिलीयत की हमिय्यत (अज्ञान और अहंकार पर आधारभूत हठधर्मी), फिर अल्लाह ने अपनी तरफ़ से सकीनत (शांति) नाज़िल फ़रमाई अपने रसूल पर और ईमान वालों पर, और अल्लाह ने उन्हें तक़वा की बात पर (ईश-भय पर) जमाए रखा और वे उसके ज़्यादा हक़दार और उसके अहल थे. और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है.

27 बेशक अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखाया जो हक़ीक़त के अनुसार है. बेशक अल्लाह ने चाहा तो तुम मसजिदे-हराम में ज़रूर दाख़िल होंगे अमन के साथ, अपने सर मुंडवाओगे और बाल कटवाओगे, तुम्हें कोई अंदेशा नहीं होगा. पस अल्लाह ने वह बात जानी जो तुमने नहीं जानी, पस इससे पहले उसने एक फ़तह (विजय) दे दी.

28 **और अल्लाह ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने-हक़ के साथ भेजा, ताकि वह इसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे. और अल्लाह की गवाही काफ़ी है.**

नोटः- यहाँ जिस ग़लबे का ज़िक्र है वह सियासी ग़लबा नहीं है, बल्कि फ़िक्रि ग़लबा (वैचारिक प्रभुत्व) है. और यह फ़िक्रि ग़लबा दावत ही के ज़रीए से हासिल होता है और फ़िक्रि ग़लबा ही वह ग़लबा है जिसके लिए कोई ज़वाल नहीं, जबकि सियासी ग़लबे का मामला इसके बरख़िलाफ़ है. अल्लाह ने इस दीने-हक़ की हिफ़ाज़त फ़रमा कर दीने-हक़ के फ़िक्रि ग़लबे का इंतज़ाम कर दिया है. जब-जब भी फ़िक्रि मैदान में दूसरे अदयान से दीने-हक़ का सामना होगा दीने-हक़ ही तमाम दीनों पर ग़ालिब रहेगा.

29 मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वे मुन्किरों पर सख़्त हैं और आपस में मेहरबान हैं. तुम उन्हें रुकूअ में और सज्दे में देखोगे, वे अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रज़ामंदी की तलब में लगे रहते हैं. उनकी निशानी उनके चेहरों पर है सज्दे के असर से, उनकी यह मिसाल तौरात में है. और इंजील में, उनकी मिसाल यह है कि जैसे खेती, उसने अपना अंकुर निकाला, फिर उसे मज़बूत किया, फिर वह और मोटा हुआ, फिर अपने तने पर खड़ा हो गया, वह किसानों को भला लगता है, ताकि उनसे मुन्किरों का जी जलाए. उनमें से जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किया, अल्लाह ने उनसे माफ़ी का और बड़े सवाब का वादा किया है.

सूरह–49. अल–हुजुरात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है.

2 ऐ ईमान वालो! तुम अपनी आवाज़ें पैग़म्बर की आवाज़ से ऊपर मत करो और न उसे इस तरह आवाज़ देकर पुकारो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को पुकारते हो. कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएँ और तुम्हें ख़बर भी न हो. 3 जो लोग अल्लाह के रसूल के आगे अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं वही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़्वे (ईश–भय) के लिए जांच लिया है. उनके लिए माफ़ी है और बड़ा सवाब है. 4 जो लोग तुम्हें हुजरों (कमरों) के बाहर से पुकारते हैं, उनमें से अकसर समझ नहीं रखते. 5 और अगर वे सब्र करते, यहाँ तक कि तुम ख़ुद उनके पास निकल कर आ जाओ तो यह उनके लिए बेहतर होता. और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है.

6 ऐ ईमान वालो! अगर कोई फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास ख़बर लाए तो तुम अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को नादानी से कोई नुक़सान पहुँचा दो, फिर तुम्हें अपने किए पर पछताना पड़े. 7 और जान लो कि तुम्हारे दरमियान अल्लाह का रसूल है. अगर वह बहुत से मामलात में तुम्हारी बात मान ले तो तुम बड़ी मुश्किल में पड़ जाओ. लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और उसे तुम्हारे दिलों में मरग़ूब (प्रिय) बना दिया, और कुफ़्र और फ़िस्क़ (अवज्ञा) और नाफ़रमानी से तुम्हें मुतनफ़्फ़िर (विमुख) कर दिया (यानी नापसंदीदा बना दिया). ऐसे ही लोग राहेरास्त (सन्मार्ग) पर हैं, 8 अल्लाह के फ़ज़्ल और इनाम से और अल्लाह जानने वाला व हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

9 और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ जाएँ तो उनके दरमियान सुलह कराओ. फिर अगर उनमें का एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज़्यादती करे तो उस गिरोह से लड़ो जो ज़्यादती करता है. यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौट आए. फिर अगर वह लौट आए तो उनके दरमियान अद्ल (न्याय) के साथ सुलह कराओ और इंसाफ़ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को पसंद करता है. 10 मुसलमान सब भाई हैं, पस अपने भाइयों के दरमियान मिलाप कराओ और अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर रहम किया जाए.

11 ऐ ईमान वालो! न मर्द दूसरे मर्दों का मज़ाक़ उड़ाएं, हो सकता है कि वे (अल्लाह की नज़र में) उनसे बेहतर हों. और न औरतें दूसरी औरतों का मज़ाक़ उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों. और न एक दूसरे को ताना दो और न एक दूसरे को बुरे लक़ब (उपाधि) से पुकारो.

ईमान लाने के बाद गुनाह का नाम लगाना बुरा है. और जो बाज़ न आएं तो वही लोग ज़ालिम हैं.

12 ऐ ईमान वालो! बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं. और टोह में न लगो. और तुम में से कोई किसी की ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) न करे. क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, तुम तो उससे घिन करोगे. और अल्लाह से डरो. बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है.

13 **ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया. और तुम्हें क़ौमों और ख़ानदानों में तक़सीम कर दिया, ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो.**

बेशक अल्लाह के नज़दीक तुम में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार (यानी अल्लाह से डरने वाला, बुराइयों से बचने वाला) है. बेशक अल्लाह जानने वाला, ख़बर रखने वाला है.

नोटः- परहेज़गारी क्या है? परहेज़गारी यह है कि इंसान ख़ुद को अल्लाह की मना की हुई चीज़ों से दूर रखे. जैसे डॉक्टर के कहने पर मरीज़ कुछ चीज़ों का परहेज़ करता है, इसी तरह ख़ुदा का बंदा ख़ुदा की मना की हुई चीज़ों से अपने आपको दूर रखता है, बिलाशुबहा ऐसा ही इंसान ख़ुदा की नज़र में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला है.

14 देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाए, कहो कि तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि यूं कहो कि हमने इस्लाम क़बूल किया, और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ. और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो तो अल्लाह तुम्हारे आमाल में से कुछ कमी नहीं करेगा. बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है.

15 **मोमिन तो बस वे हैं** **जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर उन्होंने शक नहीं किया और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया (जद्दोजहद की), यही सच्चे लोग हैं.**

16 कहो, क्या तुम अल्लाह को अपने दीन से आगाह कर रहे हो. हालाँकि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है. और अल्लाह हर चीज़ से बाख़बर है.

17 ये लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि उन्होंने इस्लाम क़बूल किया है. कहो कि अपने इस्लाम का एहसान मुझ पर न रखो, बल्कि अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उसने तुम्हें ईमान की हिदायत दी. अगर तुम सच्चे हो.

नोटः– कोई शख़्स इस्लाम में दाख़िल हो या उसके हाथ से कोई इस्लामी काम अंजाम पाए तो उसे समझना चाहिए कि यह अल्लाह की मदद से हुआ है. ईमान और अमल सबका इनहिसार अल्लाह की तौफ़ीक़ पर है. इसलिए जब भी किसी को किसी ख़ैर की तौफ़ीक़ मिले तो वह अल्लाह का शुक्र अदा करे.

18 बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन की छुपी बातों को जानता है. और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो.

सूरह–50. क़ाफ़०

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़ाफ़०. क़सम है बाअज़मत क़ुरआन की. 2 बल्कि उन्हें तअज्जुब हुआ कि उनके पास
उन्हीं में से एक डराने वाला आया, पस मुन्किरों ने कहा कि यह तअज्जुब की चीज़ है. 3 क्या जब
हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे, यह दुबारा ज़िंदा होना बहुत बईद (असंभव बात) है. 4 हमें मालूम
है जितना ज़मीन उनके अंदर से घटाती है और हमारे पास किताब है जिसमें सब कुछ महफ़ूज़ है.

5 **बल्कि उन्होंने हक़ को झुठलाया है, जबकि वह उनके पास आ चुका है,** पस वे उलझन में पड़े हुए हैं.

नोटः– हक़ का पैग़ाम झुठलाने या मानने का सवाल उस वक़्त पैदा होगा, जबकि उसे लोगों तक पहुँचा दिया जाए. ख़त्मे–नबुवत के बाद हक़ का पैग़ाम लोगों तक पहुँचाने की नागुज़ीर ज़िम्मेदारी **'उम्मते–मुहम्मदी'** पर है. इस ज़िम्मेदारी को पूरा करके ही उम्मत ख़ुदा की नज़र में **'उम्मते–मुहम्मदी'** बन सकती है.

6 क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा, हमने कैसा उसे बनाया और उसे
रौनक़ दी और उसमें कोई दरार नहीं. 7 और ज़मीन को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ डाल दिए

और उसमें हर क़िस्म की रौनक़ की चीज़ उगाई, 8 समझाने को और याद दिलाने को हर उस बंदे के लिए जो रुजूअ करे. 9 और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे हमने बाग़ उगाए और काटी जाने वाली फ़सलें. 10 और खजूरों के लंबे दरख़्त जिनमें तह–ब–तह ख़ोशे लगते हैं, 11 बंदों की रोज़ी के लिए. और हमने उसके ज़रीए से मुर्दा ज़मीन को ज़िंदा किया. इसी तरह ज़मीन से निकलना होगा.

12 **उनसे पहले नूह की क़ौम और अर–रस वाले और समूद.** 13 **और आद और फ़िरऔन और लूत के भाई** 14 **और अयकावाले और तुब्बा की क़ौम ने भी झुठलाया. सबने पैग़म्बरों को झुठलाया, पस मेरा डराना उनपर वाक़ेअ होकर रहा.**

नोटः– इंसानी तारीख़ में लोगों की अकसरीयत ने ख़ुदा के पैग़ाम को मानने से इन्कार कर दिया जिसका ज़िक्र क़ुरआन में जगह–जगह हो रहा है. क़ुरआन में लफ़्ज़े–इन्कार और लफ़्ज़े–झुठलाया की कसरत से मौजूदगी बताती है कि उन लोगों पर अल्लाह का पैग़ाम पेश किया गया, क्योंकि इन्कार का ताल्लुक़ पैग़ाम पहुँचाने के बाद आता है न कि उससे पहले.

15 क्या हम पहली बार पैदा करने से आजिज़ रहे. बल्कि ये लोग नए सिरे से पैदा करने की तरफ़ से शुबहा में हैं.

16 और हमने इंसान को पैदा किया और हम जानते हैं उन बातों को जो उसके दिल में आती हैं. और हम रगे–गर्दन से भी ज़्यादा उससे क़रीब हैं. 17 जब दो लेने वाले लेते रहते हैं जो कि दाईं और बाईं तरफ़ बैठे हैं. 18 कोई लफ़्ज़ इंसान नहीं बोलता, मगर उसके पास एक मुस्तैद निगरां (चुस्त व सतर्क निरीक्षक लिखने के लिए) मौजूद होता है.

19 और मौत की बेहोशी हक़ के साथ आ पहुँची. यह वही चीज़ है जिससे तू भागता था. 20 और सूर फूंका जाएगा, यह डराने का दिन होगा. 21 हर शख़्स इस तरह आ गया कि उसके साथ एक हांकने वाला है और एक गवाही देने वाला. 22 तुम उससे ग़फ़लत में रहे, पस हमने तुम्हारे ऊपर से पर्दा हटा दिया, पस आज तुम्हारी निगाह तेज़ है. 23 और उसके साथ का फ़रिश्ता कहेगा, यह जो मेरे पास था हाज़िर है. 24 जहन्नम में डाल दो नाशुक्र, मुख़ालिफ़ को. 25 नेकी से रोकने वाला, हद से बढ़ने वाला, शुबहा डालने वाला. 26 जिसने अल्लाह के साथ दूसरे माबूद (पूज्य) बनाए, पस उसे डाल दो सख़्त अज़ाब में. 27 उसका साथी शैतान कहेगा कि ऐ हमारे रब! मैंने इसे सरकश नहीं बनाया, बल्कि वह ख़ुद राह भुला हुआ, दूर पड़ा था. 28 इरशाद होगा, मेरे सामने झगड़ा न करो और मैंने पहले ही तुम्हें अज़ाब से डरा दिया था. 29 मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती और मैं बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं हूँ.

30 जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे, क्या तू भर गई. और वह कहेगी कि कुछ और भी है.
31 और जन्नत डरने वालों के क़रीब लाई जाएगी, (उनसे) कुछ दूर न रहेगी. 32 यह है वह चीज़
जिसका तुम से वादा किया जाता था, हर रुजूअ करने वाले और याद रखने वाले के लिए. 33 जो
शख़्स रहमान से डरा बिना देखे और रुजूअ होने वाला दिल लेकर आया, 34 दाख़िल हो जाओ
उसमें सलामती के साथ, यह दिन हमेशा रहेगा. 35 वहाँ उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहें,
और हमारे पास मज़ीद (और भी) है.

36 और हम उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं, वे क़ुव्वत (शक्ति) में
उनसे ज़्यादा थीं, पस उन्होंने मुल्कों को छान मारा कि है कोई पनाह की जगह. 37 इसमें
यादिहानी है उस शख़्स के लिए जिसके पास दिल हो या वह कान लगाए मुतवज्जह होकर.

38 और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है छ: दिन में बनाया
और हमें कुछ थकान नहीं हुई. 39 पस जो कुछ वे कहते हैं उसपर सब्र करो और अपने रब की
तस्बीह करो हम्द (प्रशंसा) के साथ, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले. 40 और
रात में उसकी तस्बीह करो और सजदों के पीछे.

41 और कान लगाए रखो कि जिस दिन पुकारने वाला बहुत क़रीब से पुकारेगा. 42 जिस
दिन लोग यक़ीन के साथ चिंघाड़ को सुनेंगे, वह निकलने का दिन होगा. 43 बेशक हम ही जिलाते
हैं और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ़ लौटना है. 44 जिस दिन ज़मीन उनपर से खुल
जाएगी, वे सब दौड़ते होंगे, यह इकट्ठा करना हमारे लिए आसान है.

45 **हम जानते हैं जो कुछ ये लोग कह रहे हैं. और तुम उनपर**
जबर करने वाले नहीं हो. **पस तुम क़ुरआन के ज़रीए**
उस शख़्स को नसीहत करो जो मेरे डराने से डरे.

नोटः– तुम्हारा काम लोगों को बदलना नहीं है, ना उनपर जबर करना है, बल्कि तुम्हारा काम सिर्फ़ पैग़ाम पहुँचा देना है.

सूरह–51. अज़–ज़ारियात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है उन हवाओं की जो गर्द उड़ाने वाली हैं 2 फिर वे उठा लेती हैं बोझ. 3 फिर वे

चलने लगती हैं आहिस्ता. 4 फिर अलग—अलग करती हैं मामला. 5 बेशक तुम से जो वादा
किया जा रहा है वह सच है. 6 और बेशक, ज़रूर इंसाफ़ होना है. 7 क़सम है जालदार (रास्तों
वाले) आसमान की. 8 बेशक तुम एक इख़्तिलाफ़ (बिखराव, मत—भिन्नता) में पड़े हुए हो. 9
उससे वही फिरता है जो फेरा गया.

10 मारे गए अटकल से बातें करने वाले. 11 जो ग़फ़लत में भूले हुए हैं. 12 वे पूछते हैं कि
कब है बदले का दिन. 13 जिस दिन वे आग पर रखे जाएँगे. 14 चखो मज़ा अपनी शरारत का,
यह है वह चीज़ जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे. 15 बेशक डरने वाले लोग बाग़ों में और चशमों
(स्रोतों) में होंगे. 16 ले रहे होंगे जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया, वे इससे पहले नेकी करने वाले
थे. 17 वे रातों को कम सोते थे. 18 और सुबह के वक़्तों में वे माफ़ी माँगते थे. 19 और उनके
माल में साइल (मांगने वाले) और महरूम (वंचित) का हिस्सा था.

20 और ज़मीन में निशानियाँ हैं यक़ीन करने वालों के लिए. 21 और ख़ुद तुम्हारे अंदर भी,
क्या तुम देखते नहीं. 22 और आसमान में तुम्हारी रोज़ी है और वह चीज़ भी जिसका तुम से वादा
किया जा रहा है. 23 पस आसमान और ज़मीन के रब की क़सम, यह (क़ुरआन) हक़ है, (ऐसा
ही यक़ीनी हक़) जैसा की तुम बोलते हो.

24 क्या तुम्हें इब्राहीम के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों की बात पहुँची. 25 जब वे उसके पास आए.
फिर उन्हें सलाम किया. उसने कहा, तुम लोगों को भी सलाम है. वे कुछ अजनबी लोग थे. 26
फिर वह अपने घर की तरफ़ चला और एक बछड़ा भुना हुआ ले आया. 27 फिर उसे उनके पास
रखा, उसने कहा, आप लोग खाते क्यों नहीं. 28 फिर वह (दिल में) उनसे डरा. उन्होंने कहा कि
डरो मत. और उन्हें ज़ीइल्म (ज्ञानवान) लड़के की बशारत (शुभ सूचना) दी. 29 फिर उसकी
बीवी बोलती हुई आयी, फिर माथे पर हाथ मारा और कहने लगी कि मैं बूढ़ी (और ऊपर से)
बांझ. 30 उन्होंने कहा कि ऐसा ही फ़रमाया है तेरे रब ने. बेशक वह हिकमत वाला व जानने वाला
(बुद्धिमान एवं सर्वज्ञानी) है.

पारा – 27 31 इब्राहीम ने कहा कि ऐ फ़रिश्तो! तुम्हें क्या मुहिम दरपेश है. 32
उन्होंने कहा कि हम एक मुजरिम क़ौम (क़ौमे–लूत) की तरफ़ भेजे गए हैं. 33 ताकि उसपर पकी
हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएं. 34 जो निशान लगाए हुए हैं तुम्हारे रब के पास, उन लोगों के लिए जो
हद से गुज़रने वाले हैं. 35 फिर वहाँ जितने ईमान वाले थे उन्हें हमने निकाल लिया. 36 पस वहाँ
हमने एक घर के सिवा कोई मुस्लिम (आज्ञाकारी) घर नहीं पाया 37 और हमने उसमें एक निशानी
छोड़ी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं.

38 और मूसा (के वाक़ये) में भी निशानी है, जबकि हमने उसे फ़िरऔन के पास एक खुली

दलील के साथ भेजा 39 तो वह अपनी क़ुव्वत के साथ फिर गया. और कहा कि यह जादूगर है या मजनून (जुनूनी) है. 40 पस हमने उसे और उसकी फ़ौज को पकड़ा, फिर उन्हें समुंदर में फेंक दिया और वह सज़ावारे–मलामत (निंदनीय) था. 41 और आद (के क़िस्से) में भी निशानी है, जबकि हमने उनपर एक बेनफ़ा हवा (यानी आंधी) भेज दी. 42 वह जिस चीज़ पर से भी गुज़री उसे रेज़ा–रेज़ा करके छोड़ दिया. 43 और समूद में भी निशानी है, जबकि उनसे कहा गया कि थोड़ी मुद्दत तक के लिए फ़ायदा उठा लो. 44 पस उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें कड़क ने पकड़ लिया. और वे देख रहे थे. 45 फिर वे न उठ सके. और न अपना बचाव कर सके. 46 और नूह की क़ौम को भी इससे पहले, बेशक वे नाफ़रमान लोग थे.

47 और हमने आसमान को अपनी क़ुदरत से बनाया और हम कुशादा (व्यापक) बनाने वाले हैं. 48 और ज़मीन को हमने बिछाया (विस्तार किया), पस हम क्या ही ख़ूब बिछाने वाले हैं. 49 और हमने हर चीज़ को जोड़ा–जोड़ा बनाया है, ताकि तुम ध्यान करो.

50 **पस दौड़ो अल्लाह की तरफ़, मैं उसकी तरफ़ से एक खुला डराने वाला हूँ.** 51 **और अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) न बनाओ, मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिए खुला डराने वाला हूँ.**

52 इसी तरह उनके अगलों के पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया, जिसे उन्होंने साहिर या मजनून (जादूगर या दीवाना) न कहा हो. 53 क्या ये एक दूसरे को इसकी वसीयत करने चले आ रहे हैं, बल्कि ये सब सरकश लोग हैं. 54 पस तुम उनसे एराज़ (विमुखता) करो, तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं. 55 और समझाते रहो, क्योंकि समझाना ईमान वालों को नफ़ा देता है.

56 **और मैंने जिन्न और इंसान को सिर्फ़ इसीलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें.**

नोटः– इन्सानों को उन की तख़्लीक़ का मक़सद बताना ही दावत का काम है. उन्हें यह बताना ज़रूरी है कि जो लोग इस दुनिया में ख़ुदा के मक़सदे–तख़्लीक़ पर पूरे उतरेंगे वही लोग अल्लाह की रहमत में जगह पाएंगे. और जो लोग मक़सदे–तख़्लीक़ को पूरा नहीं करेंगे. वह हमेशा के लिए ख़ुदा की रहमत से दूर कर दिए जाएँगे.

57 मैं उनसे रिज़्क़ नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएँ. 58 बेशक अल्लाह
ही रोज़ी देने वाला है, ज़ोरआवर (सशक्त), ज़बरदस्त है. 59 पस जिन लोगों ने ज़ुल्म किया
उनका डोल भर चुका है जैसे उनके साथियों के डोल भर चुके थे, पस वे जल्दी न करें. 60 पस
मुन्किरों के लिए ख़राबी है उनके उस दिन से जिसका उनसे वादा किया जा रहा है.

सूरह–52. अत–तूर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है तूर की. 2 और लिखी हुई किताब की, 3 कुशादा वरक़ में. 4 और आबाद घर
की. 5 और ऊंची छत की. 6 और उबलते हुए समुंदर की. 7 बेशक तुम्हारे रब का अज़ाब
वाक़ेअ होकर रहेगा. 8 उसे कोई टालने वाला नहीं. 9 जिस दिन आसमान डगमगाएगा 10 और
पहाड़ चलने लगेंगे. 11 **पस ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए** 12
जो बातें बनाते हैं खेलते हुए. 13 जिस दिन वे जहन्नम की आग की तरफ़ धकेले जाएँगे. 14 यह है
वह आग जिसे तुम झुठलाते थे. 15 क्या यह जादू है या तुम्हें नज़र नहीं आता. 16 इसमें दाख़िल
हो जाओ. फिर तुम सब्र करो या सब्र न करो. तुम्हारे लिए यकसां (समान) है. तुम वही बदला पा
रहे हो जो तुम करते थे.

17 बेशक मुत्तक़ी (यानी ख़ुदा की पकड़ का अंदेशा रखते हुए ज़िंदगी गुज़ारने वाले) लोग
बाग़ों और नेमतों में होंगे. 18 वे ख़ुशदिल होंगे उन चीज़ों से जो उनके रब ने उन्हें दी होंगी, और
उनके रब ने उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया. 19 खाओ और पियो मज़े के साथ अपने
आमाल के बदले में. 20 तकिया लगाए हुए सफ़–ब–सफ़ तख़्तों के ऊपर. और हम बड़ी–बड़ी
आंखों वाली हूरें उनसे ब्याह देंगे.

21 और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी उनकी राह पर ईमान के साथ चली,
उनके साथ हम उनकी औलाद को भी जमा कर देंगे, और उनके अमल में से कोई चीज़ कम नहीं
करेंगे. हर आदमी अपनी कमाई में फंसा हुआ है. 22 और हम उनकी पसंद के मेवे और गोश्त
उन्हें बराबर देते रहेंगे. 23 उनके दरमियान शराब के प्यालों के तबादले हो रहे होंगे जो लग़वियत
(बेहूदगी) और गुनाह से पाक होगी. 24 और उनकी ख़िदमत में लड़के दौड़ते फिर रहे होंगे. गोया
कि वे हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं. 25 वे एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बात करेंगे. 26 वे
कहेंगे कि हम इससे पहले अपने घर वालों में डरते रहते थे. 27 पस अल्लाह ने हम पर फ़ज़्ल
फ़रमाया और हमें लू के (यानी आग के) अज़ाब से बचा लिया. 28 हम इससे पहले उसी को
पुकारते थे, बेशक वह नेक सलूक वाला, मेहरबान है.

29 पस तुम नसीहत करते रहो, अपने रब के फ़ज़ल से तुम न काहिन (भविष्य वक्ता) हो और न मजनून. 30 क्या वे कहते हैं कि यह एक शायर है, हम इसपर गर्दिशे-ज़माना (काल–चक्र) के मुन्तज़िर हैं. 31 कहो कि इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हूँ. 32 क्या उनकी अक़्लें (उनकी बुद्धि) उन्हें यही सिखाती हैं या ये सरकश लोग हैं. 33 क्या वे कहते हैं कि इस कुरआन को (पैग़ंबर ने) ख़ुद घड़ लिया है, (नहीं!), बल्कि वे ईमान नहीं लाना चाहते. 34 पस वे इसके मानिंद कोई कलाम ले आएं, अगर वे सच्चे हैं.

35 क्या वे किसी ख़ालिक़ (सृष्टा) के बग़ैर पैदा हो गए या वे ख़ुद ही ख़ालिक़ हैं. 36 क्या ज़मीन व आसमान को उन्होंने पैदा किया है? बल्कि वे यक़ीन नहीं रखते. 37 क्या उनके पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं या वे (उनपर) दारोग़ा (पहरेदार) हैं. 38 क्या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर वे (चढ़कर) बातें सुन लिया करते हैं, तो उनका सुनने वाला कोई खुली दलील ले आए. 39 क्या अल्लाह के लिए बेटियाँ हैं और तुम्हारे लिए बेटे.

40 क्या तुम उनसे मुआवज़ा माँगते हो कि वे तावान (अनावश्यक हर्जाने) के बोझ से दबे जा रहे हैं. 41 क्या उनके पास ग़ैब है कि वे लिख लेते हैं. 42 क्या वे कोई तदबीर करना चाहते हैं, पस इन्कार करने वाले ख़ुद ही उस तदबीर में गिरफ़्तार होंगे. 43 क्या अल्लाह के सिवा उनका और कोई माबूद (पूज्य) है. अल्लाह पाक है उनके शरीक (साझीदार) बनाने से.

44 और अगर वे आसमान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वे कहेंगे कि यह तह–ब–तह बादल है. 45 पस उन्हें छोड़ो, यहाँ तक कि वे अपने उस दिन से दो चार हों जिसमें उनके होश जाते रहेंगे. 46 जिस दिन उनकी तदबीरें उनके कुछ काम न आएंगी और न उन्हें कोई मदद मिलेगी. 47 और उन ज़ालिमों के लिए इसके सिवा भी अज़ाब है, लेकिन उनमें से अकसर नहीं जानते.

48 और तुम सब्र के साथ अपने रब के फ़ैसले का इंतज़ार करो. बेशक तुम हमारी निगाह में हो. और अपने रब की तस्बीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ, जिस वक़्त तुम उठते हो. 49 और रात को भी उसकी तस्बीह करो, और सितारों के पीछे हटने के वक़्त भी.

सूरह–53. अन–नज्म

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 गुरुब (अस्त) होने वाले सितारे की क़सम, 2 तुम्हारा साथी न भटका है और न गुमराह हुआ है. 3 और वह अपने जी से नहीं बोलता. 4 यह एक ‘वही’ (ईश्वरीय वाणी) है जो उसपर भेजी जाती है. 5 उसे ज़बरदस्त कुव्वत वाले ने तालीम दी है, 6 आक़िल व दाना (प्रबुद्ध व विवेकशील) ने. फिर वह नमूदार हुआ 7 और वह आसमान के ऊंचे किनारे पर था. 8 फिर वह

नज़दीक हुआ, पस वह उतर आया. 9 फिर दो कमानों के बराबर या उससे भी कम फ़ासला रह
गया. 10 फिर अल्लाह ने 'वही' की, अपने बंदे की तरफ़ जो 'वही' की (यानी अल्लाह ने अपने
बंदे पर अपना संदेश प्रकट किया). 11 झूठ नहीं कहा रसूल के दिल ने जो उसने देखा. 12 अब
क्या तुम उस चीज़ पर उससे झगड़ते हो जो उसने देखा है. 13 और उसने एक बार और भी उसे
उतरते देखा है 14 सिदरतुल-मुन्तहा के पास. 15 उसके पास ही बहिश्त है आराम से रहने की,
16 जबकि सिदरह पर छा रहा था जो कुछ कि छा रहा था. 17 निगाह न बहकी और न हद से
बढ़ी. 18 उसने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं.

19 भला तुमने लात और उज़्ज़ा पर ग़ौर किया है. 20 और तीसरे एक और मनात पर. 21
क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और ख़ुदा के लिए बेटियाँ. 22 यह तो बहुत बेढंगी तक़सीम हुई. 23 ये
महज़ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं. अल्लाह ने उसके हक़ में कोई दलील
नहीं उतारी. वे महज़ गुमान की पैरवी कर रहे हैं. और नफ़्स की ख़्वाहिश की. हालाँकि उनके पास
उनके रब की जानिब से हिदायत आ चुकी है. 24 क्या इंसान वह सब पा लेता है जो वह चाहे. 25
पस अल्लाह के इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया.

26 और आसमानों में कितने फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती.
मगर बाद इसके कि अल्लाह इजाज़त दे जिसे वह चाहे और पसंद करे. 27 बेशक जो लोग
आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वे फ़रिश्तों को औरतों के नाम से पुकारते हैं. 28 हालाँकि उनके
पास इस के बारे में कोई दलील नहीं. वे महज़ गुमान पर चल रहे हैं. और गुमान हक़ बात में ज़रा
भी मुफ़ीद नहीं. 29 पस तुम ऐसे शख़्स से एराज़ (उपेक्षा) करो जो हमारी नसीहत से मुँह मोड़े.
और वह दुनिया की ज़िंदगी के सिवा और कुछ न चाहे. 30 उनकी समझ बस यहीं तक पहुँची है.
तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटका हुआ है. और वह उसे भी ख़ूब जानता
है जो राहेरास्त (सन्मार्ग) पर है.

31 और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, ताकि वह
बदला दे बुरा काम करने वालों को उनके किए का और बदला दे भलाई वालों को भलाई से. 32
जो कि बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं, मगर कुछ आलूदगी (छोटी बुराई). बेशक तुम्हारे
रब की बख़्शिश की बड़ी समाई (तुम्हारा रब बहुत क्षमाशील) है. वह तुम्हें ख़ूब जानता है, जबकि
उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया. और जब तुम अपनी माँओं के पेटों में जनीन (भ्रूण) की शक्ल में
थे. तो तुम अपने को मुक़द्दस (पवित्र) न समझो. वह तक़वा (ईश-भय) वालों को ख़ूब जानता है.

33 भला तुमने उस शख़्स को देखा जिसने एराज़ (उपेक्षा) किया. 34 थोड़ा सा दिया और
रुक गया. 35 क्या उसके पास ग़ैब का इल्म है. पस वह देख रहा है. 36 क्या उसे ख़बर नहीं

पहुँची उस बात की जो मूसा के सहीफ़ों (ग्रंथों) में है, 37 और इब्राहीम के, जिसने अपना क़ौल
पूरा कर दिया. 38 कि कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा. 39 और यह कि
इंसान के लिए वही है जो उसने कमाया. 40 और यह कि उसकी कमाई अनक़रीब देखी जाएगी.
41 फिर उसे पूरा बदला दिया जाएगा. 42 और यह कि सबको तुम्हारे रब तक पहुँचना है.

43 और बेशक वही हँसाता है और रुलाता है. 44 और वही मारता है और जिलाता है. 45
और उसी ने दोनों क़िस्म, नर और मादा को पैदा किया, 46 एक बूंद से, जबकि वह टपकाई जाए.
47 और उसी के ज़िम्मे है दूसरी बार उठाना. 48 और उसी ने दौलत दी और सरमायादार बनाया.
49 और वही शिअरा का रब है (शिअरा एक तारे का नाम है).

50 और अल्लाह ही ने हलाक किया क़दीम क़ौम आद को 51 और समूद को. फिर किसी
को बाक़ी न छोड़ा. 52 और क़ौमे-नूह को उससे पहले, बेशक वे निहायत ज़ालिम और सरकश
थे. 53 और (क़ौमे-लूत की) उलटी हुई बस्तियों को भी, उसी ने उलट दिया. 54 पस उन्हें ढाँक
लिया जिस चीज़ ने ढाँक लिया. 55 पस तुम अपने रब के किन-किन करिश्मों को झुठलाओगे.

56 **यह एक डराने वाला है, पहले डराने वालों की तरह.**

नोटः- इस आयत में सारे नबियों का मिशन बताया गया है और वह मिशन इन्सानों को ख़ुदा के मंसूबे से आगाह करना है. उन्हें ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसका अंजाम बताना है. अब अगरचे पैग़ंबर का आना बंद हो गया, लेकिन पैग़ंबर वाले काम की ज़रूरत बाक़ी है.

57 क़रीब आने वाली क़रीब आ गई. 58 अल्लाह के सिवा कोई उसे हटाने वाला नहीं. 59 क्या
तुम्हें इस बात से तअज्जुब होता है. 60 और तुम हँसते हो और तुम रोते नहीं. 61 और तुम तकब्बुर
(घमंड) करते हो. 62 पस अल्लाह के लिए सज्दा करो और उसी की इबादत करो. अस्-सज्दा

सूरह-54. अल-क़मर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़यामत क़रीब आ गई और चांद फट गया. 2 और वे कोई भी निशानी देखें तो वे एराज़
(उपेक्षा) ही करेंगे. और कहेंगे कि यह तो जादू है जो पहले से चला आ रहा है. 3 और उन्होंने
झुठला दिया और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की और हर काम का वक़्त मुक़र्रर है. 4 **और उन्हें
वे ख़बरें पहुँच चुकी हैं जिसमें काफ़ी इबरत (सीख) है.** 5 निहायत दर्जे की हिकमत
(ज्ञानपूर्ण बात), मगर तंबीहात (चेतावनियां) उन्हें फ़ायदा नहीं देतीं. 6 पस उनसे एराज़ करो, जिस

दिन पुकारने वाला एक नागवार चीज़ की तरफ़ पुकारेगा. 7 आँखें झुकाए हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे. गोया कि वे बिखरी हुई टिड्डियाँ हैं, 8 भागते हुए पुकारने वाले की तरफ़, मुन्किर कहेंगे कि यह दिन बड़ा सख़्त है.

9 उनसे पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया, उन्होंने हमारे बंदे की तकज़ीब की (झुठलाया) और कहा कि दीवाना है और उसे झिड़क दिया. 10 पस उसने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब (दबाव–ग्रस्त) हूँ, तू मेरी मदद कर. 11 पस हमने आसमान के दरवाज़े मूसलाधार बारिश से खोल दिए. 12 और ज़मीन से चशमे (स्रोत) बहा दिए. पस सब पानी एक काम पर मिल गया जो मुक़द्दर हो चुका था. 13 और हमने उसे एक तख़्तों और कीलों वाली पर उठा लिया, 14 वह हमारी आंखों के सामने चलती रही. उस शख़्स का बदला लेने के लिए जिसकी नाक़द्री की गई थी. 15 और उसे हमने निशानी के लिए छोड़ दिया. फिर कोई है सोचने वाला. 16 फिर कैसा था मेरा अज़ाब और मेरा डराना.

17 और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला?

नोटः– क़ुरआन हिदायत का दस्तरख़ान है, लेकिन हिदायत पाने की शर्त संजीदगी है. जो कोई संजीदगी के साथ हिदायत का तालिब हो, वह क़ुरआन से हिदायत पाए बग़ैर रह नहीं सकता. अब क़ुरआन के मानने वालों को करना यह है कि वह इंसानों के सामने क़ुरआन को पेश कर दें.

18 आद ने झुठलाया तो कैसा था मेरा अज़ाब और मेरा डराना. 19 हमने उनपर एक सख़्त हवा भेजी, मुसलसल नहूसत के दिन में. 20 वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी जैसे कि वे उखड़े हुए खजूरों के तने हों. 21 फिर कैसा था मेरा अज़ाब और मेरा डराना.

22 और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला?

23 समूद ने डर सुनाने को झुठलाया. 24 पस उन्होंने कहा, क्या हम अपने ही अंदर के एक आदमी के कहे पर चलेंगे? उस सूरत में तो हम ग़लती और जुनून में पड़ जाएँगे. 25 क्या हम सब में से उसी पर नसीहत उतरी है, बल्कि वह झूठा है, बड़ा बनने वाला. 26 अब वे कल के दिन जान लेंगे कि कौन झूठा है और बड़ा बनने वाला. 27 हम ऊंटनी को भेजने वाले हैं उनके लिए

आज़माइश बनाकर, पस तुम उनका (अंजाम देखने के लिए) इंतज़ार करो. और सब्र करो. 28 और उन्हें आगाह कर दो कि पानी उनमें बांट दिया गया है, हर एक (अपनी) बारी पर हाज़िर हो. 29 फिर उन्होंने अपने आदमी को पुकारा, पस उसने वार किया और ऊंटनी को काट डाला. 30 फिर कैसा था मेरा अज़ाब और मेरा डराना. 31 हमने उनपर एक चिंघाड़ भेजी, तो वे बाढ़ वाले की रौंदी हुई बाढ़ की तरह होकर रह गए.

32 **और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला?**

नोटः– क़ुरआन सारे इंसानों को नसीहत व हिदायत की तरफ़ बुला रहा है. इसलिए क़ुरआन के मानने वालों की यह ज़िम्मेदारी है कि वह क़ुरआन को सारे इंसानों के सामने पेश कर दें, ताकि इंसानों में से जो सच्चाई के तालिब (seekers of the Truth) हैं, वे सच्चाई को पा लें. जो सच्चाई के तालिब नहीं उनपर हुज्जत पूरी हो जाए, ताकि कल अल्लाह की अदालत में वह मुसलमानों पर यह इल्ज़ाम न लगा सकें कि जिनपर पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी थी, उन्होंने हम तक उसे नहीं पहुँचाया.

33 लूत की क़ौम ने डर सुनाने वालों को झुठलाया. 34 हमने उनपर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजी, सिर्फ़ लूत के घर वाले उससे बचे, उन्हें हमने बचा लिया सहर (भोर) के वक़्त. 35 अपनी जानिब से फ़ज़्ल करके. हम इसी तरह बदला देते हैं उसे जो शुक्र करे. 36 और लूत ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया, फिर उन्होंने उस डराने में झगड़े पैदा किए (और शक करने लगे). 37 और वे उसके मेहमानों को उससे लेने लगे. पस हमने उनकी आँखें मिटा दीं. अब चखो मेरा अज़ाब और मेरा डराना. 38 और सुबह सवेरे उनपर (वह) अज़ाब आ पड़ा जो टलने वाला नहीं था. 39 अब चखो मेरा अज़ाब और मेरे डराने (को नज़रंदाज़ करने का अंजाम).

40 **और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला?**

41 और फ़िरऔन वालों के पास पहुँचे डराने वाले. 42 उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया तो हमने उन्हें एक ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) और क़ुव्वत वाले के पकड़ने की तरह पकड़ा.

43 क्या तुम्हारे मुन्किर उन लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिए आसमानी किताबों में माफ़ी लिख दी गई है. 44 क्या वे कहते हैं कि हम ऐसी जमात हैं जो ग़ालिब रहेंगे. 45 अनक़रीब यह

जमात शिकस्त खाएगी और पीठ फेरकर भागेगी. 46 बल्कि क़यामत उनके वादे का वक़्त है और क़यामत बड़ी सख़्त और बड़ी कड़वी चीज़ है. 47 बेशक मुजरिम लोग गुमराही में और बेअक़्ली में हैं. 48 जिस दिन वे मुँह के बल आग में घसीटे जाएँगे. चखो मज़ा आग का.

49 हमने हर चीज़ को पैदा किया है एक नपेतुले पैमाने के साथ. 50 और हमारा हुक्म बस एकबारगी आ जाएगा जैसे आँख का झपकना. 51 और हम हलाक कर चुके हैं तुम्हारे साथ वालों को, **फिर क्या है कोई सोचने वाला.** 52 और जो कुछ उन्होंने किया सब किताबों में दर्ज है. 53 और हर छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है. 54 बेशक डरने वाले बाग़ों में और नहरों में होंगे. 55 बैठे होंगे, सच्ची बैठक में, क़ुदरत वाले बादशाह के पास.

सूरह–55. अर–रहमान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 **रहमान ने,** 2 **क़ुरआन की तालीम दी.** 3 **उसने इंसान को पैदा किया.**

नोटः– क़ुरआन के इस बयान से वाज़ेह है कि इन्सान को क़ुरआन की तालीम देना ख़ालिक़ का concern है. क़ुरआन के मानने वालों की यह ज़िम्मेदारी है कि ख़ालिक़ का पैग़ाम वे सारे इंसानों तक पहुँचा दें.

4 उसी ने इंसान को बोलना सिखाया. 5 सूरज और चांद के लिए एक हिसाब है. 6 और सितारे और दरख़्त सज्दा करते हैं. 7 और उसने आसमान को ऊंचा किया और उसने तराज़ू रख दी. 8 कि तुम तोलने में ज़्यादती न करो. 9 और इंसाफ़ के साथ सीधी तराज़ू तोलो और तोल में न घटाओ.

10 और ज़मीन को उसने ख़ल्क़ (यानी जीवसृष्टी, जीवधारीयों) के लिए रख दिया. 11 उसमें मेवे हैं और खजूर हैं जिनके ऊपर ग़िलाफ़ होता है. 12 और भुस वाले अनाज भी हैं और ख़ुशबूदार फूल भी. 13 फिर तुम अपने रब की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे? 14 उसने पैदा किया इंसान को ठीकरे की तरह खनखनाती मिट्टी से 15 और उसने जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया. 16 फिर तुम अपने रब की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे? 17 वह मालिक है दोनों मशरिक़ (पूर्व) का और दोनों मग़रिब (पश्चिम) का. 18 फिर तुम अपने रब की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे. 19 उसने चलाए दो दरिया, मिलकर चलने वाले. 20 दोनों के दरमियान एक पर्दा है जिससे वे आगे नहीं बढ़ते. 21 फिर तुम अपने रब की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे? 22 उन दोनों से मोती और मूंगा निकलता है. 23 फिर तुम अपने रब की किन–किन

नेमतों को झुठलाओगे? 24 और उसी के हैं जहाज़ समुंदर में ऊंचे खड़े हुए जैसे पहाड़, 25 फिर
तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?

26 जो भी ज़मीन पर है वह फ़ना होने वाला है. 27 और तेरे रब की ज़ात बाक़ी रहेगी,
अज़मत वाली और इज़्ज़त वाली. 28 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?
29 उसी से माँगते हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं. हर रोज़ उसका एक काम है. 30 फिर तुम
अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?

31 हम जल्द ही फ़ारिग़ होने वाले हैं तुम्हारी तरफ़ से, ऐ दो भारी क़ाफ़िलो! 32 फिर तुम
अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 33 ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह! अगर तुम
से हो सके कि तुम आसमानों और ज़मीन की हदों से निकल जाओ तो निकल जाओ, तुम नहीं
निकल सकते बग़ैर सनद के. 34 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 35
तुम पर छोड़े जाएँगे आग के शोले और धुआँ तो तुम बचाव न कर सकोगे. 36 फिर तुम अपने रब
की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?

37 फिर जब आसमान फटकर खाल की मानिंद सुर्ख़ हो जाएगा. 38 फिर तुम अपने रब की
किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 39 पस उस दिन किसी इंसान या जिन्न से उसके गुनाह की
बाबत पूछ न होगी. 40 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 41 मुजरिम
पहचान लिए जाएँगे अपनी अलामतों से, फिर पकड़ा जाएगा उन्हें पेशानी के बाल से और पांव से.
42 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 43 यह जहन्नम है जिसे मुजरिम
लोग झूठ बताते थे. 44 वे फिरेंगे उसके दरमियान और खौलते पानी के दरमियान. 45 फिर तुम
अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?

46 और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरे, उसके लिए दो बाग़ हैं. 47 फिर
तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 48 दोनों बहुत शाख़ों वाले. 49 फिर तुम
अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 50 उनके अंदर दो चशमे (स्रोत) जारी होंगे.
51 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 52 दोनों बाग़ों में हर फल की दो
क़िस्में. 53 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 54 वे तकिया लगाए ऐसे
बिछौनों पर बैठे होंगे जिनके अस्तर दबीज़ (गाढ़े) रेशम के होंगे. और फल उन बाग़ों का झुक रहा
होगा. 55 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 56 उनमें नीची निगाह वाली
औरतें होंगी. जिन्हें उन लोगों से पहले न किसी इंसान ने छुआ होगा, न किसी जिन्न ने. 57 फिर
तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 58 वे ऐसी होंगी जैसे कि याक़ूत (लालमणि)
और मरजान (मूंगा). 59 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 60 नेकी का

बदला नेकी के सिवा और क्या है? 61 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?

62 और उनके सिवा दो बाग़ और हैं. 63 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 64 दोनों गहरे सब्ज़ रंग के. 65 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 66 उनमें दो चशमे (स्रोत) होंगे उबलते हुए. 67 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 68 उनमें फल और खजूर और अनार होंगे. 69 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 70 उनमें ख़ूबसीरत, ख़ूबसूरत (सुशील व सुंदर) औरतें होंगी. 71 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 72 हूरें ख़ेमों में रहने वालियां. 73 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 74 उनसे पहले उन्हें न किसी इंसान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने. 75 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 76 तकिया लगाए सब्ज़ मसनदों (हरित आसनों) पर और क़ीमती नफ़ीस बिछौनों पर. 77 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 78 बड़ा बाबरकत है तेरे रब का नाम बड़ाई वाला और अज़मत वाला.

सूरह-56. अल-वाक़िआ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 जब वाक़ेअ (घटित) होने वाली वाक़ेअ हो जाएगी. 2 उसके वाक़ेअ होने में कुछ झूठ नहीं. 3 (किसी को) वह पस्त करने वाली, (किसी को) बुलंद करने वाली होगी. 4 उस वक़्त ज़मीन हिला डाली जाएगी. 5 और पहाड़ टूट कर रेज़ा-रेज़ा हो जाएँगे. 6 फिर वे परागंदा ग़ुबार (मलिन धुंध) बन जाएँगे. 7 और तुम लोग तीन क़िस्म के हो जाओगे.

8 फिर दाएं वाले, पस क्या ख़ूब हैं दाएं वाले. 9 और बाएं वाले कैसे बुरे लोग हैं बाएं वाले. 10 और आगे वाले तो आगे ही वाले हैं. 11 वे मुक़र्रब लोग हैं. 12 नेमत के बाग़ों में. 13 उनकी बड़ी तादाद पहलों में से होगी. 14 और थोड़े पिछलों में से होंगे. 15 जड़ाऊ तख़्तों पर. 16 तकिया लगाए आमने-सामने बैठे होंगे. 17 फिर रहे होंगे उनके पास लड़के, हमेशा (एक ही हालत पर) रहने वाले (यानी वे लड़के कभी बूढ़े नहीं होंगे). 18 आबख़ोरे और कूज़े लिए हुए और प्याला साफ़ शराब का. 19 उससे न सर दर्द होगा और न अक़्ल में फ़तूर आएगा. 20 और मेवे कि जो चाहें चुन लें. 21 और परिंदों का गोश्त जो उन्हें मरग़ूब (पसंद) हो. 22 और बड़ी आंखों वाली हूरें. 23 जैसे मोती के दाने अपने ग़िलाफ़ के अंदर. 24 बदला उन कामों का जो वे करते थे. 25 उसमें वे कोई लग़्व (घटिया, निरर्थक) और गुनाह की बात नहीं सुनेंगे. 26 मगर सिर्फ़ सलाम-सलाम का बोल.

27 और दाहिने वाले, क्या ख़ूब हैं दाहिने वाले. 28 बेरी के दरख़्तों में जिनमें कांटा नहीं. 29 और केले तह–ब–तह. 30 और फैले हुए साये. 31 और बहता हुआ पानी. 32 और कसरत (बहुलता) से मेवे. 33 जो न ख़त्म होंगे और न कोई रोकटोक होगी. 34 और ऊंचे बिछौने. 35 हमने उन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है. 36 फिर उन्हें कुंवारी रखा है. 37 दिलरुबा और हमउम्र. 38 दाहिने वालों के लिए. 39 पहलों में से एक बड़ा गिरोह होगा 40 और पिछलों में से भी एक बड़ा गिरोह.

41 और बाएं वाले, कैसे बुरे हैं बाएं वाले. 42 आग में और खौलते हुए पानी में. 43 और स्याह धुएं के साये में. 44 न ठंडा और न इज़्ज़त का.

45 **ये लोग इससे पहले ख़ुशहाल थे**. 46 **और भारी गुनाह पर इसरार करते रहे.**

नोटः– मौजूदा ज़िंदगी अपनी दुनिया चमकाने के लिए और मज़े लूटने के लिए नहीं है, बल्कि आख़िरत की तामीर के लिए है. जो लोग इस हक़ीक़त को भूल कर ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, उन पर अनक़रीब वह वक़्त आने वाला है कि उस वक़्त उनकी ख़ुशहाली बदतरीन बदहाली में तबदील हो जाएगी.

47 और वे कहते थे, क्या जब हम मर जाएँगे. और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएँगे तो क्या हम फिर उठाए जाएँगे. 48 और क्या हमारे अगले बाप–दादा भी. 49 कहो कि अगले और पिछले सब, 50 जमा किए जाएँगे एक मुक़र्रर दिन के वक़्त पर. 51 फिर तुम लोग, ऐ बहके हुए झुठलाने वालों! 52 ज़क़्क़ूम के दरख़्त में से खाओगे. 53 फिर उससे अपना पेट भरोगे. 54 फिर उसपर खौलता हुआ पानी पियोगे. 55 फिर प्यासे ऊँटों की तरह पियोगे. 56 यह उनकी मेहमानी होगी इंसाफ़ के दिन.

57 हमने तुम्हें पैदा किया है. फिर तुम तसदीक़ (पुष्टि) क्यों नहीं करते. 58 क्या तुमने ग़ौर किया उस चीज़ पर जो तुम टपकाते हो. 59 क्या तुम उसे बनाते हो या हम हैं बनाने वाले (यानी इंसान को बनाने वाले तुम हो या हम हैं)? 60 हमने तुम्हारे दरमियान मौत मुक़द्दर की है और हम इससे आजिज़ नहीं 61 कि तुम्हारी जगह तुम्हारे जैसे पैदा कर दें और तुम्हें ऐसी सूरत में बना दें जिन्हें तुम जानते नहीं. 62 और तुम पहली पैदाइश को जानते हो, फिर क्यों सबक़ नहीं लेते. 63 क्या तुमने ग़ौर किया उस चीज़ पर जो तुम बोते हो. 64 क्या तुम उसे उगाते हो या हम हैं उगाने वाले. 65 अगर हम चाहें तो उसे रेज़ा–रेज़ा कर दें, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ. 66 (कि) हम तो तावान (दंड) में पड़ गए. 67 बल्कि हम बिल्कुल महरूम हो गए. 68 क्या तुमने ग़ौर किया उस पानी पर जो तुम पीते हो. 69 क्या तुमने उसे बादल से उतारा है. या हम हैं उसे उतारने वाले. 70

अगर हम चाहें तो उसे सख़्त खारी बना दें. फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते. 71 क्या तुमने ग़ौर किया उस आग पर जिसे तुम जलाते हो. 72 क्या तुमने पैदा किया है उसके दरख़्त को या हम हैं उसके पैदा करने वाले. 73 हमने उसे याददिहानी बनाया है. और मुसाफ़िरों के लिए फ़ायदे की चीज़. 74 पस तुम अपने अज़ीम (महान) रब के नाम की तस्बीह करो.

75 पस नहीं, मैं क़सम खाता हूँ सितारों के मंज़िलों (स्थितियों) की. 76 और अगर तुम ग़ौर करो तो यह बहुत बड़ी क़सम है. 77 बेशक यह एक इज़्ज़त वाला क़ुरआन है. 78 एक महफ़ूज़ किताब में (यानी लौहे-महफ़ूज़ में). 79 इसे वही छूते हैं जो पाक बनाए गए हैं. 80 उतारा हुआ है परवरदिगारे आलम की तरफ़ से. 81 फिर क्या तुम इस कलाम के साथ बेएतनाई (बेपरवाही) बरतते हो. 82 और तुम अपना हिस्सा यही लेते हो कि तुम उसे झुठलाते हो.

83 फिर क्यों नहीं, जबकि जान हलक़ में पहुँचती है. 84 और तुम उस वक़्त देख रहे होते हो. 85 और हम तुम से ज़्यादा उस शख़्स से क़रीब होते हैं, मगर तुम नहीं देखते. 86 फिर क्यों नहीं, अगर तुम महकूम (अधीन) नहीं हो 87 तो तुम उस (निकलती हुई) जान को क्यों नहीं लौटा लाते, अगर तुम सच्चे हो. 88 पस अगर वह मुक़र्रबीन (निकटवर्तियों) में से हो 89 तो राहत है और उम्दा रोज़ी है और नेमत का बाग़ है. 90 और अगर वह असहाबुलयमीन (दाईं तरफ़ वाले) में से हो 91 तो (कहा जाएगा) तुम्हारे लिए सलामती, तुम असहाबुलयमीन में से हो. 92 और अगर वह झुठलाने वाले गुमराह लोगों में से हो. 93 तो गर्म पानी की ज़ियाफ़त (सत्कार) है, 94 जहन्नम में दाख़िल होना. 95 बेशक यह क़तई हक़ (the final Truth) है. 96 पस तुम अपने अज़ीम रब के नाम की तस्बीह करो.

सूरह-57. अल-हदीद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) है. 2 आसमानों और ज़मीन की सल्तनत उसी की है. वह जिलाता है और मारता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है. 3 वही अव्वल भी है और आख़िर भी और ज़ाहिर (व्यक्त) भी है और बातिन (अव्यक्त) भी. और वह हर चीज़ का जानने वाला है. 4 वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया छः दिनों में, फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ. वह जानता है जो कुछ ज़मीन के अंदर जाता है और जो उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो, और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो. 5 आसमानों और ज़मीन

की सल्तनत उसी की है, और अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं सारे मामलात. 6 वह रात को दिन में दाख़िल करता हे और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वह दिल की बातों को जानता है.

7 ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और ख़र्च करो उसमें से जिसमें उसने तुम्हें अमीन बनाया है (यानी जिस पर तुम्हें अधिकार दिया है). पस जो लोग तुम में से ईमान लाएँ और ख़र्च करें उनके लिए बड़ा अज्र है.

नोटः– ईमान कोई रस्मी और जामिद चीज़ नहीं है. ईमान वह ज़िंदा अक़ीदा है जो अमल से ज़ाहिर होता है. हर इंसान अपने बेटा-बेटी से मुहब्बत करता है. क्या वह मुहब्बत रस्मी अलफ़ाज़ का मजमुआ बनकर रह जाती है? नहीं! हरगिज़ नहीं! वह मुहब्बत अमल से ज़ाहिर होती है. जिसके तहत इंसान अपने बेटा-बेटी पर सब कुछ लुटाने के लिए तैयार रहता है, जबकि क़ुरआन के मुताबिक़ ईमान वाले तो वे हैं. जो सबसे ज़्यादा अल्लाह से मुहब्बत करते हैं. फिर क्या वह सबसे बड़ी मुहब्बत अमल से ज़ाहिर नहीं होगी?

जहाँ तक माल ख़र्च करने का ताल्लुक़ है, इंसान अपना माल उसी पर लुटाता है. जिससे वह सच्ची मुहब्बत करता है. दावत का मिशन ख़ुदा का मिशन है, दावत का मिशन लोगों को जहन्नम से बचाने का मिशन है. दावती मिशन में अपना जान व माल लगाने से बेहतर अल्लाह के लिए माल ख़र्च करने की दूसरी सूरत नहीं हो सकती.

8 और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, हालाँकि रसूल तुम्हें बुला रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और वह तुम से अहद (वचन) ले चुका है (तो तुम अपने अहद पर पूरे उतरो,) अगर तुम मोमिन हो. 9 वही है जो अपने बंदे पर वाज़ेह आयतें उतारता है, ताकि तुम्हें तारीकियों से रोशनी की तरफ़ ले आएँ और अल्लाह तुम्हारे ऊपर नर्मी करने वाला है, मेहरबान है. 10 और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते, हालाँकि सब आसमान और ज़मीन आख़िर में अल्लाह ही का रह जाएगा. तुम में से जो लोग फ़तह के बाद ख़र्च करें और लड़ें वे उन लोगों के बराबर नहीं हो सकते जिन्होंने फ़तह से पहले ख़र्च किया और लड़े, और अल्लाह ने सबसे भलाई का वादा किया है, अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो.

11 कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे, अच्छा क़र्ज़, कि वह उसे उसके लिए बढ़ाए, और उसके लिए बाइज़्ज़त अज्र है. 12 जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाएं चल रही होगी. आज के दिन तुम्हें ख़ुशख़बरी है बाग़ों

की जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, तुम उसमें हमेशा रहोगे, यही बड़ी कामयाबी है. 13 जिस दिन मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमें मौक़ा दो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ फ़ायदा उठा लें. कहा जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ. फिर रोशनी तलाश करो. फिर उनके दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा. उसके अंदर की तरफ़ रहमत होगी. और उसके बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा. 14 वे उन्हें पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे. वे कहेंगे कि हां, मगर तुमने अपने आपको फ़ितने में डाला और राह देखते रहे और शक में पड़े रहे और झूठी उम्मीदों ने तुम्हें धोखे में रखा, यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ गया और धोखेबाज़ ने तुम्हें अल्लाह के मामले में धोखा दिया. 15 पस आज न तुम से कोई फ़िदया (मुक्ति-दंड) क़बूल किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ़्र किया. तुम्हारा ठिकाना आग है. वही तुम्हारी रफ़ीक़ (साथी) है. और वह बुरा ठिकाना है.

16 **क्या ईमान वालों के लिए वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की नसीहत के आगे झुक जाएँ. और उस हक़ के आगे जो नाज़िल हो चुका है. और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन्हें पहले किताब दी गई थी, फिर उनपर लम्बी मुद्दत गुज़र गई तो उनके दिल सख़्त हो गए. और उनमें से अकसर नाफ़रमान हैं.**

नोटः- ईमान वाले तो वे हैं जो उस नसीहत के आगे झुक जाएं जो ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल हुई है. सहाबा-ए-कराम का यह हाल था कि वे किताबुल्लाह के सामने ढह जाते थे. कोई उन्हें किताबुल्लाह से दलील दे दे तो वे अगर-मगर की बातें नहीं करते थे और फौरन उसे मान लेते थे. लेकिन मौजूदा मुसलमानों की अकसरीयत का हाल इसके ऐन उलटा है. वह किताबुल्लाह से मुहब्बत के दावे तो करते हैं, लेकिन अमली ज़िंदगी में वे किताबुल्लाह के सामने ढह नहीं जाते. ऐसे लोगों को सोचना चाहिए कि ऐसी रविश ख़ुदा की नज़र में 'इस्लाम नहीं बल्कि यहूदियत है.'

क़ुरआन नाज़िल होकर तक़रीबन 1500 साल गुज़र चुके हैं, अगरचे ख़ुदाई मंसूबे के तहत क़ुरआन पूरी तरह महफ़ूज़ है. लेकिन बाद को क़ुरआन के मानने वाले भी माज़ी की अहले-किताब क़ौमों की तरह उसे किताबे-महजूर (यानी अमलन छोड़ रखी हुई किताब) बना देंगे इसकी पेशीनगोई भी ख़ुद क़ुरआन में मौजूद है. क़ुरआन की हैसियत यह है कि वह अहले-ईमान के लिए किताबे-हिदायत है और दूसरों के लिए किताबे-दावत. जब वह उसके मानने वालों के लिए अमलन न किताबे-हिदायत रहे और न किताबे-दावत रहे यही क़ुरआन को किताबे-महजूर बना देना है.

17 जान लो कि अल्लाह ज़मीन को ज़िंदगी देता है उसकी मौत के बाद, हमने तुम्हारे लिए

निशानियाँ बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो.

18 बेशक सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें. और वे लोग जिन्होंने अल्लाह को क़र्ज़ दिया, अच्छा क़र्ज़, वह उनके लिए बढ़ाया जाएगा और उनके लिए बाइज़्ज़त अज्र (प्रतिफल) है.

19 **और जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर और उसके रसूलों पर. वही लोग अपने रब के नज़दीक सिद्दीक़ (सच्चे) और शहीद (सत्य के साक्षी) हैं, उनके लिए उनका अज्र (प्रतिफल) और उनकी रोशनी है, और जिन लोगों ने इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही दोज़ख़ वाले हैं.**

नोटः–

- यहां ईमान वालों की दो सिफ़ात बयान हुई हैं कि वह '**सिद्दीक़**' और '**शहीद**' हैं. '**सिद्दीक़**' से मुराद अपनी ज़ाती ज़िंदगी में सच पर जमा हुआ इन्सान और '**शहीद**' से मुराद दूसरों पर हक़ की गवाही देने वाला यानी हक़ का दाई. अल्लाह की नज़र में ईमान वाले वही हैं जो '**सिद्दीक़**' और '**शहीद**' हैं. जो इन्सान हक़ को पा ले वह अपनी ज़ाती ज़िंदगी में '**हक़ पर चलने वाला**' और समाजी ज़िंदगी में '**हक़ का दाई**' बन जाता है. जो लोग दुनिया में हक़ की गवाही देने का काम अंजाम देंगे उन्हीं लोगों को आख़िरत में भी गवाह बनाया जाएगा, जब लोगों के अब्दि अंजाम का फ़ैसला होगा.
- ख़ुदा इन्सानों का ख़ालिक़ व मालिक है, इन्सानों की डोर पूरी तरह उसी के हाथ में है. इन्सानों के लिए ख़ुदा के सिवा कोई जाए-पनाह नहीं. जो इन्सान ख़ुदा को मानने से इन्कार कर दे, फिर उस इन्सान की जगह दोज़ख़ के सिवा और क्या हो सकती है.

20 **जान लो कि दुनिया की ज़िंदगी इसके सिवा कुछ नहीं कि खेल और तमाशा है** और ज़ीनत (साज–सज्जा) और बाहमी (आपसी) फ़ख़्र और माल और औलाद में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करना है. जैसे कि बारिश, (जो पैदावार लाती है तो) उसकी पैदावार किसानों को अच्छी मालूम होती है. फिर वह ख़ुश्क हो जाती है. फिर तू उसे ज़र्द देखता है, फिर वह रेज़ा–रेज़ा

हो जाती है. और आख़िरत में सख़्त अज़ाब है और अल्लाह की तरफ़ से माफ़ी और रज़ामंदी भी. **और दुनिया की ज़िंदगी धोखे की पूंजी के सिवा और कुछ नहीं.** 21 **दौड़ो अपने रब की माफ़ी की तरफ़ और ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसकी वुस्अत (व्यापकता) आसमान और ज़मीन की वुस्अत के बराबर है.** वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाएँ, यह अल्लाह का फ़ज़ल (अनुग्रह) है. वह उसे देता है जिसे वह चाहता है और अल्लाह बड़ा फ़ज़ल वाला है.

नोटः–

- **यह ख़ालिक़ के अलफ़ाज़ में दुनिया की ज़िंदगी की हक़ीक़त है.** और तजर्बों की रोशनी में देखिए तो यह बात सौ फीसद सच नज़र आएगी.
- यहाँ इंसान को मनचाही ज़िंदगी नहीं मिलती, यहाँ इंसान को एक के बाद दूसरे मसाएल से दो–चार होना पड़ता है. यहाँ हादेसात हैं. यहाँ बीमारियां हैं. यहाँ चार दिन का बचपन है, चार दिन की जवानी, फिर बुढ़ापा और मौत है. यहाँ इंसान ख़ुद के लिए कोई पायदार मंसूबा बना ही नहीं सकता.
- जब दुनिया का बनानेवाला दुनिया की यह हक़ीक़त बता रहा हो तो दुनिया में रहने वालों को इस बात की तरफ़ बहुत ज़्यादा तवज्जोह देना चाहिए, यह दुनिया इतनी ज़्यादा बेहक़ीक़त है कि यहाँ का पाना, पाना नहीं और यहाँ का खोना, खोना नहीं.
- इंसान की बेहतरी इसी में है कि वह ज़िंदगी की हक़ीक़त समझ कर अपनी अब्दि ज़िंदगी की तामीर करे. हदीस में आया है कि **'अक़्लमंद वही है जो मौत आने से पहले मौत की तैयारी कर ले.'**
- **'दौड़ो जन्नत की तरफ़'** इस फ़रमाने–ख़ुदा से पता चलता है कि इंसान की दौड़–धूप किस चीज़ को पाने के लिए होना चाहिए.

22 कोई मुसीबत न ज़मीन में आती है और न तुम्हारी जानों में, मगर वह एक किताब में

लिखी हुई है, इससे पहले कि हम उसे पैदा करें, बेशक यह अल्लाह के लिए आसान है 23 ताकि **तुम ग़म न करो उसपर जो तुम से खोया गया. और न उस चीज़ पर फ़ख़्र करो जो उसने तुम्हें दी, और अल्लाह इतराने वाले, फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता** 24 जो कि बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं और दूसरों को भी बुख़्ल की तालीम देते हैं. और जो शख़्स एराज़ (उपेक्षा) करेगा. तो अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, ख़ूबियों वाला है.

25 **हमने अपने रसूलों को निशानियों के साथ भेजा और उनके साथ उतारा किताब और तराज़ू, ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ायम हों. और हमने लोहा उतारा जिसमें बड़ी क़ुव्वत (शक्ति) है और लोगों के लिए फ़ायदे हैं और**

ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उसकी और उसके रसूलों की मदद करता है बिना देखे,

बेशक अल्लाह ताक़त वाला, ज़बरदस्त है.

नोटः- अल्लाह और रसूलों की मदद करना क्या है? वह यह है कि जिस मिशन के साथ सारे पैग़ंबर अल्लाह की तरफ़ से भेजे गए उस मिशन में अपने आपको झोंक देना है. वह मिशन इंसानों को ख़ुदा के तख़्लिक़ी मंसूबे से आगाह करने का मिशन है. वह मिशन इंसानों को ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसके अंजाम से बाख़बर करने का मिशन है. वह मिशन जन्नत और जहन्नम के सबसे बड़े मसले से आगाह करने का मिशन है. सारे रसूल इसी मिशन को लेकर आए थे, किसी भी रसूल का मिशन इसके सिवा दूसरा नहीं था.

यहां लफ़्ज़ **'रसूल'** की जमा **'रुसुल'** आया है. सारे रसूलों का मिशन सिर्फ़ दावत था किसी भी रसूल का मिशन बड़ी-बड़ी यादगार इमारतें बनाना, बड़े-बड़े क़िले बनाना, मुल्कों को फतह करना, अपनी सियासत को चमकाना हरगिज़ नहीं था. बड़े-बड़े क़िले बनाना तो दूर की बात, बड़ी-बड़ी और शानदार इबादतगाहें बनाना भी उनका मिशन नहीं था. मस्जिदे-नबवी में 9 साल

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)
तक चिराग़ नहीं जला, ख़ुदा और उसका रसूल चाहता तो मस्जिदे-नबवी जो कि खजूर के टट्टियों की थी, पहले ही दिन सोना और हीरे के दीवारों की होती.

रसूलों के मिशन में अपने आपको शामिल करना कोई सादा बात नहीं है जो शख़्स इस मिशन में अपने आपको पूरे spirit के साथ शामिल करेगा, वह ख़ुदा के यहां 'अन्सारुल्लाह' और **'इख़वाने-रसूल'** (यानी अल्लाह और उसके रसूलों की मदद करने वाला) का दर्जा पाएगा. और जो शख़्स इस दावती मिशन से अपने आपको दूर रखेगा वह सारे रसूलों को झुठलाने वाला क़रार पाएगा.

26 और हमने नूह को और इब्राहीम को भेजा. और उनकी औलाद में हमने पैग़म्बरी और
किताब रख दी. फिर उनमें से कोई राह पर है और उनमें से बहुत से नाफ़रमान हैं. 27 फिर उन्हीं के
नक़्शेक़दम पर हमने अपने रसूल भेजे और उन्हीं के नक़्शेक़दम पर ईसा बिन मरयम को भेजा और हमने उसे इंजील दी. और जिन लोगों ने उसकी पैरवी की हमने उनके दिलों में शफ़क़त और रहमत (करुणा व दया) रख दी. और रहबानियत (संन्यास) को उन्होंने ख़ुद ईजाद किया है. हमने उसे उनपर नहीं लिखा था. मगर उन्होंने अल्लाह की रज़ामंदी के लिए उसे इख़्तियार कर लिया, फिर उन्होंने उसकी पूरी रिआयत (निर्वाह) न की, पस उनमें से जो लोग ईमान लाए उन्हें हमने उनका अज्र (प्रतिफल) दिया, और उनमें से अकसर नाफ़रमान हैं.

28 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी
रहमत से दो हिस्से अता करेगा. और तुम्हें रोशनी अता करेगा जिसे लेकर तुम चलोगे. और तुम्हें
बख़्श देगा. और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. 29 ताकि अहले-किताब जान लें कि वे
अल्लाह के फ़ज़्ल (अनुग्रह) में से किसी चीज़ पर इख़्तियार नहीं रखते और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है. वह जिसे चाहता है अता फ़रमाता है. और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है.

पारा – 28

सूरह-58. अल-मुजादला

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने शौहर के मामले में तुम से झगड़ती थी और अल्लाह से शिकायत कर रही थी (यानी अल्लाह को अपना दुखड़ा सुना रही थी), और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा था, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है.

2 तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं (ज़िहार यानी इस्लाम से पहले की

तलाक़ देने की एक कुप्रथा, जिसमें शौहर अपनी बीवी से कहता है कि तुम मेरी पीठ की तरह हो), वे उनकी माएं नहीं हैं. उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जना. और ये लोग बेशक एक नामाक़ूल और झूठ बात कहते हैं, और अल्लाह माफ़ करने वाला है, बख़्शने वाला है. 3 और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करें, फिर उससे रुजूअ करें जो उन्होंने कहा था तो एक गर्दन को आज़ाद करना (यानी एक ग़ुलाम आज़ाद करना) है, इससे पहले कि वे आपस में हाथ लगाएं. इससे तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो. 4 फिर जो शख़्स (कोई ग़ुलाम) न पाए तो रोज़े रखें दो महीने के लगातार, इससे पहले कि आपस में हाथ लगाएं. फिर जो शख़्स (यह भी) न कर सके तो साठ मिसकीनों को खाना खिलाना है. यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ. और ये अल्लाह की हदें हैं और मुन्किरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है.

5 जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं वे ज़लील होंगे जिस तरह वे लोग ज़लील हुए जो इनसे पहले थे. और हमने वाज़ेह (स्पष्ट) आयतें उतार दी हैं, और मुन्किरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है. 6 जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा और उनके किए हुए काम उन्हें बताएगा. अल्लाह ने उसे गिन रखा है. और वे लोग उसे भूल गए, और अल्लाह के सामने है हर चीज़.

7 तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है. कोई सरगोशी (गुप्त वार्ता) तीन आदमियों की नहीं होती जिसमें चौथा अल्लाह न हो. और न पांच की होती है जिसमें छठा वह न हो. और न इससे कम की या ज़्यादा की. मगर वह उनके साथ होता है जहाँ भी वे हों, फिर वह उन्हें उनके किए से आगाह करेगा क़यामत के दिन. बेशक अल्लाह हर बात का इल्म रखने वाला है. 8 क्या तुमने नहीं देखा जिन्हें सरगोशियों से रोका गया था, फिर भी वे वही कर रहे हैं, जिससे वे रोके गए थे. और वे गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशियां करते हैं, और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हें ऐसे तरीक़े से सलाम करते हैं जिस तरह (जिन अलफ़ाज़ में) अल्लाह ने तुम्हें सलाम नहीं भेजा. और अपने दिलों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमें अज़ाब क्यों नहीं देता. उनके लिए जहन्नम ही काफ़ी है, वे उसमें पड़ेंगे, पस वह बुरा ठिकाना है.

9 ऐ ईमान वालो! जब तुम आपस में सरगोशी (गुप्त वार्ता) करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशी न करो. और तुम नेकी और परहेज़गारी की सरगोशी करो. और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम जमा किए जाओगे. 10 यह सरगोशी शैतान की तरफ़ से है, ताकि वह ईमान वालों को रंज पहुँचाए, और वह उन्हें कुछ भी रंज नहीं पहुँचा सकता, मगर अल्लाह के हुक्म से. और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए.

11 ऐ ईमान वालो! जब तुम्हें कहा जाए कि मजलिसों में खुलकर बैठो तो तुम खुलकर बैठो,

अल्लाह तुम्हें कुशादगी (खुलापन) देगा. और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो तुम उठ जाओ. तुम में से जो लोग ईमान वाले हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह उनके दर्जे बुलंद करेगा. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है.

12 ऐ ईमान वालो! जब तुम रसूल से राज़दाराना बात करो तो अपनी राज़दाराना बात से पहले कुछ सदक़ा दो. यह तुम्हारे लिए बेहतर है और ज़्यादा पाकीज़ा है. फिर अगर तुम न पाओ तो अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है. 13 क्या तुम डर गए इस बात से कि तुम अपनी राज़दाराना गुफ़्तगू से पहले सदक़ा दो. पस अगर तुम ऐसा कर न सको (तो जान लो) अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया, तो तुम नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है.

14 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिनपर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ. वे न तुम में से हैं और न उनमें से हैं और वे झूठी बात पर क़सम खाते हैं, हालाँकि वे जानते हैं. 15 अल्लाह ने उन लोगों के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है, बेशक वे बुरे काम हैं जो वे करते हैं. 16 उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, पस उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है.

17 उनके माल और उनकी औलाद उन्हें ज़रा भी अल्लाह से बचा न सकेंगे. ये लोग दोज़ख़ वाले हैं. वे उसमें हमेशा रहेंगे. 18 जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उससे भी इसी तरह क़सम खाएंगे जिस तरह तुम से क़सम खाते हैं. और वे समझते हैं कि वे किसी चीज़ पर हैं (यानी वे समझते हैं कि वे भली राह पर हैं), सुन लो कि यही लोग झूठे हैं. 19 शैतान ने उनपर क़ाबू हासिल कर लिया है. फिर उसने उन्हें ख़ुदा की याद भुला दी है. ये लोग शैतान का गिरोह हैं. सुन लो कि शैतान का गिरोह ज़रूर बर्बाद होने वाला है. 20 जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करते हैं, वही ज़लील लोगों में से हैं. 21 अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे. बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला है, ज़बरदस्त है.

22 तुम ऐसी क़ौम नहीं पा सकते जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो और वह ऐसे लोगों से दोस्ती रखे जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं. अगरचे वे उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके ख़ानदान वाले क्यों न हों. यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और उन्हें अपने फ़ैज़ से क़ुव्वत दी है. और वह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे. अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए. यही लोग अल्लाह का गिरोह हैं और अल्लाह का गिरोह ही फ़लाह (सफलता) पाने वाला है.

सूरह–59. अल–हश्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अल्लाह की पाकी बयान करती हैं सब चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है. 2 वही है जिसने अहले–किताब मुन्किरों को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया. तुम्हारा गुमान न था कि वे निकलेंगे और वे ख़याल करते थे कि उनके क़िले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, फिर अल्लाह उनपर वहाँ से पहुँचा जहाँ से उन्हें गुमान भी न था. और उनके दिलों में रोब डाल दिया, वे अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी. **पस ऐ आँख वालो! इबरत (सबक़) हासिल करो.**

3 और अगर अल्लाह ने उनपर जलावतनी (देश से निकाला जाना) न लिख दिया होता तो वह दुनिया ही में उन्हें अज़ाब देता, और आख़िरत में उनके लिए आग का अज़ाब है. 4 यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की. और जो शख़्स अल्लाह की मुख़ालिफ़त करता है तो अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है. 5 खजूरों के जो दरख़्त तुमने काट डाले या उन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह के हुक्म से था, और ताकि वह नाफ़रमानों को रुसवा करे.

6 और अल्लाह ने उनसे जो कुछ अपने रसूल की तरफ़ लौटाया तो तुमने उसपर न घोड़े दौड़ाए और न ऊँट. लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है तसल्लुत (प्रभुत्व) दे देता है. और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है. 7 जो कुछ (माल) अल्लाह ने अपने रसूल को बस्तियों वालों से दिलवाया, तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए है और रिश्तेदारों और यतीमों (अनाथों) और मिसकीनों (असहाय लोगों) और मुसाफ़िरों के लिए है. ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दरमियान गर्दिश न करता रहे. और रसूल तुम्हें जो कुछ दे, वह ले लो और वह जिस चीज़ से तुम्हें रोके, उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो, अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है.

8 उन मुफ़लिस मुहाजिरों के लिए जो अपने घरों और अपने मालों से निकाले गए हैं. **वे अल्लाह का फ़ज़ल और रज़ामंदी चाहते हैं. और वे अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं.**
9 और जो लोग पहले से घरों में (यानी शहरे–मदीना में) क़रार पकड़े हुए हैं और ईमान पर जमे हुए हैं, जो उनके पास हिजरत करके आता है, उससे वे मुहब्बत करते हैं और वे अपने दिलों में उसके बारे में तंगी नहीं पाते जो मुहाजिरीन को दिया जाता है (मुहाजिरीन यानी वे लोग जो अल्लाह और उसके दीन के लिए अपना घरबार छोड़कर आए हैं). और वे उन्हें अपने ऊपर मुक़द्दम रखते हैं (यानी

प्राधान्य देते हैं), अगरचे उनके ऊपर फ़ाक़ा हो. और जो शख़्स अपने जी के लालच से बचा लिया गया तो वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं. 10 और जो उनके बाद आए, वे कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हमें बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं. और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना (द्वेष) न रख, ऐ हमारे रब! तू बड़ा शफ़ीक़ (करुणामय) और मेहरबान है.

11 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो निफ़ाक़ (पाखंड) में मुब्तिला हैं. वे अपने भाइयों से कहते हैं जिन्होंने अहले-किताब में से कुफ़्र किया है, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएँगे. और तुम्हारे मामले में हम किसी की बात नहीं मानेंगे. और अगर तुम से लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे. और अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं. 12 अगर वे निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे. और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे. और अगर उनकी मदद करेंगे तो ज़रूर वे पीठ फेरकर भागेंगे, फिर वे कहीं मदद न पाएंगे.

13 बेशक तुम लोगों का डर उनके दिलों में अल्लाह से ज़्यादा है, यह इसलिए कि वे लोग समझ नहीं रखते. 14 ये लोग सब मिलकर तुम से कभी नहीं लड़ेंगे. मगर हिफ़ाज़त वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ में. उनकी लड़ाई आपस में सख़्त है. तुम उन्हें मुत्तहिद (एकजुट) ख़याल करते हो और उनके दिल जुदा–जुदा हो रहे हैं, यह इसलिए कि वे लोग अक़्ल नहीं रखते.

15 ये उन लोगों की मानिंद हैं जो उनके कुछ ही पहले अपने किए का मज़ा चख चुके हैं, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है. 16 जैसे शैतान जो इंसान से कहता है कि मुन्किर हो जा, फिर जब वह मुन्किर हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुम से बरी हूँ. मैं अल्लाह से डरता हूँ जो सारे जहान का रब है. 17 फिर अंजाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोज़ख़ में गए जहाँ वे हमेशा रहेंगे, और यही ज़ालिमों की सज़ा है.

18 **ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और हर शख़्स देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है.** और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बाख़बर है जो तुम करते हो. 19 और तुम उन लोगों की तरह न बन जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन्हें ख़ुद उनकी जानों से ग़ाफ़िल कर दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं.

20 **दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते. जन्नत वाले ही असल में कामयाब हैं.**

नोटः– जो इंसान ख़ुदारुख़ी ज़िंदगी गुज़ार रहा हो और जो इंसान ख़ुदारुख़ी ज़िंदगी न गुज़ार रहा हो, दोनों का अंजाम एकसा नहीं हो सकता.

21 अगर हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह ख़ुदा के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता, और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं, ताकि वे सोचें. 22 वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला, वह बड़ा मेहरबान है. निहायत रहम वाला है. 23 वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं. बादशाह, सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़ोरआवर, अज़्मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं. 24 वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वजूद में लाने वाला, सूरतगरी करने वाला (सृष्टा), उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम. हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तस्बीह कर रही है, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला (प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान) है.

सूरह–60. अल–मुम्तहिना

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ऐ ईमान वालो! तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे दोस्ती का इज़हार करते हो, हालाँकि उन्होंने उस हक़ (सत्य) का इन्कार किया जो तुम्हारे पास आया है, वे रसूल को और तुम्हें इस वजह से जलावतन करते हैं (यानी तुम्हारे वतन से तुम्हें निकाल देते हैं सिर्फ़ इसलिए) कि तुम अपने रब, अल्लाह पर ईमान लाए. अगर तुम मेरी राह में जिहाद और मेरी रज़ामंदी की तलब के लिए निकले हो, तो यह कैसे मुमकिन है कि तुम छुपाकर उन्हें दोस्ती का पैग़ाम भेज सको. और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम छुपाते हो. और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो. और जो शख़्स तुम में से ऐसा करेगा वह राहेरास्त से भटक गया. 2 अगर वे तुम पर क़ाबू पा जाएँ तो वे तुम्हारे दुश्मन बन जाएँगे. और अपने हाथ और अपनी ज़बान से तुम्हें तकलीफ़ (व रंज) पहुँचाएंगे. और चाहेंगे कि तुम भी किसी तरह मुन्किर हो जाओ. 3 तुम्हारे रिश्तेदार और तुम्हारी औलाद क़यामत के दिन तुम्हारे काम न आएंगे, वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा, और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो.

4 तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि हम अलग हैं तुम से और उन चीज़ों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, हम तुम्हारे मुन्किर हैं और हमारे और तुम्हारे दरमियान हमेशा के लिए अदावत (बैर) और बेज़ारी (दुराव) ज़ाहिर हो गई, यहाँ तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाओ. मगर इब्राहीम का अपने बाप से यह कहना कि मैं आपके लिए माफ़ी माँगूगा, और मैं आपके लिए अल्लाह के आगे किसी बात का इख़्तियार नहीं रखता. ऐ हमारे रब! हमने तेरे ऊपर भरोसा किया और हम तेरी तरफ़

रुजूअ हुए और तेरी ही तरफ़ लौटना है. 5 ऐ हमारे रब! हमें मुन्किरों के लिए फ़ितना न बना, और ऐ हमारे रब! हमें बख़्श दे, बेशक तू ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है.

6 बेशक तुम्हारे लिए उनमें (यानी इब्राहीम व उनके घर वालों में) अच्छा नमूना है, उस शख़्स के लिए जो अल्लाह का और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो. और जो शख़्स रूगर्दानी (अवहेलना) करेगा तो अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, तारीफ़ों वाला है.

नोटः– हज़रत इब्राहीम (अ.स.) अगरचे शिर्क के माहौल में पैदा हुए, उन्होंने तौहीद की सच्चाई को दरयाफ़्त किया. फिर ग़ैरूल्लाह से पूरी तरह अलग होकर सच्चे माने में पूरी तरह अल्लाह के बंदे और उसके दीन के दाई बन गए. इस राह में उन्होंने बेशुमार क़ुर्बानियां दीं. और अपने बीवी बच्चों को उन्होंने अल्लाह के पसंदीदा रास्ते पर डाला. ऐसा ही बंदा अल्लाह का मतलूब बंदा होता है. ऐसा ही बंदा अल्लाह की नज़र में उन लोगों के लिए नमूना है जो अल्लाह और आख़िरत के उम्मीदवार बनना चाहते हैं.

7 उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दरमियान दोस्ती पैदा कर दे जिनसे तुमने दुश्मनी की. और अल्लाह सब कुछ कर सकता है, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है.

8 अल्लाह तुम्हें उन लोगों (के साथ अच्छा सलूक करने) से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में तुम से जंग नहीं की. और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला कि तुम उनके साथ भलाई करो और तुम उनके साथ इंसाफ़ करो. बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को पसंद करता है. 9
अल्लाह बस उन लोगों से तुम्हें मना करता है जो दीन के मामले में तुम से लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में मदद की, कि तुम उनसे दोस्ती करो, और जो उनसे दोस्ती करे तो वही लोग ज़ालिम हैं.

10 ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत करके आएं (यानी अल्लाह और उसके दीन के लिए अपना वतन छोड़कर आएं) तो तुम उन्हें जांच लो, अल्लाह उनके ईमान को ख़ूब जानता है. पस अगर तुम जान लो कि वे मोमिन हैं तो उन्हें मुन्किरों की तरफ़ न लौटाओ. न वे औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वे (मुन्किर मर्द) उन औरतों के लिए हलाल हैं. और मुन्किर शौहरों ने जो कुछ ख़र्च किया वह उन्हें अदा कर दो. और तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम उनसे निकाह कर लो, जबकि तुम उनके महर उन्हें अदा कर दो. और तुम मुन्किर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो. और जो कुछ तुमने ख़र्च किया है उसे माँग लो. और जो कुछ

मुन्किरों ने ख़र्च किया वे भी तुम से माँग लें. यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है. 11 और अगर तुम्हारी बीवियों के महर में से कुछ मुन्किरों की तरफ़ रह जाए, फिर तुम्हारी नौबत आए तो जिनकी बीवियां गई हैं उन्हें अदा कर दो जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया. और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो.

12 ऐ नबी! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) के लिए आएं कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करेंगी और वे चोरी नहीं करेंगी और वे बदकारी नहीं करेंगी और वे अपनी औलाद को क़तल नहीं करेंगी और वे अपने हाथ और पांव के आगे कोई बोहतान गढ़कर नहीं लाएँगी और वे किसी मारूफ़ (सत्कर्म) में तुम्हारी नाफ़रमानी नहीं करेंगी तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से बख़्शिश की दुआ करो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला है, मेहरबान है.

13 ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों को दोस्त न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे आख़िरत से नाउम्मीद हो गए हैं, जिस तरह क़ब्रों में पड़े हुए मुन्किर नाउम्मीद हैं.

सूरह–61. अस–सफ़्फ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है. और वह ग़ालिब व हकीम (प्रभुत्वशाली व बुद्धिमान) है.

2 **ऐ ईमान वालो! तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं.** 3 **अल्लाह के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़ी की है कि तुम ऐसी बात कहो जो तुम करो नहीं.**

नोटः– मुसलमान दाई बन जाएं इसी में उनकी ख़ुद की इसलाह भी है. अल्लाह तआला ने ज़मीर की शकल में इंसान के अंदर एक आला बिठा रखा है. जो इंसान को सही व गलत के बारे में बार–बार आगाह करते रहता है. दाई जब दूसरों को अल्लाह के पैग़ामात की दावत देता है और अगर उसकी ज़िंदगी उससे मुख़्तलिफ़ हो तो अंदर से यह अलार्म बजता है कि वह बात क्यों कहते हो जो ख़ुद नहीं करते. इस तरह दावत में दूसरे इंसानों की ख़ैरख़ाही भी है और ख़ुद की इसलाह भी.

4 अल्लाह तो उन लोगों को पसंद करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं गोया वे एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं.

5 और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम लोग क्यों मुझे सताते हो, हालाँकि तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ. पस जब वे फिर गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया. और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता.

6 और जब ईसा बिन मरयम ने कहा कि ऐ बनी इसराईल! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ, तसदीक़ (पुष्टि) करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझ से पहले से मौजूद है और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा. फिर जब वह उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है.
7 और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे, हालाँकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता.

8 **वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुँह से बुझा दें, हालाँकि अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा करके रहेगा, चाहे मुन्किरों को यह कितना ही नागवार हो.**
9 **वही है जिसने भेजा अपने रसूल को हिदायत और दीने-हक़ के साथ, ताकि उसे सब दीनों पर ग़ालिब कर दे, चाहे मुशरिकों (अनेकेश्वरवादियों) को यह कितना ही नागवार हो.**

नोटः- मसनद अहमद में यह हदीस आयी है की रसूलुल्लाह (स.अ.) ने फ़रमाया 'अल्लाह इस्लाम के कलमे को यानी **'क़ुरआन'** को दुनिया के हर छोटे और बड़े घर में दाख़िल करेगा.' (मिश्कातूल-मसाबिह, हदीस नं. 42)

ख़ुदा और रसूल की यह पेशीनगोई हर हाल में सच होना है, चाहे वह मुन्किरीन को कितनाही नागवार हो. खुशनसीब है वह शख़्स जो अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने के इस मिशन में अपना हाथ बटाए.

इस दुनिया में ख़ुदा को सबसे ज़्यादा जो चीज़ मतलूब है. वह यह है कि ख़ुदा के बंदों तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँच जाएँ, ताकि लोग ख़ुदा के मंसूबे से आगाह हो जाएँ.

10 **ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत बताऊँ जो तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब से बचा ले.**
11 **तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपने जान से जिहाद (जद्दोजहद) करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो.**
12 **अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुम्हें**

ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में जो हमेशा रहने के बाग़ों में होंगे, यही है बड़ी कामयाबी

नोटः– दर्दनाक अज़ाब से ख़ुद को बचाने की तिजारत यह है कि ईमान वाला दूसरे इंसानों को भी दर्दनाक अज़ाब से बचाने की कोशिश करे, इसी कोशिश का नाम दावती जिहाद है. क़ुरआन में अल्लाह तआला ने दावत को बड़ा जिहाद बताया है (सूरह 25, आयत 52). जो कोई दावती जिहाद के लिए अपना जान–व–माल लगायेगा अल्लाह उसे दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा.

जिहाद लफ़्ज़ का मतलब दीन के लिए जद्दोजहद करना है और मोमिन की मुकम्मल ज़िंदगी जिहाद है. 'जिहाद' यह लफ़्ज़ क़ुरआन में जंग के लिए नहीं आया है. जंग के लिए क़िताल लफ़्ज़ आया है, जो कि क़ायम–शुदा हुकूमत को नागुज़ीर तौर पर अपने दिफ़ाअ में करना पड़ता है. क़ुरआन में दावते–क़ुरआन को बड़ा जिहाद कहा गया है, जो कि हर मोमिन से उसकी सारी ज़िंदगी में मतलूब है, जबकि क़िताल एक वक़्ती और दिफ़ाई अमल है जिसको एक क़ायम–शुदा हुकूमत अंजाम देती है.

13 एक और चीज़ भी जिसकी तुम तमन्ना रखते हो, अल्लाह की मदद और फ़तह जल्दी, और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो.

14 **ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के मददगार बनो,** **जैसा कि ईसा बिन मरयम ने हवारियों (साथियों) से कहा, कौन अल्लाह के वास्ते मेरा मददगार बनता है. हवारियों ने कहा, हम हैं अल्लाह के मददगार, पस बनी इसराईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इन्कार किया. फिर हमने ईमान लाने वालों की उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद की, पस वे ग़ालिब हो गए.**

नोटः– यहाँ **'उम्मते–मुहम्मदी'** को ख़ुदा का मददगार बनने का हुक्म दिया गया है. ख़ुदा का मददगार बनना क्या है? इस आयत की तशरीह में इब्ने–कसीर लिखते हैं कि हज़रत ईसा (अ.स.) ने जब अपने सथियों को (यानी हवारियों को) दावती मिशन पर रवाना करने के मक़सद से यह सवाल किया था कि 'लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाने में कौन मेरा मददगार है.' तो हवारियों ने यह जवाब दिया था कि 'हम हैं अल्लाह के मददगार.'

इससे वाज़ेह है कि **'लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाना'**, **'लोगों को अल्लाह से जोड़ना'**, **'लोगों पर अल्लाह के तख़्लिक़ी मंसूबे को वाज़ेह करना'** अल्लाह की मदद करना है. और यह काम अहले–ईमान पर फ़र्ज़ के दर्जे में लाज़िम है.

(remaining note on the next page)

(the note continued from the last page)

एक इंसान जब दावत का काम करता है तो उसका एहसास यह होता है कि वह ख़ुदा का एक काम कर रहा है. किसी बंदे के लिए इससे ज़्यादा लज़ीज़ दूसरा कोई तजरबा नहीं हो सकता कि वह महसूस करे कि मैं अपने रब के काम में मसरूफ़ हूँ. मैं अपने रब के एक मंसूबे की तकमील कर रहा हूँ.

जो लोग अल्लाह के पास अन्सारूल्लाह का लक़ब व एजाज़ पाना चाहते हैं, उन्हें अपने आपको दावत के मिशन में झोंक देना होगा. बंदे के लिए इससे बड़ा एजाज़ दूसरा कौनसा हो सकता है कि ख़ुदा आख़िरत में उसे **'अन्सारूल्लाह'** कहकर बुलाए.

सूरह–62. अल–जुमुआ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर वह चीज़ जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है. जो
बादशाह है, पाक है, ज़बरदस्त है, हिकमत वाला (बुद्धिमान) है. 2 वही है जिसने उम्मियों के
अंदर एक रसूल उन्हीं में से उठाया, वह उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है. और उन्हें पाक
करता है और उन्हें किताब और हिकमत (यानी ईश–संदेश सुनाता है और उसकी गहराइयों को
स्पष्ट करता है) की तालीम देता है, और वे इससे पहले खुली गुमराही में थे 3 और दूसरों के लिए
भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है. 4 यह
अल्लाह का फ़ज़ल (अनुग्रह) है, वह देता है जिसे चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है.

5 जिन लोगों को तौरात का हामिल (धारक) बनाया गया, फिर उन्होंने उसे न उठाया, उनकी
मिसाल उस गधे की सी है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो. क्या ही बुरी मिसाल है उन लोगों
की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता.
6 कहो कि ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा गुमान है कि तुम दूसरों के मुक़ाबले में अल्लाह के महबूब हो
तो तुम मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो. 7 और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे उन कामों
की वजह से जिन्हें उनके हाथ आगे भेज चुके हैं. और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है. 8 कहो
कि जिस मौत से तुम भागते हो वह तुम्हें आकर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर (खुले व
छुपे) के जानने वाले के पास ले जाए जाओगे, फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे हो.

**9 ऐ ईमान वालो! जब जुमा के दिन की नमाज़ के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की
याद की तरफ़ चल पड़ो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है**

अगर तुम जानो. 10 फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो, और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करो, ताकि तुम फ़लाह पाओ.

नोटः– मोमिन ख़ुदा में जीता है, ग़ैर–मोमिन ग़ैरे–ख़ुदा में जीता है. मोमिन उठे–बैठे–लेटे, ज़िंदगी की हर मोड़ पर अल्लाह की याद करता है. तलाशे–माश हो या और कोई अमल (activity) उसे ख़ुदा से ग़ाफ़िल नहीं कर सकता. मोमिन का मामला ऐसा नहीं हो सकता कि वह अल्लाह का फ़ज़्ल तो तलाश कर रहा है, लेकिन अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल है.

11 और जब वे कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ़ दौड़ पड़ते हैं. और तुम्हें खड़ा हुआ छोड़ देते हैं, कहो कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और तिजारत से बेहतर है, और अल्लाह बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है.

सूरह–63. अल–मुनाफ़िक़ून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 जब मुनाफ़िक़ (पाखंडी) तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप
बेशक अल्लाह के रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि बेशक तुम उसके रसूल हो, और अल्लाह
गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) झूठे हैं. 2 उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है,
फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, बेशक निहायत बुरा है जो वे कर रहे हैं. 3 यह इस सबब से है
कि वे ईमान लाए फिर उन्होंने कुफ़्र किया, फिर उनके दिलों पर मुहर कर दी गई, पस वे नहीं समझते.
4 और जब तुम उन्हें देखो तो उनके जिस्म तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करते हैं
तो तुम उनकी बात सुनते हो, (लेकिन उनका हाल ऐसा है) गोया कि वे लकड़ियां हैं टेक लगाई
हुई. वे हर ज़ोर की आवाज़ को अपने ख़िलाफ़ समझते हैं. यही लोग दुश्मन हैं, पस उनसे बचो.
अल्लाह उन्हें हलाक करे, वे कैसे बहके जा रहे हैं. 5 और जब उनसे कहा जाता है कि आओ,
अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार (माफ़ी की दुआ) करे तो वे अपना सर फेर लेते हैं. और
तुम उन्हें देखोगे कि वे तकब्बुर (घमंड) करते हुए बेरुख़ी करते हैं. 6 उनके लिए यकसां (समान)
है, तुम उनके लिए मग़फ़िरत (माफ़ी) की दुआ करो या मग़फ़िरत की दुआ न करो, अल्लाह हरगिज़
उन्हें माफ़ नहीं करेगा. अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता.
7 यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं, उनपर ख़र्च मत करो, यहाँ
तक कि वे मुंतशिर (तितर–बितर) हो जाएँ. और आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के

हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) नहीं समझते. 8 वे कहते हैं कि अगर हम मदीना लौटे तो इज़्ज़त वाला वहाँ से ज़िल्लत वाले को निकाल देगा. हालाँकि इज़्ज़त अल्लाह के लिए और उसके रसूल के लिए और मोमिनीन के लिए है, मगर मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) नहीं जानते.

9 **ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करने पाएं,** **और जो ऐसा करेगा तो ऐसे ही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं.**
10 **और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए,** **फिर वह कहे कि ऐ मेरे रब! तूने मुझे कुछ और मोहलत क्यों न दी कि मैं सदक़ा (दान) करता और नेक लोगों में शामिल हो जाता.**

नोटः– हर आदमी का सबसे बड़ा मसला आख़िरत का मसला है. मगर माल और औलाद इंसान को इस सबसे बड़े मसले से ग़ाफ़िल कर देते हैं. इंसान को जानना चाहिए कि माल और औलाद मक़सद नहीं, बल्कि ज़रिया हैं. वे इसलिए किसी को दिए जाते हैं कि वह उन्हें अल्लाह के काम में लगाए. वह उन्हें अपनी आख़िरत बनाने में इस्तेमाल करे. मगर नादान आदमी उन्हें बज़ाते–ख़ुद मक़सूद (यानी इनाम) समझ लेता है. ऐसे लोग जब अपने आख़िरी अंजाम को पहुँचेंगे तो वहाँ उनके लिए हसरत व अफ़सोस के सिवा और कुछ न होगा.

11 और अल्लाह हरगिज़ किसी जान को मोहलत नहीं देता, जबकि उसकी मीआद (नियत समय) आ जाए, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो.

सूरह–64. अत–तग़ाबुन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर चीज़ जो आसमानों में है और हर चीज़ जो ज़मीन में है. उसी की बादशाही है और उसी के लिए तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है. 2 वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कोई मुन्किर है और कोई मोमिन, और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो. 3 उसने आसमानों और ज़मीन को ठीक तौर पर पैदा किया और उसने

तुम्हारी सूरत बनाई तो निहायत अच्छी सूरत बनाई, और उसी की तरफ़ है लौटना. 4 वह जानता है जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है. और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो. और अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है.

5 क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जिन्होंने इससे पहले इन्कार किया, फिर उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनके लिए एक दर्दनाक अज़ाब है. 6 यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल खुली दलीलों के साथ आए, तो उन्होंने कहा कि क्या इंसान हमारी रहनुमाई करेंगे. पस उन्होंने इन्कार किया और मुँह फेर लिया, और अल्लाह उनसे बेपरवाह हो गया, और अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, तारीफ़ वाला है.

7 **इन्कार करने वालों ने दावा किया कि वे हरगिज़ दुबारा उठाए न जाएँगे, कहो कि हां, मेरे रब की क़सम तुम ज़रूर उठाए जाओगे**, **फिर तुम्हें बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया है, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है.**

नोटः– इन्कार करने वाले इस दुनिया में इन्कार करने के लिए आज़ाद हैं. लेकिन दाई को यह हुक्म है कि अपने रब का message उनपर पेश कर दें और उन्हें बता दें कि '**तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया है,.......**'

8 पस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस नूर (प्रकाश) पर जो हमने उतारा है. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो.

9 **जिस दिन वह तुम सबको एक जमा होने के दिन जमा करेगा,**

यही दिन हार व जीत का दिन होगा.

और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया होगा और उसने नेक अमल किया होगा, अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे हमेशा–हमेशा उनमें रहेंगे. यही है बड़ी कामयाबी.

नोटः– हार आख़िरत की हार है और जीत आख़िरत की जीत है.

10 **और जिन लोगों ने इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया** वही आग वाले हैं, (वे) उसमें हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है.

नोटः– लोगों को हक़ क़बूल करने का या उसका इन्कार करने का मौक़ा सिर्फ़ उस सूरत में मिलेगा, जब उन तक अल्लाह की आयतें पहुँचा दी जाएँ.

11 जो मुसीबत भी आती है अल्लाह के इज़्न (अनुज्ञा) से आती है. और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उसके दिल को राह दिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला
है. 12 और तुम अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो. फिर अगर तुम एराज़ (उपेक्षा) करोगे तो हमारे रसूल पर बस साफ़–साफ़ पहुँचा देना है. 13 अल्लाह, उसके
सिवा कोई इलाह (पूज्य–प्रभु) नहीं, और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए.

14 ऐ ईमान वालो! तुम्हारी कुछ बीवियां और कुछ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, पस तुम उनसे होशियार रहो, और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो और बख़्श दो तो अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है.

15 **तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश की चीज़ हैं,**
और अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है. 16 पस तुम अल्लाह से डरो जहाँ तक हो सके. और सुनो और मानो और ख़र्च करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो शख़्स दिल की तंगी से महफ़ूज़ रहा तो ऐसे ही लोग फ़लाह (सफलता) पाने वाले
हैं. 17 अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह क़द्रदान है, बुर्दबार (उदार)
है. 18 ग़ायब और हाज़िर को जानने वाला है, ज़बरदस्त है, हकीम है (बुद्धिमान है).

सूरह–65. अत–तलाक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ऐ पैग़म्बर! जब तुम लोग औरतों को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत पर तलाक़ दो और इद्दत को गिनते रहो, और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है. उन औरतों को उनके घरों से न निकालो और न वे ख़ुद निकलें, इल्ला यह कि वे कोई खुली बेहयाई करें, और ये अल्लाह की हदें हैं, और जो शख़्स

अल्लाह की हदों से तजावुज़ करेगा तो उसने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, तुम नहीं जानते शायद अल्लाह
इस तलाक़ के बाद कोई नई सूरत पैदा कर दे. 2 फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुँच जाएँ तो उन्हें या तो
मारूफ़ (भली रीति) के मुताबिक़ रख लो या मारूफ़ के मुताबिक़ उन्हें छोड़ दो और अपने में से दो
मोतबर गवाह कर लो और गवाह ठीक—ठीक अल्लाह के लिए गवाही दें. यह उस शख़्स को नसीहत
की जाती है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो. और जो शख़्स अल्लाह से
डरेगा, अल्लाह उसके लिए राह निकालेगा, 3 और उसे वहाँ से रिज़्क़ देगा, जहाँ उसका गुमान भी
न गया हो, और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह उसके लिए काफ़ी है, बेशक अल्लाह
अपना काम पूरा करके रहता है, अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक नपातुला पैमाना ठहरा रखा है.

4 और तुम्हारी औरतों में से जो हैज़ (मासिक स्त्राव) से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुम्हें
शुबहा हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है. और इसी तरह उनकी भी जिन्हें हैज़ नहीं आया, और
हामिला (गर्भवती) औरतों की इद्दत उस हमल का पैदा हो जाना है, और जो शख़्स अल्लाह से
डरेगा, अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी कर देगा. 5 यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने
तुम्हारी तरफ़ उतारा है, और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा
और उसे बड़ा अज्र देगा.

6 तुम उन औरतों को अपनी वुस्अत (हैसियत) के मुताबिक़ रहने का मकान दो जहाँ तुम
रहते हो और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें तकलीफ़ न पहुँचाओ, और अगर वे हमल (गर्भ)
वालियाँ हों तो उनपर ख़र्च करो, यहाँ तक कि उनका हमल पैदा हो जाए. फिर अगर वे तुम्हारे लिए
दूध पिलाएँ तो उनकी उजरत (पारिश्रमिक) उन्हें दो. और तुम आपस में एक दूसरे को नेकी
सिखाओ. और अगर तुम आपस में ज़िद करो तो कोई और औरत दूध पिलाएगी. 7 चाहिए कि
वुस्अत वाला अपनी वुस्अत के मुताबिक़ ख़र्च करे और जिसकी आमदनी कम हो उसे चाहिए
कि अल्लाह ने जितना उसे दिया है उसमें से ख़र्च करे. अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता, मगर
उतना ही जितना उसे दिया है, अल्लाह सख़्ती के बाद जल्द ही आसानी पैदा कर देता है.

8 और बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के हुक्म से सरताबी
(विमुखता) की, पस हमने उनका सख़्त हिसाब किया और हमने उन्हें हौलनाक सज़ा दी. 9 पस
उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनका अंजामकार ख़सारा (घाटा) हुआ. 10 अल्लाह ने
उनके लिए एक सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है. पस अल्लाह से डरो, ऐ अक़्ल वालो! जो कि
ईमान लाए हो. अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ एक नसीहत उतारी है,

11 एक रसूल जो तुम्हें **अल्लाह की खुली–खुली आयतें पढ़कर सुनाता है. ताकि उन लोगों को तारीकियों से रोशनी की तरफ़ निकाले** जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया. और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया और नेक अमल किया उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उसे बहुत अच्छी रोज़ी दी.

नोटः– अल्लाह की आयतें लोगों को गुमराही की तारीकियों से निकाल कर सिराते–मुस्तक़ीम पर लाने का ज़रिया हैं. अगरचे इस काम को अंजाम देने के लिए अब कोई पैग़ंबर आने वाला नहीं है, लेकिन जो आयतें ख़ुद पैग़ंबर लोगों को पढ़कर सुनाता था वही आयतें क़ुरआन की शकल में पूरी तरह महफ़ूज़ हैं. अब क़ुरआन के मानने वालों की यह ज़िम्मेदारी है कि वह अल्लाह की आयतों को यानी क़ुरआन को लोगों तक पहुँचा दें, ताकि उन्हें हिदायत की रोशनी मिले और वे गुमराही की तारीकियों से बाहर आ सकें.

12 अल्लाह ही है जिसने बनाए सात आसमान और उन्हीं की तरह ज़मीन भी. उनके दरमियान उसका हुक्म उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है. और अल्लाह ने अपने इल्म से हर चीज़ का इहाता कर रखा है (यानी हर चीज़ को अपने इल्म से घेरे में लिए हुए है).

सूरह–66. अत–तहरीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ऐ नबी! तुम क्यों उस चीज़ को हराम करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है,
अपनी बीवियों की रज़ामंदी चाहने के लिए? और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. 2 अल्लाह ने
तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़समों का खोलना मुक़र्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है, और वह जानने वाला, हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है.

3 और जब नबी ने अपनी किसी बीवी से एक बात छुपा कर कही, तो जब उसने उसे (किसी और को) बता दिया और अल्लाह ने नबी को उससे आगाह कर दिया तो नबी ने कुछ बात बताई और कुछ टाल दी, फिर जब नबी ने उसे यह बात बताई तो उसने कहा कि आपको किसने इसकी ख़बर दी. नबी ने कहा कि मुझे बताया जानने वाले ने, बाख़बर ने.
4 (ऐ नबी की

बीवीयों!) अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करो तो (तुम्हारे लिए यह बेहतर है क्योंकि) तुम्हारे दिल (हक़ से हटकर दूसरी तरफ़) झुक पड़े हैं, और अगर तुम दोनों नबी के मुक़ाबले में कार्रवाइयाँ करोगी तो उसका रफ़ीक़ (साथी) अल्लाह है और जिब्रील और सालेह (नेक) अहले-ईमान और उनके अलावा फ़रिश्ते उसके मददगार हैं.
5 (ऐ नबी की बीवीयों!) अगर नबी तुम सबको तलाक़ दे दे तो उसका रब तुम्हारे बदले में तुम से बेहतर बीवियां उसे दे दे, मुस्लिमा, बाईमान, फ़रमांबरदार, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोज़ेदार, विधवा और कुंवारी.

6 ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर होंगे, उसपर तुंदख़ू (कठोर) और ज़बरदस्त फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, अल्लाह उन्हें जो हुक्म दे उसमें वे उसकी नाफ़रमानी नहीं करते, और वे वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है.

नोटः- अहले-ईमान के ऊपर यह ज़िम्मेदारी है कि वह ख़ुद को और दूसरों को जहन्नम से बचाने की कोशिश करते रहें. ऐसा नहीं हो सकता कि आप ख़ुद को जहन्नम से बचाने की फ़िकरों में जी रहे हों और दूसरों के ताल्लुक़ से बेफिक्र हों.

7 ऐ लोगो! जिन्होंने इन्कार किया, आज उज़्र न पेश करो, तुम वही बदले में पा रहे हो जो तुम करते थे.

8 ऐ ईमान वालो! अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो. उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को रुसवा नहीं करेगा. उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाईं तरफ़ दौड़ रही होगी, वे कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारी रोशनी को कामिल कर दे और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है.

9 ऐ नबी! मुन्किरों और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उनपर सख़्ती करो, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है.
10 अल्लाह मुन्किरों के लिए मिसाल बयान करता है नूह की बीवी की और लूत की बीवी की, दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ ख़यानत की तो वे दोनों अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ.

11 **और अल्लाह ईमान वालों के लिए मिसाल बयान करता है** फ़िरऔन की बीवी की, जबकि उसने कहा कि **ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे** और मुझे फ़िरऔन और उसके अमल से बचा ले और मुझे ज़ालिम क़ौम से नजात दे. 12 और (दूसरी मिसाल) इमरान की बेटी मरयम की, जिसने अपनी अस्मत की (सतीत्व की) हिफ़ाज़त की, फिर हमने उसमें अपनी रूह फूँक दी और उसने अपने रब के कलमात की और उसकी किताबों की तसदीक़ की, और वह फ़रमांबरदारों में से थी.

नोटः– हज़रत आसिया वक़्त के बादशाह फ़िरऔन की बीवी थीं. गोया वह दुनिया की जन्नत में रह रहीं थीं. लेकिन जब उस ख़ातून तक हक़ का पैग़ाम पहुँचा तो वह उसकी मोमिन बन गई. इसके बरअक्स फ़िरऔन, हक़ का पैग़ाम उसके पास पहुँचने के बावजूद सरकश बना रहा और हक़ का साथ देने वालों पर हर क़िस्म से ज़ुल्म ढाने पर वह आमादा हो गया.

उस वक़्त हज़रत आसिया की ज़बान से जो दुआ निकली वह दुआ यह थी कि **'ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे'** दुआ के यह अलफ़ाज़ बताते हैं कि हज़रत आसिया हक़ का साथ देने के लिए दुनिया की जन्नत को क़ुर्बान कर रही थीं, जिसमें वह थीं. गोया कि वह अपने इस अमल से इस बात का सुबूत दे रही थी कि ख़ुदाया! मैं तेरे लिए दुनिया की जन्नत को छोड़ रही हूँ. तू आख़िरत की हक़ीक़ी जन्नत में मेरे लिए एक घर बना दे.

पारा – 29

सूरह–67. अल–मुल्क

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 बड़ा बाबरकत है वह जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है.

2 **जिसने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया, ताकि तुम्हें जांचे कि तुम में से कौन अच्छा काम करता है, और वह ज़बरदस्त है, बख़्शने वाला है.**

नोटः– इस जांच में से हर इन्सान गुज़र रहा है. इंसानों की ख़ैरख़ाही यह है कि उन्हें ज़िंदगी की इस हक़ीक़त से आगाह किया जाए. उन्हें बताया जाए कि यह दुनिया इम्तहान के लिए है, मौत के बाद इस इम्तहान का नतीजा सामने आने वाला है. इन्सानों की बेहतरी इसी में है कि ज़िंदगी की इस हक़ीक़त को पहचानें और इस इम्तहान में कामयाब होने के लिए अपने रब कि रहनुमाई पर अमल करें.

3 जिसने बनाए सात आसमान ऊपर तले, तुम रहमान के बनाने में कोई ख़लल (त्रुटि defect) नहीं देखोगे, फिर निगाह डाल कर देख लो, कहीं तुम्हें कोई ख़लल नज़र आता है. 4
फिर बार—बार निगाह डाल कर देखो, निगाह नाकाम थक कर तुम्हारी तरफ़ वापस आ जाएगी.

5 और हमने क़रीब के आसमान को चिराग़ों से सजाया है. और हमने उन्हें शैतानों के मारने का ज़रिया बनाया है. और हमने उनके लिए दोज़ख़ का अज़ाब तैयार कर रखा है. 6 और जिन
लोगों ने अपने रब का इन्कार किया, उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है. और वह बुरा ठिकाना है.
7 जब वे उसमें डाले जाएँगे, वे उसका दहाड़ना सुनेंगे और वह जोश मारती होगी,

8 **मालूम होगा कि वह गुस्से में फट पड़ेगी. जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा, उसके दारोग़ा उससे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया.**
9 **वे कहेंगे कि हां, हमारे पास डराने वाला आया. फिर हमने उसे झुठला दिया और हमने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज़ नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो.**
10 **और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोज़ख़ वालों में से न होते.**

नोटः— इससे अंदाज़ा होता है कि इंसान का सबसे बड़ा मसला क्या है? वह आख़िरत का मसला है. इसी सबसे बड़े मसले से आगाह करना ही इंसान की सबसे बड़ी ख़ैरख़ाही है. हर इंसान के सामने ज़िंदगी का दो में से एक अंजाम आने वाला है, जन्नत या जहन्नम. ख़ुदा यह चाहता के हर इन्सान को ज़िंदगी के इस अंजाम से आगाह कर दिया जाए, ताकि कल कोई यह न कह सके कि ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसका अंजाम बताने वाला मेरे पास कोई नहीं आया. इसी काम के लिए ख़त्मे—नबुवत से पहले पैग़ंबर आते थे. अब यही काम **'उम्मते—मुहम्मदी'** को अंजाम देना है.

11 पस वे अपने गुनाह का इक़रार करेंगे, पस लानत हो दोज़ख़ वालों पर.

12 जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं, उनके लिए मग़फ़िरत (क्षमा) और बड़ा अज्र
(प्रतिफल) है. 13 और तुम अपनी बात छुपाकर कहो या पुकार कर कहो, वह दिलों तक की
बातों को जानता है. 14 क्या वह नहीं जानेगा जिसने पैदा किया है, और वह बारीकबीं (यानी सूक्ष्म से सूक्ष्म चीज़ पर नज़र रखने वाला) है, ख़बर रखने वाला है.

15 वही है जिसने ज़मीन को तुम्हारे क़ाबू में (वश में) कर दिया, तो तुम उसके रास्तों में
चलो और उसके रिज़्क़ में से खाओ और उसी की तरफ़ है उठना. 16 क्या तुम उससे बेख़ौफ़ हो
गए जो आसमान में है कि वह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे, फिर वह लरज़ने लगे. 17 क्या तुम उससे

जो आसमान में है बेख़ौफ़ हो गए कि वह तुम पर पथराव करने वाली हवा भेज दे, फिर तुम जान लो कि कैसा है मेरा डराना. 18 और उन्होंने झुठलाया जो उनसे पहले थे. तो कैसी हुई मेरी फटकार.

19 क्या वे परिंदों को अपने ऊपर नहीं देखते पर फैलाए हुए और वे उन्हें समेट भी लेते हैं. रहमान के सिवा कोई नहीं जो उन्हें थामे हुए हो, बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है. 20 आख़िर कौन है कि वह तुम्हारा लश्कर बनकर रहमान के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद कर सके, इन्कार करने वाले धोखे में पड़े हुए हैं. 21 आख़िर कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर अल्लाह अपनी रोज़ी रोक ले, बल्कि वे सरकशी पर और बिदकने पर अड़ गए हैं.

22 क्या जो शख़्स औंधे मुँह चल रहा है वह ज़्यादा सही राह पाने वाला है या वह शख़्स जो सीधा एक सीधी राह पर चल रहा है. 23 कहो कि वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल बनाए. तुम लोग बहुत कम शुक्र अदा करते हो. 24 कहो कि वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और तुम उसी की तरफ़ इकट्ठा किए जाओगे.

25 और वे कहते हैं कि (क़यामत का) वादा कब (पूरा) होगा अगर तुम सच्चे हो. 26 कहो कि यह इल्म अल्लाह के पास है और मैं सिर्फ़ खुला हुआ डराने वाला हूँ. 27 पस जब वे उसे क़रीब आता हुआ देखेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएँगे जिन्होंने इन्कार किया, और कहा जाएगा कि यही है वह चीज़ जिसे तुम माँगा करते थे. 28 कहो कि अगर अल्लाह मुझे हलाक कर दे और उन लोगों को जो मेरे साथ हैं, या हम पर रहम फ़रमाए, (लेकिन आख़िरत में) मुन्किरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा. 29 कहो, वह रहमान है, हम उसपर ईमान लाए और उसी पर हमने भरोसा किया. पस अनक़रीब तुम जान लोगे कि खुली हुई गुमराही में कौन है. 30 कहो कि बताओ, अगर तुम्हारा पानी नीचे उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए साफ़ पानी ले आए.

सूरह–68. अल–क़लम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 नून०. क़सम है क़लम की और जो कुछ लोग लिखते हैं. 2 तुम अपने रब के फ़ज़्ल से दीवाने नहीं हो. 3 और बेशक तुम्हारे लिए अज्र (प्रतिफल) है कभी ख़त्म न होने वाला. 4 और बेशक तुम एक आला अख़लाक़ (सच्चरित्रता एवं सदाचार) पर हो. 5 पस अनक़रीब तुम देखोगे और वे भी देखेंगे, 6 कि तुम में से किसे जुनून था. 7 तुम्हारा रब ही उसे ख़ूब जानता है, जो उसकी राह से भटका हुआ है, और वह राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जानता है.

8 पस तुम इन झुठलाने वालों का कहना न मानो. 9 वे चाहते हैं कि तुम नर्म पड़ जाओ तो वे भी नर्म पड़ जाएँ.

10 और तुम ऐसे शख़्स का कहना न मानो जो बहुत क़समें खाने वाला हो, बेवक़्अत (घटिया, तुच्छ) हो, 11 ताना देने वाला हो, चुग़ली लगाता फिरता हो, 12 नेक काम से रोकने वाला हो, हद से गुज़र जाने वाला हो, हक़ मारने वाला हो, 13 संगदिल हो, साथ ही बेनसब (नीच जन्मा–baseborn) हो. 14 उसके (सरकशी का) सबब यह है कि वह माल व औलाद वाला है.

15 जब उसे हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं.

नोटः– क़ुरआन के इस बयान से मालूम होता है कि बुरे से बुरे इन्सान तक भी दाई को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा देना है. फिर उसका रिस्पॉन्स चाहे जो भी हो अल्लाह तआला उसके रिस्पॉन्स के मुताबिक़ उसके बारे में फ़ैसला करेगा, लेकिन दाई को अपने ज़िम्मे का काम हर हाल में करना है.

16 अनक़रीब हम उसकी नाक पर दाग़ लगाएंगे.

17 हमने उन्हें आज़माइश (परीक्षा) में डाला है जिस तरह हमने बाग़ वालों को आज़माइश में डाला था. जबकि उन्होंने क़सम खाई कि वे सुबह सवेरे ज़रूर उसका फल तोड़ लेंगे. 18 और उन्होंने इंशाअल्लाह नहीं कहा. 19 पस उस बाग़ पर तेरे रब की तरफ़ से एक फिरने वाली (आफ़त) फिर गई और वे सो रहे थे. 20 फिर सुबह को वह ऐसा रह गया जैसे कटी हुई फ़सल. 21 पस सुबह को उन्होंने एक दूसरे को पुकारा 22 कि अपने खेत पर सवेरे चलो अगर तुम्हें फल तोड़ना है. 23 फिर वे चल पड़े और वे आपस में चुपके–चुपके कह रहे थे. 24 कि आज कोई मोहताज तुम्हारे बाग़ में न आने पाए. 25 और वे अपने को न देने पर क़ादिर समझ कर, सुबह सवेरे चल पड़े. 26 फिर जब बाग़ को देखा तो कहा कि हम रास्ता भूल गए. 27 बल्कि हम महरूम (वंचित) हो गए. 28 उनमें जो बेहतर आदमी था उसने कहा, मैंने तुम से नहीं कहा था कि तुम लोग तस्बीह क्यों नहीं करते. 29 उन्होंने कहा कि हमारा रब पाक है. बेशक हम ज़ालिम थे. 30 फिर वे आपस में एक दूसरे को इल्ज़ाम देने लगे. 31 उन्होंने कहा, अफ़सोस है हम पर, बेशक हम हद से निकलने वाले लोग थे. 32 शायद हमारा रब हमें इससे अच्छा बाग़ इसके बदले में दे दे, हम उसी की तरफ़ रुजूअ होते हैं. 33 इसी तरह आता है अज़ाब, और आख़िरत का अज़ाब इससे भी बड़ा है, काश ये लोग जानते.

34 बेशक डरने वालों के लिए उनके रब के पास नेमत के बाग़ हैं. 35 क्या हम फ़रमांबरदारों (आज्ञाकारियों) को नाफ़रमानों के बराबर कर देंगे. 36 तुम्हें क्या हुआ, तुम कैसा फ़ैसला करते हो. 37 क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो. 38 उसमें तुम्हारे लिए वह है जिसे

तुम पसंद करते हो? 39 या फिर क्या तुम्हारे लिए हमारे ऊपर क़समें हैं क़यामत तक बाक़ी रहने वाली कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फ़ैसला करो. 40 उनसे पूछो कि उनमें से कौन इसका ज़िम्मेदार है. 41 क्या उनके कुछ शरीक हैं, तो वे अपने शरीकों को लाएँ अगर वे सच्चे हैं.

42 जिस दिन हक़ीक़त से पर्दा उठाया जाएगा और लोग सज्दे के लिए बुलाए जाएँगे तो (मुन्किरीन सज्दा) न कर सकेंगे. 43 उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, उनपर ज़िल्लत छाई होगी, और वे सज्दे के लिए बुलाए जाते थे और सही सालिम थे. 44 पस छोड़ो मुझे और उन्हें जो इस कलाम को झुठलाते हैं, हम उन्हें आहिस्ता—आहिस्ता ला रहे हैं जहाँ से वे नहीं जानते. 45 और मैं उन्हें मोहलत दे रहा हूँ, बेशक मेरी तदबीर मज़बूत है.

46 **क्या तुम उनसे मुआवज़ा माँगते हो कि वे उसके तावान से दबे जा रहे हैं.** 47 **या उनके पास ग़ैब है, कि वे लिख रहे हैं.** 48 **पस अपने रब के फ़ैसले तक सब्र करो और मछली वाले (यूनुस) की तरह न बन जाओ, जब उसने पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था.**

नोटः– आयत 46 में उन लोगों का ज़िक्र हो रहा है जो रसूलुल्लाह (स. अ.) की दावत को तावान की तरह बोझ महसूस कर रहे हैं, लेकिन ख़ुदा यहां पैग़ंबर से कह रहा है कि अपने रब के फ़ैसले तक सब्र के साथ दावत का काम अंजाम देते रहो. और मछली वाले की तरह (यानी हज़रत यूनुस (अ.) की तरह) न हो जाना. यह बात सिर्फ़ रसूलुल्लाह (स.अ.) के लिए नहीं है, बल्कि आपकी उम्मत के लिए भी है, क्योंकि आपके बाद आपका दावती मिशन आपके उम्मत को ही चलाना है.

हज़रत यूनुस (अ.) तकमीले–दावत से पहले अपनी क़ौम से गुस्सा होकर क़ौम से दूर चले गए. तो ख़ुदा के हुक्म से उन्हें मछली ने निगल लिया. आज उम्मते–मुस्लिमा मछली के पेट में यानी मसाएल के पेट में है, क्योंकि उन्होंने उस ज़िम्मेदारी को छोड़ रखा है जो अल्लाह ने उन पर आयद की है. उम्मते–मुस्लिमा के लिए मसाएल से बाहर आने की वाहिद सूरत यह है कि उन्हें दावत की तरफ़ वापस आना होगा. वरना वे न दुनिया में ख़ुदा की नुसरत पाएंगे और ना आख़िरत में नजात.

49 अगर उसके रब की मेहरबानी उसपर न होती तो वह मज़्मूम (निंदित) होकर चटयल मैदान में फेंक दिया जाता. 50 फिर उसके रब ने उसे नवाज़ा, पस उसे नेकों में शामिल कर दिया.

51 **और ये मुन्किर लोग जब नसीहत को सुनते हैं तो इस तरह तुम्हें देखते हैं गोया अपनी निगाहों से तुम्हें फिसला देंगे. और कहते हैं**

कि यह ज़रूर दीवाना है. 52 **और यह (क़ुरआन) आलम वालों के लिए सिर्फ़ एक नसीहत है.**

नोटः–

- आयत नं 51 से यह बात साफ़ वाज़ेह है कि दाई को लोगों के सामने अल्लाह का पैग़ाम सुनाना है, चाहे मदू का रिस्पॉन्स जो भी हो.
- दूसरी बात आयत नं 52 से यह वाज़ेह होती है कि क़ुरआन की हैसियत यह है कि वह सारे इन्सानों के लिए ख़ुदा की तरफ़ से एक नसीहतनामा है.

सूरह–69. अल–हाक़्क़ा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 वह होने वाली. 2 क्या है वह होनी वाली. 3 और तुम क्या जानो कि क्या है वह होने
वाली. 4 समूद और आद ने उस खड़खड़ाने वाली चीज़ को झुठलाया. 5 पस समूद, तो वे एक
सख़्त हादसे से हलाक कर दिए गए. 6 और आद, तो वे एक तेज़ व तुंद हवा से हलाक किए गए.
7 उसे अल्लाह ने सात रात और आठ दिन उनपर मुसल्लत रखा, पस तुम देखते हो कि वहाँ वे इस
तरह गिरे हुए पड़े हैं, गोया कि वे खजूरों के खोखले तने हों. 8 तो क्या तुम्हें उनमें से कोई बचा
हुआ नज़र आता है. 9 और फ़िरऔन और उससे पहले वालों ने और उलटी हुई बस्तियों ने जुर्म
किया. 10 उन्होंने अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी की तो अल्लाह ने उन्हें बहुत सख़्त पकड़ा. 11
और जब पानी हद से गुज़र गया तो हमने तुम्हें कश्ती में सवार कराया, 12 ताकि हम उसे तुम्हारे
लिए यादगार बना दें, और याद रखने वाले कान उसे याद रखें.

13 पस जब सूर में एकबारगी फूँक मारी जाएगी. 14 और ज़मीन और पहाड़ों को उठाकर
एक ही बार में रेज़ा–रेज़ा कर दिया जाएगा. 15 तो उस दिन वाक़ेअ (घटित) होने वाली वाक़ेअ हो
जाएगी. 16 और आसमान फट जाएगा तो वह उस रोज़ बिल्कुल बोदा होगा. 17 और फ़रिश्ते
उसके किनारों पर होंगे, और तेरे रब के अर्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाए होंगे.
18 उस दिन तुम पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई बात पोशीदा (छुपी) न होगी.

19 पस जिस शख़्स को उसका आमालनामा (कर्म–पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा तो
वह कहेगा कि लो मेरा आमालनामा पढ़ लो. 20 मैंने गुमान रखा था कि मुझे मेरा हिसाब पेश आने

वाला है. 21 पस वह एक पसंदीदा ऐश में होगा. 22 ऊंचे बाग़ में 23 उसके फल झुके पड़ रहे होंगे. 24 खाओ और पियो मज़े के साथ, उन आमाल के बदले में जो तुमने गुज़रे दिनों में किए हैं.

25 **और जिस शख़्स का आमालनामा उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा, तो वह कहेगा काश मेरा आमालनामा मुझे न दिया जाता.** 26 **और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है.** 27 **काश वही मौत फ़ैसलाकुन होती (यानी दुनिया में मुझे जो मौत आयी थी, काश! वह मुझे हमेशा के लिए ख़त्म कर देती).** 28

मेरा माल मेरे काम न आया.

29 **मेरा इक़्तेदार (सत्ता–अधिकार) ख़त्म हो गया.**

30 इस शख़्स को पकड़ो, फिर इसे तौक़ पहनाओ. 31 फिर इसे जहन्नम में दाख़िल कर दो. 32 फिर एक ज़ंजीर में जिसकी पैमाइश सत्तर हाथ है इसे जकड़ दो. 33 यह शख़्स ख़ुदाए–अज़ीम पर ईमान नहीं रखता था. 34 और वह ग़रीबों को खाना खिलाने पर नहीं उभारता था. 35 पस आज यहाँ इसका कोई हमदर्द नहीं. 36 और ज़ख़्मों के धोवन के सिवा उसके लिए कोई खाना नहीं. 37 उसे गुनाहगारों के सिवा कोई और नहीं खाएगा.

38 पस नहीं, मैं क़सम खाता हूँ उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो, 39 और जिन्हें तुम नहीं देखते हो. 40 बेशक यह एक बाइज़्ज़त रसूल का कलाम है. 41 और वह किसी शायर का कलाम नहीं. तुम बहुत कम ईमान लाते हो. 42 और यह किसी काहिन (भविष्यवक्ता) का कलाम नहीं, तुम बहुत कम ग़ौर करते हो. 43 ख़ुदावंदे–आलम की तरफ़ से उतारा हुआ है. 44 और अगर वह कोई बात गढ़कर हमारे ऊपर लगाता 45 तो हम उसका दायाँ हाथ पकड़ते. 46 फिर हम उसकी रगे गर्दन काट देते. 47 फिर तुम में से कोई इससे हमें रोकने वाला न होता. 48 और बिलाशुबहा यह याददिहानी है डरने वालों के लिए. 49 और हम जानते हैं कि तुम में इसके झुठलाने वाले हैं 50 और वह मुन्किरों के लिए पछतावा है. 51 और यह यक़ीनी हक़ है. 52 पस तुम अपने अज़ीम रब के नाम की तस्बीह करो.

सूरह–70. अल–मआरिज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 माँगने वाले ने अज़ाब माँगा वाक़ेअ (घटित) होने वाला, 2 मुन्किरों के लिए कोई उसे

हटाने वाला नहीं. 3 अल्लाह की तरफ़ से जो सीढ़ियों का मालिक है. 4 उसकी तरफ़ फ़रिश्ते और जिब्रील चढ़कर जाते हैं, एक ऐसे दिन में जिसकी मिक़दार पचास हज़ार साल है. 5 पस तुम सब्र करो, भली तरह का सब्र. 6 वे उसे दूर देखते हैं, 7 और हम उसे क़रीब देख रहे हैं.

8 **जिस दिन आसमान तेल की तलछट की तरह हो जाएगा.** 9 **और पहाड़ धुनके हुए ऊन की तरह.** 10 **और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा.** 11 **वे उन्हें दिखाए जाएँगे. मुजरिम चाहेगा कि काश उस दिन के अज़ाब से बचने के लिए अपने बेटों** 12 **और अपनी बीवी और अपने भाई** 13 **और अपने कुंबे को जो उसे पनाह देने वाला था** 14 **और तमाम अहले–ज़मीन को फ़िदये (मुक्ति मुआवज़ा) में देकर अपने को बचा ले.**

नोटः– अल्लाहू–अकबर! कितना भयानक होगा आख़िरत का अज़ाब! दोस्त–दोस्त नहीं रहेगा. भाई–भाई को नहीं पूछेगा. कल तक बीवी बच्चों के लिए जीने वाला इंसान अपने बीवी बच्चों को पहचान ने से इन्कार कर देगा, चाहेगा कि वह किसी तरह अज़ाब से बच जाए, फिर उसके एवज़ में सारे इंसानों को ही क्यों न जहन्नम में डाल दिया जाए.

इंसान का सबसे बड़ा मसला, यही मसला है जिसके बारे में ख़ुदा वह वक़्त आने से पहले उससे आगाह कर रहा है. यही आगाही का पैग़ाम दाई को सारे इंसानों तक पहुँचाना है.

15 हरगिज़ नहीं. वह तो भड़कती हुई आग की लपट होगी 16 जो खाल उतार देगी. 17 वह हर उस शख़्स को बुलाएगी जिसने पीठ फेरी और एराज़ (उपेक्षा) किया.

18 **(माल) जमा किया और (अपने पास) बंद कर रखा.**

नोटः– ज़मीन और आसमान में जो कुछ है वह सब अल्लाह का है. दुनिया में इंसान को इम्तिहान के लिए माल दिया गया है. इंसान की बेहतरी इसमें है कि उसे मिले हुए माल में से वह अपनी ज़रूरत के उतना ले ले और उससे ज़ायद माल ख़ुदा के मिशन में लौटा दे, ऐसा करने में ही इंसान की बेहतरी है.

19 बेशक इंसान कम हिम्मत पैदा हुआ है. 20 जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो वह घबरा उठता है. 21 और जब उसे फ़ारिग़ुलबाली (सम्पन्नता) होती है तो वह बुख़्ल (कंजूसी) करने लगता है. 22 मगर वे नमाज़ी 23 जो अपनी नमाज़ की पाबंदी करते हैं. 24 और जिनके मालों में

मुअय्यन हक़ (निर्धारित भाग) है 25 साइल (मांगने वाले) और महरूम (वंचित) का. 26 और जो इंसाफ़ के दिन पर यक़ीन रखते हैं. 27 और जो अपने रब के अज़ाब से डरते हैं. 28 बेशक उनके रब के अज़ाब से किसी को निडर नहीं होना चाहिए. 29 और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, 30 मगर अपनी बीवियों से या अपनी ममलूका (अधीन) औरतों से, पस इन पर उन्हें कोई मलामत नहीं, 31 फिर जो शख़्स इसके अलावा कुछ और चाहे तो वही लोग हद से तजावुज़ (उल्लंघन) करने वाले हैं. 32 और जो अपनी अमानतों और अपने अहदों को निभाते हैं. 33 और जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं. 34 और जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं. 35 यही लोग जन्नतों में इज़्ज़त के साथ होंगे.

36 फिर इन मुन्किरों को क्या हो गया है कि वे तुम्हारी तरफ़ दौड़े चले आ रहे हैं, 37 दाएँ से और बाएँ से, गिरोह दर गिरोह. 38 क्या उनमें से हर शख़्स यह लालच रखता है कि वह नेमत के बाग़ में दाख़िल कर लिया जाएगा. 39 हरगिज़ नहीं, हमने उन्हें पैदा किया है उस चीज़ से जिसे वे जानते हैं.

40 पस नहीं मैं क़सम खाता हूँ मशरिक़ों और मग़रिबों (सूर्योदय और सूर्यास्त के स्थानों) के रब की, हम इसपर क़ादिर हैं 41 कि बदल कर उनसे बेहतर ले आएं, और हम आजिज़ नहीं हैं. 42 पस उन्हें छोड़ दो कि वे बातें बनाएं और खेल करें. यहाँ तक कि अपने उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है. 43 जिस दिन क़ब्रों से निकल पड़ेंगे दौड़ते हुए. जैसे वे किसी निशाने की तरफ़ भाग रहे हों. 44 उनकी निगाहें झुकी होंगी. उनपर ज़िल्लत छाई होगी, यह है वह दिन जिसका उनसे वादा किया जा रहा था.

सूरह–71. नूह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा कि अपनी क़ौम के लोगों को ख़बरदार कर दो, इससे पहले कि उनपर एक दर्दनाक अज़ाब आ जाए. 2 उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम्हारे लिए एक खुला हुआ डराने वाला हूँ 3 कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो. 4 अल्लाह तुम्हारे गुनाहों से दरगुज़र करेगा और तुम्हें एक मुअय्यन वक़्त तक बाक़ी रखेगा. बेशक जब अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त आ जाता है तो फिर वह टाला नहीं जाता. काश कि तुम उसे जानते.

5 **नूह ने कहा कि**

ऐ मेरे रब! मैंने अपनी क़ौम को शब व रोज़ पुकारा.

6 **मगर मेरी पुकार ने उनकी दूरी ही में इज़ाफ़ा किया.** 7 **और मैंने जब भी उन्हें बुलाया कि तू उन्हें माफ़ कर दे तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ डाल लीं और अपने ऊपर अपने कपड़े लपेट लिए और ज़िद पर अड़ गए और बड़ा घमंड किया.** 8 **फिर मैंने उन्हें एलानिया पुकारा.** 9 **फिर मैंने उन्हें खुली तब्लीग़ की और उन्हें चुपके से समझाया.**

नोटः– इससे वाज़ेह होता है कि ख़ुदा का पैग़ंबर रात दिन किस काम में मसरूफ़ रहता है. वह रात दिन किन फ़िकरों में जीता है. वह काम दावत का काम है, वह फ़िकरें इंसानों की हक़ीक़ी ख़ैरख़ाही की फ़िकरें हैं. ना कि कम्यूनिटि–वर्क, ना सोशल–वर्क, ना मिल्ली–वर्क.........

यह मामला सिर्फ़ हज़रत नूह (अ.स.) का नहीं है. बल्कि यही सारे पैग़ंबरों का मामला रहा है. इसी तरह मुहम्मद (स.अ.) के बारे में क़ुरआन में कई जगह इरशाद हुआ है कि **'शायद तुम अपने को हलाक कर डालोगे इसपर कि वे ईमान नहीं लाते'** इससे वाज़ेह है कि पैग़ंबर लोगों की हिदायत के लिए किस तरह तड़पता है?

दुनिया में ज़रूरतमन्द की मदद करना एक मतलूब और बाएसे–अजर काम है, लेकिन वह दाई का मिशन नहीं हो सकता. इसलिए क़ुरआन में जिन दाइयों का ज़िक्र है उन सबका वाहिद मिशन सिर्फ़ दावत था.

कम्यूनिटि–वर्क या सोशल–वर्क को अपने ज़िंदगी का मिशन बनाना ख़ुदा के तख़्लिक़ी मंसूबे के ऐन ख़िलाफ़ है. क्योंकि ख़ुदा के मंसूबे के मुताबिक़ इस इम्तिहानी दुनिया में problems हमेशा रहेंगे. Problem-free ज़िंदगी सिर्फ़ आख़िरत में मुमकिन है.

अब चूंकि पैग़ंबर आने वाले नहीं हैं, ऐसी सूरत में पैग़ंबर का सच्चा पैरोकार (follower) कौन हो सकता है? वही इंसान पैग़ंबर का सच्चा पैरोकार है जो पैग़ंबर वाला काम अंजाम दे.

10 मैंने कहा कि अपने रब से माफ़ी माँगो, बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला है. 11 वह तुम पर आसमान से ख़ूब बारिश बरसाएगा 12 और तुम्हारे माल और औलाद में तुम्हें तरक़्क़ी देगा.

और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा. और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा. 13 तुम्हें क्या हो गया है कि तुम्हें अल्लाह की अज़मत (महानता) का एहसास नहीं होता. 14 हालाँकि उसने तुम्हें तरह–तरह से बनाया. 15 क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस तरह सात आसमान तह–ब–तह (एक के ऊपर एक) बनाए. 16 और उनमें चांद को नूर और सूरज को चिराग़ बनाया. 17 और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से ख़ास एहतमाम से उगाया (यानी मिट्टी से तुम्हें पैदा किया). 18 फिर वह तुम्हें ज़मीन में (यानी मिट्टी में) वापस ले जाएगा. और फिर उससे तुम्हें बाहर निकालेगा. 19 और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को हमवार (समतल) बनाया 20 ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो.

21 नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब! उन्होंने मेरा कहा न माना और ऐसे आदमियों की पैरवी की जिनके माल और औलाद ने उनके घाटे ही में इज़ाफ़ा किया. 22 और उन्होंने बड़ी तदबीरें कीं. 23 और उन्होंने कहा कि तुम अपने माबूदों (पूज्यों) को हरगिज़ न छोड़ना. और तुम हरगिज़ न छोड़ना *वद* को और *सुवाअ* को और *यग़ूस* को और *यऊक़* और *नस्र* को (यह उनके माबूदों के नाम थे). 24 उन्होंने बहुत लोगों को बहका दिया. और अब तू उन गुमराहों की गुमराही में ही इज़ाफ़ा कर.

25 **अपने गुनाहों के सबब से वे ग़र्क़ किए गए. फिर वे आग में दाख़िल कर दिए गए. पस उन्होंने अपने लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार न पाया**.

नोटः– अल्लाह जिसकी पकड़ करे, उसे अल्लाह से छुड़ा सके ऐसा कोई नहीं. अल्लाह की पकड़ से बचने का वाहिद रास्ता यही है कि आदमी सच्चे मानों में अल्लाह का बंदा बन जाए.

26 और नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब! तू इन मुन्किरों में से कोई ज़मीन पर बसने वाला न छोड़. 27 अगर तूने इन्हें छोड़ दिया तो ये तेरे बंदों को गुमराह करेंगे और उनकी नस्ल से जो भी पैदा होगा बदकार और सख़्त मुन्किर ही होगा. 28 ऐ मेरे रब! मेरी मग़्फ़िरत (माफ़ी) फ़रमा. और मेरे माँ बाप की मग़्फ़िरत फ़रमा. और जो मेरे घर में मोमिन होकर दाख़िल हो तू उसकी मग़्फ़िरत फ़रमा. और सब मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को माफ़ फ़रमा दे और ज़ालिमों के लिए हलाकत (नाश) के सिवा किसी चीज़ में इज़ाफ़ा न कर.

सूरह–72. अल–जिन्न

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 **कहो कि मुझे 'वही' की गई है (यानी अल्लाह ने मेरे पास यह संदेश भेजा है) कि जिन्नात की एक जमात ने क़ुरआन सुना तो उन्होंने कहा कि**

हमने एक अजीब क़ुरआन सुना है

2 **जो हिदायत की राह बताता है** **तो हम उसपर ईमान लाए और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक न बनाएंगे.**

नोटः– क़ुरआन असलन नसीहत के लिए है इसीलिए जिन्न से मुतआल्लिक़ वाक़या हो या तारीख़े–इन्सानी के मुख़्तलिफ़ वाक़यात हों, सब सबक़ व नसीहत के मक़सद से क़ुरआन में आए हैं.

क़ुरआन किताबे–हिदायत है, लेकिन वह किताबे–हिदायत दावत के बाद ही अमलन किताबे–हिदायत बनेगा. अगरचे क़ुरआन असलन हुदल्लीन्नास है और वह इंसान पर नाज़िल हुआ है, लेकिन जिन्नों की एक जमात को क़ुरआन सुनने का मौक़ा मिला तो क़ुरआन उनके लिए भी किताबे–हिदायत बन गया. इसकी सादा वजह क़ुरआन जिन्न व इंसान और तमाम मख़्लूक़ात के ख़ालिक़ की किताब है.

मौजूदा दुनिया में 750 करोड़ इंसान आबाद हैं, उनमें कितने ऐसे लोग होंगे जिनके पास क़ुरआन आए तो उनके लिए अमलन वह किताबे–हिदायत बन जाए. उन हक़ के तालिब इंसानों तक पहुँचने के लिए उमूमी दावत का काम अंजाम देना बहुत ज़रूरी है.

3 और यह कि हमारे रब की शान बहुत बुलंद है. उसने न कोई बीवी बनाई है और न
औलाद. 4 और यह कि हमारे नादान लोग अल्लाह के बारे में बहुत ख़िलाफ़े–हक़ बातें कहते थे.
5 और हमने गुमान किया था कि इंसान और जिन्न ख़ुदा की शान में कभी झूठ बात नहीं कहेंगे. 6
और यह कि इंसानों में कुछ ऐसे थे जो जिन्नात में से कुछ की पनाह लेते थे, तो उन्होंने जिन्नों का
ग़ुरूर (अभिमान) और बढ़ा दिया. 7 और यह कि उन्होंने भी गुमान किया जैसा तुम्हारा गुमान था
कि अल्लाह किसी को न उठाएगा.

8 और हमने आसमान का जायज़ा लिया तो हमने पाया कि वह सख़्त पहरेदारों और शोलों

से भरा हुआ है. 9 और हम उसके कुछ ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे, सो अब जो कोई सुनना चाहता है तो वह अपने लिए एक तैयार शोला पाता है. 10 और हम नहीं जानते कि यह ज़मीन वालों के लिए कोई बुराई चाही गई है या उनके रब ने उनके साथ भलाई का इरादा किया है. 11 और यह कि हम में कुछ नेक हैं और कुछ और तरह के. हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर हैं. 12 और यह कि हमने समझ लिया कि हम ज़मीन में अल्लाह को हरा नहीं सकते. और न भाग कर उसे हरा सकते हैं. 13 और यह कि हमने जब हिदायत की बात सुनी तो हम उसपर ईमान लाए, पस जो शख़्स अपने रब पर ईमान लाएगा तो उसे न किसी कमी का अंदेशा होगा और न ज़्यादती का. 14 और यह कि हम में कुछ फ़रमांबरदार (आज्ञाकारी) हैं और हम में कुछ बेराह हैं, पस जिसने फ़रमांबरदारी की तो उन्होंने भलाई का रास्ता ढूंढ लिया. 15 और जो लोग बेराह हैं तो वे दोज़ख़ के ईंधन होंगे.

16 और मुझे 'वही' की गई है (यानी मेरी तरफ़ यह ईश–संदेश भेजा गया है) कि ये लोग अगर रास्ते पर क़ायम हो जाते तो हम उन्हें ख़ूब सैराब (तृप्त) करते. 17 ताकि उसमें उन्हें आज़माएं, और जो शख़्स अपने रब की याद से एराज़ (उपेक्षा) करेगा तो वह उसे सख़्त अज़ाब में मुब्तिला करेगा. 18 और यह कि मसजिदें अल्लाह के लिए हैं पस तुम अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो. 19 और यह कि जब अल्लाह का बंदा उसे पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो लोग उसपर टूट पड़ने के लिए तैयार हो गए. 20 कहो कि मैं सिर्फ़ अपने रब को पुकारता हूँ और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता.

21 **कहो कि मैं तुम लोगों के लिए न किसी नुक़सान का इख़्तियार रखता हूँ और न किसी भलाई का.** 22 **कहो कि मुझे अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता. और न मैं उसके सिवा कोई पनाह पा सकता हूँ.**

23 **पस अल्लाह की तरफ़ से पहुँचा देना और उसके पैग़ामों की अदायगी है** और **जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करेगा तो उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वे हमेशा रहेंगे.**

नोटः– दाई का काम अल्लाह के पैग़ामात को पहुँचाना है, जबकि मदू का काम यह है कि वह या तो फ़रमांबरदारी इख़्तियार करे या नाफ़रमानी करे.

24 **यहाँ तक कि जब वे देखेंगे उस चीज़ को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो वे जान लेंगे कि किसके मददगार कमज़ोर हैं और कौन तादाद में कम है.** 25 **कहो कि मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुम से वादा किया जा रहा है वह क़रीब है या मेरे रब ने उसके लिए लम्बी मुद्दत मुक़र्रर कर रखी है.** 26 **ग़ैब का जानने वाला वही है. वह अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता (यानी ग़ैब किसी पर प्रकट नहीं करता).** 27 **सिवा उस रसूल के जिसे उसने पसंद किया हो, तो वह उसके आगे और पीछे मुहाफ़िज़ लगा देता है.**

28 **ताकि अल्लाह यह देख ले कि उन्होंने अपने रब के पैग़ामात पहुँचा दिए हैं और वह उनके माहौल का इहाता किए हुए है (घेरे हुए है) और उसने हर चीज़ को गिन रखा है.**

नोटः– क़ुरआन के इस बयान से पता चलता है कि अल्लाह का यह concern है कि अल्लाह के पैग़ाम को लोगों तक पहुँचा दिया जाए.

इससे यह पता चलता है कि अल्लाह का पैग़ाम बंदों तक पहुँचाना कितना नागुज़ीर है.

सूरह–73. अल–मुज़्ज़म्मिल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ऐ कपड़े में लिपटने वाले! 2 रात में क़याम करो (यानी नमाज़ के लिए खड़े हो जाओ),
मगर थोड़ा हिस्सा. 3 आधी रात या उससे कुछ कम कर दो. 4 या उससे कुछ बढ़ा दो, और
क़ुरआन को ठहर–ठहर कर पढ़ो. 5 हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं.

6 बेशक रात का उठना (नफ़्स को) सख़्त रौंदने वाला है, (यानी मन को क़ाबू करने के लिए
बहुत प्रभावकारी है) और बात ठीक निकलती है. 7 बेशक तुम्हें दिन में बहुत काम रहता है. 8
और अपने रब का नाम याद करो और उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ सबसे अलग होकर. 9
वह मशरिक़ (पूर्व) और मग़रिब (पश्चिम) का मालिक है, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य–प्रभु)
नहीं, पस तुम उसे अपना कारसाज़ बना लो. 10 और लोग जो कुछ कहते हैं उसपर सब्र करो.
और भली तरह उनसे अलग हो जाओ

11 **और झुठलाने वाले ख़ुशहाल लोगों का मामला मुझ पर छोड़ दो और उन्हें थोड़ी ढील दे दो.**

नोटः– दुनिया के अच्छे हालात अकसर इन्सान को सरकश बना देते हैं. यहाँ ख़ुदा कह रहा है कि **तुमने उन तक पैग़ाम पहुँचा दिया है जिसे वे झुठला रहे हैं, अब उनका मामला मुझ पर छोड़ दो.** दाई का काम पैग़ाम पहुँचाना है फिर बक़या सारे मामलात ख़ुदा पर छोड़ देना है.

12 हमारे पास बेड़ियाँ हैं और दोज़ख़ है. 13 और गले में फंस जाने वाला खाना है और
दर्दनाक अज़ाब है. 14 जिस दिन ज़मीन और पहाड़ हिलने लगेंगे और पहाड़ रेत के फिसलते हुए तोदे (ढेर) हो जाएँगे.

15 हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजा है, तुम पर गवाह बनाकर, जिस तरह हमने फ़िरऔन
की तरफ़ एक रसूल भेजा. 16 फिर फ़िरऔन ने रसूल का कहा न माना तो हमने उसे पकड़ा सख़्त
पकड़ना. 17 पस अगर तुमने इन्कार किया तो तुम उस दिन के अज़ाब से कैसे बचोगे जो बच्चों को
बूढ़ा कर देगा 18 जिसमें आसमान फट जाएगा, बेशक उसका वादा पूरा होकर रहेगा. 19 **यह
(क़ुरआन) एक नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह इख़्तियार कर ले.**

20 बेशक तुम्हारा रब जानता है कि तुम (कभी) दो तिहाई रात के क़रीब या (कभी) आधी रात या (कभी) एक तिहाई रात क़याम करते हो (यानी नमाज़ में अपने रब के सामने खड़े रहते हो), और एक गिरोह तुम्हारे साथियों में से भी. और अल्लाह ही रात और दिन का हिसाब ठहराता है, उसने जाना कि तुम उसे पूरा न कर सकोगे पस उसने तुम पर मेहरबानी फ़रमाई, अब कुरआन से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, उसने जाना कि तुम में बीमार होंगे और कितने लोग अल्लाह के फ़ज़्ल की तलाश में ज़मीन में सफ़र करेंगे. और दूसरे ऐसे लोग भी होंगे जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस उसमें से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह को क़र्ज़ दो अच्छा क़र्ज़. **और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहाँ मौजूद पाओगे,** वह बेहतर है और सवाब में ज़्यादा, और अल्लाह से माफ़ी माँगो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है.

सूरह–74. अल–मुद्दस्सिर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ऐ कपड़े में लिपटने वाले! 2 **उठो और लोगों को डराओ.**
3 और अपने रब की बड़ाई बयान करो. 4 और अपने कपड़े को पाक रखो. 5 और
गंदगी को छोड़ दो. 6 और ऐसा न करो कि एहसान करो और बहुत बदला चाहो
7 **और अपने रब के लिए सब्र करो.**

नोटः–

- आयत नं 2 से यह बात वाज़ेह होती है कि ख़ुदा के नज़दीक इंसान का सबसे बड़ा मसला आख़िरत का मसला है. इसी सबसे बड़े मसले से आगाह करने के लिए पैग़ंबर आते रहे. लेकिन यह काम कोई वक़्ती काम नहीं है, यह काम क़यामत तक मतलूब है. पैग़म्बरों का आना बंद हो गया, लेकिन इन्सानों का आना क़यामत तक जारी है. इस सुरतेहाल का तक़ाज़ा है कि यह इन्ज़ार वाला काम (यानी आगाही का काम) क़ुरआन के मानने वालों को करना है.
- आयत नं 7 से यह बात वाज़ेह होती है कि दाई को दावत का काम अंजाम देना है और मदू की तरफ़ से होने वाली इज़ा–रसानी पर सब्र करना है. इससे दावत और सब्र के बाहम ताल्लुक़ का पता चलता है.

8 फिर जब सूर फूंका जाएगा 9 तो वह बड़ा सख़्त दिन होगा. 10 हक़ का इन्कार करने वालों
पर आसान न होगा. 11 छोड़ दो मुझे और उस शख़्स को जिसे मैंने पैदा किया अकेला. 12 और
उसे बहुत सा माल दिया 13 और पास रहने वाले बेटे. 14 और सब तरह का सामान उसके लिए
मुहय्या कर दिया. 15 फिर वह तमअ (लालच) रखता है कि मैं उसे और ज़्यादा दूँ. 16 हरगिज़ नहीं,
वह हमारी आयतों का मुख़ालिफ़ (विरोधी) है. 17 अनक़रीब मैं उसे एक सख़्त चढ़ाई चढ़ाऊँगा.

18 उसने सोचा और बात बनाई. 19 पस वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई. 20 फिर
वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई, 21 फिर उसने देखा. 22 फिर उसने त्योरी चढ़ाई और मुँह
बनाया. 23 फिर पीठ फेरी और तकब्बुर (घमंड) किया. 24 फिर बोला यह तो महज़ एक जादू है
जो पहले से चला आ रहा है. 25 यह तो बस आदमी का कलाम है.

26 मैं उसे अनक़रीब दोज़ख़ में दाख़िल करूँगा. 27 और तुम क्या जानो कि क्या है दोज़ख़.
28 न बाक़ी रहने देगी और न छोड़ेगी. 29 खाल झुलसा देने वाली. 30 उसपर उन्नीस फ़रिश्ते हैं.

31 और हमने दोज़ख़ के कारकुन सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए हैं. और हमने उनकी जो गिनती रखी है वह सिर्फ़ मुन्किरों को जांचने के लिए, ताकि यक़ीन हासिल करें वे लोग जिन्हें किताब अता हुई. और ईमान वाले अपने ईमान को बढ़ाएँ और अहले–किताब (पूर्ववर्ती ग्रंथों के धारक) और मोमिनीन शक न करें, और ताकि जिन लोगों के दिलों में मरज़ है और मुन्किर लोग कहें कि इससे अल्लाह की क्या मुराद है. इस तरह अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहता है और हिदायत देता है जिसे चाहता है, और तेरे रब के लश्कर को सिर्फ़ वही जानता है, और यह तो सिर्फ़ समझाना है लोगों के वास्ते.

32 हरगिज़ नहीं, क़सम है चांद की. 33 और रात की, जबकि वह जाने लगे. 34 और
सुबह की जब वह रोशन हो जाए, 35 वह दोज़ख़ बड़ी चीज़ों में से है, 36 इंसान के लिए डरावा,
37 उनके लिए जो तुम में से आगे की तरफ़ बढ़े या पीछे की तरफ़ हटे. 38 हर शख़्स अपने
आमाल के बदले में रहन (गिरवी) है, 39 दाएं वालों के सिवा, 40 वे बाग़ों में होंगे, पूछते होंगे,
41 मुजरिमों से, 42 तुम्हें क्या चीज़ दोज़ख़ में ले गई. 43 वे कहेंगे, हम नमाज़ पढ़ने वालों में से
न थे. 44 और हम ग़रीबों को खाना नहीं खिलाते थे. 45 और हम बहस करने वालों के साथ
बहस करते थे. 46 और हम इंसाफ़ के दिन को झुठलाते थे, 47 यहाँ तक कि वह यक़ीनी बात हम
पर आ गई 48 तो उन्हें शफ़ाअत करने वालों की शफ़ाअत (सिफ़ारिश) कुछ फ़ायदा न देगी.

49 फिर उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से रूगर्दानी (अवहेलना) करते हैं. 50 गोया कि
वे वहशी गधे हैं 51 जो शेर से भागे जा रहे हैं. 52 बल्कि उनमें से हर शख़्स यह चाहता है कि उसे
खुली हुई किताबें दी जाएँ. 53 हरगिज़ नहीं, बल्कि ये लोग आख़िरत (में सामने आने वाले
अंजाम) से नहीं डरते. 54 हरगिज़ नहीं, यह तो एक नसीहत है. 55 पस जिसका जी चाहे, इससे
नसीहत हासिल करे. 56 और वे इससे नसीहत हासिल नहीं करेंगे, मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही
है जिससे डरना चाहिए और वही है बख़्शने के लायक़.

सूरह–75. अल–क़ियामह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 नहीं, मैं क़सम खाता हूँ क़यामत के दिन की. 2 और नहीं, मैं क़सम खाता हूँ मलामत
करने वाले नफ़्स की. 3 क्या इंसान ख़याल करता है कि हम उसकी हड्डियों को जमा नहीं करेंगे. 4
क्यों नहीं, हम इसपर क़ादिर हैं कि उसकी उंगलियों की पोर–पोर तक दुरुस्त कर दें. 5 बल्कि
इंसान चाहता है कि ढिठाई करे उसके सामने. 6 वह पूछता है कि क़यामत का दिन कब आएगा. 7
पस जब आँखें ख़ीरह हो जाएँगी (चौंधिया जाएँगी). 8 और चांद बेनूर हो जाएगा. 9 और सूरज
और चांद इकट्ठा कर दिए जाएँगे. 10 **उस दिन इंसान कहेगा कि कहाँ भागूँ.**

11 हरगिज़ नहीं, कहीं पनाह नहीं. 12 उस दिन तेरे रब ही के पास ठिकाना है. 13 उस दिन इंसान को बताया जाएगा कि उसने क्या आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा. 14 बल्कि इंसान ख़ुद अपने आपको जानता है, 15 चाहे वह कितने ही बहाने पेश करे.

16 तुम उसके पढ़ने पर अपनी ज़बान न चलाओ, ताकि तुम उसे जल्दी सीख लो. 17 हमारे ऊपर है उसे जमा करना और उसे सुनाना. 18 पस जब हम उसे सुनाएं तो तुम उस सुनाने की पैरवी करो. 19 फिर हमारे ऊपर है उसे बयान कर देना.

20 हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम चाहते हो जो जल्द आए. 21 और तुम छोड़ते हो जो देर में आए (यानी तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो और आख़िरत को छोड़ देते हो). 22 कुछ चेहरे उस दिन बारौनक़ होंगे. 23 अपने रब की तरफ़ देख रहे होंगे. 24 और कुछ चेहरे उस दिन उदास होंगे. 25 गुमान कर रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जाएगा. 26 हरगिज़ नहीं, जब जान हलक़ तक पहुँच जाएगी. 27 और कहा जाएगा कि कौन है झाड़ फूँक करने वाला. 28 और वह गुमान करेगा कि यह जुदाई का वक़्त है. 29 और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी. 30 वह दिन होगा तेरे रब की तरफ़ जाने का.

31 तो उसने न सच माना और न नमाज़ पढ़ी. 32 बल्कि झुठलाया और मुँह मोड़ा. 33 फिर अकड़ता हुआ अपने लोगों की तरफ़ चला गया. 34 अफ़सोस है तुझ पर, अफ़सोस है. 35 फिर अफ़सोस है तुझ पर, अफ़सोस है. 36 क्या इंसान ख़याल करता है कि वह बस यूँ ही छोड़ दिया जाएगा. 37 क्या वह टपकाई हुई मनी (वीर्य) की एक बूंद न था. 38 फिर वह अलक़ा (जोंक की तरह) हो गया, फिर अल्लाह ने बनाया, फिर (उसके) आज़ा (शरीरांग) दुरुस्त किए. 39 फिर उसकी दो क़िस्में कर दीं, मर्द और औरत. 40 क्या वह इसपर क़ादिर नहीं कि मुरदों को ज़िंदा कर दे.

सूरह–76. अद–दह्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 इंसान पर ज़माने में एक वक़्त गुज़रा है कि वह कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न था. 2 हमने इंसान को एक मख़्लूत (मिश्रित) बूंद से पैदा किया, हम उसे पलटते रहे. फिर हमने उसे सुनने वाला, देखने वाला बना दिया. 3 हमने उसे राह समझाई, चाहे वह शुक्र करने वाला बने या इन्कार करने वाला.

4 हमने मुन्किरों के लिए ज़ंजीरें और तौक़ और भड़कती आग तैयार कर रखी है. 5 नेक लोग ऐसे प्याले से पियेंगे जिसमें काफ़ूर की आमेज़िश (मिश्रण) होगी. 6 उस चशमे (स्रोत) से

अल्लाह के बंदे पियेंगे. वे उसकी शाख़ें निकालेंगे. 7 वे लोग वाजिबात (दायित्वों) को पूरा करते हैं और ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती आम होगी. 8 और उसकी मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को और यतीम को और क़ैदी को. 9 हम जो तुम्हें खिलाते हैं तो अल्लाह की ख़ुशी चाहने के लिए. हम न तुम से बदला चाहते और न शुक्रगुज़ारी. 10 हम अपने रब की तरफ़ से एक सख़्त और तल्ख़ (ख़ौफ़नाक) दिन का अंदेशा रखते हैं. 11 पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की सख़्ती से बचा लिया. और उन्हें ताज़गी और ख़ुशी अता फ़रमाई 12 और उनके सब्र के बदले में उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास अता किया. 13 टेक लगाए होंगे उसमें तख़्तों पर, उसमें न वे गर्मी से दो चार होंगे और न सर्दी से. 14 जन्नत के साये उनपर झुके हुए होंगे और उनके फल उनके बस में होंगे. 15 और उनके आगे चांदी के बर्तन और शीशे के प्याले गर्दिश में होंगे. 16 शीशे चांदी के होंगे, जिन्हें भरने वालों ने मुनासिब पैमाने से भरा होगा.

17 और वहाँ उन्हें एक और जाम पिलाया जाएगा जिसमें सोंठ की आमेज़िश होगी. 18 यह उसमें एक चश्मा (स्रोत) है जिसे सलसबील कहा जाता है. 19 और उनके पास फिर रहे होंगे ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, तुम उन्हें देखो तो समझो कि मोती हैं जो बिखेर दिए गए हैं. 20 और तुम जहाँ देखोगे वहीं अज़ीम नेमत और अज़ीम बादशाही देखोगे. 21 उनके ऊपर बारीक रेशम के सब्ज़ कपड़े होंगे और दबीज़ (गाढ़े) रेशम के सब्ज़ कपड़े भी, और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएँगे. और उनका रब उन्हें पाकीज़ा मशरूब (स्वच्छ व शुद्ध पेय) पिलाएगा. 22 बेशक यह तुम्हारा सिला (प्रतिफल) है और तुम्हारी कोशिश मक़बूल हुई (यानी उसे स्वीकार्यता प्राप्त हुई).

23 हमने तुम पर क़ुरआन थोड़ा–थोड़ा करके उतारा है. 24 पस तुम अपने रब के हुक्म पर सब्र करो और उनमें से किसी गुनाहगार या नाशुक्र की बात न मानो. 25 और अपने रब का नाम सुबह व शाम याद करो. 26 और रात को भी उसे सज्दा करो. और उसकी तस्बीह करो रात के लंबे हिस्से में. 27 ये लोग जल्दी मिलने वाली चीज़ को चाहते हैं और उन्होंने छोड़ रखा है अपने पीछे एक भारी दिन को. 28 हम ही ने उन्हें पैदा किया और हमने उनके जोड़ मज़बूत किए, और जब हम चाहेंगे उन्हीं जैसे लोग उनकी जगह बदल लाएँगे. 29 **यह (क़ुरआन) एक नसीहत है, पस जो शख़्स चाहे अपने रब की तरफ़ रास्ता इख़्तियार कर ले.** 30 और तुम नहीं चाह सकते, मगर यह कि अल्लाह चाहे. बेशक अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला (ज्ञानवान एवं बुद्धिमान) है. 31 वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है.

सूरह–77. अल–मुरसलात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है हवाओं की जो छोड़ दी जाती हैं लगातार. 2 फिर वे तूफ़ानी रफ़्तार से चलती हैं.
3 और बादलों को उठाकर फैलाती हैं. 4 फिर मामले को जुदा करती हैं. 5 फिर याददिहानी डालती
हैं. 6 उज़्र के तौर पर या चेतावनी के तौर पर. 7 जो वादा तुम से किया जा रहा है वह ज़रूर
वाक़ेअ (घटित) होने वाला है.

8 पस जब सितारे बेनूर हो जाएँगे. 9 और जब आसमान फट जाएगा. 10 और जब पहाड़
रेज़ा–रेज़ा कर दिए जाएँगे. 11 और जब पैग़म्बर मुअय्यन (निश्चित) वक़्त पर जमा किए जाएँगे.
12 किस दिन के लिए वे टाले गए हैं. 13 फ़ैसले के दिन के लिए. 14 और तुम्हें क्या ख़बर कि
फ़ैसले का दिन क्या है.

15 तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए.

नोटः– हक़ को क़बूल करने या झुठलाने का मौक़ा किसी इंसान को सिर्फ़ उस वक़्त मिल सकता है, जब उसके सामने हक़ का पैग़ाम पेश कर दिया जाए. जैसा की क़ुरआन में दूसरे मुक़ाम पर आया है– **‘क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं तो तुम उन्हें झुठलाते थे.’** (क़ुरआन 23:105) क़ुरआन के इस बयान से यह बात वाज़ेह होती है कि हक़ को मानने वालों के लिए दूसरे इंसानों पर हक़ का पैग़ाम पेश करने के सिवा दूसरा कोई ऑप्शन नहीं है.

16 क्या हमने पहलों को हलाक नहीं किया. 17 फिर हम उनके पीछे भेजते हैं पिछलों को.
18 हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं.

19 ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए.

20 क्या हमने तुम्हें एक हक़ीर (तुच्छ) पानी से पैदा नहीं किया. 21 फिर उसे एक महफ़ूज़
जगह रखा, 22 एक मुक़र्रर मुद्दत तक. 23 फिर हमने उसके लिए बढ़ोत्तरी की स्थितियाँ
(stages of development) तय कीं, हम क्या ही ख़ूब तय करने वाले हैं.

24 ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए.

25 क्या हमने ज़मीन को (बेशुमार चीज़ें) समेटकर रखनेवाली नहीं बनाया, 26 ज़िंदों के

लिए और मुरदों के लिए. 27 और हमने उसमें ऊंचे पहाड़ बनाए और तुम्हें मीठा पानी पिलाया.

28 उस रोज़ ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए.

नोटः– ख़ुदा क़ुरआन के ज़रीए से इस बात का ख़ूब–ख़ूब एलान कर देना चाहता है कि '**उस रोज़ ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए**' अब दाई का यह काम है कि ख़ुदा की यह आवाज़ वह सारे इंसानों तक पहुँचा दे, ताकि हक़ को मानने वाले हक़ को मान लें और झुठलाने वालों पर हुज्जत पूरी हो जाए. वे अल्लाह की अदालत में यह कह न सकें कि ख़ुदाया! हमें कुछ भी पता नहीं था कि हक़ क्या था और नाहक़ क्या?

यहाँ एक अहम बात वाज़ेह रहे कि हक़ को झुठलाने का ताल्लुक़ हक़ का पैग़ाम पहुँचाने के बाद आता है न कि उससे पहले. अगर पैग़ाम पहुँचाने वालों ने उसे नहीं पहुँचाया तो इस ख़राबी और बरबादी का रुख सबसे पहले उन लोगों की तरफ़ मुड़ जाएगा जिनपर पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी थी.

29 चलो उस चीज़ की तरफ़ जिसे तुम झुठलाते थे. 30 चलो तीन शाख़ों वाले साये की तरफ़. 31 जिसमें न साया है और न वह गर्मी से बचाता है. 32 वह अंगारे बरसाएगा जैसे कि ऊंचा महल, 33 ज़र्द ऊँटों की मानिंद,

34 उस दिन ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए.

35 यह वह दिन है जिसमें लोग बोल न सकेंगे. 36 और न उन्हें इजाज़त होगी कि वे उज़्र पेश करें.

37 ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए.

38 यह फ़ैसले का दिन है. हमने तुम्हें और अगले लोगों को जमा कर लिया. 39 पस अगर कोई तदबीर हो तो मुझ पर तदबीर चलाओ.

40 ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए.

41 बेशक डरने वाले साये में और चशमों (स्रोतों) में होंगे, 42 और फलों में जो वे चाहें. 43 मज़े के साथ खाओ और पियो. उस अमल के बदले में जो तुम करते थे. 44 हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं.

45 ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए.

46 खाओ और बरत लो थोड़े दिन, बेशक तुम गुनाहगार हो.

47 ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए.

48 और जब उनसे कहा जाता है कि झुको तो वे नहीं झुकते.

49 ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए.

50 अब इस (क़ुरआन) के बाद और कौन सा कलाम ऐसा हो सकता है जिस पर वे ईमान लाएँगे?

नोटः– हक़ को झुठलाने का अंजाम भयानक ख़तरनाक है इसीलिए अल्लाह तआला ने लोगों को इस अंजाम से ख़ूब–ख़ूब आगाह किया है. अब जिस शख़्स को ख़ुदा का आगाह करना नफ़ा न दे तो उसे किस का आगाह करना नफ़ा देगा.

पारा – 30

सूरह–78. अन–नबा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 लोग किस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं. 2 उस बड़ी ख़बर के बारे में, 3 जिसमें वे लोग
मुख़्तलिफ़ हैं. 4 हरगिज़ नहीं, अनक़रीब वे जान लेंगे. 5 हरगिज़ नहीं, अनक़रीब वे जान लेंगे. 6
क्या हमने ज़मीन को फ़र्श नहीं बनाया, 7 और पहाड़ों को मेख़ें. 8 और तुम्हें हमने बनाया जोड़े–
जोड़े, 9 और नींद को बनाया तुम्हारी थकान दूर करने के लिए. 10 और हमने रात को पर्दा
बनाया, 11 और हमने दिन को मआश (जीविका प्राप्त करने) का वक़्त बनाया. 12 और हमने
तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए. 13 और हमने उसमें एक चमकता हुआ चिराग़ रख
दिया. 14 और हमने पानी भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया, 15 ताकि हम उसके ज़रिए से
उगाएं ग़ल्ला और सब्ज़ी 16 और घने बाग़. 17 बेशक फ़ैसले का दिन एक मुक़र्रर वक़्त है.

18 जिस दिन सूर फूंका जाएगा, फिर तुम फ़ौज दर फ़ौज आओगे. 19 और आसमान खोल दिया जाएगा, फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएँगे. 20 और पहाड़ चला दिए जाएँगे तो वे रेत की तरह हो जाएँगे. 21 बेशक जहन्नम घात में है, 22 सरकशों का ठिकाना, 23 उसमें वे मुद्दतों पड़े रहेंगे. 24 उसमें वे न किसी ठंडक को चखेंगे और न पीने की चीज़, 25 मगर गर्म पानी और पीप, 26 बदला उनके अमल के मुवाफ़िक़. 27 वे हिसाब का अंदेशा नहीं रखते थे. 28 और उन्होंने हमारी आयतों को बिल्कुल झुठला दिया. 29 और हमने हर चीज़ को लिखकर शुमार कर रखा है. 30 पस चखो कि हम तुम्हारी सज़ा ही बढ़ाते जाएँगे.

31 बेशक डरने वालों के लिए कामयाबी है. 32 बाग़ और अंगूर. 33 और नौख़ेज़ हमसिन लड़कियाँ. 34 और भरे हुए जाम. 35 वहाँ वे लग़्व (घटिया, निरर्थक) और झूठी बात नहीं सुनेंगे. 36 यह बदला तेरे रब की तरफ़ से होगा, उनके अमल के हिसाब से 37 रहमान की तरफ़ से जो आसमानों और ज़मीन और उनके दरमियान की चीज़ों का रब है, कोई क़ुदरत नहीं रखता कि उससे बात करे. 38 जिस दिन रूह और फ़रिश्ते सफ़बस्ता (पंक्तिबद्ध) खड़े होंगे, कोई नहीं बोलेगा, मगर जिसे रहमान इजाज़त दे, और वह ठीक बात कहेगा. 39 यह दिन बरहक़ है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ़ ठिकाना बना ले. 40 हमने तुम्हें क़रीब आ जाने वाले अज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन आदमी उसको देख लेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा है, और मुन्किर कहेगा, काश मैं मिट्टी होता.

सूरह–79. अन–नाज़िआत

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है जड़ से उखाड़ने वाली हवाओं की. 2 और क़सम है आहिस्ता चलने वाली हवाओं की. 3 और क़सम है तैरने वाले बादलों की. 4 फिर सबक़त (अग्रसरता) करके बढ़ने वालों की. 5 फिर मामले की तदबीर करने वालों की. 6 जिस दिन हिला देने वाली हिला डालेगी. 7 उसके पीछे एक और आने वाली चीज़ आएगी. 8 कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे. 9 उनकी आँखें झुक रही होंगी. 10 वे कहते हैं, क्या हम पहली हालत में फिर वापस होंगे. 11 क्या जब हम बोसीदा हड्डियाँ हो जाएँगे. 12 उन्होंने कहा कि यह वापसी तो बड़े घाटे की होगी. 13 वह तो बस एक डाँट होगी, 14 फिर यकायक वे मैदान में मौजूद होंगे.

15 **क्या तुम्हें मूसा की बात पहुँची है.** 16 **जबकि उसके रब ने उसे तुवा की मुक़द्दस (पवित्र) वादी में पुकारा.** 17 **फ़िरऔन के पास जाओ,**

वह सरकश हो गया है. 18 **फिर उससे कहो, क्या तुझे इस बात की ख़्वाहिश है कि तू दुरुस्त हो जाए.**

19 **और मैं तुझे तेरे रब की राह दिखाऊं, फिर तू डरे.**

नोटः– दाई को ख़ुदा का पैग़ाम लेकर सरकश से सरकश इंसान के पास भी जाना है और उसे उसके रब की राह दिखाना है. इसी काम के लिए पहले पैग़ंबर आते थे, अब '**रब की राह**' दिखाने का काम रब के मानने वालों को करना है.

20 पस मूसा ने उसे बड़ी निशानी दिखाई. 21 फिर उसने झुठलाया और नहीं माना. 22 फिर
वह पलटा कोशिश करते हुए. 23 फिर उसने जमा किया, फिर उसने पुकारा. 24 पस उसने कहा
कि मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ. 25 पस अल्लाह ने उसे आख़िरत और दुनिया के अज़ाब में
पकड़ा. 26 बेशक इसमें नसीहत है हर उस शख़्स के लिए जो डरे.

27 क्या तुम्हारा बनाना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान का, अल्लाह ने उसे बनाया. 28
उसकी छत को बुलंद किया फिर उसे दुरुस्त बनाया. 29 और उसकी रात को तारीक
(अंधकारमय) बनाया और उसके दिन को ज़ाहिर किया. 30 और उसके बाद ज़मीन को फैलाया.
31 उससे उसका पानी और चारा निकाला. 32 और पहाड़ों को क़ायम कर दिया, 33 (यह सारा
इंतज़ाम) सामाने-हयात (जीवन-सामग्री) के तौर पर तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए.

34 **फिर जब वह बड़ा हंगामा आएगा.**

35 **जिस दिन इंसान अपने किए को याद करेगा.**

नोटः– आख़िरत का मसला हर इंसान का मसला है. क़ुरआन में जहाँ-जहाँ क़यामत और आख़िरत के मसले का ज़िक्र आ रहा है, वहाँ अकसर इंसान, बनी आदम, लोग, शख़्स,....etc. ऐसे अलफ़ाज़ आए हैं. हर इंसान से जुड़े हुए इसी मसले से इंसान को आगाह करने का नाम दावत है.

36 और देखने वालों के सामने दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी. 37 पस जिसने सरकशी की 38
और दुनिया की ज़िंदगी को तरजीह दी, 39 तो दोज़ख़ उसका ठिकाना होगा 40 और जो शख़्स अपने
रब के सामने खड़ा होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका, 41 तो जन्नत उसका ठिकाना होगा.

42 **वे क़यामत के बारे में पूछते हैं** कि वह कब क़ायम (वाक़ेअ) होगी.
43 **तुम्हें क्या काम उसके ज़िक्र से.** 44 **यह मामला तेरे रब के हवाले है.** 45 **तुम तो**
बस डराने वाले हो उस शख़्स को जो डरे. 46 **जिस रोज़ ये उसे देखेंगे तो**
गोया वे दुनिया में नहीं ठहरे, मगर एक शाम या उसकी सुबह.

नोटः– लोग ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसके अंजाम को भूलकर और इसी ज़िंदगी को सब कुछ समझ कर जी रहे हैं, लेकिन अनक़रीब हक़ीक़त से पर्दा उठने वाला है, तब लोग जान लेंगे कि उन्होंने अपने आपको किस तरह धोके में मुब्तिला कर रखा था. लेकिन उस वक़्त का जानना उनको कुछ नफ़ा न देगा.

सूरह–80. अबस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 उसने त्योरी चढ़ाई और बेरुख़ी बरती 2 इस बात पर कि अंधा उसके पास आया. 3 और
तुम्हें क्या ख़बर कि वह सुधर जाए 4 या नसीहत को सुने तो नसीहत उसके काम आए. 5 जो
शख़्स बेपरवाही बरतता है, 6 तुम उसकी फ़िक्र में पड़ते हो. 7 हालाँकि तुम पर कोई ज़िम्मेदारी
नहीं अगर वह न सुधरे. 8 और जो शख़्स तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आता है 9 और वह डरता है,
10 तो तुम उससे बेपरवाही बरतते हो.

11 **यक़ीनन, यह (क़ुरआन) तो एक नसीहत है,** 12 **पस जो चाहे**
याददिहानी हासिल करे.

13 वह ऐसे सहीफ़ों (ग्रंथों) में है जो मुकर्रम हैं, 14 बुलंद मर्तबा हैं, पाकीज़ा हैं, 15 कातिबों के
हाथों में. 16 जो मुअज़्ज़ज़ और नेक हैं.

17 बुरा हो आदमी का, वह कैसा नाशुक्रा है. 18 उसे किस चीज़ से पैदा किया है, 19 एक
बूंद से उसे पैदा किया. फिर उसके लिए एक नपातुला पैमाना ठहराया. 20 फिर उसके लिए राह
आसान कर दी. 21 फिर उसे मौत दी, फिर उसे क़ब्र में ले गया. 22 फिर जब वह चाहेगा उसे
दुबारा ज़िंदा कर देगा. 23 हरगिज़ नहीं, उसने पूरा नहीं किया जिसका अल्लाह ने उसे हुक्म दिया
था. 24 पस इंसान को चाहिए कि वह अपने खाने को देखे. 25 हमने पानी बरसाया अच्छी तरह,
26 फिर हमने ज़मीन को अच्छी तरह फाड़ा. 27 फिर उगाए उसमें ग़ल्ले 28 और अंगूर और

तरकारियाँ 29 और ज़ैतून और खजूर 30 और घने बाग़ 31 और फल और सब्ज़ा, 32 तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए सामाने–हयात (जीवन—सामग्री) के तौर पर.

33 पस जब वह कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा.

34 **जिस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से,**

35 **और अपनी माँ से और अपने बाप से,** 36 **और अपनी बीवी से और अपने बेटों से.** 37 **उनमें से हर शख़्स को उस दिन ऐसी फ़िक्र (चिंता) लगी होगी जो उसे किसी और तरफ़ मुतवज्जह नहीं होने देगी.**

नोटः– उस रोज़ ख़ुदा के नाफ़रमान बंदे का यह हाल होगा कि उसके अपने उसे नहीं पहचानेंगे. इसकी वजह यह होगी कि ख़ुदा उसे नहीं पहचानेगा, क्योंकि दुनिया में वह ख़ुदा की नेमतों से भरपूर फ़ायदा उठाता था, लेकिन ख़ुदा के ताल्लुक़ से बेपरवा रहता था. फिर जिसे ख़ुदा धुत्कार दे उसे कौन क़रीब आने देगा.

आज इंसान अपने घर वालों की ख़ुशी के लिए सारी दौड़–धूप कर रहा है, और ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसके अंजाम से ग़ाफ़िल है. उसे सोचना चाहिए कि वह अपने आपको और अपने घर वालों को किस अंजाम की तरफ़ ले जा रहा है. इंसान को चाहिए कि वह अपनी ज़िंदगी का मक़सद **अपने आपको और अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाने को बना ले.** (सूरह 66, आयत 6) ऐसा ही इंसान आख़िरत की हक़ीक़ी ज़िंदगी में कामयाब इंसान होगा.

38 कुछ चेहरे उस दिन रोशन होंगे, 39 हँस रहे होंगे, ख़ुश हो रहे होंगे 40 और कुछ चेहरों पर उस दिन ख़ाक उड़ रही होगी, 41 उनपर स्याही छाई हुई होगी. 42 यही लोग मुन्किर हैं, ढीठ हैं.

सूरह–81. अत–तकवीर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 जब सूरज लपेट दिया जाएगा. 2 और जब सितारे बेनूर हो जाएँगे. 3 और जब पहाड़ चलाए
जाएँगे. 4 और जब दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ आवारा फिरेंगी. 5 और जब वहशी जानवर इकट्ठा
हो जाएँगे. 6 और जब समुंदर भड़का दिए जाएँगे. 7 और जब एक–एक क़िस्म के लोग इकट्ठा
किए जाएँगे. 8 और जब ज़िंदा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा 9 कि वह किस क़ुसूर में मारी गई.

10 और जब आमालनामे (कर्म–पत्र) खोले जाएँगे. 11 और जब आसमान खुल
जाएगा. 12 और दोज़ख़ भड़काई जाएगी. 13 और जब जन्नत क़रीब लाई जाएगी.
14 हर शख़्स जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है.

नोटः– आख़िरत का मसला हर शख़्स का मसला है. ऐसा हरगिज़ नहीं है कि इस मसले का ताल्लुक़ किसी मख़सूस शख़्स या किसी ख़ास गिरोह से है. हर इंसान के सामने इन दो में से एक अंजाम आना ही है, जन्नत या जहन्नम.

15 पस नहीं, मैं क़सम खाता हूँ पीछे हटने वाले, 16 चलने वाले और छुप जाने वाले
सितारों की. 17 और रात की जब वह जाने लगे. 18 और सुबह की, जब वह आने लगे कि 19
यह (क़ुरआन) एक बाइज़्ज़त रसूल का लाया हुआ कलाम है. 20 क़ुव्वत वाला, अर्श वाले के
नज़दीक बुलंद मर्तबा है. 21 उसकी बात मानी जाती है, वह अमानतदार है. 22 और तुम्हारा
साथी दीवाना नहीं. 23 और उसने उसे खुले उफ़ुक़ (क्षितिज) में देखा है. 24 और वह ग़ैब की
बातों का हरीस (हिर्स रखने वाला) नहीं. 25 और यह (क़ुरआन) शैतान मरदूद का क़ौल नहीं.
26 फिर तुम किधर जा रहे हो?

27 यह तो बस आलम (संसार) वालों के लिए एक नसीहत है,

28 उसके लिए जो तुम में से सीधा चलना चाहे. 29 और तुम नहीं चाह सकते, मगर यह है कि
अल्लाह रब्बुल–आलमीन चाहे.

सूरह–82. अल–इनफ़ितार

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 जब आसमान फट जाएगा. 2 और जब सितारे बिखर जाएँगे. 3 और जब समुंदर बह
पड़ेंगे. 4 और जब क़ब्रें खोल दी जाएँगी.

5 हर शख़्स जान लेगा कि उसने क्या आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा.
6 ऐ इंसान! तुझे किस चीज़ ने अपने रब्बे करीम
की तरफ़ से धोखे में डाल रखा है.
7 जिसने तुझे पैदा किया. फिर तेरे आज़ा (शरीर के अवयवों) को दुरुस्त किया,

फिर तुझे मुतनासिब (संतुलित) बनाया. 8 जिस सूरत में चाहा तुम्हें तरतीब दे दिया.

नोटः– यहां जिस मसले का ज़िक्र हो रहा है, वह हर इंसान का मसला है, इसीलिए इंसानों का रब इंसान से सीधे मुख़ातिब है.

9 (बल्कि सत्य यह है कि) तुम इंसाफ़ के दिन को झुठलाते हो. 10 हालाँकि तुम पर निगहबान
मुक़र्रर हैं. 11 मुअज़्ज़ज़ (सम्माननीय) लिखने वाले. 12 वे जानते हैं जो कुछ तुम करते हो. 13
बेशक नेक लोग ऐश में होंगे. 14 और बेशक गुनाहगार दोज़ख़ में होंगे. 15 इंसाफ़ के दिन वे उसमें
डाले जाएँगे. 16 जहाँ से उन्हें निकलने की कोई सूरत नहीं होगी. 17 और तुम्हें क्या ख़बर कि इंसाफ़
का दिन क्या है? 18 फिर सुनो! तुम क्या जानो कि इंसाफ़ का दिन क्या है? 19 उस दिन कोई जान
किसी दूसरी जान के लिए कुछ न कर सकेगी. और मामला उस दिन अल्लाह ही के इख़्तियार में होगा.

सूरह–83. अल–मुतफ़्फ़िफ़ीन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 ख़राबी है नाप तौल में कमी करने वालों की. 2 जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें. 3
और जब उन्हें नाप कर या तौल कर दें तो घटा कर दें. 4 क्या ये लोग नहीं समझते कि वे उठाए
जाने वाले हैं, 5 एक बड़े दिन के लिए

6 जिस दिन तमाम लोग ख़ुदावंदे–आलम के सामने खड़े होंगे.

नोटः– यह वक़्त सारे इंसानों पर आने वाला है, इसीलिए उन्हें आने वाले इस संगीन घड़ी से आगाह करना ज़रूरी है. जिन लोगों पर यह आगाह करने की ज़िम्मेदारी है, अगर उन्होंने अपने ज़िम्मे का काम अंजाम नहीं दिया तो वे अल्लाह की अदालत में ज़रूर पकड़े जाएँगे.

7 हरगिज़ नहीं, बेशक गुनाहगारों का आमालनामा (कर्म–पत्र) सिज्जीन में होगा. 8 और
तुम क्या जानो कि सिज्जीन क्या है. 9 वह एक लिखा हुआ दफ़्तर है. 10 ख़राबी है उस दिन
झुठलाने वालों की. 11 जो इंसाफ़ के दिन को झुठलाते हैं. 12 और उसे वही शख़्स झुठलाता है
जो हद से गुज़रने वाला हो, गुनाहगार हो.

13 **जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि ये अगलों की कहानियाँ है.**

नोटः– दाई का काम अल्लाह की आयतें सुनाना है और मदू उसे मानने या झुठलाने के लिए इस इम्तिहानी दुनिया में आज़ाद है.

14 हरगिज़ नहीं, बल्कि उनके दिलों पर उनके आमाल का ज़ंग चढ़ गया है. 15 बल्कि ज़रूर, उस दिन वे अपने रब से ओट में (यानी दूर) रखे जाएँगे. 16 फिर वे दोज़ख़ में दाख़िल होंगे. 17 फिर कहा जाएगा कि यही वह चीज़ है जिसे तुम झुठलाते थे.

18 लेकिन, बेशक नेक लोगों का आमालनामा इल्लिय्यीन में होगा. 19 और तुम क्या जानो इल्लिय्यीन क्या है. 20 लिखा हुआ दफ़तर है, 21 मुक़र्रब फ़रिश्तों की निगरानी में.

22 **बेशक नेक लोग आराम में होंगे.** 23 **तख़्तों पर बैठे देखते होंगे.** 24 **उनके चेहरों में तुम आराम की ताज़गी महसूस करोगे.** 25 **उन्हें शराबे–ख़ालिस मुहर लगी हुई पिलाई जाएगी,** 26 **जिस पर मुश्क की मुहर होगी. और यह चीज़ है जिसकी हिर्स करने वालों को हिर्स करना चाहिए.**

नोटः– हिर्स करने की चीज़ आख़िरत की कामयाबी है. इंसान को यह बात ख़ूब समझ लेनी चाहिए कि इस दुनिया में इंसान को चाहे कुछ भी मिल जाए, आख़िरकार वह सब छीन जाने वाला हैं. फिर क्यों न इंसान उस चीज़ की हिर्स करे और उसके लिए दौड़–धूप करे जो इंसान से कभी छीन जाने वाली नहीं है.

27 और उस शराब में तस्नीम की आमेज़िश होगी. 28 एक ऐसा चशमा (स्रोत) जिससे मुक़र्रब लोग पियेंगे. 29 बेशक जो लोग मुजरिम थे, वे ईमान वालों पर हँसते थे. 30 और जब वे उनके सामने से गुज़रते तो वे आपस में आंखों में इशारे करते थे. 31 और जब वे अपने लोगों में लौटते तो दिल्लगी करते हुए लौटते. 32 और जब वे उन्हें देखते तो कहते कि ये बहके हुए लोग हैं. 33 हालाँकि वे उनपर निगराँ बनाकर नहीं भेजे गए. 34 पस आज (इंसाफ़ के दिन) ईमान वाले मुन्किरों पर हँसते होंगे, 35 तख़्तों पर बैठे देख रहे होंगे. 36 वाक़ई मुन्किरों को उनके किए का ख़ूब बदला मिला.

सूरह–84. अल–इनशिक़ाक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 जब आसमान फट जाएगा. 2 और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह इसी लायक़ है. 3 और जब ज़मीन फैला दी जाएगी. 4 और वह अपने अंदर की चीज को उगल देगी और ख़ाली हो जाएगी. 5 और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगी और वह इसी लायक़ है. 6 ऐ इंसान! तू कशाँ–कशाँ (सश्रम) अपने रब की तरफ़ जा रहा है. फिर उससे मिलने वाला है. 7 तो जिसे उसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा. 8 उससे आसान हिसाब लिया जाएगा. 9 और वह अपने लोगों के

पास ख़ुश–ख़ुश आएगा. 10 और जिसका आमालनामा उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा, 11 वह मौत को पुकारेगा 12 और जहन्नम में दाख़िल होगा. 13 **वह अपने लोगों में मगन (और आख़िरत के बारे में बेपरवा) रहता था.** 14 **उसने ख़याल किया था कि उसे लौटना नहीं है.** 15 **क्यों नहीं? उसका रब उसे देख रहा था.** 16 पस नहीं, मैं क़सम खाता हूँ शफ़क़ (सांध्य–लालिमा) की. 17 और रात की और उन चीज़ों की जिन्हें वह समेट लेती है. 18 और चांद की जब वह पूरा हो जाए. 19 कि तुम्हें ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर पहुँचना है. 20 तो उन्हें क्या हो गया है कि वे ईमान नहीं लाते?

21 **और जब उनके सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वे ख़ुदा की तरफ़ नहीं झुकते.** अस्–सज्दा

नोटः– जिन्हें क़ुरआन के ज़रीए से हक़ की दरयाफ़्त न हो, फिर उन्हें हक़ की दरयाफ़्त कहीं नहीं हो सकती. सज्दा इज्ज़ की इन्तेहाई अलामत है, और मक़ामे–इज्ज़ ही वह मक़ाम है जहाँ बंदे की ख़ुदा से मुलाक़ात होती है.

22 बल्कि मुन्किरीन झुठला रहें हैं. 23 और अल्लाह जानता है जो कुछ वे जमा कर रहे हैं. 24 पस उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो. 25 लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला अज्र (प्रतिफल) है.

सूरह–85. अल–बुरूज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है बुर्जों वाले आसमान की. 2 और वादा किए हुए दिन की. 3 और देखने वाले की और देखी हुई की. 4 हलाक हुए ख़न्दक़ वाले, 5 जिसमें भड़कते हुए ईंधन की आग थी. 6 जबकि वे उसपर बैठे हुए थे. 7 और जो कुछ वे ईमान वालों के साथ कर रहे थे, (वहाँ बैठ कर) उसे देख रहे थे. 8 और उनसे उनकी दुश्मनी इसके सिवा किसी वजह से न थी कि वे ईमान लाए अल्लाह पर जो ज़बरदस्त है, तारीफ़ों वाला है. 9 उसी की बादशाही आसमानों और ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है. 10 जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को सताया, फिर तौबा न की तो उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है. और उनके लिए जलने का अज़ाब है. 11 बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया, उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, **यही बड़ी कामयाबी है.** 12 बेशक तेरे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है. 13 वही आग़ाज़ करता है और वही लौटाएगा. 14 और वह बख़्शने वाला है, मुहब्बत करने

वाला है, 15 अरशे–अज़ीम का मालिक, बड़ी बुज़ुर्गीवाला. 16 कर डालने वाला जो चाहे. 17 क्या तुम्हें लशकरों की ख़बर पहुँची है, 18 फ़िरऔन और समूद की. 19 बल्कि ये मुन्किर झुठलाने पर लगे हुए हैं. 20 और अल्लाह उन्हें हर तरह से घेरे हुए है. 21 बल्कि यह एक बाअज़मत (गौरवशाली) क़ुरआन है, 22 लौहे–महफ़ूज़ (सुरक्षित महा–ग्रंथ) में लिखा हुआ.

सूरह–86. अत–तारिक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है आसमान की और रात को नमूदार (प्रकट) होने वाले की. 2 और तुम क्या जानो कि वह रात को नमूदार होने वाला क्या है, 3 चमकता हुआ तारा. 4 कोई जान ऐसी नहीं है जिसके ऊपर निगहबान न हो. 5 तो इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है. 6 वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है. 7 जो निकलता है पीठ और सीने के दरमियान से. 8 बेशक वह उसे दुबारा पैदा करने पर क़ादिर है. 9 जिस दिन छुपी बातें परखी जाएँगी. 10 उस वक़्त इंसान के पास कोई ज़ोर न होगा और न कोई मददगार. 11 क़सम है आसमान चक्कर मारने वाले की (यानी बारिश बरसाने वाले आसमान की). 12 और फूट निकलने वाली ज़मीन की. 13 **बेशक यह (क़ुरआन) दो टूक बात है** 14 और वह हँसी की बात नहीं. 15 वे तदबीर (युक्ति) करने में लगे हुए हैं. 16 और मैं भी तदबीर करने में लगा हुआ हूँ. 17 पस मुन्किरों को ढील दो, उन्हें ढील दो थोड़े दिनों तक.

सूरह–87. अल–आला

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अपने रब के नाम की पाकी बयान कर जो सबसे ऊपर है. 2 जिसने बनाया, फिर ठीक किया. 3 और जिसने ठहराया (यानी हर चीज़ की रूपरेखा निश्चित की), फिर राह बताई. 4 और जिसने चारा निकाला. 5 फिर उसे स्याह कूड़ा बना दिया. 6 हम तुम्हें पढ़ाएंगे, फिर तुम नहीं भूलोगे. 7 मगर जो अल्लाह चाहे, वह जानता है खुले को भी और उसे भी जो छुपा हुआ है. 8 और हम तुम्हें ले चलेंगे आसान राह. 9 पस नसीहत करो अगर नसीहत फ़ायदा पहुँचाए. 10 वह शख़्स नसीहत क़बूल करेगा जो डरता है. 11 और उससे गुरेज़ (विमुखता) करेगा, वह जो बदबख़्त होगा. 12 वह पड़ेगा बड़ी आग में. 13 फिर न उसमें मरेगा और न जिएगा. 14 कामयाब हुआ वह जिसने अपने को पाक किया. 15 और अपने रब का नाम लिया, फिर नमाज़ पढ़ी. 16 **बल्कि तुम दुनियावी ज़िंदगी को मुक़द्दम रखते हो.** 17 **और आख़िरत बेहतर है और पायदार है.** 18 **यही अगले सहीफ़ों (ग्रंथों) में भी है,** 19 **मूसा और इब्राहीम के सहीफ़ों में.**

सूरह–88. अल–ग़ाशियह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क्या तुम्हें उस छा जाने वाली की ख़बर पहुँची है. 2 कुछ चेहरे उस दिन ज़लील होंगे, 3
मेहनत करने वाले थके हुए. 4 वे दहकती आग में पड़ेंगे. 5 खौलते हुए चशमे (स्रोत) से पानी
पिलाए जाएँगे. 6 उनके लिए कांटों वाले झाड़ के सिवा और कोई खाना न होगा, 7 जो न मोटा
करे और न भूख मिटाए. 8 कुछ चेहरे उस दिन बारौनक़ होंगे. 9 अपनी कमाई पर ख़ुश होंगे. 10
ऊंचे बाग़ में. 11 उसमें कोई लग़्व (घटिया, निरर्थक) बात नहीं सुनेंगे. 12 उसमें बहते हुए चशमे
होंगे. 13 उसमें तख़्त होंगे ऊंचे बिछे हुए. 14 और आबख़ोरे सामने चुने हुए. 15 और बराबर
बिछे हुए गद्दे. 16 और क़ालीन हर तरफ़ पड़े हुए. 17 तो क्या वे ऊँट को नहीं देखते कि वह कैसे
पैदा किया गया. 18 और आसमान को कि वह किस तरह बुलंद किया गया. 19 और पहाड़ों को
कि वह किस तरह खड़े किए गए हैं. 20 और ज़मीन को कि वह किस तरह बिछाई गई.

21 **पस तुम याददिहानी कर दो, तुम बस याददिहानी**
करने वाले हो. **22 तुम उनपर दारोग़ा नहीं. 23 मगर जिसने रूगर्दानी**
(अवहेलना) की और इन्कार किया, 24 तो अल्लाह उसे बड़ा अज़ाब देगा. 25
हमारी ही तरफ़ उनकी वापसी है. 26 फिर हमारे ज़िम्मे है उनसे हिसाब लेना.

सूरह–89. अल–फ़ज्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है फ़जर (उषाकाल) की. 2 और दस रातों की. 3 और जुफ़्त और ताक़ (सम और
विषम) की. 4 और रात की जब वह चलने लगे. 5 क्या, इसमें अक़्लमंद (आदमी) के लिए काफ़ी
क़सम नहीं है? 6 क्या तुमने नहीं देखा, तुम्हारे रब ने आद के साथ क्या मामला किया? 7 सुतूनों
(स्तंभों) वाले इरम के साथ. 8 जिनके बराबर कोई क़ौम मुल्कों में पैदा नहीं की गई. 9 और समूद
के साथ जिन्होंने वादी में चट्टानें तराशीं. 10 और मेख़ों वाले फ़िरऔन के साथ, 11 जिन्होंने मुल्कों में
सरकशी की. 12 फिर उनमें बहुत फ़साद फैलाया. 13 तो तुम्हारे रब ने उनपर अज़ाब का कोड़ा बरसाया.
14 बेशक तुम्हारा रब घात में है. 15 पस इंसान का हाल यह है कि जब उसका रब उसे आज़माता
है और उसे इज़्ज़त और नेमत देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी. 16 और जब
वह उसे आज़माता है और उसका रिज़्क़ उसपर तंग कर देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे

ज़लील कर दिया. 17 हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते. 18 और तुम मिस्कीन को खाना खिलाने पर एक दूसरे को नहीं उभारते. 19 और तुम विरासत को समेटकर खा जाते हो.

20 **और तुम माल से बहुत ज़्यादा मुहब्बत रखते हो.**

नोटः– इंसान को बहुत ज़्यादा मुहब्बत सिर्फ़ ख़ुदा से होना चाहिए, ना कि माल से और ना बेटा–बेटी से, ना और किसी से.

21 हरगिज़ नहीं, जब ज़मीन को तोड़कर रेज़ा–रेज़ा कर दिया जाएगा. 22 और तुम्हारा रब आएगा और फ़रिश्ते आएंगे क़तार (पंक्ति) दर क़तार.

23 **और उस दिन जहन्नम लाई जाएगी,**

उस दिन इंसान को समझ आएगी,

लेकिन तब समझ आने का क्या फ़ायदा!

24 वह कहेगा, **काश मैं अपनी ज़िंदगी में कुछ आगे भेजता.**

25 **उस दिन ख़ुदा जो सज़ा देगा, वैसी सज़ा कभी भी किसी ने नहीं दी होगी.**

नोटः– जो लोग दावती ज़िम्मेदारी के ताल्लुक़ से ग़फ़लत की ज़िंदगी गुज़ारते रहे और दूसरे–दूसरे कामों में उलझे रहे, उन्हें ख़ास तौर पर ज़्यादा से ज़्यादा इस काम में अपना जान व माल लगाना चाहिए. और अपने बच्चों को शुरू से ही दावत के मिशन से जोड़ना चाहिए.

26 और न उसके बांधने के बराबर कोई बांधेगा. 27 ऐ नफ़्से–मुतमइन (संतुष्ट आत्मा)!
28 चल अपने रब की तरफ़. तू उससे राज़ी, वह तुझसे राज़ी. 29 फिर शामिल हो मेरे बंदों में 30
और दाख़िल हो मेरी जन्नत में.

सूरह–90. अल–बलद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 नहीं, मैं क़सम खाता हूँ इस शहर (मक्का) की. 2 और तुम इसमें मुक़ीम हो (यानी रहते हो).
3 और क़सम है बाप की और उसकी औलाद की. 4 हमने इंसान को मशक़्क़त (सश्रम स्थिति) में पैदा
किया है. 5 क्या वह ख़याल करता है कि उसपर किसी का ज़ोर नहीं? 6 कहता है कि मैंने बहुत सा
माल ख़र्च कर दिया. 7 क्या वह समझता है कि किसी ने उसे नहीं देखा? 8 क्या हमने उसे दो आँखें

नहीं दीं? 9 और एक ज़बान और दो होंट नहीं दिए? 10 **और हमने इंसान को दोनों रास्ते बता दिए.** 11 फिर वह घाटी पर नहीं चढ़ा. 12 और तुम क्या जानो कि क्या है वह घाटी. 13 गर्दन को छुड़ाना. 14 या भूख के ज़माने में खिलाना, 15 क़राबतदार यतीम को, 16 या ख़ाकनशीन (धूल–धूसरित) मोहताज को. 17 फिर वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और एक दूसरे को सब्र की और हमदर्दी की नसीहत की. 18 यही लोग नसीब वाले हैं. 19 और जो हमारी आयतों के मुन्किर हुए वे बदबख़्ती (दुर्भाग्य) वाले हैं. 20 उनपर आग छाई हुई होगी.

सूरह–91. अश–शम्स

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है सूरज की और उसकी धूप चढ़ने की. 2 और चांद की, जबकि वह सूरज के पीछे आए. 3 और दिन की, जबकि वह उसे रोशन कर दे. 4 और रात की, जब वह उसे छुपा ले. 5 और आसमान की, और जैसा कि उसे बनाया. 6 और ज़मीन की, और जैसा कि उसे फैलाया. 7 और जान की, जैसा कि उसे ठीक किया. 8 फिर उसे समझ दी, उसकी बदी की और उसकी नेकी की. 9 कामयाब हुआ जिसने उसे पाक (शुद्ध) किया 10 और नामुराद हुआ जिसने उसे आलूदा (अशुद्ध) किया. 11 समूद ने अपनी सरकशी की बिना पर झुठलाया. 12 जबकि उठ खड़ा हुआ, उनका सबसे बड़ा बदबख़्त. 13 तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा कि अल्लाह की ऊँटनी और उसके पानी पीने से ख़बरदार रहो. 14 तो उन्होंने उसे झुठलाया. फिर ऊँटनी को मार डाला. फिर उनके रब ने उनके गुनाह के सबब उनपर हलाकत नाज़िल की. फिर सबको बराबर कर दिया. 15 वह नहीं डरता कि उसके पीछे क्या होगा (यानी उसका अंजाम क्या होगा).

सूरह–92. अल–लैल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है रात की, जबकि वह छा जाए. 2 और दिन की, जबकि वह रोशन हो 3 और उसकी जो उसने पैदा किए, नर और मादा. 4 कि तुम्हारी कोशिशें अलग–अलग हैं. 5 पस जिसने (सदक़ा) दिया और वह डरा 6 और उसने भलाई को सच माना. 7 तो उसे हम आसान रास्ते के लिए सहूलत देंगे. 8 और जिसने बुख़्ल (कंजूसी) किया और बेपरवाह रहा, 9 और भलाई को झुठलाया, 10 तो हम उसे सख़्त रास्ते के लिए सहूलत देंगे. 11 और उसका माल उसके काम न आएगा, जब वह गढ़े में गिरेगा. 12 बेशक हमारे ज़िम्मे है राह बताना. 13 और बेशक हमारे इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया.

14 **पस मैंने तुम्हें डरा दिया भड़कती हुई आग से.** 15 **उसमें वही पड़ेगा जो बड़ा बदबख़्त है.** 16 **जिसने झुठलाया और रूगर्दानी (अवहेलना) की.** 17 **और हम उससे बचा देंगे ज़्यादा डरने वाले को.** 18 **जो अपना माल देता है पाकी हासिल करने के लिए** 19 और उसपर किसी का एहसान नहीं जिसका बदला उसे देना हो. 20 मगर सिर्फ़ अपने ख़ुदाए–बरतर की ख़ुशनुदी के लिए. 21 और अनक़रीब वह ख़ुश हो जाएगा.

सूरह–93. अज़–ज़ुहा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है रोज़े रोशन (चढ़ते दिन) की. 2 और रात की, जब वह छा जाए. 3 तुम्हारे रब ने तुम्हें नहीं छोड़ा और न वह तुम से बेज़ार (अप्रसन्न) हुआ.

4 **यक़ीनन आख़िरत तुम्हारे लिए दुनिया से बेहतर है.**

5 अनक़रीब अल्लाह तुम्हें देगा. फिर तुम राज़ी हो जाओगे. 6 क्या अल्लाह ने तुम्हें यतीम (अनाथ) नहीं पाया फिर ठिकाना दिया? 7 और तुम्हें (हक़ का) मतलाशी पाया तो राह दिखाई. 8 और तुम्हें नादार (निर्धन) पाया तो तुम्हें ग़नी (समृद्ध) कर दिया. 9 पस तुम यतीम पर सख़्ती न करो 10 और तुम साइल (मांगने वाले) को न झिड़को 11 और तुम अपने रब की नेमत बयान करो.

सूरह–94. अल–इनशिराह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल नहीं दिया? 2 और तुम्हारा वह बोझ उतार दिया 3 जिसने तुम्हारी पीठ झुका दी थी. 4 और हमने तुम्हारा ज़िक्र बुलंद किया. 5 पस मुश्किल के साथ आसानी है. 6 बेशक मुश्किल के साथ आसानी है. 7 फिर जब तुम फ़ारिग़ हो जाओ तो मेहनत करो 8 और अपने रब की तरफ़ तवज्जोह रखो.

सूरह–95. अत–तीन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है तीन की और ज़ैतून की. 2 और तूरे–सीना की. 3 और इस अमन वाले शहर की. 4 हमने इंसान को बेहतरीन साख़्त (संरचना) पर पैदा किया. 5 फिर उसे सबसे नीचे फेंक दिया. 6 लेकिन जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए तो उनके लिए कभी ख़त्म न होने

वाला अज्र (प्रतिफल) है. 7 तो अब क्या है जिससे तुम बदला मिलने को झुठलाते हो? 8 क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं?

सूरह–96. अल–अलक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 पढ़ अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया. 2 पैदा किया इंसान को अलक़ (ख़ून के लोथड़े) से.
3 पढ़ (अपने रब के नाम से), तेरा रब बड़ा करीम है 4 जिसने इल्म सिखाया क़लम से. 5 इंसान को वह
कुछ सिखाया जो वह जानता न था. 6 फिर भी, इंसान सरकशी करता है. 7 इस बिना पर कि वह अपने
को बेनियाज़ (आत्मनिर्भर) समझता है. 8 बेशक तेरे रब ही की तरफ़ लौटना है. 9 क्या तुमने देखा उस
शख़्स को जो मना करता है, 10 एक बंदे को जब वह नमाज़ अदा करता हो 11 तुम्हारा क्या ख़याल
है, अगर वह हिदायत पर हो. 12 या डर की बात सिखाता हो. 13 तुम्हारा क्या ख़याल है, अगर उसने
झुठलाया और रूगर्दानी (अवहेलना) की. 14 क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह देख रहा है. 15
हरगिज़ नहीं, अगर वह बाज़ न आया तो हम पेशानी के बाल पकड़कर उसे खींचेंगे. 16 उस पेशानी
को जो झूठी गुनाहगार है. 17 अब वह बुला ले अपने हामियों को. 18 हम भी दोज़ख़ के फ़रिश्तों को
बुलाएँगे. 19 हरगिज़ नहीं, उसकी बात न मान और सज्दा कर और क़रीब हो जा. **अस्–सज्दा**

सूरह–97. अल–क़द्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हमने इस (क़ुरआन) को उतारा है शबे–क़द्र (गौरवपूर्ण रात) में. 2 और तुम क्या जानो
कि शबे–क़द्र क्या है. 3 शबे–क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है. 4 फ़रिश्ते और रूह उसमें अपने रब
की इजाज़त से उतरते हैं. हर हुक्म लेकर. 5 वह रात सरासर सलामती है, सुबह निकलने तक.

सूरह–98. अल–बय्यिनह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अहले–किताब (पूर्ववर्ती–ग्रंथ धारक) और मुशरिकीन (अनेकेश्वरवादियों) में से जिन
लोगों ने इन्कार किया वे बाज़ आने वाले नहीं, जब तक उनके पास वाज़ेह दलील न आ जाए. 2
अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल जो पाक सहीफ़े (ग्रंथ) पढ़कर सुनाए. 3 जिनमें दुरुस्त मज़ामीन
लिखे हों. 4 और जो लोग अहले–किताब थे वे वाज़ेह दलील आ जाने के बाद ही मुख़्तलिफ़ हो
गए (मतभेद में पड़ गए). 5 हालाँकि उन्हें यही हुक्म दिया गया था कि वे अल्लाह की इबादत करें.
उसके लिए दीन को ख़ालिस करके, यकसू (एकाग्रचित्त) होकर और नमाज़ क़ायम करें और

ज़कात दें, और यही दुरुस्त दीन है. 6 बेशक अहले–किताब और मुशरिकीन में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया, वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे, हमेशा उसमें रहेंगे, ये लोग बदतरीन मख़लूक़ (यानी समस्त जीवधारीयों में सबसे ज़्यादा बुरे) हैं. 7 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए, वे लोग बेहतरीन मख़लूक़ (सर्वोत्तम जीवधारी) हैं. 8 उनका बदला उनके रब के पास हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा–हमेशा रहेंगे. अल्लाह उनसे राज़ी और वे उससे राज़ी, यह उस शख़्स के लिए है जो अपने रब से डरे.

सूरह–99. अज़–ज़िल्ज़ाल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 **जब ज़मीन शिद्दत से हिला दी जाएगी.** 2 **और ज़मीन अपना बोझ निकाल कर**
बाहर डाल देगी. 3 **और इंसान कहेगा कि इसे क्या हुआ.** 4 **उस**
दिन वह अपने हालात बयान करेगी. 5 **क्योंकि तुम्हारे रब का उसे यही हुक्म होगा.** 6
उस दिन लोग अलग–अलग निकलेंगे, ताकि उनके आमाल उन्हें दिखाए जाएँ. 7
पस जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर नेकी की होगी वह उसे देख लेगा 8 **और जिस शख़्स**
ने ज़र्रा बराबर बुराई की होगी वह उसे देख लेगा.

नोटः– ● क़ुरआन के इस बयान से वाज़ेह है कि यहाँ जिस मसले का ज़िक्र हो रहा है, वह सारे इन्सानों का मसला है, इसी मसले से उन्हें आगाह करने का नाम ही दावत है.

● इन्सानी तारीख़ तेज़ी से अपने ख़ातमे की तरफ़ बढ़ रही है. अब क़यामत बहुत दूर की चीज़ नहीं है, बल्कि मौजूदा दौर में सारी इन्सानियत बिल्कुल क़यामत के दरवाज़े पर खड़ी है. ऐसी सूरत में इन्सानों की ख़ैरख़ाही क्या हो सकती है? उन्हें देने की सबसे बड़ी ख़बर क्या हो सकती है? यही कि उन्हें आख़िरी तौर पर ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसके अंजाम से बाख़बर कर दिया जाए, उन्हें बता दिया जाए कि मौजूदा दुनिया में उन्हें क्यों बसाया गया था. उन्हें बता दिया जाए कि मौजूदा दुनिया अब्दि नहीं है, एक दिन इसका ख़ातमा होने वाला है. उन्हें बता दिया जाए कि इन्सान के हर छोटे–बड़े, अच्छे–बुरे आमाल की recording हो रही है और इन्सान के सामने उन आमाल का अंजाम अनक़रीब ज़ाहिर होने वाला है.

सूरह–100. अल–आदियात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क़सम है उन घोड़ों की जो हांपते हुए दौड़ते हैं. 2 फिर टाप मारकर चिंगारी निकालने वाले. 3 फिर सुबह

के वक़्त छापा मारने वाले. 4 फिर उसमें ग़ुबार उड़ाने वाले. 5 फिर उस वक़्त फ़ौज में घुस जाने वाले.

6 **बेशक इंसान अपने रब का नाशुक्रा है.** 7 **और वह ख़ुद इसपर गवाह है.** 8
और वह माल की मुहब्बत में बहुत शदीद है. 9 **क्या**
वह उस वक़्त को नहीं जानता जब वह क़ब्रों से निकाला जाएगा. 10 **और निकाला**
जाएगा जो कुछ दिलों में है. 11 **बेशक उस दिन उनका रब उनसे ख़ूब बाख़बर होगा.**

नोटः– माल वालों को यह ख़ूब समझ लेना चाहिए कि उनके पास जो माल है वह उनकी personal और permanent property नहीं है. वह ख़ुदा का माल है जो उसने उन्हें आज़माने के लिए दे रखा है. अगर वह माल से चिमटे रहेंगे तो उसका अंजाम ख़तरनाक सूरत में सामने आएगा, यह उन्हें जान लेना चाहिए.

बंदे की बेहतरी इसी में है कि वह ख़ुदा का दिया हुआ माल ख़ुदा के काम में लौटाए. उसकी सबसे बेहतर सूरत यह है कि उस माल को दावत में लगाया जाए. दावत ख़ुदा को सबसे ज़्यादा मतलूब अमल है. दावत ख़ुदा के बंदों को जहन्नम से बचाने की कोशिश है. जो दूसरों को जहन्नम से बचाने की कोशिश करेगा, ख़ुदा उसे ज़रूर जहन्नम से बचाएगा.

सूरह–101. अल–क़ारिआ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 खड़खड़ाने वाली. 2 क्या है खड़खड़ाने वाली. 3 और तुम क्या जानो कि क्या है वह
खड़खड़ाने वाली. 4 जिस दिन लोग पतंगों की तरह बिखरे हुए होंगे. 5 और पहाड़ धुनके हुए रंगीन
ऊन की तरह हो जाएँगे. 6 **फिर जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा** 7 **वह दिलपसंद**
आराम में होगा. 8 **और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा** 9 **तो उसका**
ठिकाना गढ़ा है. 10 और तुम क्या जानो कि वह क्या है, 11 वह भड़कती हुई आग है.

सूरह–102. अत–तकासुर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 **ज़्यादा से ज़्यादा पाने की हिर्स ने तुम्हें ग़फ़लत में रखा.** 2 **यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुँचे.**

नोटः– जिसने माल को अपना मिशन बनाया, वह ख़ुदा को नहीं पा सकता. जिसने ख़ुदा को नहीं पाया, उसे आख़िरत की अब्दि ज़िंदगी में ख़ुदा की रहमतों और नियामतों से हमेशा के लिए दूर कर दिया जाएगा.

3 लेकिन, तुम बहुत जल्द जान लोगे. 4 यक़ीनन, तुम बहुत जल्द जान लोगे. 5 (तो तुम ग़फ़लत में न होते) अगर तुम यक़ीन के साथ जानते, 6 कि तुम ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे. 7 फिर तुम उसे यक़ीन की आँख से देखोगे.

8 **फिर उस दिन तुम से नेमतों के बारे में पूछा जाएगा.**

नोटः– दुनिया भर में सारे इंसान अल्लाह की बेशुमार नेमतों से फ़ायदा उठा रहे हैं, लेकिन नेमतों के **'देने वाले'** को उन्होंने भूला रखा है.

सूरह–103. अल–अस्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 **क़सम है ज़माने की.** 2 **बेशक इंसान घाटे में है.** 3 **मगर जो लोग कि ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये और एक दूसरे को हक़ की नसीहत की और एक दूसरे को सब्र की नसीहत की.**

नोटः– 'क़सम है ज़माने की, बेशक **इंसान** घाटे में है.' क़ुरआन के इस बयान से वाज़ेह है कि यह पैग़ाम इंसानों के लिए है, यह ख़ालिक़ का पैग़ाम इंसानों को ज़िंदगी की हक़ीक़त और उसका अंजाम बताने के लिए है. इसलिए अहले–ईमान पर यह लाज़िम है कि वे सारे इन्सानों से मुतआल्लिक़ यह पैग़ाम उन तक पहुँचा दें.

सूरह–104. अल–हु–म–ज़ह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 तबाही है हर ताना देने वाले, ऐब निकालने वाले की. 2 जिसने माल को समेटा और गिन–गिन कर रखा. 3 **वह ख़याल करता है कि उसका माल हमेशा उसके साथ रहेगा.**

4 हरगिज़ नहीं, वह फेंका जाएगा रौंदने वाली जगह में. 5 और तुम क्या जानो कि

वह रौंदने वाली जगह क्या है. 6 अल्लाह की भड़काई हुई आग 7 जो दिलों तक जा पहुँचेगी. 8 वह उनपर बंद कर दी जाएगी, 9 ऊंचे–ऊंचे सुतूनों (स्तंभों) में.

नोटः– आज का इंसान ख़ुदा से नहीं, बल्कि माल से मुहब्बत करने वाला है. लेकिन माल से मुहब्बत का अंजाम बहुत ख़तरनाक है. क़ुरआन में जगह–जगह यह बात आयी है कि माल का हक़ीक़ी मालिक ख़ुदा है.

इस दुनिया में माल ख़ुदा का इनाम नहीं है, क्योंकि यह दुनिया इनाम के लिए नहीं है, बल्कि इम्तिहान के लिए है. यहाँ माल, औलाद, सेहत, बीमारी, गुरबत,..... यह सारी चीज़ें इम्तिहान के लिए हैं. इंसान इस हक़ीक़त को अगर समझ ले तो वह ज़्यादा से ज़्यादा माल जमा करने की दौड़–धूप न करे और माल के सही इस्तेमाल को जान ले, ताकि उसके ग़लत इस्तेमाल के बुरे अंजाम से महफ़ूज़ रहे.

दावत लोगों को जन्नत की तरफ़ बुलाने और जहन्नम से बचाने का मिशन है. माल को इस मिशन में लगाने से ज़्यादा माल का दूसरा बेहतर इस्तेमाल नहीं हो सकता.

सूरह–105. अल–फ़ील

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया. 2 क्या उसने उनकी
तदबीर को अकारत नहीं कर दिया. 3 और उनपर चिड़ियाँ भेजीं झुंड की झुंड. 4 जो उनपर कंकर
की पथरियां फेंकती थीं. 5 फिर अल्लाह ने उन्हें खाए हुए भुस की तरह कर दिया.

सूरह–106. क़ुरैश

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 इस वास्ते कि क़ुरैश मानूस हुए, 2 जाड़े और गर्मी के सफ़र से मानूस. 3 तो उन्हें चाहिए
कि इस घर के रब की इबादत करें 4 जिसने उन्हें भूख में खाना दिया और ख़ौफ़ से उन्हें अमन दिया.

सूरह–107. अल–माऊन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क्या तुमने देखा उस शख़्स को जो इंसाफ़ के दिन को झुठलाता है. 2 वही है जो यतीम
(अनाथ) को धक्के देता है. 3 और मिस्कीन को खाना देने पर नहीं उभारता. 4 पस तबाही है उन
नमाज़ पढ़ने वालों के लिए 5 जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं. 6 वे जो दिखलावा करते हैं. 7 और
मामूली ज़रूरत की चीज़ें भी नहीं देते.

सूरह–108. अल–कौसर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हमने तुम्हें कौसर (यानी ख़ैरे–कसीर) दे दिया. 2 पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और
क़ुर्बानी करो. 3 बेशक तुम्हारा दुश्मन ही बेनाम व निशान होने वाला है.

सूरह–109. अल–काफ़िरून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 कहो कि ऐ मुन्किरो! 2 मैं उनकी इबादत नहीं करूँगा जिनकी इबादत तुम करते हो. 3
और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूँ. 4 और मैं उनकी इबादत
करने वाला नहीं जिनकी इबादत तुमने की है. 5 और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी
इबादत मैं करता हूँ. 6 तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) और मेरे लिए मेरा दीन.

सूरह–110. अन–नस्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 जब अल्लाह की मदद आ जाए और फ़तह. 2 और तुम देखो कि लोग ख़ुदा के दीन में
दाख़िल हो रहे हैं फ़ौज दर फ़ौज. 3 तो अपने रब की तस्बीह (गुणगान) करो उसकी हम्द (प्रशंसा)
के साथ और उससे बख़्शिश (क्षमा) माँगो, बेशक वह माफ़ करने वाला है.

सूरह–111. अल–लहब

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अबू–लहब के हाथ टूट जाएँ और वह बर्बाद हो जाए. 2 न उसका माल उसके काम
आया और न वह जो उसने कमाया. 3 वह अनक़रीब भड़कती आग में पड़ेगा. 4 और उसकी
बीवी भी जो ईंधन लिए फिरती है सर पर. 5 उसकी गर्दन में रस्सी है बटी हुई.

सूरह–112. अल–इख़लास

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 **कहो, वह अल्लाह एक है.** 2 अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है. 3 **न उसकी
कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद.** 4 **और कोई उसके बराबरी का नहीं.**

नोटः– ख़ुदा का हक़ीक़ी तार्रूफ़ ख़ुदा के कलाम में ही हो सकता है. दाई की ज़िम्मेदारी यह है कि वह ख़ुदा के कलाम को लोगों तक पहुँचा दे, ताकि लोगों तक ख़ुदा का सही तार्रूफ़ पहुँच जाए.

सूरह–113. अल–फ़लक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 कहो, मैं पनाह माँगता हूँ सुबह के रब की. 2 हर चीज़ के शर (बुराई) से जो उसने पैदा
की. 3 और तारीकी (अंधकार) के शर से, जबकि वह छा जाए. 4 और गिरहों (गाँठों) में फूँक
मारने वालों के शर से 5 और हासिद (ईर्ष्यालु) के शर से, जबकि वह हसद करे.

सूरह–114. अन–नास

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 कहो, मैं पनाह माँगता हूँ लोगों के रब की, 2 लोगों के बादशाह की, 3 लोगों के माबूद
(पूज्य) की. 4 उसके शर (बुराई) से जो वसवसा डाले और छुप जाए. 5 जो लोगों के दिलों में
वसवसा डालता है, 6 जिन्न में से और इंसान में से.

Sites for Seekers of The Truth

Please visit the following websites :-

www.alquranpublication.com

- www.knowthetrueislam.com
- www.alquranmission.org
- www.goodwordbooks.com
- www.cpsglobal.org
- www.alrisala.org

Or email us :- alquranpublication@gmail.com

दुनिया की सारी ज़बानों में कुरआन के बेशुमार तर्जुमे मौजूद हैं,
लेकिन Al-Quran Publication इंशाअल्लाह मुख़्तलिफ़ ज़बानों में कुरआन के निहायत आसान तर्जुमे शाया करने जा रहा है. जिसमें पूरी तरह सुस्पष्टता (clarity) होगी.

For more information:-
Al-Quran Publication, 09767172629